आल्हखण्ड का सूचीपत्र।

नं० शु०	नाम लड़ाई	पृष्ठसे	पृष्ठतक
[१]	संयोगिनि स्वयम्बर पृथीराज जयचंदयुद्ध	१	३६
[२]	करिया करके देशराज वच्छराज मरण, महोबे का प्रथम युद्ध	३७	४८
[३]	माड़ोमें आल्हादिकों का चढ़ाई करके माड़ो नृपति को कोल्हू में पिराना	४९	११६
[४]	आल्हा का विवाह	११७	१५६
[५]	मलखान का विवाह	१५७	१९६
[६]	ब्रह्माका विवाह	१९७	२३८
[७]	उदयसिंहका विवाह	२३९	२८२
[८]	चन्द्रावलि चौथि....	२८३	३१६
[९]	इन्दलहरणब्याहताहीमा	३१७	३५२
[१०]	आल्हा निकासी	३५३	३६६
[११]	लाखनि का विवाह	३६७	३९०
[१२]	गाँजरकी लड़ाई	३९१	४१०
[१३]	सिरसा समर मलखे मरण	४११	४२४
[१४]	कीरतिसागर का मैदान	४२५	४६२
[१५]	आल्हा का मनावन	४६३	४९२
[१६]	नदी बेतवाका समर	४९३	५१६
[१७]	ठाकुर उदयसिंहका हरण	५१७	५२८
[१८]	बेलाके गौनेका प्रथम युद्ध	५२९	५४२
[१९]	बेलाके गौनेका द्वितीय युद्ध	५४३	५६४
[२०]	बेला ताहर का मैदान	५६५	५८४
[२१]	चन्दनबागकेर मैदान .. .	५८५	५९४
[२२]	चन्दन खम्भा का मैदान	५९५	६०४
[२३]	बेलासती अन्त मैदान	६०५	६१६

अथ आल्हखण्ड ॥

संयोगिनि स्वयम्बर

पृथीराज और जयचन्द का युद्ध वर्णन ॥

सिंहावलोकनछन्द ॥

बन्दत तोहिं सदा गणनायक जासु कृपा दुख दारिद नाशै ।
नाशै दारिद दोष सबै उर अन्तर आतमज्ञान प्रकाशै ॥
प्रकाशै आतमज्ञान जबै तब दुःख सबै जगको सुखभाशै ।
भाशै सुखको दुख सत्य जबै ललिते न तबै यमराजो फाँशै १

सुमिरन ॥

कौरव पाण्डव दोउ दल जूझे करिकै कुरुक्षेत्र मैदान ॥
सोई जनमे सब दुनिया में आल्हा ऊदन आदि महान १
जिनकी कीरति घर घर फैली छैलिकै लीन जगतको छाय ॥
को यश बरणै तिन क्षत्रिन कै हमरे बूत कही ना जाय २
जैसे आल्हा रणशूरन को आल्हा ऊदन दीन गड़ाय ॥
तैसे छापा सब गुणियन हित मुंशी साहब दीन बढ़ाय ३

ब्राह्मण कायथ मुसलमान औ नौकर रहे बहुत अँगरेज ॥
काम देखिकै सब काहू को सोवैं नवल भवन तब सेज ४
को गति बरणै तिन मुंशीकै जिनको बढ़ो अमित परताप ॥
लाखन पुस्तक के ऊपरमाँ जिनके परै अबौंलग छाप ५
तिन सुत बाबू प्रागनरायण जिन मन शान्ति रही दर्शाय ॥
को गुण बरणै तिन बाबूके गाये कथा बहुत बढ़िजाय ६

छं० जिला जौन उन्नाम तासु पूरवदिशि माहीं।
पांच कोस है ग्राम नाम पँड़री तिहिकाहीं ॥
किरपाशंकर मिश्र वृत्ति पण्डित की जाहीं।
तिनसुत ललितेनाम ग्रन्थ निर्मापक आहीं ७

ते यश बरणैं अब जयचँद का लैकै रामचन्द्र का नाम ॥
प्रथम स्वयम्बर संयोगिनि का पाछे बरणौं युद्ध ललाम ८
सबकनवजियात्यहिकनउजमाँ बीचम बसै तहाँ नरपाल ॥
छूटि सुमिरनी गै ह्यांते अब सुनिये कनउज केर हवाल ९

अथ कथाप्रसंग ॥

जयचँद राजा कनउज वाला आला सकल जगत सिरनाम ॥
को गति बरणै त्यहिमंदिरकै सो है सोन सरिस त्यहिधाम १
केसरि पोतो सब मंदिर है औ छति लागि बनातन केर ॥
सुवा पहाड़ी तामें बैठे चकस गड़े बुलबुलन केर २
लाल औ मैनन के गिनती ना तीतर घूमिरहे सब ओर ॥
पले कबूतर कहुँ घुटकत हैं कहुँ कहुँ नाचि रहे हैं मोर ३
लागि कचहरी है जयचँद कै बैठे बड़े बड़े नरपाल ॥
बना सिंहासन है सोने का तामें जड़े जवाहिर लाल ४
तामें बैठो महराजा है दहिने धरे ढाल तलवार ॥

जामा पहिरे रेशमवाला आला कनउज का सरदार ५
पाग बैंजनी शिरपर सोहै तापर कलँगी करै बहार॥
कवि औ परिडत बहु बैठे हैं भारी लाग राजदर्बार ६
नचै पतुरिया सन्मुख ठाढ़े ओढ़े काशमीर कै सारि॥
जूरा झलकै त्यहि सारी बिच काली नागिनिके अनुहारि ७
फूल चमेलिन के जूरा में नखतन सरिसकरैं उजियारि॥
हरवा सोहै गल बेलाका छैला ताको रहे निहारि ८
बालाहालैं त्यहि कानन में गालन छुवैं और टरिजाँय॥
अद्भुत बेसरि स्वहै नाक में शोभा कही तासु ना जाय ९
दुलरी तिलरी पंचलरीलों सो गलबिच में करैं बहार॥
बाजू सोहैं दोउ बाहुन में जोशन शोभाअमित अपार १०
सोहैं कलाइन में ककना भल तामें चुरियाँ करैं बहार॥
छल्ला सोहैं त्यहि अँगुरिन में ताको क्षत्री रहे निहार ११
सोने करगता तीन लरनको सो कम्मर में करै बहार॥
कड़ा के ऊपर छड़ा बिराजैं तापर पायजेब झनकार १२
पैर जमावै कमर झुकावै अँगुरिन भाव बतावति जाय॥
जौनि रागिनी जब वाजिबहै ताको तबै देय दर्शाय १३
जब दिशि जावति है राजा के पावै द्रब्य जाय हर्षाय॥
माफी पाये है कनउज में लरिकातीनिसाखिलौंखाँय १४
लाग अखाड़ा रजपूतन का शोभा कही बूत ना जाय॥
खाये अफीमन के गोला बहु पलकैं मूंदैं औ रहिजाँय १५
उड़ै तमाखू बुटवल वाली धुवना सरग रहा मड़राय॥
भाँग जमाये बहु बैठे हैं मनमाँ रहे रामयश गाय १६
त्यही समइया त्यहि अवसरमाँ राजै गयो सोच मनछाय॥

बरके लायक संयोगिनि है काके संग बियाही जाय १७
यहै सोचिकै मन राजाने तुरतै पण्डित लीन बुलाय ॥
सइति बतावो अब जल्दी सों जामें रचा स्वयम्बर जाय १८
सुनिकै बातैं महराजा की पण्डित साइति दीन बताय ॥
मन्त्री बैठ रहै पासैमाँ राजै हुकुमदीन फर्माय १९
न्यवत पठावो सब राजन को कनउज साजि करो तय्यार ॥
हुकुम पायकै महराजा को मन्त्री तुरत भयो हुशियार २०
उठि सिंहासन सों ठाढ़ो भो राजा कनउज का सरदार ॥
किह्यो पैलगी सब विप्रन को क्षत्रिन कीन्ह्यो राम जुहार २१
ब्राह्मण क्षत्री गे अपने घर महलन गयो चँदेलाराय ॥
आवत दीख्यो जब राजा को बांदी चली तड़ाका धाय २२
खबरि सुनाई महरानी को महलन आवत कन्त तुम्हार ॥
सुनिकै बातैं ये बांदी की रानी तुरत भई हुशियार २३
आगे ठाढ़ी भइ द्वारे पर राजा अटे बराबरि आय ॥
पहिले राजा गे मन्दिर को पाछे चली आपहू जाय २४
पौढ़यो पलँगा पर महराजा आपौ बैठि चरण ढिग जाय ॥
हरुये हरुये दोउ हाथन सों दोऊ लीन्ह्यो पैर उठाय २५
सो धरि राख्यो निज गोदी में औ छाती में लिह्यो लगाय ॥
चापन लागी धीरे धीरे सोवन लाग चँदेलोराय २६
आपौ सोई महराजा सँग मनमें रामचन्द्र को ध्याय ॥
भोर भ्वरहरे पह फाटत खन पक्षी रहे सबै चिल्लाय २७
मन्त्री जागा महराजा का लीन्ह्यो द्वारपाल को टेर ॥
जल्दी लावो कोतवाल को यामें करो कछू ना देर २८
सुनिकै बातैं ये मन्त्री की चलिभो द्वारपाल शिरनाय ॥

जायके पहुँच्यो कोतवाल ढिग औ सबखबरिसुनायो जाय २९
पाय इत्तिला द्वारपाल सों तुरतै अटा भवन में आय ॥
सावधान है हाथ जोरिकै मन्त्रिहिशीश नवायोजाय ३०
ठाढ़े देख्यो कोतवाल को मन्त्री हुकुम दीन फर्माय ॥
मंच गड़ावो दिशि पूरब में मारग साफ करावो जाय ३१
हुई स्वयम्बर संयोगिनि का पुर में डौंड़ी देव पिटाय ॥
झण्डा गाड़ो राजमहल में बन्दनवार देव बँधवाय ३२
सुनिकै बातैं ये मन्त्री की तुरतै कोतवाल चलिजाय ॥
कलम दवाइति कागज लैकै सीताराम चरण मनध्याय ३३
चिट्ठी लिखिकै सब राजन को मन्त्री धावन लीन बुलाय ॥
दै दै चिट्ठी हरकारन को राजनन्यवत दीन पहुँचाय ३४
साजि सांड़िया को जल्दी सों धावन तुरत भये असवार ॥
चिट्ठी लैकै महराजा कै पहुँचे राजन के दर्बार ३५
चिट्ठी पावत महराजा कै राजा सबै भये हुशियार ॥
अपनी अपनी सब फौजन को राजन तुरत कीन तय्यार ३६
बाजे डंका अहतंका के बंका चलत भये नरपाल ॥
मारु मारु करि मौहरि बाजीं बाजीं हाव हाव करनाल ३७
ढाढ़ी करखा बोलन लागे बन्दिन कीन समरपद गान ॥
दान मान दै सब बिप्रन को राजन कीन तुरत पस्थान ३८
खर खर खर खर कै रथ दौरैं चह चह रहीं धुरी चिल्लाय ॥
दाबति आवैं सब कनउज का भारी अंधकार गा छाय ३९
मस्ता हाथी घूमत आवैं छैला घोड़ नचावत जाँय ॥
रातौ दिन का धावा करिकै कनउज धुरा दबायनि आय ४०
को गति बरणै तेहि समया कै हमरे बून कही ना जाय ॥

तम्बू गड़िगे सब राजन के झण्डा आसमान फहरायँ ४१
मोर भ्भरहरे मुरगा बोलत जागा कनउज का नरपाल ॥
दिशा फराकत सों छुट्टी करि मज्जनकरतभयोतिहिकाल४२
पहिरिकै धोती रेशमवाली आसन बैठ चँदेलाराय ॥
संध्या करिकै त्यहि अवसर की औ जपमाली लीन उठाय ४३
मन्त्र गायत्री को जपिकै फिरि तर्पण करन लाग महराज ॥
अक्षत चन्दन धूप दीप औ लै पकवान शम्भु के काज ४४
भोग लगायो शिवशङ्कर को ध्यायो रामचन्द्र को नाम ॥
फिर बुलवायो तिन बिप्रन को जिनके जपै तपै का काम ४५
गऊ मँगायो पैंतालिस फिर ब्याई एक बेर की जौन ॥
बछरा नीचे हैं जिनके फिरि सोने सींग मढ़ी हैं तौन ४६
खुरौ मढ़े हैं जिन चांदी के पीठ म परीं बनातन झूल ॥
पूँछ पकरिकै तिन गौवन की राजा दानदेत मनफूल ४७
भूसा दाना एकमास को बिप्रन घरै दीन पहुँचाय ॥
जायकै पहुँच्यो फिरि मंदिरमें यकइस बिप्रनलीन बुलाय ४८
दही दूध औ पेरा बरफी चटनी भांति भांति तय्यार ॥
भोजन दीन्ह्यो तिन बिप्रन को राजा कनउजका सरदार ४९
सीध मँगायो पैंतालिस फिर औरे बिप्रन लीन बुलाय ॥
सहित दक्षिणा के दीन्ह्यो सो राजा बड़ा प्रेम मनलाय ५०
ऐसो दान नित्यप्रति देवै राजा बिप्रन घरै बुलाय ॥
पाछे भोजन आपौ करिकै तब दरबार पहूँचै जाय ५१
ऐसो दानी महराजा यहु राजा कनउज का सरदार ॥
जायकै पहुँच्यो तिहि मंदिरमाँ जहँपर भरीलाग दरबार ५२
आवत दीख्यो जब राजा को ठाढ़े भये शूर सरदार ॥

बैठि सिंहासन पर राजागे दहिने लिये ढाल तलवार ५३
बैठे क्षत्रिय निज निज आसन मनमें रामचन्द्र को ध्याय॥
हाथ जोरिकै मन्त्री बोल्यो वो महराज कनउजी राय ५४
देश देश के राजा आये एक न अयो पिथौराराय॥
सुनिकै बातैं ये मन्त्री की जल्दी हुकुम दीन फर्माय ५५
मुरति बनावो तुम कपड़ा की भीतर पैरा देव भराय॥
जहाँ उतारे जूता जावैं तहँ पर खड़ा देव करवाय ५६
हुकुम पायकै महराजा को मन्त्री कीन तैसही जाय॥
मुरति पिथौरा की बनवायो तहँपर खड़ा दीन करवाय ५७
बैठक बैठे सब राजा तहँ आपौ गयो चँदेलाराय॥
बाजन बाजे चौगिर्दा ते हाहाकार शब्दगा छाय ५८
सजिगा कनउज त्यहि औसर माँ शोभा कही बूत ना जाय॥
बन्दनवारे घर घर बाँधे घर घर रहे पताका छाय ५९
सजीं सुहागिलैं चौगिर्दा ते गावैं गीत मंगलाचार॥
त्यही समइया त्यहि औसरमाँ बोल्यो कनउजका सरदार ६०
जल्दी लावो संयोगिनि को साइति आयगई नगच्याय॥
हुकुमपायकै महराजा का चकरन खबरि जनाई जाय ६१
खबरि पायकै संयोगिनि फिरि महलन तुरत भई हुशियार॥
औ बुलवायो फिरि बाँदियनको सोलह करन लागि शृंगार ६२

सवैया॥

मज्जन[१] चीर[२] औ कुण्डल[३] अंजन[४] नाकमें मौक्तिक[५] केश[६]सवाँरी।
कंचुकि[७] औ क्षुद्रावलि[८] कंकण[९] कुसुमित अम्बर[१०] चन्दन[११]धारी॥
खायकै पान[१२] औ धारिमें[१३] वीनको[१४] हार[१५] औ नूपुर[१६] की झनकारी।
सिंदूर भाल बिशाल लखे ललितेमनलज्जितमन्मथनारी ६३

सजि सँयोगिनि गै पलमाँ इक बँदियन हुकुम दीन फरमाय ॥
डोला लावो अब जल्दी सों बँदिया चलीं हुकुमकोपाय ६४
लाईं डोला सो जल्दी सों औ त्यहि खबरि सुनाई जाय॥
सुनिकै बातैं सो बांदी की मनमें श्रीगणेशको ध्याय ६५
सुमिरि भवानी शिवशंकरको औ सूर्य्यन को माथ नवाय ॥
बैठी डोला में संयोगिनि सीता रामचरण मनलाय ६६
चारि कहरवा मिलिडोला लै तुरते चले पूर्व दिशिधाय ॥
आगे डोला संयोगिनि को पाछे चलीं सहेली जाँय ६७
दौरति जावैं पुरवासी सब दासिन भीर भई अधिकाय ॥
चढ़िगे मंचन नर नारी सब राजन देखि देखि हर्षाय ६८
बड़ी भीर भय तब कनउज में औ तिल डरे भुइँ ना जाय ॥
शोभा गावैं जो कनउज की तौफिरिएकसाल लगिजाय६९
डोला लैकै संयोगिनि का महरन तहाँ उतारा जाय ॥
जहँना बैठे सब राजा हैं एकते एक रूप अधिकाय ७०
उतरिकै डोला सों संयोगिनि माला दहिन हाथ लै लीन्ह ॥
सुमिरिभवानीसुत गणेश को महिफिलमध्यगमनतबकीन्ह७१
बैठे राजा सब महिफिल में एक ते एक शूर सरदार ॥
कोउ कोउ राजा तीस बरसका कोउ कोउ वर्षअठारहक्यार७२
काले नीले पीले लाले उजले शोभा के अधिकाय ॥
जामा पहिरे रेशमवाले चम्चम् चमकि२ रहिजाँय ७३
सोहैं डुपट्टा तिन जामन पर गल में परे मोतियन हार ॥
रंगबिरंगी पगड़ी शिर पर तिनपर कलँगी करैं बहार ७४
हाथ लगाये हैं मुच्छन पर दहिने परी ढाल तलवार ॥
पीठ दिखावैं नहिं बैरी को ऐसे सबै शूर सरदार ७५

लैकै माला संयोगिनि तहँ घूमत फिरै सखिन के साथ॥
मन नहिं भावै कोउ राजा त्यहि जाको करै आपनो नाथ ७६
देखैं राजा संयोगिनि तहँ औ शिर नीचे लेयँ नवाय॥
माला डालै नहिं काहू के क्षत्री गये सबै शर्माय ७७
सोतो देखै पृथीराज को नहिं तहँ देखि परैं महराज॥
चकृत ह्वैकै चौगिर्दा ते देखनलागि छांड़िकै लाज ७८
जब नहिं देख्यो दिल्लीपतिको तब मन सोचि सोचि रहिजाय॥
काह विधाता कै मर्जी है जो नहिं अयो पिथौराराय ७९
क्वारी रहिबे हम दुनिया में या फिरि ब्याहकरब तिनसाथ॥
त्यहिते तुमका हम ध्याइत है सुनिल्यो दीनबन्धु रघुनाथ८०
जइस मनोरथ तुम सीताको पुरयो आप चराचर नाथ॥
तइस मनोरथ अब हमरो है ब्याही जायँ पिथौरा साथ ८१
त्वही गोसइयाँ दीनबन्धु है ओ दशरथ के राजकुमार॥
वेगि मिलावो दिल्लीपति को तब सब होवैं काज हमार ८२
चरण तुम्हारे जो मनलावै गावै राम राम श्री राम॥
सो फल पावै मनभावै जो पूरण होयँ तासु के काम ८३
यह सुनि राखा हम बिप्रन ते ताको सत्य करो भगवान॥
मूरति दीख्यो फिरि कपड़ाकी तामें करनलागि अनुमान८४
है यह मूरति पृथीराजकी मनमाँ ठीक लीन ठहराय॥
लैकै माला संयोगिनि सो मूरति गले दीन पहिराय ८५
देखि तमाशा सब राजा यह आशा छाँड़ि हृदयते दीन॥
बिदा मांगिकै महराजाते राजन गमन तहाँते कीन ८६
कूचके डंका बाजन लागे घूमन लागे लाल निशान॥
चलिभेराजा निज निज घरका करिकै शम्भुचरणको ध्यान८७

सजि सँयोगिनि गै पलमाँ इक बाँदियन हुकुम दीन फरमाय ॥
डोला लावो अब जल्दी सों बाँदिया चलीं हुकुमकोपाय ६४
लाई डोला सो जल्दी सों औ त्यहि खबरि सुनाई जाय॥
सुनिकै बातैं सो बांदी की मनमें श्रीगणेशको ध्याय ६५
सुमिरि भवानी शिवशंकरको औ सूर्य्यन को माथ नवाय ॥
बैठी डोला में संयोगिनि सीता रामचरण मनलाय ६६
चारि कहरवा मिलिडोला लै तुरतै चले पूर्व दिशिधाय ॥
आगे डोला संयोगिनि को पाछे चलीं सहेली जाँय ६७
दौरति जावैं पुरवासी सब दासिन भीर भई अधिकाय ॥
चढ़िगे मंचन नर नारी सब राजन देखि देखि हर्षाय ६८
बड़ी भीर भय तब कनउज में औ तिल डरे भुईं ना जाय ॥
शोभा गावैं जो कनउज की तौफिरिएकसाल लगिजाय६९
डोला लैकै संयोगिनि का महरन तहाँ उतारा जाय ॥
जहँना बैठे सब राजा हैं एकते एक रूप अधिकाय ७०
उतरिकै डोला सों संयोगिनि माला दहिन हाथ लै लीन्ह ॥
सुमिरिभवानीसुत गणेश को महिफिलमध्यगमनतबकीन्ह७१
बैठे राजा सब महिफिल में एक ते एक शूर सरदार ॥
कोउ कोउ राजा तीस बरसका कोउ कोउ वर्षअठारहक्यार७२
काले नीले पीले लाले उजले शोभा के अधिकाय ॥
जामा पहिरे रेशमवाले चम्चम् चमकि२ रहिजाँय ७३
सोहैं दुपट्टा तिन जामन पर गल में परे मोतियन हार ॥
रंगबिरंगी पगड़ी शिर पर तिनपर कलँगी करैं बहार ७४
हाथ लगाये हैं मुच्छन पर दहिने परी ढाल तलवार ॥
पीठि दिखावैं नाहिं बैरी को ऐसे सबै शूर सरदार ७५

लैकै माला संयोगिनि तहँ घूमत फिरै सखिन के साथ॥
मन नहिं भावै कोउ राजा त्यहि जाको करै आपनो नाथ ७६
देखैं राजा संयोगिनि तहँ औ शिर नीचे लेयँ नवाय॥
माला डालै नहिं काहू के क्षत्री गये सबै शर्माय ७७
सोतो देखै पृथीराज को नहिं तहँ देखि परै महराज॥
चकृत ह्वैकै चौगिर्दा ते देखनलागि छांड़िकै लाज ७८
जब नहिं देख्यो दिल्लीपतिको तब मन सोचि सोचि रहिजाय॥
काह बिधाता कै मर्जी है जो नहिं अयो पिथौराराय ७९
क्वारी रहिबे हम दुनिया में या फिरि ब्याहकरब तिनसाथ॥
त्यहिते तुमका हम ध्याइत है सुनिल्यो दीनबन्धु रघुनाथ८०
जइस मनोरथ तुम सीताको पुरयो आप चराचर नाथ॥
तइस मनोरथ अब हमरो है ब्याही जायँ पिथौरा साथ ८१
स्वही गोसइयाँ दीनबन्धु है श्रो दशरथ के राजकुमार॥
बेगि मिलावो दिल्लीपति को तब सब होवैं काज हमार ८२
चरण तुम्हारे जो मनलावै गावै राम राम श्री राम॥
सो फल पावै मनभावै जो पूरण होयँ तासु के काम ८३
यह सुनि राखा हम बिप्रन ते ताको सत्य करो भगवान॥
मूरति दीख्यो फिरि कपड़ाकी तामें करनलागि अनुमान८४
है यह मूरति पृथीराजकी मनमाँ ठीक लीन ठहराय॥
लैकै माला संयोगिनि सो मूरति गले दीन पहिराय ८५
देखि तमाशा सब राजा यह आशा छाँड़ि हृदयते दीन॥
बिदा मांगिकै महराजाते राजन गमन तहाँते कीन ८६
कूचके डंका बाजन लागे घूमन लागे लाल निशान॥
चलिभेराजा निज निज घरका करिकै शम्भुचरणको ध्यान८७

चढ़िकै डोलामें संयोगिनि सोऊ चली महल को जाय ॥
उठि महराजा फिरिमहिफिलते औ दरबार पहूंचे आय ८८
मंत्री बैठत भो बाँयेंपर दहिने बैठि विप्र सब जाय ॥
त्यही समइया त्यहि औसर में राजा बोल्यो भुजा उठाय ८९
कौन पिथौरा को जानत है सन्मुख ठाढ़ होय सो आय ॥
सुनिकै बातैं महराजाकी बूढ़ो विप्र उठा हर्षाय ९०
हमसों परचय पृथीराजसों ओ महराज कनौजीराय ॥
पाँच बरस हम दिल्ली रहिकै पूजाकीन तासु घर जाय ९१
भोजन पाये त्यहि महलनमें बैठ्यन संग तासु महराज ।
पूँछन चाहो का महराजा सो तुम कहौ आपनो काज९२
सुनिकै बातैं त्यहि ब्राह्मण की बोला तुरत कनौजीराय ॥
कस रजधानी है दिल्ली की कैसो बीर पिथौराराय ९३
सुनिकै बातैं ये जयचँद की बोला विप्र बहुत सुख पाय ॥
नाम हस्तिनापुर दिल्लीका जानो आपु कनौजीराय ९४
आगे राजा शन्तनु ह्वैगे गंगा भई जासु की नारि ॥
तिनसुत भीषम फिरि पैदा भे कीन्ह्यो परशुराम सों रारि ९५
दिन सत्ताइस का संगरभा दूनों तरफ चलै तहँ तीर ॥
मूर्च्छित ह्वैगे परशुराम जब गंगा आय छिनीक्यो नीर ९६
सनमुख ह्वैगे फिरि दोऊ मिलि युद्धको होनलाग सामान ॥
तब समुझायो बहु गंगाने अब नहिं करो युद्ध को ठान९७
तुम्हरो चेला यहु भीषम है ओ जमदग्नितनय बलवान॥
नाम तुम्हारो जग में ह्वैहै मानो सत्यबचन भगवान् ९८
चेला जिनको अस बलवन्ता है भगवन्ता के अनुमान ॥
धन्य बखानों तिन गुरु केरी रहिहै सदा जगतमें मान ९९

कहि ये बातैं परशुराम सों फिरि बहुपुत्र सिखावनदीन ॥
सुनिकै बातैं निज माताकी भीषमकहाबचनछलहीन १००
बिजयपत्र जो म्बहिं लिखिदेवैं तौ हम लौटि धामको जायँ॥
नाहिं तो टरिहौं ना संगर ते चहुतनधजीधजीउड़िजाय१०१
सुनिकै बातैं ये भीषम की औ हठ दीख टरै को नाहिं॥
तब तो गंगा परशुराम सों बोलींहाथजोरियहिठाहिं १०२
लरिका अरुझो बिजयपत्र को श्री जमदग्नितनय महराज॥
बिजयपत्र अब याको दीजै कीजैआपशिष्यकोकाज १०३
सुनिकै बिनती बहु गंगाकी तबतिनबिजयपत्रलिखिदीन॥
बिजयपत्र लै तहँ भीषमने औ पैलगी गुरूको कीन १०४
माथ नायकै फिरि गंगा को भीषम दीन्ह्यो शंख बजाय॥
परशुराम निज आश्रम गमने भीषम घरै पहूंचे आय १०५
चित्र बिचित्रबीर्य्य रहैं राजा भीषमकेर छोट दोउभाय॥
तेऊ मरिगे विना पूत के तिनघरब्यास पहूंचे आय १०६
आँधर पांडु बिदुर तिनलरिका जिनकारहा जगतयशछाय॥
अँधरे केरे दुर्य्योधन भे पांडुकेभये युधिष्ठिरराय १०७
दोऊ मिलिकै संगर ठान्यो तहँ सब क्षत्री गये बिलाय॥
भयो परीक्षित फिरि दिल्लीपति ज्यहिभागवतसुन्योहर्षाय१०८
कलियुगआयो त्यही राज में ओ महराज कनौजीराय॥
को गतिबरणैत्यहि कलियुगकै हमरे बूत कही ना जाय १०९
ऐसी दिल्ली की रजधानी जामें बसै पिथौराराय॥
रूपउजागर सब गुण आगर शोभाकही तासु ना जाय ११०
नित प्रति पूजै शिवशंकर का नाहर दिल्ली का सरदार॥
गदका बाना पटा बनेठी इनमाँबहुतभांतिहुशियार १११

चढ़ी जवानी पृथीराजकी कुश्ती लड़ै अखाड़े जायँ॥
खनखनठनठन भनभनमनमन कैसो शब्द कानमें जाय ११२
बाण चलावैं जहाँ तानिकै ताको तुरतै देयँ नशाय॥
ऐसे राजा पृथीराज हैं ओ महराज कनौजीराय ११३
सुनिकै बातैं त्यहि ब्राम्हन की फिरि ना बोल्यो चँदेलाराय॥
सभा विसर्जन करि जल्दी सों महलमें तुरतपहूंच्योजाय ११४
कियो बियारी फिरि मंदिर में सोयो रामचन्द्रको ध्याय॥
खेत छूटिगा दिननायक सों भंडागड़ानिशाकोआय ११५
तारागण सब चमकन लागे पक्षिन चुप्पसाधि तब लीन॥
चलेआलसीखटिया ताकितकि नाहक्जन्म बिधातै दीन ११६
आगे लड़िहैं पृथुइराज अब करिहैं घोर शोर घमसान॥
बैठो यारो अब थकिआयन मानो सत्यबचनपरमान ११७

इतिश्रीलखनऊनिवासि (सी,आई,ई) मुंशीनवलकिशोरात्मजबाबूप्रयागनारायण जीकीआज्ञानुसारउन्नामप्रदेशान्तर्गतपँड़रीकलांनिवासि मिश्रवंशोद्भव बुधकृपाशङ्करसूनु पण्डितललिताप्रसादकृत संयोगिनि स्वयम्बरोनामप्रथमस्तरंगः १॥

सवैया॥

भो शरणागतपाल कृपाल उदार अपार सबै गुण तेरे।
यांचि भयों शरणागत में न लह्यों अजहूं तुमको कहुँ हेरे॥
गावत संत महंत सबै कि हृदय बिच रामरहैं सब केरे।
सो नहिं टेरे सुनैं ललिते फलिते न भयेहैं मनोरथमेरे १

सुमिरन॥

चलेश्वरी पँड़री की गइये जिनकात्रिदितजगतपरताप॥
मन औ वाणी सों जो ध्यावै ताके छूटिजायँ सब ताप १

नित प्रति पाठ होयँ दुर्गाके औ तहँ करैं यती नित बास ॥
विधिसों पूजन जोकोउ कीन्ह्यो पूरणभई तासु की आस २
अगे दरक्खत है नींबी का बायें पीलूका अधिकार ॥
बरगद पीपर गूलर दहिने जिनकीशोभा अमितअपार३
प्रातःकाल नारि सब जावैं ध्यावैं देवी चरण मनाय ॥
सायंकाल पुरुष सब जावैं गावैं बेद ऋचन को जाय ४
पिता हमारे किरपाशङ्कर तहँपर पाठकीन बहुकाल ॥
फिरिम्बहिं सौंप्यो तिनदेवीका मानो सत्य सत्य सब हाल ५
तेरह बरसैं हमका गुजरीं चाकरभये नवल दरबार ॥
छुट्टी लैकै नवरात्रन में जावैं अवशि महीना कार ६
पाठ सुनावैं श्री दुर्गा की बालेश्वरी शरण में जाय ॥
जो कुछ मनमें हमरे होवै सो अभिलाष पूरि ह्वै जाय ७
प्रथम भागवत तहँपर बाँची साँची कथा कहौं सब गाय ॥
रुक्यों न काहू पदमें तहँ पर देवी कृपाभई अधिकाय८
छूटि सुमिरनी गै देवी के सुनिये जयचँद क्याहवाल॥
चन्दभाट दिल्लीको जाई आई दिल्लीका नरपाल ९

अथ कथाप्रसंग ॥

भोर भ्वरहरे पह फाटत खन सोयकै उठा कनौजीराय ॥
प्रातक्रिया करि सब जलदी सों फिरि दरबार पहूंचा आय १
बैठ्यो राजा सिंहासन पर भारी लागि गयो दरबार ॥
किह्यो पैलगी सब बिप्रनको क्षत्रिन कीन्ह्यो राम जुहार २
बूढ़ बिप्रसों फिरि बोलतभा दिल्ली कौन पठावा जाय ॥
सुनिकै बातैं चन्देले की बोल्यो बिप्र बचन हर्षाय ३
चन्दभाटको तुम पठवो अब सो पिरथीका लवै बुलाय ॥

देखन केरी अभिलाषा जो ओ महराज कनौजीराय ४
बूढ़े बाम्हन की बातैं सुनि लीन्ह्यो चन्दभाट बुलवाय॥
औसमुझायो फिरित्यहिकोसब यहु रणबाघु चँदेलोराय ५
सुनिकै बातैं चंदेले की चलिभो चन्दभाट शिरनाय॥
चढ़िकै घोड़ाकी पीठीमाँ दिल्ली शहर पहूंचा जाय ६
जायकै पहुँच्यो त्यहिफाटकमाँ जहँ दरबार पिथौरा क्यार॥
दीख पौंरिया चन्दभाट को गरुई हांक दीन ललकार ७
हुकुम दर्रो हुकुम दर्रो साहेबजादे बात बनाव॥
कहँते आयो औ कहँ जैहौ जल्दी आपन नाम बताव ८
सुनिकै बातैं दरवानी की बोल्यो चन्दभाट ततकाल॥
देश हमारो कनउज जानो जावैं जहाँ बैठ नरपाल ६
मोहिं पठायो जयचँद राजा हमरो चन्दभाट है नाँउ॥
खबरि जनावो पृथुइराज को ओ दरवानी बात बनाउ १०
सुनिकै बातैं चन्दभाट की सो दर्बार पहूंचा जाय॥
हाथ जोरिकै दोउ बोलतभा औ चरणनमें शीशनवाय ११
चन्दभाट कनउज ते आयो ओ महराज पिथौराराय॥
हुकुम जो पावों महराजा को तो मैं लावों साथ लिवाय १२
सुनिकै बातैं दरवानी की बोले पृथीराज महराज॥
लावो लावो त्यहि जल्दी सों आयोचन्दभाटक्यहिकाज १३
सुनिकै बातैं महराजा की दौरत चला पौंरिया जाय॥
सँग माँ लैकै चन्दभाट को औ दर्बार पहूंचा आय १४
चन्दभाट तब लखि पिरथी का दोऊ हाथ जोरि शिरनाय॥
कह्यो सँदेशा चन्देला जो सो पिरथीका दियो सुनाय १५
सुनि संदेशा चन्देले का भा मन खुशी पिथौराराय॥

साल दुसाला दिह्यो भाट को गल माँ हार दीन पहिराय १६
आगे पठयो चन्द भाट को पाछे हिरसिंह लियो बुलाय ॥
चन्द कबीश्वर को बुलवायो तासों कह्योहाल समुझाय १७
बाना बदल्यो पृथुइराज ने मन माँ श्रीगणेशको ध्याय ॥
सुमिरि भवानी शिवशङ्कर को औ सुर्य्यन को माथनवाय १८
तीनों चलिभे फिरि दिल्लीसों सीता राम चरण मन लाय ॥
आठ रोज को धावा करिकै कनउज धुरादबाइनिआय १९
त्यही समइया त्यहि अवसर माँ राजा कनउज का सरदार ॥
मन्त्री बैठरहै बायें माँ तासों बोल्यो बचन उदार २०
एक मना सोना को लैकै औ कारीगर लेव बुलाय ॥
मूरति रचिकै दरवानी की सो द्वारे पर देव धराय २१
सुनिकै बातैं महराजा की मन्त्री तुरत उठा शिरनाय ॥
मुरति पौंरिया की बनवायो औ द्वारे पर दियो रखाय २२
त्यही समइया त्यहि अवसरमाँ पहुँचा चन्दभाट फिरिआय ॥
खबरि सुनायो सब दिल्ली की औ चरणनमें शीशनवाय २३
हिरसिंह ठाकुर चन्द कबीश्वर तिनके साथ पिथौराराय ॥
तीनों मिलिकै त्यहि पाछे सों औ दरबार पहूंचे आय २४
दीख सिंहासनपर जयचँदको भारी तहां दीख दरबार ॥
बैठे क्षत्री अरझ्वारा सों एक सों एक शूर सरदार २५
दयर मुकदिमा बहु खूनी हैं बहुतक ठाढ़े तहां वकील ॥
कछऊ जेहल को पहुँचायेगे काहु कि दीनहथकड़ीढील २६
त्यही समइया त्यहिअवसर माँ आगे चन्दकबीश्वर जाय ॥
बहु पद गायो सभा मध्य में आपन दीन्ह्यो नाम बताय २७
कह्यो सँदेशा पृथुइराज ने ओ महराज कनौजीराय ॥

बहुत कामहैं यहि समया में । ताते सक्यों नहीं मैं आय २८
सुनि संदेशा दिल्लीपति का । बोला तुरत कनौजीराय ॥
सरबरि हमरी का नाहीं हैं । ह्याँ मुहँ कौन दिखावैं आय २९
सुनिकै बातैं चन्देले की । हिरसिंह ठाकुर उठा रिसाय ॥
ऐसी तुमको पै चहिये ना । जैसी कहौ कनौजीराय ३०
आज पिथौरा सब लायक है । ठाकुर समरधनी चौहान ॥
सनमुख लरिहै जो संगर में । रहिहै नहीं तासु को मान ३१
हम तो नौकर पृथुइराज के । तैसे नौकर अहिन तुम्हार ॥
कच्ची बातैं पै कहिये ना । राजा कनउज के सरदार ३२
हमैं बतइये अब टिकने को । ओ महराज कनौजीराय ॥
थके थकाये हम आये हैं । दोऊ नैन रहे अलसाय ३३
पाछे ठाढे पृथुइराज हैं । तिनको दीख चँदेलाराय ॥
मन अनुमान्योतव बहुविधिसों । औ मन्त्रीको लियोबुलाय ३४
सुखिया बांदी को बुलवाओ । तासों पान दिवाओ आय ॥
वह पहिचानै भल पिरथी को । सनमुख जातै गई लजाय ३५
सुनिकै बातैं महराजा की । मन्त्री चाकर लीन बुलाय ॥
तिनसों मंत्री यह ख्यालत भा । सुखिया बांदी लओबुलाय ३६
पाहुन आये हैं दिल्ली सों । तिन को पान खवावै आय ॥
एक के कहतै तब दुइदौरे । चाकर तीन पहूंचे जाय ३७
सुखिया सुखिया कै गोहरावा । सुखिया बांदी बात वनाउ ॥
तुम्हैं बुलावा महराजा है । जल्दीनिकरि महलतेआउ३८
सुनिकै हल्ला तिन चकरन को । सुखिया चलीतड़ाकाधाय ॥
द्वार आई दरवाजे के । पूंछनिलागिहालसबआय ३९
हाल पायकै सब चकरन ते । मनमाँ गई सनाका खाय ॥

लज्जा करिहौं यहि समया में मारा जाय पिथौराराय ४०
यहै सोचिकै मन अपनेमाँ महलन तुरत पहूँची आय ॥
लैकै डिब्बा सोनेवाला तामें बीरा धरे लगाय ४१
लैकै डिब्बा फिरि महलन सों चकरन साथ चली हर्षाय ॥
जायकै पहुँची त्यहि मन्दिर में जहँ पर बैठ कनौजीराय ४२
औ रुख दीख्यो महराजा को सब को दीन्हो पान गहाय ॥
रंचक लज्जा जब दीख्यो ना तब मनस्वचा कनौजीराय ४३
नहीं पिथौरा इन तीनोंमाँ नाहक गयो हृदय भ्रमछाय ॥
यहै सोचि कै मन अपने माँ फिरि मंत्रीकोलियोबुलाय ४४
इन्हैं टिकावो लै बगिया माँ खीमा तहाँ देव गड़वाय ॥
हुकुम पायकै महराजा का तीनों निकर द्वारपर आय ४५
मूरति दीख्यो फिरि द्वारपर जो अनुहारि पिथौरा केरि ॥
बार बार तहँ तीनों मिलिकै सब अँग रहे तासुके हेरि ४६
मूरति दीख्यो निज सूरतिकै तब जरिमरा पिथौराराय ॥
जायकै पहुँच्यो फिरि बगियामें तम्बू गड़ा तहाँपर आय ४७
बिछेउ पलँगरा तहँ निपारि को मखमल गद्दा दियो डराय ॥
धरेउ उशीशे में गिरदा को तामें ल्यट्यो पिथौराराय ४८
त्यही समइया त्यहि औसरमाँ औ पदमिनिका सुनो हवाल ॥
त्यहिसुनिपावानिजमहलनमाँ बगियाटिक्योआयनरपाल ४९
तब ललकारा निज बाँदिनका अबहीं पलकी लबो लिवाय ॥
सुनिकै बातैं संयोगिनि की तेसब पलकी लईं सजाय ५०
सुमिरि भवानी शिवशंकर को मनमें श्रीगणेश को ध्याय ॥
बैठि पालकी में संयोगिनि मनमें सियामातु पदलाय ५१
जायकै पहुँची त्यहि बगिया में जहँ पर टिका पिथौराराय ॥

उतरिकै पलकी सों जल्दीसों माला गले दीन पहिराय ५२
बिरा खवायो पृथुइराज को आपन नाम दीन बतलाय॥
हाथजोरिकै संयोगिनि फिरि बोली आरतवचन सुनाय ५३
देवी देवता हम सब ध्याये ओ महराज पिथौराराय॥
दर्शन तुम्हरे तब हम पाये तुवमन काह देउ बतलाय ५४
बातैं सुनिकै संयोगिनि की बोल्यो पृथुइराज महराज॥
लड़ब चँदेले सों सँमरामरि पदमिनिअबशितुम्हारेकाज ५५
मानभंग करि चन्देले को डोला लै दिल्ली तब जाउँ॥
जो अस कनउज मॉ करिहौंना तौ नहिं कह्यो पिथौरानाउँ ५६
धीरज राखो अपने मनमॉ अबतुम लौटि महलको जाउ॥
पन्द्रह सोलह दिनके भीतर हम तुम होब एकही ठाउँ ५७
बातैं सुनिकै महराजा की तब चरणन में शीश नवाय॥
बैठि पालकी में संयोगिनि सीता रामचरण पद्ध्याय ५८
चारि कहरवा मिलि डोला लै महलन तुरत दीन पहुँचाय॥
गै संयोगिनि जब महलन को पौढ़ी तुरत पलँग पर जाय ५९
सेन छूटिगो दिननायक सों झण्डा गड़ो निशाकोआय॥
तारागण सब चमकन लागे सनू सनू सनासन्न गाछाय ६०
सोय पिथौरा गे तम्बू में महलन स्वबा चँदेलाराय॥
पक्षी बोले चौगिर्दाते मुरगन बॉग दीन हर्षाय ६१
जगा चँदेला तब महलन में तम्बू जगा पिथौराराय॥
प्रातक्रिया करि तबदोनों नृप आपन आपन इष्ट मनाय ६२
बैठ्यो महलन में चन्देला तम्बू बैठ पिथौराराय॥
अपने मन्त्री को बुलवायो यहु महराज कनौजीराय ६३
लाल दुशाला मोतिन माला हीरा पन्ना लीन मँगाय॥

चन्दकवीश्वर के मिलने को तुरतै चला चँदेलाराय ६४
जायकै पहुँच्यो त्यहि तम्बू में जहँ पर बैठ बीर चौहान॥
चन्दकवीश्वर के आगेधरि कीन्ह्योबहुतभांतिसनमान ६५
उठा पिथौरा तब आसन ते आयो जहाँ चँदेलाराय॥
हाथ पकरिकै चन्देले को अपने हाथे दिह्यो चपाय ६६
देखि बीरता पृथुइराज की तब पहिचना कनौजीराय॥
चन्दकवीश्वर को दैकै सब फिरि दरबार पहूँचा आय ६७
हुकुम लगायो निज मन्त्री को बहुतक मल्ल लेउ बुलवाय॥
जाय न पावैं दिल्लीवाले इनका कटा देउ करवाय ६८
त्यही समइया त्यहि अवसरमाँ पृथुइ कूच दीन करवाय॥
कनउज तेरी उत्तर दिशिमाँ पहुंचे पांच कोसपर जाय ६९
हिरसिंह ठाकुरको तहँते फिरि तुरतै दिल्ली दीन पठाय॥
साजिकै फौजै चतुरंगिनि को हमको यहाँ मिलौ तुमआय७०
सुनिकै बातैं पृथुइराज की हिरसिंह चला तुरत शिरनाय॥
जायकै पहुँच्यो फिरि दिल्ली में औ सब खबरि सुनाई जाय ७१
सुनिकै बातैं सब हिरसिंह की मनमाँ कान्हकुँवर मुसुकाय॥
हुकुम लगायो निज मन्त्री को पुरमें डौंड़ी दो बजवाय ७२
हुकुम पायकै कान्हकुँवर को पुरमें बजन नगारा लाग॥
धम् धम् धम् धम् बाजन लाग्यो मानों मेघ गरज्जन लाग ७३
शब्द नगारा का सुनतै खन क्षत्री सबै भये हुशियार॥
अपने अपने तब चकरनको क्षत्रिन गरू दीन ललकार ७४

सवैया॥

कोऊ कहैं दल हाथिन लाउ सजाउ बछेड़न को गोहरावैं।
कोऊ कहैं रथ बैल सँवारु गँवारु अबै का देर लगावैं॥

कोऊ तहाँ नलकी पलकी सजि सुन्दर तापर सेज लगावैं।
गावैं कहाँलौं कवीललिते फलिते रघुनाथके जे गुणगावैं ७५

बन्दन करिकै श्रीगणेश को दशरथ नन्दन हृदय मनाय॥
तब हम गावैं फिरि आल्हाको जामें काज सिद्धि ह्वैजाय ७६
सजा रिसाला घोड़नवाला लगभग तीसलाख अनुमान॥
पन्द्रहलाख सजे हाथी तहँ पैंतिसलाख सिपाही ज्वान ७७
साजि साजि तोपैं अष्टधातु की सोऊ होन लगीं तय्यार॥
बैल नहायेगे तोपन में गाड़िन गोला भरे अपार ७८
हथी महावत हाथी लैकै औ पृथ्वीमाँ देयँ बिठाय॥
धरिकै सीढ़ी साँखूवाली हौदा तिनपर देयँ चढ़ाय ७९
बारह कलशा सोनेवाले ते हौदापर देयँ धराय॥
डरैं अँबारी जिन हाथिन के तिनकीशोभाकही न जाय ८०
को गति बरणै तिन हाथिनकै घण्टा गरे रहे हहराय॥
छाय अँधेरिया गै दिल्ली में हाथी हाथी परैं दिखाय ८१
अंगद पंगद मकुना भौंरा सोहैं श्वेत बरण गजराज॥
मैनकुंज मलया धौरागिरि कहुँ इइदन्ता रहे बिराज ८२

सवैया॥

हाथिन के दल बादलसों नभ छायगयो रजभानु लुकाने।
मेरु समान महान सबै जिनके पदभार अहीश सकाने॥
नाद करैं तिन ऊपर बीर अधीर भये सुरराज छिपाने।
ललिते गजराज लखेमहराज तबै मनमें अतिही हर्षाने ८३

साजिगे हाथी जब सबियाँ तहँ घोड़ासजनलागि त्यहिकाल॥
कोउ कोउ घोड़ा हंस चालपर कोउकोउजातमोरकीचाल ८४
रण की मौहरि बाजन लागी रणका होन लाग व्यवहार॥

ढाढ़ी करखा बोलन लागे बिप्रन कीन बेद उच्चार ८५
कूच के डंका बाजन लागे घूमन लागे लाल निशान॥
को गति बरणै त्यहि समया कै एकते एक सुघरुवा ज्वान ८६
हुकुम पाय कै कान्ह कुँवरको हिरसिंह कूच दीन करवाय॥
आगे हलका भा हाथिन का पाछे चला रिसाला जाय ८७
चले सिपाही त्यहि पाछे सों एक सों एक दई के लाल॥
खर खर खर खर कै रथ दौरैं रब्बा चलैं हवा की चाल ८८
जैसे नदियाँ चलैं समुंदर तैसे चली फौज त्यहि काल॥
डगमग डगमग पृथ्वी हाली मारग बासी भये बिहाल ८९
शूर सिपाही ईजति वाले दहिनी धरैं मूछ पर हाथ॥
मनै मनावैं रामचन्द्र को बारम्बार नाय कै माथ ९०
कायर सोचैं यह मनमाँ सब लैकै बड़ी बड़ी तहँ श्वास॥
हम मरिजइबे समरभूमि में होई बंश हमारो नाश ९१
हम भगिजावैं जो रस्ताते तोहू नहीं जीव की आश॥
लौटि पिथौरा जब घर जैहै करि है अवशिहमारो नाश ९२

कुंडलिया॥

यारो सायर दशभले कायर भले न पचाश।
सायर रणसम्मुख लड़ैं कायरप्राण कि आश॥
कायर प्राण कि आश भागि रणते ह्वैआवैं।
आपु हँसावहिं और कुटुँब को नाम धरावैं॥
कहि गिरिधरकबिराय बातचारहुयुग जाहिर।
सायर भलेहैं पांच संग सौ भले न कायर ९३

ऐसे कायर सब सोचत भे जिनकी कही कथा ना जाय॥
परैं नगारन में चोटैं जब उनके होयँ करेजे घाय ९४

शूर सिपाही बाजा सुनि सुनि मनमाँ अधिकअधिक हरषायँ ॥
मारु मारु कै कोउ बोलत भे कोऊ दांतन ओठ चबायँ ९५
या बिधि फौजैं सब दिल्ली की दाबति चली कनौजै जायँ ॥
आठ दिनौना के अर्सा में पहुंचीं जहाँ पिथौराराय ९६
देखिकै फौजैं दिल्ली वालो ठाकुर समरधनी चौहान ॥
गले लगायो फिर हिरसिंह को कीन्ह्यो बहुत भांति सनमान ९७
गोबिंद राजे कान्ह कुँवर को भेंटत भयो पिथौराराय ॥
कुँजधर ठाकुर औ सुकुन्दा येऊ मिले शीश को नाय ९८
तम्बू गड़िगे महराजन के डेरा गड़े सिपाहिन केर ॥
बीचम तम्बू पृथुइराज को चारो तरफ रहे सब घेर ९९
गड़िगे झण्डा सब तम्बुन ढिग ते सब आसमान फहरायँ ॥
को गति बरणै तिन झण्डन कै हमरे बूत कही ना जाय १००
तंग बछेड़न के छूटतभे क्षत्रिन छोरिधरा हथियार ॥
ह्याँ महराजा कनउज वाला आला शूरबीर सरदार १०१
बहु ढुँढ़वावा त्यहि पिरथी का पावा कतों न पता निशान ॥
तब बुलवावा फिरि मंत्री को करिकै बहुत भांति सनमान १०२
हम सुनिपावा हरकारा सों मंत्री सुनो वचन धरिध्यान ॥
चढ़िकै आवा दिल्लीवाला ठाकुर समरधनी चौहान १०३
काल्हि सबेरे संगर ह्वैहै सीताराम लगइहैं पार ॥
पुरमें डौंड़ी को बजवावो सबियाँ होय फौज तय्यार १०४
सुनिकै बातैं महराजा की मंत्री चला शीशको नाय ॥
जाय नगरची को बुलवायो ताको दीन्ह्यो हुकुमसुनाय १०५
ब्यारी करिकै फिरि संध्याको सोये तुरत पलँगपर जाय ॥
यहु महराजा कनउजवाला सोऊ महल पहूँचाजाय १०६

चौकी परिगै तहँ सोने की तापर बैठ राम को ध्याय ॥
मधुर मिठाई औ मेवा कछु भोजनकीनवहुतसुखपाय १०७
खबरि सुनाई सब रानी को जो चढ़िअवा पिथौराराय ॥
सुनिकै बातैं महराजा की रानी बोली शीश नवाय १०८
तुम ना भाग्यो समरभूमि ते वहुतन धजीधजी उड़िजाय ॥
कोउ अमरौती ना खावा है ना कउआवा पीठिमढ़ाय १०९
कालके हाथ कमान चढ़ी है ना कोउ बची बूढ़ ना ज्वान ॥
यकदिन मरना है सबही को स्वामीकरो बचन परमान ११०
जो तुम भगिहौ समरभूमिते बूड़ी तीनिसाखिको नाम ॥
लड़िकै मरिहौ जो सम्मुख में जैहौ तुरत राम के धाम १११
बचिकै अइहौ जो कनउज में पैहौ सदा नृपन में मान ॥
जीवन ताही को भलजानो जाकी रहै जगतमें शान ११२
ऐसी बातैं रानी कहिकै पलँगापरै गई अलसाय ॥
राजौ सोये फिरि महलन में औअतिविकट्ठनींदकोपाय११३
खेत छूटिगो दिननायक सों झंडागड़ा निशा को आय ॥
तारागण सब चमकन लागे चोरनखुशीभई अधिकाय ११४
होई लड़ाई अब आगे जस तब तस देबै गाय सुनाय ॥
बैठो यारो अब दमलेवो सीताराम चरणको ध्याय ११५

इति श्रीलखनऊ निवासि (सी,आई,ई) मुंशी नवलकिशोरात्मज बाबू प्रयागनारायणजीकी आज्ञानुसार उन्नामप्रदेशान्तर्गत पँड़रीकलां निवासि मिश्रवंशोद्भव बुधकृपाशङ्करसूनु पं० ललिताप्रसादकृत पृथुइराजकी चढ़ाई वर्णननाम द्वितीयस्तरंगः २ ॥

सवैया ॥

हे ममसातु विदेह कुमारि खरारि कि नारि पियारि पिताकी।
जेऊ गये शरणागत में सुखि तेऊभये वसुधामें पताकी ॥
अन्तसमय स्वइ ऐसे भये जिनकी शरणागत इन्द्रहुताकी।
दीन पुकार करै ललिते वलितेऊहौं जाऊं विदेह सुताकी १

सुमिरन ॥

काली ध्यावों कलकत्ते की शारद मइहर की सरनाम ॥
बिन्ध्यवासिनी के पद ध्यावों ज्वालामुखिको करों प्रणाम १
देबी चरिडका बकसरवाली तिनके दोऊ चरण मनाय ॥
देबी कुसेहिरी औ दुर्गा को ध्यावों बार बार शिरनाय २
महाकाल शिव उज्जैनी के जिनकाविदितजगतपरताप ॥
तिनके दर्शन के कीन्हे ते छूटत नरन केर सब ताप ३
मैं पद ध्यावों शिवशंकर के काशी विश्वनाथ महराज ॥
जिनके दर्शन के कीन्हे ते अबहूं रहत जगत में लाज ४
फेरि मनावों रामेश्वर को पशुपतिनाथ क्यारकरिध्यान ॥
बैजनाथ लोधेश्वर गावों पावों बुद्धि और बल ज्ञान ५
छूटि सुमिरनी गै देवन कै शाका सुनो शूरमन केर ॥
फौजैं साजिहैं चन्देले की कनउज लेई पिथौरा घेर ६

अथ कथाप्रसंग ॥

भयो आगमन जब सुर्यन को पक्षिन कीन बहुत तब शोर ॥
मुर्गा बोले सब गाँवन में जंगल नचनलाग तब मोर १
जगानगड़ची फिर कनउजमाँ करिकै कृष्णचन्द्र को ध्यान ॥
धरा नगाड़ा फिरि सँड़ियापर बाजन लाग घोर घमसान २
शब्द नगाड़ा का सुनतेखन क्षत्री सबै भये हुशियार ॥

पहिरि सिपाही झिलमैं लीन्ह्यो हाथ म लई ढाल तलवार ३
कच्छी मच्छी नकुला सब्जा हरियल मुश्की घोड़ अपार ॥
साजन लागे सब जल्दी सों जिनका तनक न लागै बार ४
डारि हयकलैं तिनके गलमा मुखमा दीन लगाम लगाय ॥
गंगा यमुनी छोंड़ि रकाबै पूंजी पटा दीन पहिराय ५
नाल ठोकाई तिनके सुम्मन रेशम तंग दीन कसवाय ॥
को गति बरणै तिन घोड़न कै हमरे बूत कही ना जाय ६
हंथी महावत हाथी लैकै तिनका दीन तुरत बैठाय ॥
चुम्बक पत्थर का हौदा धरि जिनमें सेल बरौंत्रा खाय ७
साजि साँड़िया सब जल्दी सों छकरन लीन बरूद भराय ॥
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातु की गोला एक मनाको खायँ ८
बैल नहाये तिन तोपन में औ डाँड़े को दीन हँकाय ॥
जागा राजा कनउज वाला मनमाँ श्रीगणेशको ध्याय ९
उठिकै महलन सों जल्दी सों औ दरबार पहूंचा आय ॥
हमाँ जमाँ औ रायलंगरी इनका लीन्ह्यौं तुरतबुलाय १०
सुब्हृत ठाकुर रतीभान औ दोऊ आय गये दरबार ॥
माथ नवायो महराजा को दोऊ बड़े शूर सरदार ११
हाथ जोरिकै मंत्री बोल्यो राजन मानो बचन हमार ॥
हाथी घोड़ा सजे सिपाही छकड़ा नहे ठाढ़ तय्यार १२
धावन पठयो पृथीराज ने सो दरबार पहूंचा आय ॥
हाथ जोरिकै धावन बोल्यो ओ महराज कनौजीराय १३
मोहिं पठायो पृथुइराज ने औ यह कह्यो बात समुझाय ॥
डोला दैदें संयोगिनि का तौ हम लौटि धामको जायँ १४
नाहिंतो बचिहैं ना कनउजमाँ जो विधि आपु बचावैं आय ॥

हवै भलाई डोला दीन्हें नहिं शिर कालरहा मन्नाय. १५
सुनिकै बातैं ये धावन की बोला तुरत कनौजीराय ॥
खबरि सुनावो तुम पिरथी को डाँड़ने कूच देयँ करवाय १६
जितनी राँड़ैं लइआये हैं सो बिन घाव एक ना जायँ ॥
खेदिकै मारों मैं दिल्ली लों नेका टका लेउँ निकराय १७
दहीके धोखे कहुँ भूलैंना जो वै जायँ कपास चबाय ॥
शूर सिपाही हैं कनउज के जिनका दीखे काल डेराय १८
सुनिकै बातैं महराजा की धावन चला शीशको नाय ॥
खबरि सुनाई सब जयचँद की सुनि जरिमरा पिथौराराय १६
हुकुम लगायदयो क्षत्रिन को क्षत्री कमरबन्ध तय्यार ॥
लड़ने मरने के सब लायक एक ते एक शूर सरदार २०
मारू बाजा बाजन लागे घूमनलागे लाल निशान ॥
भयो सवार तुरत हाथीपर ठाकुर समरधनी चौहान २१
तीर कमान लयो हाथेमाँ कम्मर बँधी ढाल तलवार ॥
को गति बरणै तब पिरथी कै नाहर दिल्ली का सरदार २२
घूमन लाग्यो सब मुर्चन माँ तोपन गोला दीन भराय ॥
यही समइया यहि औसरमाँ यहु रणबाघु कनौजीराय २३
हुकुम लगायो रजपूतन को जल्दी कूच देव करवाय ॥
आपौ चढ़िकै फिरि हाथीपर मनमाँ श्रीगणेशकोध्याय २४
चलिभो लश्कर सब कनउजते औ मुर्चा में पहूँचे आय ॥
बम्ब के गोला छूटन लागे हाहाकार शब्द गा छाय २५
को गति बरणै तब तोपनकै धुवना रहा सरग मड़राय ॥
गोला लागैं जिन हाथिन के मानों गिरैं धौरहर आय २६
गोला लागैं जिन ऊंटन के ते मुहँभरा गिरैं अललाय ॥

जौने वैलके गोला लागै मानों मगर कुल्यँचै खाय २७
जौने वछेड़ा के गोला लागै आधे सरग लिहे मड़राय ॥
गोला लागै ज्यहि क्षत्री के साथै उड़ाचील्ह असजाय २८
वड़ी दुर्दशा भै तोपन में हाहाकारी शब्द सुनाय ॥
दोनों दल आगे को वढ़िगे तोपन मारु बन्द ह्वै जाय २९
गोला ओला सम वरसत भे सन सन सन्नकार गा छाय ॥
चलैं बँदूखै वादलपुरकी जो नब्बेकी एक बिकाय ३०
मघा नखत सम गोली वरसैं डोलिन घहिया जायँ उठाय ॥
को गति वरणै वन्दूखन की हमरे बूत कही ना जाय ३१
दूनों दल आगेको वढ़िगे संगम भये शूर सरदार ॥
सूँढ़ि लपटा हाथी भिड़िगे अंकुशभिड़े महौतनक्यार ३२
हौदा हौदा यकमिल ह्वैगे क्षत्रिन खैंचि लीन तलवार ॥
भाला वरछिन सों कउ मारैं कोऊ लेयँ ढालकी वार ३३
सूँढ़ि लपेटे जंजीरन को हाथी रणमा रहे घुमाय ॥
लागि जँजीरैं जिनके जावैं तिनके अंग भंग ह्वैजायँ ३४
मस्तक मस्तक गजके मारैं अद्भुत समर कहा ना जाय ॥
भाला छूटे असवारन के खन खन ठन्न ठन्न गा छाय ३५
चम चम चमकैं तलवारी तहँ मर मर रगड़ ढालकी होय ॥
घम् घम् घम् घम् बजैं नगारा बोलैं मारु मारु सब कोय ३६
खट खट खट खट तेगा बोलैं बोलैं छपा छप्प तलवार ॥
झल्झल्झल् झल्छूरीझलकैं तिनसों होयतहाँ उजियार ३७
ज्यहिकी वारन जो चढ़ि जावै सो हनिदेय ताहि तलवार ॥
अपन परावा कछु सूझैना दोनों हाथ होय तहँ मार ३८

सवैया ॥

तीर छुटैं पृथुराज कमान सों ते बहु शूरन के शिरकाटैं।
भूमिअकाशनदेखिपरै शिरऔभुजसों सबही दिशिपाटैं॥
मत्त गयन्द गिरैं हहराय बजायकै ताल सबै नर डाटैं।
शूरनकी ललकार सुनै ललिते सबकायरके हियफाटैं २९

भये सनाका कायर मनमाँ शूरन रहा मोद अतिछा
बड़ी लड़ाई भै कनउज माँ कोउ रजपूत न रोंकै पाय
रक्तकिनदियातहँवहिनिकरी जूझे बड़े बड़े सरद
हाथी गिरिगे आस पास माँ सोहैं मानो नदी कगा
छूरी मछली सम सोहत भईं ढालैं कछुवा सम उतर
भुजा औ जाँघैं रणशूरन की गोहैं सरिस वही तहँ जा
बहैं सिवारा जस नदिया माँ तैसे तहाँ बार उत
बहैं लहासैं जो शूरन की तिनमाचढ़े गिद्धखगजाय
जैसे डोंगिया माँ चढ़िकै नर खेलैं नदी नेवारा उ
तैसे लहासैं रण शूरनकी तिनपरचील्ह कागउतरा
तीन दिनौना याविधि गुजरे तहँपर खूब चली तल
ना ई हारे दिल्ली वाले ना उइ कनउज के सरद
आगे बढ़िकै पृथुइराज ने गरुई हांक दीन लल
बात हमारी तुम सुनिलेवो राजा कनउज के सरद
डोला भँगावो संयोगिनि को सो रण खेनन देउ
जीति विधाता जाको देई सो डोलाको लयई उठा
बाम्हन केरी बहुबस्ती है ओ महराज कनौजी
होई लड़ाई पुर भीतर में परजै दुःखमिली अधिक

दुखी जो बाम्हन ह्याँपर होइहैं तौ सब क्षत्री धर्म नशाय ॥
सुनिकै बातैं पृथुइराज की भा मन खुशी चँदेलाराय ४६
डोला मँगायो संयोगिनि को सो रण खेतन दीन धराय ॥
देखिकै डोला संयोगिनि को बोला तुरत पिथौराराय ५०
लड़ो सिपाही दिल्लीवाले डोला तुरत लेउ उठवाय ॥
जीतिकै चलिहौ जोकनउजते चौगुन तलब देब घरजाय ५१
दै दै पानी रजपूतन को पिरथी सब को दीन जुझाय ॥
फिरि मुकुन्द औ रतीभानको मुर्चा परो बरोबरि आय ५२
दोऊ बराबरि के क्षत्री हैं दोऊ समरधनी बलवान ॥
खैंचि सिरोही ली मुकुन्द ने करिकै रामचन्द्र को ध्यान ५३
हनिकै मारा रतीभान को ठाकुर लीन्ह्यों वार बचाय ॥
औ ललकारा फिरि मुकुन्दको अब तुम खबरदार ह्वैजाय ५४
वार हमारी सों बचिहौना तुमका लावा काल बुलाय ॥
यह कहि मारा तलवारी को सो फिरि परी ढालपरजाय ५५
बचिगा ठाकुर दिल्ली वाला ज्यहिका राखिलीन भगवान॥
सो फिरि बोला रतीभान सों करिकै मनै बड़ा अभिमान ५६
किह्यो लड़ाई है लरिकन सों कबहुँन परा ज्वानते काम ॥
सँभरिकै बैठो अब घोड़ा पर तुमको पठैदेउँ यमधाम ५७
खैंचिकै मारा रतीभान को सोऊ लीन ढाल की वार ॥
मुठिया रहिगै कर मुकुन्द के रणमा टूटि गिरी तलवार ५८
गद्दी कटिगै मखमल वाली औ फटिगई गैंड़की ढाल ॥
रिसहा ह्वैगा रतीभान तहँ दोऊ नैन भये तब लाल ५९
ऐंचि सिरोही को कम्मर सों मारा रतीभान बलवान ॥
गिरा तड़ाका शिर धरती माँ मरिगा तुरत मुकुन्दाज्वान ६०

मरा मुकुन्दा रण खेतनमें सुग्धृत ठाकुर चला रिसाय ॥
तब ललकारा त्यहि हिरसिंहने ठाकुर खबरदार ह्वैजाय ६१
जयो नगीचे ना डोलाके नहिं शिर धरती देउँ गिराय ॥
सुनिकै बातैं ये हिरसिंह की सुग्धृत भाला लीन उठाय ६२
ताकिकै मारा सो हिरसिंह के ठाकुर लैगा वार बचाय ॥
खाली वार परी सुग्धृत की तबमनगयो सनाकाखाय ६३
ऐंचि सिरोही फिरि कम्मर सों मारा हरीसिंह को जाय ॥
बचिगा ठाकुर फिरि दिल्लीका औमनकोपकीनअधिकाय ६४
खैंचिकैमारा तलवारी को सुग्धृत गिरा धरणि महराय ॥
मरिगा ठाकुर जब कनउज का आयो हमाँ जमाँ तब धाय ६५
हमाँ जमाँ के तब मुर्चा में गोविंद नृपति पहूँचा आय ॥
औ ललकारा फिर शूरन को तुरतै डोला लेउ उठाय ६६
डोला उठायो रण शूरन ने औ दिल्ली को चले दबाय ॥
हमाँ जमाँ तब निज शूरन ते बोले दोऊ भुजा उठाय ६७
जान न पावैं दिल्ली वाले मारो इनका खेत खिलाय ॥
सुनिकै बातैं हमाँ जमाँ की क्रोधित चले सिपाहीधाय ६८
चलीं जुनब्बी औ गुजराती ऊना चलै बिलाइति क्यार ॥
भाला बरछिन की मारुइ भइँ कोताखानी चलैं कटार ६९
कटि कटि क्षत्री गिरे खेत माँ हाथिन लागे ऊंच पहार ॥
पैदल पैदल सों मारुइ भइँ औ असवार साथ असवार ७०
बिकट लड़ाई क्षत्रिन कीन्ह्यो देखता काँपि उठे असमान ॥
शूर सिपाही ईजति वाले तिनतजिदीनआसराप्रान ७१
मान न रहिगे कोउ क्षत्री के सब के टूटि गये अभिमान ॥
पृथुइराज औ जयचंद राजा दोऊ दीन लड़ाई ठान ७२

हमाँ जमाँ औ गोबिंद राजा दोऊ समरधनी बलवान ॥
फिरि फिरि मारैं औ ललकारैं दोऊ एक बैस के ज्वान ७३
गदा बनेठी केर खिलारी करि पैंतड़ा लड़ैं मैदान ॥
बारु बराबरि प्राणन जानैं एकते एक बढ़े अभिमान ७४
हमाँ जमाँ जब भाला मारैं गोबिंद राजा लेयँ बचाय ॥
मारैं गोबिंद तलवारी सों सोऊ लेयँ ढाल पर आय ७५
बड़ी लड़ाई भै गोबिंद कै हमरे बूत कही ना जाय ॥
जो हम गावैं बिस्तारित करि तौफिरिएकसाललगिजाय७६
खैंचि सिरोही हमाँ जमाँ ने मास्यो बीच गला को ताकि ॥
तबहीं शिर धरती माँ गिरिगा बोल्यो मारुमारु मुह हांकि७७
बिन शिर धड़ रणमाँ तब दौरा हाथ में लिये ढाल तलवार ॥
ज्यहि दिशिजावै रणमंडलमें त्यहिदिशिजूझैंशूरअपार ७८
ब्याकुल क्षत्री चौगिर्दा ते बिन शिर लड़ै बीरबलवान ॥
शंका ब्यापी रण शूरन के कायर भागे छांड़ि परान ७९
नील कि झंडी ताहि छुवायो छुवतै गिरा तुरत महराय ॥
तौलौं डोला संयोगिनि का लैगे ग्यरा कोस पर जाय ८०
तब महराजा कनउज वाला बोला सब सों वचन रिसाय ॥
नालति ऐसी रजपूती का औधिरकाल जिंदगी भाय ८१
डोला जाई जो दिल्लीमाँ तौ यश जाई सबै नशाय ॥
मानुष देही फिरि मिलिहै ना तातेख्यालौ लोह अघाय ८२
बीर बखानों दुर्य्योधन को ज्यहियशआपनलीनबचाय ॥
जो कछु भाखा सो सब राखा औतजिदीन पुत्रधन भाय ८३
धन्य बखानों त्यहि रावण को ज्यहि हरिलीन रामकी नारि ॥
सम्मुख जूझी त्यहि रघ्पतिसन करिकै रामचन्द्र सों रारि ८४

समय समइया की बातैं हैं समया परै न वारम्बार ॥
समया परिगा राजा नलपर खूंटी हरा नौलखाहार ८५
रोज न मुर्चा कनउज ह्वैहै रोज न चढ़ी पिथौरा ज्वान ॥
मारो मारो ओ रजपूतो सुनिकै बात हमारी कान ८६
इतनी सुनिकै सब क्षत्रिन ने अपनो मरण कीनअखत्यार ॥
भाला बरछी दोउ दल छूटे औफिरिचलनलागितलवार८७
धरिधरि धमकैंकड़ाबीन कोउ कोऊ मारैं खैंचि कटार ॥
बड़ी लड़ाई क्षत्रिन कीन्ह्यो नदिया बही रक्तकीधार ८८
जैसे फागुन फगुई खेलैं तैसे लड़ैं वीर चौहान ॥
मुहँ नहिं फेरैं समरभूमि ते एकते एक वीर बलवान ८९
तबलों डोला संयोगिनि को पहुँचा तीस कोसपर जाय ॥
रिसहा राजा कनउज वाला बहुतक क्षत्री डरा नशाय ९०
तबलों डोला संयोगिनि को आड़्यो रतीभान तहँ जाय ॥
बहुतक क्षत्री घायल कैकै सो पृथ्वीमाँ दीन सुवाय ९१
कोगति बरणै रतीभानकै हमरे बूत कही ना जाय ॥
फिरि फिरि मारै औ ललकारै रणमाँ घोड़ा रहा नचाय ९२
रतीभान के तब मुर्चा में कोउ रजपूत न रोंकै पायँ ॥
सम्मुख आवै जो लड़ने को ताको मारैं खेत खेलाय ९३
देखि लड़ाई रतीभान की हिरसिंह ठाकुर उठा रिसाय ॥
औ ललकारा रतीभान को ठाकुर खबरदार ह्वैजाय ९४
तबलों डोला संयोगिनि को दिल्ली शहर पहूँचा जाय ॥
पाछे मारै औ ललकारै यहु महराज कनौजीराय ९५
तीर अनेकन पिरथी मारे लाखन डारे शूर नशाय ॥
बड़ा लड़ैया यहुतीरन में ज्यहिका कही पिथौराराय ९६

दिल्ली केरे तब फाटक पर भारी भीर भई तहँ आय ॥
रतीभान औ कान्ह कुवँर तहँ दोऊ रहिगे पैर जमाय ९७
दोऊ मारैं दोउ ललकारैं मानैं कोऊ नहीं तहँ हारि ॥
वसरिन वसरिन याबिधि खेलैं जैसे कुवाँ भरै पनिहारि ९८
बैस बराबरि है दोऊ के दोऊ बड़े लड़ैया ज्वान ॥
पृथुइराज औ जयचँदराजा येऊ करैं घोर घमसान ९९
रायलंगरी हिरसिंह ठाकुर येऊ खूब करैं तलवारि ॥
अपने अपने सब मुर्चन में मानैं कऊ न नेको हारि १००
मारो मारो भुजा उखारो सब दिशि यहै रहे चिल्लाय ॥
भरि भरि खप्पर नचैं योगिनी मज्जनकरैं भूत तहँ आय १०१
स्यार औ कुत्तनकी बनिआई कागन लागी कारि बजार ॥
चील्ह गीध ये सउदा लैकै अपने घरका भये तयार १०२
रतीभान औ कान्ह कुवँर तहँ दोऊ बीर करैं मैदान ॥
हनि हनि भाला दोऊ मारैं नहिं भयकरैं नेकहू ज्वान १०३
लाखन जूझे दिल्ली वाले लाखन कनउज के सरदार ॥
रतीभानने त्यहि समया माँ हाथमलीन नांगि तलवार १०४

सवैया ॥

जूझिगये बहु शूर अपार बही तहँ शोणित की अतिधारा ।
गावत चामुँड नाचत योगिनि प्रेत बजावत हैं करतारा ॥
जोर बढ्यो रतिभानकी खड्ग सो घोर मच्यो तहँ पै हहकारा ।
जात चढ़े शवऊपर गृद्ध मनों ललिते जलखेलैं निवारा १०५

को गति बरणै त्यहि समया कै हमरे बूत कही ना जाय ॥
फिरि फिरि मारै औ ललकारै यहु महराज कनौजीराय १०६

कान्ह कुँवरहू अतिकोपित भा यहु रजपूत वीर चौहान॥
लीन्हे भाला नागदवनि का क्षत्रिनमारिकीन खरिहान १०७
औ ललकारा रतीभान का ठाकुर खबरदार ह्वैजाय॥
य ह कहि मारा तलवारी का सोपै लैगा वार बचाय १०८
आपौ मारा तलवारी को परिगै कान्ह कुँवर शिरजाय॥
ककरी ऐसी खपरी फाटी पै शिरबांधि तहांरहिजाय १०९
खैंचि सिरोही को कम्मर सों मारा रतीभान को धाय॥
रतीभान फाटक पर गिरिगे गिरिगो कान्हकुँवरमहराय ११०
दोऊ जूझे जब फाटक में डोला अटा महल में जाय॥
उतरिकै डोला सों संयोगिनि बैठी रङ्ग महल में आय १११
चंद कवीश्वर फिरि जल्दी सों पहुँचा जहां चँदेलाराय॥
औ फिरि बोला हाथ जोरिकै ओ महराज कनौजीराय ११२
लाखन जूझे दिल्ली वाले लाखन कनउज के सरदार॥
बड़ी लड़ाई ऊदल कीन्ह्यो ज्यहिका रहा न वारा पार ११३
बचा पिथौरा अब इकलो है ज्यहिका राखिलीन भगवान॥
त्यहि नहिं मारो महराजा तुम मानों सत्य बचन परमान ११४
लौटि कनौजै जो चलि जइहौ कीरति बनी रहीं संसार॥
हारि तुम्हारी कोउ गाईना राजा कनउज के सरदार ११५
कनउज तेनी औ दिल्ली लौं कीन्ह्यो घोर शोर घमसान॥
अस कोउ क्षत्री मैं देखौं ना जोफिरिकरैसमरअभिमान ११६
चंद कवीश्वर की बातैं सुनि बोला कनउज का महराज॥
कहा तुम्हारो हम टारब ना मानोसत्यबचनकबिराज ११७
बड़ो भरोसो तुम हमरो करि आयो मिलन हमारे पास॥
कहा तुम्हारो जो मानैंना तौफिरिजावोआपनिराश ११८

करन निराशा नहिं चाहत हैं मानो सत्य बचन कबिराज ॥
तुमहूं जावो निज मन्दिर को हमहूं जात आपनी राज ११९
यह सुनि गमने चन्द कवीश्वर जयचँद कूच दीन करवाय ॥
राति दिनौनन के धावा करि पहुँचेकनउजमेंफिरिआय १२०
पृथुइराज निज महलन पहुँचे पझिनि मिली तहांपर आय ॥
करि गन्धर्व ब्याह ताके सँग औसुखकरनलागिअधिकाय १२१
पूर स्वयम्बर संयोगिनि का गायों सत्य सत्य सब हाल ॥
माथ नवावों शिवशङ्करका अम्बुजसरिसनयनत्रयलाल १२२
किहे कोपिनी हैं सर्प्पन की धारे जटाजूट हैं शीश ॥
सकल जगत के सो स्वामी हैं किरपाकरैं ललितपर ईश १२३
माथ नवावों पितु अपने को जिन म्वहिं विद्या दीन पढ़ाय ॥
आशिर्बाद देंव मुंशीसुत जीवहु प्रागनरायणभाय १२४
रहै समुन्दर में जबलौं जल जबलौं रहैं चन्द औ सूर ॥
मालिक ललिते के तबलौं तुम यशसों रहौ सदा भरपूर १२५

इति श्रीलखनऊनिवासि (सी, आई, ई) मुंशीनवलकिशोरात्मज बाबू प्रयागनारायणजीकीआज्ञानुसार उन्नामप्रदेशान्तर्गत पँड़रीकलांनिवासि मिश्रबंशोद्भव बुध कृपाशङ्कर सूनु पण्डितललिताप्रसादकृत पृथुइराजजयचन्द युद्धवर्णनो नाम तृतीयस्तरङ्गः ॥ ३ ॥

संयोगिनिस्वयम्बरसम्पूर्ण ॥

इति ॥

अथ आल्हखण्ड ॥

महोबे का प्रथमयुद्धवर्णन ॥

सवैया ॥

काको मैं ध्यावों मनावों सदा तुमको तजिकै सुनिये रघुनाथा।
मेरे तो एक तुम्हीं प्रभुजी अब काह बनाय लिखों बहुगाथा ॥
स्वारथ साथ सबै नरदेत न देत कोऊ परमारथ साथा ॥
दीन पुकार करै ललिते प्रभु बेगिकरो जनजानि सनाथा १

सुमिरन ॥

कण्ठ में बैठो तुम कण्ठेश्वरि भुजबल बैठिजाउ हनुमान ॥
बैठु शारदा मोरि जिह्वा माँ जासों करूँ आल्ह को गान १
नहीं आसरा निजभुजबलको है यहु आल्हा सिंधु अपार ॥
डगमग डगमग नैया होवै माता तुही लगावै पार २
रह्यो प्रतापी मैं सतयुग माँ त्रेता रह्यो बहुत बरियार ॥
बड़ी बड़ाई भै द्वापर माँ जबलग रहे परीक्षित यार ३
अब बृद्धाई अति छाई है गाई जाय नहीं सो यार ॥

कलियुग बाबा की रजधानी माता तुही लगावै पार ४
जप तप भाग्यो मेरि देही ते अब मैं भयों बहुत सुकुमार ॥
ताते नैया डगमग होवै बेड़ा कौन लगावै पार ५
तुही खेवैया शारद मैया माता खेय लगावै पार ॥
नाहिं तो बूड़ौं मँझधारा में माता होवै हँसी तुम्हार ६
छूटि सुमिरनी गै शारद कै शाका सुनो शूरमन क्यार ॥
करिया आई अब मोहवे का जो जम्बैका राजकुमार ७

अथ कथाप्रसङ्ग ॥

एक समइया की बातैं हैं यारो सुनिल्यो कान लगाय ॥
परब दशहरा की बुड़की रहै गंगा न्हान सबै कोउ जाय १
बड़ा महातम श्रीगंगा को गायो बालमीकि महराज ॥
ब्यास बनायो महभारत जो तामें कह्यो जगत के काज २
सो सब जानै माड़ोवाला यहु जम्बै का राजकुमार ॥
हाथ जोरिकै फिरि बोलतभा दद्दुवा सुनिल्यो वचन हमार ३
भारी मेला श्री गंगा को दद्दुवा जाजमऊ के घाट ॥
पुरके बाहर हम देखा है जावैं राव रङ्क सब बाट ४
हुकुम जो पावैं हम दद्दुवा को तो गंगा को अवैं अन्हाय ॥
पाप नशावैं सब देही के गंगा चरण शरण में जाय ५
सुनिकै बातैं ये करिया की जम्बै गोद लीन बैठाय ॥
चूम्यो चाट्यो गले लगायो बोल्यो बचन तुरत मुसुकाय ६
बारह बरसनका अरसा भो पैसा दीन न कनउज केर ॥
नायब मन्त्री चन्देले के तुमको लेयँ वहाँ जो हेर ७
बाँधिकै मुशकै ग्वरे बचुवा त्वहिं तुरतै जेहल देयँ पहुँचाय ॥
पैसा देवौ तो बचिजावो नाहिं तो जाय प्राणपर आय ८

त्यहि ते तुम का समुझावत हौं बचुवा मानो कहा हमार ॥
राह कनौजी कै तहँते है ठाकुर समरधनी तलवार ९
हाथ जोरिकै करिया बोल्यो दोऊ चरणन शीश नवाय ॥
मने न करिये म्वहिं गंगा को दद्दुवा बार बार बलिजायँ १०
पार लगै हैं श्री गंगाजी मेरो बार न बांको जाय ॥
पकरो ज इहाँ जो मेला में पैसा माफ लेउँ करवाय ११
हुकुम जो पावों मैं दद्दुवा को तौ फिरि गंगाअवों अन्हाय ॥
बिनती सुनिकै बहु करिया की जम्बै हुकुम दीन फरमाय १२
हुकुम पायकै सो जम्बै को अपने कह्यो सिपाहिन बात ॥
करो तयारी जाजमऊ की गंगा न्हान हेतु हम जात १३
हुकुम पायकै सो करिया का तुरतै होन लागि तय्यार ॥
झीलम बखतर पहिरि सिपाहिन हाथ म लीन ढाल तलवार १४
यक यक भाला दुइ दुइ बरछी लीन्हेनि कड़ाबीन सबज्वान ॥
बजे नगारा त्यहि सम या माँ भारी होन लाग घमसान १५
करियां चलिभा त्यहि समयामाँ माता भवन पहूँचा जाय ॥
हाथ जोरिकै करिया बोल्यो माता चरणन शीशनवाय १६
मोहिं आज्ञा है दद्दुवा की गंगा न्हान हेतु हम जायँ ॥
आज्ञा पाऊँ जो माता की तौसब काज सिद्धह्वैजायँ १७
बातैं सुनिकै ये करिया की मातैं हुकुम दीन फरमाय ॥
चूम्यो चाट्यो हृदय लगायो आशिर्बाद दीन हर्षाय १८
बहिनि बिजैसिनि तब बोलत भै भैया बार बार बलिजाउँ ॥
मोहिं निशानी कछु लैआयो जासों यादिकरूं तव नाउँ १९
इतनी सुनिकै करिया बोला बहिनी मानो कहा हमार ॥
लवों निशानी मैं मेलाते बहिनी कहा न टारों त्वार २०

इतनी कहिकै करिया चलिभो फौजन फेरि पहूँचा आय ॥
तुरत नगड़ची को ललकारयो मारू डंका देय बजाय २१
बजा नगाड़ा तब माड़ो में क्षत्रिन धरा रकाबन पायँ ॥
आपो चढ़िकै फिरि घोड़ापर मनमें रामचन्द्र को ध्याय २२
कूच कराय दयो माड़ो सों पहुँचो जाजमऊ में जाय ॥
तम्बू गड़िगे तहँ करिया के चकरन बिस्तर दीन बिछाय २३
उतरयो करिया तब तम्बू में मनमें सुमिरि शारदा माय ॥
लैकै धोती रेशमवाली गंगा निकट पहूँचा जाय २४
हनवन करिकै श्री गंगा में आसन तहाँ लीन बिछवाय ॥
संध्या वन्दन करि प्रातः की विप्रन तुरत लीन बुलवाय २५
दान दक्षिणा दै विप्रन को तम्बू फेरि पहूँचा आय ॥
पहिरिकै कपड़ा अलबेला सो मेला फेरि पहूँचा जाय २६
जाय दुकानन माँ देखतभा कतहुँ न मिला नौलखहार ॥
तबलों माहिल उरई वाला तासों ह्वैगै राम जुहार २७
माहिल बोल्यो तब करियाते ओ जम्बै के राजकुमार ॥
काह खरीदन को आयो है जो तुम घूमो सकल बजार २८
सुनिकै बातैं ये माहिल की करिया बोला बचन उदार ॥
हार लखौटा नीको ढूंढ़ैं सो नहिं पावा कतों बजार २९
बहिनि बिजैसिनि म्वरिमांगाहै ताते खोज करों अधिकाय ॥
तुम्हरो जानों जो कतहूँ हो मोको बेगि देव बतलाय ३०
सुनिकै बातैं ये करिया की माहिल कहा बचन मुसुकाय ॥
हार नौलखा है मोहबे माँ तुरतै चला तहाँको जाय ३१
बहिनि हमारी मल्हना जानों औ बहनोई रजा परिमाल ॥
कऊ लड़ैया तिन घर नाहीं मानों सत्य सत्य सब हाल ३२

सुनिकै बातैं ये माहिल की करिया चरणन शीश नवाय ॥
बिदा माँगिकै फिरि माहिलसों तम्बू तुरत पहूँचा आय ३३
हुकुम लगायो सब क्षत्रिनको ह्याँते कूच देव करवाय ॥
करो तयारी अब मोहबे की सीताराम चरणको ध्याय ३४
सुनिकै बातैं ये करिया की क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
हथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे बाँके घोड़न भे असवार ३५
कूच के डंका बाजन लागे घूमन लागे लाल निशान ॥
चलिभो करिया फिरि मोहबेको मनमें किहे गंगको ध्यान ३६
त्यही समइया की बातैं हैं यारो सुनिल्यो कान लगाय ॥
चारो भाई हैं बकसर के जिनका कही बनाफरराय ३७
रहिमलै टोंड़र बच्छराजै औ चौथे देशराजै महराज ॥
मीराताल्हन हैं बनरस के जिनकेनौलड़िकाशिरताज३८
अली अलामत औ दरियाखां बेटा जानबेगै सुल्तानै ॥
मियांबिसारतै औ दरियाँई नाहर कारे औ कल्यानै ३९
कारे बाना करे निशाना कारे घोड़न पर असवार ॥
चीरा शिर पर है सुलतानी मीराताल्हन केर कुमार ४०
ये सब मिलिकै यकठौरी ह्वै डाँड़ पै किहेनि बखेड़ाजाय ॥
जयचँद केरी तहँ ठकुरी है जिनका कही कनौजीराय ४१
सब फिरियादी गे कनउज को पहुँचे नगर महोबा जाय ॥
नगर महोबा सों कनउज को रस्ता सीध निकरिगै भाय ४२
यक हरिकारा सों पूँछत भे चारों भई बनाफरराय ॥
जावा चाहैं हम कनउज को जहँपै रहै चँदेलोराय ४३
सुनिकै बातैं इन चारों की सोऊ कहा बचन हर्षाय ॥
कौने मतलब को जावतहौ हमते सत्य देव बतलाय ४४

सुनिकै बातैं हरिकारा की तात्हन ब्बला बनारसक्यार ॥
भयो बखेड़ा है धूरेपर हुँवनाचली बिषमतलवार ४५
हम फिरियादी कनउज जावैं राजा जयचँद के दरबार ॥
सुनिकै बातैं ये ताल्हनि की सोऊ बोला बचन उदार ४६
उन घर नायब चंदेलो है जो परिमाल मोहोबे क्यार ॥
एक महीना की छुट्टीलै आयो घरै आपने यार ४७
तुमचलिजावो परिमालिकढिग तौ सब काज सिद्धि ह्वैजाय ॥
नाहिं तो बरसैं तुमका लगिहैं मानो सत्य सत्य सबभाय ४८
सुनिकै बातैं हरिकारा की ये चलिगयो जहाँ परिमाल ॥
तुरतै मिलिकै परिमालिक सों अपनो गायगयो सबहाल ४९
बड़ी प्रीतिसों परिमालिक तब इनको द्वार दीन टिकवाय ॥
सिधा मँगायो सब क्षत्रिन को ताल्हनि खानादीन मँगाय ५०
बनी रोसइयाँ रजपूतन की क्षत्रिन जेइँ लीन ज्यँवनार ॥
अब यहु लड़िका जम्बैवाला ठाकुर माड़ोका सरदार ५१
दावतिआवै सो मोहबे को करिया करिया के अनुमान ॥
बजैं नगाड़ा त्यहि फौजन माँ भारी होय घोर घमसान ५२
सुन्यो नगाड़ा के शब्दन को चकृत भयो रजापरिमाल ॥
तब हरिकारा ह्वइ आवतभे तेसब कह्यो वहाँ परहाल ५३
सुनिकै बातैं हरिकारा की फाटक बन्द लीन करवाय ॥
तबलों करिया फौजैं लैकै फाटक उपर पहूँचा आय ५४
हुकुम लगायो रजपूतन को कुल्हड़न फाटक देव गिराय ॥
मर्दिगर्दि करि सब मोहबे को नेका टकालेउँ निकराय ५५
तौतौ लरिका मैं जम्बे का नहिं ई डारों मुच्छमुड़ाय ॥
नीके गहना ये देहैं ना कादर वंश चँदेलाराय ५६

सुनिकै बातैं ये करिया की क्षत्रिन लिह्यो कुल्हाड़ाहाथ ॥
मरैं कुल्हाड़ा फिरि फाटक में नायकै रामचन्द्र को माथ ५७
यह गति चारो भाइन दीख्यो ताल्हन बनरस को सरदार ॥
पांचों मिलिकै सम्मत करिकै गरुई हांक दीन ललकार ५८
जल्दी खोलो अब फाटक को सूरति धर्खो करिंगा केरि ॥
जान न पाई माड़ोवाला मारों एक एक को हेरि ५९
यह कहि फाटक को खुलवायो औ फौजनमाँ परेदबाय ॥
मारन लागे चारो भाई जिनका कही बनाफरराय ६०
जौनी दिशि को ताल्हन जावैं कोउ न पैर अड़ावै ज्वान ॥
जौनी दिशिको बच्छराजजायँ त्यहिदिशिमारिकैखरिहान ६१
को गति बरणै देशराजकै सरबरि करै कौन सरदार ॥
बड़ा लड़ैया रहिमलटोंड़र दोऊहाथ करैं तलवार ६२
मूड़नकेरे मुड़चौरा भे औ रुंडनके लाग पहार ॥
खूनकि नदिया तहँ बहि निकरी जूझे बड़े बड़े सरदार ६३
बड़ा लड़ैया माड़ोवाला यहु जम्बैको राजकुमार ॥
ताल्हनकेरे यहु मुरचापर कीन्हेसि पाँचघरी तलवार ६४
जीति न दीख्यो जब ताल्हनसों तब फिरि भागा लिहेपरान ॥
बचे खुचे जे माड़ोवाले तेऊ भागिगये सब ज्वान ६५
यह सुनि पावा रनिमल्हनाने चारिउ कुँवर लीन बुलवाय ॥
बड़ी बड़ाई करि चारों की औ परिमालसों कहा बुझाय ६६
इन्हैं टिकावो तुम मोहबे माँ इनके ब्याह देव करवाय ॥
ईजति हमरी इन राखी है औ गाढ़ेमाँ भये सहाय ६७
बातैं सुनिकै रनिमल्हना की फिरि दरबार पहूंचे आय ॥
देशराज औ बच्छराज को दोउन लीन्ह्यो हृदयलगाय ६८

तिनसोंवोल्योपरिमालिकफिरि हमरी वातसुनो दोउभाय ॥
दूध पूत औ धनदौलत के मालिक तुम्हीं वनाफरराय ६९
मीराताल्हन वनरस वाले तिनसों वोल्यो रजापरिमाल ॥
फौजनकेरे तुम मालिकहौ हमरे वचन करौ प्रतिपाल ७०
नाई वारी को बुलवायो तिनसों कह्यो वचन समुझाय ॥
जाति विरादर जहँ हमरे हैं तिनका खवरि सुनावो जाय ७१
लरिका क्वारे परिमालिक घर व्याहन योग भये हैं आय ॥
क्वारी कन्या जिनघर होवैं टीका तुरत देयँ पठवाय ७२
सुनिकै वातैं परिमालिक की नाइन पतालगायो जाय ॥
दलपतिराजा ग्वालीयर का त्यहि फिरि टीका दीनपठाय ७३
देशराज औ वच्छराज को लैकै पहुँचिगयो परिमाल ॥
घावलि विरमाँ दूनो कन्या इनको व्याहिदीन नरपाल ७४
देशराज का घावलि सँगमें विरमाँ वच्छराज के साथ ॥
व्याहिकैचलिभेपरिमालिकफिरि मनमें सुमिरि भवानीनाथ ७५
दोनों वहुवन को सँग में लै मोहवे आयगये परिमाल ॥
खवरि जनायो यह सखियनने मल्हनावहुतभईखुशियाल ७६
दौरति आई फिरि द्वारेपर औ आरती उतारी आय ॥
वाँह पकरिलइ दोउ वहुवन की राखी रंगमहल में जाय ७७
हार नौलखा के लेवे को आयो रहै करिंगाराय ॥
स्वई हार लै रानी मल्हना औघावलिको दीन पहिराय ७८
दूसर हार और तैसे लै विरमागले दीन फिर हार ॥
अनँद वधैया वाजन लागी घर घर होयँ मंगलाचार ७९
को गति वरणै त्यहिसमया कै हमरे वूत कही ना जाय ॥
सुखसों सोयोपरिमालिक फिरि मल्हना सँग महल हर्षाय ८०

सवैया ॥

सोय उठी परिमाल कि नारि तबै मनमें यह सोचन लागी।
मंदिर एक कसामसि होय नई दुलही सुलही बड़ भागी॥
दुःख मिलै इन नारिन को मन में यह सोचि उरै अनुरागी।
सोय उठे ललिते परिमाल तबै यह नारि सुनावन लागी ॥१
सुनिकै परिमाल कह्योहँसिकै इनको हम आनहि ठौर टिकावैं।
उठिकै पुर दूर कछू यक जाय तहां पुरवा कर नेव डरावैं॥
नामधर्यो दशहरिपुर ताहि यहाँ द्वउकुँवरन फेरि बुलावैं।
ललिते द्वउबन्धु टिकेतहँजाय न गायसकों जोमहासुखपावैं॥२

को गति बरणै त्यहि पुरवा कै हमरे बूत कही ना जाय॥
तहँही द्यावलि के आल्हा भे प्याट म रहे उदयसिंहराय ॥३
बिरमा केरे मलखाने भे सुलखे गये गर्भ में आय॥
तबहीं करिया माड़ोवाला आधीरात पहूँचा आय ॥४
सोवत मार्यो बच्छराज को काट्यो देशराज शिरजाय॥
आगि लगायो फिरि पुरवा में सबियाँ जेवर लीन मँगाय ॥५
लीन्ह्यो हाथी देशराज का घोड़ा पपिहा लिह्यो खुलाय॥
लखा पतुरिया देशराज की सोऊ करिया लीन बुलाय ॥६
मालखजाना परिमालिक का सबियाँ बेगि लीन लुटवाय॥
हार नौलखा को लैकै फिरि मोहबेते कूच दीन करवाय ॥७
आठरोजकी मंजिल करिकै माड़ो गयो करिंगाराय॥
खबरि सुनाईती माहिलने सोऊ गयो तहाँ फिरि आय ॥८
बड़ी बड़ाई भै माहिलकै राजा जम्बै के दरबार॥
अनँद बधैया माड़ो बाजी घरघरभये मंगलाचार ॥९
ब्रह्मारंजित भे मल्हना के औ द्यावलिके उदयसिंहराय॥

सुलखे पैदा भे बिरमा के ताकी खुशी कही ना जाय ६०
देवा पैदाभा भीषम के ठाकुर मैनपुरी चौहान ॥
सो भा साथी बघऊदन का ज्वानों सुनो चित्तदै कान ६१
यानिधि लड़िका इकठौरी ह्वै बाँधे छोटि छोटि तलवार ॥
छोटि छोटि ढालैं सोहैं पीठि में शिरपर पगिया करैं बहार ६२
छोटि छोटि कलँगी तिनपरसोहैं छोटी वैसनके सरदार ॥
छोटि छोटि घोड़न के चढ़वैया बड़ बड़ ठकुरन केर कुमार ६३
रोज शिकारन को जावैं ते बाँधे गूरा और गुलेल ॥
जुलफैं सोहैं तिन कुँवरन के जिनमाँ महकै अतरफुलेल ६४
आगे घोड़ा है आल्हा को पाछे जायँ वीर मलखान ॥
तिनके पीछे ब्रह्मा सोहैं पीछे उदयसिंह बलवान ६५
सुलखे भाई 'मलखाने का सोऊ लीन्हे हाँथ गुलयाल ॥
हिरना ढूंढ़ैं सब जंगल माँ एक ते एक दई के लाल ६६
हिरना पायो नहिं जंगल में लौटे फेरि महोबे वाल ॥
एक न लौट्यो उदयसिंह तहँ नाहर देशराजका लाल ६७
सो यह सोचै मन अपनेमाँ औ मनहीमाँ करै विचार ॥
हम कहिआये हैं माता सों माता लावैं आज शिकार ६८
हिरना मारे बिन जावैं ना हमरो याही ठीक विचार ॥
यहै सोचि कै मन अपने माँ ढूंढ़न लाग्यो तहाँ शिकार ६९
हिरनादीख्यो इक झाबर में मारन चल्यो बनाफरराय ॥
हिरना भाग्यो तहँ उरईको माहिल बाग पहूँचा जाय १००
घोड़ बेंदुला को रपटाये पाछे चला बनाफर जाय ॥
खाँई ऊंची त्यहि बगियाकी ऊदन घोड़ा दीन फँदाय १०१
मारि बेंदुला की टापन सों सनियाँ बगिया दीन खुदाय ॥

छोटि दरक्खत बहु टूटत भे रौसैं पटरी दई गिराय १०२
यहगति दीख्यो जब मालिनने बोल्यो उदयसिंहते आय ॥
कौने राजा के लरिकाहौ सबियाँ डारयो बाग नशाय१०३
काह नाम है सो बतलावो आपन देश देव बतलाय ॥
सुनिकै बातैं त्यहि मालीकी बोल्यो तुरत बनाफरराय १०४
देश हमारो नगर महोबा हमरो उदयसिंह है नाम ॥
फिरिकै माली अब बोलेना नाहिं तो पठै देवँ यमधाम १०५
सुनिकै बातैं बघऊदन की माली चुप्प साधि तब लीन ॥
सुमिरि भवानी शिवशंकरको ह्याँते कलम बन्दकै दीन १०६
आशिर्बाद देवँ मुंशीसुत जीवहु प्रागनरायण भाय ॥
कीरति तुम्हरी जो सब गावैं तौफिरि कथाबहुतबढ़िजाय१०७
माथ नवावों पितु अपने को जिन म्वहिं बिद्यादीन पढ़ाय ॥
सो सुख पावैं देवलोक में गावैंललितचरितानितध्याय१०८
अब मैं ध्यावों रामचन्द्रको जो मम इष्टदेव महराज ॥
इज्जति हमरी जग में राखैं पुरवैं सकल हमारे काज १०९

इति श्रीलखनऊनिवासि (सी, आई, ई) मुंशीनवलकिशोरात्मजबाबूप्रयागनारायणजीकीआज्ञानुसारउन्नामप्रदेशान्तर्गतपँड़रीकलांनिवासिमिश्रवंशोद्भव बुधकृपाशङ्करसूनु पं० ललिताप्रसादकृतमहोबायुद्धऊदनशिकार वर्णनोनामप्रथमस्तरंगः १ ॥

महोबेकाप्रथमयुद्धसमाप्त ॥

अथ आल्हखण्ड ॥

माड़ो का युद्ध वर्णन ॥

सवैया ॥

श्वेतस्वरूप अनूपमनूप नहीं कोउ रूप कहौं ज्यहि गाई ।
आप समान हौ आपहि रूप स्वरूप के भूप गिरीश जमाई ॥
बैल बुढ़ान कि शूल हिरानभयो कछु आन कि आनहि भाई ।
पापी लस्यो ललिते शरणागत लूटत हैं त्यहि चोर सदाई १
काम औ क्रोध औ लोभौ मोहहु लूटत हैं नितही दुखदाई ।
राव न रंक कि शंक करैं निरशंक फिरैं सबके उर जाई ॥
चार में मार अपार बली जो छली छलि देश गयो सब खाई ।
पापी लस्यो ललिते शरणागत लूटत हैं त्यहि चोर सदाई २

सुमिरन ॥

नित प्रति ध्यावै जो सुर्यन को होवै जौन बिसूरै काज ॥
सूर्य्य महातम जो कउ गावै ताकी बनी रहै जग लाज १
प्रातःकाल उदय पूरब दिशि पश्चिम अस्त शामको जान ॥
देय अंजली जल सुर्य्यन को तापर खुशी होयँ भगवान २

निमक न खावे जो रवि दिनमें एकै बेर करै आहार ॥
बंधन छूटैं त्यहि दुनिया के नांघै माया सिंधु अपार ३
सोय के जागै जब कोऊ नर लेवै रोज सूर्य्य के नाम ॥
जब मरजावै वहु दुनिया में पावै तुरत सूर्य्य को धाम ४
छूटि सुमिरनी गै सूर्य्यन कै औ ऊदन का सुनो हवाल ॥
ऊदन जैहैं गढ़माड़ो को लड़िहैं तहाँ केर नरपाल ५

अथ कथाप्रसंग ॥

बरस बारहीं का ऊदन रहै बाँधे सबै ज्वान हथियार ॥
माहिल ठाकुर उरई वाला खेलै ताकी बाग शिकार १
घोड़ बेंदुला तहँ थिरकत भा विषधर उरई के मैदान ॥
भारी पनिघट रहै उरई का नारिन दीख सजीला ज्वान २
धीरज छूटयो तब नारिन के बोलीं एक एक के कान ॥
काहू राजाको बालकहै याको रूप दीन भगवान ३
नारी बोलैं अस आपस में तबलग गयो बनाफर आय ॥
ऊदन बोल्यो पनिहारिन सों घोड़ै पानी देउ पियाय ४
सुनिकै बातैं बघऊदन की बोली एक नारि रिसिआय ॥
कौनदेश के रहवैया हौ आपन नाम देव बतलाय ५
लौंड़ी तुम्हरी हम आहिनना घोड़ै पानी देयँ पियाय ॥
माहिलराजा जो सुनि पैहैं लैहैं घोड़ा तुरत छिनाय ६
देश हमारो नगर मोहोबा आल्हा केर लहुरवाभाय ॥
बेटा आहिन देशराज के हमरो नाम उदयसिंहराय ७
यह कहि लीन्हों कर गुलेलको गुल्लन गगरी दीन गिराय ॥
जितनी गगरी रहैं पनिघटमाँ सबियाँ गुल्लन दीन नशाय ८
पैंड़ा मसक्यो रसबेंदुल के घोड़ा उड़ा हवा सम जाय ॥

सवापहर के फिरि असीमाँ ऊदन गयो मोहोबे आय ९
ह्याँ पनिहारी चलि पनिघटसों माहिल द्वार पहूंची आय ॥
कही हकीकत सब माहिल सों आँखिन आँसू रहीं बहाय १०
ईजति हमरी वहि लैडारयो बेटा देशराज के लाल ॥
गगरी सबियाँ चूरण कैकै औचलिगयो जहाँपरिमाल ११
सुनिकै बातैं पनिहारिन की माहिलजला अग्निकीज्वाल॥
कागज लीन्ह्यो कलपीवाला लीन्ह्यो कलमदवाइत हाल १२
शिरीसरवऊ को पहिले लिखि पाछे लिखनलाग सब हाल ॥
चिट्ठी तुमका हम भेजित है सो पढ़िलेउ रजापरिमाल १३
तुम्हरे घरका जो चाकर है जाको उदयसिंह है नाम ॥
सो चलिआयो म्वरि उरई माँ सबियाँ बाग कीन बेकाम १४
उधुम मचायो सो पनिघट में सिगरी गगरी दीन नशाय ॥
कबसे ऊदन भे तरवरिहा सो तुम उन्हें देव समुझाय १५
टँगीं खुपरियाँ देशराज की राजा जम्बा क्यरे दुवार ॥
बड़ी बीरता जो आई हो माड़ो करैं जाय तलवार १६
लिखिकै चिट्ठी सो माहिलने धावन हाथ दीन पकराय ॥
साजि साँड़िनी को जल्दी सों धावन चला मोहोबे जाय १७
तीन पहर का अरसा करके फाटक उपर पहूंचा जाय ॥
बैठि साँड़िनी गै फाटक पर धावन उतरपरा तहँ आय १८
चलिभो धावन फाटक भीतर जहँ पै बैठ रजा परिमाल ॥
कीन बन्दगी महराजा को पत्री देत भयो ततकाल १९
फारि लिफाफा को जल्दी सों पत्री पढ़त भयो परिमाल ॥
लिखी हकीकत जो माहिल है सोसबनाँचिलीनरयहिकाल २०
कलम दवाइत कागज लैकै उत्तर लिखनलाग परिमाल ॥

धोखे माड़ो की चरचा ना कीन्ह्यो उरई के नरपाल २१
फोरी गगरिया है माटी की ताँबे घड़ा देउँ बनवाय ॥
बिषधर लड़िका देशराज का ज्यहिकाकहीउदयसिंहराय २२
जैसे लरिका देशराज का तैसे पूत आपनो जान ॥
अनख न मानब यहि बातनका माहिल बचन हमारे मान २३
लिखिकै चिट्ठी को जल्दी सों धावन हाथ दीन पकराय ॥
माथ नायकै परिमालिक को धावन बैठ ऊंट पर जाय २४
जल्दी चलिकै फिरि मोहबे सों उरई तुरत पहूंचा आय ॥
कियो बन्दगी सो माहिल को पत्री दीन हाथ में जाय २५
पढ़िकै पत्री परिमालिक की माहिल ठाकुर उठा रिसाय ॥
नोचि फोंचिकै त्यहि चिट्ठीको माहिल तहँपर दीन चलाय २६
एक महीना के अरसा में ऊदन खेलन चल्यो शिकार ॥
जायकै पहुंच्यो फिरि उरई में माहिल बाग गयो सरदार २७
जोड़ी मार्‍यो करसायल की औ फुलबगिया डर्‍योनशाय ॥
माली दौरे सब बगिया के औयहुदिख्यनितमाशाआय २८
जल्दी चलि भे ते उरई को अभई पास पहूंचे जाय ॥
कह्यो हकीकत सब माली ने अभई तुरतै चला रिसाय २९
जायकै पहुँच्यो फिरिबगियामें अभई गरू दीन ललकार ॥
अवगुन कीन्ह्यो भल उरई में ओ द्यावलि के राजकुमार३०
जान न पैहो अब उरई ते ऊदन खबरदार ह्वैजाय ॥
सुनिकै बातैं ये अभई की घोड़ते कुदा बनाफरराय ३१
पकरिकै बाहू द्वउ अभई की औ बगिया माँ दीन चलाय ॥
हाँकिकै घोड़ा ऊदन चलिभे पहुँचे नगरमोहोबा आय ३२
माली दौरे फिरि बगिया ते माहिल पास पहूंचे आय ॥

सुनिकै बातैं तिन मालिन की माहिल ठाकुर उठा रिसाय ३३
लिल्ली घोड़ी को मँगवायो तापर माहिल भयो सवार ॥
जायकै पहुँच्यो फुलबगिया में ठाकुर उरई को सरदार ३४
गोद उठायो फिरि अभई को तुरतै नलकी लीन मँगाय ॥
त्यहि पौढ़ायो सो अभई को महलन तुरत दीनपहुँचाय ३५
अपना चलिभा फिरि मोहबेको लिल्लीघोड़ी पर असवार ॥
तिकृतिकृतिकृतिकृहांकतिआवै पहुँचा फेरि महोबेद्वार ३६
उतरिकै घोड़ी सों जल्दी सों चलिभो जहाँ रजापरिमाल ॥
राम जुहार कीन राजा को औफिरिकहनलागसबहाल ३७
तुमने ऊदन को पालो है राजा मोहबे के सरदार ॥
दाख छुहारेन की बगिया को ऊदन जाय कीन संहार ३८
भुजा उखारी तिन अभई की मारो हिरण बाग में जाय ॥
दूजी कीन्हीं म्वरे साथ में ओ महराजा बात वनाय ३९
ऐस बहादुर जो पैदा भे काहे न लेयँ बाप को दायँ ॥
जम्बै राजा माड़ोवाला दशहरि पुरवा लीन लुटाय ४०
बाँधिकै मुश्कै देशराज की पत्थर कल्हू डरा पिरवाय ॥
लखा पतुरिया देशराज की सो लैगयो करिंगाराय ४१
घोड़ पपीहा औ हाथी को लीन्ह्यो हार नौलखा आय ॥
सोवत मास्यो बच्छराज को दशहरिपुरवा दीन फुँकाय ४२
इतना कहतै ऊदन आयो राजा गयो सनाका खाय ॥
कलहा लड़िका देशराज को जो मरिबे को नहीं डेराय ४३
सुनिकै बातैं सो माहिल की ठाढ़ो भयो शीश को नाय ॥
को है राजा माड़ोवाला सांची हमैं देउ बतलाय ४४
को है मारा म्वरे बाप को पुरवा कौन दीन फुँकवाय ॥

लखा पतुरिया को लैगा को घोड़ा कौन लीन छुड़वाय ४५
हार नौलखा को लैगा को मार्‌यो वच्छराज को आय ॥
हाल बतावो सब जल्दी सों हमरे धीर धरा ना जाय ४६
सुनिकै बातैं बघऊदन की बोला तुरत रजापरिमाल ॥
तीस बरस की ई बातैं हैं माहिलकहैं आजसों हाल ४७
कठिन लड़ाई भै सिलहट में तहँ पर जूझो बाप तुम्हार ॥
दशहरिपुरवा कहुँ अनते है फूंक्यो माड़ो के सरदार ४८
किह्यो बहाना परिमालिक ने मान्यो नहीं बनाफरराय ॥
माहिल तेरे फिर पूंछत भे साँचे हाल देव बतलाय ४६
को है राजा माड़ोवाला ज्यहिने मारा बाप हमार ॥
चरचा कीन्हीं है तुमहीं ने ठाकुर उरई के सरदार ५०
त्यहिते तुमते हम पूंछत हैं सो तुम हमैं देउ बतलाय ॥
सुनिकै बातैं बघऊदन की माहिलकहाबचनमुसुकाय ५१
जौन बतावा परिमालिक ने सोई सत्य बनाफरराय ॥
बाप तुम्हारो सिलहट जूझ्यो चरचाकीन सोईहम आय ५२
सुनिकै बातैं ये माहिल की चलिभा तुरत बनाफरराय ॥
जायके पहुँच्यो त्यहि मन्दिरमें जहँ पै रहै दिवलदे माय ५३
हाथ जोरिकै तहँ पूँछत भा माता चरणन शीश नवाय ॥
किसने मार्‌यो म्वरे बाप को माता मोहिं देउ बतलाय ५४
लखा पतुरिया हाथी घोड़ा औ लैगयो नौलखाहार ॥
टँगी खुपरिया म्वरे बाप की माता क्यहिके अबों दुवार ५५
सत्य बतावै मोहिं माता तू नहिं मरिजाउँ पेटको मारि ॥
इतनी कहिकै बघऊदन ने औ छाती में धरी कटारि ५६
देखि तमाशा यहु ऊदन को द्यावलि मनमाँ कीन विचार ॥

माहिल आवाहै उरई ते त्यहि मुरकावा पूत हमार ५७
सोचन लागी मन अपने माँ अब मैं काह करों भगवान ॥
झूंठ बतावों जो लरिका ते तो यहु छाँड़ै अबै परान ५८
सत्य बतावों यहि लरिका ते तो यहु अबहीं करै पयान ॥
मोहिं पियारो बघऊदन है प्यारो नहीं आपनो प्रान ५६
साँच बतावों मैं ऊदन ते यह मन ठीक लीन ठहराय ॥
जौन विधाता की मर्जी है होवे स्वई भागबश आय ६०
यहै सोचि कै मन अपने माँ द्याबलिकहन लागि सबगाय॥
जम्बै राजा माड़ोवाला त्यहिका पूत करिंगाराय ६१
सो चढ़िआयो अधीरात को मारयो बाप तुम्हारो आय ॥
चचा तुम्हारे का सो मारा दशहरि पुरवा दीन फुँकाय६२
लै पचशब्दा गा हाथी को पपिहाघोड़ लिहेसि छुड़वाय ॥
ल खापतुरिया हार नौलखा सब लैगयो करिंगा आय ६३
मालखजाना परिमालिक का सोऊ सबै लीन लदवाय ॥
बिदाति मचायो बड़ि पुरवामाँ वहु दहिजार करिंगाराय ६४
चुरी उतारयों ना तबसों मैं मनमाँ यहै लीन ठहराय ॥
पूत सुपूते जो कोउ ह्वैहैं लेहैं दाउँ बाप को जाय ६५
चुरी उतारों तब सागर में यह म्वरे मनै गई तब आय ॥
जन्म तुम्हारो तब भातोना पेट में रहो बनाफरराय ६६
बराबरस की.गर. स्वरा .या त्यहिते मोर प्राण घबड़ायँ ॥
बाढ़ो बाड़ा ..छे ... बीते बदला लिह्यो बापको जाय ६७

सवैया ॥

बात सुन्यो यह मातु मुखे तबहीं बघऊदन ने ललकारा ।
जाय हनउँ गढ़माड़व में मयँ जम्बै ठाकुर केर कुमारा ॥

नाहिं छुवउँ तलवारि न हाथ न मातु कहावों पूत तुम्हारा।
ठाकुर सोइ कहैं ललिते जो मेरे रण खेतन में असिधारा ६८
इतनी कहिकै ऊदन बिगरे औ मातासों लगे बतान॥
अब हम जइहैं गढ़ माड़ो को हमरो भलाकरैं भगवान ६६
कहा न मनिहैं हम काहू को हमरो सत्य वचन करु कान॥
घर में माता अब तुम बैठो मनमें धरे रामको ध्यान ७०
बरावरस का क्षत्रिक लरिका ज्यहिकै ऐंची अवै कमान॥
त्यहि का बैरी सुखते खावै जिन्दा मुरदाके अनुमान ७१
बातैं सुनिकै ये ऊदन की द्यावलि हाथ पकरि तवलीन॥
पकरिकै बाहू बघऊदन की आल्हानिकटगमनफिरिकीन७२
मलखे सुलखे देवा आल्हा ताल्हन बनरस का सरदार॥
आवतदीख्यो जब माता को सबहिनकीन्ह्योरामजुहार ७३
द्यावलि बोली तब ताल्हन ते छोटे देवर लगो हमार॥
माहिल आये हैं उरई ते तिनतेसुनेसिछुटकवाम्वार७४
करिया मारयो म्वरे बाप को सो यहु बदल लेनको जाय॥
जालिम राजा है माड़ो का ताते मोर प्राण घबड़ायँ ७५
तुमका सौंपति हौं ऊदन को इनका माड़ो लवो दिखाय॥
इतनी सुनि कै आल्हा बोले घरमाँ बैठु लहुरवा भाय ७६
धुआँ न दीखे तू तोपन का ना रण नाँगि दीख तलवार॥
अड़वड़ क्षत्री है माड़ो का मानेस्यो कहा हमार ७७
इतनी सुनिकै ऊदन बोले करौं कहा शोभै गां त्वार॥
टँगी खुपरिया म्वरे बाप की राजा जम्बै क्यरे दुवार ७८
नालति ऐसी रजपूती का दादा जीबे को धिक्कार॥
क्षत्री ह्वैकै समर सकानो ताकोखायँ गिद्धनहिंस्यार ७६

की खुपरी खुपरिन मिलि जैहैं की पै मिली बाप का दाउँ ॥
जो नहिं जावों गढ़माड़ो को ऊदन नाहिं कहावों नाउँ ८०
मलखे बोले तब देबा ते हमको शकुन देउ बतलाय ॥
हारि हमारी माड़ो ह्वैहै की हम जितब करिंगाराय ८१
लैकै पोथी समरसार की देबा शकुन बिचारन लाग ॥
यजुर्वेद ऋग्वेद अथर्वण जानै सामवेद बड़भाग ८२
शकुन हमारो यों बोलत है माड़ो काम सिद्धि ह्वैजाय ॥
मूड़ मुड़ावो योगी ह्वैकै माड़ो चलो सबै जनभाय ८३
सुनिकै बातैं ये देबा की मलखे थान लीन मँगवाय ॥
रंग रँगायो ते गेरू के गुदड़ीतुरतलीन सिलवाय ८४
बइसपर्त की सिली गुदड़ियाँ जिनमें छिपैं ढाल तलवार ॥
आल्हा ऊदन मलखे देबा सय्यद बनरस का सरदार ८५
पांचों मिलिकै सम्मत कैकै योगी भेष लिह्यनि फिरिधार ॥
कड़ा सूबरण के हाथे मा कानन कुंडल करैं बहार ८६
हाथ सुमिरनी तुलसी वाली तनमा लीन्ह्यो भस्म रमाय ॥
मलखे लीन्ह्यो इकतारा को आल्हा डमरू लियो उठाय८७
लीन सरंगी मीराताल्हन देबा खँजड़ी रहा बजाय ॥
बजै बँसुरिया बघऊदन की शोभा कही बूत ना जाय ८८
राग छतीसो गावन लागे एक ते एक शूर सरदार ॥
सुरति बिहागर जयजयवन्ती ठुमरी टप्पा औरु मलार ८९
धुरपद गावैं औ तिल्लाना तोरैं ग़ज़ल पर्ज पर तान ॥
झूमि झूमिकै साराँग गावैं करिकै रामचन्द्र को ध्यान ९०
मलखे बोले तब ऊदन ते तुम सुनि लेउ बनाफरराय ॥
पहिले माता द्वारे चलिये तहँपर अलख जगावैं जाय ९१

पाछे चलिये गढ़माड़ो को जामें काम सिद्ध ह्वैजाय ॥
सम्मत कैकै पाँचो योगी ड्योढ़ी उपर पहूँचे आय ६२
रानी द्यावलि के द्वारेपर योगिन अलख जगायोजाय॥
बाँदी दौरीं तव महलन ते द्वारे तुरत पहूँचीं आय ६३
देखि तमाशा यहु द्वारेपर महलन अटीं तड़ाका धाय ॥
हाल बतायो सब योगिन का सोऊ गई द्वारपर आय ६४
रूप देखिकै सब योगिन को द्यावलि खुशी भई अधिकाय ॥
पूँछन लागी फिरि योगिन ते योगी सत्य देव बतलाय ६५
कौन देश ते तुम आयो है नावो कौन देश महराज ॥
जो कछु माँगो म्वरे महलन में पुरवों तौन तुम्हारो काज ६६
इतनी सुनिकै ऊदन बोले माता वचन करो ममकान ॥
धोखे योगी के भूलो ना अपनोपुत्र मोहिं तू जान ६७
सुनिकै बातैं ये ऊदन की द्यावलि बड़ी खुशी ह्वैजाय ॥
हृदयलगायो सब लरिकनको आशिर्बाद दीन हर्षाय ६८
ऊदन बोले फिरि माता ते हमरे वचन करो परमान ॥
ड्योढ़ी मँगिहौं रनिकुशलाकी नापहिचनी करिंगा ज्वान ६९
धरि दे पंजा म्वरि पीठी मा माड़ो लेउँ बापका दायँ ॥
सुनिकै बातैं ये ऊदन की द्यावलि गोदलीन बैठाय १००
भुजबल पूज्यो सब लरिकनके द्यावलि वार वार बलिजाय ॥
जितिहौ राजा माड़ोवाला तुम्हरो वारु न बांका जाय १०१
सुनिकै बातैं सब द्यावलि की चारों धरयो चरणपर माथ ॥
बड़ी अनन्दित द्यावलि ह्वैकै फेरा सबन पीठि पर हाथ १०२
बिदा मांगिकै सब मातासों मनिया देवन गे हर्षाय ॥
बड़ा प्रतापी जो मोहबेमें अस्तुतिपदनलागशिरनाय १०३

सवैया ॥

जय जय देव मनावत तोहिं औ ध्यावतहउँ मैं गरीबनिवाजा ।
बदलापितुकोज्यहिभांतिमिलै सोकरो बिभुदेवनहोयअकाजा ॥
भक्ततुम्हार उदयसिंह ठाढ़ सो आयसु काह मिलय महराजा ।
यहिभांतिअनेकनबारकह्योशिरनायरह्योललितेनिजकाजा १०४

अस्तुति कीन्ह्यो मलखाने ने देबा ज्वरे खड़ा दोउहाथ ॥
पूजा कीन्ह्यो भल आल्हाने पाछे धरा चरणपर माथ १०५
मन्दिर बाहर सैयद ठाढ़ो सोऊ ध्यायरहा मनमांझ ॥
चरि चरि गौवैं घरका डगरीं औ ह्वैगई तहांपर सांझ १०६
उड़ि उड़ि पक्षी गये बसेरन नखतन कीन तहाँ उजियार ॥
पूजाकरिकै सब बिधिवतसों तहँते चलत भये सरदार १०७
जायकै पहुंचे निज महलन में नयनन गई नींद अतिछाय ॥
मलखे देबा आल्हा ऊदन सोये रामचन्द्र को ध्याय १०८
सैयद सुमिख्यो बिसमिल्ला को नाहर बनरस का सरदार ॥
बिकट निशाकी ये बातैं हैं ज्ञानो मानो कही हमार १०९
योगी जागैं सब आनँद सों चोरन बड़ी खुशी भै आय ॥
माथ नवावों श्रीगणेश को औ रट राम राम मनलाय ११०
दोउ पद बन्दौं पितु अपने के जिन मोहिं बिद्या दीनपढ़ाय ॥
स्वर्ग में बैठे सो सुख भोगैं सेवक कहै नित्त यशगाय १११
सब अभिलाषा पूरी ह्वैगे आशा रही राम के पाँय ॥
आगे फौजैं मोहबे सजिहैं माड़ो जई बनाफरराय ११२

इतिश्री लखनऊनिवासि (सी,आई,ई) मुंशी नवलकिशोरात्मज बाबू प्रयागनारायणजीकी आज्ञानुसारउन्नामप्रदेशान्तर्गत पँड़रीकलां निवासि मिश्रवंशोद्भव बुधकृपाशङ्करसूनु पं०ललिताप्रसादकृत ऊदनमातासंवादेप्रथमस्तरङ्गः १ ॥

सवैया ॥

तव पद प्रेम बढ़ायों निते अब जावों कहाँ मोहिं देहु बताई ।
सूझत और न ठौर कहूं तजिकै तव चरणन की सेवकाई ॥
भाई औ बन्धु सहाई कोऊ नहिं देखि परो तुमहीं रघुराई ।
ललिते अबआशनिराशकरै क्यों भूलिगयो प्रभुकी प्रभुताई १

सुमिरन ॥

रामको ध्यावों औलछिमनको बेटा अंजनि को हनुमान ॥
बालि के अंगद तुमका ध्यावों लंका किह्यो घोर घमसान १
मान न राख्योक्यहुनिशचरको रोप्यो पैर सभा में जाय ॥
मेघनाद सम कोटिन योधा तुम्हरो पैर न सके हिलाय २
दानिन ध्यावों बलि हरिचन्दै कुंतीपुत्र करण सरदार ॥
इन्द्रहुआये ज्यहि द्वारे में औ यश सुनिकै परमउदार ३
अब मैं ध्यावों सुत गंगा को भीषम जौन शूर सरदार ॥
टारि प्रतिज्ञा दीन कृष्णकी करिकै बड़ी भयंकर मार ४
कहौं सपूती शिरीकृष्ण की जिन गोबर्द्धन लीन उठाय ॥
सात दिनालों मेघा बरसे झम २ हहरि २ हहराय ५
धरि छँगुनियांपर गिरिधारे ठाढ़े रहे कृष्ण महराज ॥
लाज रखैया सोइ स्वामी हैं हमपर कृपाकरैं ब्रजराज ६
छूटि सुमिरनी गय देवन कै शाकासुनो शूरमन क्यार ॥
ऊदन जैहैं गढ़माड़ो को ह्वैहैं फौज सबै तय्यार ७

अथ कथाप्रसंग ॥

मुर्गा बोले सब गांवन में पक्षी जागिपरे त्यहि काल ॥
शब्द चहचहा बोलन लागे जागा मोहबे का नरपाल १
आल्हा ऊदन मलखे देवा जागा बनरस का सरदार ॥

सय्यद सुमिरयोबिसमिल्ला को मलखे सुमिरयो नन्दकुमार २
बिंध्यबासिनी आल्हासुमिरयो देबा रह्यो रामपद ध्याय ॥
देवी शारदा मइहरवाली सुमिरनलाग लहुरवाभाय ३
चरण शरण में हम तुम्हरी हैं दाया करो शारदामाय ॥
जीति कै अइहौं जो माड़ो ते सोने छत्र चढ़ैहौं आय ४
लज्जा राख्यो ओ महरानी मैं हौं सदा तुम्हारो दास ॥
नहीं भरोसा निज भुजबलका केवल एक तुम्हारी आस ५
ध्याय शारदा को ऊदन फिरि दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ॥
किह्यो दण्डवत महरानी की जो गाढ़े मा होयँ सहाय ६
ऊदन बोल्यो फिरि आल्हा सों दादा मानौ कही हमार ॥
क्षण क्षण बीतै जो मोहबे मा सो हम जानैं बर्ष हजार ७
जल्दी चलिये राजभवन में जहँ पै बैठि रजापरिमाल ॥
बिदा मांगिकै महराजा सों दादा चलन चही ततकाल ८
सुनिकै बातैं बघऊदन की आल्हा लीन ढाल तलवार ॥
उठिकै ठाढ़े भे जल्दी सों सँगमें बनरसका सरदार ९
सभामें पहुँचे परिमालिक की पाँचो ठाढ़ भये शिरनाय ॥
बोले आल्हा सों परिमालिक काहे खड़े बनाफरराय १०
सुनिकै बातैं परिमालिक की आल्हा कही हकीकत गाय ॥
भई लहुरवा यहु बिगराहै माड़ो लेई बापका दाँय ११
सुनिकै बातैं ये आल्हा की राजा गयो सनाकाखाय ॥
बोलि न आवा परिमालिकसे मुँहका बिरा गयो कुम्हिलाय १२
बड़ी उदासी मुखपर छाई शिरसों गिरा छत्र महराय ॥
सोचनलाग्योपरिमालिकफिरि मन ना कछू ठीक ठहराय १३
बहुतसोचिकैपरिमालिक फिरि बोल्यो सुनो उदयसिंहराय ॥

उमर तुम्हारी बहु थोरी है तातै धरा धीर ना जाय १४
जालिम राजा माड़ोवाला ऊदन मानो कही हमार ॥
धुआँ न दीख्यो तुम तोपनका नहिंरणनांगिदीख तलवार १५
पटा बनैठी बाना गदका सीखो रोज बनाफरराय ॥
जो जी चाहै सो तुम खावो कुश्ती लड़ो अखाड़े जाय १६
पै नहिं जावो तुम माड़ो को बेटा म्वरे उदयसिंहराय ॥
सुनिकै बातैं परिमालिक की बोला तुरत बनाफरराय १७
बरा बरस का क्षत्री लरिका रणमा गहै नहीं तलवार ॥
नालति त्यहिके फिरि जीबेका पैदा होवेका धिक्कार १८
बरह बरसके कृष्णचन्द्र रहैं मथुरा कंस पछार्यो जाय ॥
कालयमन औ जरासन्ध फिरि तिनपर कीन चढ़ाई आय १९
मोहरा मारा तिन दुष्टनका यह नित कहैं विप्र सब गाय ॥
मोहिं भरोसा शिरीकृष्ण का तिन बललेउँ बापका दाँय २०
सुनिकै बातैं ये ऊदन की तब मनजानिलीन परिमाल ॥
कहा हमारो यहु मानी ना नाहर देशराज का लाल २१
यहै सोचिकै परिमालिक ने घोड़ा पांच लीन मँगवाय ॥
लीन कबुतरी को मलखाने बेंदुल लीन उदयसिंहराय २२
घोड़ करिलिया आल्हा लीन्ह्यो सिरगा बनरस का सरदार ॥
लीन मनोहर फिर घोड़े को यहु भीषम का राजकुमार २३
जूभक कङ्कण सवालाख का ऊदन हाथ दीन पहिराय ॥
आशिप दीन्ह्यो परिमालिक ने माड़ो लेउ बाप का दाँय २४
जितनी फौजैं म्वरे मोहबे मा सवियाँ वेगि लेउ सजवाय ॥
जावो माड़ो में पांचों मिलि मारो जाय करिंगाराय २५
सुनिकै बातैं परिमालिक की पांचों चलत भये शिरनाय ॥

मल्हना रानी के महलन में तुरतै गये बनाफरराय २६
हाथ जोरि औ बिनती कैकै बोला बचन उदयसिंहराय ॥
जावैं माता हम माड़ो को आयसु आपु देउ फरमाय २७
मोहिं आज्ञा महराजा की माया आपु देउ बिसराय ॥
दाया करिकै म्वरे बालक पर माता हुकुम देउ फरमाय २८
सुनिकै बातैं ये ऊदन की रानी गई सनाकाखाय ॥
काह बिधाता की मरजी है ऐसो कहै लहुरवा भाय २९
यहै सोचिकै मन अपने मा औ सूर्यनको शीश नवाय ॥
मल्हना बोली बघऊदन ते हमरे सुनो बनाफरराय ३०
बिटिया बनियां की आहिन ना जो रण सुनिकै जायँ डेराय ॥
जौनि आज्ञा महराजा की आयसु स्वई बनाफरराय ३१

सवैया ॥

जावहु पूत लड़व गढ़ माड़व आवो जीति यही हम चाहैं।
सिंहिनि मातु नहीं मन सोच सदा यह वेद पुराणहु काहैं ॥
धर्म कि मारग जेई चलैं सुख तेई सदा जग में निरबाहैं।
बाप तुम्हार हन्यो करिया ललिते त्यहि मारो तबै सुखलाहैं ३२

बातैं सुनिकै ये मल्हना की बोले तुरत बनाफरराय ॥
आठ महीना की मुहलत दे नवयें चरण पूजिहौं आय ३३
वादा सुनिकै बघऊदन का मल्हना बिदा कीन हर्षाय ॥
पाँचो चलिभे फिरि महलन ते औ लश्कर में पहुँचे आय ३४
तुरत नगड़्ची को बुलवायो सय्यद बनरस का सरदार ॥
बजै नगाड़ा अब मोहबे मा सवियाँ फौज होय तय्यार ३५
हुकुम पायकै सो ताल्हन को दौड़त चला नगड़्ची जाय ॥

धय्यो नगाड़ा फिरि सँड़ियापर भादौं मेघ अइस हहराय ३६
बोलि दरोगा घोड़े वाला चांदी कड़ा दीन डरवाय ॥
हुकुम लगायो बघऊदन ने सबियाँ घोड़ सवाँरो जाय ३७
बूढ़ो दुर्बल रोगी घोड़ा एको नहीं किह्यो तय्यार ॥
कच्छी मच्छी ताजी तुरकी हरियलमुश्की घोड़अपार ३८
लक्खा गर्रा पँचकल्यानी सुर्खा सुरँगा रंग बिरङ्ग ॥
देर लगावो अब तनको ना घोड़ेनजायकसो सब तङ्ग ३९
सुनिकै बातैं बघऊदन की दौरत चला दरोगा जाय ॥
जितने घोड़ा घोड़शारे माँ सबियँबेगि लीन कसवाय ४०
हथी महावत हाथी लैकै तिनका करन लाग तैयार ॥
अंगद पंगद मकुना भौंरा छोटे पर्बत के अनुहार ४१
मैनकुंज मलिया भौंरागिरि औ भौंरागिरि दीन बिठाय ॥
धरिकै सीढ़ी सांखो वाली हाथी सजैं महावत धाय ४२
डारि बिछौना मखमल वाले ऊपर हौदा दीन धराय ॥
हिरा बिराजैं अम्बारिन में शोभा कही वूत ना जाय ४३
बारह कलशा सोने वाले हौदा ऊपर करैं बहार ॥
यक यक हाथी के हौदा पर दुइ दुइ शूर भये असवार ४४
बोलि दरोगा तोपन वाला रुपिया मुहरैं दई इनाम ॥
बड़ि बड़ि तोपैं जल्दी साजो जासों होय हमारो काम ४५
सुनिकै बातैं मलखाने की दौरत चला दरोगा जाय ॥
कुवाँ सुखावनि गर्भगिरावनि चर्खी उपर दीन चढ़वाय ४६
सूर्य्य लपकनि चन्दझपकनि बिजुलीतड़पनि लीन मँगाय ॥
मेघगरज्जनि अष्टधातु की गोला एक मनाको खाय ४७
तोप संकटा औ लछिमिनियाँ भैरों तोप लीन मँगवाय ॥

पहिया दुरकैं तिन तोपन के धसकातिचलीं रसातलजायँ ४८
को गति बरणै तिन तोपनकै कायर देखि देखि सकुचायँ ॥
शूर सिपाही ईजति वाले मनमाँ बड़े खुशी ह्वैजायँ ४९
ऊदन बोले तब लश्कर में हमरे सुनो सिपाही भाय ॥
जिन्हैं पियारी हों घरतिरिया दोहरी तलब लेयँ घरजायँ ५०
जिन्हैं पियारा हो रणलोहा जूझै चलैं हमारे साथ ॥
सुनिकै बातैं बघऊदन की क्षत्रिन नाय रामको माथ ५१
हाथ जोरिकै सब बोलतभे मानो कही बनाफरराय ॥
पाँउँ पछारी को डारैं -ना चहुतनधजीधजीउड़िजाय ५२
सुनिकै बातैं रजपूतन की बोला द्यावलि क्यार कुमार ॥
स्याबसि स्याबसि ओ रजपूतो कलियुग रखिहौ धर्महमार ५३
झीलमबखतरपहिरि सिपाहिन हाथ में लीन ढाल तलवार ॥
रणकी मौहरि बाजन लागी रणका होनलाग ब्यवहार ५४
ढाढ़ी करखा बोलन लागे बिप्रन कीन वेद उच्चार ॥
चढ़ा कबुतरी पर मलखाने ऊदन बेंदुलपर असवार ५५
घोड़ करिलिया आल्हा बैठे सिरगा बनरस का सरदार ॥
बैठ मनोहरा की पीठीपर देवा भीषम केर कुमार ५६
पहिल नगाड़ा में जिनबन्दी दुसरे फाँदि भये असवार ॥
तिसर नगाड़ाके बाजत खन लश्करचलिभासाठिहजार ५७
आगे आगे तोपैं चलिभैं पाछे चले मस्त गजराज ॥
घंटा बाजैं गर हाथिन के मानो कोपकीन सुरराज ५८
खर खर खर खर कै रथ दौरैं चह चह धुरी रहीं चिल्लाय ॥
चला रिसाला घोड़नवाला ताकी शत्रभा कही नाजाय ५९
सत्रह दिनकी मैंजलि करिकै माड़ो धुरा दबायनि जाय ॥

जायके पहुँचे बबुरीबनमाँ तहँ पर तम्बू दीन गड़ाय ६०
तंग बछेड़न की छोरीगइँ हाथिन हौदा धरे उतार ॥
बैठक साजीगय आल्हाकै लागीं छोटी बड़ी बजार ६१
लै लै सीधा चले सिपाही भोजन करन हेतु तय्यार ॥
बनी रसोइयाँ रजपूतन की ख्वानन खूबकीन ज्यँवनार ६२
दिन दश बीते बबुरीबनमाँ ग्यरहें ब्वले उदयसिंहराय ॥
किहिकीनिंदिया आल्हा सोये औ कब लयहैं बापका दायँ ६३
तुरत बुलायो फिरि ध्यवा का बोल्यो वचन बनाफरराय ॥
शकुन बिचारो अब जल्दी सों माड़ो काम सिद्धि ह्वैजाय ६४
सुनिकै बातैं बघऊदन की देवा पोथी लीन उठाय ॥
सोचि समुझिकै देवा बोल्यो हमरे सुनो बनाफरराय ६५
जल्दी चलिये अब माड़ो को साइति बहुत गई नगच्याय ॥
सुनिकै बातैं ये देवा की बोला बचन बनाफरराय ६६
उठिये दादा सावधान हो नहिं सब जैहैं काम नशाय ॥
सुनिकै बातैं बघऊदन की आल्हा उठे रामको ध्याय ६७
पाँचो मिलिकै तम्बू चलिभे जहँ पै रहैं द्यवलदे माय ॥
देखिबालकनको द्यावलि फिरि सबको छाती लीनलगाय ६८
बड़ी प्रीति करि मलखाने सों बोली जियो बनाफरराय ॥
मस्तक सूँघ्यो सब लरिकनको पीठिमें दीन्ह्यो हाथ फिराय ६९
द्यावलि बोली फिरि सय्यदसों राजा बनरस के सरदार ॥
जैसे लड़िका ई हमरे हैं तैसे लड़िका लगैं तुम्हार ७०
रक्षा कीन्ह्यो सब लड़िकन कै द्यावर बड़ा भरोसा त्वार ॥
सुनिकै बातैं ये द्यावलि की बोला बनरस का सरदार ७१
बार न बांका इनका जाई द्यावलि मानो कही हमार ॥

रक्षा करिहैं बिसमिल्ला जी करिहैं खुदा खैर यहि बार ७२
पायँ लागिकै महतारी के योगी बने उदयसिंहराय ॥
छोंड़ि आसरा जिंदगानी को औ सब मयामोह बिसराय ७३
पहिरिकैगुदड़ीआपनिआपनि चारो भाय बनाफरराय ॥
पहिरिकै गुदड़ी बनरस वाला खँझड़ीआपनिलीनउठाय ७४
पाँचो चलिभे गढ़माड़ो को गावतपर्ज और ध्वनि ख्याल ॥
भाइ लहुरवा थिरकति जावै बेटा देशराज को लाल ७५
को गति बरणै तिन योगिनकै हमरे बूत कही ना जाय ॥
बबुरीबनके बाहर ह्वैकै माड़ो तरे पहूँचे आय ७६
बजै सरंगी मल्ल देबाकै सय्यद खँझरी रहा बजाय ॥
कर इकतारा मलखाने के आल्हा डमरू रहे घुमाय ७७
ध्वनि सुनि डमरूकै खँझड़ीतहँ तामें मिलै तुरतही आय ॥
डमरू ध्वनि में इकतारा मिलि औ सारँगि को रहा बुलाय ७८
चारो मिलिकै इकमिल ह्वैकै पाँचो शब्द पहूँचै जाय ॥
शब्द मिलावै द्यावलि वालो यहु आल्हाकलहुरवाभाय ७९
को गति बरणै बघऊदन कै गावै गीत छतीसो राग ॥
बड़ी भक्तिमय कृष्णचंद्रमें पूरो भयो तहाँ अनुराग ८०
बाहू दोऊ फरकन लागीं नैना अग्नि बरण होजायँ ॥
देबी शारदाको ध्यावतभो यहु आल्हाकलहुरवाभाय ८१
अईं शारदा उर ऊदन के औ सब हाल दीन बतलाय ॥
बड़ी खुशाली भय ऊदन के जाना मिला बापका दाँय ८२
तब तो थिरकै मल्ल गलियन में फाटक तरे पहूँचा जाय ॥
अलख जगावैं शब्द सुनावैं योगिन धूनी दीन रमाय ८३
तब दरवानी बोलन लागे बाबा मतलब देउ बताय ॥

कहाँ ते आयो औ कहँ जइहौ आपन भेद देउ बतलाय ८४
सुनिकै बातैं दरवानी की बोला तुरत बनाफरराय॥
हमतो आवैं बङ्गालेते आगे हिंगलाज को जायँ ८५
करब याँचना हम महलन में फाटक हमैं देउ खुलवाय॥
सुनिकै बातैं ये योगिन की बोला द्वारपाल हर्पाय ८६
खबरि सुनावैं महराजा को तुमसे कहैं फेरि हम आय॥
कहि हरकारा यह दौरतभा ड्योढ़ी तरे पहूँचा जाय ८७
बेटा अनूपी का जम्बानृप ताको खबरि सुनाई जाय॥
आये योगी हैं द्वारे पर शोभा कही बूत ना जाय ८८

सवैया॥

देख म पाँच लखइमाँ सांच सुनो नृप यांचि यही हम चाहैं।
पाँच के साथ मिले हम सांच पवैं वर यांचि अवैं अवगाहैं॥
देश बिदेश लखे नहिं पांच जो रूप में सांच सचे सच आहैं।
सांच कभी ललिते नहिं यांच चहै दशपांच मनै अरसाहैं ८९

सुनिकै बातैं हरकारा की बोला माड़ो का सरदार॥
जल्दी लावो तुम योगिन को शोभा लखी तासु की द्वार ९०
सुनिकै बातैं महराजा की धावन चला तड़ाका धाय॥
खबरि सुनाई सब योगिन को लय दरबार पहूँचा जाय ९१
बइसपर्त की गुदड़ी लीन्हे ज्यहिमाँ परी ढाल तलवार॥
कुंडल सोहैं भल कानन में शिरपर टोपी करै बहार ९२
सोहैं सुमिरनी कर दहिने में आल्हा डमरू रहे बजाय॥
बजै सरंगी भल देवा कै सय्यद खँभरी रहा उड़ाय ९३
कर इकतारा मलखे लीन्हे ऊदन वंशी रहे बजाय॥

को गति वरणै तहँ योगिन कै शोभा कही बूत ना जाय ६४
लिहे बांसुड़ी सबसों आगे सनमुख गयो उदयसिंहराय ॥
बयें हाथ सों कीन वन्दगी मन में ध्याय शारदामाय ६५
देखिकै तुरतै राहुट ह्वैगा जम्बै माड़ो का सरदार ॥
सनमुख ठाढ़े त्यहि योगी को गरुई हांक दीन ललकार ६६
कउने गँवारे के चेला हौ योगिउकिह्यो शत्रुका काम ॥
जउने हाथ सों जपैं सुमिरनी जउने लेयँ रामको नाम ६७
करैं वन्दगी हम त्यहि सों ना यह फिरि कह्यो बनाफरराय ॥
सुनिकै बातैं बघऊदन की राजा मनै गयो शरमाय ६८
मता अनूपी नृप जम्बा की तहँ पर गई रहै तब आय ॥
शोभालखिलखि सो योगिनकै मनमाँ बड़ी खुशी ह्वैजाय ६६
औ फिरि बोली यह योगिनसों तुम्हरो योग सिद्धि ह्वैजाय ॥
चलिकै नाचो म्वरे महलन में योगेश्वरै कृष्णको ध्याय १००
सुनिकै बातें ये रानी की महलन तुरत पहूँचे जाय ॥
मलखे लीन्हे इकतारा को सय्यद खँभरी रहे बजाय १०१
वजै सरंगी भल देवा कै आल्हा डमरू रहे घुमाय ॥
वजै बांसुरी बघऊदन कै थिरकनलागलहुरवाभाय १०२
टप्पा ठुमरी भजन रेखता धुरपद बिहंगड़ो कल्यान ॥
जयजयवन्ती औ तिल्लाना तोरैं ग़ज़ल पर्ज पर तान १०३
भाव बतावै सब अँगुलिन सों यद्दु द्यावलि को राजकुमार ॥
ता ता थे ई ता ता थे ई कबहूं निकरै शब्द अपार १०४
रानी कुशला की बाँदी तहँ देखै सबै काम बिसराय ॥
एक पहरते दुइ लग बीते तीसरपहरुगयोनगच्याय १०५
बाँदी गमनी तब महलन को देखत रानी उठी रिसाय ॥

बड़ी देर भइ हत्यारी तोहिं कात्वरिअक्किलगईहिराय १०६
क्यहिके महलन में यटकीरहि सांची सांचु देइ वतलाय॥
सुनिकै बातैं महरानी की बांदीहाथजोरि शिरनाय १०७
कही हकीकति सब योगिनकै शोभा बार बार गयगाय॥
कीतो आये इन्द्रलोक ते की वै गये स्वर्ग ते आय १०८
शोभा बरणै को योगिनकै रानी कही बूत ना जाय॥
सुनिकै बातैं ये बांदी की तुरतैहुकुम दीन फरमाय १०९
जल्दी लावो तुम योगिनको दर्शन मोहिं देउ करवाय॥
मोरि लालसा यह डोलति है योगीजायँ महलमेंआय ११०
सुनिकै बातैं ये रानी की बांदी चली हवा के साथ॥
मता अनूपी के महलन में योगिनजायनवायोमाथ १११
कह्यो हकीकति सब रानी की बांदी बार बार शिरनाय॥
मता अनूपी तब बोलत भै योगीचरणनशीशनवाय ११२
घर घर मांगे कछु बनिहैना कुशलामहल चले तुम जाउ॥
वहु धन पैहौ त्यहि महलन में बैठे चहौ जन्मभर खाउ ११३
जैसी औषधि रोगी चाहैं बैदन तैसी दई बताय॥
बड़ी खुशाली भै ऊदन के जनुमिलिगयोबापकादायँ११४
चले पछाड़ी सब योगी फिरि बांदी चली अगाड़ी जाय॥
को गति बरणै तिन योगिनकै जनु गे देवलोक ते आय ११५

सवैया॥

देखत योगिन रूप अनूप चले नर नारि सबै पुर केरे।
आये मनो मघवापुरते यह बात करैं वै सबै मिलिकेरे॥
हेरे तेई नहिं फेरे फिरैं बड़भाग कही जे रहे कोउ नेरे।
योगिन योगिन भेष लखैं ललिते ते कहैं बड़भागहैं मेरे ११६

रय्यत मोही गढ़ माड़ो की काहू धरा धीर ना जाय ॥
पहिली ड्योढ़ी योगी पहुँचे बांदी बोली शीश नवाय ११७
तनुकबिलमिजाउतुमड्योढ़ीपर भीतर खबर सुनावों जाय ॥
सुनिकै बातैं ये बांदी की योगीठाढ़ भये हरिध्याय ११८
घोड़ पपीहा तहँ बांधो थो हाथी खड़ा महोबे क्यार ॥
देखिकै दोऊ रोवनलागे आल्हाछाँड़िदीनाडिंडकार११६
देखि तमाशा ऊदन बोले आल्है बार बार शिरनाय ॥
काहे रोये तुम दद्दुवा हौ सांचे हाल देउ बतलाय १२०
सुनिकै आल्हा बोलन लागे हमरे सुनो लहुरवा भाय ॥
हाथी घोड़ा दोउ मोहबे के इनका देखि मोहगाआय १२१
सुनिकै बातैं ऊदन बोले दादा हुकुम देउ फरमाय ॥
हाथी घोड़ा दोउ लैजावैं औ फौजनमें पहूँचैंजाय १२२
सुनिकै बातैं मलखे बोले ऊदन अक्किल गई हेराय ॥
चोरी चोराते लै जैहौ कलियुग चोरकहैहौजाय १२३
दाग लागि जाय रजपूती माँ औ सब क्षत्रीधर्म नशाय ॥
वादिन लीन्ह्यो हाथी घोड़ा जादिनलिह्योबापकादायँ१२४
तबलौं बांदी दौरत आई योगिन माथ नवायो आय ॥
आगे बांदी पाछे योगी दूसरे फटक पहूँचे जाय १२५
तहँना बिरवा रह बरगदका छाया घनी रही तहँ छाय ॥
योगी बैठे त्यहि छाया में मनमें श्रीगणेशकोध्याय १२६
देशराज औ बच्छराज ये दोऊ भाय बनाफरराय ॥
पत्थर कोल्हुन में पिरवायो जम्बै पूत करिङ्गाराय १२७
खुपड़ी टाँगी त्यहि बरगद में औ रन बोलि बोलि रहिजायँ ॥
लड़िका ह्वैगे बैरागी हैं कोधौं ल्यई हमारो दायँ १२८

पूत सुपूते जो घर होते हमरी गया देत करवाय ॥
सुनि सुनि बातैं ये रन केरी ऊदन गये सनाकाखाय १२६
आल्हा मलखे रोवन लागे सय्यद नैन नीरगा छाय ॥
बांदी बोली तब योगिन ते योगी कहा गयो बौराय १३०
कौने राजा के लड़िका हौ सांचे हाल देउ बतलाय ॥
देखि खुपड़ियनको रोवत कस हमरे धरा धीर ना जाय १३१
सुनिकै बातैं ये बांदी की मलखे बोले बचन बनाय ॥
छोटो योगी यहु बालक है जो रन सुनिकैगयो डेराय १३२
तासों रोवैं हम योगी सब बांदी काह गई बौराय ॥
भूत चुरैलैं हैं कोल्हुन में आभाबोलिबोलिरहिजायँ१३३
छोटो योगी यहु लड़िका है हिंयना चौंकिपरो सो आय ॥
तासों रोवैं हम सब योगी बांदी सत्य दीन बतलाय १३४
सुनिकै बातैं ये योगिन की बाँदी गई हृदय हर्षाय ॥
रानी कुशला की ड्योढ़ी पर योगी सबै पहूँचे जाय १३५
बांदी बोली फिरि योगिन ते भीतर चलो सबै जन भाय ॥
इतनी सुनिकै मलखे बोले बांदी काह गई बौराय १३६
हम ना जैहैं रङ्गमहल को जो सुनिलेय बघेलाराय ॥
गये जनाने में योगी हैं नाहक हमैं डरी मरवाय १३७
सुनिकै बातैं ये योगिन की बांदी गिरी चरण पर धाय ॥
तुम्हैं बुलायो महरानी है तब हम फेरि जुहाराआय१३८
साधु सन्त को सब कोउ मानैं क्षत्री ब्राम्हन हैं अधिकाय ॥
यह नहिं लङ्का है रावण की ना हिंयत्रसैंनिशाचरभाय १३९
निर्भय चलिये तुम भीतर को योगी भरम देउ बिसराय ॥
सुनिकै बातैं ये बाँदी की योगी सबै चले हर्षाय १४०

सीढ़िन सीढ़िन सों ऊपर गे पहुँचे रंगमहल में जाय॥
खिरकी लागीं मलयागिरि की शोभा कही बूत ना जाय१४१
बैठि कबूतर हैं छज्जा पर कहुँ कहुँ नाचिरहे हैं मोर॥
सुवा पहाड़ी कहुँ पिंजरनमाँ मैना बोलि रहे अतिजोर१४२
राजा जम्बा की महरानी खिरकिन परदा दीन डराय॥
पतले कपड़ा के परदा हैं योगी तासों परैं दिखाय १४३
चढ़ाउतारू भुजदण्डैं हैं जिनका सिंहबरण करिहायँ॥
छाती चौड़ीहै योगिनकै नैनन रही लालरी छाय १४४
रूप देखिकै तिन योगिन का रानी गई सनाका खाय॥
डाटन लागी तब बाँदी को बाँदी काह गई बौराय १४५
ऐसे योगी हम दीखे ना ये कोउ राजन केर कुमार॥
तुइ छल कीन्हे म्वरे साथमाँ बाँदी पेट फरैहौं त्वार १४६
योगी बोले तब रानीते रानी भर्म देउ सब छाँड़॥
बाप हमारे बारे मरिगे माता बरी बैस भै राँड़ १४७
देश हमारे सूखा परिगा माता ब्यँचा योगिन के हाथ॥
रूप बिधाता हमका दीन्ह्यो पै हम भजैं सदा रघुनाथ १४८
इतनी सुनिकै रानी बोली ओ योगिनके राजकुमार॥
कहाँते आयो औ कहँ जैहौ कहँ है देश रावरे क्यार १४९
कड़ा सूबरण के क्यहि दीन्हे गुदड़ी कौन दीन बनवाय॥
सुनिकै बातैं ये रानी की मलखे बोले बचन बनाय१५०
देश हमारो बंगालो है औ हम हिंगलाजको जायँ॥
राजा जयचँद कनउज वाला ड्योढ़ी मँगी तासुकीमाय १५१
मोहित ह्वैगा सो योगिनपर गुदड़ी तुरत दीन बनवाय॥
कड़ा सूबरण के अपने कर योगिन स्वईदीन पहिराय १५२

महल तुम्हारे जो कछु पावैं लैकै हरद्वार को जायँ ॥
शंका लावो कछु मनमें ना साँचे हाल दीन बतलाय १५३
सुनिकै बातैं ये योगिन की रानी कुर्सी लीन मँगाय ॥
बैठे कुर्सिनमाँ योगी तब मनमें श्रीगणेशपदध्याय १५४
करों तरंग यहाँ सों पूरण तवपद सुमिरि भवानी कन्त ॥
पारलगायो रघुनन्दन मोहिं कीन्ह्योकृपाफेरि भगवन्त १५५

इति श्रीलखनऊ निवासि (सी,आई, ई) मुंशी नवलकिशोरात्मज बाबू प्रयागनारायणजीकी आज्ञानुसार उन्नामप्रदेशान्तर्गत पँड़रीकलां निवासि मिश्रवंशोद्भव बुधकृपाशङ्करसूनु पं० ललिताप्रसादकृत योगिरानी गृहप्रवेशो नाम द्वितीयस्तरंगः २ ॥

सवैया ॥

श्रुति शत्रुलसैं नितअंगनमें मन भंगकरैं पथदेखि कुचाला ।
रक्षक सोयगयो नँदलाल बिहाल करै सबको कलिकाला ॥
बस एकचलैनहिं दीनदयाल बिना तब ध्यानधरे सुरपाला ।
शर्ण गये ललिते निबहै औ मिटैं सबही मनके भ्रमजाला१

सुमिरन ॥

तोहिं भवानी मैं ध्यावतहौं शारद बैठु कण्ठमें आय ॥
भूले अक्षर जो कछु होवैं करगहि देवो कलम लिखाय १
गद्का उठिगा भीमसेन बिन अर्जुन बिना हिराने बान ॥
पोथी उठिगै भइ सहदेव बिन अब को बाँचै वेद पुरान २
पुण्य न रहिगे कहुँ कलियुगमाँ सबके मनै समान्यो पाप ॥
सुखी न देखा हम काहूको सबके चढ़ी रहै नित ताप ३
विधवा नारी घर घर देखी घर घर जुदे बाप सों पूत ॥
नहीं वीरता क्यहु में देखी देखे बड़े बड़े रजपूत ४

छूटि सुमिरनी गै देवनकै शाका सुनो शूरमन क्यार ॥
रानी कुशला के महलन में योगी बने बैठि सरदार ५

अथ कथाप्रसंग ॥

रानी बोली तब योगिनते हमको भजन सुनावो गाय ॥
सुनिकै बातैं ये रानी की सय्यद खँझड़ी लीन उठाय १
लइ इकतारा मलखे ठाढ़े आल्हा डमरू रहे घुमाय ॥
बजै सरंगी भल देवाकै झुकिझुकिनचैंउदयसिंहराय २
ता ता थे ई ता ता थे ई मलखे हाथन रहे बताय ॥
भाव बतावैं कमर झुकावैं थिरकति फिरैं लहुरवाभाय ३
कबों बँसुरिया धरि ओठनमाँ ऊदन बहुत निकारे राग ॥
देखि तमाशा सब योगिन का रानी बड़ा कीन अनुराग ४
मोती मँगायो फिरि थाराभरि औ योगिनका दीन दिवाय ॥
भरिकै मूठी तिन मोतिन का सूँघन लाग लहुरवा भाय ५
कौन रूख माँ ई उपजत हैं रानी हमैं देउ बतलाय ॥
सुनिकै बातैं ये ऊदन की रानी मनै रही पछिताय ६
कौन तपस्या खंडित ह्वैगै बारे डास्यो मूड़ मुड़ाय ॥
मोती समुंदर में पैदा हैं केहू रूख न लागैं भाय ७
सुनिकै बातैं ये रानी की ऊदन म्वती दीन फैलाय ॥
हीरा मोती जो हम बाँधैं मारग लेवैं चोर छिनाय ८
रानी मल्हना मोहबे वाली त्यहि दै डरयो नौलखाहार ॥
तैसि निशानी जो ह्याँ पावैं योगी खुशी होयँ तब द्वार ९
सुनिकै बातैं ये योगिन की रानी कहा वचन हर्षाय ॥
करो तमाशा तुम महलन में तुमको हार देउँ मँगवाय १०
बेटी विजैसिनि है अटापर रूपा बाँदी लाउ बुलाय ॥

देखि तमाशा ले योगिन का जामें जन्म सुफल ह्वैजाय ११
सुनिकै बातैं महरानी की बाँदी चढ़ी अटापर धाय॥
स्वबत जगायो सतखंडापर बाँदी बार बार शिरनाय १२
तुमहिं बुलायो कुशला रानी जल्दी चलो हमारे साथ॥
सुनिकै बातैं ये बाँदी की नायो रामचन्द्र को माथ १३
लैकै डिब्बा पानन वाला कइ इक बीरा लीन लगाय॥
दुइ इक खाये मुख अपने माँ दुइ इक लीन्हे हाथ चपाय १४
चलिभै बेटी फिर अंटा ते सीढ़िन उतरि तरे गै आय॥
रानी कुशला के महलन में बेटी तुरत पहूँची जाय १५
बीरा दीन्ह्यो बैरागिन को सो ऊदन ने डरा चबाय॥
रूप देखिकै बघऊदन का मूर्च्छितगिरी धरणिमहराय १६
नैन बाण ऊदन के लागे सोऊ गिरे मूर्च्छा खाय॥
देखि तमाशा रानी कुशला तुरतै गई सनाका खाय १७
योगी नाहीं तुम भोगी हौ औ छल किह्यो यहाँपर आय॥
जल्दी बाँदी जा ड्योढ़ी पर औ करियाका लाउ बुलाय१८
बाँधिकै मुशकैं सब योगिन की औ कोल्हू माँ डरों पिराय॥
देखिविजयसिनियोगीगिरिगा यहिका पेट डरों चिरवाय १९
भुसा भरावों यहि पेटेमाँ अपने महल देउँ टँगवाय॥
इतना सुनिकै मलखाने फिरि बोले तुरतै वचन बनाय २०
छोटे योगी जो मरिजैहै महलन आगि देउँ लगवाय॥
हारि तमाखू बीरा लाई सो योगीका दिह्यो खवाय २१
पीक लीलिगा वारो योगी मुर्च्छा खाय गिरा भहराय॥
तै जल छिनकन मलखे लागे तब जगि परा लहुरवाभाय २२
बेटी बिजैसिनि उठि ठाढ़ी भै रानी गोद बैठिगै जाय॥

पूंछन लागी तब बेटी ते काहे बदन गयो कुँभिलाय २३
रूप देखिकै इन योगिन का उरमें गइ दया फिरि आय ॥
मात पिता बारे ते मरिगे तब इन डारे मूड़ मुड़ाय २४
ठाढ़े सोचों मैं मनमें यह तबलौं पाँव रपटिगा माय ॥
हारि तमाखू बीरा लायूं ताते योगी गिरा भहराय २५
पाप न लावो कछु मन अपने माता सत्य दीन बतलाय ॥
सुनिकै बातैं ये बिटिया की मनमा सत्य समभिगैमाय २६
रानी बोली फिरि योगिन ते अब तुम करो तमाशा भाय ॥
सुनिकै बातैं ये रानी की नाचन लाग लहुरवा भाय २७
गावन लागे मलखाने तब धुरपद सरंगीत औ ख्याल ॥
धनि धनि माता इनकी कहिये ऐसा कहन लगीं सबबाल २८
एकते दुसरी बोलन लागी हमरी सुनो सखी तुम बात ॥
बालम हमरे जो ये होवैं ऐसो बिधी बनावैं नात २९
बैठि बिजनिया इनके ढारैं मुख में सखी खवावैं पान ॥
सुफल जन्म आपन हम मानैं मानो सखी बचन परमान ३०
तीसरि बोली फिरि आली सों आली करो बचन ममकान ॥
रूप उजागर सब गुणआगर योगीसकलगुणनिकेखान ३१
हमहूँ मोहिन इन योगिन पर मानो सखी बचन तुम साँच ॥
धड़कै आली म्वरि छाती अब औजरिरहिनबिरहकीआँच ३२
चौथी बोली का तुम बोलो हमरे लगे करेजे बान ॥
तीषे नैना हैं योगिन के मानो अबै उतारे शान ३३
पँचयीं बोली का तुम बोलो सखियो सबै गइउ बौराय ॥
कबहुँक पावैं हम पलँगा पर तौ बैकुण्ठ धामको जायँ ३४
छठयीं बोली फिरि सखियन सों हमनिज जियकी देयँबताय ॥

हम सुखपावैं इन योगिन सँग चाहौ भीख मागिकै खायँ ३५
सतयीं बोली का तुम बोलो जो यह लिखा होत कर्त्तार॥
हमहूं होइत क्यहु योगी घर तब ये होते मोरि भतार ३६
अठयीं बोली का तुम बोलो याही लिखा रहै कर्त्तार॥
नैनन देखै मन सों मोहै ताको जानो पूर भतार ३७
नवयीं बोली का तुम बोलो तुम्हरे खाउँ पूत औ भाय॥
तुम्हरे सबके ई पति होवैं हमका कौन दई लैजाय ३८
दशयीं बोली तब रिस करिकै राँड़ो अबना करो चवाउ॥
देखो तमाशा तुम योगिन का बातन काह धरै लैजाउ ३९
सुनिकै बातैं त्यहि दशयीं की सखियां सबै गईं शरमाय॥
जितनी नारी गढ़माड़ो की सो योगिन पर गईं लुभाय ४०
दिह्यो रुपैया केहु योगिन का केहू दीन मोतिन का हार॥
रानी कुशला वैरागिन को तुरतै दीन नौलखाहार ४१
चलिभे योगी तब महलन ते फाटक उपर पहूँचे जाय॥
बेटी बिजैसिनि तहँ जल्दी सों ऊदन पास पहूँची आय ४२
पकरिकै बाहू दोउ ऊदन की औ यह बोली वचन सुनाय॥
मैं पहिचानति त्वहिं ऊदन है नाहक डारयो मूड़ मुड़ाय ४३
योगीके बालक तुम आहिवना आहिव देशराज के लाल॥
जल्दी चलिदे म्वरे महलन में नाहीं तोर पहूँचा काल ४४
सुनी बिजैसिनि की ई बातैं बोला तुरत लहुरवा भाय॥
कहँना दीख्यो तुम ऊदन का साँचे हाल देउ बतलाय ४५
सुनिकै बातैं बघऊदन की बोली तुरत बिजैसिनि बैन॥
अभई लड़िका जो माहिल का देखा तासु ब्याह में नैन ४६
हमहूं न्योते गईं सिरउँज माँ तहँ तुम गये बराती भाय॥

पाग बैंजनी शिरपर बाँधे ठाढ़े रहौ बनाफरराय ४७
धक्का मारयो म्वरि छाती मा चोली मसाकि गई त्यहिठाँय ॥
तब हम चितई दिशितुम्हरीका औ यह मनै लीन ठहराय ४८
ब्याही जैबे की ऊदन सँग की मरिजाब जहरको खाय ॥
इतना सुनिकै ऊदन चलिभे अंटा उपर पहूँचे जाय ४९
सेज बिछायो सो जल्दी सों तब यह कह्यो बनाफरराय ॥
क्वारी कन्या की सेजिया पर ऊदन कबों धरै ना पाँय ५०
मूड़ मुड़ावा तुम्हरे कारण घर घर अलख जगावा आय ॥
पहिले अरुझै को सुरझावो पाछे सेज बिछावो जाय ५१
हाल बतावो सब माड़व का जासों लेयँ बापका दायँ ॥
चोरी चोरा लैजैबे ना साँचेहाल दीन बतलाय ५२
तेहाराखी रजपूती का गुदड़ी अबों परी तलवार ॥
हमको चाहो हाल बतावो नाहीं तजो प्रीति का तार ५३
सुनिकै बातैं बघऊदन की बोली तुरत बिजैसिनि नारि ॥
किरिया करिल्यो श्रीगंगा की याही लगे मोरि है आरि ५४
सुनिकै बातैं ये कन्या की तुरतै खैंचिलीन तलवार ॥
बिना बियाहे तुमका छाँड़ों तो मोहिं लागै पाप अपार ५५
सुनिकै बातैं उदयसिंह की कन्या कह्यो बचन शिरनाय ॥
किला कठिन है लोहागढ़का तहँ ना जयो बनाफरराय ५६
पनिहासोते लों खंदक हैं जम्बा करै तहाँ को राज ॥
गर्भ गिरावनि तहँ तोपै हैं वहँ नहिं सरै तुम्हारोकाज ५७
किला कठिनहै फिरिझांसीका जहँ पर रहै करिंगाभाय ॥
किला तीसरे सूरज भैया तहाँ न जयो बनाफरराय ५८
तोप लगावो बबुरी बनमा तौ मिलिजाय बापका दायँ ॥

बात हमारी पै भूल्यो ना साँचीकिह्यो उदयसिंहराय ५९
बिना बियाहे तुमका जावैं हमका लौटि भगौती खायँ ॥
आल्हा देखैं ह्याँ गलियनमा कहूं न दीख लहुरवा भाय ६०
ठाढ़े सोचन आल्हा लागे मनमा बारबार पछिताय ॥
मुख दिखलैहौं कस मल्हनाको राजै काह सुनैहौं जाय ६१
द्यावलि माता जो सुनि पैहैं तौ मरिजायँ पुत्र के घाय ॥
सिढ़ियन सिढ़ियन ते नीचे ह्वै ऊदन तुरत पहूँचे आय ६२
देखिकै ऊदन को आल्हा ने तुरतै छाती लीन लगाय ॥
देर लगाई कहँ भाई तुम सो मोहिं हाल देवबतलाय ६३
सुनिकै बातैं ये आल्हा की बोले उदयसिंह बलवान ॥
ब्यटीबिजैसिनि रनिकुशलाकी सो वह हमैं गई पहिंचान ६४
ब्याह हमारे सँगमा कीन्ह्यो हमते कसम लीन करवाय ॥
हाल बतायो सब माड़ो का दादा सत्य दीन बतलाय ६५
सुनिकै बातैं ये ऊदन की आल्हा बोले बचन रिसाय ॥
ब्याह न करिहैं हम बैरी घर मानो कही उदयसिंहराय ६६
जब सुधि करिहै निजघर केरी स्वावत हनै स्वरे तलवारि ॥
मरे केकई सों दशरथ हैं अजहूं करैं दुर्दशा नारि ६७
इतनी सुनिकै मलखे बोले दादा मानो कही हमार ॥
पहिले बदला लेउ बाप को पाछे फेरि किह्यो तकरार ६८
इतनी सुनिकै पांचो चलिभे लोहागढ़ै पहूँचे आय ॥
देखिकै फाटक लोहागढ़ को आल्हासोचिसोचिरहिजायँ६९
कठिन मवासी गढ़माड़ो है कैसे मिलै बाप का दायँ ॥
बातैं सुनिकै ये आल्हा की बोले तुरत बनाफरराय ७०
कृपा जो होई नारायण की तौ मिलि जई बापका दायँ ॥

कायर सोचैं इन बातन का दादा तुम्हरी स्वचै बलाय ७१
राजा जम्बै की ड्योढ़ी माँ योगी सबै पहूँचे जाय ॥
मलखे बोले दरवानी सों हमरी खबरि जनावो जाय ७२
योगी आये बंगाले ते आगे हरद्वार को जायँ ॥
सुनिकै बातैं ये योगिन की बोला द्वारपाल मुसुकाय ७३
जैसे पहिले ह्वै आयेते तैसे फेरि पहूंचोजाय ॥
राजा जम्बै की ड्योढ़ीमाँ योगिनअलखजगायोआय ७४
लागि कचहरी है जम्बैकी भारी लाग राजदरबार ॥
बैठक बैठे सबक्षत्री हैं एकते एक शूरसरदार ७५
करिया बैठो तहँ दहिने है टिहुनन धरे नांगितलवार ॥
बाँयें हाथे किह्यो बन्दगी यहुद्यावलिका राजकुमार ७६
देखिकै करिया राहुट ह्वैगा नैना अग्नि बरण ह्वैजायँ ॥
करिया देख्यो दिशियोगिनके कारेनाग ऐस मन्नाय ७७
बँयें हाथते किह्यो बन्दगी योगी काहगयो बौराय ॥
सम्मुख हमरे अब आवोना नाहीं सबैदेउँ पिटवाय ७८
सुनिकै बातैं ये करियाकी बोला उदयसिंह ज्यहिनाम ॥
दहिने करसों जपैं सुमिरनी दहिने लेयँ रामकानाम ७९
तौने करसों करैं बन्दगी हमरो योगभंग ह्वैजाय ॥
सुनिकै बातैं ये योगीकी बोला तुरत करिंगाराय ८०
सच्चे गुरुके तुम चेलाहौ योगी सच्चा ज्ञान तुम्हार ॥
तान सुनावो म्वरेमहलनमें योगी मानो कही हमार ८१
लीन सरंगी को देवा तब सय्यद खँझरी लीनउठाय ॥
लै इकतारा मलखे ठाढ़े आल्हा डमरू रहे घुमाय ८२
जैसे जङ्गल नचैमुरैला तैसे नचै लहुरवाभाय ॥

जैसि रागिनी मलखेगावैं देवा तैसे देय बजाय ८३
बजै बँसुरिया भल ऊदनकी थेई थेई रहे मचाय ॥
ताताथेई ताताथेई मुखसों बोलैं अँगुरिन भावबतावतजायँ ८४

सवैया ॥

मोहिगयो माड़व शिरताज सो राजके काज सबै बिसराये ।
तानके बान नथा करिया अरिऊपर चित्तको सोउ लुभाये ॥
होनी चहै सो होन भलीविधि ज्ञान औ बुद्धि न होत सहाये ।
तानके बानलगैं मलखानके ज्वानगिरैं ललिते मुरझाये ८५

ख्याति मोही सब माड़ो की मोहे बाल बृद्ध औ ज्वान ॥
राजा बोला तब माड़व का योगिउ वचनकरो परमान८६
लाखापातुरि म्वरे महलन में ताकी तानसुनी हम भाय ॥
की हम मोहे त्वरि तानन में योगी सत्य दीन बतलाय८७
सुनिकै बातैं महराजा की तुरतै ब्वला लहुरवा भाय ॥
तुम बुलवावो त्यहि पातुरिको हमको तान सुनावैआय ८८
हुकुम लगायो महराजा ने लाखा तुरत पहूंची आय ॥
तबला गमके व्रजबासिनि के औध्वनिगई मँजीरनछाय ८९
लिह्यो सरंगी को भँडुवा तब लाखानचनलागि त्यहिठायँ ॥
को गति बरणै तब लाखाकै हमरे त्रूत कही ना जाय ९०
जब दिशिआई वह योगिन के तब फिरि ब्वलालहुरवाभाय॥
हुकुम जो पावें हमें दादा को याको हार देयँ पहिराय ९१
आल्हा बोले तब ऊदनते भैया मानो कही हमार ॥
पहिरे देखी जम्बैराजा लाखा गले नौलखाहार ९२
मूड़ कटाई सब योगिन के भैया काहगयो बौराय ॥
कही न मानी सो आल्हाकी ताको हार दीन पहिराय ९३

हरवा देखत लाखापातुरि तुरतै हाल गई सब जानि ॥
ईतो लड़िका हैं द्यावलि के अपनोवदनाछिपायोआनि ६४
क्हियो इशारा अस योगिनको ज्यहिमाँ चले बेगिही जायँ ॥
जो कहुँ जानी जम्बै राजा तुरतै डारी इन्हैं मराय ६५
जानि इशारा को योगी गे तुरतै ब्वला लहुरवा भाय ॥
बारह बरसैं तुमका ह्वइगैं अब हम मोहबा देबादिखाय ६६
बिदा मांगिकै महराजा सों योगी चले तुरतही धाय ॥
योगी पहुँचे पचपेड़न तर लाखा लीन्ह्यो हार छिपाय ६७
उड़ा दुपट्टा जब बायू सों चमकन लाग नौलखा हार ॥
चमकत दीख्यो त्यहि हरवाको राजा माड़ो का सरदार ६८
जम्बै बोलै तब लाखा ते सांचे हाल देव बतलाय ॥
हरवा दीन्ह्यो को तुम को है हमरे धीर धरा ना जाय ६९
हाथ जोरिकै लाखा बोली यह तकसीर माफ़ ह्वैजाय ॥
राह चलन्ते योगी आये हम को हार गये पहिराय १००
इतना सुनिकै राजा जम्बा तुरतै गयो सनाकाखाय ॥
करिया बेटा ते बोलत भा अब तुम रंगमहलकोजाय १०१
हार नौलखा मोहबे वाला सो मोहिं बेगि दिखावै आय ॥
इतना सुनिकै करिया चलिभा पहुँचा रंगमहल में जाय १०२
आवत दीख्यो जब करिया को कुशला मिली तुरतही आय ॥
कौन काम को तुम आये हौ करिया हमैं देउ बतलाय १०३
हार मँगाय देउ मोहबे का राजै तुरत दिखावैं जाय ॥
लरी टूटिगय त्यहि हरवा कै सो पटवा घर दीन पठाय १०४
टूटो टाटो जस कछु होवै तस तुम हमैं देव मँगवाय ॥
थर थर कांपी महरानी तब बोली कछू कही ना जाय १०५

योगी आये म्वरे महलन में तिनका हारदीन पहिराय॥
सुनिकै बातैं ये माता की राजै खबरि जनायो आय १०६
धोखे योगिनके भूल्यो ना वै राजन के राजकुमार॥
घरघर लूटा तिन माड़ो भल वै लैगये नौलखाहार १०७
सुनिकै बातैं ये करिया की जम्बै हुकुमदीन फरमाय॥
पकरिलयआवोतुम योगिनको हमरी नजर गुजारोआय १०८
उनहीं पाँयन करिया चलिभो अपनी लिहे ढाल तलवार॥
जायकै पहुँचा पचपेड़ा तर गरुई हांकदीन ललकार १०६
तुम्हैं बुलावत महराजा हैं योगिउ चलो हमारे साथ॥
लौटैकेरी म्वहिं आज्ञा ना हमरे सत्य सुमिरनी हाथ ११०
सुनिकै बातैं ये योगिनकी करिया खैंचिलई तलवारि॥
पाँव अगाड़ी को डारयो जो खण्डाकरों तुरतही चारि १११
बातैं सुनिकै ये करिया की ऊदन खैंचिलीन तलवारि॥
धोखे योगी के भूले ना नहिंशिरकाटिदेउँभुइँडारि ११२
आल्हा मलखे देवा सय्यद इनहुन खैंचिलई तलवार॥
दौरे करियाके ऊपर सब गरुई हांकदेत ललकार ११३
करिया सोच्यो अपने मनमाँ ये नहिं योगिनकेर कुमार॥
ये हैं लड़िका मोहबे वाले एक ते एक शूरसरदार ११४
जो हम बोलैं इन योगिनते तौ फिरिजाय प्राणपर आय॥
यहै सोचिकै करिया लौटो जम्बाढिगै पहूँचा जाय ११५
हाथ जोरिकै करिया बोलो दादा मानो कही हमार॥
धोखे भूल्यो ना योगिनके वै बघवलिके राजकुमार ११६
सुनिकै बातैं ये करिया की बोला माड़ोका सरदार॥
तुरत नगड़ची को बुलवावो फौजैं सबै होयँ तय्यार ११७

योगी पहुँचे त्यहि तम्बू में जहँ पर रहै देवलदे माय॥
जितनी गाथा रहै माड़ो की ऊदन सबै गये तहँ गाय ११८
सुनिकै बातैं बघऊदन की माता बड़ी खुशी ह्वैजाय॥
नदी नर्मदा के ऊपर माँ तम्बू बैठि बनाफरराय ११९
ऊदन बोले तहँ आल्हा ते दादा मानो कही हमार॥
बरह कोस को है बबूरीबन ह्याँपर रहै सदा अँधियार १२०
गम्य सिपाहिन कै नाहीं है ह्याँपर काह करैं असवार॥
हुकुम जो पावैं हम दादा को तौ कटवाय करैं उजियार १२१
सुनिकै बातैं ये ऊदन की आल्हा हुकुम दीन फर्माय॥
चला कुल्हाड़ा तब बबुरीबन लागे गिरन वृक्ष अरराय १२२
गा हरकारा तब टोंडरपुर टोंडरमलै जुहारो जाय॥
राजा आये हैं मोहबे के ते बबुरी बन रहे कटाय १२३
सुनिकै बातैं ब्यटा अनूपी धावन तुरत लीन बुलवाय॥
जाय नगड़ची ते बोलौ तुम पुरमें डौंड़ी देय बजाय १२४
खबर नगड़ची सो पावत खन तुरतै डौंड़ी दीन बजाय॥
चला दरोगा हाथिनवाला तिनकीसाँकरिदीनछुराय १२५
हथी महावत हाथी लैकै तिनका जमीं दीन बैठाय॥
डरी अँबारी तिन हाथिन पर ऊपर हौदा दीन धराय १२६
चांदी हौदा क्यहु हाथी पर सोने कलश धरे सजवाय॥
डारिकै रस्सा रेशमवाले तिनकोतुरतदीनकसवाय१२७
सजिगे हाथी जब टोंडरपुर घोड़ा होन लागि तय्यार॥
हरियल मुश्की ताजी तुरकी नकुलासब्जाघोड़अपार१२८
घोड़ा सजिगे सब जल्दी सों तिनपर होन लाग असवार॥
लाँग चढ़ाये सब धोतिनकी हाथम लिहे ढाल तलवार१२९

कउ कउ घोड़ा हिरन चालपर कउ कउ मोर चालपर जायँ ॥
कावा घूमैं कउ कउ घोड़ा कउ कउ सर्पटरहा चलाय १३०
सजा रिसाला घोड़नवाला पैदर होन लागि तय्यार ॥
झीलम बखतर पहिरि सिपाही हाथम लीन ढाल तलवार१३१
मेघागर्ज्जनि बिजुली तड़पनि तोपैं सबै भईं तय्यार ॥
मारू डंका बाजन लागे विप्रन कीन वेद उच्चार १३२
रणकी मौहरि बाजन लागी घूमन लागे लाल निशान ॥
गर्द उड़ानी है पृथ्वी में छाई रई तुरत असमान १३३
औरै बयरिया डोलन लागी औरै होन लाग व्यवहार ॥
सजा डुलरुवा यहु अनुपी का ज्यहिकानेकुनलागी वार १३४
लाँग चढ़ाई त्यहि रेशम की कम्मर दुइ बांधी तलवार ॥
अगल बगल पर दुइ पिस्तौलैं दहिने हाथे लीन कटार १३५
बाँयें भाला नागदवनिका दहिने परी गैंड़की ढाल ॥
सुरखा घोड़ाको मँगवायो मनमेंसुमिस्योअवधभुवाल १३६
माथ नवायो श्रीगणेश को औ सुर्यनको कीन प्रणाम ॥
सुमिरि भवानी शिवशंकर को लीन्ह्योकृष्णचन्द्रकोनाम १३७
टोंडरमल दहिने पर आये सञ्जा घोड़े पर असवार ॥
कूच के डंका बाजन लागे सबदलतुरतभयोहुशियार १३८
कूच करायो टोंडरपुर ते बबुरी बनै पहूंचे आय ॥
सुनि सुनि डंकाके शब्दन को चौंका तुरत लहुरवाभाय १३९
हुक्कुम लगायो निज फौजन में क्षत्री तुरत भये हुशियार ॥
झीलमबखतर पहिरिसिपाहिन हाथम लई ढाल तलवार १४०
घोड़ा मनोहरा की पीठीपर देवा तुरत भयो असवार ॥
चढ़ा बेंदुला की पीठीपर यहुद्यावलिकोराजकुमार १४१

बेटा अनूपी आगे ह्वैकै आयो जहाँ उदयसिंहराय॥
कहाँ से आयो औ कहँ जैहौ आपनहाल देउ बतलाय १४२
कौन बहादुर अस दुनियाँ माँ जो बबुरीबन रहा कटाय॥
बेटा अनूपी की बातैं सुनि तुरतै ब्वला बनाफरराय १४३
फौज हमारी माड़ो जैहै यहु बनबड़ा घना है भाय॥
हैं परिमालिक जो मोहबे के जिनकाकही चँदेलाराय १४४
हमतो नौकर तिन घर केरे हमरो नाम उदयसिंहराय॥
बेटा अनूपी तब समुझायो ऊदन लौटि मोहोबे जाय १४५
इतनी सुनिकै ऊदन बोले क्षत्री मानो कही हमार॥
घोड़ा पपीहा लाखा पातुरि औ मँगवाउ नौलखा हार १४६
दै पचशब्दा हाथी देवो बिजमा ब्याह देउ करवाय॥
मूड़ काटिकै नृपजम्बा का हमरी नजरि गुजारोआय१४७
बेटा अनूपी सुनि रिसहा भा औ क्षत्रिन ते कहा सुनाय॥
जान न पावैं मोहबे वाले टटुवाटायर लेउ छिनाय १४८
बेटा अनूपी की बातैं सुनि रिसहा भयो बनाफरराय॥
तुरत दरोगा को ललकार्‌यो चरखिन तोपैं देउ चढ़ाय १४९
बत्ती दैद्यो मोरि तोपनमाँ इन पाजिन को देउ उड़ाय॥
सुनिकै बातैं बघऊदन की गोलंदाज पहूँचे आय १५०
गोला डारे तिन तोपनमाँ सुम्मा मारैं फेरि चलाय॥
धरिकै रंजक फिरि प्यालन में ऊपर बत्तीदई लगाय १५१

सवैया॥

गोलाचले तब ओलासमान मनो घनसावनको चढ़िआयो।
भूमि अकाश न सूझिपरै धुँवना दोउफौजनमें अतिछायो॥
घावपरै बहुहाथिन बाजिन ऊदन के दलको बिचलायो।

कौनकहैगतिक्षत्रिनकी ललितेपर जात कछूनहिंगायो १५२

पहिले मारुइ भइँ तोपन की पाछे चलनलागि तलवार॥
पैदरि पैदरि का झुरमुटभा औ असवारसाथ असवार १५३
चारिघरीभरि चली सिरोही बीरन रहे बीर ललकार॥
भाला बरछिन की मारुइ भइँ कोताखानी चलीं कटार १५४
बड़ी मारुभइ बबुरीबनमाँ जूझनलागि सुघरुवा ज्वान॥
कटि कटि शिरधरतीपर गिरिगे सबकाछूटिगयोअभिमान १५५
खट खट खट खट तेगा बोलै रणमाँ छपक छपक तलवार॥
सन सन सन सन गोलीबरसैं खन खन कड़ाबीनकी मार १५६
मर मर मर मर ढालैं बोलैं ठन ठन भालन को झनकार॥
झल्झल्झल्झल्छूरीझलकैं बोलैं मारु मारु सब मार १५७
मूड़न केरे मुड़चौरा भे औ रुंडन के लाग पहार॥
कटि भुजदंडै गइँ क्षत्रिन की कल्लाकटे बछेरन क्यार १५८
रकतकि नदियातहँबहिनिकरीं जूझे बड़े बड़े सरदार॥
चहे वार तहँ जायँ क्षत्रिन के जैसे नदिया बहै सिवार १५९
गोहैं ऐसी भुजदण्डै तहँ ढालैं कछुवा सम उतरायँ॥
छुरी कटारी मछली मानो औ धड़ नैयासमबहिजायँ १६०
काककंक तिन ऊपर बैठे मानो नादिया ख्यलैं नेवार॥
बेटा अनूपी आगे आयो सुरखा घोड़े पर असवार १६१
औ ललकारयो बघऊदन को ओ द्यावलि के राजकुमार॥
मेरे सिपाहिन के का पइहौ ऊदन तोरिमोरि तलवार १६२
बेटा अनूपी की बातैं सुनि भा मन खुशी लहुरवा भाय॥
ऊदन बोले त्यहि क्षत्री ते तुम्हरी अवधिपहूँचीआय १६३
पहिलि कैले समरभूमि में नाहर टोंडर के सरदार॥

पहिले लोहे तुम्हरी घावैं फिरिकचलोहियादेखुहमार १६४
सुनिकै बातैं ये ऊदन की अनुपी भाला लीन उठाय ॥
दूनों अँगुरिन भाला तौलै कालीनाग ऐस मन्नाय १६५
छुटिगा भाला जो हाथेते कम्मर मचा ठनाका जाय ॥
घोड़ा बेंदुला बायें ह्वैगा औबचिगयो लहुरवाभाय १६६
हँसिकै बोल्यो तब अनुपीते यहु रणबाघु उदयसिंहराय ॥
दूधु लरिकई माँ पायो ना तुम्हरे मरे चढ़ै ना घाय १६७
अब तुम सुमिरौ यहिसमयामाँ जो गाढ़े माँ होयसहाय ॥
वार हमारी ते बचिजायो घरमाँ छठी धरायो जाय १६८
अब ना बचिहौ रणखेतनमें अनुपी सम्हारि होउ हुशियार ॥
इतना कहिकै बघऊदन ने नंगी खैंचिलीन तलवार १६९
मरी सिरोही तब अनुपी के धरती गिरयो भरहराखाय ॥
मरिगा अनुपी रणखेतन माँ टोंडरमलौ पहूँचा आय १७०
औ ललकारा बघऊदन का अब तुम खबरदार ह्वैजाय ॥
धोखे अनुपी के भूल्यो ना अबहीं सरगदेउँपहुँचाय १७१
खैंचि सिरोही लइ कम्मर से औ ऊदन पर दई चलाय ॥
वार ढालपर ऊदन लीन्ह्यो टोंडर हाथ मूठि रहिजाय १७२
टूटि सिरोही गै टोंडर के तब मनसोचभयो अधिकाय ॥
एँड़ लगायो फिरि बेंदुलके टोंडरपास पहूँच्यो आय १७३
ढाल कि औझड़हनिकै मारयो औ घोड़ाते दियो गिराय ॥
बाँधिकै मुशकैं फिरि टोंडर की लश्करतुरतदीनपहुँचाय १७४
मारु बन्दभै तब डुँवना पर सायंकाल पहूँचा आय ॥
तारागण सब चमकन लागे संतन धुनी दीन परचाय १७५
परे आलसी निज निज शय्या घों घों कण्ठ रहा घर्राय ॥

माथ नवावों पितु अपने का जिनमोहिंविद्यादीनपढ़ाय १७६
करों तरंग यहाँसों पूरण तव पद सुमिरि भवानी कन्त ॥
राम रमा मिलि दर्शन देवो इच्छायही मोरि भगवन्त १७७

इति श्रीलखनऊनिवासि (सी,आई,ई) मुंशी नवलकिशोरात्मज बाबू
प्रयागनारायणजीकीआज्ञानुसार उन्नामप्रदेशान्तर्गत पँड़रीकलां
निवासि मिश्रवंशोद्भवबुधकृपाशङ्करसूनु पं० ललिताप्रसादकृत
अनुपीवधोनामतृतीयस्तरंगः ३ ॥

कवित्त ॥

चन्द्रभालमुण्डमाललोचनविशाललाल ओढ़ेतनबाघखाल पोढ़ेभक्तपालहै ।
मोहमार कामजार बैलके सवार यार मोर रखवारहोहु नाम जक्तपाल है ॥
सोहैं शीशगंगा फिरैं भंगके उमंगा नंगा संग अर्द्धंगा गौरि दीननको ग्यालहै ।
ध्यावैं औमनावैं गावैं ललितहमेश शेश पावैं नाहिं पार शिवकालहूको कालहै १

सुमिरन ॥

दुर्गामाता तुमका ध्यावों नितप्रति दुर्गापाठ सुनाय ॥
तुम असिमाता को त्रिभुनमाँ ड्योढ़ी जासु जुहारों जाय १
भयू यशोदाके पेटे सों त्रिभुवन जान तुम्हारी गाथ ॥
तुम्हरे भाई कृष्णचन्द भे त्रिभुवनपती चराचरनाथ २
जिनकी कीरति महभारत में पर्वै रची अठारह व्यास ॥
मथा समुन्दर गा सतयुग में पूरी तबै सबैकी आश ३
भारत मथिकै मच्छोदर सुत गीता ताते कीन प्रकाश ॥
गीता धीता जो कोउ कीन्ह्यो लीन्ह्योजीति जगतकी फाँस ४
छूटि सुमिरनी गै देवनकै शाका सुनो बनाफर क्यार ॥
जम्बै राजा जो माड़ो का सूरज लड़िहै तासु कुमार ५

अथ कथाप्रसंग ॥

गा हरकारा फिरि माड़ो को बारहदरी पहूँचा जाय ॥
बेटा जम्बै को सूरजमल तहँपर रहा रामको ध्याय १
खबरि सुनाई हरकाराने अनुपी मरण गयो सबगाय ॥
सुनिकै बातैं हरकारा की मनजरिमरयो बघेलाराय २
तुरत नगड़ची को बुलवायो डंका तुरत दीन बजवाय ॥
हाथी घोड़ा औ तोपन को बबुरीबन का दीन हँकाय ३
हरियल घोड़ाकी पीठी पर आपो फांदिभयो असवार ॥
माथ नायकै श्रीगणेश को औ मन सुमिरयो नन्दकुमार४
सुमिरि भवानी जगदम्बाको औ शिव रामचन्द्रको ध्याय ॥
सूरज चलिभा बबुरीबनको औ रणखेत पहूँचा आय ५
आगे लश्कर के सूरजमल गरुई हांक दीन ललकार ॥
काकी माता नाहर जायो काके जमे करेजे बार ६
को कटवावत है बबुरीबन औ को मोहबेका सरदार ॥
कौन कहावत उदयसिंह है किसने डरा अनूपी मार ७
घोड़ा बेंदुला पर टहलत रहै यहु रणबाघु लहुरवा भाय ॥
सुनिकै बातैं सूरजमल की तुरतै ब्वला बनाफरराय ८
हमरी माता नाहर जायो हमरे जमे करेजे बार ॥
हम कटवावत हैं बबुरीबन हमहीं डरा अनूपी मार ९
फही सुना भा जब दूनों माँ दूनों कुँवर गये अलगाय ॥
सूँड़ि लपेटा हाथी भिड़िगे अंकुश भिड़े महौतनभाय १०
बम्ब के गोला छूटन लागे धुँवना रहा सरग में छाय ॥
गोली ओलासम बरसत भई भन भन भन्न भन्न भन्नाय ११
छाय अँध्यरिया गै दिनही में औ तिलडरा भुई ना जाय ॥

कउँधालपकनिबिजुलीचमकनि रणमाँचमकिचमकिरहिजाय१२
ऐसि सिरोही मलखाने कै ठाकुर समरधनी मलखान॥
काटि गिरायो रजपूतन को हाथिनमारि कीन खरिहान १३
जैसे भेड़िन भेड़हा पैठै जैसे अहिर बिडारै गाय॥
जैसे भाई आसमान में चन्दै राहु गरासै जाय १४
जैसे अर्ज्जुन के देखत में कौरव फौज जाय थर्राय॥
जैसे पूजे शिवशंकर के दारिद तुरतै जाय नशाय १५
तैसे मलखे ज्यहिदिशि जावैं सो गलियार परै दिखलाय॥
मलखे केरे भइ मुर्चा में कउ रजपूत न रोंकै पायँ १६
सूरजमल औ उदन बाँकुड़ा दोऊ करैं बराबर मार॥
बैस बराबर है दोऊ कै दोऊ समरधनी सरदार १७
गदा बनेठी दोऊ खेलें कसरत करैं नटन के साथ॥
भाला बलछी दोनों बाँधे लीन्हे कड़ाबीन दोउहाथ १८
करैं पैतड़ा रण खेतन में दोऊ रहे दुहुँन ललकार॥
हनि हनि मारैं एक एक को दोऊ लेयँ ढालपर वार १९
बड़ी लड़ाई दोऊ कीन्ह्यो मानो छुटे जँगल के बाघ॥
हारि न मानैं कोउ कोऊ ते दोऊ बड़े लड़ैया घाघ २०
खैंचि सिरोही सूरज लीन्ह्यो करिकै रामचन्द्रको ध्यान॥
ऐंचि कै मारा बघऊदन के दोऊ हाथ सँभरिकै ज्वान २१
टूटि सिरोही गै सूरज कै खाली मूठि हाथ रहिजाय॥
सूरज सोच्यो अपने मनमाँ हमरी मृत्यु गई नगच्याय २२
ऊदन बोल्यो तब सूरज सों मानो कही बघेलोराय॥
कोदो दैकै बाढ़ि धरायो तुम्हरे मरे चढ़ै ना घाय २३
सँभरिकै बैठो अब घोड़ापर क्षत्री खबरदार ह्वैजाय॥

वार हमारी ते बचिजाये घरमाँ छठी धराये जाय २४
यह कहि मारा तलवारी को शिरपर परी सूर्य के जाय ॥
फटिकै खुपरी दुइ . टूका भे सूरज गिरा भरहराखाय २५
सूरज गिरतै परलय ह्वैगै लशकर तितिरबितिरह्वैजाय ॥
भागि सिपाही गढ़ माड़ो को जम्बै शरण पहूँचे आय २६
सुनी सिपाहिन की बातैं जब राजा जम्बै उठा रिसाय ॥
हुक्म लगायो फिरि करियाको बबुरीबनै पहूँचो जाय २७
करिया बोल्यो त्यहि समया में हमरे सुनो शूर सरदार ॥
तुरत नगड़ची को बुलवावो सवियाँ फौज होय तय्यार २८
बजो नगाड़ा तब माड़ो में भादों मेघ सरिस हहराय ॥
हथी महावत हाथी लैकै तुरतै भूमि दीन बैठाय २९
चुम्बक पत्थर के हौदा धरि जिनमाँ सेल बरौंचा खाय ॥
धरी अँबारी तिन हाथिन पर हौदन कलशदीन धरवाय ३०
घंटा बांधे गलहाथिन के भारी देत चलत झनकार ॥
यक यक हाथी के हौदापर दुइ दुइ बीर भये असवार ३१
तुरत दरोगा घोड़न वाला ताजीं तुरकी कीन तयार ॥
नकुला सब्जा पँचकल्यानी सुर्खा सुरँगा रङ्ग अपार ३२
गंगा यमुनी डरी रकावैं मुहँमाँ दीन लगाम लगाय ॥
डरी हयकलैं तिन घोड़नके रेशम तंग दीन कसवाय ३३
पुट्ठन बुट्टा रचि मेहँदी के सुम्मन नालैं दीन बँधाय ॥
पूंजी पट्टा कसि घोड़न के तिनपर काठी दीन धराय ३४
नवल बछेड़ा घोड़शारे में ते सब बेगि भये तय्यार ॥
यक यक भाला दुइ दुइ बलछी कम्मर कसी तीन तलवार ३५
अगल बगल में दुइ पिस्तौलैं दहिने हाथे लीन कटार ॥

बड़े सजीला जे क्षत्री थे घोड़न उपर भये असवार ३६
धरे नगाड़ा गे ऊंटन पर तोपैं होन लगीं तय्यार॥
गर्भगिरावनि कुँवासुखावनि लछिमिनतोपबड़ीहहकार ३७
ते सब तोपैं रणखेतन को करिया तुरत दीन हँकवाय॥
बजे नगाड़ा फिरि ऊंटन पर हाहाकारी शब्द सुनाय ३८
औरि बयरिया डोलन लागीं औरै होन लगे व्यवहार॥
ढाढ़ी करखा बोलन लागे विप्रन कीन वेद उच्चार ३९
घोड़ पपीहा पचशब्दागज कोतल कीन गये तय्यार॥
बैठिग हाथी करिया वाला तापर होनलाग असवार ४०
छींक तड़ाका भै सनमुखमाँ पंडित बोला शकुन विचार॥
तुम ना जावो रणखेतन को करिया माड़ो के सरदार ४१
राहु बारहें अठयें वेय्फै तुम्हरे दृष्टि शनीचर भाय॥
घात चन्द्रमा दशयें आयो तुम ना धरो अगाड़ी पायँ ४२
सुनिकै बातैं ये पण्डित की तुरतै बोला करिंगाराय॥
शकुन विचारै रय्यत रेजा जो धरि मौर बियाहनजाय ४३
शकुन बिचारैं कछु क्षत्री ना जो रण चढ़िकै लोह चबायँ॥
कूचके डंका बाजन लागे मारू शब्द रहे हहराय ४४
रंगा बंगा शहाबाद के दोऊ घोड़न चढ़े पठान॥
रण की मौहरि बाजन लागी घूमनलागे लाल निशान ४५
करिया चलिभो समरभूमि को मनमें श्रीगणेश को ध्याय॥
सुमिरि भवानी शिवशङ्कर को औ सुर्यन को माथ नवाय ४६
किह्यो कीर्त्तन कृष्णचन्द्र को जिन अर्जुनकी करी सहाय॥
दोउ पद बन्द्यो रामचन्द्र के लङ्का फते करी जिन जाय ४७
पूत अंजनी को हनुमत जो ताको बार बार शिरनाय॥

सुमिरिकै अंगद बाली वालो करिया चला समरको जाय ४८
आगे हलका है हाथिन का बलका जिनके नाहिं ठिकान ॥
पहिया ढुरकैं उन तोपन के तड़कति अवैं सिंदुरियाबान ४९
पछे रिसाला घोड़न वाला आला चला समरको जाय ॥
खर खर खर खर कै रथ दौरैं चह चह रहीं धुरी चिल्लाय ५०
छाय अँधेरिया गै मारग में बंजर खेत भुहा ह्वैजायँ ॥
लक्ष पताका यकमिल ह्वैगे नभ माँ गई लालरी छाय ५१
ऐसी फौजैं मलखाने की वैसी माड़ो का सरदार ॥
सूँड़ि लपेटा हाथी भिड़िगे अंकुशभिड़े महौतन क्यार ५२
हौदा हौदा यकमिल ह्वैगे ऊंटन भिड़िगे ऊंट कतार ॥
भाला छूटे असवारनके पैदर चलनलागि तलवार ५३
सूँड़ि लपेटे जंजीरन को हाथी रणमाँ रहे घुमाय ॥
मस्तक गजके गज हनिमारैं अद्भुत समर कहानाजाय ५४
क्षत्री गर्जैं गज हौदन ते जो सुनि गर्भपात ह्वैजायँ ॥
कवँधालपकनिबिजुलीचमकनि कहुँ कहुँ परैं खड्गके घाय ५५
मर मर मर मर ढालैं ब्वालैं गोली सन्न सन्न सन्नायँ ॥
खट खट खट खट तेगा ब्वालैं लपलपलपाकिलपकिरहिजायँ ५६
झम्झम्झम्झम् झीलमबोलैं नीलम रंग परैं दिखराय ॥
धम् धम् धम् धम् बजैं नगारा मारा मारा परै सुनाय ५७
झल्झल्झल्झल् छूरीझलकैं चम्चम्चमकिचमकिरहिजायँ॥
बल् बल् बल् बल् क्षत्री बलकैं हब् हब् हबकिहबकिकैखायँ ५८
धर् धर् धर् धर् क्षत्री दौरैं सर् सर् तीर चलावत जायँ ॥
फर् फर् फर् फर् घोड़ा दौड़ैं हिन् हिन् हिन्न हिन्न हिन्नायँ ५९
टिद् टिद् टिद् टिद् टिटुई हांकैं टिल्ल टिल्ल टिल्लटिल्ल चलिजायँ॥

चम् चम् चम् चम् खड्गचमकैं खट् पट् खट् पट् रहीं मचाय ६०
रन् रन् रन् रन् फिरैं योगिनी बम् बम् बम्ब बम्बको गाय॥
सन् सन् सन् सन् बायू सनकैं मन् मन् मन्न मन्न मन्नायँ ६१
मारु मारु करि तुरही ब्वालै ब्वालै हाव हाव करनाल॥
सुनि सुनि वँबकैं बहु क्षत्रीगण बहुतक जूझिगये नरपाल ६२
बहुतक करहैं रण सरिता में नदिया बही रक्तके धार॥
मुंडन केरे मुड़चौरा भे औ रुंडन के लगे पहार ६३
परीं लहाशैं जो हाथिन की तिनका नदी किनारा मान॥
परे बछेड़ा उँटनी तिनपर तिनसों नदीकगारा जान ६४
जैसे नदिया डोंगिया सोहैं तैसे स्वहैं नरनकी देह॥
जैसे नदिया सावन बाढ़ैं बर्सैं बहुत गरजिकै मेह ६५
तैसे डोंगिया नरदेही में नेही जौन सनेही जीय॥
काक कंक तिन ऊपर बैठे फारैं जियत नरनके हीय ६६
छूरी जानो तुम मछलिनको कछुवा मनो ढाल दिखरायँ॥
नचीं योगनी त्यहि सरिता में तारी भूतन दीन बजाय ६७
बड़ी लड़ाई भै बबुरीबन हमरे बूत कही ना जाय॥
जो हम बाँधैं ह्याँ रूपक सब गाये उमर पार ह्वैजाय ६८
करिया ऊदन के मुर्चा माँ औ परिरहा रामते काम॥
बड़ा लड़ैया माड़ो वाला ठाकुर जबर्दस्त सरनाम ६९
करिया बोला वहि समया में गरुई हांक करत ललकार॥
तुम टरिजावो म्वरे सम्मुखते ठाकुर उदयसिंह सरदार ७०
बाप तुम्हारे को हमहीं ने कोल्हू डारा रहै पिराय॥
तैसे मारों तलवारी सों मानो कही बनाफरराय ७१
सुनिकै बातैं ये करिया की करिया भये उदयसिंहराय॥

डाटिकै बोल्यो फिरि करियासों ठाकुर खबरदार ह्वैजाय ७२
सोवत मारे देशराज को औ फिरि बच्छराजको जाय ॥
जागत मारों जो करिया ना तौ ना कहे उदयसिंहराय ७३
सुनिकै बातैं ये ऊदन की करिया खैंचि लीन तलवार ॥
ऐंचिकै मारा उदयसिंह को रोंका तुरत ढाल पर वार ७४
बचा दुलरुवा द्यावलिवाला आला उदयसिंह सरदार ॥
करिया बोला फिरि ऊदन ते ठाकुर बेंदुल के असवार ७५
अबती आवै जो हौदा पर तौ यमपुरी देउँ दिखराय ॥
सुनिकै बातैं ये करिया की करिया जौन उदयसिंहराय ७६
पुँड़ा मसका रसबेंदुल का हौदा उपर पहूंचा जाय ॥
खैंचि सिरोही को कम्मर ते मारा तुरत बनाफरराय ७७
परी सिरोही गज शुण्डा में खण्डा तुरत भई त्यहिघाय ॥
खण्डा शुण्डा हाथी दीख्यो करिया गयो सनाकाखाय ७८
कोतल हाथी पचशब्दा था तापर तुरत भयो असवार ॥
औ यह बोल्यो फिरि हाथी ते हाथी साथी अहिउ हमार ७९
निमक हमारो बहु खायो है बांधे रहे हमारे द्वार ॥
हम जो बांधैं बघऊदन को हमरे निमक होउ उद्धार ८०
कहिकै बातैं ये हाथी सों गरुई हाँक कीन ललकार ॥
वार तीसरी जो तू आवै ठाकुर बेंदुल के असवार ८१
कुशल न जावै तू हौदा ते खुपड़ी टँगै बरगदे डार ॥
सुनिकै बातैं ये करिया की ठाकुर मोहबे का सरदार ८२
डाटिकै बोला फिरि करिया सों का तू बकै बकैं जस बाल ॥
कोल्हू पिरावों मैं जम्बा को माड़ो खोदि करावों ताल ८३
मूड़ काटिकै करिया तेरो मल्हना महल देउँ पहुंचाय ॥

तौ तौ लरिका देशराजका   साँचो नाम उदयसिंहराय ८४

सवैया॥

या कहिकै ऊदन त्यहि बार सो बेंदुल को लय ऊपर धाये।
शुण्डसों दाबि लियो पचशब्दा बापके बाहन बंधनआये॥
कर बांधिलियो तबहीं करिया तहँ लै हौदा पै कूच कराये।
ललिते मलखान तहां बलखान गुमानभरे रणखेतन आये ८५

जैसे भेड़िन भेड़हा पैठै   जैसे सिंह बिडारै गाय॥
तैसे मारै औ ललकारै   यहु रणबाघु बनाफरराय ८६
मलखे ठाकुरके मुर्चा पर   कउ रजपूत न रोंकै पायँ॥
मारति मारति मलखाने जी   पहुंचे जहां करिंगाराय ८७
देखिकै करिया राहुट ह्वैगा   औ मलखे से लगा बतान॥
जो गति कीन्ह्यों बच्छराजकी   सोई जानु अपनि मलखान ८८
त्यहिते तुमका समुझाइत है   सम्मुख अवो न हमरे ज्वानं॥
सुनिकै बातैं ये करिया की   रिसहाभयो बीर मलखान ८९
एँड़ा मसकै जब घोड़ी कै   हौदा उपर पहूंची जाय॥
पैर पकरिकै तब करिया के   औ हौदा ते दीन गिराय ९०
उतरिकै घोड़ा ते देबा तब   औ हाथी पर भयो सवार॥
छोरी मुशकै बघऊदन की   यहु भीषमको राजकुमार ९१
रुपना वारी बेंदुल लीन्हे   तापर बैठ लहुरवा भाय॥
घोड़ा पपीहा की पीठी माँ   तुरतै बैठ करिंगाराय ९२
मलखे ठाकुर ने ललकारा   करिया खबरदार ह्वै जाय॥
जियत न जैहौ तुम माड़ो को   तुम्हरो कालरहा नगच्याय ९३
सुनिकै बातैं मलखाने की   तब जरिमरा करिङ्गाराय॥

खैंचि सिरोही लीं कम्मर से औ मलखे पर दई चलाय ६४
वार बचायो मलखाने ने करिया निकट पहूँच्यो जाय ॥
ढालकि औझरि मलखे मारा तब गिरपरा करिङ्गाराय ६५
घोड़ा पपीहा मलखे लीन्ह्यो औ क्षत्रिनते कह्यो सुनाय ॥
मारो मारो ओ रजपूतो तौ मिलिजाय बापका दायँ ६६
सुनिकै बातैं मलखाने की ज्वानन खूब कीन घमसान ॥
रङ्गा बङ्गा शहाबाद के साथ म आये जौन पठान ६७
ते द्वउ मारैं दिशि करिया के रणमाँ बड़े लड़ैया ज्वान ॥
तिनके मुर्चा पर देवा रहै ठाकुर मैनपुरी चौहान ६८
सो ललकारे तहँ रंगा को औ बंगाको दियो हटाय ॥
को गति बरणै तहँ देबा कै हमरे बूत कही ना जाय ६९
बड़ा लड़ैया रंगा रंगी जंगी खैंचि लीन तलवार ॥
खैंचिकै मारा सो देबा को देबा लीन ढालपर वार १००
औ ललकारा फिरि रंगा को रंगा खबरदार ह्वैजाय ॥
खैंचि सिरोही देबा मारा रंगा गिरा भरहराखाय १०१
रंगा मरिगा जब मुर्चा पर बंगा चला तड़ाका धाय ॥
नंगी लीन्हें तलवारी को देबा पास पहूँचा आय १०२
सँभरिकै बैठो अब घोड़ापर तुम्हरो काल गयो नियराय ॥
यह कहि मारा तलवारी को बखतर काटि पार ह्वै जाय १०३
बचा दुलरुवा भीषमवाला ज्यहिका राखिलीन भगवान ॥
खैंचि सिरोही ली कम्मर ते औ हनिदियो बंगपरज्वान १०४
बंगा जूझा रणखेतन में तब जरिमरा करिङ्गाराय ॥
औ ललकारा रजपूतन को हमरे सुनो सिपाहिउ भाय १०५
जाय न पावैं मुहबे वाले इनकी कटा लेउ करवाय ॥

पिंशन देवे सब शूरन को दुहरी तलब देव करवाय १०६
सुनिकै बातैं ये करिया की ठाकुर मोहवे का सरदार ॥
रिसहा ह्वैकै मलखाने तब गरुई हांक दीन ललकार १०७
जान न पावैं माड़ो वाले श्रो रजपूतो बात बनाउ ॥
देव जगीरैं हम मुहवे माँ बैठे तीनि शाखिलों खाउ १०८
सुनि सुनि बातैं सरदारन की खुब लरिमरे सिपाही ज्वान ॥
लालच लाग्यो अति रुपियाका सम्मुख लोहा लगे चलान १०९

सवैया ॥

सूमन को धन प्यार भलीविधि शूरन को धन नेक न भावै ।
शूर शिरोमणि भक्तनको धन प्रान दुऊन को मोह न आवै ॥
सांच विभीषण की कहिये रहिये नहिं मौन यही मन भावै ।
प्रान धनौपर आनपरी ललिते तजि शान स्वई ढिग आवै ११०
कौन गुमान करी अपने मन मान अमान लिये दुख पावै ।
मान वही रघुनाथ मिलैं नतु है अपमान यही कहि आवै ॥
*चार के साथ बचै नहिं एक विवेक से नेक यही मन भावै ।
गावै अमान न मानचहै ललिते रघुनाथ स्वई जन पावै १११

शूर सिपाही ईजतिवाले बोले दुऊ दिशाके ज्वान ॥
काह बखानत महराजा हौ यहनहिंसुनाचहैंहमकान ११२
देही नेही नरगेही के पाल्यो सदा द्रव्यसों प्रान ॥
अब भय आई नृपदेही में नेही नहीं हमारे प्रान ११३

---

* काम १ क्रोध २ लोभ ३ मोह ४ इन चारोंकी प्रबलता में एक देह नहीं बचसक्ती ॥

नालति त्यहिकी रजपूती का	पैदा होवे का धिक्कार ॥
सनमुख बैरी जो मारै ना	रणमाँ लागैं प्राणपियार ११४
सुनिके बातैं रजपूतनकी	दोऊ लड़न लाग सरदार ॥
मलखे करिया का मुर्चा है	दोऊ बिषधर बड़े जुझार ११५
करिया ठाकुर माड़ोवाला	गरुई हांक देय ललकार ॥
सँभरिकै बैठो अब घोड़े पर	ठाकुर मोहबे के सरदार ११६
इतना कहिकै करिया ठाकुर	तुरतै ऐंचिलीन तलवार ॥
खैंचि के मारा मलखाने को	मलखे लीन ढालपर वार ११७
ढाल छूटिगै मलखाने कै	दूनों हाथ गही तलवार ॥
ताकिकै मारा फिरि करिया को	काटिकैगलानिकलिगैपार११८
जूझिग करिया माड़ोवाला	फौजै रोईं छाँड़ि डिंडकार ॥
घोड़ बेंदुला की पीठी सों	फाँदा उदयसिंह सरदार ११९
मूड़ पकरिकै सो करिया को	धड़ते डारा तुरत उखार ॥
आल्हा ऊदन मलखे देबा	सय्यद बनरस का सरदार १२०
पांचो मिलिकै गे तम्बू में	जहँपर रहै दिवलदे माय ॥
हाल बतायो सब द्यावलि को	करियाशीशदीनदिखलाय१२१
शीश देखिकै त्यहि करिया को	भइ मन खुशी देवलदे माय ॥
बड़ी बड़ाई की सय्यद की	तुम्हरीदया जीति मै आय १२२
बड़ी सहाई की लरिकन की	धर्मसों देवर लगो हमार ॥
सखा तुम्हारे की नारीहन	सय्यद बनरस के सरदार १२३
कियो सहाई जस हमरी है	तैसै भला करी कर्त्तार ॥
सय्यद बोले तब द्यावलिते	सांची मानो कही हमार १२४
खुदा सहाई सब दुनियाँ का	बिसमिल भलाकरैं सब क्यार ॥
बार न बांका इनका जाई	अल्ला धर्म निबाहन हार १२५

सुनिकै बातैं ये सय्यद की बोला उदयसिंह सरदार॥
आठमहीना कहि आये त्यन त्यहिते ह्वैगै बहुत अवार १२६
यहु शिर पठवो तुम मोहवे को दादा मानो कही हमार॥
हार लयआयो यहु मल्हना को जामें मिलै जाय इउ हार १२७
सुनिकै बातैं ये ऊदन की रूपन बारी लीन बुलाय॥
करिया ठाकुर को शिर लैकै आल्हा मोहवे दीन पठाय १२८
पूरि तरंग यहाँ सों ह्वैगै शारद तुही लगावै पार॥
डगमग नैया भवसागर में माता तुही निवाहनहार १२९
पार को पावै यहु आल्हाकहि आल्हा जौन शूरमनक्यार॥
शारदमाता ज्यहि जिह्वा में ताको खेय लगावैं पार १३०
वन्दनकरिकै तिन शारद को ह्याँते करों तरँग को अन्त॥
सुनैं सुनावैं हरिगुण गावैं ललिते ह्वई जगतमें सन्त१३१

इति श्रीलखनऊनिवासि (सी, आई, ई) मुंशीनवलकिशोरात्मजबाबूप्रयागनारायणजीकीआज्ञानुसार उन्नामप्रदेशान्तर्गतपँड़रीकलांनिवासिमिश्रवंशोद्भवबुधकृपाशंकरसूनुपं०ललिताप्रसादकृतकरियावधोनामचतुर्थस्तरंगः ॥ ४ ॥

सवैया ॥

कूप तड़ाग औ मंदिर सुन्दर वृक्ष चिलौलहुकै बहु राजैं।
मंदिर में शिवमूरति थापित देखतही दुख दारिद भाजैं॥
जानतहौं नहिं कौनेहिंथाप्यो भूरिदिनोंसे तहां सो विराजैं।
ग्रामक नाम बड़ी पड़री तहँ मंदिर में सगरेश्वर गाजैं १

सुमिरन ॥

वेनु बाँसुरी अब बाजै ना नाकहुँ फिरैं गलिनमें श्याम॥
रहिगै ठकुरी ना दशरथ की ना रहिगयो धनुर्धर राम १

पैदा होई सो मरजाई आई कछू नहीं फिर काम ॥
भलो बुरो जो जग में करिहै सोई बना रही नितनाम २
परमसनेही रघुनन्दन बिन नेही और जगत में कौन ॥
तिनहित देही नरगेही तज जावै राम भौनको तौन ३
आलस देही नरगेही तज सो यमपुरी पहूँचै जाय ॥
पार न जावै बैतरणी के धरि धरि चील्हगीधसबखायँ ४
छूटि सुमिरनी गै देवनकै शाका सुनो शूरमन क्यार ॥
कल्हू पिरायी नृप जम्बै को ठाकुर उदयसिंह सरदार ५

अथ कथाप्रसंग ॥

माहिल चलिभे ह्याँ उरई ते लिल्ली घोड़ीपर असवार ॥
तिक तिक हाँकैं त्यहि घोड़ीका एँड़ी करैं भड़ाभड़ मार १
थोड़ी देरी के अरसा माँ माहिल अटे मोहोबे आय ॥
पहिले मिलिकै परिमालिकको मल्हना भवन पहूँचै जाय २
दीख्यो मल्हना जब माहिलको उठिकै बड़ा कीन सतकार ॥
पूंछन लागी फिरि भैयासों राजा उरई के सरदार ३
आल्हा ऊदन मलखे सुलखे बोरसे रुपये चारिहू भाय ॥
आठ महीना का कहिकै गे आयो एक साल नगच्याय ४
खबरि जो पाई कहुँ भाई हो हमको बेगि देउ बतलाय ॥
सुनिकै बातैं ये मल्हना की माहिल बोले बचन बनाय ५
मरे बनाफरगे माड़ो में खुपरी टँगी बरगदे डार ॥
सुनिकै बातैं ये माहिल की मल्हना रोई छाँड़ि डिंडकार ६
स्वनेकै लंका म्वरि जरिबरिगै अबधों कौन लगाई पार ॥
माहिल बोला फिरि बहिनीसों कीन्हे चुगुलिन का ब्यौपार ७
अब बुलवावो तुम पंडित को सूतक साइति करै बिचार ॥

करो तिलाञ्जलि तिनपुत्रनको तुम्हरे हाथ होयँ उद्धार ८
इतना कहतै भइ माहिल के रुपना अटा बराबरि आय ॥
मूड़ देखिकै त्यहि करिया का राजा गिरा पछाराखाय ६
हाथ जोरिकै रुपना बोला ओ महरजा रजापरिमाल ॥
मूड़ लयआये हम करिया को माड़ो कुशल तुम्हारे वाल १०
जैसे पियासा जलको पावै सूखत परै धान में वारि ॥
रुपना बारी की बातैं सुनि तैसे खुशीभये नर नारि ११
हल्ला सुनिकै नर नारिन सों मल्हना रुपना लीन बुलाय ॥
विदा मांगिकै माहिल चलिभे उरई तुरत पहूँचे जाय १२
मल्हना पूंछै तब रुपना ते बेटन हाल देउ बतलाय ॥
बदी सुनायो सब लड़िकनकै माहिल जौन हमारो भाय १३
सुनिकै बातैं ये मल्हना की रुपना बोला शीशनवाय ॥
बेटा अनूपी टोंडर सूरज करिया सहित चारिहू भाय १४
चारो लड़िका नृपजम्बा के बबुरीबन माँ गये नशाय ॥
खबरि तुम्हारी म्वहिं लेबे को पठयो बेगि उदयसिंहराय १५
हम चलि जावैं अब बबुरीबन हमको हुकुमदेव फर्माय ॥
कुशल तुम्हारी बिनपायेते ब्याकुल रहैं चारिहू भाय १६
सुनिकै बातैं ये रुपना की मल्हना हुकुम दीन फर्माय ॥
करो बियारी तुम महलन में माड़ो फेरि पहूँचो जाय १७
सुनिकै बातैं ये मल्हना की रुपना जेयँ लीन ज्यँवनार ॥
सजा बछेड़ा तहँ ठाढ़ो थो रुपना फाँदि भयो असवार १८
सत्रहदिनकै मंजलि करिकै माड़ो फेरि पहूँचा जाय ॥
कही खबरिया सबमोहबेकी जहँ पर बैठ बनाफरराय १६
पाँचो मिलिकै सम्मत कीन्ह्यो यह फिरि ठीकलीन ठहराय ॥

किला गेरें अब लोहागढ़ लश्कर कूच देयँ करवाय २०
पांचो मिलिकै सम्मत करिकै डंका तुरत दीन बजवाय॥
घोड़ बेंदुला ऊदन बैठे मलखे चढ़े कबुतरी जाय २१
घोड़ मनोहर पर देबा हैं सय्यद सिरगा पर असवार॥
आल्हा बैठे पत्रशब्दा पर सुमिरिकैदेव मोहोबे क्यार २२
कूच करायो बबुरीबनते लोहा गढ़ै पहूंचे जाय॥
तोप लगायो तहँ फाटक पर बत्ती तुरत दीन करवाय २३
फाटक गाँसा जम्बै दीख्यो रानी महल पहूंचा जाय॥
चारो पुत्रन कै सुधि करिकै रोवनलाग तहां पर आय २४
बंश बूड़िगा म्वर पापी का मेरो काल रहा नगच्याय॥
बड़ो लड़ैया सब शूरन में आल्हाकेर लहुरवाभाय २५
म्वहिं भय आई त्यहि ऊदनते ताते प्राण मोर घबड़ायँ॥
सुनिकै बातैं ये राजाकी बिजमाबोली बचन सुनाय २६
करिकै जादू मैं ऊदनको राखों झारखण्ड में जाय॥
इतना कहिकै चली बिजैसिनि लश्कर तुरत पहूंची आय २७
डाखो गुटका मुखभीतर माँ जासों नजरबन्द ह्वैजाय॥
गायब ह्वैकै तहँ पर पहुँची जहँ पर रहै लहुरवाभाय २८
नारसिंह औ भैरों वाली तीसर जौन महमदा वीर॥
पुरिया डारी तहँ जादू की ह्वैगे सबै बीर आधीर २९
डारि मशान दयो लश्कर में नाहीं मसा तलक भन्नाय॥
जादू मारी बंगाले की ऊदन मेढ़ा लयो बनाय ३०
लैकै मेढ़ा बिजमाँ चलिभै पहुँची झारखण्ड में आय॥
गुरू झिलमिलाकी मढ़ियामाँ मेढ़ा बँधा बिजैसिनिजाय ३१
हाथ जोरिकै गुरुबाबा के औ सब हाल दीन्ह समुझाय॥

चली बिजैसिनि झारखण्डते पहुँची रङ्गमहल में आय ३२
जितने जादू बिजमाँ डारे सो लश्कर ते लये उतार ॥
उतरी जादू जब लश्कर ते चेते सबै शूर सरदार ३३
आल्हा बोले तब मलखेते नहिं लखिपरै लहुरवा भाय ॥
सुनिकै बातैं मलखे बोले देवा शकुनदेव बतलाय ३४
लैकै पोथी ज्योतिष वाली देवा हाल गयो सब गाय ॥
गुरू झिलमिलाकी मढ़ियामाँ बांधा तहां लहुरवा भाय ३५
सुनिकै बातैं ये देवा की आल्हा बहुत गयो घबड़ाय ॥
देवा बोला फिरि मलखेते गानो कही बनाफरराय ३६
बाना छोरो रजपूती का अँगमाँ लेवो भस्म लगाय ॥
योगी बनिकै हम तुम जावैं तौ सबकाम सिद्ध ह्वैजायँ ३७
बातैं सुनिकै ये देवा की योगी बने बीर मलखान ॥
तुरतै चलिभे झारखण्ड को पहुँचे तहाँ दूनहू ज्वान ३८
गुरुझिलमिलाकी मढ़ियाढिग गावैं तान वीर मलखान ॥
बाजै डमरू भल देवाकै सोपरिगईभनक त्याहिकान ३९
गुरू झिलमिला बाहर आयो योगी लखा तहाँ दुइ ज्वान ॥
हाथ पकरिकै लै मढ़िया में बाबा बड़ा कीन सनमान ४०
बारे योगी हम दोउभाई ऐसा कह्यो बीर मलखान ॥
अब हम जावैं हरद्वार को चाहैं कछू नहीं सनमान ४१
रमता योगी बहता पानी ये नहिं करैं कतौं बिश्राम ॥
नहिं अभिलाषा क्यहू बातकी केवल जपैं रामको नाम ४२
सुनिकै बातैं ये योगी की बोलातुरतझिलमिला ज्वान ॥
जो कछु मांगो सो कछु पावो हमरे बचन करो परमान ४३
सुनिकै बातैं ये बाबा की बोले तुरत बनाफरराय ॥

मेदा पावैं यहु बाबा जो तौ हम हरद्वार को जायँ ४४
यहुतो कैदी है बिजमाका मांगो और बस्तु कछु भाय ॥
जो हम पावैं यहु मेदा ना तुम्हरो योग अकारथ जाय४५
सुनिकै बातैं ये योगिन की झिलमिल मेढ़ा दीन गहाय ॥
योगी बोले तब झिलमिल ते याको मानुष देव बनाय ४६
तबजलछिनक्योझिलमिलतापर मानुप भयो लहुरवा भाय ॥
चलिकै बाहर भे मढ़ियाते बोल्यो तुरत उदयसिंहराय४७
मारो दादा यहि योगी को तौ सब काम सिद्ध ह्वैजायँ ॥
सुनिकै बातैं ये ऊदन की लौटा तुरत बनाफरराय ४८
मूड़ काटिकै फिरि बाबाको औ मढ़ियामाँ दीन चलाय ॥
तीनों चलिभे फिरि तहँनाते औ लश्करमें पहूंचे आय ४९
खबरि सुनाई सब आल्हा को डंका तुरत दीन बजवाय ॥
बाजे डंका अहतंका के मारू शब्द रहे हहराय ५०
लैकै फौजै राजाजम्बा पहुँचा समरभूमिमाँ आय ॥
बम्बके गोला छूटन लागे धुँवना रहा सरग में छाय ५१
जौने हाथी के गोला लागै मानो गिरा धौरहर आय ॥
जौने बछेड़ा के गोला लागै मानो गिरह कबूतर खाय ५२
जौने क्षत्री के गोला लागै यमपुर तुरत देय दिखलाय ॥
गोला लागै ज्यहि सँड़िया के सो मुँहभरा तुरत गिरिजाय५३
जौने तम्बू गोला लागै त्यहिकोलिये सरग मड़राय ॥
गोली ओली सम बर्षत भईं मानो मघा दीन झरिलाय ५४
भाला बलछी खट खट बोलैं डोलैं तीनों तहाँ बयारि ॥
फउँधालपकनिबिजुलीचमकनि कहुँकहुँ देखिपरै तलवारि ५५
तेगा चटकैं बर्दवान के कोता खानी चलैं कटार ॥

चहला उठिरहि तहँ चरबिनकी औ बहिचली रक्तकी धार ५६
शूर सिपाही माड़ोवाले नंगी हाथ लिये तलवार ॥
चलै सिरोही तहँ सँभरा भरि ऊना चलै बिलाइतिक्यार ५७
दूनों फौजैं यकमिल ह्वैगईं बीरन रहे बीर ललकार ॥
दुइ दुइ तुर्रन के बँधवैया ई सब डारि भागि तलवार ५८
जितने कायर रहैं फौजन में तर लोथिन के रहे लुकाय ॥
हेला आवै जब हाथिन का तब बिनमरे मौत ह्वैजाय ५९
देबा बोलै तब ऊदनते हमरे सुनो बनाफरराय ॥
भागे क्षत्रिन को मार्यो ना नहिं सब क्षत्री धर्म्मनशाय ६०
फूल केतकी का सूंघ्यो ना जबलग फुलवामिलै गुलाब ॥
दाया राख्यो द्विज देवन में ऊदन यही धर्म की आब ६१
घोड़ी कबुतरी का चढ़वैया मलखे बड़ा लड़ैया ज्वान ॥
बहुतन मारे तलवारी सों बहुतन लेय ढालसों प्रान ६२
को गति बरणै तहँ सय्यद की नाहर सिरगापर असवार ॥
गुर्ज उठाये रणमाँ मटकै पटकै बड़े बड़े सरदार ६३
अली अली कहि सय्यद धावै रणमाँ गली गली ह्वैजाय ॥
भली भली कहि आल्हा बोलै रणमाँ थली थली थर्राय ६४
चली चली तहँ धरती डोलै बोलैं हली हली सब गाय ॥
कली कली जस सारँग सम्पुट तैसे डली डली मिलिजायँ ६५
को गति बरणै समरभूमि कै हमरे बूत कही ना जाय ॥
राजा जम्बा के मुर्चा पर कोउ रजपूत न रोंकै पायँ ६६
चीरिकै धोती मारि लँगोटी कोउ कोउ अंग बिभूतिरमाय ॥
लोहुभरी माटी फिरि लैकै रामानन्दी तिलक लगाय ६७
हमैं न मारो ओ रजपूतो हमतो जगन्नाथ को जायँ ॥

फोउकोउ ढालनको बचुकाकरि पीठिम डारिलीन भयखाय ६८
हम सौदागर हैं जयपुरके आये राजमहल में भाय ॥
पहिले फाटक के ऊपरमाँ मुर्चा परा बरोबरि आय ६९
जिन्हैं पियारी रहैं घर तिरिया तिन रण डारिदीन तलवारि ॥
हमैं न मारो हमैं न मारो दादा बापूकरैं गुहारि ७०
त्यही समैया त्यहि अवसरमाँ बोला तहाँ बीरमलखान ॥
राजा जम्बाके मुर्चा पर ठहरे नहीं एकहू ज्वान ७१
सुनिकै बातैं ये मलखे की आल्हा हाथी दीन बढ़ाय ॥
जम्बा केरे तहँ मुर्चामाँ पहुँचे तुरत बनाफरराय ७२
हाथी जानै भल आल्हा को यहु है देशराज को लाल ॥
देशराज औ बच्छराज दोउ मेरो भलो कीन प्रतिपाल ७३
ज्ञान जानवर में जैसो है मानुष नहीं दशो में पांच ॥
गर्भवती नारी के ऊपर फिरिनहिंचढ़ै जानवरसाँच ७४

(रागानुरागोपदेशोपकारक सवैया ॥)

साँच रह्यो मन ज्ञान विरागमें याँच रह्यो कर्त्ता कर्त्तारे ॥
आनि बिपत्तिपरी शिरऊपर राखु हरी भर्त्ता भर्त्तारे ॥
जीव गुहारपुकार करी जब आय हरी कर्त्ता कर्त्तारे ॥
साँच न याँच करै ललिते तब नाहिं हरी भर्त्ता भर्त्तारे ७५

तैसो हाथी तहँ आल्हा को साँचो जाति पाँतिमें साँच ॥
सूंड़ि लपेटे जंजीरन को मारै हेरि हेरि दश पाँच ७६
बिकट लड़ाई हाथी कीन्ह्यो करणी रही समर में नाच ॥
जम्बा बोला तब आल्हा ते मानो बचन हमारे साँच ७७
तुम फिरिजावो म्वरे मुहराते हमरे बचन करो परमान ॥

अवै न आल्हा कछु बिगरा है नाकछु बहुतभयो नुकसान७८
पुत्र हमारे मरि चारो गे हमरे बरै करेजे आग॥
जो भगि जावो अब मोहबे को होवै बड़ी तुम्हारी भाग ७९
उठिकै हौदाते आल्हारण बोले दूनों भुजा उठाय॥
रहे अधर्मी ना कौनो युग रावण कौरव के समुदाय ८०
काह हकीकति त्वरि जम्बाहै कोल्हू डारे बाप पिराय॥
लरिका बिगरे अब ऊदन हैं जियतै कोल्हू डरैं पिसाय ८१
सँभरिकै बैठै अब हौदापर जम्बा खबरदार ह्वैजाय॥
मारु सिरोही म्वरि छाती माँ कैसी लाये शान धराय ८२
हमरो बाना मरदाना है यह हम ठीक दीन बतलाय॥
उठै सिरोही जो रण हमरी तौ फिरि कौन परै दिखराय८३
इतना सुनिकै नृप जम्बा ने कम्मर खैंचि लीन तलवार॥
ऐंचि तड़ाका फिरि मारा शिर आल्हा लीन ढालपर वार ८४
आल्हा बोल्यो फिरि जम्बा ते दूसरि वार करो सरदार॥
खैंचि सिरोही जम्बा मारी आल्हा लीन ढालपर वार ८५
कन्नौ सिरोही जब बांधी ना मुर्चा खायगई तब धार॥
वार तीसरी अब तुम मारो राजा माड़ो के सरदार ८६
साँकरि दीन्ही पचशब्दाको आल्हा बोले वचन सुनाय॥
हौदा गिरावै तुम जम्बा का हमरे निमक अदा ह्वैजाय ८७
खैंचि सिरोही दोउ हाथन सों जम्बा कीन तीसरी वार॥
ढाल फाटिगै गैंड़ावाली बचिगा आल्हा परमजुझार ८८
साँकरि फेरी पचशब्दाने हौदा तुरतै दीन गिराय॥
आल्हा कूदे फिरि हौदा ते पकरयो नृपै तुरतही आय ८९
मलखे देवा सय्यद ऊदन चारो गये तहांपर आय॥

बाँधिकै मुशकै नृप जम्बाकी कूदन लागि वारिहू भाय ९०
रूपनबारी को बुलवायो ताही समय उदयसिंहराय॥
तुम चलिजावो बबुरीबनका द्यावलि मातै लाउ बुलाय ९१
सुनिकै बातैं ये ऊदन की रूपन तुरत पहूँचा जाय॥
चढ़ पालकी द्यावलि आई जहँपर रहैं बनाफरराय ९२
आगि लगाय दई महलन में करिया पालदये करवाय॥
लैकै कुंजी खोलि खजाना सो छकड़नमें तीन लदाय ९३
महल लूटिकै महरानिन के बबुरीबनका दीन पठाय॥
तुरतै बांदी को बुलवायो औ यहकह्योउदयसिंहराय ९४
खबरि जनावो यह कुशलाको तुमको आल्हा रहे बुलाय॥
सुनिकै बातैं बघऊदनकी बाँदी तुरत पहूँचीजाय ९५
खबरि सुनाई सब कुशलाको आई स्वऊ बेगिही धाय॥
रानी बोली तहँ आल्हाते हमरे सुनो बनाफरराय ९६
हाथ औरतनपर छाँड़योना नहिं सब क्षत्रीधर्म्म नशाय॥
सुनिकै बातैं ये कुशला की तुरतै ब्वला उदयसिंहराय ९७
नहीं जनाना म्वर बाना है जो हम डरैं औरतैंमार॥
चीरा कलँगी म्वरे बापके औ दै देव नौलखाहार ९८
डोला बिजैसिनि को मँगवावो हमरे साथ देउकरवाय॥
सुनिकै बातैं ये ऊदन की रानी गई सनाकाखाय ९९
कहा न मानैं इन लरिकनका तो को बैठ पूत औ भाय॥
यहै सोचिकै मन अपनेमाँ डोला तुरतदीन मँगवाय १००
चीरा कलँगीको मँगवायो औ दै डरयो नौलखाहार॥
उदन बरगदा के नीचेगे खुपरी छुरी बापकी डार १०१
ऊदन देबा दोऊ मिलिकै कोल्हुन पास पहूँचेजाय॥

ठाढ़पिरायो नृप जम्बाको पाछे मूड़लीन कटवाय १०२
जहँ रहैं खुपड़ी देशराज की तहँ पर तुरतदीन टँगवाय॥
तब रनबोले वहि समयामें स्यात्रसितुम्हैंउदयसिंहराय१०३
पूत सुपूते तुम अस होवैं नाहीं भलो गर्भ गिरिजाय॥
पूत कुपूते ज्यहि घर होवैं जरिजरिमरैंबाप औ माय१०४
पुरिखा रोवैं परे नरकमें नारी मरै जहर को खाय॥
गली गली में भाई रोवैं करहत ज्ञाति परोसी जायँ१०५
पूत सुपूतिनि सिंहिनि माता निर्भय होय पूतको पाय॥
गदही केरे दश बालक भे लादीअधिकअधिकसोजाय१०६
पूत सुपूता एक बंश में पालै जातिपांति को भाय॥
जैसे बिरवा यक चन्दन को बनमाँ देय गंध फैलाय १०७
डाहु बुझान्यो अब जियरे को बैरी डारयो क्स्टू पिराय॥
लैकै खुपरी म्वरि काशी में किरियाकर्मकरो सबजाय १०८
इतना कहिकै रन छुप्पे भे आल्हा तुरत पहूंचे आय॥
आल्हा बोले तहँ ऊदन ते लश्कर कूच देउ करवाय १०९
सुनिकै बातैं ये आल्हा की रहिगे उदयसिंह शिरनाय॥
खम्भ गड़ायो मलयागिरिको पंडित तुरतलीन बुलवाय ११०
भाँवरि घूमी तहँ ऊदन ने आल्हा बोले बचन रिसाय॥
नहिं लैजैहैं यहि मोहबे हम मानो कही उदयसिंहराय १११
जबसुधि करि है पितु अपनेकी मारी स्वबत लहुरवाभाय॥
कन्या बैरी की ज्यहिके घर नाचै मृत्यु शीशपरआय ११२
त्यहिते मारौ तुम ऊदन यहि तौ सब काम सिद्ध ह्वैजायँ॥
ऊदन बोले तब आल्हा ते दादा साँची देयँ बताय ११३
हम जो मारैं यहि तिरिया को तौ रजपूती जाय नशाय॥

बचन हमारे पर आई है मारैं कौन पारपर भाय ११४
आल्हा बोलें तब मलखेते तुम सुनिलेउ हमारी ज्वान ॥
खैंचि सिरोही को कम्मरसे तुम यहि मरो बीरमलखान११५
सुनिकै बातैं ये आल्हाकी मलखे रामचन्द्र को ध्याय ॥
खैंचिकै मारा रनि बिजमा को सो तहँ परी पछाराखाय ११६
ऊदन दौरे त्यहि समया में गोदी तुरत लीन बैठाय ॥
आँसुन भिजयो रनिबिजमाको धीरजदीन लहुरवाभाय ११७
यह नहिं जानत हम प्यारी थे तुमका मरैं बीर मलखान ॥
जेठे भाई मेरे मलखे हैं तिनसों काहकरों मैदान ११८
और जो मारत कोउक्षत्री त्वहिं तौ मैं कटा देत करवाय ॥
अब बसमेरो कछु प्यारी नहिं हैयहु पितासरिस बड़भाय११९
धर्म पतिब्रत त्वर साँचो है हमरे मोह गयो मनछाय॥
अबकीबिछुरी फिरिकबमिलिहौ साँचे हाल देउ बतलाय १२०
सुनिकै बातैं ये ऊदन की बिजमा बोली बचन सुनाय ॥
भोग बिलासै के कारण से संगिनिभइँनिपियातवआय१२१
जेठ हमारे मलखे लागैं तिन म्वहिं भुइँमादीनस्ववाय ॥
मारे मलखे तहँ तुम जावो जहाँ न होय लहुरवाभाय१२२
शापित करिकै मलखाने को बिजमा बोली बचन उदार ॥
बेटी ह्वैबे हम नरपति की फुलवा होई नाम हमार १२३
घोड़ खरीदन काबुल जैहौ तबहम मिलब तुम्हैं सरदार ॥
यह तो देही हिंयनै रहि है नरवर लेब और अवतार १२४
इतना कहिकै रानी बिजमा औ मरिगई तड़ाका भाय ॥
लाश उठाई बघऊदन ने औ नर्मदा बहाई जाय १२५
कूच के डंका बाजन लागे घूमन लागे लाल निशान ॥

लाखापातुरि देशराज की सो बुलवई वीर मलखान १२६
संगै देवलि के पलकी त्यहि तहँ ते कूच दीन करवाय ॥
जौन सिपाही रहैं मुहबे के आल्हा तुरतलीनबुलवाय १२७
साल दुसाला काहू दीन्ह्यो काहू कड़ा दीन डरवाय ॥
चौरा कलँगी दी काहू को काहू मोहर दीनछिदाय १२८
कूच कराये लोहागढ़ते बबुरीबनै पहूंचे आय ॥
जितनी सामारहै माड़ो की ताको ठीकठाककरवाय १२९
जितनो करिया लै आवा ता ताते दशगुन अधिकबढ़ाय ॥
आल्हा लैकै हुशियारी सों बोले मातै शीश नवाय १३०
हुकुम जो पावैं महतारी को मलखे साथ बनारस जायँ ॥
चाचा दादा की किरिया करि पारैं पिण्ड गया में माय १३१
डरैं खुपड़ियाँ हम फलगू में तुमहूं कूच देव करवाय ॥
सुनिकै बातैं ये आल्हा की माता बारबार बलिजाय १३२
स्यावसिस्यावसि सबदलबोल्यो भे मन बड़ेखुशी मलखान ॥
पाँय लागिकै फिरि माता के तहँते चले दूनहू ज्वान १३३
ईतो पहुंचे है काशी में ह्वाँ उन कूच दीन करवाय ॥
सत्रह दिनकी मैजें [illegible] रिकै सबदल आटा मोहोबेआय १३४
बाजैं डंका अहतंकन के बङ्का शङ्का को बिसराय ॥
कम्मर छोरैं कोउ कोउ क्षत्री कोऊ रहे रामको ध्याय १३५
सय्यद देवा ऊदन मिलिकै तीनों चले जहाँ परिमाल ॥
चरणन गिरिकै महराजा के औसबकह्यो आपनोहाल १३६
तहँते उठिकै ऊदन चलिभे मल्हना महल पहूंचे जाय ॥
चरणन गिरिकै महरानी के अपनाहालगये सबगाय १३७
बड़ी खुशाली भै मल्हना के बरणी कौन भांति सो जाय ॥

दान दक्षिणा बाँटन लागी तुरतै महलनबिप्र बुलाय १३८
जितनी माया रहै माड़ो की सो सब ऊदन तुरत मँगाय ॥
जहाँ खजाना परिमालिक को तामें दीन सबै भरवाय १३९
बड़ी खुशाली भै मोहबेमाँ घर घर होयँ मङ्गलाचार ॥
उजरिगो माड़ो त्यहिसमयामाँ जहँ तहँ घूमैं श्वानसियार१४०
मैं पदबन्दौं पितु अपने के फिरि फिरि बारबार शिरनाय ॥
करी सहायी यहि समया में ताते गयों कथा सबगाय १४१
आशिर्बाद देउँ मुंशी सुत जीवो प्रागनरायण भाय ॥
हुकुम तुम्हारो जो होतो ना ललितेकहतकथाकसगाय१४२
रहै समुन्दर में जबलों जल जबलों रहैं चन्द औ सूर ॥
मालिक ललिते के तबलों तुम यशसों रहौ सदाभरपूर १४३
माथ नवावों रामचन्द्र को करिकै कृष्णचन्द्र को ध्यान ॥
दोउपद बन्दों शिवशंकर के गणपतिगणाधीशबलवान१४४
दोउपद ध्यावों महरानी के जिनअभिमानी डरै नशाय ॥
पूरि तरंग यहाँ सों ह्वैगै तव पद सुमिरिदूर्गामाय १४५

इति श्रीलखनऊनिवासि (सी,आई,ई) मुंशीनवलकिशोरात्मजबाबूप्रयागनारायण जीकी आज्ञानुसार उन्नामप्रदेशान्तर्गत पँड़रीकलांनिवासि मिश्रवंशोद्भवबुध कृपाशङ्करसूनु पं०ललिताप्रसादकृतआल्हाविजयवर्णनन्नामपञ्चमस्तरङ्गः५॥

माड़ोका युद्ध समाप्त ॥

इति ॥

अथ आल्हखण्ड ॥

नैनागढ़की लड़ाई अथवा आल्हाका बिवाह ॥

सवैया ॥

दीनसहायक नाम तुम्हार सुना बहु ग्रन्थन में महराजा ।
है शबरी गजगीध अजामिल ते अजहूं जिहिकोयशछाजा ॥
जो करणी सुमिरों इनकी तबहीं मन धैर्य्य लहै रघुराजा ।
दीन पुकारकरै ललिते प्रभु बेगि द्रवो हे गरीब नेवाजा १ ॥

सुमिरन ॥

गया न कीन्हीजिनकलियुगमाँ काशिम घोड़ दान नहिंदीन ॥
जन्मत बैरी जिन मारा ना नाहक जन्म जगत में लीन १
पूजा कीन्ही नहिं शम्भू की अक्षत चन्दन फूल चढ़ाय ॥
फिरि गलभँदरी जिनबाजी ना मुख ना बम्ब बम्ब गा छाय २
भसमरमायो नहिं देही माँ कबहुंन लीन सुमिरनी हाथ ॥
सोचन लायक ते आरय हैं जिन नहिं कबौं नवायोमाथ ३
को अस देवता रहै शम्भूसम जिनको पूज्यो रामउदार ॥
वेद उपनिषद्के ज्ञाता रहैं जिनबल भयो रावणाछार ४

छूटि सुमिरनी गे देवन के शाका सुनो शूरमनक्यार ॥
ब्याह बखानों मैं आल्हाका होई तहाँ भयानक मार ५

अथ कथाप्रसंग ॥

नैनागढ़ का जो महराजा साजा सबै भांति कर्त्तार ॥
राजा इन्दर का बरदानी औ नैपाली नाम उदार १
तिन घर कन्या इक पैदा भै सबबिधि रूप शीलगुणखान ॥
पढ़िकै विद्या सब जादूकी कछुदिनबाद भई फिरिज्वान २
संगसहेलिन के खेलति भय सुनवाँ कही तासुका नाम ॥
खेल लरिकई को जाहिर है लरिका ख्यलैं चारिहुयाम ३
खेलत खेलत फुलबगिया गइँ सब मिलि करैं फुलनकी मार ॥
कटहर बड़हर त्यहि बगिया में कहुँ कहुँ फूलिरही कचनार ४
उठैं सुगन्धैं कहुँ चन्दन की कतहूँ कदलिन खड़ी कतार ॥
गुम्मज सोहैं मोमशिरिन के कहुँ कहुँ फुलीं चमेलीडार ५
बेला फूले अलबेला कहुँ खिन्निन लता गईं बहुछाय ॥
हर्र बहेरा साँखो बिरवा सीधे चले उपर को जायँ ६
बरगद छैले हैं नीचे को फैले भूमि रहे नियराय ॥
जैसे सम्पति सज्जन पावैं नीचे शीश झुकावत जायँ ७
शीशम जानो तुम नीचनको आधे सरग फरहरा खायँ ॥
चलैं कुल्हाड़ा जब नीचेते गिरिकै टूक टूक ह्वैजायँ ८
को गति बरणै तहँ अधमनकै सोहैं करिल रूपते भाय ॥
ताल तमालन कै गिनतीना कदमन गईं सघनता छाय ९
फुलीं नेवारी अब अगस्त्य हैं आमनडार कैलिया बोल ॥
सोहैं अशोकन के बिरवा भल तीनों तहाँ बयारी डोल १०
गूलर जामुन पाकर पीपर कोनन खड़े वृक्ष सरदार ॥

तार अपारन के बिरवा बहु कहुँ कहुँ खड़े बृक्ष कह्वार ११
टेसू फूले कहुँ सोहत हैं जैसे सोहैं लड़ैता ज्वान ॥
रूप गुलाबन को देखंत खन फूलनछांड़िदीनअभिमान १२
कौन कनैरन को बर्णन कर चाँदनि चाँद सरिस गै छाय ॥
फूल दुपहरी के भल सोहैं मोहैं मुनिन मनै अधिकाय १३
गेंदन केरे बहु बिरवा हैं अर्जुन बृक्ष परैं दिखराय ॥
मेला लाग्यो नौरङ्गिन का हेला निंबुन का दर्शाय १४
ठेला भरि भरि अमरूतन का माली राजभवन को जाय ॥
केवँड़ा केरी उठैं सुगन्धैं कहुँकहु नागबेलिगै छाय १५
ताही बगिया सुनवाँ खेलै मेलै गले सखिन के हाथ ॥
सखियाँ बोलीं तहँ सुनवाँते तुम नित रुयलोहमारेसाथ १६
पैर महावर पै तुम्हरे ना टिकुली नहीं बिराजै भाल ॥
द्रव्य तुम्हारे का घर नाहीं जो नहिं ब्याहकरैं नरपाल १७
इतना कहिकै सब आलिनने औ करताली दीन बजाय ॥
समय दुपहरी को जान्यो जब तब फिरि खेलबन्द ह्वैजाय १८
कीरति गावैं सब आल्हा की माड़ो लिहेनि बापका दायँ ॥
धन्य बनाफर उदयसिंह हैं आल्हा केर लहुरवा भाय १९
ऐसी बातैं सखियाँ करतै अपने भवन पहूंचीं आय ॥
ताही क्षणमें सुनवाँ मन में अपने ठीक लीन ठहराय २०
ब्याही जैबे आल्हा सँग में की मरिजाब जहरको खाय ॥
छाय उदासी गै चिहरा में पूंछै बार बार तब माय २१
कौन रोगहै त्वरि देहीमाँ बेटी हाल देउ बतलाय ॥
पीली ह्वैगै सब देही है औतनकाँपिकाँपिरहिजाय २२
को हितकारी है मातासम नाता बड़ा जगत केहिभाय ॥

अब तो बाबा कलियुग आये माता सहैं लात के घाय २३
सुनिकै बातैं ये माता की सुनवाँ चरणन शीश नवाय ॥
जो कछु भाषारहै सखियनने सुनवाँ मातै गई सुनाय २४
सुनिकै बातैं सब कन्या की माता रही समय को देखि ॥
यकदिन ऐसा आनपहूंचा राजा रहा कन्यका पेखि २५
रानी बोली तब राजाते हमरे बचन करो परमान ॥
ब्याहन लायक यह कन्या भै सोतुमजानो नृपतिसुजान २६
सुनिकै बातैं ये रानी की बिजिया बेटा लीन बुलाय ॥
नाई बारी को बुलवायो तिनते कह्योहालसमुझाय २७
जयो मोहोबे ना टीका लै सब कहुँ जाउ तुरतही धाय ॥
नाई बारी तुरतै चलिभे पहुँचे नगर नगर में जाय २८
काहू टीका को लीन्ह्यो ना नैनागढ़ै पहूंचे आय ॥
खबरि सुनाई सब राजा को नेगिनचरणनशीशनवाय २९
जालिम राजा नैनागढ़ का राजन यही बिचारा जीय ॥
मारे डरके छाती धड़कै कैसेहोयँ तहांपर पीय ३०
थोरी थोरी फौजैं लैकै नैनागढ़ै पहूंचे आय ।
नजरी दीन्ह्यो नैपाली को राजाचरणन शीशनवाय ३१
सरवरि तुम्हरी का नाहीं है टीका लेयँ कहो कस भाय ।
कुमक तुम्हारी को आयन है राजन सत्यदीन बतलाय ३२
त्यही समैया त्यहि औसरमाँ औ सुनवाँ को सुनो हवाल ॥
हीरामणि सुवनाको लैकै सुनवाँ भई रोवासिनिबाल ३३
चूम्यो चाट्यो त्यहि सुवनाको औफिरिकह्योबचन यहगाय ॥
मेवा खायो भल पिंजरन में अब गाढ़े में होउ सहाय ३४
लैकै पाती जाउ मोहोबे देवो उदयसिंह को जाय ॥

लिखी हकीकत सब आल्हाको सुनवाँ बारबार समुझाय ३५
नामी ठाकुर तुम मोहबे में हमरो ब्याह करो अब आय ॥
नहिं मरिजायो जहर खायकै दूनों भाइ बनाफरराय ३६
लिखिकै पाती गल सुवनाके सुनवाँ तुरत दीन लटकाय ॥
मूठी दीन्ह्यो फिरि कोठे ते सुवना चला मोहोबे जाय ३७
चन्दन बगिया सुवना पहुँच्यो तहँ पर रहैं उदयसिंहराय ॥
चन्दन ऊपर सुवना बैठो परिगा दृष्टि तुरतही आय ३८
भल चुचकार्यो उदयसिंहने आपन नाम दीन बतलाय ॥
सुवना बैठ्यो तब हाथेपर पाती छोरि लीन हर्षाय ३९
बांचिकै पाती तब ऊदन ने औ सय्यद को दीन सुनाय ॥
सय्यद आल्हासों बतलायो मलखे देबै दीन बताय ४०
लैकै पाती औ सुवना को गे परिमाल कचहरी धाय ॥
कही हकीकति सब राजा सों पाती दीन उदयसिंहराय ४१
पढ़िकै पाती को परिमालिक मनमाँ गये सनाकाखाय ॥
होश उड़ान्यो परिमालिक का मुहँकाबिरागयो कुम्हिलाय ४२
बोलि न आवा परिमालिक सों औ द्वाढ़ालों लार सुखाय ॥
थर थर थर थर देही काँपी शिरसों मुकुट गिरा महराय ४३
रोम रोम सब ठाढ़े ह्वैगे नैनन बही आँसु की धार ॥
धीरजधरिकै परिमालिक फिरि औ मलखे तन रहे निहारि ४४
मलखे बोले तब राजा ते साँचे बचन सुनो नरपाल ॥
टीका पठयो है बेटी ने सोनहिंलौटिसकैक्यहुकाल ४५
सुनिकै बातैं मलखाने की बोले तुरत रजापरिमाल ॥
ब्याधि नशायो गढ़माड़ो की दूसरि ब्याधिभयोफिरिहाल ४६
टीका फेरो नयनागढ़ को मलखे मानो कही हमार ॥

जालिम राजा नयपाली है ज्यहिघर अमरढोल सरदार ४७
कौन बियाहन त्यहि घर जैहै ऐहै लौटि कौन बलवान ॥
टीका फेरो सब राजन ने मानो कही वीर मलखान ४८

सवैया ॥

शान चढ़ी मलखान के ऊपर आन नहीं कछुहू नृप राखी।
मोहिं पियार न प्राण भुवार कहौं मैं सत्य सदाशिव साखी ॥
कीरतिही प्रिय वीरनको हम शान कि आन सदा मनमाखी।
आनरहैनहिं शान कि जो मरिजान भलो ललिते हम भाखी ४६

इतना कहिकै मलखाने ने डंका तुरत दीन बजवाय ॥
लिखिकै उत्तर उदयसिंहने सुवना गरे दीन लटकाय ५०
उड़िकै सुवना फिरि मोहबे ते सुनवाँ पास पहूंचा आय ॥
रानी मल्हना के महलन में राजा तुरत पहूंचे जाय ५१
हाल बतायो सब मल्हना को सुनतै गई सनाकाखाय ॥
मलखे देवा को बुलवायो सुनतै गये महल में आय ५२
मल्हना बोली तब मलखे ते बेटा हाल देउ बतलाय ॥
काहे डंका तुम्हरे बाजे कहँ चढ़िजाउ बनाफरराय ५३
हाथ जोरिकै मलखे बोले मल्हना चरणन शीश नवाय ॥
पाती आई नैनागढ़ की आल्हा तहाँ बियाहनजायँ ५४
सुनिकै बातैं मलखाने की मल्हनै देवै कहा सुनाय ॥
शकुन तुम्हारे सों मलखाने माड़ो लीन बाप का दायँ ५५
कैसी गुजरी नैनागढ़ में सो सब हाल देव बतलाय ॥
सुनिकै बातैं ये मल्हना की देवा पोथी लीन मँगाय ५६
लैकै पोथी ज्योतिष वाली औ सब हाल दीन बतलाय ॥
जीति तुम्हारी ह्वैहै साँची बात कहैं हम माय ५७

इतना कहिकै दूनों चलि भे महलन भये मंगलाचार॥
बांदी आंगन लीपन लागी पंडित साइति रहे बिचार ५८
एक कुमारी तेल चढ़ावै गावनलगीं सखी त्यहिकाल॥
माय मंतरा भे पाछे सों नेगिननेग दीन परिमाल ५९
लैकै महाउर नाइनि आई नहखुर होनलाग त्यहिबार॥
नाइनि मांग्यो तहँ पुरवाको दीन्ह्यो मल्हना परम उदार ६०
उबटन करिकै तन केसरसों निर्मलजलसों फिरिअन्हवाय॥
कंकण बांधागा आल्हा के दूलह बने बनाफरराय ६१
सजी पालकी तहँ ठाढ़ीथी तापर बैठि शम्भु को ध्याय॥
कुँवा बियाहन आल्हा पहुंचे मल्हना पैर दीन लटकाय ६२
पहिली भाँवरि के फिरतैखन आल्हा गहा चरणको धाय॥
बाग लगावों तेरे नाम की माता लेवो चरण उठाय ६३
ऐसो कहिकै सातों भाँवरि घूमा तुरत बनाफरराय॥
मल्हनाबोली फिरि आल्हा सों सेयों तुमको दूध पियाय ६४
तासों द्यावलि सों अधिकी मैं तासों पैर दीन लटकाय॥
पंजा फेर्यो फिरि पीठी माँ तुम्हरो बार न बाँको जाय ६५
पाँय लागिकै फिरि द्यावलिके पलकी चढ़े बनाफरराय॥
हुकुम लगायो बघऊदन ने डंका बजनलाग घहराय ६६
घोड़ करिलिया आल्हा वाला कोतल चला पालकी साथ॥
मलखे पपिहापर बैठत भे नायकै रामचन्द्र को माथ ६७
घोड़ा मनोहरा की पीठी माँ देबा तुरत भयो असवार॥
सय्यद सिरगा पर बैठत भे नाहर बनरस के सरदार ६८
अली अलामत औ दरियाखां बेटा जानबेग सुल्तान॥
तेग बहादुर अलीबहादुर बैठे घोड़ आपने ज्वान ६९

मीरताल्हन के लरिका ये नाहर समरधनी तलवार ॥
मन्नागूजर मोहबे वालो सोऊ बेगि भयो असवार ७०
सातलाख लग फौजैं सजिकै नैनागढ़ को भई तयार ॥
डंका बाजैं अहतंका के ऊदन बेंदुलपर असवार ७१
सजे बराती सब मोहबे के जल्दी कूच दीन करवाय ॥
सातरोज की मैंजलि करिकै फौजैं अटीं धुरा पर आय ७२
आठ कोस नैनागढ़ रहिगा तहँपर डेरादीन डराय ॥
तम्बू गड़िगा तहँ आल्हा का बैठे सबै शूरमा आय ७३
ऊंचे ऊंचे तम्बू गड़िगे नीचे लागीं खूब बजार ॥
कम्मर छोरे रजपूतन ने हाथिन हौदा धरे उतार ७४
तंग बछेड़न की छोरी गइँ क्षत्रिन धरा ढाल तलवार ॥
बनी रसोईं रजपूतन की सबहिनजेंयलीन ज्यँवनार ७५
गा हरकारा तब तहँनाते जहँना भरीलाग दरबार ॥
बैठक बैठे सब क्षत्री हैं एकते एक शूर सरदार ७६
गम् गम् गम् गम् तबला गमकैं किन् किन् परी मँजीरन मार ॥
को गतिबरणै सारंगी कै होवै नाच पतुरियन क्यार ७७
खये अफीमनके गोला कोउ पलकैं मूंदैं औ रहिजायँ ॥
कोऊ जमाये हैं भांगनको मनमाँ रहे रामयश गाय ७८
उड़ै तमाखू बुटवल वाली धुँवना रहा तहांपर छाय ॥
हाथ जोरि औ बिनती करिकै धावन बोल्यो शीशनवाय ७९
अईं बरातैं क्यहु राजाकी धूरे परीं आजही आय ॥
आठकोस केहैं दूरीपर सांची खबरि दीन बतलाय ८०
सुनिकै बातैं नयपाली ने तीनों लड़िका लये बुलाय ॥
जोगा भोगा औ बिजियाते राजा बोल्यो बचन सुनाय ८१

जावो जल्दी तुम धूरेपर हमको खबरि सुनावो आय ॥
सुनिकै बातैं तीनों चलिभे धूरे तुरत पहूंचे जाय ८२
ऊंचे टिकुरी तीनों चढ़िकै दूरिते द्यखैं तमाशा भाय ॥
देखिकै फौजैं मलखाने की तीनों गये तहाँ सन्नाय ८३
तीनों लौटे त्यहि टिकुरीते अपने महल पहूंचे आय ॥
भोजन केरी फिरि बिरियामाँ राजै खबरि दीन बतलाय ८४
लगी कचहरी ह्याँ आल्हाकी भारी लाग तहाँ दरबार ॥
बैठक बैठे सब क्षत्री हैं एकते एक शूर सरदार ८५
मीरताल्हन बनरसवाले आली खानदान के ज्वान ॥
बड़े पियारे ते क्षत्रिनके अपने धर्म कर्म अनुमान ८६
सच्चे साथी रहैं चारों के यारों मानों कही हमार ॥
ऐसे होते जो सय्यद ना कैसे बने रहत सरदार ८७
अली अलामत औ दरियाखाँ बेटा जानबेग सुल्तान ॥
औरो लड़िका रहैं सय्यदके एकते एक रूप गुणखान ८८
मन्नागूजर मोहबे वाला बैठा बड़ा सजीला ज्वान ॥
रुपनाबारी ते त्यहि समया बोले तहाँ बीर मलखान ८९
ऐपनवारी बारी लैकै राजेद्वार पहूंचो जाय ॥
सुनिकै बातैं मलखाने की रुपना बोला शीशनवाय ९०
औरो नेगी मोहबे वाले आये साथ बनाफरराय ॥
ऐपनवारी बारी लैकै द्वारे मूड़ कटावै जाय ९१
सुनिकै बातैं ये रुपना की बोले तुरत उदयसिंहराय ॥
तुमको नेगी हम मानैं ना जानैं सदा आपनो भाय ९२
ददा बियाहन को रहि हैं ना बतियाँ कहिबे को रहिजायँ ॥
यश नहिंजावै नर मरिजावै परहित देवै मूड़कटाय ९३

स्वारथ देही तब नरकेही नेही मरे न पावै चाम ॥
सन्मुख जूझै समरभूमि में जावै तुरत हरी के धाम ६४
बड़े प्रतापी जग में जाहिर मनियाँदेव मोहोबे केर ॥
तिनके सेवक तेई रक्षक रूपन काह लगावो देर ९५
रूपन बोला तब मलखे ते दादा मानो कही हमार ॥
घोड़ करिलिया आल्हा वाला अपने हाथ देउ तलवार ६६
सुनिकै बातैं ये रुपना की मलखे घोड़ दीन सजवाय ॥
ढाल खड्ग रुपना को दैकै बैठे तुरत बनाफरराय ६७
बैठिकै रुपना फिरि घोड़े पर ऐपनवारी लीन उठाय ॥
चारिघरी को अरसा गुजरो नैनागढ़ै पहूँचो जाय ६८
देखिकै बारी दरवानी ने भारी हाँक दीन ललकार ॥
कहां ते आयो औ कहँ जैहौ बोलो घोड़े के असवार ६६
सुनिकै बातैं द्वारपाल की रूपन बोला बचन उदार ॥
आल्हा ब्याहन को हम आये नामी मोहबे के सरदार १००
खबरि सुनावो नैपाली को फिरि तुम हमैं सुनावो आय ॥
ऐपनवारी बारी लायो ताको नेग देव पठवाय १०१
सुनिकै बोलो द्वारपाल फिरि तुम्हरो नेग काह है भाय ॥
सोऊ सुनावों महराजा को लादे लिहे घोड़ पर जाय १०२
सुनिकै बातैं द्वारपाल की रूपन बोला बचन उदार ॥
चारिघरीभर चलै सिरोही द्वारे बहै रक्त की धार १०३
नेग हमारो यहु प्यारो है देवो पठै स्वई सरदार ॥
जाहि पियारो तन होवै ना आवै स्वई शूर अब द्वार १०४
सुनिकै बातैं ये बारी की आरी द्वारपाल ह्वैजाय ॥
मनमें सोचै मनै बिचारै मनमें बार बार पछिताय १०५

केसो बारी यह्ह आयो है नाहर घोड़ेका असवार ॥
जालिम राजा नैपाली है तासों कौन चहै तलवार १०६
यहै सोचिकै द्वारपालने औ रूपन ते कहा सुनाय ॥
गरमी तुम्हरी जो उतरी हो बोलो ठीक ठीक तुम भाय१०७
सुनिकै बातैं दरवानी की रूपन गरू दीन ललकार ॥
नगर मोहोबा जगमें जाहिर नामी मोहबे के सरदार १०८
तिनको नेगी मैं द्वारेपर लीन्हे खड़ा ढाल तलवार ॥
जौन शूरमा हो नैनागढ़ आवै देय नेग सो द्वार १०९
इतनी सुनिकै दरवानी ने राजै खबरि सुनाई जाय ॥
ऐपनवारी बारी लावा भारी बात कहै सो गाय ११०
चारिघरीभर चलै सिरोही द्वारे बहै रक्तकी धार ॥
जौन शूरमाहो राजाघर आवै देय नेग सो द्वार १११
इतना सुनतै महराजाके नैना अग्नि बरण ह्वैजायँ ॥
पूरण राजा पटनावाला बोला राजै बचन सुनाय ११२
हम चलिजावैं अब द्वारेपर बारी नेग देयँ चुकवाय ॥
इतना कहिकै चलि ठाढ़ो भो साथै औरो चले रिसाय ११३

सवैया ॥

द्वार चले तलवार लिये रट मारहि मार कुमारन पेखा ।
लाल गुपाल गहे करबाल ख्यलैं जसफाग भयउ तस भेखा ॥
मार अपार जुझार किये औ गिरे रणखेत रहे नहिं शेखा ।
बारीकरै कब रारी नृपै ललिते मलखान कि है यह लेखा११४

पूरन राजा पटना वाला लीन्हे नांगि हाथ तलवार ॥
सो धरि धमका त्यहि रूपनके रूपन लीन ढालपर वार ११५

सांगि उठाई फिरि रूपन ने राजै बार बार ललकार ॥
लटुवा लाग्यो पूरन शिर में औ बहिचली रक्तकीधार ११६
अगल बगल के फिरि मारतभा दाँयें बाँयें दीन हटाय ॥
एँड़ा मसके फिरि घोड़ा के फाटक तुरत पार ह्वैजाय ११७
गली गली में फिरि मारत भो औ बहिचली रक्तकी धार ॥
घरी चारके फिरि अरसा में लश्कर आयगयोअसवार११८
लाले रँग सों भीजे दीख्यो फागुन टेसू के अनुहार ॥
पुँछी हकीकति तब मलखेने नाहर मोहबे के सरदार ११६
कैसी गुजरी नैनागढ़ में रूपन हाल देउ बतलाय ॥
सुनिकै बातैं मलखाने की रूपन यथातथ्य गा गाय १२०
हल्ला ह्वैगा नैनागढ़माँ जहँतहँ कहनलागि सबकोय ॥
ऐस बहादुर जहँके परजा तहँकेनृपतिकहौ कसहोयँ १२१
देखि तमाशा यहु बारी का राजा बार बार पछिताय ॥
बड़ी हीनता हमरी ह्वैगै बारी जियतनिकरिगाहाय १२२
जोगा भोगा दोऊ लरिका बोले हाथ जोरि शिरनाय ॥
हुकुम जो पावैं महराजा का सबकी कटा देयँ करवाय १२३
जितनी रॉड़ैं चढ़ि आई हैं सो बिनघाव एक ना जायँ ॥
खेदिकै मारैं हम मोहबे लग टटुवा टायर लयँ छिनाय १२४
सुनिकै बातैं ये लरिकन की राजै हुकुम दीन फरमाय ॥
तुरत नगड़ची को बुलवायो तासोंबोल्योहुकुमसुनाय १२५
बजै नगाड़ा नैनागढ़ में सबियाँ फौज होय तय्यार ॥
भोर सुरहेर पहफाटत खन मारौं मुहबेके सरदार १२६
इतना कहिकै दूनों चलिभे अपने महल पहूँचे जाय ॥
सन ह्वैगा दिननायक सों झएडागड़ानिशाको आय १२७

तारागण सब चमकन लागे सन्तन धुनी दीन परचाय ॥
परे आलसी निजनिज खटिया घों घों कंठ रहे घर्राय १२८
माथ नवावों पितु अपने को जो नित मेरी करैं सहाय ॥
करों तरंग यहाँ सों पूरण पूरण ब्रह्म रामको ध्याय १२९
आगे फौजैं दूनों सजिहैं मचिहैं घोर शोर घमसान ॥
जोगा भोगा के मुर्चापर लड़िहैं खूब बीरमलखान १३०

इति श्रीलखनऊनिवासि (सी, आई, ई) मुंशीनवलकिशोरात्मज बाबूप्रयागनारायणजीकी आज्ञानुसारउन्नामप्रदेशान्तर्गतपँड़रीकलांनिवासिमिश्रवंशोद्भवबुधकृपाशंकरसूनुपं०ललिताप्रसादकृतबरातआगमनवर्णनोनामप्रथमस्तरंगः १ ॥

कवित्त ॥

अंजली दिहेते रोग देहसों हटाय देत ध्यान के धरेते दुख दारिद दिखातना ।
ज्ञानसों बिचारे मान राजैसों कराय देत नामके उचारे मुक्ति पदवी बिलातना ॥
धारे उर व्रत काम क्रोधहू नशाय देत दीनह्वै पुकार करे खीन कुम्हिलातना ।
बोरिदेत विघ्नन मिरोरि देत शत्रुमुख ललित करजोरे पाप रंचहू लखातना १

सुमिरन ॥

मारतण्ड मैं तुमको सुमिरों धरिकै चरणकमल में माथ ॥
सूर्य्य भास्कर सविता रवि औ औरो नाम बहुत दिननाथ १
कथा पुराणन में पढ़िकै मैं जानों काश्यपेय महराज ॥
जो कोउ आयो तव शरणागत गई न तासु कबों जगलाज २
तुम्हरे कुलमाँ रघुनन्दन भे बन्दनकरैं ललित तिनक्यार ॥
अक्षत चन्दन औ फूलन सों मानस पूजन सदा हमार ३
तुम्ही सहाई हौ दीनन के गाई सबै पुराणन गाथ ॥
स्वई भरोसा धरि जियरेमाँ जावाचहौं नांघि भवपाथ ४
छूटि सुमिरनी गै देवन कै शाका सुनो शूरमन क्यार ॥
जोगा भोगा दोऊ लड़िहैं लड़िहैं उदयसिंह सरदार ५

अथ कथाप्रसंग ॥

उदय दिवाकर भे पूरबमाँ किरणनकीनजगत उजियार॥
डंका बाज्यो नैनागढ़माँ सवियाँ फौज भई तय्यार १
वसैं बघेले औ चन्देले पाँवर सूरवंश सरदार॥
माड़वाड़ के क्षत्री साजे औ परिहार गुटैयाचार २
हाड़ा वाले बूंदी वाले औ रइठाउर लीन सजाय॥
तुरत निकुम्भन को सजवायो औ गौरन को लीन बुलाय ३
सजि गुहलैता औ कछवाये बहुतक चन्द्रबंश के ज्वान॥
तोमर ठाकुर तुमरवार के सजिगे मैनपुरी चवहान ४
सजे भदावर वाले क्षत्री साजिगे गहिलवार सरदार॥
बैस डौंड़ियाखेरे वाले जिनके बांट परी तलवार ५
हवशी साजे औ दुर्रानी जे मनइन के करैं अहार॥
कुरी छतीसों सब सजवाई ठाकुर सबै भये तय्यार ६
पूरन राजा पटनावाला सोऊ लीन ढाल तलवार॥
जोगा भोगा दोनों ठाकुर अपने घोड़न भे असवार ७
रणकी मोहरि बाजन लागी रणका होनलाग व्यवहार॥
दाढ़ी करखा बोलन लागे विप्रन कीन वेद उच्चार ८
मारु मारुकै मोहरि बाजी बाजी हाव हाव करनाल
को गति बरणै तहँ क्षत्रिनकै एक ते एक दई के लाल ९
हनु हंकारनि तोपैं साजि गईं जिनसों होय घोर घमसान॥
मारू डंका बाजन लागे घूमन लागे लाल निशान १०
खर खर खर खरकै रथ दौरे रब्बा चले पवन की चाल॥
खट पट खट पट तेगा बोलैं मर मर होयँ गैंड़की ढाल ११
धक धक धक धक करैं महावत हाथी धकापेल चलिजायँ॥

कोउ कोउ घोड़ा मोर चालपर कोउ कोउ सरपट रहे भगाय १२
कोउ कोउ घोड़ा हंस चालपर कोउ कोउ चले कदमपरजायँ ॥
कोउ कोउ घोड़ा ऐसे जावैं जिनकै टाप न परै सुनाय १३
कोउ कोउ घोड़ा कावा देवैं कोउ कोउ गर्जि रहे असवार ॥
कउँधालपकनिबिजुलीचमकनि चमचम चमाचम्म तलवार १४
घन घन घन घन घंटा बाजैं घूमत चलैं मत्त गजराज ॥
बल बल बल बल करैं साँड़िया भागत चलैं समर के काज १५
हिनहिन हिन हिन घोड़ा हींसैं खीसैं कायर देखि परान ॥
छाय अँधेरिया गै पृथ्वी में गर्दा छाय गई असमान १६
देवता सकुचे आसमान में जंगल जीव गये थर्राय ॥
घरी चार के फिरि अर्सा में सेना अटी समर में आय १७
धूली दीख्यो आसमान में मलखे बोल्यो बचन सुनाय ॥
सजो बेंदुला के चढ़वैया फौजै गई उपर अब आय १८
सुनिकै बातैं मलखाने की ऊदन गरू दीन ललकार ॥
सजो सिपाही मोहबे वाले सबियाँ फौज होय तैयार १९
झीलम बखतर पहिरिसिपाहिन हाथम लीन ढाल तलवार ॥
सिरगा घोड़े की पीठीमाँ सय्यद तुरत भये असवार २०
चढ़ो कबुतरी में मलखाने अपनी लिये ढाल तलवार ॥
घोड़ मनोहर की पीठी माँ देवा चढ़त न लागी बार २१
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातु की सो चरखिन में दीन चढ़ाय ॥
लै लै थैली बारूदन की सो तोपन में दई चलाय २२
बत्ती दइ दइ फिरि तोपन में रंजक तुरत दीन धरवाय ॥
बम्बके गोला छूटन लागे परलय जनो गई नगच्याय २३
गोली ओला सम वर्षत भईं भनभन भन्नभन्न भन्नाय ॥

सर सर सर सर के शर छूटैं मन मन मन्न मन्न मन्नाय २४
खट खट खट खट तेगा बोलैं हट हट करैं लड़ैता ज्वान ॥
बड़ी लड़ाई भै नैनागढ़ जोगा भोगा के मैदान २५
सूंढ़ि लपेटा हाथी भिड़िगे अंकुश भिड़े महौतनकेर ॥
हौदा हौदा यकमिल ह्वैगे मारैं एक एकको हेर २६
सात लाख दल मलखे लीन्हे भोगा पांच लाख परमान ॥
मीराताल्हन औ जोगाका परिगा समर बरोबरि आन २७
भोगा बोला तब ऊदनते ओ परदेशी बात बनाय ॥
कहँाते आयो औ का करिहौ आपन हाल देव बतलाय २८
ऊदन बोले तब भोगाते तुमते सत्य देयँ बतलाय ॥
देश हमारो नगर मोहोबा जहँपर बसै चँदेलाराय २९
छोटे भैया हम आल्हाके औ ऊदनहै नाम हमार ॥
सुनवाँ ब्याहन आल्हा आये मानो सत्य बचन सरदार ३०
बाँधिकै मुशकै त्वरे बप्पाकी भँवरी फिरी बड़कवा भाय ॥
नीके ब्याहौ घर फिरिजावो अपने बाप देउ समुझाय ३१
सुनिकै बातैं ये ऊदन की भोगा कालरूप ह्वैजाय ॥
धोखे माड़ो के भूल्यो ना जहँ लै लियो बापका दायँ ३२
जाति बनाफर की ओछी है औ सब क्षत्रिन केर उतार ॥
कठिन बिसाने जग में जाहिर मोहबे लौटि जाउ सरदार ३३
बातैं सुनिकै ये भोगा की बोला बिहँसि लहुरवा भाय ॥
नदिया भागैं तौ गंगाजायँ गंगा भागि समुन्दर जायँ ३४
महादेव अर्घाते भागैं धरती लौटि रसातल जाय ॥
ऊदन भागैं समरभूमिते तौ फिरिभागिकहांकोजायँ ३५
इतना कहिकै बघऊदनने सुमिरी हृदय शारदा माय ॥

देबी शारदा मइहरवाली मानों गईं भुजापर आय ३६
बाहू फरके बघऊदन के फौजन घुसा बनाफरराय॥
जैसे भेड़िन भेड़हा पैठै जैसे अहिर बिडारै गाय ३७
तैसे क्षत्री ऊदन देखैं भागैं तुरतै पीठि दिखाय॥
बड़ी लड़ाई मलखे कीन्हों अद्भुतसमर कहा ना जाय ३८
घोड़ मनोहर की पीठीपर देबा गरू करै ललकार॥
हनि हनि मारै रजपूतन को बहुतक जूझिगये सरदार ३९
अली अलामत औ दरियाखाँ बेटा जानबेग सुल्तान॥
ये सब लड़िका सय्यदवाले तहँपर करैं घोर घमसान ४०
मन्ना गूजर मोहबेवाला दोऊ हाथ करै तलवार॥
जोगा भोगा पूरन राजा येऊ करैं तहां पर मार ४१
जुझे सिपाही नैनागढ़ के लगभग एक लाखके ज्वान॥
पांच सहस मोहबे के जूझे करिकै समर भूमि मैदान ४२
जोगा बोला तब भोगा ते मानो कही हमारी बात॥
खबरि सुनावो महराजाको जैसी देखि परै कुशलात ४३
सुनिकै बातैं भोगा चलिभा नैनागढ़ै पहूंचा जाय॥
हाथ जोरिकै महराजा के भोगा यथातथ्य गा गाय ४४
सुनिकै बातैं महराजा ने लायो अमरढोल को जाय॥
सो दै दीन्ह्यो कर भोगा के भोगाचलिभाशीशनवाय ४५
आयकै पहुंच्यो समर भूमि में भोगा दीन्ह्यो ढोल बजाय॥
मुर्दा उठिकै जिन्दा ह्वैगे घैहा उठे तुरत हरषाय ४६
उठे सिपाही नैनागढ़ के मारैं खैंचि खैंचि तलवार॥
मारे मारे तलवारिन के नदिया बही रक्तकी धार ४७
डारे मुर्दा हैं लोहुन में मानों कच्छ मच्छ उतरायँ॥

पगड़ी गिरिगइँ त्यहि लोहू में फूले कमल सरिसदर्शायँ ४८
परीं बँदूखैं कहुँ लोहू में काली नागिनिसी मन्नायँ॥
पांच कोसलों चली सिरोही लोथिन उपरलोथिदिखरायँ४९
बड़ी लड़ाई भै नैनागढ़ मारा मारा परै सुनाय॥
कोऊ हारा नहिं काहू सों दोउरण परा बरोबरि आय ५०
जोगा ठाकुर नैनागढ़ का सय्यद बनरस का सरदार॥
भोगा देवाके मुर्चा माँ दोउ दिशिहोय बरोबरि मार ५१
मन्नागूजर पूरन राजा दोऊ करैं खूब तलवार॥
बड़े लड़ैया रणमाँ रहिगे कायर छांड़ि भागि हथियार ५२
अमरढोल कहुँ रणमाँ बाजै गिरि उठि लड़ैं लड़ैताज्वान॥
देखि तमाशा ऊदन बोले दादा सुनो वीर मलखान ५३
मरिमरि जीवैं नैनागढ़ के मैंना दीख कवों असभाय॥
कावा दैकै ऊदन चलिभे नैनागढ़ै पहूंचे आय ५४
संध्या ह्वैगै ह्वाँ लश्कर में तव फिरि मारु बंद ह्वैजाय॥
ऊदन पहुंचे ह्वाँ मालिन घर तुरतै मोहर दीन थँभाय ५५
खबरि सुनावो म्वरि भौजीका आयो मिलन उदयसिंहराय॥
सुनिकै वातैं मालिनि चलिभै सुनवैं खबरि सुनाई जाय ५६
सुनवाँ चलिभै तब महलन ते आई जहाँ लहुरवा भाय॥
पाग बैंजनी शिरपर बाँधे ऊदन कह्यो बचन मुसुकाय ५७
याही कारण चिठिया पठई जल्दी अवो लहुरवा भाय॥
जियत मोहोबे कोउ जाई ना डरिहौ बंश नाश करवाय ५८
मरे सिपाही क्यों जीवत हैं भौजी हाल देउ बतलाय॥
सुनिकै वातैं सुनवाँ बोली तुम सुनिलेउ लहुरवा भाय५९
बरा बर्पलों मेरे बापने कीन्ह्यो कठिन तपस्या जाय॥

मांगु मांगु तब इन्दर बोले बप्पा बोले माथ नवाय ६०
अमरढोल जो हमको देवो तौ सब काम सिद्ध ह्वैजायँ ॥
एवमस्तु तब इन्दर बोले बप्पा भवन पहूंचे आय ६१
जबहीं क्षत्री गिरैं खेतमें अम्मरढोल देयँ बजवाय ॥
कान भनक क्षत्रिन के परतै जीवैं तुरत बनाफरराय ६२
धोखे माड़ोके रहियो ना जहँ लैलियो बापका दायँ ॥
लड़े न जितिहौ मेरे बापसों तुमको भेद देउँ बतलाय ६३
देवी पूजन कल मैं जैहौं लेहौं अमरढोल मँगवाय ॥
माली बनिकै तहँ तुम आयो लीन्ह्यो अम्मर ढोल चुराय ६४
इतना कहिकै सुनवाँ चलिभै अपने महल पहूंची आय ॥
ऊदन आये फिरि तम्बूको बैठे जहाँ बनाफरराय ६५
हाल बतायो मलखाने ते सोयो सबै रातिको पाय ॥
भोर भुरहरे मुर्गा बोलत माली बने उदयसिंहराय ६६
जायकै पहुंचे तेहि मठियामाँ जहँपर सुनवाँ गई बताय ॥
घोड़ बेंदुला तहँ बांधा है मालिन बीच बनाफरराय ६७
फूल डिलैया माँ सोहैं भल सुन्दर हरवा रहे बनाय ॥
सुनवाँ जागी ह्याँ महलन में बोली मातै बचन सुनाय ६८
राति सुपनवाँ यक मैं देखा माता तुम्हैं देउँ बतलाय ॥
संग सहेलिन देवी पूजैं तहँपर अमरढोल अरराय ६९
त्यहिते मनमाँ यह आई है पूजन करौं भवानी जाय ॥
तुमसों माता यह बिनवतिहौं देवो अमरढोल मँगवाय ७०
सुनिकै बातैं रानी चलिभै पहुंची तुरत सेजपर जाय ॥
हाल बतायो महराजा को लीन्ह्यो अमरढोल मँगवाय ७१
सो दै दीन्ह्यो लै बेटी को बेटी सखियन लीन बुलाय ॥

चली भवानी फिरि पूजनको सुन्दरि गीतरहीं सब गाय ७२
जायकै पहुंचीं त्यहि मंदिरमाँ ज्यहिमाँ बसैं दूर्गा माय॥
अक्षत चन्दन सों पूजन करि लौंगनहार दीन पहिराय ७३
शीश नवायो जगदम्बाको सुनवाँ फूलनहार चढ़ाय॥
भोग लगायो फिरि मेवा का सेवा अधिक कीन हरषाय ७४
किह्यो इशारा फिरि ऊदनको तुरतै लीन्ह्यो ढोल उठाय॥
कूदि बेंदुलापर चढ़ि बैठ्यो लशकर तुरतपहुंच्योआय ७५
कहाँ कहाँ कहि माली दौरे रहिगे जहाँ तहाँ शिरनाय॥
खबरि सुनाई नयपाली को सुनतै गयो सनाकाखाय ७६
जायकै पहुंच्यो तेहि मंदिर में जेहि में रहैं दूर्गा माय॥
तुरत पंडितन को बुलवायो जानैं तंत्रशास्त्र अधिकाय ७७
इन्द्र यज्ञ नृपने तहँ ठानी स्वाहा स्वाहा परै सुनाय॥
एकसहसमन होम करायो गायो बेदमंत्र तहँ भाय ७८
हाथ जोरिकै बिनय सुनायो मानो सत्यवचन सुरराज॥
बारह बरसै जब तप कीन्ह्यों तबमोहिंढोलदियोमहराज ७९
जाति बनाफर की ओछी है तिनने चोरी लई कराय॥
सुनिकै बातैं ये राजा की भइनभबाणि समयसुखदाय ८०
तुम्हरे उनके नहिं काहूघर रहि है ढोल सुनो नृपराय॥
इन्दर बोले फिरि देवन ते मानो बचन हमारे भाय ८१
आल्हा अम्मर हैं दुनिया में ते कस मरैं यहांपर आय॥
देवी शारदा का बरदानी आल्हा केर लहुरवा भाय ८२
लैकै ढोलक तुम तम्बू ते पटको तुरत डांड़पर जाय॥
सुनिकै बातैं ये इन्दर की देवता तुरत चले शिरनाय ८३
लैकै ढोलक ते पटकत भे अपने धाम पहूंचे आय॥

गा नैपाली निज मंदिर को लश्कर खुशी बनाफरराय ८४
ऊदन बोले फिर मलखे ते दादा मोहबेके सरदार ॥
कूच करावो अब लश्कर को चलिकै लड़ैं तासुके द्वार ८५
यह मन भाई मलखाने के तुरतै कूच दीन करवाय ॥
कोउ कोउ घोड़ा हंसचाल पर कोउ कोउ मोरचालपरजायँ ८६
चित्रचालपर चतुरचालपर कोइकोइचलैं तितुरकी चाल ॥
मारु मारु कै मौहरि बाजैं बाजैं हाव हाव करनाल ८७
बाजें डंका अहतंका के घूमत जावैं लाल निशान ॥
छाय अँधेरिया गै दशहू दिशि छिपिगे अंधकार में भान ८८
मारु मारु करि क्षत्री बोलैं रणमें बड़े लड़ैता ज्वान ॥
घोड़ी कबुतरी के ऊपर माँ आगे चला बीर मलखान ८९
तीनकोस जब फाटक रहिगा तब पुरबासी उठे डेराय ॥
यक हरिकारा दौरति आवै राजै खबरि सुनाई आय ९०
सुनिकै बातैं हरिकाराकी राजा मनै उठा अकुलाय ॥
जोगा भोगा तहँ बैठेथे बोले राजै शीश नवाय ९१
हुकुम जो पावैं महराजा को डंका अबै देयँ बजवाय ॥
जाय न पावैं मोहबे वाले सबकी कटा लेयँ करवाय ९२
सुनिकै बातैं ये लरिकन की राजै हुकुम दीन फर्माय ॥
जोगा भोगा दोऊ चलिभे लश्कर तुरत पहूंचे आय ९३
बाजे डंका अहतंका के शङ्का करे कोऊ नहिं काल ॥
घोड़ आपनेपर चढ़िबैठ्यो पूरन पटना को नरपाल ९४
जोगा भोगा घोड़े बैठे लश्कर कूच दीन करवाय ॥
बाजे डंका अहतंका के पहुँचे समरभूमि में आय ९५
आगे घोड़ाहै जोगा का पाछे सकल शूर सरदार ॥

घोड़ बेंदुला पर ऊदनहैं लीन्हे हाथ ढाल तलवार ९६
जोगा बोला तब घोड़ेते कौने डांड़ दबायो आय ॥
जितने आये हैं मोहबे के सबके मूड़ लेउँ कटवाय ९७
बातैं सुनिकै ये जोगा की ऊदन तहां पहूंचे आय ॥
हमहैं क्षत्री मुहबे वाले हमरो मूड़ लेउ कटवाय ९८
सुनिकै बातैं जोगा ठाकुर तुरतै खैंचिलीन तलवार ॥
ऐंचिकै मारा बघऊदन को सोऊ लीन ढालपर वार ९९
भोगा चलिभा तब ऊदनपर मलखे तुरत पहूंचे आय ॥
मलखेठाकुर के मुर्चा में कोउ रजपूत न रोंकै पायँ १००
मन्नागूजर मोहबे वाला पूरन पटना का सरदार ॥
लड़ैं बहादुर दोउ रणखेतन दोऊहाथ करैं तलवार १०१
घोड़ पपीहा की पीठीपर रूपन गरुदेय ललकार ॥
भाला छूटे असवारन के पैदरचलनलागितलवार १०२
गजके हौदा ते शर बरषैं नीचे करैं महावत मार ॥
कल्ला भिड़िगे तहँ घोड़न के अंकुशभिड़ेमहौतनक्यार१०३
पैदर के सँग पैदर भिड़िगे घोड़न साथ घोड़ असवार ॥
सूंढ़ि लपेटा हाथी भिड़िगे हौदन होय तीर की मार १०४
चलैं कटारी कोताखानी ऊना चलैं बिलाइति केर ॥
लीन्हे भाला नागदवनि को मारैं एक एक को हेर १०५
झुके सिपाही नैनागढ़ के एँड़ा बेंड़ हनैं तलवार ॥
जोगा भोगा दोनों ठाकुर गरुई हाँक दीनललकार १०६
सदा न फूलै यह बन तोरई यारो सदा न सावन होय ॥
अम्मर देही नहिं मानुप कै मरिहै एकदिना सबकोय १०७
है मरदाना ज्यहि को बाना सो लड़ि मरै समर मैदान ॥

जीवत बचिहै जो मुर्चा ते पाई खान पान सनमान १०८
जो भगिजाई अब मुर्चा ते तेहिको हनों कठिन तलवार॥
जोगा भोगा की बातैं सुनि जूझनलागि शूर सरदार १०९
कटि कटि कल्ला गिरैं बछेड़ा मरि मरि होनलागखरिहान॥
धरि धरि धमकैं रण खेतन में क्षत्री बड़े लड़ैता ज्वान ११०
मूड़न केरे मुड़चौरा भे औ रुण्डन के लगे पहार॥
मारे मारे तलवारिन के नदिया बही रक्तकी धार १११

सवैया॥

कौन शुमार करै ललिते अतिमार भई सो कहाँ लगगाई।
खून कि धार बहे नदि नार किनार परैं गज ऊंट दिखाई॥
नाच पिशाच करैं तहँ साँच लिये करखप्पर योगिनि आई॥
गावत भूत बजावत ताल तहाँ करतालनकी धुनिछाई ११२

ऊदन बोले मलखाने ते दादा मोहबे के सरदार॥
कठिन मवासी है नैनागढ़ ह्याँपर बहुत रहौ हुशियार ११३
मन्नागूजर मोहबे वाले जावो एक तरफ यहिबार॥
चाचा मालिक सब तुमहीं हौ राजा बनरस के सरदार ११४
तुम चलिजावो एक तरफको मारो ढूंढ़ि ढूंढ़ि कै ज्वान॥
हाथिन केरे तुम हौदापर दादा हनो बीर मलखान ११५
इतना कहिकै बघऊदन ने हौदा उपर नचावा घोड़॥
काहू मारा तलवारी सों काहू हना तड़ाका गोड़ ११६
बाइस हौदा खाली ह्वैगे अकसर ऊदन के मैदान॥
घोड़ी कबुतरी के ऊपरते बहुतन हना बीरमलखान ११७
जैसी जावै बनरसवाला आला समर धनी तलवार॥

भगैं सिपाही चौगिर्दा ते भारी होत चलै गलियार ११८
मन्नागूजर ऊजर कीन्ह्यों देवै कठिन कीन तलवार॥
को गति बरणै तहँ रुपनाकी रणमाँ भली मचाई मार ११९
पूरन राजा पटनावाला भाला लिये हनै दश पांच॥
को गति बरणै तहँ भोगाकै घोड़ा उपर रहा सो नाच १२०
हनि हनि मारै चौगिर्दा ते गरुई हाँक देय ललकार॥
इतना सुनिकै मलखे ठाकुर तुरतै खैंचिलीन तलवार १२१
ऊदन बोले तब मलखे ते दादा मोहबे के सरदार॥
सुनवाँ भौजी का भैयाहै आई मड़ये के त्यवहार १२२
इतना सुनिकै मलखे ठाकुर फौजन तरफ पहूंचाजाय॥
बहुतन मारयो तलवारी सों बहुतनहन्यो ढालके घाय१२३
इतना कहिकै ऊदन चलिभे जोगा पास पहूंचे जाय॥
जोगा बोला तब ऊदनते मानो कही बनाफरराय १२४
बड़ी दूरिते चलिआयो है आपनि लोह दिखावो आय॥
सुनिकै बातैं ऊदन बोले ठाकुर सत्य देयँ बतलाय १२५
मोरे मोहोबे में किरिया भै जो करि डरी चँदेलोराय॥
कोऊ आवै समरभूमि में आपनिलोह दिखावैआय १२६
पहिले ल्वाहै वहिकी देखो पाछे आपनि देवदिखाय॥
मारो मारो समर भूमि में नहिंशककरोमनैकछुभाय१२७
इतना सुनिकै जोगाठाकुर तुरतै लीन्ह्यो साँग उठाय॥
मनाएक के सो अंदाजन ऊदन ऊपर दयोचलाय १२८
घोड़वेंदुला ऊपर उड़िगा नीचे सांगगिरी अररायं॥
बचा वेंदुलाका चढ़वैया आल्हाकेर लहुरवाभाय १२९
ऊदन बोले फिरि जोगा ते दूसरि वार करो सरदार॥

सुनिकै बातैं ये ऊदनकी तुरतै खैंचिलीन तलवार १३०
ऐंचिकै मारा बघऊदनको ऊदन लीन ढाल परवार ॥
ऊदन बोल्यो फिरि जोगा ते तीसरि वार करो सरदार १३१
खैंचि तड़ाका धनुही लीन्ह्यो तामें दीन्ह्यो तीर लगाय ॥
ऐंचिकै मारा सो ऊदनके ऊदनलीन्ह्यो वार बचाय १३२
खैंचि भड़ाका तलवारीको तुरतै हना उदयसिंहराय ॥
मूड़ बिसानी सो घोड़ेके बिन शिर परै रुंड दिखराय १३३
कोतल घोड़ा जोगा बैठे सायंकाल पहूंचा आय ॥
मारुबन्दभै दोनों दलमाँ फौजै चलीं थलनको धाय १३४
चरि चरि गौवैं घरका डगरीं उड़ि उड़ि पक्षिन लीन बसेर ॥
तारागण सब चमकनलागे संतन रमा रामको टेर १३५
करों तरंग यहाँ सों पूरण तव पद सुमिरि भवानीकन्त ॥
रामरमा मिलि दर्शन देवो इच्छा यही मोरि भगवन्त १३६

इति श्रीलखनऊनिवासि (सी, आई, ई) मुंशी नवलकिशोरात्मजबाबूप्रयागनारायणजीकीआज्ञानुसारउन्नामप्रदेशान्तर्गतपँड़रीकलांनिवासिमिश्रवंशोद्भवबुधकृपाशङ्करसूनुपण्डितललिताप्रसादकृतऊदनविजयवर्णनोनामद्वितीयस्तरंगः २ ॥

सवैया ॥

शेश महेश गणेश मनाय, सदा बरदान यही हम पावैं ।
हाथगहे धनुबान सुजान, महान सदा ज्यहि वेद बतावैं ॥
कोटिन जन्म जहां उपजैं, रघुनन्दनके ढिगही तहँ आवैं ।
बरदान यही ललितेकर जान, सुजान सदा रघुनन्दन भावैं १

सुमिरन ॥

गोपी घूमैं नहिं गलियनमें नाहिंकहुँ नचत फिरतहैं श्याम॥
मानुष देही यह रहिहैना इकलो रही जगत में नाम १
नहीं भरोसा नर देहीको कैसे करै झूठ अभिमान॥
सदा इकेलो तरु बिरवाके मनमें करै रामको ध्यान २
यहै सहाई है दुनिया में गाई बेद पुराणन गाथ॥
ताते ज्ञानो खुब यह समझो गुजरो फेरि न आवै हाथ ३
समय जो पावो कछु दुनियामें ध्यावो सदा राम रघुराज॥
बिगरी सुधरै तुरतै तुम्हरी पूरण होयँ तुम्हारे काज ४
छूटि सुमिरनी गै देवनकै शाका सुनो शूरमन क्यार॥
सुन्दरबन को चिट्ठी जाई लड़िहैं बड़े बड़े सरदार ५

अथ कथाप्रसंग ॥

उदय दिवाकर भे पूरब में किरणनकीन जगतउजियार॥
जोगा भोगा त्यहि समया में आये तुरत राज दरबार १
हाथ जोरिकै जोगा बोले बप्पा बचन करो परमान॥
पाँचलाख फौजै हम लैगे रहिगे तीनिलाख सब ज्वान २
सुनिकै बातैं ये जोगा की राजै कागज लीन उठाय॥
चिट्ठी लिखिकै अरिनन्दन को सुन्दरबन को दीन पठाय ३
पाती लैकै हरिकारा गो सुन्दर बनै पहूंचा जाय॥
पढ़िकै पाती अरिनन्दन ने गौरीनन्दन चरण मनाय ४
तुरत बुलायो सेनापति को तासों कह्यो हाल समुझाय॥
जितनी सेना सुन्दरबन की सवियाँ कूच देव करवाय ५
सुनिकै बातैं महराजा की कूचक डङ्का दीन बजाय॥
कूच कराये सुन्दरबन ते नदी निकट पहूँचे आय ६

तम्बू गड़िगे महराजन के डेरा गड़े सिपाहिन केर ॥
आल्हा ऊदन के डेरे ते योजन एक कोस के नेर ७
किश्ती नावै तिहि नदिया में तामें नचैं कंचनी नाच ॥
आल्हा पकरै के कारण में ज्ञानिन युक्ति कीन यह साँच ८
दिखैं तमाशा तहँ नदिया में इत उत दोऊ दिशाके ज्वान ॥
आल्हा ठाकुर त्यहि समया में तहँ पर करै गये असनान ९
होनी होवै सो सच होवै ज्ञानी ध्यानी को दिखलाय ॥
कौन गुमानी अरमानी अस जानी मौत नहीं ज्यहिभाय १०
फिरि अभिमानी नर देही के नेही चरणशरण नहिंजायँ ॥
बिना पियारे रघुनन्दन के चन्दन कौन परै दिखराय ११
बन्दन करिकै रघुनन्दन को आल्हा नदी अन्हाने जाय ॥
चन्दन अक्षत सों पूजन करि प्रातःकृत्य कीन हर्षाय १२
मेला दीख्यो फिरि नदिया में दोउदिशि रहे नारि नर हेर ॥
नावै किश्तिन के ऊपर में होवै नाच पतुरियन केर १३
दिखै तमाशा तहँ ठाढ़े भे ठाकुर मोहबे के सरदार ॥
नावै आई अरिनन्दन की तिनमाँ होवै अधिक बहार १४
तहँ हरिकारा नैनागढ़ को बोला अरिनन्दन सों बात ॥
नामी ठाकुर मोहबे वाले आये आल्हा क्यरी बरात १५
सुनिकै बातैं हरिकारा की बोल्यो अरिनन्दन त्यहिकाल ॥
रहै सगाई देशराज सों आल्हा बड़े पियारे बाल १६
अयो बरातै का तिनके हो पैदल नाच दिखौ महिपाल ॥
सुनिकै बातैं अरिनन्दन की बोले देशराज के लाल १७
कौनि सगाई देशराज सों साँचे हाल देव बतलाय ॥
सुनिकै बातैं ये आल्हा की कहअरिनन्दनबचनसुनाय १८

तुम चढ़िआवो अब नावन में देखो नाच यहाँ पर आय ॥
कहैं सगाई हम साँची फिरि तुम सों हाल देयँ बतलाय १६
सुनिकै बातैं आल्हाठाकुर नावन उपर पहूंचे जाय ॥
कियो इशारा अरिनन्दन ने खेवट दीन्ह्यो नाव चलाय २०
डाटिकै बोल्यो आल्हाठाकुर खेई नाव अबै ना जाय ॥
सुनिकैबोल्यो अरिनन्दन फिरि आल्है बार बार समुभाय २१
सोला मिनटन के अर्सा में आवो फेरि यहां पर भाय ॥
लहरा नदिया के तानन में बानन सरिस पहूंचैं जायँ २२
सो मन भावैं महराजन के जे शिरताजन के समुदाय ॥
लहरा नदिया के तानन सों वानन सरिस परैं दिखराय २३
इतना कहतै अरिनन्दन के पहुंची नाव किनारे आय ॥
उतरी उतरा भा नावनते आल्हा उतरि परे हर्षाय २४
तम्बूलैगे अरिनन्दन तब बन्दन कैकै शीश नवाय ॥
द्यावलि नन्दन तहँ बैठतभे चन्दन सरिस परैं दिखराय २५
कही हकीकति अरिनन्दनतब तुमको कैद कीन हम आय ॥
देखें हम सों बुद्धिमान कोउ मोहबे और परै दिखराय २६
इतना कहिकै अरिनन्दन ने तुरतै कूच दीन करवाय ॥
चढ़िकै हाथी आल्हाठाकुर सुन्दरवनै पहूंचे जाय २७
गा हरिकारा नैनागढ़ का राजै खबरि सुनाई जाय ॥
ऊदन ढूँढ़ें ह्याँ आल्हा को दादा नहीं परैं दिखराय २८
आज्ञा लैकै मलखाने की सोनवाँ पास पहूंचे जाय ॥
भेद बनायो सब सोनवाँ ने फौजन फेरि पहूंचे आय २९
घोड़ा लैकै बयपारी बनि सुन्दरवनै पहूंचे जाय ॥
द्वार पहूंचे अरिनन्दन के ऊदन बेंदुल दीन नचाय ३०

देखि तमाशा द्वारपाल तहँ ऊदन निकट पहूंचे आय॥
साथ तुम्हारे द्वै घोड़ा हैं औ असवार एक तुम भाय ३१
रूप तुम्हारो बयपारी को आयो कौन देश ते भाय॥
घोड़ा लायेते काबुलते बेचे सबै कनौजै जाय ३२
एक इकेलो यह बाकी है राजै खबरि सुनावै जाय॥
इतना सुनिकै द्वारपाल फिरि राजै दीन्ह्यो खबरि बताय ३३
खबरि पायकै अरिनन्दन फिरि द्वारे पौंरि पहूंचे आय॥
घोड़ पपीहा मोहबेवाला राजा देखिगये हरषाय ३४
राजा बोले बघऊदन ते याकी कीमति देवबताय॥
ऊदन बोले अरिनन्दनते साँचे बचन देयँ बतलाय ३५
पहिले चढ़िकै यहि घोड़ेपर कोऊ ज्वान नचावै आय॥
हाल देखिल्यो यहि घोड़ेका तब मैं कीमति देउँ बताय ३६
सुनिकै बातैं सौदागरकी राजै हुकुम दीन फर्माय॥
बैठै क्षत्री जो कोउ जावै घोड़ा टापन देय हटाय ३७
होय मोहबिया कोउ मोहबेका घोड़ा देखि सीध ह्वैजाय॥
टेढ़े घोड़ेके चढ़वैया मोहबे बसैं बनाफरराय ३८
सुनिकै बातैं सौदागरकी तुरतै आल्है लीन बुलाय॥
हुकुम लगायो अरिनन्दनने घोड़ा बैठि नचावोभाय ३९
हुकुम पायकै अरिनन्दनको घोड़ा चढ़े बनाफरराय॥
घोड़ नचायो भल आल्हाने ऊदन बोल्यो बचन सुनाय ४०
जल्दी चलिये अब लश्करको दादा काह रह्यो पछिताय॥
नाम हमारो उदयसिंह है ओ अरिनन्दन बात बनाय ४१
इतना कहिकै बघऊदनने आपन घोड़ दीन दौड़ाय॥
आल्हो चलिभे फिरिजल्दीसों लश्कर दोऊ पहूंचेभाय ४२

मलखे बोले फिरि आल्हाते लश्कर कूच देव करवाय ॥
यह मन भाई तब आल्हा के डङ्का तुरत दीन बजवाय ४३
हाथी सजिगा पचशब्दा तब आल्हा तुरत भयो असवार ॥
हरनागर घोड़े के ऊपर भैने चढ़ा चँदेले क्यार ४४
घोड़ मनोहर देबा बैठा सिरगा बनरसका सरदार ॥
सोहैं कबुतरी पर मलखे भल ऊदन बेंदुलपर असवार ४५
मन्नागूजर रूपन बारी दोऊ बेगि भये तय्यार ॥
भीलमबखतर पहिरि सिपाहिन हाथम लई ढाल तलवार ४६
कूचके डङ्का बाजन लागे घूमन लागे लाल निशान ॥
घोड़ी कबुतरी के ऊपरमाँ आगे फिरैं बीर मलखान ४७
खर खर खर खर कै रथ दौरैं रब्बा चलैं पवनकी चाल ॥
मारु मारु कै मौहरि बाजैं बाजैं हाव हाव करनाल ४८
इतते लश्कर गा आल्हाका जोगा उतै पहूँचा आय ॥
बम्बके गोला छूटन लागे हाहाकारी शब्द सुनाय ४९
जौने हाथी के गोला लागै मानों गिरा महल अरराय ॥
जौने क्षत्री के गोला लागै साथै उड़ा चील्हअसजाय ५०
जौने बछेड़ा के गोला लागै धुनकन रुईसरिस उड़िजाय ॥
गोला लागै ज्यहि सँड़िया के सो मुहभरा गिरै अललाय ५१
जौने बैलके गोला लागै तरवर पात ऐस गिरिजाय ॥
दुनो गोल आगे को बढ़िगे तोपन मारु बन्द ह्वैजाय ५२
मारु बँदूखै औ भालाकी बलछी कड़ाबीन की मार ॥
चर्लं कटारी बूँदीवाली ऊना चलै बिलाइत क्यार ५३
कटि कटि क्षत्री गिरैं खेतमें उठि उठि रुण्ड करैं तलवार ॥
मूड़न केरे मुड़चौरा भे औ रुण्डन के लगे पहार ५४

सूँढ़ि लपेटा हाथी भिड़िगे ऊपर करैं महावत मार॥
पैदर पैदर कै बरनी भै औ असवार साथ असवार ५५
जौने हौदा ऊदन ताकैं बेंदुल तहाँ पहूँचै जाय॥
हनिकै मारैं असवारे को औ हौदा ते देयँ गिराय ५६
अकसर ऊदन के मारुन में काहू धरा धीर ना जाय॥
पूरन राजा औ जगनाका परिगासमर बरोबरि आय ५७
मलखे जोगा का संगरहै भोगा बेंदुल का असवार॥
बिजिया ठाकुर देबा ठाकुर दूनों खूब करैं तलवार ५८
अपने अपने सब मुर्चन में क्षत्री नेक न मानैं हार॥
मलखे जोगा के मुर्चा में होवै कड़ाबीन की मार ५९
ऊदन भोगा के मुर्चा में कोताखानी चलै कटार॥
बिजिया देबा के मुर्चा में दोऊ हाथ चलै तलवार ६०
को गति बरणै जगनायक की पूरन पटना को सरदार॥
मारु बरोबरि दोऊ करिकै गरुई हाँक देयँ ललकार ६१
बड़ी लड़ाई भै नैनागढ़ नदिया बही रक्त की धार॥
बहीं लहासैं तहँ क्षत्रिनकी पक्षी मानों रयलैं नेवार ६२
जाँघ औ बाहू रजपूतन की तामें गोह सरिस उतरायँ॥
छुरी कटारी मछली मानों ढालैं कछुवा सम दिखरायँ ६३
घोड़ा हीसैं हाथी चिघरैं ठाढ़े ऊंट तहाँ अललायँ॥
बड़ बड़ राजा उमरायन को रणमास्यारकागामिलिखायँ ६४
जोगा ठाकुर के मुर्चापर गरुई हांक दीन मलखान॥
सँभरिकै बैठो अब घोड़ापर कीअब लौटि जाव घरज्वान६५
सुनिकै बातैं मलखाने की तुरतै खैंचि लीन तलवार॥
ऐंचिकै मारा मलखाने को मलखे लीन ढालपर वार ६६

ढाल फाटिगै गैंड़ावाली रणमाँ टूटि गिरी तलवार॥
उतरि कबुतरी ते मलखाने तुरतै बाँधि लीन सरदार ६७
बंधन ह्वैगा जब जोगाका भोगा लीन्ह्यो सांग उठाय॥
ताकिकै मारा बघऊदन का ऊदन लीन्ह्यो वार बचाय ६८
ऊदन बोले फिरि भोगाते ओ बिसिआने बात बनाय॥
वार दूसरी अब तुम मारै ठाकुर तोरि आहिरहिजाय ६९
बातैं सुनिकै बघऊदन की भोगा भालालीन उठाय॥
दूनों अँगुरिन भाला तौलै कालीनाग ऐस मन्नाय ७०
तारा टूटै आसमानते तौ हिरगास भुईं ना जाय॥
छूटिग भाला जो अँगुरिनते कम्मर मचा ठनाका आय ७१
बचा दुलरुवा द्यावलिवाला आला देशराज को लाल॥
ढालकि ओझड़ ऊदनमारा भोगा गिरा तहाँ ततकाल ७२
भोगा बँधिगा रणखेतन में बिजिया बड़ा लड़ैया ज्वान॥
अपने मुर्चा में सो हास्यो बांध्यो मैनपुरी चवहान ७३
पूरनराजा जगनायक का मुर्चापरा बरोबरि आय॥
गुर्ज चलायो पूरन राजा जगना लीन्ह्यो वार बचाय ७४
ऐंड़ा मसक्यो हरनागरके हाथी उपर पहूंचा जाय॥
खैंचिकै मारा तलवारी को हाथी सूंड़गिरी अरराय ७५
गिरामहावत तब मस्तकते हाथी बैठिगयो त्यहि ठायँ॥
बंधन कीन्ह्यो फिरि पूरन को जीतिक डंका दिह्यो बजाय ७६
भंग सिपाही नैनागढ के काहू धराधीर ना जाय॥
बंधन ह्वैगे चारिउ योधा एकते एक बली अधिकाय ७७
जहँना तम्बू रहै आल्हाका तहँना गये सकल सरदार॥
मादिल बन्धन सबको दीन्ह्यो घोड़ी तुरत भये असवार ७८

जहाँ कचहरी नयपाली की माहिल पहुंचिगये त्यहिबार ॥
दीख्यो माहिलको नयपाली राजै बड़ाकीन सतकार ७९
माहिल बोले तब राजाते तुम सुनिलेउ बिसेनेराय ॥
तीनों लड़िका तुम्हरे बँधिगे चौथो पूरन लये बँधाय ८०
सुनवाँ ब्याहीगय आल्हा को तौ रजपूती जाय नशाय ॥
पानी पीहै कोउ क्षत्री ना तुमको सत्य दीन बतलाय ८१
राजा बोले तब माहिलते ठाकुर उरई के सरदार ॥
काह कलङ्की देशराज भे सो तुम कथा कहौ यहिबार ८२
माहिल बोले नयपाली ते सुनिल्यो बचन मोर महराज ॥
चले शिकारै देशराज बन दूसर बच्छराज शिरताज ८३
देवलि बिरमा दूनों बहिनी बेंचनदही जायँ त्यहिराह ॥
मार्ग सँकोचो त्यहि बनजानो अरनालड़ैं तहाँ नरनाह ८४
पकरिकै सींगैं इक भैंसाकी देवलि दीन्ह्यो दूरि हटाय ॥
दूसर बिरमाने पकरा तहँ पाछे सोऊ पछेलति जाय ८५
दूनों अरना मारग हटिगे दूनों जोड़ भये इकठौर ॥
देशराज कह बच्छराज सों दूनों बड़ी बली इकजोर ८६
इनको लैकै घरको चलिये होवैं पूत सुपूते भाय ॥
तिनहिन अहिरिन के पेटे ते चारो भये बनाफरराय ८७
बाप छत्तिरी माता अहिरिनि बेटा कैसे होयँ कुलीन ॥
ब्याह न कीन्ह्यो तुमसुनवाँ का जानोंजातिपांति अकुलीन ८८
पूजन कीन्ह्यो तब माहिल का राजै फेरि कीन सतकार ॥
बड़े पियारे तुम माहिल हौ ठाकुर उरई के सरदार ८९
बहिनि बियाही चंदेले घर जिनको कही रजा परिमाल ॥
किह्योमुलहिजानहिंतिनकोतुम हमसों सत्य कह्यो सबहाल ९०

युक्ति बनावो अब तुमहीं म्वहिं जासों धर्म रहै यहिकाल ॥
सुनवाँ ब्याही फिरि जावैना औ मरिजायँ दुष्ट ततकाल ९१
सुनिकै बातैं नयपाली की माहिल बोले वचन उदार ॥
बाना तजिकै रजपूती का अब धरि देव ढाल तलवार ९२
नाई बारी सँगमें लैकै पायँन परोजाय ततकाल ॥
जो कछु बोलैं सो कछु मान्यो मड़ये तरे लैआवो हाल ९३
घरमें लैकै चारो भाई मारो नृपति आय ततकाल ॥
इतना कहिकै माहिल चलिभे आदरकीन बहुत नरपाल ९४
भुजा उखारी गईं अभई की माहिल हृदय परी सो शाल ॥
लड़ै भिड़ैकी सरबरि नाहीं निन्दाकरत फिरैं सबकाल ९५
जैसे राजै भानुप्रतापी मार्‍यो रहै तपस्वी ज्वान ॥
यह है गाथा बालकाण्ड में तुलसी राम समर मैदान ९६
तैसे ऊदनके मरिबेमें माहिल चुगुल बने सबद्वार ॥
धर्मसे निन्दा नहिं माहिलकी यामें दिहे शास्त्र अधिकार ९७
औरो गाथा कछु पुराणकी यामें आनि घटावों ज्वान ॥
पै नहिं समया यहि समया में ऐसी परीं ब्यवस्था आन ९८
माहिल पहुंचे फिरि तम्बुनमें राजै नेगी लीन बुलाय ॥
जहँना तम्बू रहै आल्हा का राजा तहाँ पहूँचे जाय ९९
बड़े प्यार सों राजै लीन्ह्यो आल्हा बैठिगये हर्षाय ॥
मलखे बोले तब राजाते आपन हालदेउ बतलाय १००
कौने मतलब को आयो है सो हम करैं चारिहू भाय ॥
सुनिकै बातैं मलखाने की राजा बोले बचन बनाय १०१
हँसी खुशी सों सुनवाँ ब्याहैं हमरे मनै गई यह आय ॥
सिरदन घर में कन्या ब्याही स्यारन हँसीकिये का भाय १०२

धन्य बखानौं द्वउ रानिनको जिनके पूत सुपूते चार॥
धन्य बखानौं मलखाने को माड़ो भलीकीन तलवार १०३
भुजा उखार्‌यो ज्यहि अभईके आल्हाकेर लहुरवा भाय॥
तीनों चलिये अब मड़ये को भौंरी तुरत देयँ करवाय १०४
इतना सुनिकै मलखे बोले फौजन डंका देउ बजाय॥
कह नयपाली सुन मलखाने इकलो दूलह देउ पठाय १०५
कह मलखाने सुन नैपाली तुमसों सत्य देयँ बतलाय॥
किरिया करलो श्रीगंगाकी ब्याहन तबै तुम्हारे जायँ १०६
यह मनभाई नयपाली के किरिया तुरत कीन सरदार॥
तीनों लड़िका मलखे छोंड़े आपौ फाँदिभये असवार १०७
देबा ऊदन मन्नागूजर सय्यद बनरस का सरदार॥
सजि जगनायक मोहबेवाला रूपन बारी भयो तयार १०८
आल्हा बैठे फिरि पलकी में मनमें श्रीगणेशपद ध्याय॥
सबियाँ चलिभे नैनागढ़ को महलन तुरत पहूंचे जाय १०९
खम्भा गड़िगा तहँ चन्दन का मालिन माड़ो कीन तयार॥
सखियाँ आईं नयपाली घर गावन लगीं मंगलाचार ११०
चढ़ो चढ़उवा जब सुनवाँ का फाटक बन्द लीन करवाय॥
क्षत्री आये जे लड़ने को ते कोठेपर रखे छिपाय १११
भो गठिबन्धन जब आल्हा को थाल्हा गड़ा शूरमन क्यार॥
प्रथमै पूज्यो श्रीगणेश को गौरीनन्दन शम्भु कुमार ११२
भाँवरि पहिली के परतैखन पण्डित कीन बेद उच्चार॥
जोगा मार्‌यो तलवारी को ऊदन लीन ढालपर वार ११३
भाँवरि दूसरिकै परतैखन भोगा हनी तुरत तलवार॥
मलखे ठाढ़े रहैं दहिने पर सो लै लई ढालपर वार ११४

भाँवरि तीसरि के परतैखन बिजिया मारी गुर्ज उठाय॥
वार बचाई त्यहि देवाने राजा रंगमहल को जाय ११५
भाँवरि चौथी के परतैखन राजा जादू दीन चलाय॥
जवाँ वन्द भे सव कुँवरन के सवकी नजरबन्द ह्वैजाय ११६
सुनवाँ सोची अपने मनमाँ बैरी ह्वैगा वाप हमार॥
बीर महम्मद की पुरिया को सुनवाँछोंड़िदीनत्यहिवार११७
भई लड़ाई तहँ जादुनकी सातों भाँवरि लई कराय॥
आल्हा वाली फिरि पलकी में तुरतै सुनवाँ लीन बिठाय ११८

सवैया ॥

भूप दुवार चली तलवार अपार बही तहँ शोणित धारा।
बीर वली मलखान सुजान तहाँ बहु क्षत्रिनको हनिडारा॥
पूतजुझार महाहुशियार लड़ै तहँ भीषम केर कुमारा।
कौनकहै बघऊदनको रिपुसूदनसों ललिते त्यहि बारा११६

सुन्दरवन को अरिनन्दन जो सोऊ आयगयो त्यहि द्वार॥
आठकोसलों चलै सिरोही नदिया वही रक्त की धार १२०
आगे डोलाहै सुनवाँ को पाछे होय भड़ाभड़ मार॥
ऊदनमलखे की मारुन में जूझे बड़े बड़े सरदार १२१
आल्हा बँधुवाभे नैनागढ़ जोगा भोगा बँधे मलखान॥
कूच करायो बघऊदन ने लश्कर प्रागराज नियरान१२२
ऊदन बोले तव सुनवाँ ते भौजी मानों कही हमार॥
दादा बांधेगे नैनागढ़ कैसी युक्तिकरी यहिवार १२३
सुनिकै बातैं बघऊदन की सुनवाँ युक्ति कही समुझाय॥
सम्मत करिकै दूनों चलिभे नैनागढ़ै पहूँचे आय १२४
पुहपा मालिनि के घर बैठे सुनवाँ सहित लहुरवा भाय॥

सुनवाँ पूछ्यो जों मालिनि ते मालिनिखबरिदीनबतलाय१२५
रूप गुजरियाको सुनवाँ करि पहुंची नाह निकट सो जाय ॥
रूप देखिकै त्यहि गूजरिको मोहित भयो बनाफरराय १२६
जस बतलान्यो ये गूजरिसों गूजरि तैस दीन समुझाय ॥
मुंदरी दीन्ह्यो फिरि गूजरिको मालिनिघरै पहूंची आय १२७
सब समुझायो फिरि ऊदन को सांचे हाल दीन बतलाय ॥
घोड़ करिलिया औ रसबेंदुल लैकै गयो लहुरवाभाय १२८
खबरि पायकै बयपारी के द्वारे नृपति पहूंचा आय ॥
बनो कबुलिहा बघऊदन है सांचो आगा परै दिखाय १२९
राजा पूछ्यो बयपारी सों सांची कीमत देव बताय ॥
ऊदन बोल्यो नयपाली सों चढ़िकैदेखिलेयकोउआय १३०
चाल देखिल्यो इन घोड़नकी पाछे कीमत देयँ बताय ॥
सुनिकै बातैं ब्योपारी की राजै हुकुमदीन फर्माय १३१
जावैं क्षत्री जो घोड़न ढिग ताको टापन देयँ हटाय ॥
मुखसों काटैं ऊपर उलरैं कोउरजपूतपास ना जाय १३२
देखि तमाशा यहु महराजा तुरतै आल्हा लीन बुलाय ॥
घोड़ा फेरो तुम फाटक में इनकीचाल देव दिखराय १३३
किह्यो इशारा बघऊदन ने घोड़ा चढ़े बनाफरराय ॥
बैठ बेंदुलापर बघऊदन आपननामदीन बतलाय १३४
बाग उठायो द्वउ घोड़न की फाटक पार पहूंचे आय ॥
मालिनि घरते सुनवाँ चलिभै तुरतै पलकी लीन मँगाय१३५
तीनों पहुंचे फिरि लश्कर में डंका बजन लाग घहराय ॥
चलि भैं फौजैं मलखाने की पहुंचीं प्रागराज में आय १३६
जितने क्षत्री रहैं लश्कर में सवियाँ करनगये असनान ॥

हवन करिकै तिरबेनीको दीन्ह्योद्विजनदानसवञ्चान१३७
वृक्ष अक्षयबटको पूजन करि पहुंचे भरद्वाज अस्थान॥
बेनीमाधो के दर्शन करि दीन्ह्योद्विजनसूवरणदान १३८
हाथी घोड़ा रथ कपड़ा औ गहना दीन द्विजन बुलवाय॥
भये अयाचक सब याचकगण जय जयरहे बनाफर राय १३९
बैठिकै गंगा के तट ऊपर क्षत्रिन हवनकीन हरषाय॥
स्वाहा स्वाहा बहुद्विज बोलैं कहुँ२स्वधास्वधागाञ्चाय १४०
स्वधा औ स्वाहा ते छुट्टीकरि विप्रन भोजन दीन कराय॥
भोजन करिकै सब द्विज तहँते अपने घरनगये सुखपाय १४१
कूच करायो फिरि मलखाने डंका बजत फौज में जाय॥
देवलि बिरमा द्वारे ठाढ़ीं देखैं बाट बनाफरराय १४२
राह निहारैं नित पुत्रन की कबधों ऐहैं पुत्र हमार॥
जौन मुसाफिर आवत देखैं ताको करैं बड़ा सतकार १४३
हाल न पावैं जब पुत्रन को तब फिरि जावैं घरै निराश॥
रानी मल्हना महलन ऊपर नितप्रतिकरैंमिलनकीआश१४४
तबलों रुपना आगे आयो पाछे फौज पहूंची आय॥
बड़ी खुशाली भै मोहबे माँ दौरे सबै नारिनर धाय १४५
मल्हना देवलि बिरमातीनों पलकी पास पहूँचीं जाय॥
मनियादेवन को पलकी गै पूजनकीन बहुरिया आय १४६
आल्हा मलखे देबा ऊदन अक्षत चन्दन फूल चढ़ाय॥
मनियादेवन की परिकरमा क्षत्रिन सबन कीन हर्षाय १४७
तहँते आये फिरि द्वारे को तुरतै पण्डित लीन बुलाय॥
आरति लैकै फिरि सोने की तामें चौमुख दिया बराय १४८
चर परछौनी मल्हना कीन्ह्यो भीतर गये बनाफर राय॥

उतरिकै पलकी ते सुनवाँफिरि महलन तुरत पहूंचीजाय १४६
मुहँ दिखलाई रानी मल्हना गलको दीन नौलखाहार॥
पायँ लागिकै सुनवाँ तहँपर करको कंकण दीन उतार १५०
बाजन बाजे चौगिर्दा ते घर घर भये मंगलाचार॥
फिरि परिमालिक की ड्योढ़ीमाँ पहुंचे सबै शूर सरदार १५१
राजा पूंछैं मलखाने ते ओ बिरमा के राजकुमार॥
अमरढोल रहै नयपाली के कैसे किह्यो तहाँपर मार १५२
इतना सुनिकै मलखे बोले तुम सुनिलेउ रजापरिमाल॥
दया तुम्हारी जापर होवै ताकीबिजयहोयसबकाल १५३
हृदय लगायो सब कुँवरन को सबको कीन बड़ा सतकार॥
जीतिकै डंका बाजन लागे नौबति झरै रजा के द्वार १५४
सौ सौ तोपैं दगीं सलामीं चकरन पाई खूब इनाम॥
पिता हमारे किरपाशंकर कीन्हेनिसबैद्विजनकेकाम १५५
माथ नवावों पितु अपने को जिनबल पूरिकीन यह गाथ॥
मोर सहायी जग एकै हैं स्वामी अवधनाथ रघुनाथ १५६
आशिर्वाद देउँ मुंशीसुत जीवो प्रागनरायण भाय॥
सुखसों जीवो तुम दुनियामें दिनदिनहोउधनीअधिकाय१५७
रहै समुन्दर में जबलों जल जबलौं रहैं चन्द औ सूर॥
मालिक ललिते के तबलोंतुम यशसों रहौ सदाभरपूर १५८

इति श्रीलखनऊ निवासि (सी, आई, ई) मुंशी नवलकिशोरात्मज बाबू
प्रयागनारायणजीकी आज्ञानुसार उन्नामप्रदेशान्तर्गत पँड़रीकलां
निवासि मिश्रवंशोद्भवबुधकृपाशङ्करसूनु पं०ललिताप्रसाद कृत
आल्हापाणिग्रहणवर्णनोनाम तृतीयस्तरंगः॥ ३ ॥

नैनागढ़आल्हाबिवाहसम्पूर्ण
इति॥

राघौ गति अद्भुत दर्शानी २ ॥
निशि दिन पापकर्मरत प्राणी सत्यासत्य भुलानी ॥
हत्यालाख धरत शिर ऊपर मोह बेदना ठानी ॥ १ ॥
नाती पूत शोच बश परकर आतमज्ञान हिरानी ॥
अहं अहं डहकत दरवाजे देखत नारि बिरानी ॥ २ ॥
अभिमानी नित देखत आंखिन मरत् जात बहुप्रानी ॥
तबहूं तनक चेत मननाहीं रटै रामगुणखानी ॥ ३ ॥
हटै अकाल सुकाल बढ़ै जग नाशय रोग निशानी ॥
सो नहिं होनहार हम देखत होयँ बहुतनरज्ञानी ॥४॥
अभिमानी लाखन हम देखत ज्ञानी दशहु न जानी ॥
होत प्रपंच साधु सन्तनमें पंचन नाहिं ठिकानी ॥ ५ ॥
तजि दुर्गा अर्चन नर पामर गति मुर्गाकी आनी ॥
लेहँड़िपुत्र पौत्र उपजावत अनशिक्षित अभिमानी॥६॥
तेइ मर्य्याद धर्मकी नाशत भाषत झूंठ गुमानी ॥
मात पिताको मूरख कहिकै देवत कष्ट महानी ॥ ७ ॥
यह कलियुगकी देखि बड़ाई कहत ललित यह भानी ॥
राघौ राम और रघुनन्दन इन बन्दन दुखहानी ॥ ८ ॥
चलो मन जहाँ बसैं रघुराज । चलो मन जहाँ बसैं रघुराज ॥
यहि दुनिया में कौन हमारो हम क्यहिके क्यहिकाज ॥
देखत जो कछु रहत न सो कछु ढहत काल शिरताज ॥ १ ॥
गहत कौनके रहत कौन नर सोइ कहत हम आज ॥
रघुनन्दन जगवन्दन ज्यहि सुत त्यहि शिरपर दुखभ्राज ॥ २ ॥
सेयो यशोदा नन्द कृष्णको सोऊ न आये काज ॥
वैरिनि त्रिपाति सबहिं शिरऊपर देखिलेहु महराज ॥ ३ ॥
जो मन फँसे जगत के अन्दर बन्दरसम बिनलाज ॥
द्वारद्वार नट तिन्है नचावत ललित पेट के काज ॥ ४ ॥

अथ आल्हखण्ड ॥

मलखानका बिवाह अथवा पथरी-गढ़की लड़ाई ॥

सवैया ॥

ध्यावत तोहिं सदा हनुमान यही बरदान मिलै मोहिं स्वामी ।
हाथ लिये धनुबान कृपान मिलैं भगवान जे अन्तरयामी ॥
टारे टरें न कबों उरते तिन राम नमामि नमामि नमामी ।
जान यही ललिते बरदान सुनो हनुमान सदा सुखधामी १

सुमिरन ॥

तुलसी हुलसी अब दुनिया में झुलसी सकल नरनकीकावि ॥
घर घर पोथी रामायण की दर दर फिरैं बगल में दावि १
गिरिगिरि चन्दन नहिं होवैंकहुँ बन बन नहीं रहैं गजराज ॥
नारि प्रतिव्रत नहिं घर घर हैं थल थल नहीं होयँ कविराज २
[illegible] होवें नहिं दुनिया में तव गुण जावैं सबै हिराय ॥

भोजन खावै हरिको ध्यावै साँचो ग्राहक दीन बताय ३
नाहक जग में कोउ पछतावै भावै नहीं दूसरो काज॥
देही आपनि गलि गलि जावै आवै फेरि जगत में लाज ४
छूटि सुमिरनी गै ह्याँते अब शाका सुनो शूरमन क्यार॥
ब्याह बखानों मलखाने का लड़िहैं बड़े बड़े सरदार ५

अथ कथाप्रसंग ॥

यहु गजराजा पथरीगढ़ को ज्यहिको भरी लाग दरबार॥
बैठक बैठे सब क्षत्री हैं एकते एक शूर सरदार १
सुवा पहाड़ी कहुँ पिंजरन में महलन नाचिरहे कहुँ मोर॥
बैठि कबूतर कहुँ घुटकत हैं तीतर बोलिरहे कहुँ जोर २
घोड़ अगिनिया त्यहि राजाके साजा सबै विधाता काज॥
है गजमोतिनि त्यहिकी बेटी विद्या रूप शील शिरताज ३
सो नित खेलै सँग सखियन में मेलै सदा गले में हाथ॥
सेमा भगतिनि की चेली है गुटवा ख्यलै सखिन के साथ ४
खेलत खेलत कछु सखियों ने कीन्ही तहाँ ब्याह की बात॥
कोउकोउ सखियाँ तहँ ब्याहीथीं जानैं भलो श्वशुरपुर नात ५
ब्याही बोलैं अनब्याहिन सों सखियो सुनो हमारी बात॥
सुरपुर हरपुर हरिपुर नाहीं जो सुख मिलै श्वशुरपुरतात ६
सुनि सुनि बातैं ये ब्याहिनकी तहँ अनब्यहीमनैं अकुलायँ॥
फिरिफिरि पूछैं तिन सखियनसों कासुखश्वशुरपुरैअधिकाय ७
बनियाँ घनियाँ जे बालम की छतियाँ छुवैं और अठिलायँ॥
रनियाँ केरी सब बनियाँ को सखियाँ कहैं और हरपायँ ८
सुरपुर हरपुर हरिपुर नाहीं जो सुखश्वशुरपुरै अधिकाय॥
सुनि सुनि बातें ये ब्याहिनकी मनमाँ गई बात ये छाय ९

सब अनब्याही ब्याकुल ह्वैकै घरका चलीं मनैं पछिनाय ॥
गै गजमोतिनि निज महलनमें सोई समय रातिको पाय १०
जागे रोवन् शय्या लागी माता लीन्ह्यो हृदय लगाय ॥
काहे रोवत तुम बेटीहौ हमको हालदेउ बतलाय ११
दीख्यों सुपना मैं माता है ब्याहे लिये कोऊ घरजाय ॥
मैं सुधि कीन्ह्यों तहँ बप्पाकी माता रोय उठिउँ अकुलाय १२
सुनिकै बातैं ये बेटी की चंपा गोद लीन बैठाय ॥
चूम्यो चाट्यो गले लगायो बातनदिह्यो ताहि बहलाय १३
अवसर पायो जब रानी ने राजा पास पहूंची जाय ॥
बेटी लायक है ब्याहन के टीका देउ आप पठवाय १४
समया आयो अब कलियुगका औ युगधर्म रहा दर्शाय ॥
बातैं सुनिकै ये रानी की राजा नेगी लीन बुलाय १५
सूरज बेटा को बुलवायो तासों हाल कह्यो समुझाय ॥
दिल्ली कनउज चहु तहँ जायो जायो जहँ न चँदेलोराय १६
तीन लाख को टीका लैकै सूरज कूच दीन करवाय ॥
आठ रोज की मैंजलि करिकै पहुँच्यो जहाँ पिथौरीराय १७
को गति बरणै तहँ दिल्ली कै जहँपर रहै कौरवनराज ॥
जहँपर गर्जत दुर्योधनरहै जहँपर अये कृष्णमहराज १८
भीषम ऐसे जहँ योधा थे द्रोणाचार्य ऐस द्विजराज ॥
तहँपर गरजे शिरीकृष्णजी जयजयनमोनमो व्रजराज १९
जब सुधि आवत है दिल्ली कै तब मन आय जात व्रजराज ॥
सदा पियारे हैं बिप्रन के अबहूं देत खानको नाज २०
तहँपर पहुँचे सूरज ठाकुर चिट्ठी तुरत दीन पकराय ॥
आँक आँक सब पृथ्वी बांचा जो कुछ लिखा बिसेनेराय २१

ब्याह बिसेने के करिबे ना टीका तुरत दीन लौटाय॥
सूरज चलिभे तहँ दिल्ली ते कनउज फेरि पहूंचे आय २२
हैं कनवजिया जहँ बाम्हन बहु बड़ बड़ महल परैं दिखराय॥
वेद पुराणन की चर्चा तहँ घरघरअधिक२ अधिकाय २३
सूरज पहुँचे जब ड्योढ़ी में बोला द्वारपाल शिरनाय॥
कौने राजाके लड़िकाहौ राजै खबरि देयँ पहुँचाय २४
बातैं सुनिकै द्वारपाल की सूरज हाल दीन समुझाय॥
द्वारपाल सुनि गा राजा ढिग तुरतै खबरि सुनाई जाय २५
सुनिकै बातैं दरबानी की राजै हुकुम दीन फरमाय॥
द्वारपाल सूरज ढिग आयो लैकै सभा पहूँचा जाय २६
चिट्ठी दीन्ह्यो तहँ सूरज ने जयचँद पढ़ा बहुत मनलाय॥
क्यहिका लड़िका घरभारू है पथरीगढ़ै बियाहन जाय २७
घोड़ अगिनिया जिनकेघरमाँ ज्यहिके मारे फौज बिलाय॥
तुरतै टीकाको लौटारयो यहु महराज कनौजीराय २८
चलिभे सूरज तहँ कनउज ते उरई फेरि पहूंचे आय॥
पांचकोस मोहबे के आगे मारै हिरन उदयसिंहराय २९
सूरज ऊदन यकमिल ह्वैगे दूनों कीन्ह्यो रामजुहार॥
ऊदन पूछैं तैहैं सूरज ते ठाकुर पथरी के सरदार ३०
टीको ऐसो का लै गमन्यो नेगी संग तुम्हारे चार॥
सूरज बोलो तब ऊदन ते ठाकुर बेंदुलके असवार ३१
निकरे हनवन हम गङ्गा के साँचे हाल दीन बतलाय॥
काह शिकारै तुम आयो है अकसर बनै उदयसिंहराय ३२
सुनिकै बातैं ये सूरज की बोला तुरत बनाफरराय॥
किह्यो बहाना तुम सूरज है नेगी संग लियेहौ भाय ३३

हनवन केरी यह सामा ना झूंठी बात रह्यो बतलाय ॥
सूरज बोले फिरि ऊदन ते सांची सुनो बनाफरराय ३४
टीका लाये हम बहिनी का दिल्ली कनउज अये मँझाय ॥
टीका लीन्ह्यो क्यहु क्षत्री ना जावें लौटि बनाफरराय ३५
इतना सुनिकै ऊदन बोले हमपर शारद भई सहाय ॥
दादा क्वारे मलखाने हैं टीका लिहे चलो तुम भाय ३६
सुफल तुम्हारी मेहनत होई हमरो काज सिद्ध ह्वै जाय ॥
सुनिकै बातैं ये ऊदन की सूरज बोला बचन रिसाय ३७
नहीं आज्ञा महराजा की टीका नग्र मोहोबे जाय ॥
जाति बनाफर की हीनी है कीरति रही जगत में छाय ३८
सुनिकै बातैं ये सूरज की बोला उदयसिंह सरदार ॥
नीके जैहो तौ लैजैहौं नहिं यह देखिलेउ तलवार ३९
सुनिकै बातैं ये ऊदन की नाई बारी उठे डेराय ॥
ते समुझावैं भल सूरजको मानो कही बिसेनेराय ४०
रारि न करियो तुम ऊदनते नामी देशराज को लाल ॥
पाँच कोस मोहबा है बाकी जहँ पर बसैं रजापरिमाल ४१
सुनि सुनि बातैं सबनेगिनकी सूरज मनै गयो तसआय ॥
नेगिन लैकै सूरज ऊदन पहुँचे जहाँ चँदेलोराय ४२
सजी कचहरी परिमालिक की भारी लाग राज दरबार ॥
ब्रह्मा आल्हा मलखे देवा सय्यद बनरसका सरदार ४३
देखिकै सूरजको परिमालिक बोले मधुर वचन मुसुकाय ॥
कहँते आयो औ कहँ जैहौ आपन हाल देउ बतलाय ४४
सुनिकै बातैं परिमालिककी सूरज यथातथ्य गे गाय ॥
हाल जानिकै सब चंदेलो बोला सुनो बनाफरराय ४५

टीका आयो पथरीगढ़का ताको तुरत देउ लौटाय ॥
ब्याह बिसेने घर करिबे ना मानों कही उदयसिंहराय ४६
घोड़ अगिनियाँ तिनके घरमाँ ज्याहिके मारे फौज बिलाय ॥
सुनिकै बातैं परिमालिक की बोले तुरत बनाफरराय ४७
दतिया मारि उरेछोमारो पहुँचे सेतुबंध लों जाय ॥
पेशावर मुल्तान कमायूं बूंदी थहर थहर थहराय ४८
औ मेवात लीन लुटवाय ॥ अटक पारलों झंडा गड़िगो
गर्व न राखा क्यहु क्षत्री का मानो कही चँदेलोराय ४६
गिनती किनमें बिसियानन की ठाढ़े तखत देउँ उलटाय ॥
हीनी मुखसों तुम भाषतहौ मेरो रजपूती धर्म नशाय ५०
मलखे ब्याहनको रैहैं ना यहु दिन कहिबेको रहिजाय ॥
टीका लौटी ना मोहबे ते राजा सत्य दीन बतलाय ५१
बोला चँदेला तब देबा ते अब तुम शकुन बिचारो भाय ॥
कैसी गुजरी पथरीगढ़ में सो सब हाल देउ बतलाय ५२
सुनिकै बातैं परिमालिककी देबा पोथी लीन उठाय ॥
शकुन सोचिकै देबा बोला साँची कहौं चँदेलोराय ५३
जीति तुम्हारी है पथरीगढ़ काहू बार न बाँको जाय ॥
आजु कि साइति भल नीकीहै टीका अबै देउ चढ़वाय ५४
सुनिकै बातैं ये देबाकी महलन खबरिदीन पहुँचाय ॥
गा हरिकारा दशहरिपुरवा द्यावलि बिरमा लवालिवाय ५५
आँगन लीपागा गोबर सों मोतिन चौक दीन पुरवाय ॥
चूड़ामणि पण्डित फिरिआये तुरतै सूरज लये बुलाय ५६
चारो नेगी सँग में लैकै सूरज महल पहूंचे आय ॥
चरण लागिकै मलखाने के बीरा मुखमें दीन खवाय ५७

सखियाँ गावन मंगल लागीं नेगिन झगर मचावा आय ॥
सोने चाँदी के गहना को सूरज सबै दीन पहिराय ५८
ऊदन पहुँचे निज कमरामें डिब्बा लाये तुरत उठाय ॥
खुब पहिरावा सब नेगिन को चारों खुशीभये अधिकाय ५६
बचा बचावा जो गहना रहै नेगिन स्वऊ दीन पकराय ॥
औरो नेगी जो पथरीगढ़ तिनको यहै दियो पहिराय ६०
ऊदन बोले फिरि नेगिनसे तुम गजराज दियो समुझाय ॥
माघ शुक्ल तेरसि की साइति होई ब्याह तहांपर आय ६१
हाथ जोरिकै सूरज बोले आज्ञा देउ चँदेलोराय ॥
हम चलिजावैं पथरीगढ़ को राजै खबरि सुनावैं जाय ६२
बातैं सुनिकै ये सूरज की राजै हुकुम दीन फर्माय ॥
राम जुहार तुरत फिरिकरिकै सूरज कूच दीन करवाय ६३
सौ सौ तोपैं दगीं सलामी पठवन चले लहुरवाभाय ॥
बिदा माँगिकै फिरि ऊदनसों अपने नेगी संगलिवाय ६४
सूरज चलिभे पथरीगढ़को माहिल कथा कहौं अब गाय ॥
कहुँ सुधिपाई माहिल ठाकुर टीका चढ़ा मोहोबे जाय ६५
लिल्लीघोड़ी को मँगवायो तापर तुरत भयो असवार ॥
सूरजतेनी आगे पहुँचा ठाकुर उरई का सरदार ६६
सजी कचहरी गजराजा की भारी लाग राज दरबार ॥
झारि बिसेने सब बैठे हैं टिहुननधरे नाँगि तलवार ६७
माहिल पहुँचे त्यहि समया में राजै कीन्ह्यो राम जुहार ॥
बड़ी खातिरी राजै कीन्ह्यो बैठा उरई का सरदार ६८
राजा बोले फिरि माहिलते नीके रहे खूब तुम भाय ॥
माहिल बोले फिरि राजाते भइ अनहोनी कहीनाजाय ६६

बेटी तुम्हरी गजमोतिनि का। टीका चढ़ा मोहोबे जाय॥
जाति बनाफर की हीनी है जानों भलीभांति तुमभाय ७०
पानी पीहै को घर तुम्हरे आपन धर्म गँवैहै आय॥
अबै न बिगरा कछु राजाहै साँचे हाल दीन बतलाय ७१
सुनिकै बातैं ये माहिल की राजा गयो सनाकाखाय॥
तबलौं सूरज अटा कचहरी राजै शीश नवायो आय ७२
राजा बोल्यो फिरि सूरजते टीका कहाँ चढ़ायो जाय॥
दोउ कर जोरे सूरज बोले दादा सत्य देउँ बतलाय ७३
दिल्लीकनउज हम फिरि आयन टीका क्यहु न लीन महिपाल॥
मोहबे उरई के अन्दर में मिलिगे देशराज के लाल ७४
लै बरजोरी गे मोहबे को टीका चढ़ा वीर मलखान॥
जो कछु रारिकरत मोहबे में दादा जात प्रान पर आन ७५
माघ शुक्ल तेरसिको अइहैं यह सच साइतिका परमान॥
मारब ब्याहब जो कछु कहिहौ उतने धनै भई है हान ७६
जितना टीका में दै आये लाये आपन प्राण बचाय॥
साम दाम अरु दण्ड भेद सों कीन्हे काज तहांपर जाय ७७
सुनिकै बातैं ये सूरज की राजै पास लीन बैठाय॥
फिरि शिरसूंघ्यो गजराजाने लीन्ह्यो तुरतै गले लगाय ७८
राजा बोल्यो फिरि माहिल ते ठाकुर उरई के सरदार॥
ब्याहन अइहैं जब हमरे घर तबहीं चली तुरत तलवार ७९
ब्याह न होई गजमोतिनि का तुमते साँच दीन बतलाय॥
बिदा मांगिकै फिरि राजासों माहिल चले बड़ा सुखपाय ८०
माघ महीना आवन लाग्यो धावन लगे मोहोबे दूत॥
लिखिलिखिचिट्ठीपरिमालिकने न्यवतन हेत पठावा दूत ८१

दिल्ली कनउज औ नैनागढ़ उरई न्यवत दीन पठवाय ॥
सिरउज पनउज औ बौरी में न्यवता भेजा चँदेलोराय ८२
पायके चिट्ठी परिमालिकके इनको मानि बड़ो व्यवहार ॥
नगर मोहोबे के जानेको राजा होन लागि तय्यार ८३
बाजे डंका अहतंका के राजन कूचदीन करवाय ॥
तेरस केरो शुभ मुहूर्त्त पद मोहबे गये सबै नृप आय ८४
तम्बू गाड़िगे महराजन के खातिर कीन उदयसिंहराय ॥
पढ़े पढ़ाये सब क्षत्री रहैं अपने धर्म कर्म समुदाय ८५
उचित औ अनुचितके ज्ञातारहैं जानैं राजनीति सब भाय ॥
देश आरिया यह बाजत है आरय कहे बसिंदा जायँ ८६
आरय ऊदन त्यहि समया में सबको खुशी कीन अधिकाय ॥
तुरत नगड़ची को बुलवायो तासों कह्यो हाल समुझाय ८७
बाजे डंका अब मोहबे माँ सबियाँ फौज होय तय्यार ॥
सुनिकै बातैं ये ऊदन की डंका बजनलाग त्यहिबार ८८
मलखे आये फिरि महलन में होवन लाग तेल व्यवहार ॥
एक कुमारी तेल चढ़ावै गावैं सबै मंगलाचार ८९
माय मन्तरा भे दुसरे दिन नहछुर समयगयो फिरिआय ॥
लैकै महाउर नाइनि आई नहछुर करन लागि हर्षाय ९०
जो कछु माँग्यो ज्यहि नेगी ने मल्हना दीन ताहिसमुझाय ॥
मनके भाय जब सब पाये नेगिन खुशी कहीनाजाय ९१
कुँवाँ बियाहन के समया में मलखे चढ़ पालकी धाय ॥
बिटिया मल्हना की चन्द्रावलि राई नोन उतारति जाय ९२
जायकै पहुंचे फिरि कुँवनापर बिरमा पैर दीन लटकाय ॥
भाँवरि घूम्यो मलखाने ने लीन्ह्यो माता पैर उठाय ९३

बहू लय आवों त्वरि सेवा को माता बाग दियो लगवाय॥
ऐसा कहिकै मलखाने ने भाँवरि घुमी सातहू धाय ९४
पाँय लागिकै फिरि मल्हनाके धावलि चरणनशीशनवाय॥
चरणन लाग्यो जब बिरमा के मातालीन्ह्यो हृदयलगाय ९५
पंजा फेर्यो फिरि मल्हना ने तुम्हरो बार न बाँका जाय॥
बैठि पालकी मलखाने गे मनमें श्रीगणेशकोध्याय ९६
बाजन बाजे फिरि मोहबे माँ हाहाकारी शब्द सुनाय॥
हाथी सजिगा पचशब्दा तहँ आल्हा चढ़े रामकोध्याय ९७
हरनागर की फिरि पीठीमाँ ब्रह्मा फाँदि भये असवार॥
वीरशाह बौरी का राजा रूपन सिरउज का सरदार ९८
देवकुँवरि रानी के बालक पनउज केरे मदन गुपाल॥
ये सब क्षत्री चढ़ि घोड़नपर औरौ सजे बहुत नरपाल ९९
घोड़ मनोहर देवा बैठे सय्यद सिर्गापर असवार॥
सजा बेंदुला का चढ़वैया जो दिनरात करै तलवार १००
घोड़ी कबुतरी मलखाने की कोतल तुरत भई तय्यार॥
लक्खा गर्रा पँचकल्यानी हरियलमुश्कीघोड़अपार १०१
सुर्खा सब्जा सिर्गा सुरँगा ताजी तुरकी रंग बिरंग॥
कच्छी मच्छी काबुल वाले तिनकीकसीगईफिरि तंग १०२
डारि रकावै गंगा यमुनी मुखमें दीन लगाम लगाय॥
परीं हयकलैं सब घोड़न के मेंहदी बूटा रहे बनाय १०३
नवल बछेड़ा सब साजेगे एकते एक रूप अधिकाय॥
हथी महावत हाथी लैकै तिनपर हौदादये धराय १०४
हाथी सजिगे जब मोहबे में तोपै सबै भईं तय्यार॥
पहिल नगाड़ामें जिननन्दी दूसरे फाँदिभये असवार १०५

तिमर नगाड़ाके बाजत खन क्षत्रिन कूच दीन करवाय ॥
बाजे डंका अहतंका के बंका चले शूर समुदाय १०६
मारु मारुकै मौहरि बाजै बाजै हाव हाव करनाल ॥
खर खर खर खर कै रथ दौरे रब्बाचले पवनकी चाल १०७
लक्ष पताका यकमिल ह्वैगे नभमाँ गई लालरी छाय ॥
धूरि उड़ानी हय टापन सों बाबा सूरज गये छिपाय १०८
व्याकुल ह्वैकै पक्षी भागे जंगल जीव गये थर्राय ॥
चलीं बरातैं मलखाने की हमरे बूत कही ना जाय १०९
सात रोजकी मैंजलि करिकै पहुँचे तुरत धुरेपर आय ॥
तम्बू गड़िगे महराजन के झंडा सरग फरहरा खायँ ११०
सजिगा तम्बू तहँ आल्हा का भारी लाग खूब दरबार ॥
चूड़ामणि पण्डित तहँ आयो साइति लाग्योकरनबिचार १११
साइति नीकी अब आई है ऐपनवारी देउ पठाय ॥
हाथ जोरिकै रूपन बोला नेगी कौन तहाँ को जाय ११२
हम नहिं जैहैं पथरी गढ़को सांची सुनो बनाफरराय ॥
बातैं सुनिकै ये रूपन की बोलातुरत लहुरवा भाय ११३
घोड़ी कबुतरी दादावाली रूपन चढ़ो ताहिपर जाय ॥
बानाराखे रजपूती का कैसे बने जनाना भाय ११४

सवैया ॥

प्राण न प्यार करैं रणशूर कहैं ललिते हम सत्य बिचारी ।
सोनकोधारि झमा झमकारि सो जातसदा पियसेजमें नारी ॥
पाय निशा चमकै तहँ नारि सो शारिकिये चमकै तलवारी ।
शारिकिये यश शूरन होत सो कूरनकी अपकीरति भारी ११५

सुनिकै बातैं ये ऊदनकी रूपन बहुतगयो शर्माय॥
घोड़ी कबुतरी पर चढ़ि बैठ्यो ऐपनवारी लीन उठाय ११६
माथ नायकै सब क्षत्रिन को मनियादेव हृदय सों ध्याय॥
चारिघरी के फिरि अरसा माँ फाटक उपर पहूँचा आय ११७
हुकुम दर्रै हुकुम दर्रै साहेबजादे बात बनाय॥
कहँते आये औ कहँ जैहै आपन काम देय बतलाय ११८
सुनिकै बातैं दरवानी की बोला घोड़ी का असवार॥
नगर मोहोबा जगमें जाहिर नामी मोहबे के सरदार ११६
ब्याहन मलखे को आयन है मानो साची कही हमार॥
ऐपनवारी बारी लायो बोलो ठाढ़ो राज दुवार १२०
नेग आपने को झगरत है भारी नेग चहै कछुद्वार॥
नेग आपनो का तुमचाहौ बोलो घोड़ी के असवार १२१
घोड़ी जोड़ी लैकै जाई डांड़े परे तासु भर्त्तार॥
बोलु गवाँरे अब ऐसे ना द्वारे चहौं चलै तलवार १२२
सुनिकै बातैं ये रूपन की चकृत द्वारपाल भा द्वार॥
फिरि २ देखै दिशि रूपन के फिरि २ लावै शोच बिचार१२३
ऐसो बारी हम देखा ना जैसो आयो आज दुवार॥
सोचि समुझिकै फिरिसो बोला बोलो घोड़े के असवार १२४
गरमी तुम्हरी अब कछु उतरी बोलो नेग काह तुम द्वार॥
चार घरी भर चलै सिरोही द्वारे बहै रक्त की धार १२५
नेग हमारो यह साँचा है याँचा द्वार तुम्हारे आय॥
जौन शूरमा हो पथरीगढ़ हमरो नेग देय चुकवाय १२६
ऐसे वैसे हम बारी ना मारी सदा शूर दश पांच॥
खबरि सुनावै तू राजा का तेरी निकरिपरै कस कांच १२७

सुनिकै बातैं ये रूपन की पहुँचा द्वारपाल दरबार॥
झारि बिसेने सब बैठे हैं एकते एक शूर सरदार १२८
हाथ जोरि औ बिनती करिकै बोला द्वारपाल शिरनाय॥
ऐपनवारी बारी लायो भारी नेग चहै ह्याँ आय १२९
चार पहरभर चलै सिरोही द्वारे बहै रक्तकी धार॥
नेग आपनो बारी बोलै लीन्हे हाथ ढाल तलवार १३०
सुनिकै बातैं द्वारपाल की तब गजराजा उठा रिसाय॥
बाँधिकै मुशकै त्यहि बारी की सूरज मोहिं दिखावै आय १३१
इतना सुनिकै मानसिंह तहँ द्वारे तुरत पहूँचा आय॥
सेल चलायो त्यहि रुपनापर रुपनालीन्ह्यो वारबचाय १३२
मास्यो लट्टुवा फिरि भालाको शिरते चली खूनकी धार॥
ऐँड़ा मसक्यो फिरि घोड़ी के फाटकनिकरिगयोवहिपार१३३
बहुतक दौरे फिरि पाछे सों धरु धरु मारु करैं ललकार॥
घोड़ी कबुतरी मलखेवाली नामी मोहबेका सरदार १३४
त्यहिके बलसों रूपन बारी बहुतन मारि मिलायो छार॥
जायकै पहुँचा फिरि तम्बुन में भारी लाग जहाँ दरबार १३५
दीख्यो ऊदन तहँ रूपन का मानों फगुई का व्यवहार॥
कैसी गुजरी रहै द्वारेपर बोले उदयसिंह सरदार १३६
सुनिकै बातैं ये ऊदन की रूपन यथातथ्य गा गाय॥
खेत छूटिगा दिननायक सों झंडागड़ा निशाको आय१३७
तारागण सब चमकन लागे संतन धुनी दीन परचाय॥
परे आलसी खटिया,तकितकि घों घों करठ रहा घर्राय १३८
करों बन्दना गणनायक की दोनों चरणकमल शिरनाय॥
शीश नवावों पितु अपने को मनमें सदा रामपदध्याय १३९

करों तरंग यहाँ सों पूरण तव पद सुमिरि भवानीकन्त ॥
को यशगावै शिवशंकर को जिनको वेद न पावैं अन्त १४०

इति श्रीलखनऊनिवासि (सी, आई, ई) मुंशीनवलकिशोरात्मज बाबूप्रयागनारायणजीकी आज्ञानुसारउन्नामप्रदेशान्तर्गतपँड़रीकलांनिवासिमिश्रवंशोद्भवबुधकृपाशंकरसूनु पं० ललिताप्रसादकृत मलखानविवाहविषयवर्णनोनामप्रथमस्तरंगः ॥ १ ॥

सवैया ॥

दीननके मन मीनन को मेघवा है बरषत हो नितवारी।
होय भिखारि चहो नरनारि किये प्रभुआश सदा सुखकारी ॥
दीन पुकार बिभीषणकी सुनि आप हस्यो बिपदासबभारी॥
कौन सो दीन रहा शरणागत जो न भयो ललिते हितकारी १

सुमिरन ॥

धन्य बखानों मैं नारद को कीन्ह्यो बड़ा जगत उपकार॥
शिक्षा देते नहिं दुष्टन को तौ कस धरत राम अवतार १
जो रघुनन्दन जग होते ना तौ यहचरित करत को भाय॥
काह बखानत तुलसी कलियुग कैसे जात जगत यशछाय २
कृष्ण न होते जो द्वापर में कैसे सूर जात भवपार॥
कोधों मारत शिशुपालै को कोधों करत कंस सों रार ३
कैसे अर्जुन भारत जीतत कैसे करत युधिष्ठिर राज़॥
कौन सो दुनिया में ऐसो भो जैसे भये कृष्ण महराज ४
छूटि सुमिरनी गै देवनकै शाका सुनो शूरमन क्यार॥
माहिल अइहैं उरई वाले जहँ गजराज केर दरबार ५

अथ कथाप्रसंग ॥

गा जब रूपन बांचि द्वारे पर माहिल आयगयो ततकाल॥

आदर करिकै बड़ माहिल का बोले मधुर बचन नरपाल १
ऐपनवारी बारी लायो कीन्ह्यो कठिन द्वार तलवार ॥
कैसे मरिहैं मोहबे वाले बोलो उरई के सरदार २
सुनिकै बातैं ये राजा की माहिल बोले बचन उदार ॥
ज्यहि की नीकी बेटी ब्यावैं ऊदन गाँसैं तासु दुवार ३
मिर्चवान ब्याहे की पठवो तामें जहर देव मिलवाय ॥
बिना बयारी जूना टूटै औ बिन औषध हटै बलाय ४
बातैं सुनिकै ये माहिल की राजा मनै फूलिगा भाय ॥
जहर घुरायो त्यहि शर्बत माँ सूरज पुत्र दीन पठवाय ५
दिय जनवासा फिरि पथरीगढ़ पाछे शर्बत दीन पठाय ॥
आदर करिकै सूरज ठाकुर चाँदी ग्रावखोर मँगवाय ६
लै अबखोरा भरि त्यहि शर्बत आल्हा पास पहूँचा जाय ॥
जब अबखोरा आल्हा लीन्ह्यों सम्मुख भई छींक तब आय ७
ऊदन बोले तब देबा ते अब तुम शकुन बताओ भाय ॥
देबा बोला तब ऊदन ते साँची सुनो लहुरवा भाय ८
कालरूप यहु शर्बत आयो सबकी मृत्यु गई नगच्याय ॥
धारि जनेऊ तब काने में सूरज उठा तड़ाका भाय ९
ऊदन बोले तब आल्हा ते कुत्तै देवो आप पियाय ॥
जो मरिजावै पी कुत्ता यह तौ सब जहर देव फिकवाय १०
इतना सुनिकै नेगी चलिभे मारन लागि लहुरवा भाय ॥
बड़े दयालू आल्हा बोले ऊदन छाँड़ि देव यहि ठायँ ११
भजा हमारी सम परजा हैं ठाकुर भागि गयो भयखाय ॥
नामी ठाकुर तुम मोहबे के इनपर दयाकरो यहि ठायँ १२
माथै राजा के नौकर हो तुम्हरो करै काह उपकार ॥

संग न देवै जो राजा का तौ हनिमरै काढ़ि तलवार ११
ऐसे दीनन के मारे ते ऊदन जावै धर्म नशाय॥
बड़ी कठिनता नर परिजावै औ परिजाय जानपर आय १४
ललिते दशरथ त्यहिसमयामाँ भाखै दीन धर्म पर आय॥
तैसे ऊदन कहा मानिकै धर्मै राखु दया पर आय १५
दया राखिकै इन नेगिन को सुखसों देव घरै पहुँचाय॥
बड़ी दीनता इन नेगिन की सबकर गये प्राणघट आय १६
ऊदन ऐसे केहरि सम्मुख लरिकै कौन शूरमाँ जाय॥
किह्यो बड़ाई बड़ भाई की आल्हा धर्म दीन समुझाय १७
ऊदन छाँड़्यो तब नेगिन को नेगी घरै पहूंचे आय॥
हाल बतायो गजराजा को सुनते गयो सनाकाखाय १८
लिल्ली घोड़ी पर चढ़ि बैठ्यो माहिल उरई को सरदार॥
जायकै पहुँच्यो कुन्नागढ़माँ जहँपर भरी लाग दर्बार १९
बड़ी खातिरी भै माहिल कै राजा पास लीन बैठाय॥
माहिल बोले वहि समया में ओ महराजा बात बनाय २०
शर्बत खन्दक में डारागा सबकै कुशल भई यहि ठायँ॥
लड़े बनाफर ते जितिहौ ना तुमते सत्य दीन बतलाय २१
अब चलि जाबो यहि समयामें आल्हा निकट तुरत महराज॥
हाथ जोरिकै पाँयन परिकै कीन्ह्योअवशि आपनोकाज२२
बली भयेपर छल करिये ना निर्बल भये छलै सों काज॥
होय हँसौवा कन्या बेहे औ नहिं रहै जगतमें लाज २३
ऐसे समया में महराजा करिये कौन दूसरो साज॥
छली न बाजैं हम दुनियाँ में औ रहिजाय हमारी लाज २४
छल बल राजाका कर्मै है कर्म न होय प्रजनकर भाय॥

धर्म व्यवस्था जहँ परिजावै तहँ सब करैं कहैं हम गाय २५
बातैं सुनिकै ये माहिल की राजा बड़ा कीन सतकार ॥
हमरे नीके के साथी हौ राजा उरई के सरदार २६
माहिलचालिभे फिरितम्बुनको राजै नेगी लीन बुलाय ॥
लैकै तोड़ा दो रुपियन के औ नौ हीरा लीन उठाय २७
चलिभे राजा भुन्नागढ़ सों पथरीगढ़ै पहूंचे आय ॥
वहँपर पहुँचे त्यहि तम्बुन में जहँपर रहैं बनाफरराय २८
जो कछु सामा लैकै गेते आल्है नजरि दीन सो जाय ॥
देखिकै सामा महराजा की हर्षित भये बनाफरराय २९
ऊदन बोले फिरि राजा सों काहे किह्यो परिश्रम आय॥
तब गजराजा बोलन लागो मानो कही लहुरवाभाय ३०
देश हमारे की रीती यह परचब लेयँ प्रथमही आय ॥
जहर पठावैं ते शर्बत में देखे बिना पियैं जे भाय ३१
बिना बुद्धिके ते नर कहिये उनके निकट कबौं ना जायँ ॥
पास परीक्षा तुमको जान्यो लरिकाभागिगयो भयखाय ३२
पै जो पीवन आल्हा शर्बत सूरज तुरत देत बतलाय ॥
कछु छल नाहीं हम कीन्होरहै लरिकाभागिगयो भयखाय ३३
इकलो लड़िका यहिसमयामें माड़ोतरे चलै हर्षाय ॥
भाँवरि होवैं त्यहि लड़िका की हाथ न छुवै लोह कछुभाय ३४
सुनिकै बातैं ये राजा की मलखे कहा बचन मुसुकाय ॥
छल की सानी सब बातैं हैं घातैं सबै परैं दिखलाय ३५
इतना सुनिकै आल्हा बोले मानों कही बिसेनेराय ॥
किरिया करिल्यो श्रीगङ्गा की तौ बर तुरत देयँ पठवाय ३६
गङ्गा कीन्ही गजराजा ने औ यह कहा बचन परमान ॥

छल जो राखैं तुम्हरे सँग में तौ म्वहिं सजादेयँ भगवान ३७
बातैं सुनिकै ये राजा की आल्हा कहा सुनो मलखान॥
बैठि पालकी में अब जावो तुम्हरो भलो करैं भगवान ३८
सुनिकै बातैं ये आल्हा की मलखे सुमिरि दुर्गामाय॥
तुरत पालकी में चढ़ि बैठे महरन पलकी लीन उठाय ३९
चारि घरी के फिरि अर्सा में महलन तुरत पहूँचे आय॥
उतरि पालकी ते मलखाने मड़ये तरे पहूँचे जाय ४०
फाटक बन्दी गजराजा करि क्षत्री सबै लीन बुलवाय॥
रीति बिवाहे की जस चाही तैसे खंभ गड़ा तहँ भाय ४१
गाफिल दीख्यो मलखाने को बन्धन तुरत लीन करवाय॥
बाँधिकै खंभा में मलखे को हरियर बांस लीन कटवाय ४२
मारन लागे मलखाने को जामा टूक टूक ह्वैजाय॥
देखि तमाशा फुलियामालिनि महलन गई तड़ाका धाय ४३
खबरि सुनाई गजमोतिनि को जो कुछ कियो बिसेनेराय॥
सुनि गजमोतिनि तहँ ते धाई कोठे उपर पहूँची आय ४४
नीचे दीख्यो त्यहि दुलहाको कङ्कण रहा हाथ दर्शाय॥
तब गजराजा सों गजमोतिनि बोली आरत बचन सुनाय ४५
कहाँ को बँधुवा यहु आयो है जो अति सहै बाँस के घाय॥
तुरतै छाँड़ो यहि बँधुवा को मोसों बिपतिदीखिनाजाय ४६
तब गजराजा कह बेटी सों खेलो सखिन साथ तुम जाय॥
पैसा मारयो यहि ठाकुर ने तासों सहै बाँसके घाय ४७
मलखे दीख्यो तब कोठे को चारों नैन एक ह्वैजायँ॥
धरिकै झुमक्यो मलखाने ने खंभा उखरि गयो त्यहिठायँ ४८
बन्धन ढीलेभे मलखे के खंभा लीन हाथ तब भाय॥

लाग घुमावन तब खंभा को क्षत्री गये सनाकाखाय ४६
लात मारिकै इक क्षत्री को ताकी लीन ढाल तलवार ॥
मलखे ठाकुर के मारुन में आँगन बही रक्तकी धार ५०
सिंह गरज्जनि मलखे गर्जैं इत उत हनैं बीर दश पांच ॥
जितने कायर रहैं आँगन में देखत ढीलिहोइ तिन कांच ५१
फिरि फिरि मारै औ ललकारै नाहर समरधनी मलखान ॥
लरि लरि गिरिगेकितन्यो क्षत्री भारी लाग तहाँ खरिहान ५२
जैसे भेड़िन भेड़हा पैठै जैसे अहिर बिडारै गाय ॥
तैसे मलखे के मुर्चा में कोउ रजपूत न रोंकै पायँ ५३
सूरज ठाकुर तहँ पाछे सों कम्मरपकरिलीन फिरिआय ॥
बहुतक क्षत्री यकमिल ह्वैकै बन्धन फेरि लीन करवाय ५४
त्यलिया खंदक में गजराजा फिरि मलखे को दीन डराय ॥
हाल पायकै फुलिया मालिनि बेटी पास पहूंची जाय ५५
कही हकीकत सब मलखे की मालिनि बार बार तहँ गाय ॥
सुनिसुनिबातैं तहँ मालिनिकी बेटी बार बार पछिताय ५६
तुम्हैं बिधाता अस चहिये ना जैसी कीन हमारे साथ ॥
बड़े दयालू औ बरदाता हमपर कृपाकरो रघुनाथ ५७
फिरि फिरि बिनवै रघुनन्दनको धरिकै भूमि आपनो माथ ॥
कैसे देखैं हम बालम को मालिनि फेरिकहो यहगाथ५८
सुनिकै बातैं गजमोतिनिकी मालिनिकही कथा समुझाय ॥
दिवस बीतिगा इन बातन में संध्याकाल पहूंचा आय ५९
थार मँगायो तब चाँदी का भोजन सबै लीन धरवाय ॥
चाँदी केरे फिरि लोटा में निर्मल पानी लीन भराय ६०
पाँच पान को बीरा लैकै रेशम रस्सी लीन मँगाय ॥

कीन तयारी त्यहि खंदक को जहँपर परा बनाफरराय ६१
अधी रातिकै फिरि अमला में बेटी अटी तहाँ पर जाय॥
रेशम रस्सी को लटकायो औयह बोली वचन सुनाय ६२
बप्पा हमरे वैरी ह्वैगे तुमका खंदक दीन डराय॥
अब चढ़िआवो गहि रस्सीको बालम बार बार बलिजायँ ६३
सुनिकै बातैं गजमोतिनिकी बोला मोहबेका सरदार॥
घटिहा राजाकी बेटी हौ तुम्हरो कौन करै इतबार ६४
किरिया करिकै म्बहिं लै आयो औ खंदक में दियो डराय॥
बातैं सुनिकै मलखाने की बेटी बोली शीश नवाय ६५
मोहिं शपथ है रघुनन्दन की मानो सत्य वचन तुम नाथ॥
क्वारी रहिहौं मैं दुनिया में की फिरि ब्याहहोय तुमसाथ६६
सुनिकै बातैं गजमोतिनि की मलखे बोले वचन उदार॥
धर्म क्षत्तिरिन को मिटिजावै जो हम बचैं नारि उपकार ६७
चोरी चोरा हम निकरैं ना ओ गजमोतिनि बातबनाय॥
हमको चाहौ जो ठकुराइनि लश्कर खबरिदेउ पहुँचाय ६८
तुमचलिजावोनिजमहलनको बीती अर्द्धरात अब आय॥
इतना सुनिकै बेटी चलिभै महलन सोयगई फिरिजाय ६९
भोर भ्वरहरे मुर्गा बो[illegible] फिरिमालिनिको लीनबुलाय॥
लिखिकै चिट्ठी बघऊदन के मालिनि हाथ दीन पकराय७०
मालिनि बोली गजमोतिनिसों बेटी बार बार बलिजायँ॥
जो सुधिपाई गजराजा कहुँ हमरे जाय प्राणपर आय ७१
बेटी बोली तब फुलिया ते मालिनि सत्य देयँ बतलाय॥
पर उपकारी जो मरिजावै पहुँचै रामधाम में जाय ७२
इक दिन मरनो है आखिरको ताको कौन सोच है माय॥

डोला जाई जब मोहवे को तुमको द्रब्य देउँ अधिकाय ७३
इतना सुनिकै मालिनि चलिभै फाटक उपर पहूँची आय॥
सूरज बेटा गजराजा को द्वारे ठाढ़रहै सो भाय ७४
सो हँसि बोला तहँ मालिनि सों मालिनि कहाँ चली तू धाय॥
मालिनि बोली तहँ सूरज सों बेटा फूल लेन को जायँ ७५
मोहिं पठायो गजमोतिनि है तुम सों सत्य दीन बतलाय॥
सूरज बोला दरवानिन सों याकी लेउ तलाशी भाय ७६
सुनिकै बातैं ये सूरज की नंगाझोरी लीन कराय॥
चिट्ठी खोंसे सो जूरा में ताको पता मिला नहिं भाय७७
मालिनि चलिभै फिरि आगेको फौजन पास पहूँची जाय॥
जहँ जनवासा था आल्हा का मालिनिअटी तहांपर आय ७८
मालिनि पूछ्यो तहँ माहिलसों कहँ पर बैठ उदयसिंहराय॥
माहिल पूछ्यो तहँ मालिनिसों आपन हाल देय बतलाय ७९
नाम हमारो उदयसिंह है आई कौन काज तू धाय॥
सुनिकै बातैं ये माहिल की मालिनि कथागई सबगाय ८०
सुनिकै बातैं सब मालिनिकी माहिल चाबुक लीन उठाय॥
पीटन लाग्यो सो मालिनिको औ यह कह्योबचनसमुझाय८१
जल्दी जावै घर अपने को अब ना कहे कथा अस गाय॥
वड़े जोर सों मालिनि रोई पहुँचा उदयसिंह तब आय ८२
पुछी हकीकति उदयसिंह तब मालिनि कथागई फिरिगाय॥
मोहिं पठायो गजमोतिनिहै चिट्ठी हाथ दीन पकराय ८३
पढ़तै चिट्ठी बघऊदन के आँखन बही आँसुकी धार॥
डाटन लाग्यो फिरि माहिलको का तुम कीनचहौ अपकार ८४
सुनिकै बातैं बघऊदन की बोला उरई का सरदार॥

हाल बिसेने जो सुनि पावैं तौ यहि डरैं जानसों मार ८५
हल्ला करिकै यह बोलतभै तब हम कहा याहि समुझाय ॥
धीरे बोलै जनवासे में नहिं कहुँ सुनी बिसेनोराय ८६
इतना सुनतै मुहँ मटकायो गारी दियो बनाफरराय ॥
ढोलक नारिन औ शूद्रन की तुमसों कथा कहौं मैं गाय ८७
जैसे पीटे ढोलक बाजै नारी दशा स्वई है भाय ॥
गगरीदाना शूद उताना यहहू मिला खूब ह्याँ आय ८८
भला तुम्हारो हम नित चाहैं साँची सुनो बनाफरराय ॥
जैसे मैंने म्वर ब्रह्मा हैं तैसे तुहूँ लहुरवा भाय ८९
घाटि न जानैं हम ब्रह्मा ते कैसी कहौ उदयसिंहराय ॥
इतना सुनिकै ऊदन चलिभे सँगमेंमालिनिलीन लिवाय ९०
जहँ पर बैठे थे आल्हाजी ऊदन तहाँ पहूँचे जाय ॥
कही हकीकति तहँ मालिनिने ऊदन पाती दीन सुनाय ९१
बड़ा शोचभा सुनि आल्हाके मनमें बार बार पछितायँ ॥
हमहीं पठवा था मलखे को तबचलिगयो लहुरवाभाय ९२
दिह्यो अशर्फी बहु मालिनिको कीन्ह्यो बिदा बनाफरराय ॥
मालिनि चलिभै जनवासेते पहुँची फेरि महलमें जाय ९३
कह्योहकीकति गजमोतिनिते ऊदन बोले शीश नवाय ॥
हुकुम जो पावैं हम दादा को तौ मलखे को लवैं छुड़ाय ९४
बातैं सुनिकै ये ऊदन की आल्हा हुकुम दीन फर्माय ॥
हुकुम लगायो फिरि ऊदन ने डङ्का तुरत दीन बजवाय ९५
बाजे डङ्का अहतङ्का के सबियाँ फौज भई तय्यार ॥
हथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे बाँके घोड़न भे असवार ९६
पहिल नगाड़ा में जिनबंदी दुसरे बांधि लीन हथियार ॥

तिसर नगाड़ा के बाजतखन चलिभे सबै शूर सरदार ९७
कूच करायो पथरीगढ़ते झुन्नागढ़ै पहूँचे जाय ॥
गा हरिकारा पथरीगढ़ते राजै खबरि दीन बतलाय ९८
सुनिकै बातैं हरिकारा की सूरज बेटा लीन बुलाय ॥
कौंतामल औ मानसिंह सों राजा कह्यो खूब समुझाय ९९
जितने आये हैं मोहबेते सो बिन घाव एकु ना जायँ ॥
बिदा माँगिकै सो राजा सों डङ्का तुरत दीन बजवाय १००
झीलमबखतरपहिरि सिपाहिन हाथम लीन ढाल तलवार ॥
रणकी मोहरि बाजन लागी रणका होनलाग व्यवहार १०१
कूच करायो झुन्नागढ़ सों पहुँचे समरभूमि मैदान ॥
ढोल औ तुरही बाजन लागीं घूमनलागे लालनिशान १०२
इतसों आगे सूरज ठाकुर उतसों बेंदुलको असवार ॥
सूरज ठाकुर के देखत खन ऊदन गरू दीन ललकार १०३
छलिकै लैकै मलखाने को औ खन्दक में दीन डराय ॥
बिना बिहाये हम जैहैं ना चहुतन धजी२ उड़िजाय १०४
इतना सुनिकै सूरज जरिगे अपनो घोड़ा दीन बढ़ाय ॥
औ ललकारा उदयसिंह को अब तुम खबरदार ह्वैजाय १०५
वार हमारी सों बचिहैना ऊदन मोहबे के सरदार ॥
इतना कहिकै सूरज ठाकुर जल्दी खैंचिलीन तलवार १०६
ऐंचिकै मारा बघऊदन को ऊदन लीन्ह्यो वार बचाय ॥
मानसिंह औ फिरि देबाका परिगा समर बरोबरि आय १०७
सूँढ़ि लपेटा हाथी भिड़िगे अंकुश भिड़े महौतन केर ॥
हौदा हौदा यकमिल ह्वैगे मारैं एक एकु को हेर १०८
गोली ओलासम बर्षन भईं कहूँ कहूँ कड़ाबीनकी मार ॥

तेगा घमकैं वर्दवान के कोतावानी चलैं कटार १०९
बड़ी लड़ाई भै भुन्नागढ़ ऊदन सूरज के मैदान॥
फिरि फिरि मारैं औ ललकारैं नाहर एक एक को ज्वान ११०
मानसिंह जगनिक को राजा देवा मैनपुरी चौहान॥
काँतामल औ वनरसवाला भारी कीन घोर घमसान १११
तीनि सिरोही सूरज मारी ऊदन लीन्ही वार बचाय॥
साँग उठाई बघऊदनने औ सूरजपर दई चलाय ११२
भागा घोड़ा तब सूरजको लश्कर भागि गयो भयखाय॥
जहां कचहरी गजराजाकी सूरज तहां पहूँचा जाय ११३
हाथ जोरि औ पायन परिकै राजै बहुत कहा समुझाय॥
बड़े लड़ैया मोहबे वाले तिनकीमारु सही ना जाय११४
सुनिकै बातैं ये सूरज की सेमा भगतिनि लीन बुलाय॥
कही हकीकति सब सेमाते राजा वार वार समुझाय ११५
सेमाभगातिनि सूरज लैकै तुरतै कूचदीन करवाय॥
कूच कराये भुन्नागढ़ ते पथरीगढ़ै पहूँची आय ११६
दीख्यो ऊदन जब सूरज को धावा तुरत दीन करवाय॥
सेमा बरसी तब जादूको पत्थर सबै फौज ह्वैजाय ११७
इकलो देबा बचि लश्करगा आल्हा पास पहूँचा आय॥
कही हकीकति सब सेमाकी आल्हागये सनाकाखाय ११८
धीरज धरिकै आल्हा बोले देबा नगर मोहोबे जाय॥
जल्दी लावो तुम इन्दल को तासों कह्यो कथासमुझाय११९
इतना सुनिकै देबाठाकुर अपने घोड़ भयो असवार॥
सातरोज को धावा करिकै पहुँचा नगर मोहोबा द्वार १२०
आल्हा केरे फिरि मंदिर में देबा अटा तुरतही जाय॥

कही हकीकति सब सुनवाँसों इन्दल फेरि पहूँचा आय १२१
इन्दल बोल्यो तहँ देवाते चाचा हाल देउ समुझाय ॥
कैसी गुजरी पथरीगढ़ में कस तुम गयो इकेले आय १२२
सुनिकै बातैं ये इन्दल की देवा लीन दुःखकी श्वास ॥
सेमाभगतिनि पथरीगढ़ की त्यहिकरिडराबंशकीनाश १२३
तुम्है बुलैबे को आये हैं बेटा चलौ हमारे साथ ॥
इतना सुनिकै इन्दल चलिभे देवी जाय नवायो माथ १२४
बड़ी अस्तुती की देवी की इन्दल तंत्रशास्त्र अनुसार ॥
अमृतसानी भइ मठबानी इन्दल आल्हा केर कुमार १२५

सवैया ॥

बैठुमठी कछु देर कुमार अबार नहीं करिहउँ मैं काजा ।
या कहिकै गय देबि तहाँ जहँ बैठ सुराधिप सोहत राजा ॥
जायबिनै बहुभांति कियो सुरराज लख्यो तहँ देबिअकाजा ।
लैकर अमृत देतजबै ललिते मठिमें फिरि होत अवाजा १२६

छिपिकै चलिबे त्यरेसाथ में इन्दल करो तयारी जाय ॥
इतना सुनिकै इन्दल चलिभे देवी बार बार शिरनाय १२७
माता केरे फिरि मंदिर में इन्दल बिनय सुनाई आय ॥
आज्ञा पावैं महतारी के दादा पास पहूँचैं जायँ १२८
सुनवाँ बोली फिरि इन्दलते बेटा बार बार बलिजायँ ॥
सेमा भगतिनि के देखेको हमहूं चलब पूत तहँधाय १२९
बिस्मय कीन्ह्यो कछु मनमें ना पक्षीरूप धरी तव माय ॥
चूम्यो चाट्यो बदनलगायो पाछे हुकुम दियो फर्माय १३०
आज्ञापितुकी सब कोउ कीन्ह्यो राम औ परशुराम लों जानु ॥
जल्दी जावो पितु दर्शन को बेटा कही हमारी मानु १३१

इतना सुनिकै इन्दल चलिभे देबै तुरत जुहारयो जाय॥
जल्दी चलिये अब दादा ढिग मातै हुकुमदीन फर्माय १३२
इतना सुनिकै देबा ठाकुर अपने घोड़ भयो असवार॥
घोड़ करिलिया इन्दल बैठे नाहर-आल्हाकेर कुमार १३३
चील्ह रूप ह्वै सुनवाँ उड़िगै आधे सरग रही मड़राय॥
देबी चलिकै फिरि मंदिरते पथरीगढ़ै पहूँचीजाय १३४
देबा इन्दल दोऊ नाहर आल्हा निकट पहूंचेजाय॥
आल्हा दीख्यो जबइन्दलको तबछातीसोंलियो लगाय १३५
आल्हा बोले फिरि इन्दल ते बेटा कही कथा ना जाय॥
सेमाभगतिनि के कर्तब ते पत्थर भई फौज सब आय १३६
इन्दल बोले फिरि आल्हा ते अब नहिं देरकरो महराज॥
जल्दी चलिये अब झुन्नागढ़ चलिकैकरियआपनोकाज १३७
इतना सुनिकै आल्हा ठाकुर हाथी उपर भये असवार॥
घोड़ मनोहरकी पीठीपर ठाकुर मैनपुरी सरदार १३८
चढ़े करिलियाकी पीठीपर इन्दल कूचदीन करवाय॥
घड़ी अढ़ाई के अरसा माँ पहुँचे समरभूमि में आय १३९
देखिकै फौजै तहँ पत्थर की इन्दल गयो सनाकाखाय॥
उतरिकै घोड़ा ते भुइँ आयो बोल्यो देबी शीश नवाय १४०
हेअबिनाशिनिसबसुखराशिनि नाशिनिबिपतिकेरिसमुदाय॥
चरण शरण में हम तुम्हरी हैं फौजै देवो मातु जियाय १४१
तब तो देवी पथरीगढ़ में अमृत बूंद दीन बरसाय॥
अमृत बूंदी के परतैखन फौजैं उठीं तुरत हरषाय १४२
उठा बेंदुला का चढ़वैया इन्दल निकट पहूँचा आय॥
चूम्यो चाट्यो गरे लगायो पूंछन लाग बनाफरराय १४३

कैसे आयो तुम पथरीगढ़ हम को हाल देउ बतलाय ॥
बातैं सुनिकै ये ऊदन की इन्दल यथातथ्य गा गाय १४४
गा हरिकारा पथरीगढ़ ते झुन्नागढ़ै पहूँचा जाय ॥
दीख तमाशा जो फौजन का राजै हाल दीन बतलाय १४५
सुनिकै बातैं हरिकारा की सूरजमल का लीन बुलाय ॥
कही हकीकति सब सूरजते जल्दी हुकुमदीनफरमाय १४६
हुकुम पायकै महराजा को डंका तुरत दीन बजवाय ॥
हाथी घोड़ा औ रथ साजिगे पैदर सजे शूर समुदाय १४७
जितनी फौजैं रहैं झुन्नागढ़ सबियाँ बेगि भईं तय्यार ॥
हथी चढ़ैया हाथी चढ़िगे बांके घोड़न भे असवार १४८
रणकी मोहरि बाजन लागी रणका होन लाग ब्यवहार ॥
ढाढ़ी करखा बोलन लागे बिप्रन कीन वेद उच्चार १४९
कूचको डंका बाजन लाग्यो घूमन लाग्यो लाल निशान ॥
फौजे चलिकै झुन्नागढ़ ते पहुँचीं समरभूमि मैदान १५०
धूलि देखिकै आसमान में भारी देखि गर्द गुब्बार ॥
बोल्यो फौजन में त्यहि समया ठाकुर बेंदुलको असवार १५१
फौजै आईं गजराजाकी भारी अंधकार गा छाय ॥
जल्दी सजिकै ओ रणबाघो तुमहूं कूच देव करवाय १५२
बातैं सुनिकै बघऊदन की सबियाँ फौज भईं तय्यार ॥
झीलमबखतरपहिरिसिपाहिन हाथ म लईं ढाल तलवार १५३
पहिल नगाड़ा में जिनबंदी दुसरे फांदि भये असवार ॥
तिसर नगाड़ा के बाजत खन चलिभे सबै शूर सरदार १५४
पहिले मारुइ भईं तोपन की दूसरि भईं तीरकी मार ॥
तीसरि मारुइ बंदूखन की चौथे चलनलागितलवार १५५

पांच कदम पर बरछी छूटैं भालन तीन कदम पर मार॥
कदम कदम पर चलैं कटारी ऊनाचलै बिलाइति क्यार१५६
तेगा धमकैं बर्दवान के कटि कटि गिरैं शूर सरदार॥
बड़ी लड़ाई दोउ दल कीन्ह्यो नदिया बही रक्तकी धार १५७
सूरज ऊदन फिरि दोऊ का परिगा समर बरोबरि आय॥
दोऊ मारैं दोउ ललकारैं दोऊ लेवैं वार बचाय१५८
को गति बरणै तहँ दोऊकै दोऊ समर धनी सरदार॥
बैस बरोबरि है दोऊ कै दोऊ खूब करैं तलवार १५९
यहु रणरंगी लै असि नंगी जंगी मैनपुरी चौहान॥
धरि धरि धमकै रजपूतन को देवा बड़ा लड़ैया ज्वान१६०
को गति बरणै कंतामल की हंता क्षत्रिन को सरदार॥
फिरि फिरि मारै औ ललकारै दोऊ हाथ करै तलवार १६१
सिर्गा घोड़ा की पीठी पर सय्यद बनरस का सरदार॥
अली अली कहि जैसी दौरै भागैं गली गली सबयार १६२
भली भली कहि ऊदन बोलैं काँपैं थली थली सरदार॥
हली हली तहँ पृथ्वी डोलै काँपैं डली डली लखिमार१६३
को गति बरणै तहँ सूरज की यहु गजराजा केर कुमार॥
खैंचि सिरोही ली कम्मर सों ऊदन उपर हनी तलवार१६४
वार बचाई बघऊदन ने आपो दियो तड़ाका मार॥
परी सिरोही सो घोड़ा के औशिरगिर्खोतुरतत्यहिवार१६५
उतरि बेंदुलाते सूरज को पकस्यो उदयसिंह सरदार॥
बांधिकै मुशकै सूरजमलकी बेंदुल उपर भयो असवार१६६
औ ललकास्यो कंतामल को क्षत्री खबरदार ह्वैजाय॥
घाटि बिसेनेने जस कीन्ह्यो तैसी सजा लेउ अबआय १६७

इतना कहतै बघऊदन ने औफड़ हना ढालकी जाय ॥
कांतामल्ल घोड़ा ते गिरिगा पकरा तुरत बनाफरराय १६८
बांधिकै मुशकै कांतामल की तम्बू तुरत दीन पहुँचाय ॥
गा हरिकारा तब फुन्नागढ़ राजै खबरि सुनायो जाय १६९
खेत छूटिगा दिननायक सों फंडा गड़ा निशाको आय ॥
तारागण सब चमकन लाग्यो संतन धुनी दीन परचाय १७०
माथ नवावों पितु अपने को ध्यावों तुम्हैं भवानीकन्त ॥
राम रमा मिलि दर्शन देवो इच्छा यही मोरिभगवन्त १७१

इति श्रीलखनऊनिवासि (सी,आई,ई) मुंशी नवलकिशोरात्मजबाबूप्रयागनारायणजीकीआज्ञानुसारउन्नामप्रदेशान्तर्गतपँडरीकलांनिवासिमिश्रवंशोद्भवबुधकृपाशङ्करसूनुपण्डितललिताप्रसादकृतऊदनबिजयवर्णनोनामाद्वितीयस्तरंगः ॥ २ ॥

सवैया ॥

होत नहीं जपहू तपहू अपने मन में यहही पछतावैं ।
काम औ क्रोध बढ़ैं नितही दुखहीं दुखसों हम देह बितावैं ॥
शान्ति औ शील दया अरु धर्म बिना इन कौन कहो सुखपावैं ।
गावैं सदा रघुनन्दन को गुण बन्दन कै ललिते बर पावैं १

सुमिरन ॥

हम पद ध्यावैं पुरुषोत्तम के नरनारायण शीश नवाय ॥
नर तो जानो तुम अर्जुन को गीतासुना सकल ज्यहिभाय १
हैं नारायण कृष्णचन्द्र तहँ जिनकासुयश रहाजगछाज ॥
को गति बरणै पुरुषोत्तम कै जिनको नाम राम महराज २
क्रोधों पैदा फिरि दुनियां भा कोधों बैठि करै असराज ॥

धर्म क्षत्तिरी के सब पाले कीन्ह्यो रामचन्द्र जस काज ३
काव्य पुरानी बालमीकि की यहही ठीक ठाक परमान॥
याको देखै जब कोउ मानुष होवैं रामचन्द्र तब भान ४
भानै होतै त्यहि प्रानी के आनी मनो पुरबले भाग॥
भागै ह्वैकै सो जागै उर भागै सबै बिपति की आग ५
छूटि सुमिरनी गै ह्यांते अब शाका सुनो शूरमन केर॥
फौजे सजि हैं गजराजा की लड़ि हैं द्वऊ शूरमा फेर ६

अथ कथाप्रसंग॥

खबरि पायकै गजराजाने सेमा भगतिनि लीन बुलाय॥
सेमा भगतिनि ते गजराजा सबियाँ कथा कह्यो समुझाय १
सुनिअकुलानी सेमाभगतिनि राजै बार बार शिरनाय॥
आज्ञा देवो मोहिं जाने को मानो कही बिसेनेराय २
राजा बोले फिरि सेमाते आइव यही काज बुलवाय॥
अब तुम जावो पथरीगढ़ को मारो सबै मोहबिया जाय ३
आज्ञा पावत महराजा की सेमा अटी भवन में जाय॥
लैकै पुरिया सब जादू की तुरतै कूच दीन करवाय ४
तुरत पौंरिया को बुलवायो राजै हुकुम दीन फर्माय॥
तुरत नगड़ची को बुलवाओ डंका तुरत देव बजवाय ५
हुकुम पायकै महराजा को धावन अटा तुरतही जाय॥
बाजे डंका अहतंका के हाहाकारी शब्द सुनाय ६
जितनी फौजैं गजराजा की सबियाँ बेगि भईं तय्यार॥
हथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे बाँकै घोड़न भे असवार ७
घोड़ अगिनिया गजराजाको सोऊ सजा खड़ा तय्यार॥
सुमिरि भवानी जगदम्बा को राजा फाँदि भयो असवार ८

ढाढ़ी करखा बोलन लागे बिप्रन कीन वेद उच्चार ॥
रणकी मोहरि बाजन लागी रणका होन लाग ब्यवहार ९
खर खर खर खर कै रथ दौरे रब्बा चले पवन की चाल ॥
मारु मारु करि मोहरि बाजी बाजी हाव हाव करनाल १०
आगे हलका है हाथिन का पाछे चले जायँ असवार ॥
पैदल क्षत्री त्यहि पाछे सों हाथम लिये नाँगि तलवार ११
सुनि सुनि चोबै तहँ डङ्का की बोला तुरत बनाफरराय ॥
चढ़िकै आवत गजराजा है मानो कही शूर समुदाय १२
सुनिकै बातैं बघऊदन की सँभले सबै शूर सरदार ॥
घड़ी न बीती ना दिन गुजरा फौजै सबै भई तय्यार १३
दोऊ ओरते तोपैं छूटीं मानो प्रलय मेघ घहरान ॥
मारत मारत फिरि तोपन के संगम भये समर मैदान १४
ऊदन राजा सम्मुख ह्वैगे राजा गरू दीन ललकार ॥
मुशकै छोड़ो द्वउ पुत्रनकी ऊदन मानो कही हमार १५
लड़िकै बेटी तुम पैहौ ना मरिकै आन धरो अवतार ॥
सुनिकै बातैं ये राजा की बोला उदयसिंह सरदार १६
घाटि बिसेने तुम कीन्ही है मलखे खन्दक दिये डराय ॥
बेटी ब्याहो औ फिरि जावो नाहीं गई प्राणपर आय १७
काम बिटेवन ते परिगा है कबहुँ न परा मर्द ते काम ॥
सम्मुख लड़िकै उदयसिंह ते अबहीं जानचहत यमधाम १८
इतना सुनिकै गजराजा ने आपनि ऐंचि लीन तलवार ॥
हनिकै मारा बघऊदन को ऊदन लीन ढालपर वार १९
फिरि ललकारा गजराजा को ठाकुर खबरदार ह्वैजाय ॥
पहिली कीन्हे दूसरि कैले क्षत्री तोरि आहि रहिजाय २०

दूध लरिकई मा पाये ना तेरे मरे चढ़ै ना घाव॥
इतना सुनिकै गजराजा ने जल्दी हना दूसरा दाँव २१
वार बचाई बघऊदन ने राजा बहुत गयो शर्माय॥
उसरिन उसरिन द्वउ मारत भे शोभा कही बूत ना जाय २२
चिल्हिया बनिकै सेमाभगतिनि सुनवाँ पास पहूँची जाय॥
दोनों चिल्हिया संगम ह्वैकै पंजन परन लड़ैं नभधाय २३
इन्दल दीख्यो घोड़ा पर सों ऊपर आसमान की ओर॥
दोनों चिल्हिया आसमान में भारी करैं युद्ध अतिघोर २४
लड़िकै सटिकै संगम ह्वैकै दोऊ गिरीं धरणि में आय॥
सुनवाँ बोली तब इन्दल ते मारो पूत याहि असिघाय २५
इन्दल बोले तब सुनवाँ ते माता सत्य कहौं समुझाय॥
हाथ मिहिरियापर डारौं जो तौ रजपूती धर्म नशाय २६
सुनवाँ बोली फिरि इन्दल ते बेटा बार बार बलिजायँ॥
जूरा काटो इह भगतिनि को तौ सबकाम सिद्धि ह्वैजायँ २७
सुनिकै बातैं ये माताकी जूरा काटि लीन त्यहिकाल॥
जादू झूठी भइँ सेमाकी सेमा परी बिपति के जाल २८
ज्यों त्यों करिकै झुन्नागढ़ को सेमाचली गई पछताय॥
मनै सराहै भल सुनवाँ को आपनालियोबदलह्याँआय २९
हवा चलाई जब पहिले मैं सुनवाँ बन्दकीन तब आय॥
अपने हाथे मैं बिष बोयों बनिकैचील्हलड़ियुँजोजाय ३०
ह्याँ गजराजा हल्ला करिकै अति खलभल्ला दीन मचाय।
लड़ै इकल्ला सो घोड़ा पर कल्लादीन भूमि बिथराय ३१
पल्ला दैकै सय्यद ठाढ़े अल्लाऔबिसमिल्लागयेहिराय॥
जैसे होरी बल्ला छूटै गल्ला यथा उसावा जाय ३२

मारे मारे तलवारिन के तस गजराजा दीन बिछाय ॥
फिरि फिरि मारै औ ललकारै अद्‍भुतसमर कहा ना जाय ३३
सुनवाँ बोली फिरि इन्दल ते बेटा कहा मानि ले मोर ॥
पूंछ काटिले इह घोड़ाकी तौ नहिंरहै फेरि अस जोर ३४
इतना सुनिकै इन्दल तुरतै घोड़ा पास पहुंचे जाय ॥
पूंछ काटिकै वहि घोड़ा की औ धरती माँ दीन गिराय ३५
सेमाभगतिनि घोड़ अगिनियाँ दोऊ बिना जोर भे भाय ॥
राजा सोच्यो अपने मनमाँ हमरो काल पहूँचा आय ३६
छोड़ि आसरा जिंदगानी का अपनो मया मोह बिसराय ॥
प्राण गदोरी पर धरि लीन्ह्यों आल्हा पास पहूँचा जाय ३७
औ ललकारा फिरि आल्हाको ठाकुर खबरदार ह्वैजाय ॥
धोखे भूले ना माड़ो के जहँ लै लिये बापका दायँ ३८
मैं गजराजा झुन्नागढ़ को सम्मुख लड़ो आजु सरदार ॥
ऍंड़ा मसके फिरि घोड़ा के आल्हा उपर हनी तलवार ३९
टूटि सिरोही गै राजाकै कबुजा रहा इकेलो हाथ ॥
साँकरि लैकै फिरि हाथी को आल्हा दीन सुमिरिरघुनाथ ४०
साँकरि फेरी पचशब्दा ने औ घोड़ाते दीन गिराय ॥
बाँधिकै मुशकै फिरि राजाकी आल्हा कूचदीन करवाय ४१
ऊदन बोले गजराजा सों म्वहिं मलखे को देउ बताय ॥
राजा बोलो तब ऊदन सों मानो कही बनाफरराय ४२
संग हमारे अब तुम चलिये औ मलखे को लवैं लिवाय ॥
इतना सुनिकै दूनों चलिभे खंदक पास पहूँचे जाय ४३
बज्रशिला को फिरि टारत भे रस्सा तुरत दीन लटकाय ॥
बाहर निकरे मलखे ठाकुर रोवा बहुत लहुरवा भाय ४४

पकरिकै बाहू द्वउ ऊदन की मलखे आनी लीन लगाय॥
तीनों चलिभे फिरि खन्दकसों आल्हा निकट पहूँचे आय ४५
राजा बोल्यो फिरि आल्हा सों मानो कही बनाफरराय॥
कैदी छोड़ो द्वउ पुत्रन को अबहीं ब्याह लेउ करवाय ४६
ऊदन बोले फिरि राजाते तुम्हरी कौन करै परतीति॥
गंगा करिकै दादै लैकै घरमाँ कियोजाय अनरीति ४७
दया आयगै फिरि आल्हाके गंगा फेरि लीन करवाय॥
कैद छुड़ायो द्वउ पुत्रन को पण्डित तुरतै लीन बुलाय ४८
देखिपत्तरा पण्डित बोल्यो भाँवरि आजु लेउ करवाय॥
इतना सुनिकै राजा चलिभा दोऊ पुत्रन साथ लिवाय ४९
आल्हा पहुंचे जनवासे में राजा महल पहूँचा जाय॥
लिह्यो घोड़ी माहिल चढ़िकै राजा घरै गये फिरि धाय ५०
बड़ी खातिरी राजा कीन्ह्यो माहिल बैठि महल में जाय॥
माहिल बोले फिरि राजाते मानो कही बिसेनेराय ५१
जितने ठाकुर आल्हा घरके मड़येतरे लेउ बुलवाय॥
शूर कुठरियन में बैठारो सबके मूड़लेउ कटवाय ५२
इतना कहिकै माहिल चलिभे पथरीगढ़ै पहूँचे आय॥
कियो तयारी ह्याँ मड़ये की यहु गजराजा खंभ गड़ाय ५३
सूरज बेटा को बुलवायो तासों कह्यो हाल समुझाय॥
सुनिकै बातैं सब राजा की सूरज चलिभा शीशनवाय ५४
जायकै पहुँच्यो जनवासे में जहँ पर बैठि बनाफरराय॥
कह्यो हकीकति सबआल्हासों सूरज बार बार शिरनाय ५५
सुनिकै बातैं सब सूरज की आल्हा हुकुम दीन फर्माय॥
चोवै घोड़ा सब मड़ये को- यह कहिदियो बिसेनेराय ५६

इतना सुनिकै ऊदन देबा जोगा भोगा भये तयार॥
मलखे सुलखे ब्रह्मा लाखनि इनहुन बांधिलीन हथियार५७
चन्दनबेटा पृथीराज को जगनिक भैने चँदेलो क्यार॥
मोहनबेटा बीरशाह को बौरीगढ़ को जो सरदार ५८
हाथी सजिगा पचशब्दाफिरि आल्हा तापर भये सवार॥
बारहु ठाकुर अपने अपने सबहिन बाँधिलियेहथियार५९
कूच करायो जनवासे ते मड़ये तरे पहूंचे जाय॥
चन्दन चौकी मलखे बैठे पण्डित साइति दियो बताय ६०
बर औ कन्या इकठौरी भे भाँवरिसमय गयो नगच्याय॥
पहिली भाँवरि के परतैखन सूरज ठाकुर उठा रिसाय ६१
वार चलाई सो मलखे पर ऊदन लीन्ह्यो वार बचाय॥
दूसरि भाँवरि के परतैखन कांतामलहू गयो रिसाय ६२
खैंचिकै मारा सो मलखेपर रोंका तुरत लहुरवाभाय॥
तीसरि भाँवरि के परतैखन सबियाँ शूर पहूंचे आय ६३
बड़ी लड़ाई भै आँगन में तुरतै बही रकतकी धार॥
मूड़न केरे मुड़चौरा भे औ रुण्डनके लाग पहार ६४
आधे आँगन भौंरी होवैं आधे खूब चलै तलवार॥
नाई बारी जी लैभागे जूझे बड़े बड़े सरदार ६५
को गति बरणै रजपूतन कै भारी हाँक देयँ ललकार॥
चलै कटारी बूंदी वाली आँगन चमकिरही तलवार६६
चन्दन मोहन लाखनि ऊदन दोऊ हाथ करैं तलवार॥
को गति बरणै जगनायक कै भैने जौन चँदेले क्यार ६७
जोगा भोगा सुलखे देवा इनहुन खूब मचाई मार॥
इतने क्षत्रिन के मारुन में कोउ न खड़ा होय सरदार ६८

ब्रह्मा सूरज दोऊ ठाकुर रणमाँ घोर कीन घमसान ॥
बड़ा लड़ैया गजराजा यहु नाहर समरधनी मैदान ६९
कांतामल्लहू आँगन लड़िकै अपने तजी प्राण की आश ॥
सातसै क्षत्री आँगन लड़िकै तुरतै भये तहाँपर नाश ७०
कांतामल औ फिरि सूरज की आल्हा मुशकै लीन बँधाय ॥
कठिन लड़ाई भै माड़ोतर सातो भाँवरि लीन डराय ७१
तब गजराजा पाँयन परिकै सब को बार बार शिरनाय ॥
हारि देखिकै अपने दिशिकी कन्यादान दीनफिरिआय ७२
ऊदन बोले फिरि राजा ते मानों कही बिसेनेराय ॥
आल्हा गर्जी हैं दायज के मलखेदुलाहिनिकोललचायँ ७३
भातके गर्जीं हम सब ठाकुर सो अब बेगि होय तय्यार ॥
छोरिकै मुशकै दोउ पुत्रन की चलिभे मोहबे के सरदार ७४
ई सब पहुंचे जनवासे में माहिल तुरत भयो तैयार ॥
आयके पहुंच्यो कुन्नागढ़ माँ राजै कीन्ह्यो रामजुहार ७५
राजा बोले तब माहिल ते ठाकुर उरई के सरदार ॥
बड़े लड़ैया मुहबे वाले नाहर कठिन करैं तलवार ७६
माहिल बोले तब राजा ते मानों कही बिसेनेराय ॥
भातखान को अब बुलवावो चौका मूड़ लेउ कटवाय ७७
यह मन भाई महराजा के लाग्यो भात होन तय्यार ॥
बिदा माँगिकै महराजा ते चलिभा उरई का सरदार ७८
राजा चलिभे जनवासे में आल्हा पास पहूँचे जाय ।
त्यार भातहै मोरे महलन में जल्दी चलो बनाफरराय ७९
कहा मानिकै हम तुम्हनको तुम्हन सरिस कीन सब काम ॥
तुम सों दूजी अब राखैं ना सोऊ जान रहे श्रीराम ८०

धन्य सराही त्यहि ठाकुर को तुम सों मिलैं नात समरस्त॥
क्यहु अभिलाषा कछु बाकीना ह्वैगे सबै ज्ञान अब पस्त ८१
बातैं सुनिकै ये राजा की आल्हा हुक्म दीन फर्माय॥
बारह ठाकुर गे गौरिन में तेई फेरि सजे सब भाय ८२
भाला बरछी औ ढालै लै हाथ म लई सबन तलवार॥
नाई दारी गडुवा लीन्हेनि चलिभे सबै शूर सरदार ८३
मलखे बैठे फिरि पलकी में बाजन सबै रहे हहराय॥
एकपहर के फिरि अर्सा में राजा भवन पहूंचे जाय ८४
नाई आवा फिरि भीतर सों आल्है शीश नवावा आय॥
जल्दी चलिये अब भोजनको करिये न देर बनाफरराय ८५
इतना सुनिकै सब क्षत्रिनने अपने कपड़ा धरे उतार॥
ढालै धरिकै गैंड़ावाली हाथ म लई नाँगि तलवार ८६
तब गजराजा कह आल्हा सों ठाकुर मोहबे के सरदार॥
हमरे कुलकी यह रीती ना भोजन करत गहै हथियार ८७
एकरीति नहिं सब देशन में अपने कुला कुला व्यवहार॥
बातैं सुनिकै ये राजा की सबहिन धराफेरि हथियार ८८
चलिकै ठाकुर गे चौका में पीढ़न उपर बैठिगे जाय॥
षटरस व्यंजन सब परसेगे उत्तम भातगयो फिरिआय८९
लक्ष्मी बोलत परलै ह्वैगै आये सबै शूर समुदाय॥
जान न पावैं मुहबेवाले सबका कटा देव करवाय ९०
बातै सुनिकै गजराजा की आल्हा गये सनाकाखाय॥
गडुवा लैकै ऊदन ठाढ़े मलखे पाटा लीन उठाय ९१
बड़ी मारु भै फिरि चौका में अद्भुत समर कहा ना जाय॥
पाटा लागे ज्यहि ठाकुर के घूर्मित गिरै मूर्च्छा खाय ९२

को गति बर्णै तहँ ऊदन की गडुवन मारि कीन खरिहान॥
लाखनि ब्रह्मा के मुर्चा में सम्मुख लड़ै न एकोज्वान ६३
कांतामल औ सूरज ठाकुर दोऊ हाथ करैं तलवार॥
बड़े लड़ैया मोहवे वाले ठाकुर समरधनी सरदार ६४
मुण्डन केरे मुड़चौरा भे औ रुण्डन के लगे पहार॥
मारे मारे तलवारिन के चौका बही रक्तकी धार ६५
जैसे भेड़िन भेड़हा पैठै जैसे अहिर बिडारै गाय॥
तैसे ठाकुर मोहवे वाले मारिकैदीन्हो समरसोवाय ६६
बहुतक जूझे झुन्नागढ़ के रानी राजै लीन बुलाय॥
रानी बोली फिरि राजा सों मानों कही त्रिसेनेराय ६७
बड़े लड़ैया मोहवे वाले ओ महराजा बात बनाव॥
लड़िकैजितिहौनहिंआल्हासों तुम करि थाके सबै उपाव ६८
कहा न मानो तुम माहिल को नहिं सब जैहैं काम नशाय॥
हँसी खुशी सों बेटी पठवो याहि में भला परै दिखराय ६६
बातैं सुनिके ये रानी की राजा समर पहूँचा आय॥
भुजा उठाये फिरि बोलत भा अबहीं मारु बन्द ह्वैजाय १००
मारु बन्द भै दोऊ दिशिसों राजा बोला वचन सुनाय॥
बिदा करावो अब बेटी को नहिं कछु देर बनाफरराय १०१
बातें सुनिकै गजराजा की द्वारेगये बराती आय॥
कपड़ा पहिरे अपने अपने सीताराम चरण मनध्याय१०२
हुकुम लगायो ह्वाँ गजराजा बेटी बेगि होय तय्यार॥
हुकुम पायकै महराजा को सोलह करनलागि शृंगार १०३

सवैया॥

मज्जन चीरं औ कुण्डल अंजन नाक में मौक्तिक वेशै सवाँरी।

फंचुँकि औ क्षुद्रावलि कंकण कुसुमित अम्बर चन्दन धारी ॥
खायकै पानै औ धारिमणीनको हारै औ नूपुरैकी झनकारी।
सेंदुरै भाल बिशाललखे ललिते मनलज्जित मन्मथनारी १०४

ग्वरिग्वरिबहियाँ हरिहरिचुरियाँ सो मनिहारिनि दी पहिराय ॥
पहिरि मुँदरियाँ अठो अँगुरियाँ ऊपर छल्ला लये दबाय १०५
पहिरि आरसी ली अँगुठा में सीसा उपर तासु के भाय ॥
अगे अगेला पिछे पछेला बीचम छन्न रही दर्शाय १०६
टाड़ैं पहिरी सोने वाली जोसन पट्टी करैं बहार ॥
दुलरी तिलरी पंचलरीलों तापर परा मोतियन हार १०७
नथुनी लटकन की शोभाअति कानन करनफूल शृङ्गार ॥
धारे गुज्झी द्वउकानन में बँदियाँ मस्तक करैं वहार १०८
बिछिया पहिरी पद अँगुरिन में अनवट सखी दीन पहिराय ॥
कड़ाके ऊपर छड़ा बिराजै तापर पायजेब हहराय १०९
लहँगा पहिर्यो कीनखाब को चादर ओढ़िलीन फिरिभाय ॥
जैसे बादल बिजुली चमकै तसगजमोतिनिपरैदिखाय११०
तहिले राजा फिरि आवत भे औ रानी सों कह्यो सुनाय ॥
बिदा कि बिरिया अब आई है जल्दी बेटी देउ पठाय १११
सुनिकै बातैं ये राजा की रानी बेटी लीन बुलाय ॥
सीतामाता अनुसूया की सखियाँकथाकहीसमुझाय११२
कहा न मानै जो पूरुप को नारी घोर नर्क को जाय ॥
चोर कुकर्मी जो पतिहोवै सेवा किहे नारि तरिजाय ११३
बिनापराधै नारी त्यागै सो पति मरै भूँखके घाय ॥
ऐसे कहिकै गजमोतिनि सों माता रोई हृदय लगाय ११४

मिला भेट करि सबकाहू सों　फुलियामालिनिलीनबुलाय ॥
बहुधनदीन्ह्योफिरिफुलियाको　रोवत चढ़ी पालकीजाय ११५
बड़ी खुशाली आल्हा कीन्ह्यो　बहुधन द्वारे दीन लुटाय ॥
विदा मांगिकै गजराजा सों　लश्कर कूच दीनकरवाय ११६
सात रोज को धावा करिकै　पहुँचे नगर मोहोबा जाय ॥
सखियाँ मंगल गावन लागीं　परछन भई द्वारपर आय ११७
विदा मांगिकै न्यवतहरी सब　निज निज देशगये हर्षाय ॥
चील्ह रूप धरि सुनवाँ आई　मल्हनाखुशीभईअधिकाय ११८
देवलि ब्रिमा त्यहि औसर में　फूली अंग न सकैं समाय ॥
को गति वर्णै परिमालिक की　मानों इन्द्रलोक गे पाय ११९
[illegible]ता आपने की दाया सों　मलखे ब्याह गयों सब गाय ॥
नही भरोसा निज भुजबलका　क्रिपाशंकर करैं सहाय १२०
आशिर्वाद देउँ मुंशीसुत　जीवो प्रागनरायण भाय ॥
हुकुम तुम्हारो जो होतो ना　ललितेकहतकौनविधिगाय १२१
रहै समुन्दर में जबलों जल　जबलों रहैं चन्द औ सूर ॥
मालिक ललितेके तबलों तुम　यशसों रहौ सदा भरपूर १२२
इष्ट देवता मम एकै हैं　पूरण ब्रह्म राम भगवन्त ।
चरणकमल तिन धरि हिरदे में　ह्याँसों करों तरँग को अन्त १२३

इति श्रीलखनऊ निवासि (सी, आई, ई) मुंशीनवलकिशोरात्मज बाबू प्रयागनारायणजीकी आज्ञानुसारउन्नामप्रदेशान्तर्गतपँड़रीकलांनिवासि मिश्रवंशोद्भव बुध कृपाशंकरसूनु पं० ललिताप्रसादकृत मलखेपाणिग्रहणवर्णनोनामतृतीयस्तरंगः ॥ ३ ॥

मलखे विवाहसमाप्त ॥

इति ॥

अथ आल्हखण्ड ॥

ब्रह्माका विवाह अथवा दिल्लीकी लड़ाई ॥

सवैया ॥

ह्वैकर दीन गह्यों तुमको रघुनाथ करो अबतो रखवारी।
पायके शाप पषाण भई मुनिनारि दयालु दियो तुम तारी॥
हा राम कह्यो यवनो यकबार गयो तव धामहि वेगि खरारी।
दीन पुकार करै ललिते प्रभु चूक क्षमो रघुनाथ हमारी १

सुमिरन ॥

पहिले सुमिरों पद गणेश के गौरा पारवती के बाल ॥
हाथी आनन सम आनन है सेंदुर सदा बिराजै भाल १
बड़ी पियारी जिन दूर्वा है फूलो बड़े पियारे लाल ॥
भोग लगावै जो लड्डू को तापर खुशी रहैं सब काल २
हैं शिवशङ्कर के लरिका ते अरिका करैं सदा जे नाश ॥
विधिवत पूजनजोकोउ कीन्ह्यो पूरी सदा तासुकी आश ३
बड़ो भरोसो तिन गणेश को अपने हृदय करों सब काल ॥
करो मनोरथ पूरण हमरो गौरा पारवती के लाल ४
छूटि सुमिरनी गै गणेशकै सुनिये बेला केर हवाल ॥

ब्याह बखानों त्यहि ब्रह्माको ज्यहिका पिता रजा परिमाल५

अथ कथाप्रसंग ॥

पृथीराज दिल्ली को राजा ज्यहिका जानैसकलजहान ॥
कन्या उपजी जब त्यहिके घर तारा टूटि तबै असमान १
थर थर थर थर पृथ्वी कांपी दर दर बोले श्वान शृगाल ॥
झन् झन् झन् झन् वायू डोलीं अशकुनबहुतभयेत्यहिकाल २
अशकुन दीख्यो पृथीराज ने तुरतै पंडित लीन बुलाय ॥
लैकै पोथी ज्योतिष वाली पंडित हाल दीन बतलाय ३
गौना ह्वैहै जब कन्या का ह्वैहै तबै घोर घमसान ॥
बहुतक क्षत्री तब नशिजैहैं जुझिहैं बड़े बड़े ह्याँ ज्वान ४
ताते बेला यहि कन्या का राखो नाम आप महराज ॥
पाय दक्षिणा पंडित चलिभो होवन लागि और फिरिकाज५
छठी बारहों पसनी ह्वैगै बेला परो तासु को नाम ॥
सात बरस की जब बेला भइ खेलत फिरै सखिन के धाम ६
कोउकोउसखियां तहँब्याहीथीं बेंदी दिये आपने भाल ॥
क्वारी पूछैं तिन ब्याहिन ते सखितुमकहौ श्वशुरपुरहाल ७
ब्याही बोलीं अनब्याहिन ते मानो सखी बचन तुमसाँच ॥
जब सुधि आवत है बालम कै तब उर जरै बिरहकी आँच ८
सुरपुर नरपुर अहिपुर माहीं सो सुख नहीं परै दिखराय ॥
जो सुख पावा हम श्वशुरे में बालम छाती लीन लगाय ९
कटिगहि मसकैं हम नहिंटसकैं कसकै हृदयकिये सुधिआज ॥
कासुखजानो तुमअनब्याहिउ बैरिनि भई हमारी लाज १०
सुनि सुनि बातैं ये ब्याहिनकी सब अनब्यही गईं शर्माय ॥
बढ़ी लालसा तब ब्याहे की ब्याला घरै पहूंची आय ११

खयो मिठाई औ मेवा कछु पलँगा सोय रही फिरिजाय ॥
फिकिरि लगाये सो ब्याहे की एका एकी उठी कन्नाय १२
हम नहिं जैहैं अब श्वशुरे को यह कहि रोय उठी चिल्लाय ॥
रानी अगमा तहँ ठाढ़ी थी तुरतै छाती लीन लगाय १३
धीरज दैकै माता पूछै बेटी स्वपन दीख का आज ॥
इतना सुनिकै बेटी बोली माता कहतलगै बड़िलाज १४
माता बोली फिरि बेटी सों बेटी सत्य देउ बतलाय ॥
कैसो स्वपना तुम दीख्यो है हमरे धीर धरा ना जाय १५
सुनिकै बातैं ये माता की बेटी कहन लागि त्यहि बार ॥
मोहिं बियाहनजनु कोउआयो हाथ म लिये ढाल तलवार १६
फिरि बैठायो मोहिं डोला पर अपने घरै लिये सो जाय ॥
ऐसा दीख्यों जब माता मैं तबहीं रोय उठिउँ चिल्लाय १७
इतना कहिकै बेला चलि भै खेलन लागि सखिन के साथ ॥
महलन आये पिरथी राजा रानी गहाजाय तब हाथ १८
स्वपन बतायो सब बेला को सो सुनि लीन पिथौराराय ॥
ब्याहन लायक अब कन्या है बोली बार बार समुझाय १६
रानी अगमा की बातैं सुनि बोले पृथीराज महराज ॥
कहे अधीरज तुम होतीहौ रानी कहा न टारों आज २०
इतना कहिकै पिरथी चलिभे औ दरबार पहूंचे आय ॥
ताहर बेटा को बुलवायो चौंड़ा बाम्हन लीन बुलाय २१
कलम दवाइति कागज लैकै चिट्ठी लिखन लाग सरदार ॥
शिरी सरबऊ शिरिपत्री करि पाछे आपन राम जुहार २२
पहिलि लड़ाई है द्वारेपर मड़ये कठिन चली तलवार ॥
खान कलेवा लड़िका आई तबहूं मूड़ कटावब यार २३

इतनी जुरेति ज्यहिके होवै टीका लेय हमारो सोय ॥
नहीं बिधाता की मर्जी ना कन्या व्याह और विधिहोय २४
इतना लिखिकै पृथीराज ने नाई बारी लीन बुलाय ॥
साल दुसाला मोतिन माला चीरा कलँगी लीन मँगाय २५
तिरपन पलकी अस्सी गजरथ उम्दा घोड़ा सवाहजार ॥
धरिकै तोड़ा दो मुहरन का अच्छा थार सूबरण क्यार २६
तीनि लाखको टीका दैकै सबको हाल दीन समुझाय ॥
नगर मोहोबे कोउ जायो ना ओछी जाति बनाफरराय २७
चिट्ठी दीन्ह्यो फिरि ताहर को ताहर चलिभे शीश नवाय ॥
नाई बारी चौंड़ा ताहर फाटक पार पहूंचे आय २८
ताहर बैठे दलगंजन पर चौंड़ा एकदन्त असवार ॥
कूच करायो फिरि दिल्ली ते दूनों चलत भये सरदार २९
आठ रोज को धावा करिकै झुन्नागढ़ै पहूंचे जाय ॥
लड़िका क्वारो गजराजा को पाती तुरत दीन पकराय ३०
पढ़िकै चिट्ठी गजराजा ने टीका तुरत दीन लौटार ॥
तहँते पहुँचे फिरि बौरीगढ़ जहँपर रहैं यादवा यार ३१
तिनहुन टीका जब लीन्ह्यो ना नरवर फेरि पहूंचे जाय ॥
नरपति राजा नरवरवाला सोऊ टीका दीन फिराय ३२
गंगाधर बूंदी का राजा त्यहि दरबार गये फिरि धाय ॥
चिट्ठी पढ़िकै सोऊ ठाकुर टीका तुरत दीन लौटाय ३३
ताहर बोले फिरि चौंड़ाते दादा कही हमारी मान ॥
चार महीना घूमत ह्वैगे अब हम भये बहुत हैरान ३४
जल्दी चलिये अब उरई को जहँपर बसै महिल परिहार ॥
यह मन भाय गई चौंड़ा के हाथी उपर भयो असवार ३५

चढ़ि दलगंजन की पीठी पर ताहर नाहर भयो तयार ॥
नाई बारी सँग में लीन्हे पहुँचे माहिल के दरबार ३६
आवत दीख्यो जब ताहर को माहिल बहुत गयो घबड़ाय ॥
माहिल बोले फिरि ताहर ते बेटा कुशल देउ बतलाय ३७
ताहर बोले फिरि माहिल ते ठाकुर उरई के सरदार ॥
टीका लाये हम बहिनी का घूमत बिते महीना चार ३८
कुँवर बनावो क्यहु क्षत्री का मोको पूत आपनो जान ॥
माहिल बोले तब ताहर ते मानो कही बीर चौहान ३९
अजयपाल कनउज का राजा राजन मध्य बीर सरदार ॥
ताको लड़िका रतीभान भो जाकी जगजाहिर तलवार ४०
ताको लड़िका लाखनि राना टीका तासु चढ़ावो जाय ॥
इतना सुनिकै ताहर चौंड़ा तुरतै कूचदीन करवाय ४१
जायकै पहुँचे फिरि कनउज में जहँपर भरी लाग दरबार ॥
को गति बरणै चन्देले कै आली खानदान सरदार ४२
ताहर दीख्यो जब जयचँद को तुरतै कीन्ह्यो राम जुहार ॥
चिट्ठी दीन्ह्यो फिरि जल्दी सों लीन्ह्यो कनउजके सरदार ४३
पढ़िकै चिट्ठी राहुट ह्वैगा नैना अग्निबरण भे लाल ॥
लै जा चिट्ठी कहुँ अनतै को मेरो बड़ो पियारो बाल ४४
ताहर चौंड़ा दूनो जरिकै तुरतै कूच दीन करवाय ॥
पार उतरिकै श्रीयमुना के उरई निकट पहूँचे आय ४५
मलखे ठाकुर त्यहि समया में मारन आयो तहां शिकार ॥
ताहर चौंड़ा मलखे ठाकुर मारग भेंटिगये सरदार ४६
कुशल प्रश्न ताहर सों कहिकै बोला बचन बीर मलखान ॥
कौने मतलब को निकरेहौ नाहर दिल्लीके चौहान ४७

सुनिकै बातैं ई मलखे की ताहर हाल गयो सवगाय ॥
मलखे बोले फिरि ताहर सों लड़िका तुम्हैं देयँ बतलाय ४८
संग हमारे कछु दूरी तुम औरो चलो बीरचौहान ॥
इतना सुनिकै दूनों चलिभे मोहवे गये तीनहू ज्वान ४९
ताहर बोले तहँ मलखे ते यहुहै कौन शहर मलखान ॥
मलखे बोले तहँ ताहर सों यहहै नगर मोहोबा ज्वान ५०
यहँको राजा परिमालिक है ब्रह्मा लड़िका तासु कुँवार ॥
तोरी बहिनी सों त्यहि ब्याहौं साँची बात मानु सरदार ५१
सुनिकै बातैं ये मलखे की ताहर बहुत गयो शर्माय ॥
ऐसी बातै का तुम बोलै ब्याह न करैं बनाफरराय ५२
नहीं आज्ञा दिल्लीपति कै टीका नगर मोहोबे जाय ॥
खरबरि हमरी का नाहीं है ठाकुर काह गयो बौराय ५३
सुनिकै बातैं ये ताहर की बोला बचन बीर मलखान ॥
थाँसि सिरोही मुँहमें देवों जोफिरि ऐस कहै चौहान ५४
इतनी सुनिकै ताहर ठाकुर पाती तुरत दीन पकराय ॥
मूड़ कटाई सो ब्याहै माँ नाहर जौन पिथौराराय ५५
ताका बाना जग मर्दाना मारै शब्द ताकिकै बान ॥
परै निशाना पूरशब्द पर ता सँग कौन लड़ैया ज्वान ५६
सुनिकै बातैं ये ताहर की बोला तुरत बनाफरराय ॥
लड़ै मरैका कछु डर नाहीं यहही धर्म सनातन भाय ५७
रीछ बाँदरन सँग में लैकै लङ्का विजय कीन भगवान ॥
ग्वालन बालन सँगमा लैकै कंसै हना कृष्ण बलवान ५८
काह हकीकति है दिल्ली कै चलिकै विल्ली देउँ बनाय ॥
पीरि खरभिल्ली दिल्ली जाई बिल्ली तुरतै देउँ नवाय ५९

कैसो दिल्ली में गिल्ली सम पिल्ली पूत पिथौराराय ॥
लिल्ली घोड़िन के चढ़वैया लड़िहैं कौन तहाँपर आय ६०
चौंड़ा बोला तहँ मलखे ते चलिये जहाँ चँदेलोराय ॥
सुनिकै बातैं ये चौंड़ा की तीनों अटे महल में जाय ६१
देखिकै सूरति मलखाने कै बोला मोहबे का सरदार ॥
हाल बतावो सब सिरसा को ओ बिरमा के राजकुमार ६२
हाथ जोरिकै मलखे बोले दादा मोहबे के महराज ॥
मनोकामना सब पूरण हैं तुम्हरीकृपा सुफल सबकाज६३
टीका लाये ये दिल्ली सों मैं ब्रह्माका करों बिवाह ॥
यही कामना यक बाकी है साँची मानु कही नरनाह ६४
पाती दीन्ह्यो मलखाने ने बांचन लाग रजापरिमाल ॥
डसे भुवंगम लहरैं आवैं कहरन लाग तुरत नरपाल ६५
हाथ जोरिकै ऊदन बोले दादा मोहबे के महराज ॥
टेक न टारैं मलखे दादा तासों करे बनी यहु काज ६६
सुनिकै बातैं ये ऊदन की बोले तुरत रजापरिमाल ॥
हाल बतावो सब मल्हनाको वाको बड़ो पियारो बाल ६७
मोहिं बुढ़ापा की लाठी है ब्रह्मा बड़ा पियारा मान ॥
नागी राजा दिल्लीवाला ठाकुर समरधनी चौहान ६८
टेक कठिनहै मलखाने कै पूरण यहौ हृदय बिश्वाश ॥
जियत न देखैं हम काहू कर सबकर होय वहाँपर नाश ६९
पढ़िकै चिट्ठी पृथीराज की हमरे गई करेजे हूक ॥
जानि बूझिकै जस मलखे की ऐसी करै कौन नर चूक ७०

सवैया ॥

सुनिकै नृपबैन तबै बलऐन रवले मलखे ललिते अनखाई ।

कउनसो काज अकाज भयो महराज गयउ जहँ लाज गवाँई ॥
सुक्खको साज समाज करउ रघुराज सदा मम लाज बचाई ।
घबड़ानको आज न काज कछू हम ब्याहकरैं बछरा जडहाई ७१

सुनिकै बातैं मलखाने की राजा गयो सनाकाखाय ।
मलखे चलिभे फिरि महलनको मल्हना पास पहूंचे जाय ७२
चिट्ठी पढ़िकै पृथीराज की मलखे हाल दीन बतलाय ।
सुनिकै चिट्ठी पृथीराज की मल्हनागई तुरत कुँभिलाय ७३
तारा टूटे आसमान में थर थर धरा गई तब हाल ।
चील्है छाईं राजमहल में रोवन लागे श्वान शृगाल ७४
मल्हना बोली तब मलखे ते अशकुन बहुत परैं दिखलाय ।
ब्बारो ब्रह्मा घरमें रहिहै टीका आप देउ लौटाय ७५
सुनिकै बातैं ये मल्हना की मलखे बोले वचन रिसाय ।
ब्याह विधाता यह रचिराखा टीका कौन सकै लौटाय ७६
सदा न फूलै कहुँ बन तोरई माई सदा न सावन होय ।
सदा जवानी नहिं स्थिर है माई सदा न वर्षा होय ७७
टीका फेरो जो दिल्ली का माता होउ जगत बदनाम ।
जातिके ओछे मोहबे वाले यह है देश-देश सरनाम ७८
होय नतैती जो दिल्ली में पूरण होयँ हमारे काम ।
झुन्ना नैनागढ़ माड़ो में हमपर कृपाकीन सियराम ७९
ये सब अशकुन हैं ताहर को माता कहां ज्ञान गा त्वार ।
औबै कबुतरी ना बुड्ढी मै ना बल खाय गई तलवार ८०
बार जो बाँका जा ब्रह्मा का हमरो मूड़ लियो कटवाय ।
बातैं सुनिकै ये मलखे की मल्हना दीन्ह्यो बाँह गहाय ८१

जस मनभावै मलखाने के तैसी करो बनाफरराय ॥
बड़ी खुशीभै मलखाने के फूले अंग न सके समाय ८२
बड़ी प्रशंसाकी मल्हना की मलखे बार बार शिरनाय ॥
शाका चलिहै महरानी तव ईजति हमरी लियो बचाय ८३
वारु न बांका इनका जैहै ओ महरानी बात वनाय ॥
जहाँ पसीना इनका गिरिहै तहँ मैं देहौं खून बहाय ८४
करो तयारी अब जल्दी सों ताहर टीका देय चढ़ाय ॥
बातैं सुनिकै मलखानेकी मल्हना हुकुम दीन फर्माय ८५
बाँदी लीपन चौका लागी छींक्यो एक पुरुषने आय ॥
मल्हना बोली तब मलखे ते अशकुन बहुत परैं दिखराय ८६
टीका फेरो तुम दिल्ली का मानो कही बनाफरराय ॥
बातैं सुनिकै ये मल्हना की बोला तुरत लहुरवाभाय ८७
टीका फिरिहै जो दिल्ली का होई देश हँसौवा माय ॥
कीन तयारी जब माड़ो की तबहूं छींक भई थी आय ८८
तबहूं रोंक्यो महरानी तुम माड़ो फते कीन हम जाय ॥
शकुन हमारो फिरि वैसै भा शंका कौन गई मन आय ८९
सुनिकै बातैं उदयसिंह की मल्हना टीक लीन ठहराय ॥
ऊदन मलखे द्वउ मनिहैं ना अब अनहोनी परै दिखाय ९०
बड़ा लड़ैया दिल्ली वाला है सब राजन में शिरताज ॥
तुम्ही गोसइयाँ दीनबन्धुहौ स्वामी रामचन्द्र महराज ९१
परो साँकरो अब हमपर है रावन हार तुम्ही रघुराज ॥
हम सुनिराखा है विप्रन सों राख्यो सदा भक्तकी लाज ९२
गौतम नारी को तुम तारा केवट लीन्ह्यो हृदय लगाय ॥
मांस अहारी गृद्धै तार्यो भीलिनिदर्शदिखायो जाय ९३

सोई दशरथ के रघुरैया नैया तुही लगैया पार॥
एक पूतकी मैं मैयाहौं ताकी कुशल किह्योकरतार ९४
सुमिरन करिकै रघुनन्दन को मल्हना करनलागि घरकाम॥
मलखे ठाकुर त्यहिसमया में ताहर वेगि बुलावा धाम ९५
जितने वासी रहैं मुहवे के आये सबै नारि नर द्वार॥
सात सुहागिल त्यहि समया में गावन लगीं मंगलाचार ९६
वड़ी भीर भै परिमालिक घर कहुँ तिलडरा भूमि ना जाय॥
चूड़ामणि पण्डित तहँ आयो साइतिं तुरत दीन बतलाय ९७
नव पिचकारी भरिकेशरि रँग मारैं एक एक को धाय॥
धूरि उड़ाई तहँ अवीर की महलन गई लालरी छाय ९८
चौक पुराई गजमोतिन सों पीढ़ा तहाँ दीन धरवाय॥
चौड़ा ताहर द्वउ ठाढ़े थे ब्रह्मा गये तहाँपर आय ९९
को गति वरणै परिमालिक कै लोहा छुये सोन ह्वैजाय॥
पारस पाथर ज्यहिके घरमाँ त्यहिकी द्रव्यसकैकोगाय १००
ऊदन बोले तहँ ताहर सों अब तुम टीका देउ चढ़ाय॥
साँग गाड़ दइ तब ताहरने औयहवोल्यो भुजा उठाय १०१
साँग उखारैं ब्रह्मा ठाकुर तौ हम टीका देई चढ़ाय॥
रीति हमारे यह घरकी है साँचे हाल दीन बतलाय १०२
सात तवा लोहे के नीचे तापर साँग गाड़ि हम दीन॥
साँग उखारैं ब्रह्मा ठाकुर तौहमब्याहवहिनकाकीन १०३
देखि तमाशा यहु ताहर का मल्हना बोली बचन रिसाय॥
असगुनकीन्ह्योत्वैरमहलनमां टीका तुरत देउ लौटाय १०४
बिना बियाहे ब्रह्मा रहि हैं तौ नहिं होय हमारी हान॥
अस्मिन तुम्हारी को लैलीन्ही मानों नहीं कही मलखान १०५

सुनिकै बातैं ये मल्हना की ऊदन बोले माथ नवाय ॥
टीका फेरागा दिल्ली का तौमुँहकौन दिखावाजाय १०६
इतना कहिकै ऊदन ठाकुर तुरतै डारा सांग उखार ॥
ऊदन बोले फिरि ताहर सों नाहर दिल्ली के सरदार १०७
हम तो नौकर परिमालिक के जिन यह डारा सांग उखार ॥
ऐसे नौकर जिनके घरमाँ तिनसे कौन करै तलवार १०८
सुनिकै बातैं ये ऊदन की ताहर मनै गयो शर्माय ॥
बीरा दीन्ह्यो ताहर ठाकुर ब्रह्मा बीरागये चबाय १०६
छींक तड़ाका भै सम्मुखमाँ मल्हना रोय उठी घबड़ाय ॥
ब्याह न करिहौं मैं ब्रह्मा का मानो कही बनाफरराय ११०
हमैं चाह है नहिं भौंरिन कै ना कछु बहू केरि परवाह ॥
म्वर इकलौता यहु जीवै जग औ फिरि बनेरहैं नरनाह १११
बहुतक अशकुन हम देखे हैं कैसे धरा जाय जिय धीर ॥
पुत्रघाव सों दशरथ मरिगे यासों और कौन जगपीर ११२
भला न देखैं यहि ब्याहे में मानो कही बीर मलखान ॥
जो नहिं मानो मलखाने तुम हमरे जाय गानपर आन ११३
बातैं सुनिकै ये मल्हना की बोले फेरि बीर मलखान ॥
घरको आवो टीका फेरैं तौसब हँसिहै देशजहान ११४
बिटिया आहिउ तुम ठाकुर की ठाकुर घरै वियाही माय ॥
नहिं क्यहु बनियाकी महतारी जो मन बारबार पछिताय ११५
हल्दी मिरचा हम बेचैं ना ना हम करैं बणिज ब्यापार ॥
हम तो लरिका हैं ठाकुर के औ दिनराति करैं तलवार ११६
धन्य सराहैं हम कुन्ती का आपन दीन्हे पुत्र पठाय ॥
युद्ध मचायो तिन कौरव ते औ यशरहा जगतमें छाय ११७

बचे युधिष्ठिर समरभूमि ते पाँचो भाय कृष्ण महराज॥
गै ना रहिगे त्यउ दुनिया माँ रहिगै एक जगतमें लाज ११८
जप तप होवै नहिं कलियुग में ना कछु दान पुण्य अधिकाय॥
जो मरिजावैं समरभूमि में पावैं स्वर्गलोक को भाय ११९
इतना कहिकै मलखे ठाकुर टीका तुरत दीन चढ़वाय॥
चारो नेगिन को बुलवायो भूषण वस्त्र दीन पहिराय १२०
बहुधन दीन्ह्यो फिरि चौंड़ा को अपने हाथ बनाफरराय॥
चूड़ामणि पंडित ते बोल्यो अबतुमलगनदेउबतलाय १२१
सुनिकै बातैं मलखाने की पंडित बोला लगन विचार॥
माघ महीना कृष्ण पक्ष में तेरसि तिथी शुक्रको बार १२२
नीकी साइति मलखाने है सो हम तुमका दीन बताय॥
सुनिकै बातैं ये पंडित की औ ताहरको दीन सुनाय १२३
यादि राखियो यह दिन भाई दिल्ली ब्याहकरब हम आय॥
बातैं सुनिकै ये मलखे की ताहरचलिभेशीशनवाय १२४
दगीं सलामैं सौ तोपन की धुवना रहा सरग मड़राय॥
अद्भुत शोभा भै मोहबे के घर घर ढोलक परै सुनाय १२५
चलैं पिचका कहुँ केशरि के कहुँकहुँ अबिरगुलालउड़ाय॥
पान मोहोबे के जग जाहिर लाली पीकैं परैं दिखाय १२६
कहुँ कहुँ छैला गैला ठाढ़े बेला हार परैं दिखराय॥
कहूँ चमेला के तेला को रहेअलबेलाजुलुफलगाय १२७
कहुँ कहुँ हेला मेला कैकै बुलबुल बुलबुल रहे लड़ाय॥
उड़ैं तमाखू कहुँ हुक्कन में गुड़गुड़गुड़गुड़रहेमचाय १२८
गारु मारुकै मोहरि बाजै कहुँ कहुँ हाव हाव करनाल॥
कहुँ पैनहा बालक बद्लैं कहुँकहुँलड़ैंमल्लजसकाल १२९

पटा बनेठी बाना कहुँ कहुँ कहुँकहुँ गदका को घमसान ॥
बाढ़ि धरावैं कहुँ कहुँ क्षत्री कहुँकहुँहनैंनिशानाज्वान १३०
देखि तमाशा चौंड़ा ताहर मनमें बड़े खुशी ह्वैजायँ ॥
कूच कराये द्वउ मोहबे ते दिल्लीशहरगये नगच्याय १३१
ह्याँसुधि पाई माहिल ठाकुर दिल्ली अटे अगाड़ी जाय ॥
माथनवायो जब माहिल ने खातिर कीन पिथौराराय १३२
सोने कि चौकी में बैठास्यो राजा दिल्लीके महराज ॥
बोले पिरथी फिर माहिल ते तुम्हरोकौन करी हमकाज १३३
बोले माहिल फिर पिरथी ते मानो कही सत्य महराज ॥
ब्याहजो कीन्ह्यो तुम मोहबे में खोई सबै आपनी लाज १३४
जाति बनाफरकी ओछी है है सब जातिन केरि उतार ॥
इतना कहतै चौंड़ा ताहर दोऊ आयगये दरबार १३५
सूरति दीख्यो जब ताहर की गरुई हाँक दीन ललकार ॥
हमजो बरजा तुमको ताहर ना तुम मानी कही हमार १३६
सुनिकै बातैं ये राजा की ताहर हाथजोरि शिरनाय ॥
कही हकीकति सब मलखे की ताहर बारबार समुझाय १३७
माहिल बोले फिर राजा ते नाहर दिल्ली के सरदार ॥
टीका फेरो तुम जल्दी सों इतनी मानो कही हमार १३८
इतना सुनिकै चौंड़ा चलिभा ताहर बोले बचन उदार ॥
बड़े लड़ैया मोहबे वाले जिनके बाँट परी तलवार १३९
ब्याहन आवैं जब तुम्हरे घर तब तुम मूड़ लिह्यो कटवाय ॥
टीका फिरिहै अब दादा ना तुमते सत्यदीन बतलाय १४०
यह मन भाय गई माहिल के तुरतै कीन्ह्यो रामजुहार ॥
बिदा माँगिकै पृथीराज सों चलिभा उरई का सरदार १४१

खेत छूटिगा दिननायक सों झंडा गड़ा निशाको आय॥
तारागण सब चमकन लागे संतन धुनी दीन परचाय १४१
माथनवावों पितु अपने को ह्याँते करों तरँग को अन्त॥
रामरमा मिलि दर्शन देवो इच्छा यही मोरि भगवन्त १४२

इति श्रीलखनऊनिवासि (सी, आई, ई) मुंशीनवलकिशोरात्मज बाबूप्रयागनारायणजीकी आज्ञानुसार उन्नामप्रदेशान्तर्गतपँडरीकलानिवासिमिश्रवंशोद्भव बुधकृपाशंकरसूनुपं०ललिताप्रसादकृतब्रह्माटीकावर्णनोनामप्रथमस्तरंगः॥१॥

सवैया॥

श्री रघुनाथ अनाथन नाथ सनाथ करो अब तो भगवाना।
और न आश निराशकरो नहिं देखिचुके सब ठौर ठिकाना॥
मात पिता अरु भ्रातको नात सबै तुमहीं यहही मनजाना।
गात सुखात सबै दिन जात नहीं ललितें कछु झूठबखाना १

सुमिरन॥

दोउ पद ध्यावों रघुनन्दन के बन्दनकरों जोरि द्वउहाथ॥
नहीं सहायक कउ काको है स्वामी दीनबन्धु रघुनाथ १
बिना तुम्हारे को परमारथ अन्त में देइ कौन को साथ॥
श्री जगतारण भवभय हारण तुमहीं सदा हमारे नाथ २
को अस दुनियामाँ पैदा भा जो तरिगयो बिना तव नाम॥
माता भ्राता अरु ताता ना अन्तम अवैं आपने काम ३
तुम्ही गोसइयाँ दीनबन्धु हौ सीतापती चराचर नाथ॥
नाललित हमरी द्विज देही का जावै समय हाथ बेहाथ ४
शिव औ ब्रह्मा कोउ पायो ना गाय कै पार तुम्हारी गाथ॥
त्यहि को गावों कस मानुष मैं स्वामी दीनबन्धु रघुनाथ ५

छूटि सुमिरनी गै रघुबर के सुनिये ब्रह्मा केर बिवाह ॥
फौजे सजिहैं आल्हा ऊदन करि हैं समर केर उत्साह ६

अथ कथाप्रसंग ॥

माहिल चलिभे जब दिल्ली ते मल्हना महल पहूंचे आय ॥
बड़ी खुशाली भै मल्हना के हमरे बूत कही ना जाय १
मल्हना बोली फिरि माहिल ते भैया उरई के सरदार ॥
टीका चाढ़िगा है दिल्ली का ब्रह्मा भैने जौन तुम्हार २
बहुतकअशकुन त्यहिसमयाभे जियरा धीर धरा ना जाय ॥
मैं समुझायों भल मलखे को पैना मन्यो बनाफरराय ३
त्यही समैया ते भैया अब रहि रहि मोर प्राण घबड़ायँ ॥
माह महीना जब ते आवा तब ते भूख नींद गै भाय ४
कलनहिं पावैं हम पलँगा में औ घरदीखे नित्त डेरायँ ॥
बिरमा द्यावलिके लड़िका सब हमको शत्रु रूप दिखरायँ ५
पै अब करतब कछु सूझैना साँचे हाल दीन बतलाय ॥
बातैं सुनिकै ये मल्हना की माहिल बोले बचन बनाय ६
काम हमारो रहै पिरथी ते हम दरबार मँझावा जाय ॥
सुनी हकीकति तहँ पिरथी की बहिनी सांच देयँ बतलाय ७
जाति बनाफर की ओछी है पिरथी बार बार पछितायँ ॥
ब्याहन अइहैं हमरे घरमाँ सबके मूड़ लेब कटवाय ८
चलिकै ब्रह्मा इकलो आवै तौ बिनब्याधि ब्याह ह्वैजाय ॥
चन्द्रबंश में उइ पैदा हैं नहिं कछुउजुरु हमारे भाय ९
हम समुझावा तब पिरथी को ऐसै करब मोहोबे जाय ॥
भैने हमरो ब्रह्माठाकुर औ बहनोई चँदेलोराय १०
बड़ी खुशाली भै पिरथी के फूले अंग न सक्यो समाय ॥

भलो आपनो जो तुम चाहौ इकलो ब्रह्मा देउ पठाय ११
हमहूं जैबे त्यहि संगैमाँ तुम्हरे काज सिद्ध ह्वैजायँ॥
सुनिकै बातैं ये माहिल की मल्हना बोली मन हर्षाय १२
कहा तुम्हारो हम टारब ना भैया उरई के सरदार॥
इकलो ब्रह्मा तुम लै जावो जामें होय नहीं तहँ मार १३
माहिल बोले फिरि मल्हनाते बहिनी मानो कही हमार॥
चोरी चोरा काम निकालो नाकछु रीतिभांति की ब्यार १४
यह मन भायगई मल्हना के चुप्पे पलकी लीन मँगाय॥
ब्रह्माठाकुर को बुलवायो औ पलकीमाँ दीन विठाय १५
लैकै पलकी माहिल चलिभे ऊदन अटा तहाँ पर आय॥
हाल जानिकै सब माहिल को चुप्पे धावन लीन बुलाय १६
लिखिकै चिट्ठी मलखाने को ऊदन तुरतै दीन पठाय॥
चिट्ठी पढ़िकै मलखाने ने औ सुलखेको लीन बुलाय१७
कहि समुझायो सब सुलखेको सोऊ चला वेगिही धाय॥
जायकै पकरयो सो माहिलको तुरतै कैद लीन करवाय १८
लैकै पलकी औ माहिल को सिरसागढ़ै पहूँचा आय॥
बाँधि जँजीरन फिरि माहिलको फाटक पास दीन बैठाय १९
ऊदन चलिभे फिरि महलनको मल्हनै शीश झुकावाजाय॥
हाथ जोरिकै ऊदन बोले माता साँच देयँ बतलाय २०
माहिल मामा की बातन में इकलो ब्रह्मा दियो पठाय॥
कुशल न होइहै तहँ ब्रह्माकी साँची बातकहैं हम माय २१
इतना कहिकै ऊदन चलिभे दशहरिपुरै पहूँचे आय॥
कही हकीकति सब आल्हासों ऊदन बार बार समुझाय २२
चिट्ठी लिखिकै मलखाने ने औ परिमालै दीन जनाय॥

नेवता पठ्वो सब राजन को पहँहीं कुँवाँ बियाहैं माय २३
धायकै चिट्ठी मलखाने की सोई कीन रजापरिमाल ॥
गायकै नेवता परिमालिक का आये सबै तहाँ नरपाल २४
तम्बू गड़िगे महराजन के झण्डा आसमान फहरायँ ॥
सुनवाँ बोली ह्याँ ऊदन ते तुम सुनिलेउलहुरवाभाय २५
ब्याह नगीचे है ब्रह्माका ना मोहबे का भयो तयार ॥
काह तुम्हारे मनमाँ व्यापी देवर बेंदुल के असवार २६
सुनिकै बातैं ये भौजी की बोले उदयसिंह सरदार ॥
हम नहिं जावैं अब मोहबे का भौजी मानों कही हमार २७
सुनिकै बातैं ये ऊदन की सुनवाँ कहे बचन मुसुकाय ॥
दूध पियायो मल्हना रानी सेयो तुम्हैं बनाफरराय २८
तुम्है न चहिये अस बघऊदन धोखा देउ समय पर आय ॥
धोखो दीन्हो माहिल मामा मलखे कैद लीन करवाय २९
कुशल आपने सब लड़िकाकी चाहैं सदा लहुरवा भाय ॥
को जगरक्षक है जननी सम ऊदन काह गये बौराय ३०
करो तयारी अब भैया सँग मानो कही बनाफरराय ॥
इतना सुनिकै ऊदन चलिभे आल्है खबरिजनायोजाय ३१
बातैं सुनिकै बघऊदन की आल्हा लश्करलियोसजाय ॥
बैठे हाथी आल्हा ठाकुर मनमें सुमिरि शारदामाय ३२
चढ़ा बेंदुला की पीठी पर नाहर उदयसिंह सरदार ॥
दशहरिपुरवा ते चलिकै फिरि पहुंचे मोहबे के दरबार ३३
खातिर कीन्ह्यो परिमालिक ने दोऊ भाय बैठि शिरनाय ॥
भई तयारी फिर सिरसा की सबकोउ भ्रटे तहाँपर जाय ३४
गई पालकी तहँ मल्हना की सिरसा भीर भई अधिकाय ॥

आल्हा दीख्योजब माहिल को मनमें गई दया तब आय ३५
फिरि ललकारयो मलखाने को यहुका कौन लहुरवा भाय॥
जल्दी छोरो तुम मामा को हमसों बिपतिदीखिनाजाय ३६
सुनिकै बातैं ये आल्हा की मलखे तुरते दीन छुड़ाय॥
कुँवाँ बियाह्यउ ब्रह्मा ठाकुर पलकीचढ़्योगणेशमनाय ३७
भई तयारी फिरि बिवाह की सबियाँ क्षत्री भये तयार॥
हम ना जैबे अब दिल्ली को बोला उरई का सरदार ३८
बातैं सुनिकै ये माहिल की बोला उदयसिंह त्यहिबार॥
तुम ना जैहौ जो दिल्ली को तौ को करिहै काम हमार ३९
बाँधि जँजीरन हम लैजैहैं मामा उरई के सरदार॥
बातैं सुनिकै ये ऊदन की माहिल तुरत भये तय्यार ४०
हाथी सजिकै आगे चलि भे पाछे चले घोड़ असवार॥
पैदर सेना त्यहि पाछे सों तोपैं चलिभईं पांच हजार ४१
आगे हाथी परिमालिक का पाछे सबै शूर सरदार॥
पाग बैंजनी शिरपर बाँधे ऊदन बेंदुलपर असवार ४२
कूच कराये सिरसागढ़ सों दिल्लीशहर गये नगच्याय॥
दिल्ली केरे फिरि डाँड़ेपर तम्बू तुरत दीन गड़वाय ४३
ध्वजपताका एकमिल ह्वैगे नभमाँ गई लालरी छाय॥
लागि कचहरी परिमालिककी शोभा कही बूत ना जाय ४४
आल्हा बोले चूड़ामणि सों पंडित साइति देउ बताय॥
लैकै पत्रा पंडित बोले मानो कही बनाफरराय ४५
मीनलग्न की अब बिरिया है ऐपननारि देब पठाय॥
बातैं सुनिकै चूड़ामणि की मलखे रुपना लीन बुलाय ४६
ऐपनबारी बारी लैकै दिल्ली तुरत देब पहुँचाय॥

बातैं सुनिकै मलखाने की रुपना हाथजोरि शिरनाय ४७
उत्तर दीन्ह्यो मलखाने को मानो कही बनाफरराय ॥
नैनागढ़ झुन्नागढ़ नाहीं ह्याँपर बसै पिथौराराय ४८
लौटब मुशकिल है दिल्ली ते पिरथी मूड़ लेइ कटवाय ॥
औरो बारी हैं मोहबे के तिनका आप देयँ पठवाय ४६
बातैं सुनिकै ये रुपना की बोले उदयसिंह सरदार ॥
तेहा राखो रजपूती का बाँधो सदा ढाल तलवार ५०
जौन गोसइयाँ पैदा कीन्ह्यो सोई सदा बचावनहार ॥
बातैं सुनिकै उदयसिंह की रूपन बोला बचन उदार ५१
घोड़ा पावैं हरनागर को औ मलखे कि ढाल तलवार ॥
ऐपनवारी हम लै जावैं लावैं नहीं नेकहू बार ५२
सुनिकै बातैं ये रूपन की मलखे दीन ढाल तलवार ॥
ऐपनवारी रूपन लैकै हरनागर पर भयो सवार ५३
माथनायकै सब क्षत्रिन को तुरतै कूच दीन करवाय ॥
पिरथी केरे फिर फाटकपर रूपन तुरत पहूंचा जाय ५४
तब ल्यलकारा दरवानी ने बारो बड़ो के असवार ॥
कहँते आयो औ कहँ जैहौ ताहर समरथ राजरे क्यार ५५
सुनिकै बातैं द्वारपालजादे रूपन पास ,चन ततकाल ॥
अई बरातैं हैं मोहबे के फाटकपार निकजापरिमाल ५६
ब्याहन आये हैं ब्रह्माको रूपनवारी नाम हमार ॥
ऐपनवारी हम लाये हैं चहिये नेग म्वार अब द्वार ५७
सुनिकै बातैं ये रूपन की बोला द्वारपाल त्यहिबार ॥
नेगु तुम्हारो का द्वारे का बोलो घोड़े के असवार ५८
सुनिकै बातैं द्वारपालकी रूपन कहा बचन ललकार ॥

चारघरी भर चलै सिरोही द्वारे बहै रक्तकीधार ५९
जौन शूरमाहो दिल्ली को द्वारे देवै नेग हमार॥
ऐसे वैसे हम नेगी ना कम्मर बँधी ढाल तलवार ६०
शूर सराही हम ऊदन का मलखे सिरसा के सरदार॥
का गति वरणौं हम आल्हा की जिनसों हारिगई तलवार ६१
तिनके नेगी हम रूपन हैं राजै खबरि जनावो जाय॥
सुनिकै बातैं ये रूपन की रहिगा द्वारपाल सन्नाय ६२
सोचिसमभिकै फिरि बोलनभा रूपन काह गये बौराय॥
दहीके धोखे कहुँ भूले ना जोतैं जाय कपास चबाय ६३
एक तो ऊदन कै गिनती ना बावन चढ़ैं उदयसिंह आय॥
ह्याँपर मलखे सब घर घर हैं आल्हा कौनवस्तु हैं भाय ६४
है परिमालिक अस ठाकुर वहु जिनते पोत तसीला जाय॥
जूंठनि खावै घर घर बारी सो का रारि मचावै आय ६५
पीकै दारू को आवा है की वश सन्निपात के भाय॥
भूरिभांग जो तू खावा हो तौ हम औषधि देयँ बताय ६६
ज्ञान ठिकाने करिसागढ़ सों राजै काह सुनावैं जाय॥
सुनिकै बातैं कारि डाँड़ेपर रूपन बोला क्रोध बढ़ाय ६७

कामिल छंद ॥

आयगयो तब परिमालिककी ... कोऊ कहुँ देखिपरैना।
जानत नाहिन रूपन को अरु नाहक दुष्ट बकै बहु बैना॥
ताहर नाहर को गहिकै इकलो मलखान जिता बिन सैना।
का बड़िवात करै ललिते दिनही नहिं देखिपरै तब नैना ६८

बातैं सुनिकै ये बारी की चलिभा द्वारपाल ततकाल॥

हाथ जोरिकै महराजा को सब बारीके कहे हवाल ६९
सुनिकै बातैं द्वारपाल की यहु महराज पिथौराराय ॥
सूरज लड़िका को बुलवायो औ सबहाल कह्योसमुझाय७०
पकरिकै लावो स्यहि बारी को हमको बेगि दिखावो आय ॥
सुनिकै बातैं महराजा की सूरज चलिभा शीशनवाय ७१
दीख दुआरेपर बारी को नाहर घोड़े पर असवार ॥
शंका जाके कछु नाहीं है हाथ म लिये नाँगि तलवार ७२
हुकुम लगावा द्वारपाल को फाटक बंद लेउ करवाय ॥
फिरि ल्यलकारा रजपूतन को लावो पकरि शूरमाँ जाय ७३
हुकुम पायकै तब सूरज को तुरतै चले सिपाही धाय ॥
एँड़ लगायो हरनागर के टापन क्षत्री दीन गिराय ७४
बहुतन मार्‌यो रूपनबारी हाहाकार शब्द गा छाय ॥
देखि तमाशा सूरज ठाकुर मनमाँ बार बार पछिताय ७५
रूपनबारी के मुर्चा माँ कोऊ शूर न रोंकै पायँ ॥
उड़न बछेड़ा हरनागर ने बहुतक क्षत्री दीन गिराय ७६
फिरि फिरि मारै औ ललकारै बारी बड़ा लड़ैया ज्वान ॥
देखि तमाशा यहुबारी का ताहर समरधनी चौहान ७७
सूरज ताहर द्वउ शहजादे रूपन पास पहूँचे जाय ॥
एँड़ लगायो हरनागर के फाटकपार निकरिगा साय ७८
मारो मारो हल्ला कैकै क्षत्री सबै चले त्रिरझाय ॥
नेग लेब अब हम भौंरिन में गरुई हाँक दीन गुहराय ७९
इतना कहिकै एँड़ लगायो फौजन तुरत पहूँचा आय ॥
जैसे फागुन फगुई खेलैं लोहू छीटन गयो अन्हाय ८०
तैसे दीख्यो जब रूपन का बोल्यो उदयसिंह सरदार ॥

कहो हकीकति सब दिल्ली कै द्वारे भली कीन तलवार ८१
बातैं सुनिकै उदयसिंह की रूपन यथातथ्य गा गाय॥
सुनिकै बातैं ये रूपन की माहिल बोले वचन बनाय ८२
यह नहिं चहिये पृथीराज को जो अब रारि बढ़ावत जायँ॥
कौन दुसरिहा है आल्हा का सम्मुख लड़ै समर में आय ८३
जो मन पावैं बघऊदन का राजै तुरत देयँ समुझाय॥
नेग कराय देयँ द्वारे का सातो भाँवरि देयँ फिराय ८४
भली भली कहि ऊदन बोले माहिल घोड़ी लीन मँगाय॥
चढ़िकै घोड़ी माहिल ठाकुर दिल्ली शहर पहूँचे जाय ८५
को गति बरणै तहँ पिरथी कै भारी लाग राजदरबार॥
खाँड़ेराय पिरथी का भाई धाँधू तासु पुत्र सरदार ८६
रहिमति सहिमति जिन्सीवाले औ रणधीर लहाउर क्यार॥
भुरा मुगुलिया काबुल वाला टिहुनन धरे नाँगि तलवार ८७
देवी मरहटा दक्षिण वाला आला समरधनी मैदान॥
अंगद राजा ग्वालीयर का जगनिकक्यारमुगंताज्वान ८८
सातो लड़िका पृथीराज के तेऊ बैठि राजदरबार॥
मोती जवाहिर, गोपी, ताहर, सूरज, चन्दन ये सरदार ८९
मर्दन, सर्दन, सातो लड़िका ये रणबाघ लड़ैया बार॥
सोने सिंहासन पिरथी सोहैं त्यहिमाँजड़े जवाहिरलाल ९०
औरो ठाकुर बहु बैठे हैं एकते एक शूर सरदार॥
तहँही पहुँचो उरई वाला तुरतै कीन्ह्यो राम जुहार ९१
कियो खातिरी पृथीराजने अपने पास लीन बैठाय॥
माहिल बोला तब पिरथी ते मानो कही पिथौराराय ९२
काम न सरिहै लड़े भिड़ेने दूनों तरफ हानिहै भाय॥

जहर घुरावो तुम शरबत में औ लशकरमें देउ पठाय ६३
बिना बयारी जूना टूटै औ बिन औषधि बहै बलाय ॥
यहै तयारी अब करिडारो तौ सबकाम सिद्ध ह्वैजाय ६४
साम दाम औ दगड भेद सों क्षत्री करैं आपनो काम ॥
छल बल क्षत्री का धर्म है तुमको कौन करै बदनाम ६५
बातैं सुनिकै ये माहिल की भा मन बड़ा खुशी नरनाह ॥
स्याबसि स्याबसि उरई वाले हमका नीकि दीन सलाह ६६
बिदा मांगिकै पृथीराज सों तम्बुन फिरि पहूंचा आय ॥
हाल बतायो परिमालिक को चेउँ न करी पिथौराराय ६७
जैसे पियासा पानी पावै सूखे धान परै जस नीर ॥
बातैं सुनिकै ये माहिल की तैसे आय गयो मनधीर ६८
घड़ा मँगायो ह्याँ पिरथी ने तामें जहर दीन डरवाय ॥
चारो नेगिन को बुलवायो सूरज पूत लीन बुलवाय ६६
कह्यो हकीकति सब सूरज सों पिरथी बार बार समुझाय ॥
तुरत कहारन को बुलवायो सूरज घड़ा लीन उठवाय १००
माथनायकै फिरि पिरथी को मनमें श्रीगणेश पद ध्याय ॥
सूरज चलिभा फिरि दिल्ली सों लशकर तुरत पहूंचा आय १०१
जहँना तम्बू परिमालिक का बहिंगी तहाँ दीन धरवाय ॥
माथ नायकै परिमालिक को आपो बैठिगयो तहँ जाय १०२
मलखे बैठे हैं दहिने पर बायें बैठ उदयसिंहराय ॥
बैठ बराबर आल्हा ठाकुर शोभाकही बून ना जाय १०३
सूरज बोले तहँ राजा सों शरबत आप देउ बँटवाय ॥
करो तयारी फिरि द्वारे की साइतिआयगईनगच्याय १०४
देखा बोला महराजा सों मानो कही चँदेलो राय ॥

पहिले शरबत माहिल पीवैं पाछे सब को देउ बटाय १०५
इतना सुनिकै सूरज चलिभे तुरतै कानै जनो चढ़ाय॥
माहिल बोले तब देखाते क्षत्री काह गये बौराय १०६
पान बड़ेको पानी छोटे यहहै रीति सदा की भाय॥
भाय लहुरवा शरबत पीवैं औरो पियैं बनाफरराय १०७
माघ महीना दिन शरदी के हमरो शरबत पियै बलाय॥
शिरमें पीड़ा ऐसे होवै औ फिरि सन्निपात ह्वै जाय १०८
बातैं सुनिकै ये माहिल की देखा कुत्ता लीन बुलाय॥
पीतै शरबत कुत्ता मरिगा तब सब गये तहां सन्नाय १०९
जितना शरबत रहै बहिंगिनमें सो सब खन्दक दीन डराय॥
भागिकै सूरज दिल्ली आये औ दरबार पहूंचे आय ११०
खबरि जनाई सब राजा को नेगी चले यहां ते धाय॥
भागत नेगिन ऊदन देखा पकरा तुरत सबनको जाय १११
दया आयगै तब आल्हा के तुरतै नेगी दीन छुड़ाय॥
नेगी चलिभे सब दिल्ली को औ दरबार पहूंचे आय ११२
कही हकीकति सब पिरथी ते नेगिन बार बार शिरनाय॥
माहिल बोले परिमालिक ते मानो कही चँदेलेराय ११३
यह नहिं करतब है पिरथी के लरिकन घाटि कीन ह्याँ आय॥
रक्षक ज्यहिको है परमेश्वर त्यहिकोबार न बाँका जाय ११४
पै रिस हमरे अस आई है सबियाँ दिल्ली डरैं खुदाय॥
काह बतावैं हम जीजा ते तुम सुनिलेउ लहुरवाभाय ११५
शङ्का हमपर है देवा की साँचे हाल देयँ बतलाय॥
हम नहिं जानत यह करतबरहै मानो कही बनाफरराय ११६
बड़ी पियारी मल्हना बहिनी औ नित खातिर करै हमारि॥

सगो भानजो ब्रह्मा हमरो तासों कौनि हमारी रारि ११७
सुनिकै बातैं ये माहिल की बोले उदयसिंह त्यहिबार॥
अब तुम जाओ फिरि दिल्लीको मामा उरई के सरदार ११८
शंका तुमपर नहिं काहूकी मामा मानो कही हमारि॥
रक्षक ज्यहिकी जगदम्बा है त्यहिकोसकैकौनजगमारि ११९
सुनिकै बातैं ये ऊदन की माहिल घोड़ी लीन मँगाय॥
चढ़िकै घोड़ी माहिल ठाकुर फिरि दरबार पहूँचे जाय १२०
बड़ी खातिरी राजा कीन्ह्यो माहिल बैठिगयो शिरनाय॥
माहिल बोले फिरि राजा ते मानो कही पिथौराराय १२१
खंभ गड़ावो दरवाजे पर तिनपर कलश देउ धरवाय॥
जौंरा भौंरा दोनों हाथी तिनके आगे देउ छुड़ाय १२२
प्यायकै दारू तिन हाथिन को तुरतै मस्त देउ करवाय॥
द्वारे आवैं जब परिमालिक तबयहबोल्योवचनसुनाय १२३
हथी पछारो म्वरे द्वार में तुरतै भाँवरि देयँ डराय॥
कुल की हमरे यह रीती है मानो कही चँदेलेराय १२४
अबनी बचिहैं नहिं द्वारे पर मानो कही पिथौराराय॥
इतना कहिकै माहिल चलिभे तम्बुन फेरि पहूँचे आय १२५
भई तयारी ह्याँ दिल्ली में द्वारे खम्भ दीन गड़वाय॥
जो कुछ माहिल बतलावाथा सो सब सामा दीन कराय १२६
माड़ो छावा गा जल्दी सों जल्दी चौक भई तय्यार॥
अईं सुहागिल बहु दिल्ली की गावनलगीं मंगलाचार १२७
देखिकै सूरति ह्याँ माहिल की मलखे कहे वचन यहिबार॥
खबरि बतावो सब दिल्ली की मामा उरई के सरदार १२८
सुनिकै बातैं ये मलखे की माहिल बोले वचन बनाय॥

करो तयारी अब द्वारे की मानो कही बनाफरराय १२९
मलखे बोले परिमालिक ते दूनो हाथ जोरि शिरनाय॥
हुकुम जो पावैं महराजा को ह्याँते कूच देयँ करवाय १३०
बातैं सुनिकै मलखाने की राजा हुकुम दीन फरमाय॥
बाजे डंका अहतंका के हाहाकारी शब्द सुनाय १३१
हथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे बाँके घोड़नपर असवार॥
जितनी फौजैं परिमालिक की सजियाँ वेगि भईं तय्यार १३२
मनियादेवन को सुमिरन करि गजपर बैठि रजापरिमाल॥
मारु मारुकै मौहरि बाजी बाजी हावहाव करनाल १३३
गर्द उड़ानी तव पिरथी माँ लोपे अन्धकारसों भान॥
मारू तुरही बाजन लागीं घूमनलागे लालनिशान १३४
आगे पलकी भै ब्रह्माकै पाछे चले सिपाही ज्वान॥
घोड़ी कबुतरी के ऊपरमाँ दहिने चला वीरमलखान १३५
बँधें बेंदुला को चढ़वैया नाहर लिये नाँगि तलवार॥
पाग बैंजनी शिरपर सोहै तापर कलँगी करै बहार १३६
गर्द न समभै क्यहु दुशमनको क्षत्री उदयसिंह सरदार॥
शोभा वरणै को आल्हा की साँचो धर्मरूप अवतार १३७
भा खलभल्ला औ हल्ला अति दिल्ली पास गये नगच्याय॥
चन्दन बेटा को बोलवायो यहु महराज पिथौराराय १३८
भई तयारी अगवानी की दिल्ली सजन लागि सरदार॥
रथ औ हाथिन में बहु बैठे छैला घोड़न मे असवार १३९
चढ़ी सजाई भै ठकुरनकै छैला चलिभे बाँधि कतार॥
भाला बलछी फरसा बाँधे कोऊ लिये ढाल तलवार १४०
दगीं सलामी दुहुँ तरफन ते धुँवना छायगयो असमान॥

आतशबाजी की शोभा अति माला तारा के अनुमान १४१
कउँधालपकनि खड्गचमकनि हुक्कनि गुड़गुड़दीन मचाय॥
पैग पैग पर दूनों चलि चलि रुकिरुकिपैगपैगपर जायँ १४२
को गति बरणै महराजन कै मानो देव भूमिगे आय॥
दो विचवानी द्वउ दिशि घूमैं रुकिरुकिपैगपैगपर जायँ १४३
उठैं सुगन्धैं तहँ अतरन की बेला और चमेला हार॥
का गति बरणों मैं निवारि की क्षत्री किये फूल शृंगार १४४
नीली पीली जंगाली औ लाली पगड़िनकेरि कतार॥
मुँदरी छल्ला मोहनमाला क्यहुगरपरामोतिनकाहार१४५
देखैं तमाशा जे नारी नर तिनका लागै नीकि बहार॥
शाल दुशाले नीले पीले चमकैं इन्द्रधनुप अनुहार १४६
बाल सूर्य्यसम मूंगा चमकैं दमकैं तहाँ जवाहिरलाल॥
जब अगवानी पूरण ह्वैगै गावन लगीं द्वारपरबाल १४७
संगम ह्वैगा दुहुँ तरफा ते दूनों तरफ भये सतकार॥
दूनों मिलिकै संगम ह्वैकै पहुँचे पृथीराज के द्वार १४८
जौंरा भौंरा हाथी ठाढ़े ताहर बोले बचन पुकार॥
जौन शूरमा हों मोहबे के द्वारे हाथी देयँ पछार १४९
सुनिकै बातैं ये ताहर की चलिभा उदयसिंह झन्नाय॥
जावत दीख्यो उदयसिंह को मलख्यो चला तुरत ठन्नाय१५०
को गति बरणै दोउ बीरन की मानो चले कृष्ण बलराम॥
ऊदन सुमिरयो श्रीशारद को मलखेलीनशिवाशिवनाम१५१
ऊदन चलिभा जौंरा दिशिको मलखे भौंरा की दिशिजाय॥
पूँछ पकरिकै तिन हाथिन के जैसे सिंह घसीटै गाय १५२
तैसे ऊदन मलखे ठाकुर दोऊ नाग घसीटैं धाय॥

करो व तमाशा दिल्लीवाले अँगुरी दाँते लीन चपाय १५३
मलखे ऊदन दोऊ ठाकुर सम्मुख गही सूँड़ को आय॥
दाबिकै मस्तक तिन हाथिनका दूनों दीन्ह्यों भूमि लुटाय १५४
दाँत तूरिकै तिन हाथिन का दोऊ चढ़े घोड़ पर आय॥
ताहर बोले फिरि दोउन ते मानो कही बनाफरराय १५५
कलश गिरावो अब खम्भन ते तौ हम कही शूर फिरि भाय॥
इतना सुनिकै जगनिक ठाकुर कलशन पासपहूँचा जाय १५६
ताहर बोला कमलापति सों मारो याहि दौरि सरदार॥
इतना सुनिकै कमलापति फिरि दौरे लिहे नाँगितलवार १५७
कोगति बरणै जगनायक कै भैने जौन चँदेले क्यार॥
आवत दीख्यो कमलापति को गरुई हाँक दीन ललकार १५८
लौटिज ठाकुर म्वरे सुर्चाते नहिं शिर काटि देउँ भुइँ डारि॥
सुनिकै बातैं जगनायक की कमलापतिउ बढ़ायो रारि १५९
हथी बढ़ायो फिरि आगे को जगनिक पास पहूँच्योजाय॥
एँड़ लगायो हरनागर को हौदा उपर बिराजा आय १६०
भाला मार्‍यो कमलापति को सोतो लीन ढालपर वार॥
रिसहा ह्वैकै जगनायक फिरि तुरतै खैंचिलीन तलवार १६१
ऐंचि महाउत को मारत भा तुरतै भूमि दीन शिरडार॥
आवा मस्तक ते भूमा फिरि गरुई हाँक दीन ललकार १६२
सँभरिकै वैठे अब हौदापर ठाकुर हाथी के असवार॥
की भगि जावै म्वरे मुर्चा ते नहिंअबजानचहतयमद्वार १६३
बातैं सुनिकै जगनायक की कमलापतिउ दीनललकार॥
काह गवाँरे तू बोलत है ठाकुर घोड़े के असवार १६४
तू अस क्षत्री हम संगर में केतन्यो डारे खेलि शिकार॥

ऐसी बातैं जो फिरि बोलै तौ मुहँ धाँसिदेउँ तलवार १६५
बातैं सुनिकै कमलापति की भैने जौनु चँदेले क्यार॥
एँड़ लगायो हरनागर के हाथी उपर गयो सरदार १६६
भाला मार्यो कमलापति के तोंदी परा घाव सो जाय॥
द्वार जूझिगा कमलापति जब रहिमतसहिमतचलेरिसाय१६७
ऊदन बोले तब देबा ते ठाकुर मैनपुरी चौहान॥
देखो आवत दुइ लड़ने को उतसों समर भूमिमें ज्वान १६८
मन्नागूजर को सँग लैकै मारो समर भूमि मैदान॥
तुम्हरी दूनन की बरणी हैं मानो कही बीर चौहान १६९
सुनिकै बातैं बघऊदन की दोऊ बढ़े अगाड़ी ज्वान॥
रहिमत सहिमतको ललकार्यो होवो खड़े समर मैदान १७०
सुनिकै बातैं इन दोउन की उनहुन खैंचि लीन तलवार॥
उसरिन उसरिन दोऊ मारैं दोऊ लेयँ ढालपर वार १७१
बड़ी लड़ाई भै द्वारेपर औ बहि चली रक्तकी धार॥
रहिमत सहिमत जिन्सीवाले घायल भये द्वऊ सरदार१७२
सुमिरि भवानी मइहरवाली मनियादेव मोहेबे क्यार॥
घोड़ बढ़ायो बघऊदन ने दोऊ कलशा लिये उतार १७३
देखि वीरता बघऊदन की भा मन खुशी पिथौराराय॥
हँसिकै बोल्यो बघऊदन ते मानो कही बनाफरराय १७४
उलटी रीती हमरे घरकी ऐसो सदा क्यार ब्यवहार॥
हो समझारो जब द्वारेपर तबफिरिभौंरिनकाव्यवहार१७५
अब तुम लावो परिमालिक को यहहू नेग यहाँ ह्वैजाय॥
होय तयारी फिरि भौंरिनकै साँचे हाल दीन बतलाय१७६
इतना सुनिकै ऊदन चलिभो पहुँचा जहाँ रजापरिमाल॥

जो कछु भाषा पृथीराज ने ऊदनजाय कह्यो सबहाल १७७
सुनीहकीकति जबमाहिल सब पहुंचा पृथीराज के पास।
बड़ी उदासी सों बोलत भा राजा करो वचन विश्वास १७८
ब्याह जो होइहै ब्रह्मानँद का होइहै बड़ा जगत उपहास॥
भेटन आवैं परिमालिक जब तब तुमकरो द्वारपरनाश १७९
इतना कहिकै माहिल चलिभे अब ऊदनके सुनो हवाल॥
सुनिकै बातैं बघऊदन की बोले तुरत रजापरिमाल १८०
ताकत हमरे अस नाहीं है जो हम मिलैं द्वार समध्वार॥
गजभर छाती पृथीराज की कयहिके जमे करजे वार १८१
रह्यो भरोसे तुम हमरे ना मानो कही बनाफरराय॥
मलखे बोले तब आल्हा ते दोऊ हाथ जोरि शिरनाय १८२
भयो हँसौवा अब दिल्ली माँ दादा साँच परै दिखराय॥
ऐसी बातैं राजा बोलैं सो तुम सुनी रह्योहै भाय १८३
अब तुम चलिहौ समध्वारे को तौ सब बात यहाँ रहिजाय॥
हँसिहैं दिल्ली में नरनारी भारीबिपतिपरीअबआय १८४
जेठो भाई बाप बरोबरि तुम्हरे गये बात बनिजाय॥
सुनिकै बातैं ये मलखे की आल्हा हाथी दीन बढ़ाय १८५
चार ठाढ़े पृथीराज जहँ तहँपर गये बनाफरराय॥
उतरिकै हाथी के हौदा ते मनमें सुमिरिशारदामाय १८६
गये सामने जब पिरथी के दधि औ पान दीन चपकाय॥
लखैं तमाशा तहँ नारी नर भा समध्वार द्वारपरआय १८७
पिरथी बोले तहँ आल्हा सों मानो कही बनाफरराय॥
अब तुम जावो निज तम्बू को भौंरीसमयगयोनगच्याय १८८
सुनिकै बातैं ये पिरथी की लश्कर कूच दीन करवाय॥

बाजे डंका अहतंका के तम्बुन फेरि पहूंचे आय १८६
पिरथी पहुंचे राजमहल्ल को सखियाँ झगड़ा गयो पटाय ॥
खेत छूटि गा दिननायक सों झंडागड़ा निशाको आय१६०
करों बन्दना पितु अपने की जिन बल भयोतरँगकोअन्त ॥
राम रमा मिलि दर्शन देवैं इच्छा यही भवानीकन्त १६१

जो कछु भाषा पृथीराज ने
सुनीहकीकति जबमाहिल सब
बड़ी उदासी सों बोलत भा
ब्याह जो होइहै ब्रह्मानँद का
भेटन आवैं परिमालिक जब
इतना कहिकै माहिल चलिभे
सुनिकै बातैं बघऊदन की
ताकत हमरे अस नाहीं है
गजभर छाती पृथीराज की
रह्यो भरोसे तुम हमरे ना
मलखे बोले तब आल्हा ते
भयो हँसौवा अब दिल्ली माँ
ऐसी बातैं राजा बोलैं
अब तुम चलिहौ समध्वारे को
हँसिहैं दिल्ली में नरनारी
जेठो भाई बाप बरोबरि
सुनिकै बातैं ये मलखे की
... गढ़ पृथीराज जहँ
उतरिकै हाथी के हौदा ते
गये सामने जब पिरथी के
लखैं तमाशा तहँ नारी न
पिरथी बोले तहँ आल्हा से
अब तुम जावो निज तम्बू को
सुनिकै बातैं ये पिरथी कं

बाजे डंका अहतंका के तम्बुन फेरि पहूंचे आय १८९
पिरथी पहुंचे राजमहल को सखियाँ झगड़ा गयो पटाय ॥
खेत छूटि गा दिननायक सों झंडागड़ा निशाको आय१९०
करों बन्दना पितु अपने की जिन बल भयोतरँगकोअन्त ॥
राम रमा मिलि दर्शन देवैं इच्छा यही भवानीकन्त १९१

इति श्रीलखनऊनिवासि (सी,आई,ई) मुंशी नवलकिशोरात्मजबाबूप्रयागनारायणजीकीआज्ञानुसारउन्नामप्रदेशान्तर्गतपँड़रीकलांनिवासिमिश्र वंशोद्भवबुधकृपाशङ्करसूनुपण्डितललिताप्रसादकृतब्रह्माद्वारचार वर्णनोनामद्वितीयस्तरंगः ॥ २ ॥

पहिली भाँवरि के परतै खन ताहर हनी तुरत तलवार ४४
दहिने ठाढ़ो मलखे ठाकुर सो लैलीन ढाल पर वार॥
आधे आँगन भौंरी होवैं आधे चलनलागि तलवार ४५
ब्रह्मा ठाकुर की रक्षा में आल्हा ठाकुर भये तयार॥
मलखे सुलखे जगनिक देवा आँगन करैं भड़ाभड़ मार ४६
तेगा चटकै बर्दवान का ऊना चलै विलाइति क्यार॥
छूरी छूरा कोउ कोउ मारैं कोताखानी चलैं कटार ४७
फिरि फिरि मारैं औ ललकारैं नाहर दिल्ली के सरदार॥
आँगन थिरकै उदन बाँकुड़ा लीन्हे हाथ नाँगि तलवार ४८
मूड़न केरे मुड़चौरा भे औ रुंडन के लगे पहार॥
बड़ी लड़ाई भै आँगन में औ बहिचली रक्तकी धार ४९
अपन परावा कछु सूझै ना आमाझोर चलै तलवार॥
बड़े लड़ैया मलखे सुलखे नामी सिरसा के सरदार ५०
कोगति बरणै तहँ ताहर कै दूनों हाथ करै तलवार॥
फिरि फिरि मारै औ ललकारै नाहर उदयसिंह सरदार ५१
कोगति बरणै तहँ देवाकै क्षत्री मैनपुरी चौहान॥
मन्नागूजर जगना ठाकुर इनहुन खूबकीन मैदान ५२
मोहन ठाकुर बौरी वाला रणमाँ बड़ा लड़ैयाज्वान॥
जोगा भोगा दोनों भाई मारिकै खूबकीन खरिहान ५३
विकट लड़ाई भै आँगन में साँगन खूब भई तहँ मार॥
सातो लड़िका पृथीराज के बाँध्यो सिरसाके सरदार ५४
सातो भँवरी ब्रह्मानँदकी आल्हा तुरत लीनकरवाय॥
देखि तमाशा बघऊदन का पिरथी गये सनाकाखाय ५५
चौंड़ा बोला त्यहि समया में मानो कही पिथौराराय॥

अबहीं जावैं हम मड़येतर सबके बन्धन देयँ छुड़ाय ५६
इतना कहिकै चौंड़ा चलिभा मड़ये तरे पहूँचा आय॥
चौंड़ा बोला फिरि आल्हाते मानो कही बनाफरराय ५७
इकलो लड़िका भीतर पठवो सो लहकौरि खानको जाय॥
मुशकै छोरो सब लरिकन की यह कहिदीन पिथौराराय ५८
दया आयगै मलखाने के मुशकै तुरत दीन छुड़वाय॥
अब तुम जावो जनवासे को बोला फेरि चौंड़ियाराय ५९
नाउनि आई फिरि भीतर सों औ आल्हासों कह्यो सुनाय॥
इकलो दूलह अब पठवावो रानी भीतर रहीं बुलाय ६०
ऊदन बोले तब नाइनिते साँची मानो कही हमार॥
संग न छाँड़ै साहिबाला कहुँ यह है मोहबे का व्यवहार ६१
इतना सुनिकै नाइनि बोली जल्दी चलो करो नहिं बार॥
आगे नाइनि फिरि दूलह भा पाछे बेंदुल का असवार ६२
और बीर सब तम्बुन आये ये दोउ महल पहूँचे जाय॥
चौंड़ा बोला पृथीराज सों आयसु मोहिं देउ फरमाय ६३
मैं अब मारों बघऊदन को औसर नीक पहूँचा आय॥
सुनिकै बातैं ये चौंड़ा की आयसु दीन पिथौराराय ६४
बिछिया अँगुठा चौंड़ा पहिर्यो लीन्ह्यो रूप जनाना धार॥
ठुम्मुक ठुम्मुक चौंड़ा चलिभा बिषधर चापे बगलकटार ६५
जायकै पहुंच्यो त्यहि महलनमें ऊदन जहाँ करै ज्यउँनार॥
इचिता दीख्यो जब ऊदन को चौंड़ा मारी तुरत कटार ६६
खाय मूर्च्छा ऊदन गिरिगे नारिन कीन तहाँ चिग्घार॥
भये सनाका ब्रह्माठाकुर मनमाँ लागे करन विचार ६७
आजु बीरता गै मोहबे ते जो मरिगयो लहुरवा भाय॥

मर्द न ऐसो कहुँ पैदा भो जैसो रहै बनाफरराय ६८
शोच आयगा ब्रह्मानँद के मनमाँ बार बार पछिताय॥
छाती पीटै रानी अगमा महलन गिरी पछाराखाय ६९
तोहिं चौंड़िया यह चाही ना कीन्हे घाटि महलमाँ आय॥
नालति तेरी द्विज देही का चौंड़ा काहगये बौराय ७०
घाव मूंदिकै बघऊदन का रानी औषध दीनलगाय॥
कन्या राजनकी महरानी औ सब जानै भले उपाय ७१
मारु कूटकी घर घर चरचा क्षत्री बंश रहै तब भाय॥
राजा पिरथी की महरानी त्यहिबघऊदनदीनजियाय ७२
उठा दुलरुवा द्याबलिवाला बेला देखिगई हर्षाय॥
ऐसि खुशाली भै ब्रह्मा के जैसे योग सिद्धि ह्वैजाय ७३
गवैं सुहागिल दिल्ली वाली लैलै नाम बनाफरक्यार॥
बड़ी खुशाली भै महलन में होवन लाग मंगलाचार ७४
पायँ लागिकै महरानी के बोला उदयसिंह सरदार॥
आयसु तुम्हरी जो हमपावैं तौ तम्बुन को होयँ तयार ७५
रूप देखिकै बघऊदन को नारी पीटन लगींकपार॥
भईं अभागिनिहमसब महलन अब ये चलन हेत तय्यार ७६
रूप न देखा क्यहु क्षत्री का जैसो उदयसिंह सरदार॥
पाग बैंजनी शिरपर बाँधे ऊपर कलँगी करै बहार ७७
बेला चमेला के गजरा हैं तिनपर परा मोतियनहार॥
बाँके नैना यहि क्षत्री के सखिया चुभे करेजे फार ७८
मन बौराना सहिबाला पर आला देवरूप अवतार॥
दूसरि बाला त्यहि काला में बोली मानो कही हमार ७९
भागि तुम्हारी अस नाहीं है जो ये होयँ तोर भर्तार॥

नालति तुम्हरे मन चव्वन को तुमका बार बार धिक्कार ८०
त्यही समैया ऊदन चलिभा सबसों बिदा मांगि त्यहिबार॥
चढ़ा पालकी ब्रह्मा ठाकुर ऊदन बेंदुल भा असवार ८१
आयकै पहुंचे द्वउ लश्कर में जहँ दरबार चँदेले क्यार॥
हाथ पकरिकै ब्रह्मा ऊदन तम्बुन गये दोऊ सरदार ८२
चरणन परिकै परिमालिक के बैठे द्वऊ बीर बलवान॥
पूंछन लागे बघऊदन ते तुरतै तहाँ बीर मलखान ८३
कहौ हकीकति सब महलनकी कैसी भई रीति ब्यवहार॥
सुनिकै बातैं मलखाने की कहिगा यथातथ्य सरदार ८४
सुनिकै बातैं बघऊदन की आल्हा ठाकुर लीन बुलाय॥
कमर बिलोकैं बघऊदन की कैसा परा कटारी घाय ८५
चिह्न न पायो कहूं घाव को आल्हा बोल्यो वचनसुनाय॥
झूंठ न बोलत तुम ऊदन रहौ कैसी कियो दिल्लगी भाय ८६
ब्रह्मा बोले तब आल्हा ते दोऊ हाथ जोरि शिरनाय॥
साँची दादा ऊदन बोल्यो झूंठ न कह्यो लहुरवाभाय ८७
लीन्हे बूटी रानी आई सो ऊदन के दियो लगाय॥
घाव पूरिगा बघऊदन का औ उठि बैठ लहुरवा भाय ८८
सुनिकै बातैं ब्रह्मानँद की गे परिमाल सनाकाखाय॥
कूच कराओ अब लश्कर को बोला फेरि चँदेलाराय ८९
बातैं सुनिकै महराजा की मलखे रुपना लीन बुलाय॥
औ समुझायो यह रुपना को यह तुम कहौ पिथौरैजाय ९०
कह्यो सँदेशा परिमालिक है बेटी बिदा देयँ करवाय॥
इतना सुनिकै रुपना चलिभा औफिरि अटा द्वारपर जाय ९१
द्वारे ठाढ़े पिरथी राजा तिनसों बोला शीश नवाय॥

विदा कि बिरिया अब आई है यह मोहिं कह्यो चँदेलोराय ६०
यहु संदेशा हम लाये हैं ओ महराज पिथौराराय॥
जो कछु उत्तर तुम ते पावैं राजै स्वई सुनावैं जाय ६३
बातैं सुनिकै ये रूपन की बोले पृथीराज महराज॥
देश हमारे की रीती यह पुरिखन कियो अगारीकाज ६४
ब्याह के पीछे गौना देवैं तबहीं होवै पूर बिवाह॥
यहतुम कहियो परिमालिक ते ऐसे कहे वचन नरनाह ६५
धन्य बखानैं हम आल्हा को सातो भाँवरि लियो कराय॥
हैं सब लायक मलखे ठाकुर हमरो कहो सँदेशो जाय ६६
सुनिकै बातैं पृथीराज की रूपन चला तुरत शिरनाय॥
आयकै पहुँच्यो त्यहि तम्बू में ज्यहि में रहैं चँदेलेराय ६७
आल्हा ऊदन मलखे सुलखे बैठे लिहे ढाल तलवार॥
जोगा भोगा मन्नागूजर जगनिक भैने चँदेलेक्यार ६८
जो संदेशा पृथीराज का रूपन सो गा सबै सुनाय॥
सुनिकै बातैं पृथीराज की भा मन खुशी चँदेलोराय ६६
हुकुम लगायो फिरि लश्कर में क्षत्री कूच देयँ करवाय॥
मानि आज्ञा परिमालिक की आल्हा कूच दीन फरमाय १००
कूच क डंका तब बाजत भो क्षत्री सबै भये हुशियार॥
हथी चढ़ैया हाथी चढ़िगे बाकी घोड़न भे असवार १०१
बाजे डंका अहतंका के घूमन लागे लाल निशान॥
बैठि पालकी ब्रह्मा चलि भे साथै चले बीर मलखान १०२
ढोल औ तुरही कै गिनती ना बाजन कीन घोर घमसान॥
ग्यारा रोज कि मैंजलि करिकै मोहवे अये बराती ज्वान १०३
आगे चलिकै रूपनबारी मल्हना महल पहूँचा आय॥

कुशल प्रश्नसों सब जन आये रूपनबोला शीश नवाय १०४
बड़ी खुशाली भै मल्हना के तुरतै सखियाँ लीन बुलाय॥
चौमुख दियना रानी बारे पहुंची तुरतद्वारपर आय १०५
बारह रानी परिमालिक की गावन लगीं मंगलाचार॥
पलकी आई ब्रह्मानँद की परछन होनलगी तबद्वार १०६
भई आरती ब्रह्मानँद की सवियाँ याचक भये निहाल॥
जितनी रैयति मोहबे वाली आये ज्वान वृद्ध औ वाल१०७
भयो बुलौवा फिरि पंडित का धावन चला तड़ाका धाय॥
लैकै पत्रा पंडित आवा साइति ठीकदीन बतलाय १०८
महलन पहुंचे ब्रह्माठाकुर विप्रन मोदभयो अधिकाय॥
दान दक्षिणा मल्हना दीन्हे सीधा घरै दीन पहुँचाय १०९
दगीं सलामी दरवाजे पर धुँवना रहा सरगमें छाय॥
बिदा मांगिकै नेवतहरी सब निजनिजदेशपहूंचेजाय ११०
दशहरिपुरवा आल्हा पहुंचे सिरसा गये वीर मलखान॥
कथा पूरि भै अब ब्याहे कै मानो सत्यवचन परमान १११
खेल छूटिगा दिननायक सों झंडा गड़ा निशाको आय॥
तारागण सब चमकनलागे सन्तन धुनी दीन परचाय ११२
परे आलसीखटिया तकि तकि घों घों कण्ठ रहे घर्राय॥
भल वनिआई तहँ योगिन कै निर्भयरहे रामयशगाय ११३
निशा पियारी सब योगिनको चोरन अर्द्धमास की भाय॥
कछु नहिंभावै मनविरहिन के उनको कालरूपदिखराय११४
सदा सहायक पितु अपने को दोऊ हाथ जोरि शिरनाय॥
आशिर्वाद देउँ मुंशीसुत जीवो प्रागनरायण भाय ११५
रहै समुन्दर में जबलों जल जबलों रहैं चन्द औ सूर॥

मालिक ललिते के तबलोंतुम यशसों रहौ सदाभरपूर ११६
माथ नवावों शिवशंकर को यहँसों करों तरँग को अन्त ॥
राम रमा मिलि दर्शन देवो इच्छा यही मोरि भगवन्त ११७

इति श्रीलखनऊ निवासि (सी, आई, ई) मुंशी नवलकिशोरात्मज बाबूप्रयाग नारायणजीकी आज्ञानुसार उन्नामप्रदेशान्तर्गतपँड़रीकलां निवासि मिश्रवंशोद्भवबुध कृपाशङ्करसूनु पण्डितललिताप्रसादकृत ब्रह्मापाणिग्रहणवर्णनोनामतृतीयस्तरंगः ॥ ३ ॥

ब्रह्मा औ बेला का विवाह सम्पूर्ण ॥

इति ॥

अथ आल्हखण्ड ॥

उदयसिंहकाबिवाह अथवा नरवर की लड़ाई ॥

सवैया ॥

ओ प्रभु दीनदयाल गुपाल सदा नँदलाल दोऊ पदध्यावों ।
सागर कीर्त्ति सबै गुणआगर नागर मोहनलाल बतावों ॥
स्वर्ग औ नर्क रहूं कतहूं पै सदा शुचिसों तुम्हरो गुणगावों ।
याँच यही ललिते कर साँच मिलैं रघुनन्दन सो बर पावों १

सुमिरन ॥

दोउपद ध्यावों बड़े प्रेम सों स्वामी कृष्णचन्द्र महराज ॥
काज सँवारयो धर्मराज के राख्यो द्रुपदसुता की लाज १
कंस पछारयो यदुनन्दन तुम दीन्ह्यो उग्रसेन को राज ॥
सदा पियारे तुम भक्तन के हमरे माननीय शिरताज २
भक्त तुम्हारे सुखी न देखे आवत नाम बतावत लाज ॥
भक्त सुदामा जग में जाहिर दूसर जनकपुरी द्विजराज ३

लक्ष्मीपति तुमको सब जानत चाहत सरन आपनो काज ॥
भूप युधिष्ठिर की गति देखी वनमाँ रहे छूटिगै राज ४
वस्त्र न देखा जिन देहीमां केवल चढ़ी भस्म सब अङ्ग ॥
रावण बाणासुर को देखा जिन सों जुरी आपसों जङ्ग ५
छूटि सुमिरनी गै देवन कै औ ऊदन का सुनो विवाह ॥
घोड़ खरीदन काबुल जैहैं पठई मोहबे का नरनाह ६

अथ कथाप्रसङ्ग ॥

एक समैया परिमालिक का भारी लाग राजदरबार ॥
बैठे क्षत्री सब महिफिल हैं एकने एक शूर सरदार १
पारस पत्थर ज्यहि के घरमा लोहा छुये सोन हैजाय ॥
कौन बड़ाई तिनकै करिकै शोभा वरणि पार लै जाय २
माहिल शाले परिमालिक के सोऊ गये तहां पर आय ॥
देखि वनाफर उदयसिंह को माहिल पीर भई अधिकाय ३
माहिल बोले तहँ राजा सों मानो कही चँदेलेराय ॥
नाम तुम्हारो देश देश में तुम पर कृपा कीन रघुराय ४
एक बात की अब कमती है सो विन कहे रहा ना जाय ॥
घोड़ तुम्हारे घर कमती हैं बूढ़े घोड़ भरे अधिकाय ५
रुपिया पैसा की कमती ना थोड़े घोड़ लेउ मँगवाय ॥
अवैं बछेड़ा काबुलवाले तौ फिरि नामहोय अधिकाय ६
इतना सुनिकै राजा बोले काबुल कौन खरीदन जाय ॥
हाथ जोरिकै ऊदन बोले काबुल हमैं देउ पठवाय ७
सुनिकै बातैं वघऊदन की राजा गये सनाका खाय ॥
बोलि न आवा परिमालिक ते मुहँका गिरागयो कुम्हिलाय ८
कलँगी गिरिगै फिरि पगड़ी ते काँपन लाग चँदेलेराय ॥

रोवाँ ठाढ़े भे देही के नैनन दीन्ह्यो झरी लगाय ८
माहिल बोले परिमालिक ते काहे शोच कीन अधिकाय ॥
लड़िका बाउर ऊदन नाहीं जो तुम डरो चँदेलेराय १०
इनते बढ़िकै को मोहबेमाँ घोड़ा जौन खरीदन जाय ॥
है गर्दाना इनको बाना कालौ लड़ै न सम्मुख आय ११
कहिकै पलटत नहिं ऊदन हैं जानो भली भांति महराज ॥
भय नहिं लावो अपने मनमाँ करिहैं सिद्धकाज रघुराज १२
बातैं सुनिकै ये माहिलकी बोले फेरि रजापरिमाल ॥
तुम भल जानत हौ ऊदन को कलहा देशराजको लाल १३
रारि मचाई यहु मारग में आई फेरि व्याधि कछु भाय ॥
बात चलाई तुम ऐसी है जासों शोचभयो अधिकाय १४
सुनिकै बातैं परिमालिक की बोला उदयसिंह सरदार ॥
शपथ शारदा शिवशङ्कर की हम काबुल को खड़े तयार १५
भली बताई माहिल मामा राजाकरो बचन बिश्वास ॥
यक अवलम्बा जगदम्बा का सोई पूरि करैं सब आश १६
क्षत्री ह्वैकै समरसकावै त्यहि को बार बार धिक्कार ॥
बाँझै होवै सो नारी जग नाहक रखै पेटमें भार १७
बेद यज्ञ औ दान युद्ध ये क्षत्री केर रूप शृंगार ॥
ये नहिं होवैं ज्यहि क्षत्री के त्यहि को बार बार धिक्कार १८
एक ऋचा गायत्री जानै सोऊ बेद पढ़ैया ज्ञान ॥
ब्राह्मण क्षत्री बनिया तीनों यासोंविमुखश्वानअनुमान १९
बातैं सुनिकै बघऊदन की बोले फेरि रजापरिमाल ॥
कहा न मनिहौ तुम बचा अब कलहा देशराज के लाल २०
देवा ठाकुर को सँग लैकै काबुल घोड़ खरीदो जाय ॥

रारि मचायो कहुँ मारग ना मान्यो कही बनाफरराय २१
इतना कहिकै परिमालिकने फिरि यह हुकुम दीन फरमाय॥
पंद्रह खच्चर मुहरें लैकै काबुल जाउ लहुरवा भाय २२
सुनिकै बातैं परमालिक की दोऊ हाथ जोरि शिर नाय॥
बिदा मांगिकै परिमालिकते मल्हना महल पहूँचाजाय २३
कही हकीकति सब मल्हनाते ऊदन बार बार शिरनाय॥
करतब जान्यो जब माहिलकै मल्हना बारबार पछिताय २४
पै भलजानै अपने मनमाँ मानी नहीं लहुरवाभाय॥
तासों रोंक्यो महरानी ना आशिर्वाद दीन हर्षाय २५
बिदा मांगिकै ऊदन चलिभा दशहरिपुरे पहूँचा जाय॥
हालबतायो सब माता को ऊदन बार बार समुझाय २६
सुनिकै बातैं बघऊदन की भौजी माता उठीं रिसाय॥
तुम नहिंजावो अब काबुलको ऊदन काह गये बौराय २७
आल्हा बरज्यो भल ऊदन को नीक न करो लहुरवाभाय॥
तुम्हैं पठावत नहिं राजा हैं तुमहीं कौन हेतु को जाय २८
बातैं सुनिकै ये आल्हा की ऊदन कहा बचन शिरनाय॥
हम तो जैबे अब काबुल को चहुतनबजीबजीउड़िजाय २९
हम को वरजो अब भाई ना इतना प्यार करो अधिकाय॥
बातैं सुनिकै बघऊदन की आल्हा चुप्पसाधि रहिजाय ३०
पायँ लागिकै फिरि माता के औ सुनवाँ को शीशनवाय॥
बिदा मांगिकै बड़भाई सों ऊदन कूच दीन करवाय ३१
घोड़ मनोहर देवा बैठा ऊदन बेंदुलपर असवार॥
चला काफिला फिरिकाबुलको दोऊ चले शूर सरदार ३२
एक कोस जब नरवर रहिगा ऊदन बोले बचन सुनाय॥

कौन शहर है देवा ठाकुर हमको साँच देउ बतलाय ३३
देबा बोला तब ऊदन ते जानो नहीं हमारो भाय ॥
इतना कहिकै दूनों चलि भे रहिगा पावकोस फिरिआय ३४
तहँ चरवाहन को देखत भो तिनसों कह्यो बनाफरराय ॥
कौन शहर औ को राजा है हमको साँच देउ बतलाय ३५
सुनिकै बातैं बघऊदन की बोला अहिरपूत तब भाय ॥
नरपति राजा नरवरगढ़ है ओ परदेशी बात बनाय ३६
इतना सुनिकै दूनों चलिभे पुर के पास पहूंचे जाय ॥
तहाँ जखेड़ा बहु नारिन को खैंचैं बारिकूप में आय ३७
को गति वरणै तिन नारिनकै पतली कमर तीनिवलखाय ॥
दाँत अनारन के बीजासम मीसी हँसत परै दिखलाय ३८
परी बतीसी है पानन कै आननकमलखिलाजसभाय ॥
छाती सोहैं नवरंगी सम ह्वुण्डी भौंर सरिस दिखरायँ ३९
गजकीशुण्डा सम भुजदण्डा जंघा कदलिथम्भ अनुमान ॥
रूप देखिकै तिन नारिन का ल्हा होयँ अनेकन ज्वान ४०
ऐसी बाला सब आला हैं नाभी यमुन भँवरसम भाय ॥
रूप देखिकै तिन नारिन का पहुँचा पास बनाफरराय ४१
मनमाँ सोचा उदयसिंह तब औ यह ठीक लीन ठहराय ॥
जौने पुरकी अस नारी हैं रानिनरूप वरणि ना जाय ४२
यहै सोचिकै बघऊदन फिरि बोला एक नारिके साथ ॥
पूरब तेनी पश्चिम आये बाबा सूर्य चराचर नाथ ४३
घोड़ पियासा अति हमरो है याको पानी देउ पियाय ॥
बातैं सुनिकै ये ऊदन की बोली तुरत नारिरिसियाय ४४
करन दिल्लगी हमसों आयो क्षत्री घोड़े के असवार ॥

पनी पियावन अब घोड़े का फेरि न कह्यो दूसरीबार ४५
नरपति राजा यहि नगरी का सबविधि शूरबीर सरदार ॥
टरिजा टरिजा अब जल्दी सों क्षत्री घोड़े के असवार ४६
इतना सुनिकै ऊदन बोले अब ना बोले फेरि गवाँरि ॥
ऐसी बातैं जो फिरि बोलै तौ मुहँ धाँसिदेउँ तलवारि ४७
नरपति खरपति के गिनतीना बर बर करै बैजनी नारि ॥
काह हकीकति है नरपति कै हमरे साथ करै तलवारि ४८
सुनिकै बातैं ये ऊदन की सहमी तहाँ तुरत सो नारि ॥
औरी नारी रयहि सों बोलीं आईं संग भरन जे बारि ४९
रूप उजागर सब गुण सागर नागर घोड़े को असवार ॥
करुई बाणी नाहक बोलिउ बहिनी मानों कही हमार ५०
यहु बर लायक है फुलवा के सबविधि रूपशील गुणवान ॥
वह तो बोली भल धीरज में पर परिगई बनाफर कान ५१

सवैया ॥

ऊदन बोलिउठा रयहि नारि को कौनअहै फुलवा सहिदानी।
देहु बताय न राखु छिपाय चुभी मनमें सुनिबे को कहानी ॥
कोमल बैन सुन्यो जब भामिनि बोलिउठी तबहीं यह बानी।
नरपतिकी कन्या लखिकै ललिते रतिहू मनमें सकुचानी ५२

रयहि की समता सुन्दरता की यहिपुर नारिकौन यहिकाल ॥
काह बतावों परदेशी मैं फूलन शयनकरै वह बाल ५३
रयहिमुख फुलवाकी गाथासुनि ऊदन आगम गयो जनाय ॥
दक्षिण बाहु फरक्कन लाग्यो दहिने भई शारदा माय ५४
यादि आयगै फिरि माड़ो कै जो कछुकहानिजैसिनिबाल ॥

बाण लागिगा उर मन्मथ का घायल देशराजका लाल ५५
आदर करिकै फिरि देबा का बोला उदयसिंह सरदार॥
अब दिन थोड़ा अतिबाकी है देखो चलैं शहर को यार ५६
आखिर सोना है बिरछातर सबदिन मारग में सरदार॥
भागि भरोसे शहर जो पावा तौकस त्यागि चलैंयहिवार ५७
सुनिकै बातैं ये ऊदन की देबा मैनपुरी चौहान॥
ज्योतिष बिद्या के परचय से जाना कुशलकरी भगवान ५८
देबा बोला फिरि ऊदन सों मानो कही लहुरवाभाय॥
द्रब्य बांधिकै पर पुर जैये यहनाहिं हृदयमोर पतियाय ५९
तासों रहिबो तर बिरवा के नीकी बात बनाफरराय॥
द्रब्य प्राण की घातक जानो मानो साँच बचन तुमभाय ६०
इतना सुनिकै ऊदन बोले स्वँची मानो कही हमार॥
भय उर राखो कछु जियरे ना चलिये टिकैं यहाँ सरदार ६१
इतना कहिकै बघऊदन ने आगे दीन्ह्यो घोड़ बढ़ाय॥
पाछे चलिभा देबाठाकुर मनमें बार बार पछिताय ६२
जायकै पहुंचे फुलबगिया में मालिन भीर दीखअधिकाय॥
तहाँ पै उतरे बघऊदन जब माली पास पहूँचा आय ६३
माली बोला बघऊदन ते दोऊ हाथ जोरि शिरनाय॥
चलिकै उतरो चहु मोरे घर ह्याँनहिंटिको मुसाफिरभाय ६४
यह फुलवाई महराजा की ह्याँसों मेख लेउ उखराय॥
सुनिकै बातैं त्यहि माली की चुप्पै मुहरै दीन गहाय ६५
पांच अशर्फी माली पायो मनमाँ बड़ा खुशी ह्वैजाय॥
हाथ जोरिकै माली बोला द्वारे टिको चलै तुम भाय ६६
द्वारे कुइँयाँ मीठा पानी नीबी बृक्ष तहाँ अधिकाय॥

हाटक निकटै म्वरे द्वारे के सीधा घास लिह्यो मँगवाय ६७
सुनिकै बातैं त्यहि माली के ऊदन कूच दीन करवाय ॥
द्वारे पहुंचे फिरि माली के मेखै तहाँ दीन गड़वाय ६८
मांगिकै पलँगा माली लायो द्वारे तुरत दीन डरवाय ॥
गद्दा परिगा मखमलवाला आला बैठ बनाफरराय ६९
माली चलिभा फुलबागियाका मालिनि द्वार पहूँची आय ॥
मालिनि बोली उदयसिंह ते ठाकुर हाल देउ बतलाय ७०
कहाँ ते आये औ कहँ जैहौ तुम्हरो काह नाम है भाय ॥
बातैं सुनिकै ये मालिनि की बोले तुरत बनाफरराय ७१
नाम हमारो उदयसिंह है हमरो देश मोहोबा जान ॥
छोटे भैया हम आल्हा के साँचे बचन हमारे मान ७२
सुनिकै बातैं ये ऊदन की मालिनि फेरि कहा शिरनाय ।
आल्हा व्याहे कौन शहर में साँची साँची देउ बताय ७३
सुनिकै बातैं ये मालिनि की बोला उदयसिंह सरदार ॥
भैया ब्याहे नैनागढ़ माँ सुनवाँ भौजी आय हमार ७४
बड़ी खुशाली भै मालिनिके बोली हाथ जोरि शिरनाय ॥
हमहूं सुनवाँ साथे खेलीं हिरिया नाम हमारो भाय ७५
मैको हमरो है नैनागढ़ सुनवाँ बहिनी लगै हमारि ॥
चलिकै बैठो म्वरे मन्दिर में देवर सेवा करौं तुम्हारि ७६
बातैं सुनिकै ये हिरिया की भा मन खुशी बनाफरराय ॥
दिह्यो अशर्फी दश मालिनिको औयहबोल्योबचनसुनाय ७७
सीधा लावो तुम लस्किनको भोजन बेगि पकावो जाय ॥
दिना चारि यहि पुरमा रहिकै पाछे कूच देब करवाय ७८
सुनिकै ये ऊदन की मालिनि बैठि धाम में जाय ॥

माली आवा जब बगिया ते तबसब हाल कह्यो समुझाय ७९
देवा बोला ह्याँ ऊदन ते अब रँग और परै दिखराय ॥
काहे अटक्यो तुम नरवर में साँचे हाल देव बतलाय ८०
बातैं सुनिकै ये देवा की बोला उदयसिंह सरदार ॥
फुलवा बेटी जो नरपति की तामें लाग्यो चित्त हमार ८१
कीनि प्रतिज्ञा हम अपने मन साँची तुम्हैं देयँ बतलाय ॥
नैनन दीखे बिन फुलवा को ना हम धरब अगाड़ीपायँ ८२
सुनिकै बातैं ये ऊदन की देवा बोला बचन बनाय ॥
ऐसी करिहौ जो बघऊदन तौ सब जैहैं काम नशाय ८३
घोड़ खरीदन को आये तुम नरवर नैन खरीदे आय ॥
काह बतैहौ तुम राजा ते सोऊ कहो लहुरवाभाय ८४
तुमका सौंप्यो महराजा म्बहिं ऊब तुम्हाह गयो बौराय ॥
तनिक मिहिरिया के देखै का अमफुलदेहौ लाज गवाँय ८५
अबै न बिगरा कछु बघऊदन ह्याँ ते कूच देव करवाय ॥
सुनिकै बातैं ये देवा की बोला फेरि बनाफरराय ८६
मोहिं भरोसा है शारद को देवा मैनपुरी चौहान ॥
घोड़ खरीदन फिरि हम जैहैं करि हैं कुशलमोरिभगवान८७
पै मन अटको है फुलवा में हटको मानै नहीं हमार ॥
खटको भटको पटको झटको सोवो आज यहाँ सरदार ८८
इतना कहतै बघऊदन के दोऊ नैन गये अलसाय ॥
देवा ऊदन दोऊ सोये चकरन पहरादीन बिठाय ८९
सोयकै जागे जब बघऊदन प्रातःक्रिया कीन हर्षाय ॥
फेरिकै पहुँचे मालिनि घरमाँ मालिनि हरवा रही बनाय ९०
ऊदन बोले तहँ मालिनि सों हिरिया भौजी बात बनाय ॥

लाव मलाई अब जल्दी सों दौरति चली बजारै जाय ९१
इतना सुनिकै हिरिया बोली साँची सुनो बनाफरराय ॥
हार छोड़िकै जाउँ बजारै तौ तकसीर बड़ी ह्वैजाय ९२
तनकिउ देरी हमका लागी फुलवा जाई बेगि रिसाय ॥
बातैं सुनिकै ये हिरिया की बोले फेरि बनाफरराय ९३
हार तुम्हारो हम गूंथत हैं मालिनि जाउ बजरिया धाय ॥
पांच अशर्फी ऊदन दीन्ह्यो मालिनिचली तड़ाकाजाय ९४
बेला चमेली औ निवारिको ऊदन हार कीन तय्यार ॥
मालिनि आई जब बजारते देखा चार लरिनको हार ९५
हिरिया बोली तब ऊदन ते देवर मानो कही हमार ॥
हार दुलरिया रोज बनावौं चौलर आज भयो तय्यार ९६
करीं गांठी तुम्हरी की फूलन खूब सटा है यार ॥
हाल जो पूँछी फुलवा हार मैं उत्तर काह देब सरदार ९७
बातैं सुनिकै ये मालिन की बोला उदयसिंह त्यहिवार ॥
बिटिया आई म्वरि बहिनी कै ताने हार कीन तय्यार ९८
इतनासुनिकै हिरियामालिनि तुरतै डलिया लीन उठाय ॥
जहँना बेटी रह नरपति कै मालिनि तहाँ पहूंची जाय ९९
बैठि पलँगरा फुलवा बेटी मालिनि हार दीन पहिराय ॥
चार लरिन को हरवा दीख्यो फुलवा बोलीवचनरिसाय १००
रोज दुलरिया लै आवति थी कौने गुँधा चौलराहार ॥
साँच बतावै री मालिनि अब नाहीं पेट फरैहौं त्वार १०१
इतना सुनिकै मालिनि बोली दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ॥
बिटिया आई म्वरि बहिनी कै ताने हार बनायो आय १०२
वह तो ब्याही है मोहबे माँ जहँपर बसैं रजापरिमाल ॥

पारस पत्थर तिनके घरमाँ उनकी रय्यति सबै निहाल १०३
बातैं सुनिकै ये मालिनि की फुलवा हुकुमदीन फरमाय ॥
हार बनायो ज्यहि मालिनि है मोको बेगि दिखावै आय १०४
इतना सुनिकै मालिनि चलिभै मनमाँ बार बार पछिताय ॥
ज्यों त्यों आई घर अपने को तहँपर मिले बनाफरराय १०५
हाल बतायो सब फुलवाको मालिनि बार बार समुझाय ॥
मारे डरके पिंडुरी काँपैं जर्दी आनन परै दिखाय १०६
ऊदन बोले तब मालिनि ते काहे शोच करो अधिकाय ॥
नई पुरानी जेवर लैकै हमको देउआय पहिराय १०७
देखन जैबे हम फुलवा को मालिनि मानो कही हमार ॥
शंका लावो कछु जियरे ना तुम्हरो जाय न बांकोबार १०८
कौन दुसरिहा जग हमरो है जो तुम्हरे तन करै निगाह ॥
निश्चय जानो अपने मनमाँ हमफुलवाते करब बिवाह १०९
बातैं सुनिकै उदयसिंह की मालिनि शंका दीन भुलाय ॥
तुरतै गहना को लै आई पहिरनलागलहुरवाभाय ११०
मिस्सी रगरी सब दाँतन में तापर लीन्ह्यो पान चबाय ॥
काजल आँज्यो दोउ नैनन में शोभा कही बूत ना जाय १११
बेंदी बँदनी टीका तीनों मस्तक ऊपर धरा सँवार ॥
करनफूल कानन में पहिरा तामें गुज्झी करै बहार ११२
मोहनमाला मोतिनमाला पहिरे और फुलनके हार ॥
बाजू जोसन टाड़ैं तीनों दोऊभुजा पहिरि सरदार ११३
नीले रँगकी चुरियाँ पहिरी गोरे हाथनका शृङ्गार ॥
अगे अगेला पिछे पछेला तिनविचककनाकरैंबहार ११४
छल्ले पहिरे सब अँगुरिन में अँगुठा लीन आरसी धार ॥

पहिरि करधनी ली कम्मर में पायँन पायजेब झनकार ११५
कड़ाके ऊपर छड़ा बिराजै नीचे मेंहदी करै बहार ॥
बिछुआपहिरे सब अँगुरिन में अनवटअँगुठनकाशृंगार ११६
वेष जनाना ऊदन धरिकै तुरतै पलकी लीन मँगाय ॥
बैठ पालकी में नरनाहर मनमें सुमिरिशारदामाय ११७
हिरिया मालिनि को सँगलैकै फुलवा महल गयेनगच्याय ॥
उतरि पालकी सों नरनाहर शारदचरणकमलशिरध्याय ११८
आगे हिरिया पाछे ऊदन फुलवा पास पहूँचे जाय ॥
फुलवा दीख्यो जब ऊदन को मनमाँ बड़ी खुशी हैजाय ११९
रूप देखिकै त्यहि मालिनिको मनमाँ गई सनाकाखाय ॥
कै पैताना खाली दीन्ह्यो आदरकीनफेरिअधिकाय १२०
बैठि उसीसे जब ऊदनगे फुलवा बोली वचन रिसाय ॥
कैसी मालिनि यह लाई है मालिनिहालदेयबतलाय १२१
मालिनि बोली तब फुलवाते बेटी साँची देयँ बताय ॥
बेटी प्यारी परिमालिक की नौकरिनासुपासकीआय १२२
राजनीति का यह जानति है राखति स्वऊ सखी का भाय ॥
बैठि उसीसे यह जावै जो तौ वह क्षमा करै हर्षाय १२३
सुनिकै बातैं ये मालिनि की फुलवा क्षमा कीन सुखपाय ॥
हँसिकै बोली फिरि मालिनिते साँची साँची देउ बताय १२४
कौन बहादुर परिमालिक घर कारो राजपुत्र यहिकाल ॥
बातैं सुनिकै ये फुलवाकी बोला देशराजका लाल १२५
आल्हा ब्याहे हैं नैनागढ़ पथरीगढ़ै वीर मलखान ॥
पिरथी घरमाँ ब्रह्मा ब्याहे ठाकुर दिल्लीके चौहान १२६
कारो इकलो बघऊदनहै ज्यहिकै बाँड़े बहै तलवार ॥

बड़ा लड़ैया जगमाँ जाहिर ठाकुर बेंदुलका असवार १२७
इतना सुनिकै फुलवा बोली मालिनि साँच देउ बतलाय ॥
हाथ पैर पुरुषन के ऐसे कैसे करें पैरें दिखाय १२८
इतना सुनिकै मालिनि बोली साँचे बचन करो परमान ॥
भैंसि चराई बालापनमाँ माता पिता दरिद्रीजान १२९
परी व्यवस्था लरिकाई में ताको करी कहाँलगगान ॥
जैसी गुजरी हमरे ऊपर ऐसी परै न काहू आन १३०
फुलवा बोली फिरि हिरिया ते मालिनि जाउ घरै यहिबार ॥
कालिह सबेरे यहि लैजायो साँची मानो कही हमार १३१
इतना सुनिकै हिरिया चलिभै अपने घरै पहूँची आय ॥
फुलवा बाँदी को बुलवायो तासों चौपरिलीन मँगाय १३२
खेलन लागी मालिनि सँगमाँ आधी राति गई नगच्याय ॥
लैकै पंखा बाँदी हाँकै ऊदन केर वस्त्र उड़िजाय १३३
कब्जा झलकै तलवारी का सो फुलवा के परा निगाह ॥
फुलवा बोली तब मालिनिते झलकै बगल तुम्हारे काह १३४
तुम नहिं बेटीहौ मालिनिकी औ छल किह्यो यहाँपर आय ॥
सुनि मकरन्दा तुमका पाई तुरतै खोदि लेइ गड़वाय १३५
अब पहिंचाना हम तुमको है बेटा देशराज के लाल ॥
जियत न जैहौ तुम महलनते औपरिगयोकालके गाल १३६
नाम तुम्हारो उदयसिंह है तुमहीं बेंदुल के असवार ॥
इतना सुनिकै मालिनि बोली कीन्ह्योनीकीआजचिन्हार१३७
कहँ पै दीख्यो तुम ऊदन को साँचे हाल देउ बतलाय ॥
इतना सुनिकै सब बाँदिनको फुलवा तुरतै दीन हटाय १३८
औ फिरि बोली बघऊदन ते मानो कही बनाफरराय ॥

रानी कुशला के महलन में योगीरूपधरा तुम जाय १३६
घर घर लूटा तुम माड़ो माँ हमसों शपथकीन फिरिआय ॥
भेद बतावा घर अपने का तब तुमलीन बापका दायँ १४०
ब्याह हमारो जब तुम कीन्हा मलखे हना मोहिं ततकाल ॥
मिलन आपनो तुम्हैं बतावा नाहर देशराज के लाल १४१
साँचो चाहत जो जाको है ताको स्वई मिलै सबकाल ॥
यह सुनि राखा हम विप्रन सों सो सबसाँचाभयो हवाल १४२
पै गति तुम्हरी ह्याँ नाहीं है हमसों ब्याह करो सरदार ॥
बड़ा लड़ैया मकरन्दा है ज्यहिते हारिगई तलवार १४३
सुनिकै बातैं ये फुलवा की बोला उदयसिंह सरदार ॥
काह हकीकति मकरन्दा कै साँची मानो कही हमार १४४
भल पहिचान्यो तुम मोका है अब सब पूर भये मम काम ॥
ब्याह तुम्हारो अब कीन्हे बिन लौटि न जायँ आपनेधाम१४५
इतना सुनिकै फुलवा बोली मानो कही बनाफरराय ॥
काठक घोड़ा बाण अजीता जादू सेल शनीचर भाय १४६
पापी जियरा अति मेरो है ताते धीर धरा ना जाय ॥
करो बियारी तुम महलन में सोवो सेज बनाफरराय १४७
ऊदन बोले तब फुलवा ते तुमको साँच देयँ बतलाय ॥
क्वारी कन्या की शय्यापर कबहुँ न धरैं बनाफर पायँ १४८
धीरज राखो अपने मनमाँ सोवो तुरत सेज में जाय ॥
भयो भरोसा तब फुलवा के सोई विकट नींदको पाय १४९
तारागण सब चमकन लागे सन्तन धुनी दीन परचाय ॥
उये निशाकर आसमान में बिरहिनिपीरभईअधिकाय१५०
माथ नवावों पितु अपने को ह्याँ ते करों तरँग को अन्त ॥

राम रमा मिलि दर्शन देवैं इच्छा यही भवानीकन्त १५१

इति श्रीलखनऊनिवासि (सी, आई, ई) मुंशीनवलकिशोरात्मज बाबूप्रयागनारायणजीकी आज्ञानुसारउन्नामप्रदेशान्तर्गतपँडरीकलांनिवासिमिश्रवंशोद्भवबुध-कृपाशंकरसूनु पं० ललिताप्रसादकृत ऊदनफुलवामिलाप वर्णनोनामप्रथमस्तरंगः ॥ १ ॥

सवैया ॥

कौन कि आश सुपासमिलै नितहोत मनैमन याहि बिचारा ।
आशकि पाश सुपास कहाँ यह सोचत मोचत दुःख अपारा ॥
भीररी यहि लोकहिकि शिर शास्त्र औ वेद पुराण निहारा ।
बाम भये रघुनाथ सों साँच करै ललिते फिरि कौन उबारा १

सुमिरन ॥

मैं पद बन्दौं रिपुसूदन के लवणासुरै पराजय कीन ॥
मानों शत्रुन के जीतै को साँचो जन्म शत्रुहन लीन १
काटिकै मधुबन पुरी बसायो मथुरापुरी परा त्यहि नाम ॥
अश्वमेध में सब जग जीत्यो कीन्ह्यो शम्भु साथ संग्राम २
छोटे भाई लषणलाल के साँचे भये भरत के दास ॥
इन यश वरणा अश्वमेध में पूरण भई हमारी आश ३
मातु सुमित्रा के बालक ये जग में भये सुयश की राश ॥
जो कोउ सुमिरै रिपुसूदन का साँचो करै प्रेम बिश्वास ४
प्यारो होवै रघुनन्दन का साँचो ह्वई रामको दास ॥
छूटि सुमिरनी गै ह्याँते अब ऊदन ब्याह करों परकाश ५

अथ कथाप्रसंग ॥

उये दिवाकर जब पूरब में बालकरूप बिम्ब अतिलाल ॥

बेटी फुलवा के महलन में जागा देशराजका लाल १
देबा बोला ह्याँ हिरियाते मालिनि मानो कही हमार ॥
देर लगावो अब घरमाँ ना लावो उदयसिंह सरदार २
लैकै पलकी मालिनि चलि भै फुलवा पास पहूँची जाय ॥
फुलवा बोली तब हिरियाते अब यहि जावो तुरत लिवाय ३
इतना सुनिकै ऊदन चलिगे पहुँचे तुरत द्वार में आय ॥
बैठ पालकी में बघऊदन मनमें सुमिरि शारदामाय ४
आयकै पहुँचे जब मालिनिघर देबा बोला वचन सुनाय ॥
साथ जनाना का करिबे ना जैबे जहाँ चँदेलाराय ५
बन्यो जनाना तुम नरवर में कैहौं हाल जाय दरबार ॥
बाना छोड़े रजपूती का ऊदन जीवेका धिक्कार ६
इतना सुनतै कायल ह्वैगा नाहर उदयसिंह सरदार ॥
पेट मारने के कारण सों ऊदन लीन्ही हाथ कटार ७
हाथ पकरिकै देबाठाकुर बोला सुनो बनाफरराय ॥
चरचा करिबे ना मोहबेमाँ ऊदन साँच देवँ बतलाय ८
भई लालसा हमरे मनमाँ फुलवा देखनको अधिकाय ॥
करु अभिलाषा पूरण हमरी आल्हाकेर लहुरवा भाय ९
ऊदन बोले तब देबाते तुमको कैसे लवैं दिखाय ॥
जैस बतावो देबा ठाकुर तैसे साँचो करैं उपाय १०
इतना सुनिकै देबा बोले योगी बनो बनाफरराय ॥
अलख जगावैं पुर घर घर में याही सीधोसाद उपाय ११
गह मनभाई बघऊदन के दूनों लीन्ह्यो भस्म रमाय ॥
कण्ठ माला औ मृगछाला आला योगीरूप बनाय १२
गुदड़ी लीन्ही दोऊ ठाकुर तामें छिपी ढाल तलवार ॥

डमरू लीन्ह्यो देबा ठाकुर बंशी उदयसिंह सरदार १३
धुरपद, सोरठ, जैजैवन्ती, गावैं पूरराग कल्यान॥
टप्पा ठुमरी भजन रेखता तोरैं गजल पर्ज पर तान १४
को गति बरणै तिन योगिनकै एकते एक रूप गुणवान॥
ड्योढ़ी दाबे दोउ नरपति कै योगी चले तुरत बलवान १५
देखि तमाशा तिन योगिनका मारग भीर भई अधिकाय॥
ता ता थेई ता ता थेई थेई थेई दीन मचाय १६
बाजै डमरू भल देबा का ऊदन बंशी रहा बजाय॥
मोर कि नाचन ऊदन नाचै मारग भूलि गये सबभाय १७
मोहीं तिरिया भल नरवर की चढ़िचढ़ि लखैं अटारिनआय॥
एक एक सों बोलन लागीं जैसे नारिन केर स्वभाय १८
धन्य बखानों इन मातन को जिनकी कोखिलीनअवतार॥
देखो आली इन योगिन को कैसो रूप दीन करतार १९
ये दोउ बालक क्यहु राजा के बारे लीन योग को धार॥
सब गुण आगर दोउ नागर हैं योगी कामरूप अवतार २०
क्यहू पियासे लरिका घर में भोजन करैं क्यहू भरतार॥
पै ते भूलीं दोउ योगिन में तन मन केरो नहीं सँभार २१
गावत नाचत दोऊ योगी पहुँचे नरपति के दरबार॥
बाजा डमरू तहँ देबा का नाचा बेंदुल का असवार २२
कमर भुकावै भाव बतावै गावै देशराज का लाल॥
देखि तमाशा यहु योगिन का भा मनबड़ा खुशीनरपाल २३
नरपति बोला तब योगिन ने साँचे हाल देउ बतलाय॥
कहाँ ते आयो औ कहँ जैहौ चाहौ काह लेनको भाय २४
हम तो आये बंगाले ते जावैं दिगबिजय महराज॥

द्रव्य न चाहैं कछु महराजा केवल उदरभरनसों काज २५
सुनिकै बातैं ये देवा की बोला नरवरका सरदार ॥
धुरपद गावो यहि समया में भोजन अबै होय तय्यार २६
बातैं सुनिकै महराजा की बोला देशराज का लाल ॥
ब्याही नारी के हाथे का भोजन करैं नहीं नरपाल २७
इतना सुनिकै राजा बोले योगी मानो कही हमार ॥
है जो कन्या उपरोहित कै भोजन सोई करी तैयार २८
देवा बोला तब राजा ते यह नहिं ठीक भूमिभरतार ॥
जरिजा अँगुरी जो बाम्हनिकै हमरो योगहोय सब छार २९
शास्त्र पुराणन को जानैं हम मानैं लिखा ठीक महराज ॥
मारै शापै गारी देवै तबहूं विप्र पूजने काज ३०
होय जो कन्या तुम्हरे घर की भोजन करै स्वई तैयार ॥
तो तो योगी भोजन करि हैं नाहीं मांगैं और दुवार ३१
इतना सुनिकै फिरि बोलत भा राजा नरवर का सरदार ॥
बेटी हमरी जो फुलवा है सोई भोजन करी तयार ३२
इतना सुनिकै योगी बोले यहही ठीक रहा महराज ॥
धर्म न जैहै कछु योगिन का रहि है दुऊ दिशाकीलाज ३३
पुत्र आपने मकरन्दा को तबहीं बोलि लीन नरपाल ॥
फुलवा बहिनी जो तुम्हरी है तासों कहौजाय यह हाल ३४
इतना सुनिकै मकरँद चलिभा औ फुलवा ते कहा सुनाय ॥
बातैं सुनिकै मकरन्दा की माता पास पहूँची आय ३५
आयसु लैकै महतारी की भोजन करन लागि तैयार ॥
नाचैं गावैं दोऊ योगी मोहित भयो राजदरबार ३६
भयो बुलौवा फिरि महलन में योगी करैं चलैं ज्यैंउनार ॥

इतना सुनिकै योगी चलिभे पीढ़न बैठिगये सरदार ३७
भोजन परसन फुलवा लागी देबा चितय दीन कइबार ॥
बैठे पाटापर बघऊदन मनमाँलाग्यो करनबिचार ३८
किह्यो रसोई क्वारी कन्या भोजन केर नहीं अधिकार ॥
बनि बौराहा जो हम जावैं तौ रहिजावै धर्म हमार ३९
देबा बोला फिरि ऊदन ते यहही फुलवा है सरदार ॥
इनहीं कारण नाक छिदायो धारयो बेष जनाना यार ४०
किह्यो बहाना ह्याँ ऊदन ने औ गिरि गयो पछाराखाय ॥
रानी चंपा दौरति आई योगिन पास पहूँची आय ४१
कौर डारिकै देबा योगी तहँपर बार बार पछिताय ॥
देखिकै सूरति लघुयोगी कै चंपा बोली बचन सुनाय ४२
पाप आयगा यहिके मनमाँ ताते गिरा पछाराखाय ॥
योगी नाहीं यहु भोगी है यहिका डारों पेट फराय ४३
मकरँद लरिका का बुलवावों यहिका योग सिद्ध ह्वैजाय ॥
इतना सुनिकै देबा बोला रानी काह गई बौराय ४४
भून चुरैलै यहि महलन में की क्यहु नजरि लगाई आय ॥
जो कछु होई यहिके जीका तौ फिरि योग देयँदिखराय ४५
ऐसे वैसे हम योगी ना ना हम मँगैं खेत खरिहान ॥
हमतो योगी संतोषी हैं जाने काह नारि बैलान ४६
सुनिकै बातैं ये देबा की रानी गई सनाकाखाय ॥
जल के छींटा फुलवा मारे जागा तुरत बनाफरराय ४७
बड़ी खुशाली देबा कीन्ह्यो लीन्ह्यो तुरत ताहि लपटाय ॥
ऊदन बोले तब रानी ते तुमका साँचदेयँ बतलाय ४८
परिगै छाया क्यहु ब्याही कै ताते गई मूरछा आय ॥

फुलवा बोली तब माताते योगी साँचरहा बतलाय ४९
परिगै छाया जब बाँदी कै तबहीं गिरा मूरछाखाय ॥
ऊदन बोले तब रानी ते ह्याँते जान चहैं हम माय ५०
इतना सुनिकै चम्पा बोली योगी मानो कही हमार ॥
भोजन दूसर हम परसावैं योगी जेंयलेउ ज्यवनार ५१
देवा बोला तब रानी ते साँचे बचन करो परमान ॥
फिरिकै बैठैं हम चौकाना पूरण नियम हमारो जान ५२
ऐसे योगी आगे ह्वैहैं भोगिहैं भोगस्वादवश आय ॥
तैसे योगी हम नाहीं हैं अपनो डारैं नियम नशाय ५३
योगी ह्वैकै भोगी होवै शोचन योग सोय अधिकाय ॥
इतना कहिकै दोऊ योगी माँगिकै बिदा चले हर्षाय ५४
आयकै पहुँचे मालिनि घरमाँ योगिनबाना धरे उतार ॥
पाग बैंजनी शिरपर बाँधी नाहर उदयसिंह सरदार ५५
ऊदन बोले फिरि देवा ते ठाकुर मैनपुरी चौहान ॥
कई महीना ह्याँपर गुजरे ना अब रहिगा द्रव्यठिकान ५६
घोड़ खरीदन कासों जावैं यहही शोच होय अधिकाय ॥
पै कछु औषधि ह्याँ सूझै ना कैसी करी यहांपर भाय ५७
का लै जावैं अब मोहबे को काबुल काह खरीदैं जाय ॥
इतना सुनिकै देवा बोले धीरज धरो लहुरवाभाय ५८
गत नहिंशोचैं कहुँ पण्डितजन मत यह ठीक हृदय ठहराय ॥
कूच करावो अब नरवरते चलिये नगरमोहोबे भाय ५९
यह हम कहिबे परिमालिकते नरवर टिकयन चँदेलेराय ॥
मन तुरैले इनके लागी ऊदन तहां गये बौराय ६०
कछु नहिं आशा तहँ बचनेकी निश्चय गई प्राणपै आय ॥

कीन दवाई हम ऊदन की सब धन आये तहाँ गँवाय ६१
यह मन भाई उदयसिंह के तुरतै कूच दीन करवाय ॥
कीरतिसागर के डाँड़े पर पहुंचे फेरि बनाफर आय ६२
उतरि बेंदुला ते भुइँ आये तम्बू तुरत दीन गड़वाय ॥
परिगा पलँगा तहँ ऊदन का लेटे तहाँ बनाफरराय ६३
उबटन लाग्यो मल हल्दी का पीली देह परै दिखराय ॥
भोजन कमती कैदिन खायो तासोंबदनगयो कुम्हिलाय ६४
करिकै सूरति बीमरिहा कै बोला उदयसिंह सरदार ॥
बात बनावो परिमालिक ते तौ रहिजावै धर्म हमार ६५
गंगा कीन्ही हम फुलवा सँग तुम्हरो ब्याह करब ह्याँ आय ॥
टरै प्रतिज्ञा जो क्षत्री कै तौफिरि जहरखाय मरिजाय ६६
मित्र साँकरो फिरि ऐसो अब परिहै बार बार नहिं आय ॥
इतना सुनिकै देवा चलिभा पहुंचा जहाँ चँदेलोराय ६७
सूरति दीख्यो जब देबा की भा मन खुशी रजापरिमाल ॥
हाथ जोरिकै देबा बोल्यो औ ऊदनके कह्यो हवाल ६८
लगीं चुरैलै नरवरगढ़ में ऊदन ह्वैगे हाल बिहाल ॥
रुपिया पैसा सब खर्चा भे रहिगा कछू नहीं नरपाल ६६
कीरतिसागर तम्बू भीतर ब्याकुल परा लहुरवाभाय ॥
इतना सुनिकै परिमालिक जी तुरतै गये सनाकाखाय ७०
लिखिकै पाती आल्हाजी को तुरतै धावन लीन बुलाय ॥
देकै पाती फिरि धावन को बाकीहाल कह्यो समुझाय ७१
लैकै पाती धावन चलिभा दशहरिपुरै पहूंचा जाय ॥
दीन्ह्यो पाती जब आल्हा को बाँचा आंकु आंकु निरताय ७२
पढ़िकै पाती आल्हा ठाकुर तुरतै हाथी लीन मँगाय ॥

चढ़िकै हाथी आल्हा चलिभे मनमाँसुमिरि शारदामाय ७३
कीरतिसागरपर पहुंचत भा यहु रणबाघु बनाफरराय॥
चढ़े पालकी परिमालिकजी सोऊ अटे वहाँपर जाय ७४
पौढ़ा पलँगापर बघऊदन पागल बना बनाफरराय॥
देखि सनाका परिमालिक भे मनमाँ बार बार पछिताय ७५
ऊदन ऊदनकै गोहरायो आल्हा बैठि पलँगपर जाय॥
जब नहिं बोले बघऊदन हैं आल्हा बोले बचन रिसाय ७६
तुमहीं पठयो है ऊदन को साँची सुनो चँदेलेराय॥
जो कछु जीका यहिके होइहै मोहबा तुरत द्याब फुँकवाय ७७
बोलि न आवा परिमालिक ते हाँ अरु हूँब बन्दभा भाय॥
ऊदन ऊदन कै गोहरायो बारम्बार चँदेलेराय ७८
तबहूं ऊदन कछु बोले ना आल्हा बहुत गये घबड़ाय॥
उठिकै चुप्पे चढ़ि हाथीमाँ दशहरिपुरै पहूंचे आय ७९
हाल बतायो सब सुनवाँ को सुनतै गई सनाकाखाय॥
सोचन लागी अपने मनमाँ साँची बात गई जिय आय ८०
आँखि लागिगै तहँ फुलवाकै व्याकुल भये लहुरवाभाय॥
पूरि गवाही मन यह दीन्ह्यो साँची ठीक लीन ठहराय ८१
यहै सोचिकै सुनवाँ बोली लीजै ऊदन यहाँ बुलाय॥
करब दवाई हम ऊदन कै नीको होय बनाफरराय ८२
यह मन भायगई आल्हा के तुरतै पलकी दीन पठाय॥
सौंपिकै देवा को ऊदन का औ चलिभयो चँदेलोराय ८३
खबरि फैलिगै यह मोहबेमाँ व्याकुल उदयसिंह सरदार॥
जितनी रानी परिमालिक की रोई छाँड़ि सबै डिडकार ८४
जितनी रय्यत रह मोहबे की कीरतिसागर चली बिहाल॥

जायके देखैं जब ऊदन को रोवैं तहाँ बृद्ध औ बाल ८५
गई पालकी जब आल्हा की चकरन जाय कहा सब हाल ॥
सुनवाँ भौजीने बुलवायो चलिये देशराज के लाल ८६
हमसोंफिरिफिरि यह समुझायो आवैं यहाँ लहुरवाभाय ॥
करब दवाई हम नीकी बिधि चंगे होयँ बनाफरराय ८७
सुनिकै बातैं ये चकरन की ऊदन ठीक लीन ठहराय ॥
हाल बतावब जो भौजीते ह्वै हैं काम सिद्धि तहँ जाय ८८
यहै सोचिकै मन अपने माँ पलकी चढ़ा लहुरवाभाय ॥
चारि कहरवा हुँकरत चलिभे दशहरिपुरै पहूंचे आय ८९
उतरि पालकी ते भुइँ आवा घावलि देखिगई घबड़ाय ॥
रानी सुनवाँ तहँ चलिआई औ करगहिकै गईलिवाय ९०
जायकै पहुंची निजमहलन में पलँगा उपर दीन बैठाय ॥
पूँछन लागी बघऊदन ते साँचे हालदेउ बतलाय ९१
आँखि लागिगै का फुलवा कै घावर बिकलभयो अधिकाय ॥
सुनिकै बातैं ये भौजीकी बोला तुरत बनाफरराय ९२
जैसे साँची तुम पुछती हौ तैसे साँच देयँ बतलाय ॥
किरिया कीन्ही हम फुलवा ते भौंरी करब तुम्हारी आय ९३
काह बतावैं हम भौजी ते नाकछु सूझा और उपाय ॥
तब बौराहा बनिकै आयन तुमते साँचदीन बतलाय ९४
इतना सुनिकै सुनवाँ बोली साँची सुनो लहुरवाभाय ॥
काठक घोड़ा बाण अजीता उनघर सेल शनीचर आय ९५
कैसे किरिया तुम कै लीन्ही देवर भूल भई अधिकाय ॥
तेहिते चुप्पे घरमाँ बैठो मानो कही बनाफरराय ९६
वैसी फुलवा लाखन मिलि हैं भापन साँच लहुरवा भाय ॥

यह नहिं भाई मन ऊदन के सुनतैंबदनगयोकुम्हिलाय ९७
जब रुख दीख्यो यह ऊदन का सुनवाँ चली महलते धाय ॥
जायकै पहुँची आल्हादिगमाँ औसबहालकहा समुझाय ९८
सुनिकै बोले आल्हा ठाकुर तिरिया काहगई बौराय ॥
बेढब राजा है नरवर का तहँ शिर कौन कटावै जाय ९९
इतना सुनिकै सुनवाँ बोली क्षत्री पूत बनाफरराय ॥
तुमका बातैं ये छाजैं ना कन्ता वार वार बलिजायँ १००
इतना सुनिकै आल्हा बोले तिरिया बिना बुद्धिकी आय ॥
नाहक हिंसा हम करिहैं ना मरिहैंजीवजन्तुअधिकाय १०१
इतना सुनिकै सुनवाँ बोली दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ॥
यह नहिं हिंसा है क्षत्री कै कीन्हेनियुद्धकृष्णयदुराय१०२
सोलह सहस आठ कन्यन को लड़िकै लीन कृष्ण महराज ॥
तिनकी बहिनी के पति अर्जुन कीन्हेनियुद्धद्रौपदीकाज १०३
धर्म धुरंधर भीषम ह्वैगे लड़िगे काशिराज घरजाय ॥
अम्बा अम्बे अम्बलिका को लायेजीतिनृपनसमुदाय १०४
पैकछु हिंसा तिन मानी ना जानैं धर्म कर्म अधिकाय ॥
पढ़िकै भूल्यो तुम महराजा कीयहिअवसरगयोडेराय १०५
लड़नो मरनो समरभूमि में यहही क्षत्री को बयपार ॥
लहँगा लुगरा हमरो पहिरो अपनी देउ ढाल तलवार १०६
मैं चढ़िजाऊँ नरवरगढ़ को ब्याहूं जाय लहुरवाभाय ॥
किरिया कीन्ही बघऊदन ने भौंरी करब यहाँपर आय १०७
झूँठी किरिया जो ह्वैजैहै तौ मरि जाय जहर को खाय ॥
ऐसो वैसो बघऊदन ना गंगा झूँठ उलीचै जाय १०८
उदय दिवाकर हों पश्चिम में चन्दा ब्रहौ रसातल जाय ॥

सोंकि समुन्दर चहु महि लेवे बिल्ली लड़ै सिंहसों आय १०९
ये अनहोनी चहु ह्वैजावैं झूंठ न कहै लहुरवा भाय ॥
इतना सुनिकै आल्हा बोले अब तू चुप्प साधि रहिजाय ११०
टरिजा टरिजा री सम्मुख ते काहे बार बार बर्राय ।
ब्याहन जैबे हम नरवर में तहदिल होयँ बनाफरराय १११
इतना सुनिकै सुनवाँ चलि भै आल्हा रुपना लीन बुलाय ॥
लिखिकै चिट्ठी मलखानेको सिरसा तुरतदीन पठवाय ११२
खबरि पायकै मलखे ठाकुर दशहरिपुरे पहूँचे आय ॥
हाथ जोरिकै द्वउ आल्हा के बोलेचरणन शीश नवाय ११३
काह आज्ञा है दादा कै जो सेवक का लीन बुलाय ॥
सुनिकै बातैं मलखाने की आल्हाहाल कहासमुझाय ११४
घोड़ खरीदन गे काबुल को नरवर नैन खरीद्यनि जाय ॥
बनि बौंगहा ऊदन बैठे चलियेब्याहकरनअबभाय ११५
बड़ी खुशाली भै मलखे के बोले हाथ जोरि शिरनाय ॥
न्यवत पठावो सब राजन को दादा भली बनी यह आय ११६
इतना सुनिकै आल्हा ठाकुर तुरतै धावन लीन बुलाय ॥
पाती लिखिकै सबराजन को तुरतै न्यवतं दीनपठवाय ११७
यक हरिकारा गा झुन्नागढ़ यक नैनागढ़ दीन पठाय ॥
यक हरिकारा गा बौरीगढ़ दिल्ली एक पहूँचा जाय ११८
उरई क़नउज सिरसा मोहबे सबने न्यवत दीन पठवाय ॥
खबरि पायकै सब राजागण दशहरिपुरे पहूंचे आय ११९
कीनि खातिरी सबकै आल्हा डंका तुरत दीन बजवाय ॥
बाजे डंका अहतंका के हाहाकार शब्दगा छाय १२०
घावलिबोली फिरि आल्हा ते मानो कही बनाफरराय ॥

रीती भाँती मल्हना करि है पाल्यो बारे दूध पिलाय १२१

कौन हितैषी है मल्हना सम ह्याँते कूच देउ करवाय ॥

सुनिकै बातैं ये माता की आल्हा कूचदीन करवाय १२२

कीरतिसागर मदनताल पर डेरा गड़े नृपन के आय ॥

आल्हा ऊदन मलखे सुलखे मल्हना महल पहूँचेजाय १२३

द्यावलि ब्रिरमा सुनवाँ आदिक येऊ गईं तहाँ पर आय ॥

वड़ी खुशाली भै मल्हना के हमरे बूत कही ना जाय १२४

चूड़ामणि पण्डित को तुरतै आल्हा लीन तहां बुलवाय ॥

तेल कि साइति सो बतलायो सुवरणकलशलीनमँगवाय १२५

घृतको दीपक धरि कलशापर चौकी तहाँ दीन डरवाय ॥

ऊदन बैठे फिरि चौकी पर मनमें सुमिरि शारदामाय १२६

एक कुमारी तेल चढ़ावै गावन लगीं तहाँ सब गीत ॥

आई बिरिया फिरि नहछुर की पगियाधरी शीशपरपीत १२७

कङ्कण बांधा गा हाथेमाँ शिरपर मौरदीन धरवाय ॥

ब्याहके कपड़ा फिरि पहिरायो पलकीतुरतलीनमँगवाय १२८

सुमिरि भवानी मइहरवाली पलकी बैठ बनाफरराय ॥

बेटी बैठी चन्द्रावलि तहँ राईलोन उतारति जाय १२९

चली पालकी बघऊदन की कुँवना पास पहूँची आय ॥

इन्द्रसेन चन्द्रावलि दुलहा सोकुँवनापरगयोलिवाय १३०

रानी मल्हना त्यहि समयामें दीन्ह्यो कुँवाँ पैर लटकाय ॥

पहिली भाँवरि के घूमत खन ऊदन लीन्ह्यो पैर उठाय १३१

प्राणनेग मैं तुमको दीन्हे माता काढु पैर हरषाय ॥

यहिविधि कहिकै सातौं भाँवरि घूमे तहां बनाफरराय १३२

बैठे पलकी फिरि बघऊदन आल्हा नेगदीन चुकवाय ॥

भये अयाचक सब याचकगण जयजयकार रहे तहँगाय १३३
कूच के डंका बाजन लागे घूमन लागे लाल निशान॥
बैठे हाथी आल्हा ठाकुर करिकै रामचन्द्रको ध्यान १३४
मलखे सुलखे देबा ब्रह्मा मन्नागूजर भयो तयार॥
औरो राजा न्योते आये तिनहुनबाँधिलीनहथियार१३५
हथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे बाँके घोड़न भे असवार॥
कूच कराय दयो मोहबेते चलिभे सबै शूर सरदार १३६
खर खर खर खर कै रथ दौरे चह चह धुरी रहीं चिल्लाय॥
चलिभैं फौजैं दल बादल सों शोभाकही बूत ना जाय १३७
झम्झम्झम्झम् झीलमबोलैं मर्मर होयँ गैंड़की ढाल॥
मारु मारु कै मौहरि बाजैं बाजैं हाव हाव करनाल १३८
छाय अँधेरिया गै मारग में छिपिगे अन्धकार सों भान॥
को गति बरणै शहजादन कै एकते एक रूप गुणखान १३९
तेगा लीन्हे बर्दवान के कोता खानी लिहे कटार॥
यक यक भाला दुइ दुइ बरछी कम्मर परी एक तलवार १४०
आठरोज का धावा करिकै नरवर पास गये नगच्याय॥
पांचकोस जब नरवर रहिगा मलखे डेरा दीन डराय १४१
ऊंची टिकुरिन तम्बू गड़िगे नीचे लागीं खूब बजार॥
हौदा उतरे तहँ हाथिन के क्षत्रिन छोरिधरा हथियार १४२
जहँना तम्बूहै आल्हा का तहँना लाग खूब दरबार॥
चूड़ामणि पण्डित तहँ बैठे साइतिलागे करनबिचार १४३
पेपनवारी की साइति है पण्डित कहा सुनो मलखान॥
मलखे बोले तब रुपना ते हमरे करो वचन परमान १४४
पेपनवारी बारी लैकै नरपति द्वार देउ पहुँचाय॥

इतना सुनिकै रूपन बोले दोऊ हाथजोरिशिरनाय १४५
ऐपनवारी वारी लैकै दूसर जाय आज महराज॥
नैना झुन्ना औ दिल्ली में कीन्हे हमीं अकेले काज १४६
मूड़ कटावन हम जैबे ना मानो कही वीर मलखान॥
इतना सुनिकै मलखे बोले हारीबात कहौ तुम ज्वान १४७
गदका बाना पटा बनेठी अइहैं कौन दिवस ये काज॥
पहिले मुर्चा तुमहीं कैकै राख्यो देशदेशमें लाज १४८
उदन बियाहे का रहिहैं ना बतियाँ कहिबे का रहिजायँ॥
यहु दिनमिलिहै फिरिकबहूंना तातेसोचिसमझिबतलाय१४९
इतना सुनिकै रूपन बोला ठाकुर सिरसा के सरदार॥
घोड़ बेंदुला हमको देवो ऊदन केरि देउ तलवार १५०
घोड़ बेंदुला को मँगवायो औ दैदीन ढाल तलवार॥
ऐपनवारी वारी लैकै बेंदुल उपर भयो असवार १५१
ऐंड़ा मसक्यो जब बेंदुलके तुरतै चला हवाकी चाल॥
राजा नरपति के द्वारेपर रूपनपहुँचिगयोततकाल १५२
द्वारपालने तब ललकार्यो नाहर घोड़े के असवार॥
कहाँ ते आयो औ कहँ जैहौ कहँ है देश रावरे क्यार १५३
इतना सुनिकै रूपन बोले तुम सुनि लेउ हमारो हाल॥
देश हमारो नगर मोहोबा जहँपर बसैं रजा परिमाल १५४
छोटो भइया जो आल्हा को बेटा देशराज को लाल॥
क्वारी कन्या जो नरपति के ब्याहनअये रजापरिमाल १५५
ऐपनवारी हम लै आये रूपन वारी नाम हमार॥
खबरि जनावो तुम राजा को बारी खड़ा तुम्हारे द्वार १५६
नेग आपने को झगरतहै सो अब पडै देयँ सरदार॥

इतना सुनिकै द्वारपाल कह बारी घोड़े के असवार १५७
नेग बतावो तुम द्वारे का राजै स्वऊ सुनावैं जाय॥
इतना सुनिकै रूपन बोला तुमसों साँचदेयँ बतलाय १५८
चार घरीभर चलै सिरोही द्वारे बहै रक्तकी धार॥
नेग हमारो यह साँचाहै याँच' आय तुम्हारे द्वार १५९
सुनिकै बातैं ये रूपन की बोला [illegible]रपाल ततकाल॥
पींकै दारू द्वारे आये टेढ़ी बात कहै मतवाल १६०
टरिजा टरिजा अब द्वारे ते ओ मतवाले जाति गँवार॥
असगति नाहीं क्यहुराजा की द्वारे करै आय तलवार १६१
काल गाल माँ तू बैठाहै मानै साँच बात यहिवार॥
हवा खायकै ठंढे ह्वैकै बोलै घोड़े के असवार १६२
इतना सुनिकै रूपन बोला गरुई हाँक दीन ललकार॥
हाथ सिपाही पर डारैं ना जबलग मिलै ढूंढ़िसरदार १६३
हमका जानैं दिल्ली वाले जिनके द्वारकीन तलवार॥
भुन्नागढ़ औ नैनागढ़ में द्वारे बही रक्तकी धार १६४
चारि रुपल्ली का नौकर तू टिलटिलटिलटिल रहामचाय॥
इतना सुनिकै द्वारपाल चलि राजै खबरि सुनाई जाय १६५
जितनी गाथा रूपन बोले गासो यथातथ्य सब गाय॥
सुनिकै बातैं द्वारपाल की नरपति तुरतै उठा रिसाय १६६
हुकुम लगायो मकरन्दा ते बारी पकरि दिखावै आय॥
विजयसिंह विजहट को राजा मकरँदसाथचलारिसियाय१६७
द्वारे दीख्यो जब रूपन को गरुई हाँक दीन ललकार॥
खबरदार हो खबरदार हो बारी घोड़े के असवार १६८
काल गाल माँ तू बैठा है अबहीं जान चहत यमद्वार॥

इतना सुनिकै विजयसिंहने अपनी खैंचिलई तलवार १६९
खैंचि सिरोही रूपन लीन्ह्यो द्वारे होन लगी तब मार ॥
अगल बगल में बेंदुल मारै रूपन खूब कीन तलवार १७०
घायल ह्वैगे विजयसिंह जब तब सब बढ़े लड़ैया ज्वान ॥
दांतन काटै टापन मारै बेंदुल खूब कीन मैदान १७१
कोगति बरणै तहँकी ध्यनिकै दोऊ हाथ करै तलवार ॥
रंग बिरंगे क्षत्री ह्वैगे मानो होलीख्यलैं गँवार १७२
कितन्यों क्षत्री घायल ह्वैगे कितन्यों गिरिगे खाय पछार ॥
मूड़न केरे मुड़चौरा भे औ रुण्डनके लगे पहार १७३
बड़ी लड़ाई भै रूपन ते द्वारे बही रक्तकी धार ॥
देखि तमाशा त्यहि बारीका क्षत्री गये मनैमन हार १७४
ऍड़ा मसक्यो फिरि बेंदुलके फाटक पार पहूँचा जाय ॥
मारो मारो हल्ला कैकै क्षत्री चले पछारी धाय १७५
रूपन पहुँचा त्यहि तम्बू में जहँपर बैठि बनाफरराय ॥
जितने क्षत्री नरवरगढ़के आयेलौटि सबैखिसियाय १७६
जितनी गाथा रह द्वारे की रूपन यथातथ्य गा गाय ॥
रूपन बारी की बातैं सुनि भे मन खुशी बनाफरराय १७७
खेत छूटिगा दिननायक सों झंडा गड़ा निशा को आय ॥
तारागण सब चमकन लागे संतन धुनी दीन परचाय १७८
माथ नवावों पितु अपने को ह्याँ ते करों तरँगको अन्त ॥
राम रमा मिलि दर्शन देवैं माँगों यही भवानीकन्त १७९

इति श्रीलखनऊनिवासि (सी, आई, ई) मुंशीनवलकिशोरात्मज बाबू प्रयागनारायणजीकीआज्ञानुसारउन्नामप्रदेशान्तर्गतपँड़रीकलांनिवासि मिश्रवंशोद्भवबुधकृपाशंकरसूनुपं०ललिताप्रसादकृतरूपनविजय वर्णनोनामद्वितीयस्तरंगः ॥ २ ॥

सवैया॥

दीनदयाल कृपाल भुवाल तुम्हीं सब काल करो रखवारी।
मारीच सुबाहु सुरासुरनाहु तुम्हीं पल एकहि में संहारी॥
बालिबली खरदूषण रावण आप हन्यो सबको धनुधारी।
काम औ क्रोध औ लोभ हटाय करो ललिते रघुनाथ सुखारी १

सुमिरन॥

दोउ पद वन्दौं भरतलालके जिनसम धन्यजगतकोआन॥
बड़े पियारे रघुनन्दन के इनयशबालमीकि करगान १
भायप निबह्यो जस भारत जग आरत भये रामसों जाय॥
राज्य न लीन्ही रघुनन्दन जब आपौ कीन योग घर आय २
सब जग ध्यावै रघुनन्दन को रघुवर करैं भरतको याद॥
रघुवर लछिमन भरत शत्रुहन चहु ज्यहि भजैं छांड़िकै बाद ३
जो ज्यहि भावै सो त्यहि ध्यावै आवै सबै आपने काज॥
क्यहू न ध्यावै सो दुखपावै औ बड़ होवै तासु अकाज ४
हमरे सर्वोपरि एकै हैं स्वामी रामचन्द्र महराज॥
तिन्हैं बिसारैं तौ दुखपावैं यह मन सदा हमारे राज ५
छूटि सुमिरनी गै रघुवर कै सुनिये नरवर केर हवाल॥
ब्याह बखानैं उदयसिंह का लड़िहैं बड़े बड़े नरपाल ६

अथ कथाप्रसंग॥

नरपति राजा नरवरगढ़ का भारी लाग राजदरबार॥
बैठे क्षत्री अलबेला तहँ एकते एक शूर सरदार १
नरपति बोला मकरन्दा ते तुम सुत मानो कही हमार॥
बड़े लड़ैया मोहबेवाले बारी भली कीन तलवार २
काह तुम्हारे अब मनमाँ है हमते साँच देउ बतलाय।

हारि बचैहौ की लड़िजैहौ तैसो जल्दी करौ उपाय ३
इतना सुनिकै मकरँद बोला दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ॥
हुकुम जो पावैं महराजा को सबको बांधि दिखावैं आय ४
सुनिकै वातैं मकरन्दा की राजै हुकुम दीन फरमाय ॥
तुरत नगड़ची को बुलवायो पुरमें डौंड़ी दीन पिटाय ५
हुकुम पायकै मकरन्दा का फौजै होन लगीं तय्यार ॥
रण की मौहरि बाजन लागी रणका होन लाग ब्यवहार ६
बाजे डंका अहतंका के क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
ढाढ़ी करखा बोलन लागे बिप्रन कीन बेद उच्चार ७
पहिल नगाड़ा में जिनबन्दी दुसरे बांधि लीन हथियार ॥
तिसर नगाड़ा के बाजत खन क्षत्री सबै भये तय्यार ८
मारु मारु करि मौहरि बाजी बाजी हाव हाव करनाल ॥
बैठ्यो घोड़ा पर मकरन्दा मनमें सुमिरि यशोदालाल ९
कूच करायो नरवरगढ़ ते पहुँच्यो समरभूमि मैदान ॥
गर्दा दीख्यो आसमान में बोल्यो यहां बीर मलखान १०
यहु दल आवतहै नरपति का गर्दा छाय रही असमान ॥
सँभरो सँभरो ओ रजपूतो हमरे करो बचन अब कान ११
इतना सुनिकै मोहबेवाले तुरतै बाँधि लीन हथियार ॥
हथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे बाँके घोड़न भे असवार १२
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातु की सो चरखिन में दीन चढ़ाय ॥
दुहूँ ओर ते गोला छूटे हाहाकार शब्द गा छाय १३
गोला लागै ज्यहि क्षत्री के आधे सरग लिहे मड़राय ॥
गोला लागै ज्यहि घोड़े के धुनकततूलसरिसउड़िजाय १४
गोला लागै ज्यहि हाथी के मानो गिरा धौरहर आय ॥

गोला लागै ज्यहि साँड़िया के तुरतै गिरै भूमि अललाय १५
जौने बैलके गोला लागै मानो मगर कुल्याचै खायँ॥
जौने रथमाँ गोला लागै ताके टूक टूक ह्वैजायँ १६
बड़ी दुर्दशा भै तोपन में धुवना रहा सरग में छाय॥
दूनों दल आगे को बढ़िगे तोपन मारु बन्द ह्वैजाय १७
उठीं बँदूखै बादलपुर की जो नब्बे कै याक बिकाय॥
मघा के बूंदन गोली बरसैं झरसैं सबै शूर त्यहि घाय १८
दूनों दल आगे को बढ़िगे रहिगा एक खेत मैदान॥
भाला बरछी तलवारिन का लाग्यो होन घोर घमसान १९
अपन परावा कछु चीन्हैंना मारैं एक एक को ज्वान॥
सूंढ़ि लपेटा हाथी भिड़िगे घोड़न भिरी रान में रान २०
कउँधालपकनिबिजुलीचमकनि कहुँ कहुँ देखि परै तलवार॥
दूनों दिशिके रजपूतन ने कीन्ह्यो तहां भड़ाभड़मार २१
चलै कटारी बूँदी वाली ऊना चलै विलाइति क्यार॥
तेगा धमकैं बर्दवान के कटि कटि गिरैं शूरसरदार २२
मुराडन केरे मुड़चौरा भे औ रुराडन के लगे पहार॥
रुधिर किसरितातहँ बहिनिकरी जूझे क्षत्री अमित अपार २३
हाथी सोहैं त्यहि सरिता माँ छोटे द्वीपन के अनुमान॥
परे बछेड़ा त्यहि नदिया माँ तिनको नदी कगाराजान २४
छुरी कटारी मछली ऐसी ढालैं कछुवा परैं दिखाय॥
बहैं सेवारा जस नदिया माँ तैसे बहैं वार तहँ जायँ २५
नचैं योगिनी खप्पर लीन्हे मज्जैं भूत प्रेत बैताल॥
परीं लहासैं जो मनइन की तिनकाखावैं श्वानशृगाल २६
बड़ी सनेही नरदेही में कहुँ कहुँ चढ़े काक खगजायँ॥

नदी नेवारा जस नर ख्यालैं तैसे काक कंक गतिभाय २७
को गति बरणै समरभूमि कै हमरे बूत कही ना जाय॥
जितने कायर रहैं फौजन में तर लोथिन के रहे लुकाय २८
हेला आवै जब हाथिन का तब बिन मरे मौत ह्वैजाय॥
छाती धड़कै रण कायर कै सायरखुशीहोयअधिकाय २९
परम पियारी जिनके नारी आरी भये समर में आय॥
कीरति प्यारी जिन क्षत्रिन के सम्मुख सहैं खड्ग के घाय ३०
मकरँद ठाकुर मलखाने का परिगा समर बरोबरि आय॥
दोऊ मारैं दोउ ललकारैं दोऊ लेवैं वार बचाय ३१
मकरँद बोले मलखाने ते ठाकुर लौटि धामको जाय॥
वार हमारी ते बचिहै ना नाहक फँसे समर में आय ३२
सुनिकै बातैं मकरन्दा की बोला बच्छराज को लाल॥
बहिनि बियाहै तौ बचिजइहै नाहीं परे काल के गाल ३३
ज्यहिकी बिटिया सुन्दरि द्याखै त्यहिपर चढ़ै बीर मलखान॥
बिना बियाहे घर नहिं जावै तजिकै करौं समर मैदान ३४
इतना सुनतै मकरँदठाकुर तुरतै खैंचि लीनि तलवार॥
ऐंचिकै मारा मलखाने को मलखे लीन ढालपर वार ३५
सुमिरि भवानी शिवशङ्करको मारी साँग वीरमलखान॥
मूड़ निसानी सो घोड़ा के घोड़ा भाग्यो लिहे परान ३६

सवैया॥

भागिगयो गजेन्द्र तबै अरु जायकै धाममें बेगि बिराजा।
काठक घोड़ औ सेल शनीचर बाण अजीत लियो जय काजा॥
मालिनि धाम गयो फिरि धाय बुलाय चल्यो रण साजिसमाजा।
आयगयो रणखेतन में ललिते मकरन्द बलो फिरि गाजा ३७

ऊदन मारैं तलवारी सों बेंदुल हनैं टाप के घाय ४८
यकइस हाथी असवारन को ऊदन दीन्ह्यो तुरत सुलाय ॥
ऊदन ठाकुर के मुर्चापर कउ रजपूत न रोंकै पायँ ४६
देखि वीरता बघऊदन की मकरँद दौरा गुर्ज उठाय ॥
यह गति दीख्यो मकरन्दा कै हिरियाबोली शीशनवाय ५०
हमका लाये तुम काहे को जो अब दौरे गुर्ज उठाय ॥
जादू डारों बङ्गाले की इनकी कैद लेउ करवाय ५१
इतना कहिकै हिरिया मालिनि औ ऊदनपर डरा मशान ॥
मकरँद ठाकुर त्यहि समया में तुरतै बांधि लीन तहँ आन ५२
गा हरकारा तब आल्हा दिग औ रण हाल बतावा जाय ॥
आल्हा बोले तब देवा ते तुम इन्दलका लवो बुलाय ५३
इतना सुनतै देबा ठाकुर अपने घोड़ भयो असवार ॥
माथ नवायो सो आल्हा को अपनी लई ढाल तलवार ५४
देबा चलिभा ह्याँ तम्बू ते दशहरिपुरै पहूँचा जाय ॥
जीति के डंका बाजन लागे मकरँद कूच दीन करवाय ५५
बड़ी खुशाली नरपति कीन्ह्यो हिरिये द्रव्यदियो अधिकाय ॥
देबा भेंटा ह्याँ सुनवाँ का सवियाँहालगयोफिरिगाय ५६
देवा भेंटा फिरि द्यावलि को दोऊ चरणन शीशनवाय ॥
कही हकीकति सब नरवर की देवलि गिरी मूर्च्छा खाय ५७
कैदी ह्वैगे बघऊदन जो पकरे गये सबै सरदार ॥
मोहिंअभागिनि के बेड़ा को अबधौं कौन लगावै पार ५८
इतना देवलि के कहतै खन इन्दल तहाँ पहूँचाआय ॥
हाथ जोरिकै सो देवा के बोल्यो चरणनशीशनवाय५६
कहौ हकीकति तुम चाचा की नरवर हाल देउ बतलाय ॥

देवा बोला तहँ इन्दल ते बेटा कहीं बूत ना जाय ६०
हिरिया मालिनि की जादू ते पकरे गये उदयसिंहराय ॥
जे व्यवहारी तुम्हरे दिशि के मकरँद कैद लीन करवाय ६१
घोड़ी जखमी भै मलखे कै आल्हा पठयो तुम्हैं बुलाय ॥
इतना सुनिकै इन्दल बोले सबकी कैद देउँ छुड़वाय ६२
हुकुम जो पावों महतारी को दादा चरण बिलोकों जाय ॥
काह हकीकति है मालिनि कै सम्मुख लड़ै हमारे आय ६३
इतना सुनिकै सुनवाँ बोली बेटै बार बार समुझाय ॥
पिता आज्ञा रघुनन्दन करि चौदह बर्ष रहे बनजाय ६४
कौन सिखाई सुत अपने को तुम ना करो पिताके बैन ॥
कही न मानैं पितु अपने की तेई गिरैं नरकके ऐन ६५
जैसे देवता पति नारी को तैसे पिता पुत्र को देव ॥
नीके जानैं धर्म शास्त्र जे ते नित करैं पिता की सेव ६६
तेई सपूते नर बाजत हैं जिनके पिता बचन विश्वाश ॥
कौन भरोसा नरदेही का कलियुगकौनजियनकीआश ६७
पिताहितैषी जग सब कोहै अपनो हुनर देय बतलाय ॥
रहै लालसा पितु उरमाहीं हमसों पुत्रहोय अधिकाय ६८
जे नहिं मानैं पितु अपने को तेई नीच जगत में भाय ॥
येई कुलीने अकुलीने के लक्षण साफपरैं दिखलाय ६९
निन्दक होवै रघुनन्दन को तासों कौन हमारो नात ॥
नेही गेही नरदेही का जगमें साँचो राम लखात ७०
इतना सुनिकै इन्दलठाकुर देवी चरण शरण गा धाय ॥
विनय सुनाई भल देवी को पढ़िपढ़िवेदमन्त्रचन्नकोभाय ७१
बरंब्रहिभै तब मठिया ते इन्दल बोल्यो शीश नवाय ॥

विजय हमारी नरवर होवै तुम सुनिलेउ शारदामाय ७२
एवमस्तु भा फिरि मठिया माँ इन्दल चलिभा शीशनवाय ॥
आयसु माँग्यो फिरि माता ते सुनवाँलीन्ह्यो हृदयलगाय ७३
यन्त्र बांधिकै भुजदण्डन में मस्तक रुचना दियोलगाय ॥
पढ़ि पढ़ि रक्षाके मन्त्रन को भूली जादू दीन बताय ७४
घोड़ करिलिया आल्हावाला इन्दल तुरत लीन कसवाय ॥
बिदा मांगिकै महतारी सों देवा साथ चले हरषाय ७५
देवी चलिकै मठभीतर सों नरवर गढ़ै पहूंची आय ॥
काठक घोड़ा बाण अजीता लीन्ह्योसेल शनीचरजाय ७६
किरपा करिकै जगदम्बा तहँ चेतन कीन फौजको जाय ॥
इन्दल पहुंचे जब तम्बू में आल्हालीन्ह्यो गोदबिठाय७७
चूम्यो चाट्यो हृदय लगायो औ सब दीन्ह्यो कथासुनाय ॥
इन्दल बोल्यो तब आल्हा ते दादा सत्य देयँ बतलाय ७८
करो तयारी अब नरवर की सबकी कैद लेयँ छुड़वाय ॥
ठाढ़ो हाथी पचशब्दा था आल्हातुरत लीन सजवाय७९
बैठे हाथी आल्हाठाकुर इन्दल तुरत भये तय्यार ॥
बैठ कबुतरी पर मलखाने देबा भयो घोड़ असवार ८०
मारु मारु करि मोहरि बाजी बाजी हाव हाव करनाल ॥
खर खर खर खर कै रथ दौरे रब्बा चले पवनकी चाल ८१
कूचकराये आल्हा ठाकुर नरवरगढ़ै चले ततकाल ॥
कउ कउ घोड़ा हिरनचाल पर कउ कउ चलैं मोरकी चाल ८२
कउ कउ घोड़ा हंस चालपर कउ कउ सरपट रहे भगाय ॥
कदम चालपर कोऊ घोड़ा केहू टाप न परै सुनाय ८३
या विधि बेला अलबेला सब पहुँचे समरभूमि में जाय ॥

गा हरिकारा तब नरवरमें राजै खबरि दीन बतलाय ८४
गाफिल बैठे का महराजा शिरपर फौज पहूँची आय ॥
सुनिकै बातैं हरिकारा की राजा गये सनाकाखाय ८५
आज्ञा दीन्ह्यो मकरन्दा को जावो समरभूमि तुम धाय ॥
इतना सुनतै मकरँद चलिभा तुरतै राजै शीश नवाय ८६
बाण अजीता सेल शनीचर ढूँढ़्यो घोड़ काठको जाय ॥
पता न पायो इन काहूका लाग्यो बार बार पछिताय ८७
हिरिया मालिनि के घर पहुँचा लीन्ह्यो ताको संग लिवाय ॥
चलि मकरन्दा भा नरवरते पहुँचा समरभूमि में आय ८८
आगे घोड़ा मकरन्दा का पाछे सकल सेन समुदाय ॥
ऐसी आगे इन्दल ठाकुर पहुँच्यो समरभूमिमें आय ८९
इन्दल बोल्यो मकरन्दा ते मामा काह गयो बौराय ॥
भाँवरि कैद्यो म्वरे चाचाकी चाची घरै देउ पठवाय ९०
जीति न पैहो कुल पूज्यनते मामा साँच दीन बतलाय ॥
सुनिकै बातैं ये इन्दल की मकरँद बोला बचनरिसाय ९१
सुनवाँ भौजी के बालकतुम इन्दल बेटा लगो हमार ॥
समर जो करिहौ तुम फूफा ते जैहौ अवशि यमनके द्वार ९२
इतना कहिकै मकरँद ठाकुर तुरतै खैंचिलीन तलवार ॥
रान रान सों घोड़ा भिड़िगे ऊंटन भिड़िगै ऊंट कतार ९३
सूंढ़ि लपेटा हाथी भिड़िगे अंकुश भिड़े महौतन क्यार ॥
तेगा छूटे बर्दवान के कोताखानी चलीं कटार ९४
भाला बलछिनकी मारुइ कहुँ कहुँ कहुँ कड़ाबीन की मार ॥
चलैं भुजाली कहुँ कहुँ गद्दर कहुँकहुँकठिनचलैतलवार ९५
छूटे भाला बलछी सोहैं पै जस खेत बाजरे क्यार ॥

मुण्डन केरे मुड़ चौरा मे ओ रुण्डनके लगे पहार ९६
बड़ी लड़ाई भै नखर में मकरँद इन्दल के मैदान॥
बड़े लड़ैया दूनों ठाकुर रणमाँ करैं घोर घमसान ९७
मकरँद बोला तहँ हिरिया ते यहिपर छाँड़ो घोर मशान॥
इतना सुनतै इन्दल ठाकुर हिरिया पास पहूँचा ज्वान ९८
पकरि कै जूरा त्यहि हिरियाको इन्दल काटिलीन ततकाल॥
जादू झूठी भईं हिरिया की तुरतै ह्वैगै हाल बिहाल ९९
देखि दुर्दशा यह हिरिया कै मकरँद खैंचि लीन तलवार॥
ऐंचिकै मारा सो इन्दल के इन्दल लीन ढालपर वार १००
बचा दुलरुवा आल्हावाला त्यहिका राखिलीन भगवान॥
औ ललकारा मकरन्दा को मामा मौत आपनी जान १०१
ढाल कि औझरि इन्दलमारा मकरँद गिरा मूरछाखाय॥
उतरिकै घोड़ी ते मलखाने तुरतै मुशकलीन बँधवाय १०२
मकरँद बँधिगे समरभूमि में भागिगे सबै सिपाही ज्वान॥
कोउन रहिगा त्यहि समया में जो क्षण एक करै मैदान १०३
कूच करायो आल्हा ठाकुर तम्बुन फेरि पहूँचे आय॥
खबरि पाय कै नरपति राजा तुरतै गयो सनाकाखाय १०४
कछू न सूझी तब नरपति को अपने मंत्री लये बुलाय॥
मंत्र पूँछिकै तिन मंत्रिन सों आल्हा पास पहूँचे आय १०५
हाथ जोरिकै नरपति बोले मानो कही बनाफरराय॥
कैद छुड़ाओ सुत हमरे की अपने शूर लेउ छुड़वाय १०६
बेटी ब्याहैं हम ऊदन को सुख सों लौटि मोहोबे जाउ॥
दगा जो राखैं तुम्हरे सँग मों खरपति कह्यो हमारोनाउँ १०७
सुनिकै बातैं ये नरपति की आल्हा मकरँद दीन छुड़ाय॥

जायके छोंड़्यो राजा सबको तम्बू गयो यऊ सब आय १०८
साइति शोधी चूड़ामणि ने आल्है खबरि दीन पहुँचाय॥
काल्हि सबेरे भौंरी हैहैं नरपति खबरिगये यहपाय१०९
इतना सुनिकै माहिल चलिभा लिल्ली घोड़ीपर असवार॥
जायकै पहुँचा नरवरगढ़ में जहँपर नरपति का दरबार ११०
बड़ी खातिरी राजा कीन्ह्यो अपने पास लीन बैठाय॥
माहिल बोले तहँ राजा ते मानो कही हमारी भाय १११
शूर छिपावो तुम महलन में भौंरिन कटा देउ करवाय॥
जाति बनाफर की नीची है हल्ला देशदेश अधिकाय११२
पानी पीहैं कोउ तुम्हरे ना मानो नरवर के महराज॥
पगिया अरुझी नहिं माहिलकै भावै तौन करो तुमकाज ११३
इतना कहिकै माहिल चलिभे तम्बुन फेरि पहूँचे आय॥
तैसे कीन्ह्यो नरपति राजा जैसे माहिल गये बताय ११४
माड़ो छायो मालिन तुरतै राजै खम्भ दीन गड़वाय॥
गऊ के गोबर आँगन लीप्यो बारिनि तुरततहांपरआय ११५
चौक बनावन प्रोहित लाग्यो आईं नगर सुहागिल धाय॥
व्याह गीत सब गावन लागीं उत्सवदेखिपरै अधिकाय ११६
तब मकरन्दा को बुलवायो नरपति हालकह्यो समुझाय॥
लैकै नेगी तुम चलिजावो घरके ठाकुर लवो बुलाय ११७
इतना सुनिकै मकरँद चलिभा नाई बारी सङ्ग लिवाय॥
जायकै पहुँच्यो त्यहि तम्बू में जहँपर बैठि बनाफरराय ११८
हाथ जोरिकै मकरँद बोल्यो जो कछु राजै दीन सिखाय॥
दशै आदमी भौंरिन आवैं यह जब सुन्यो बनाफरराय११९
विस्मय कीन्ह्यो आल्हा मनमों मकरँद फेरि कहा समुझाय॥

रारि करैया को तुमते है हमहूँलड़िभिड़िगयनअघाय १२०
इतना सुनिकै मलखे बोले मानी बात तुम्हारी भाय॥
दशही चलिहैं अब भौंरिन में आल्है हुकुम दीन फर्माय १२१
मलखे सुलखे देवाँ आल्हौं इन्दल तुरत भयो तय्यार॥
जोगा भोगा मन्नां ब्रह्मा जँगनिक भैनचँदेलेक्यार १२२
चढ़ि चढ़ि घोड़ा हाथिन ठाकुर मड़येतर को भये तयार॥
सुमिरि शारदा मइहरवाली ऊदनपलकी भे असवार १२३
नरपति राजा के द्वारेपर पहुँचे तुरत बनाफरराय॥
मकरँद ठाकुर सब बीरन को घरके भीतरगयो लिवाय १२४
फाटक बन्दीकरि नरपति ने कन्या तुरत लीन बुलवाय॥
बर औ कन्या इकठौरी भे भौंरिनसमयगयोतहँआय १२५
फुलवा ऊदन का गठिबन्धन नाइनि बारिनि दीन कराय॥
पग परछाल्यो नरपति राजा कन्या दान दीन हरषाय १२६
पहिली भाँवरिके परतै खन सवियाँ शूर गये तहँ आय॥
मारु मारु का हल्ला ह्वैगा येऊ उठे तड़ाका धाय १२७
आधे आँगन भाँवरि होवैं आधे चलन लागि तलवार॥
मारे मारे तलवारिन के आँगन बही रक्तकी धार १२८
कोगति वरणै रजपूतन कै मानैं नहीं नेकहू हार॥
ना मुँह फेरैं नरवलवाले ना ई मोहवे के सरदार १२९
बड़ी गचापच भै आँगन में मुण्डन लागे ऊंच पहार॥
जोगा भोगा दोनों भाई दोनों हाथ करैं तलवार १३०
बड़ा लड़ैया मकरँद ठाकुर आँगन भली मचाई रार॥
जीति न दीख्यो इन दशहू ते नरपति गयो हियेसोंहार १३१
हाथ जोरिकै नरपति बोल्यो मानो कही बनाफरराय ८'

बाजी लरिका मकरन्दा है ज्यहियहदीन्ह्योरारिमचाय१३२
स्याबसिस्याबसि तुमकाआल्हा काहे न बिजयहोय सबकाल ॥
मलखे सुलखे जिनके भाई नामी बच्छराजके लाल १३३
मेलजोल भा दुहुँ तरफा ते हैगे मारु बन्द त्यहिकाल ॥
सातों भाँवरि फुलवा सँगमें घूमी देशराज के लाल १३४
राजा नरपति के महलन में तुरतै भात भयो तय्यार ॥
भयो बुलौवा फिरि क्षत्रिनको पहुँचे मोहबे के सरदार १३५
जेंवन बैठे आल्हा ऊदन तबहूँ चलनलागि तलवार ॥
गेडुवा पाटन की मारुन में सबियाँ शूरगये तहँ हार १३६
कीनि नम्रता फिरि नरपतिने बेटी बिदा दीन करवाय ॥
दायज दीन्ह्यो भल नरपतिने आल्हासबधनदीनलुटाय१३७
उठी पालकी नृप द्वारेते तम्बुन फेरि पहूँची आय ॥
कूचको डङ्का बाजन लाग्यो हाहाकार शब्द गोछाय १३८
खीमा उखरे रजपूतन के सो छकरन में लिये लदाय ॥
कूच करायो नरवरगढ़ते मोहबे चले शूर समुदाय १३९
बारा दिनका धावाकरिकै दशहरिपुरै पहूँचे आय ॥
दगैं सलामी तहँ आल्हाकी सुनवाँचढ़ी अटापरधाय १४०
दीख कबुतरी पर मलखाने बेंदुल चढ़ा लहुरवाभाय ॥
आल्हा इन्दल इक हौदा पर सुनवाँ गई द्वारपर आय १४१
पलकी आई तहँ फुलवा की नारिन कीन नेग सबगाय ॥
घर के भीतर के जानेकी पण्डितसाइतिदीनबताय १४२
बधू पुत्र घर भीतर गमने द्यावलि रूपन लीन बुलाय ॥
जल्दी जावो तुम मोहबे को मल्हनेखबरिजनावोजाय १४३
इतना सुनिकै रूपना चलिभा मल्हना महल पहूँचाआय ॥

खबरि सुनाई सब मल्हना को रुपना बारबार शिरनाय १४४
बारह रानी परिमालिक की अपने कीन सबन शृंगार॥
मनियादेवन को सुमिरन करि पलकी उपरभई असवार १४५
आल्हा ऊदनके महलन में रानी गईं तड़ाका आय॥
रूप देखिकै तहँ फुलवा को रानिनखुशीभईअधिकाय १४६
बिदा माँगिकै न्यवतहरी सब अपने नगर चले ततकाल॥
बाजत डङ्का अहतङ्का के पहुँचतभयेनगरनरपाल १४७
पूर मनोरथ भे ऊदन के घर घर भयो मंगलाचार॥
ब्याह पूरभा अब फुलवा का सोये सबै शूरसरदार १४८
खेत छूटि गा दिननायक सों झंडा गड़ा निशाकरकेर॥
तुम सों ब्रह्मा यह मागतहौं सबबिधिअपनिदीनताहेर१४६
नदी औ परबत चहु जंगल में कतहूँ जाय लेउँ अवतार॥
तहँ तहँ स्वामी रघुबर होवैं चाहौं यही सृष्टि कर्तार १५०
करों बन्दना पितु अपने की दोऊ हाथ जोरि शिरनाय॥
आशिर्बाद देउँ मुंशीसुत जीवो प्रागनरायणभाय १५१
बढ़ै साहिबी दिन दिन दूनी औ कविकरैं सुयशकोगान॥
ललिते ऐसे नर दुर्लभ को करतोकौनऔरसनमान १५२
रहै समुन्दर में जबलों जल जबलों रहैं चन्द औ सूर॥
मालिक ललितेके तबलों तुम यशसोंरहौ सदा भरपूर १५३
माथ नवावों शिवशंकर को ह्याँते करों तरँग को अन्त॥
राम रमा मिलि दर्शन देवैं इच्छा यही भवानीकन्त १५४

इति श्रीलखनऊनिवासि(सी,आई,ई) मुंशीनवलकिशोरात्मजबाबूप्रयागनारायणजीकीआज्ञानुसार उन्नामप्रदेशान्तर्गतपँड़रीकलांनिवासि मिश्रवंशोद्भव बुधकृपाशंकरसूनु पण्डितललिताप्रसादकृतउदनपाणिग्रहणवर्णनोनामतृतीयस्तरंगः॥ ३॥

इति रुदयासिंहका बिवाह सम्पूर्ण॥

अथ आल्हखण्ड ॥

चन्द्रावलिकी चौथि अथवा बौरीगढ़की लड़ाई ॥

सवैया ॥

शेश महेश गणेश रमेश धनेश सुरेश दिनेश मनावैं।
बावन पावन धोवन को सुखकारि पुरारि धरे सुखपावैं ॥
सोई भये जमदग्नि के बंश औ पूरण अंश पुराण बतावैं।
वोई भये रघुनन्दन भूप सो रूप लखे ललिते मुद पावैं १

सुमिरन ॥

धन्य बखानों मैं दिनकर को जिनते पढ़ा बीर हनुमान ॥
तिनके कुलमाँ रघुनन्दन भे जिनकोजानतसकलजहान १
तिनको मानत हम परमेश्वर पूरण ब्रह्म सुरासुरपाल ॥
चारो प्यारे नृप दशरथ के कीन्हेनिबाल रूप जो ख्याल २
सोई धारे उर गिरिजापति मनमें बालरूप के हाल ॥
काकभुशुण्डी कौवा तन को मुनि सों मांगि लीनसबकाल ३
कितन्यो राजा सिंहासन तजि इनके परे प्रेम के जाल ॥
सुन्यो बिभीषण की गाथा है शरणहिताकत भयो निहाल ४

सोई ललिते जब उर आवैं जावैं सबै लोक जंजाल ॥
चौथि बखानों चन्द्रावलि की सुनिये ताको पूर हवाल ५

अथ कथाप्रसङ्ग ॥

लागो सावन मनभावन जब बर्षन मेघ झमाझम लाग ॥
दुःख छूटिगा नर नारिन का उपजा हिये प्रेम अनुराग १
गड़े हिंडोला सब घर घर हैं दर दर झुंड खड़े अधिकार ॥
सावन आवन मनभावन की गावन लागीं गीत बहार २
कजली जाहिर मिर्जापुर की सिर्जा जनों वहाँ कर्त्तार ॥
गड़ैं हिंडोला कोशलपुर में अबहूँ देखैं लोग बहार ३
सोई महीना जब आवत भा तब मल्हना को सुनोहवाल ॥
बेटी प्यारी चन्द्रावलि जो ताको शोच करै सब काल ४
नयनन आँसू ढरकन लागे बयनन कढ़े चित्त घबड़ाय ॥
ऐसी हालत भै मल्हना कै तबहीं गये उदयसिंहआय ५
लखिअसहालत उदयसिंह तब दोऊ हाथजोरि शिरनाय ॥
पूँछन लागे महरानी ते काहे गई उदासी छाय ६
सुनिकै बातैं उदयसिंह की मल्हना बोली बचन बनाय ॥
याद आयगै लरिकाईं कै सोई बात गई उरछाय ७
ताहि बिसूरति मैं ऊदन थी सोई गई उदासी छाय ॥
सखी हमारी एक साथ की पायो दुःख रहै अधिकाय ८
दुःख याद हो जब काहू को कोमल चित्त जाय घबड़ाय ॥
इतना सुनिकै ऊदन बोले माता साँच देउ बतलाय ९
आजुइ तुमका अस देखा ना बहुदिन लखातुम्हैं असमाय ॥
की विष देवो उदयसिंह को की दुख देवो साँच बताय १०
करो बहाना चहु केते तुम मानी नहीं लहुरवा भाय ॥

इतना सुनिकै मल्हना बोली ऊदन साँच देयँ बतलाय ११
लाग महीना अब सावन को गावन लगे नारि नर गीत ॥
सुधि जब आवै चन्द्रावलि की तबहीं लेय मोह दलजीत १२
कठिन यादवा बौरीगढ़के जिनके लूटि मार का काम ॥
बेटी ब्याही तिनके घरमाँ कबहुँन द्यखी आपनोधाम १३
चौथि पठावैं जो बौरीगढ़ तौ फिर होय वहाँ पर मार ॥
है बहनोई इन्द्रशाह तव ताके परी बांट है रार १४
गउना रउना सबके आवैं बेटी परी मोरि ससुरार ॥
इतना सुनिकै ऊदन बोले माता मानो कही हमार १५
चौथी लैकै बौरी जैबे बहिनी बिदा लेब करवाय ॥
अब मैं जावों महराजा ढिग माँगों बिदा बेगिही जाय १६
इतना सुनिकै मल्हना बोली मानो कही बनाफरराय ॥
मोहिं पियारी अस बेटी ना जो तुम जाउ लहुरवाभाय १७
कछु तुम कहियो ना राजाते ना बौरी को होउ तयार ॥
प्राण पियारे तुम ऊदनहौ साँची मानो कही हमार १८
सुनिकै बातैं ये मल्हना की ऊदन चले जहाँ परिमाल ॥
हाथ जोरिकै ऊदयसिंहने औ राजाते कहा हवाल १९
हम अब जैहैं बौरीगढ़ को बहिनी बिदा करैहैं जाय ॥
कहा न मानब हम काहूको राजन हुकुम देउ फरमाय २०
बातैं सुनिकै बघऊदन की तुरतै उठा चँदेलाराय ॥
साथै लैकै बघऊदन को फिरि रनिवास पहूँचाआय २१
डाटन लाग्यो तहँ मल्हनाको री कस जौंहर दीन लगाय ॥
ऊदन जैहैं चलिबौरी को बेटी बिदा करैहैं जाय २२
ह्वैं लुटेरा बौरी वाले औ बइलानी बात बनाय ॥

कुशल न होइहै ऊदन जैहैं रवहिते साँचदेयँ बतलाय २३
कहा न मनिहैं ये काहू का कलहा देशराज के लाल ॥
इतना सुनिकै मल्हनारानी सब राजा ते कहा हवाल २४
दोष हमारो कछु नाहीं है साँची सुनो बात महराज ॥
काम न अबरा कछु हमरे घर बिनचन्द्रावलि होयअकाज २५
कहा न हमरो ऊदन मानैं अपनो कहा करैं सबकाल ॥
पूँछो इनसे तुम महराजा पासै देशराज के लाल २६
इतना सुनिकै ऊदन बोले साँची मानो कही हमार ॥
खर्चा देवो मोहिं जल्दी अब मैं बौरी का खड़ातयार २७
कहा न मानब हम काहू को यहुतो साँच दीन बतलाय ॥
जान न पावब जो बौरीका तौ मरिजाब जहरको खाय २८
सुनिकै बातैं ये ऊदन की निश्चयजानि लीनपरिमाल ॥
यहु समझायेते मानीना रिसहा देशराजका लाल २९
यहै सोचिकै मन अपनेमाँ राजा सामा दीन कराय ॥
घीरा कलँगी औ दरा तोड़ा सो ऊदन को दियो मँगाय ३०
बाइस हाथी साठि पालकी रथ चौरासी घोड़ हजार ॥
यह सब सामा तहँ दीन्ह्यो तुम नाहर उदयसिंह सरदार ३१
दिल्ली ह्वैकै तुम चलिजावो औ मिलि लेउ पिथौरैजाय ॥
जौन बतावैं पिरथी राजा तौनै किह्यो लहुरवाभाय ३२
इतना कहिकै गे परिमालिक पहुँचे फेरि राजदरबार ॥
वस्त्र अभूषण औ मोतिनके मल्हना दीनआयदशहार ३३
भरि भरि गेवा औ कराहको मल्हना मटुका लीनरँगाय ॥
नाई बारी भाट तँबोली चारो नेगी लीन बुलाय ३४
कहि समुझावा सब नेगिनको औ सब सामा दीन गहाय ॥

बिदा होन जब ऊदन लागे मल्हना छातीलीनलगाय ३५
कहि समुझावा भल ऊदन को कीन्ह्यो रारि नहीं तुम जाय॥
देश पराये में गमखाना यहही नीति बनाफरराय ३६
इतना कहिकै रानी मल्हना आशिर्वाद दीन हरषाय॥
सुमिरि भवानी मइहरवाली मनियादेव हृदयसों ध्याय ३७
तुरत बेंदुला पर चढ़ि बैठ्यो औ चलि दियो बनाफरराय॥
माहिल शाले चंदेले के सोतो गये महोबे आय ३८
गये कचहरी परिमालिक की माहिल बोले शीश नवाय॥
सबियां क्षत्री ह्याँ बैठे हैं पै नहिं ऊदन परैं दिखाय ३९
इतना सुनिकै राजा बोले नीके हवैं लहुरवा भाय॥
पता लगावैं माहिल ठाकुर कहँ पर गये बनाफरराय ४०
नीके जानैं सब माहिल को इनके चुगुलिन का वयपार॥
कउन बतावा तहँ माहिल को कहँ पर उदयसिंह सरदार ४१
तहँ ते उठिकै माहिल चलिभे मारग पता लगावत जायँ॥
चुगुल शिरोमणि माहिलठाकुर याते कौन देय बतलाय ४२
मालिनि बिटिया उरईवाली बेही नगरमोहोबे भाय॥
पता न पायो जब काहू ते माहिल गये तासुघर धाय ४३
हाल बतायो सब माहिल को सुनतै कूच दीन करवाय॥
जायकै पहुँचे फिरि दिल्ली में जहँ पर रहै पिथौराराय ४४
ऊदन पहुँचे ह्याँ दिल्ली में डेरा परा बाग में जाय॥
बड़ी खातिरी भै माहिल कै राजा पास लीन बैठाय ४५
माहिल बोले तहँ राजाते मानो कही पिथौराराय॥
ऊदन आये हैं मोहबे ते साँचे हाल देयँ बतलाय ४६
कालिह सबेरे मलखे अइहैं दिल्ली देहैं आगिलगाय॥

यह सुनि आयन परिमालिकते मानो साँच पिथौराराय ४७
इतना सुनिकै पिरथी बोले माहिल काह गयो बौराय ॥
कौन दुशमनी परिमालिक ते दिल्ली शहर देयँ फुकवाय ४८
ऊदन जैहैं बौरीगढ़को हमको खबरि मिली है साँच ॥
असरिस लागी माहिल ठाकुर मारों निकरि परै तवकाँच ४९
इतना सुनिकै माहिल चलिभे बौरीगढ़ै पहूँचे जाय ॥
बोले ताहर सों पिरथीपति तुम ऊदनको लवो बुलाय ५०
इतना सुनिकै ताहर चलिभे बगिया फेरि पहूंचे जाय ॥
तुम्है बुलायो महराजा है यह ऊदन ते कह्यो सुनाय ५१
इतना सुनतै ऊदन ठाकुर बेंदुल उपर भयो असवार ॥
सुमिरि शारदा मइहरवाली अपनी लीन ढालतलवार ५२
ताहर ऊदन दूनों चलि भे औ दरबार पहूंचे आय ॥
हाथ जोरिकै महराजा के सम्मुख ठाढ़भयो शिरनाय ५३
पाग उतारी बघऊदन ने औ धरिदीन चरणपर जाय ॥
देखि नम्रता उदयसिंह कै राजा पास लीन बैठाय ५४
पिरथी बोले उदयसिंह ते कहँ को चले बनाफरराय ॥
इतना सुनतै ऊदन बोले मानो साँच पिथौराराय ५५
बहिनी हमरी जो चन्द्रावलि ताकी चौथि लेन को जायँ ॥
दर्शन करिकै पृथीराज के जायो कह्यो चँदेलोराय ५६
सोई दर्शन को आयेहन मानो सत्य वचन महिपाल ॥
इतना सुनिकै पिरथी बोले बेटा देशराज के लाल ५७
लौटि मोहोबे ऊदन जावो मानो सत्य वचन यहिकाल ॥
मारे जैहौ बौरीगढ़ में ऊदन साँचे कहैं हवाल ५८
हवैं लुटेरा यदुवंशी सब कैसे पठै दीन परिमाल ॥

भलो बुरो कछु वै मानैं ना बेटा देशराज के लाल ५६
इतना सुनिकै ऊदन बोले दोऊ हाथ जोरि शिरनाय॥
कीन प्रतिज्ञा हम महराजा वहिनी विदा लेव करवाय ६०
झूँठि प्रतिज्ञा हम करिहैं ना चहुतनधजीधजी उड़िजाय॥
करो आज्ञा अब जाने की आशिर्वाद देउ हरषाय ६१
इतना सुनिकै महराजा तव चीराकलँगी दीन मँगाय॥
शाल दुशाला मोहनमाला सबधनदीन लाखको भाय ६२
रानी अगमा यह सुनि पावा आये देशराज के लाल॥
भयो वुलौवा जब महलन ते आयसु दीन तबै महिपाल ६३
तुरतै ऊदन तहँ ते चलिभे रानी भवन पहूँचे आय।
आईं नारी बहु दिल्ली की देखन हेतु लहुरवा भाय ६४
रूप देखिकै वघऊदन को मनमें कहैं गिरीश मनाय॥
मेरो बालम ऊदन होतो देतो शिव यह योगबनाय ६५
तौ मनभाती दिखलाती सब आती फेरि यहाँलग कौन॥
छाती खोले दिखलाती सो गाती गीत रँगीले जौन ६६
ऐसी नारी नहिं केहू युग कलियुगकुलटनकोअधिकार॥
उलटन पुलटन कुलटन दीख्यो ऊदन जानिगयो बयपार ६७
भगिनी माता औ कन्या सम कीन्ह्योतीनि भांति व्यवहार॥
रानी अगमा बोलन लागी मानों उदयसिंह सरदार ६८
तुम नहिं जावो गढ़बौरी को बेटा देशराज के लाल॥
बिना बिचारे औ शोचे बिन कैसे पठै दीन परिमाल ६९
बिना दयाके बौरीवाले नित उठिकरैं निर्दयी काम॥
जानि बूझिकै कैसे पठवैं ऊदनजाउ यमन के धाम ७०
इतना सुनिकै ऊदन बोले माता साँच देयँ बतलाय॥

ना मुहिं पठयो परिमालिक ने ना मुहिंमल्हनादीनपठाय ७१
मनसे आई चन्द्रावलि को सावन मुहवा देउँ दिखाय ॥
राजा रानी की सम्मत ना अपने बूत चल्यनहममाय ७२
रीछ औ बाँदर सँगमा लैकै जीत्यो लङ्क राम महराज ॥
ग्वालनबालनयशुमति लालन लैकै हना कंस शिरताज ७३
छोटो अंकुश मानुष लैकै बैठै नित्त नाग शिर जाय ॥
जहँ मनभावै तहँ लैजावै तेजै सबल परै दिखलाय ७४
तेज न होई ज्यहि देही माँ सो लै करी फौज का माय ॥
दया धर्ममाँ कछु अन्तर ना मन्तर साँच देयँ बतलाय ७५
धरम युधिष्ठिर का जाहिर है अधरम कौरौ गये नशाय ॥
गोटि बनाफर अब जाई ना बहुतनधजीधजीउड़िजाय ७६
इतना सुनिकै रानी अगमा मनमाँ ठीक लीन ठहराय ॥
क्यहु समुझायेते मानी ना साँचो । हठी बनाफरराय ७७
बहु धन दीन्ह्यो फिरि ऊदनको आशिर्बाद दीन हर्षाय ॥
पायँ लागिकै महरानी के ऊदन कूच दीन करवाय ७८
छाय उदासी गै महलन में तम्बुन अटा बनाफर आय ॥
कूच करायो फिरि बगिया ते औ बैरीगढ़ चला दबाय ७९
बारा दिनकी मैजलि करिकै बौरी पास पहूँचे आय ॥
एक कोस जब बौरी रहिगै ऊदन तम्बू दीन गड़ाय ८०
परा पलँगरा त्यहि तम्बू माँ तापर बैठ बनाफरराय ॥
लिखिकै चिट्ठी बीरशाहको धावन हाथ दीन पठवाय ८१
बैठक बैठे तहँ क्षत्री सब एकते एक शूर सरदार ॥
चिट्ठी लैकैं धावन दीन्ह्यो आवन पढ़ा बनाफर क्यार ८२
बड़ी खुशाली बीरशाह करि जोरावरको लीन बुलाय ॥

तुम चलिजावो अब बगिया को जहँपर टिका बनाफरराय ८३
आदर करिकै नरनाहर को जल्दी लावो इहाँ बुलाय ॥
इतना सुनिकै बुला जुरावर अपने मित्रन सों हरषाय ८४
पाग बैंजनी सब कोइ बाँधिये जामा हरे रंग को भाय ॥
एकै बाना एक निशाना मिलिये उदयसिंहको जाय ८५
देखैं किसको पहिले भेंटैं नाहर उदयसिंह सरदार ॥
इतना सुनिकै सब मित्रनने एकै रंग कीन शृङ्गार ८६
पंद्रा सोला एकै रँग के बगिया तुरत पहूँचे जाय ॥
एकै रँगके सब क्षत्री हैं नहिंकोउ रावरङ्क दिखराय ८७
मिले जुरावरको ऊदन तब निश्चय राजपुत्र अनुमान ॥
देखि चतुरता उदयसिंह की सोऊ मनै बहुत शरमान ८८
औ फिरि बोला उदयसिंह ते तुमको नृपति बुलावा भाय ॥
इतना सुनिकै बघऊदन तब साथै कूच दीन करवाय ८९
नचै बेंदुला तहँ मारग में अद्भुत कला रहा दिखराय ॥
पाग बैंजनी शिरपर बाँधे यहु रणबाघु बनाफरराय ९०
बैठ सिंहासन महराजा जहँ पहुँचा उदयसिंह तहँ जाय ॥
चरण लागिकै महराजाके ठाढ़े भये शीशको नाय ९१
पकरिकै बाहू तब ऊदन की तुरतै लीन्ह्यो हृदय लगाय ॥
बड़ी खातिरी करि ऊदनकी अपने पास लीन बैठाय ९२
चिट्ठी दीन्ह्यो चंदेले की लीन्ह्यो वीरशाह हर्षाय ॥
पढ़िकै चिट्ठी परिमालिक की मनमाँ बड़ा खुशी ह्वैजाय ९३
जो कछु सामा मर्दानाथी ऊदन सबै दीन मँगवाय ॥
बड़ी खुशाली भै राजा के फूले अंग न सका समाय ९४
राजा बोला फिरि ऊदन ते मानो कही बनाफरराय ॥

दिन दश रहिकै तुम बौरी में पाछे विदा लिह्यो करवाय ९५
कबहूं आयो नहिं बौरी को नाहर उदयसिंह सरदार ॥
जायकै भेंटो अब बहिनी को इतनी मानो कही हमार ९६
इतना सुनिकै बघऊदन ने अपने साथ जुराबर लीन ॥
जाय बेंदुलापर चढ़िबैठा महलनगमन बेगिहीकीन ९७
अगे जुराबर पीछे ऊदन महलन बेगि पहूँचे जाय ॥
चरण लागिकै महरानी के ऊदन सामा दीन मँगाय ९८
देखैं सामा महरानी तहँ औरो नारिन लीन बुलाय ॥
देखिकै सामा चंदेले की सबके खुशीभई अधिकाय ९९
मटुका खुलिगे मेवावाले घर घर तुरत दीन बँटवाय ॥
दर दर गाथा चंदेले की घर घर रहे नारि नर गाय १००
यकटक देखैं बघऊदन को क्षत्री बड़ा रँगीला ज्वान ॥
रूप देखिकै बघऊदन को नारिन छूटिगयो अरमान १०१
जिन नहिं देखा बघऊदन को तेऊ गईं तहाँपर आन ॥
जब मुख देखैं बघऊदन को तब चुभिजाय करेजेबान १०२
बेटी प्यारी परिमालिक की भेंटी उदयसिंहको आय ॥
लाज ससेटी बेटी भेंटी बैठा सकुचि बनाफरराय १०३
तबलों माहिल दाखिल ह्वैगे औ दरबार पहूँचे आय ॥
किह्यो खातिरी बीरशाह ने अपने पास लीन बैठाय १०४
किह्यो बड़ाई जब ऊदन की माहिल ठाकुर सों महराज ॥
माहिल बोले महराजा ते आवत सुने हमारे लाज १०५
किह्यो प्रशंसा तुम ऊदन की जान्यो भेद नहीं महिपाल ॥
राज्यते बाहर इनको कीन्ह्यो क्रोधितभयोबहुतपरिमाल १०६
आल्हा रहिगे नैनागढ़ में ऊदन यहाँ पहूँचे आय ॥

बिदाकरैहैं ये बेटी को दासी अपनि बनैहैं जाय १०७
खबरि पायकै परिमालिक ने हमको तुरत दीन पठवाय ॥
बिदाकरैहैं जो बघऊदन तौ सब जैहैं काम नशाय १०८
ईजति जैहै दोऊ दिशिकी साँचे हाल दीन बतलाय ॥
जहर घोराओ तुम भोजन में औ ऊदन को देउ खवाय १०९
बिना बयारी जूना टूटै औ बिन औषधि बहै बलाय ॥
चरचा कीन्ह्यो नहिं ऊदन ते मानो साँच यादवाराय ११०
इतना कहिकै माहिल ठाकुर चलिभा करिकै राम जुहार ॥
हुकुम लगायो महराजा ने महलन भोजनहोयँ तयार १११
फेरि बुलायो सब पुत्रन को माहिल कथा कह्योसमुझाय ॥
बात लेन को ऊदन आयो भोजन जहर देउ डरवाय ११२
छली धूर्त्त को या बिधि मारै तौ नहिं दोष देय संसार ॥
खबरि जनाई फिरि महलन में भोजन वेगि भये तय्यार ११३
भयो बुलौवा फिरि भोजन का ऊदन लीन ढाल तलवार ॥
देश हमारे कै रीती ना भोजनकरै बाँधि हथियार ११४
शंका लावो कछु मन में ना नाहर उदयसिंह सरदार ॥
बातैं सुनिकै बहनोई की ऊदन धरी ढाल तलवार ११५
जायकै पहुँचे फिरि चौकापर नाहर देशराज के लाल ॥
साथै बैठे बहनोई के राखे गये परोसे थाल ११६
रक्षक सबको जग एकै है पूरणब्रह्म चराचर राम ॥
करै चाकरी नहिं अजगर क्यहु पक्षी करै न केहू काम ११७
अथवा जानो यह साँची तुम मछलिन कौन देय आहार ॥
ताल सुखाने वर्षी भूमि में रक्षा करैं राम भर्त्तार ११८
भै रघुनन्दन के दाया तब ऊदन लीन्ह्यो थाल उठाय ॥

आपन दीन्ह्यो बहनोई को ताको लीन्ह आप सरकाय११९
यह गति दीख्यो बहनोई जब तब अतिबोल्यो क्रोध बढ़ाय॥
हमरो भोजन तुम कस लीन्ह्यो अपनो दीन्ह्यो हमैं उठाय १२०
इतना सुनिकै ऊदन बोले ठाकुर साँच देयँ बतलाय॥
उचित हमारे यही देशमें सोई कीन यहाँपर आय १२१
इतना सुनिकै इन्द्रसेन ने अपनो पाटा लीन उठाय॥
पीठिम मारा बघऊदन के बोला यहै रीति है भाय १२२
देखि तमाशा ऊदन ठाकुर अपनो गडुवा लीन उठाय॥
कुमक आयगै बीरशाह कै परिगो गाँस बनाफरराय १२३
मर्द मर्दईते चूकै ना चहु निर्दई दई ह्वैजाय॥
नरपुर गाथा घर घर गावैं सुरपुर वास मर्दका आय १२४
कीन मर्दई बघऊदन ने बहुतक क्षत्री दिये गिराय॥
कोठे परते तलवारी को चन्द्रावलिने दीन गहाय १२५
सो लै लीन्ह्यो बघऊदन ने मारन लाग बनाफरराय॥
इकले ऊदन के मुर्चापर कोई शूर नहीं समुहाय १२६
उचित न मारब बहनोई का ऊदन ठीक लीन ठहराय॥
पाय दुचित्ता बघऊदन को बंधन तुरत लीन करवाय१२७
जायकै डास्यो फिरि खन्दक में पहरा चौकी दीन कराय॥
देखि दुर्दशा यह ऊदन कै बहिनी बारबार पछिताय १२८
मन में शोचै मनै बिचारै कासों कहै दुःख अधिकाय॥
तबलों मालिनि पोहपा आई ऊदन कथा गई सब गाय १२९
ऐसो पाहुन ऐसि दुर्दशा हमते कछू कहा ना जाय॥
को समुझावै महराजा को आपन देवै प्राण गँवाय १३०
सुनिकै बातैं ये मालिनि की तब चन्द्रावलि कह्यो सुनाय॥

मैं अब देखों जस ऊदन को मालिनितसतुमकरोउपाय१३१
बातैं सुनिकै चन्द्रावलिकी मालिनि कहाबचनसमुझाय॥
निशा अँधेरी है सावन की तुमको ऊदनलवैं दिखाय १३२
इतना सुनिकै मालिनि सँग में ऊदन पास पहूँची जाय॥
बहिनी प्यारी चन्द्रावलि तहँ बोली सुनो वनाफरराय १३३
बाहर आवो तुम खन्दक के अपने घोड़ होउ असवार॥
निर्भय जावो तुम मोहबे को भाई उदयसिंह सरदार१३४
इतना सुनिकै ऊदन बोले बहिनी साँच देयँ बतलाय॥
चोरी चोरा जो घर जावैं तौ रजपूती धर्म नशाय १३५
खबरि जो पइहैं सिरसावाले अइहैं तुरत बीर मलखान॥
सुखसों सोवो तुम महलन में करिहैंकुशलमोरिभगवान१३६
इतना सुनिकै बहिनी चलिभै महलन फेरि पहूँची आय॥
लिखी हकीकति सब मलखेको खन्दक परे लहुरवाभाय १३७
लिखिकै पाती सुवना गरमें बांधिकै दीन्ह्यो तुरत उड़ाय॥
जावो सुवना तुम मोहबे को मल्हना महल पहूँचोजाय१३८
उड़िकै सुवना तहँ ते चलिभा नरवरगढ़ै पहूँचा आय॥
मकरँद घूमै ज्यहि बगियामें सुवना बैठ तहाँपर जाय १३९
चकित घूमै मकरन्दा तहँ परिगै दृष्टि सुवापर आय॥
पाती दीख्यो गल सुवना के तुरतै लीन तहाँ पकराय १४०
पढ़िकै पाती लै सुवना को सो नरपतिको दीन दिखाय॥
पाछे पहुँचा फिरि महलन में रानी खबरि जनाईजाय १४१
सुनी हकीकति जब रानी ने पाती गले दीन बँधवाय॥
सुवना चलिभा नरवरगढ़ ते पहुँचा नगर महोबेआय १४२
मल्हना ठाढ़ी रह अपटापर सुवना बैठ तहाँपर जाय॥

पाती दीखी गल सुवना के मल्हनानामदीनबतलाय १४३
सुन्यो जबानी जब मल्हनाकी सुवना बैठ हाथ पर आय ॥
छोरिकै पाती मल्हना रानी आँकुइआँकुनजरिकैजाय १४४
पढ़िकै पाती रानी मल्हना रुपना बारी लीन बुलाय ॥
चिट्ठी दीन्ह्यो महरानी ने औसबहालकह्योसमुझाय १४५
लैकै चिट्ठी रुपना चलिभा मलखे पास पहूँचा जाय ॥
चिट्ठी दीन्ह्यो मलखाने को औरोहाल गयो सबगाय १४६
पढ़िकै चिट्ठी मलखाने ने तुरतै फौजन कीन तयार ॥
जितने क्षत्री रहैं सिरसामें सबियाँबाँधिलीनहथियार १४७
लैकै फौजै मलखाने फिरि पहुँचा नगर मोहोबे आय ॥
खबरि पठाई फिरि आल्हाको राजा पास पहूँचे जाय १४८
हाथ जोरिकै मलखे बोले दोऊ चरणन शीश नवाय ॥
कीन तयारी हम बौरी को म्हहै साथ देउ पठवाय १४९
सुनिकै बातैं मलखाने की बोले तुरत चँदेलेराय ॥
शकुन उठावो देबा ठाकुर देवो हार जीत बतलाय १५०
निकै बातैं महराजा की ज्योतिष पुस्तक लीन उठाय ॥
न उठायो देबा ठाकुर बोल्योहाथजोरि शिरनाय १५१
तुम्हारी बौरी ह्वैहै राजन सत्य दीन बतलाय ॥
फौजै आल्हा ठाकुर तबलगगये तहाँपरआय १५२
तबलों मालि या दिननायक सों झण्डा गड़ा निशाकोआय ॥
ऐसो पाहुन रन चमकन लागे पक्षी गये बसेरन धाय १५३
को समुझावै ट्रिया तकि तकि घों घों कण्ठ रह्या घराय ॥
सुनिकै बातैं ये म रघुनन्दन के सन्तनधुनी दीन परचाय १५४
अपने को ह्याँते करों तरँगको अन्त ॥

राम रमामिलि दर्शन देवैं इच्छा यही भवानीकन्त १५५

इति श्रीलखनऊनिवासि (सी, आई, ई) मुन्शी नवलकिशोरात्मज बाबू प्रयागनारायणजीकी आज्ञानुसारउन्नामप्रदेशान्तर्गतपँड़रीकलांनिवासि मिश्रवंशोद्भवबुध कृपाशङ्करसूनु पं० ललिताप्रसादकृत ऊदनबन्धनवर्णनोनामप्रथमस्तरंगः ॥ १ ॥

सवैया ॥

ध्यावत तोहिं सरस्वति मातु करो निज सेवकपै अब दाया।
शारद नारदके पद ध्याय मनावत तोहिं सदा रघुराया ॥
गावतहौं गुण गोबिंद के अरु पावतहौं नितही मनभाया।
नावतहौं शिर बारहिं बार करो ललिते कर मातु सहाया १

सुमिरन ॥

दोउ पद ध्यावों जो बर पावों सो सुनिलेउ शारदा माय ॥
जस जस गावों मैं आल्हा को तसतस सुखी होउँ अधिकाय १
माता भ्राता त्राता ताता नाता तुममा दीन लगाय ॥
तारो बोरो जो अब चाहो हमतो शरण तुम्हारी माय २
बेद पुराणन श्रुति असमृति में जाँचा साँचा हम अधिकाय ॥
तुम्ही भवानी शारद मइया सेवका सार परी दिखराय ३
तव पद बिछुरे उर हमरे ते मूरखचन्द कहैं सब गाय ॥
ताते बिछुरैं पद उरते ना यह बर मिलै शारदामाय ४
छूटि सुमिरनी गै शारद कै अब आगे के सुनो हवाल ॥
मलखे आल्हा चौरी जैहैं ह्वैहैं तहां युद्ध विकराल ५

अथ कथाप्रसंग ॥

उदय दिवाकर भे पूरबमें किरणनकीनजगत उजियार ॥
हुकुम पायकै मलखाने को सवियाँ फौज भई तय्यार १
सजि पचशब्दा गा आल्हाका तापर होत भयो असवार ॥

घोड़ी कबुतरी की पीठी पर बैठ्यो सिरसा का सरदार २
चढ़ा मनोहर की पीठी पर देवा मैनपुरी चौहान ॥
ब्रह्मा ठाकुर हरनागर पर बैठे सुमिरि राम भगवान ३
गर्भ गिरावनि कुँवाँ सुखावनि लछिमिनि तोप भई तय्यार ॥
दाढ़ी करखा बोलन लागे बिप्रन कीन वेद उच्चार ४
रणकी मौहरि बाजन लागी घूमन लागे लाल निशान ॥
छाय लालरी गै अकाश में लोपे अन्धकार सों भान ५
पहिल नगारा में जिन बन्दी दुसरे बांधिलीन हथियार ॥
तिसर नगाराके बाजत खन हाथी घोड़न भये सवार ६
चौथ नगारा बाजन लाग्यो मलखे कूच दीन करवाय ॥
हाथी चलिभे दल बादल सों घण्टा गरे रहे हहराय ७
कोउ कोउ घोड़ा हंस चालपर कोउ कोउ मोरचालपरजाय ॥
सरपट जावै कोउ कोउ घोड़ा केहू टाप न परै सुनाय ८
खर खर खर खर कै रथ दौरैं रब्बा चलैं पवनकी चाल ॥
मारु मारुके मौहरि बाजैं बाजैं हाव हाव करनाल ९
बाजैं डङ्का अहतङ्का के बङ्का सबै शूर सरदार ॥
शङ्का नाहीं क्यहु जियरे में चहुदिन रातिचलै तलवार १०
लश्कर पहुँचा सब दिल्ली में क्षत्रिन कीन तहाँ विश्राम ॥
इकलो मलखे त्यहि समया में पहुँचा पृथीराज के धाम ११
बड़ी खातिरी राजा कीन्ह्यो तहँ पर बैठ बीर मलखान ॥
सखियाँ गाथा बौरीगढ़ की मलखे कीन तहाँपर गान १२
सुनी हकीकति जब मलखे की चौंड़ा सूरज लीन बुलाय ॥
चिट्ठी दीन्ह्यो पृथीराज नें चौंड़े फेरि कह्यो समुझाय १३
कह्यो जबानी बीरशाह ते जल्दी विदा देयँ करवाय ॥

कलहा लरिका बच्छराज का नामी सबै बनाफरराय १४
लड़िकै जितिहौ तुम इनते ना मरिकै सात धरौ अवतार॥
लैकै फौजै सूरज बेटा मलखे साथ होउ तय्यार १५
विदा माँगिकै महराजा ते सूरज सिरसा का सरदार॥
आये फौजन में मलखाने सब दल बेगि भयो तय्यार १६
गज इकदन्ता चौंड़ा बैठ्यो सूरज सब्जा पर असवार॥
कूच को डङ्का बाजन लाग्यो हाथिन घोर कीन चिग्घार १७
चलिभइँ फौजैं दल बादल सों बौरीगढ़ै गईं नगच्याय॥
आठकोस जब बौरी रहिगै आल्हा डेरा दीन गड़ाय १८
तम्बू गड़िगा तहँ आल्हाका बैठे सबै शूरमा आय॥
आल्हा बोले तहँ देबा ते कहिये करिये कौन उपाय १९
इतना सुनिकै देबा बोला साँची तुम्हैं देयँ बतलाय॥
योगी बनिकै बौरी चलिये तौसबहालठीकमिलिजाय २०
यह मन भाई मलखाने के गुदरी पहिरि लीनततकाल॥
आल्हा देबा ब्रह्मा ठाकुर इनहुनतिलकलगायोभाल२१
लीन बाँसुरी ब्रह्मा ठाकुर खँभरी मैनपुरी चौहान॥
कर इकतारा आल्हा लीन्ह्यो डमरू लीन वीर मलखान २२
चारो चलिभे फिरि तम्बुन ते बौरीगढ़ै पहूँचे आय॥
बजी बाँसुरी तहँ ब्रह्माकी देबा खँभरी रहा बजाय २३
टप्पा ठुमरी भजन रेखता मलखे गावैं मेघ मलार॥
को गति बरणै इकतारा कै बाजैं खूब लोह के तार २४
रूप देखिकै तिन योगिन का मोहे सबै नारिनर बाल॥
बात फैलिगै बौरीगढ़ में योगी आये खूब विशाल २५
भा खलभल्ला औ हल्लाअति पहुँचे वीर शाहके द्वार॥

तजिकै लज्जा चलीं इकल्ला बल्लन क्यार मनों त्यौहार २६
अटाके ऊपर कटा करनको नारिन पैन नैन हथियार॥
कड़ाके ऊपर छड़ा बिराजैं तिनपर पायजेब झनकार २७
कर इकतारा आल्हा लीन्हे नीचे करैं तारसों रार॥
बजै बाँसुरी भल ब्रह्माकै मानो लीन कृष्ण अवतार २८
उपमा नाहीं शिरीकृष्ण कै तीनों लोकन के कर्त्तार॥
काह हकीकति है ब्रह्मा कै पै यह बँसुरी केरि बहार २९
बाजै खँझरी भल देवा कै मलखे करैं तहाँ पर गान॥
देखि तमाशा तहँ योगिनका लागे कहन परस्पर ज्वान ३०
ऐसे योगी हम देखे ना दाढ़ी गई सपेदीछाय॥
गङ्गासागर के संगमलों देखा देश देश अधिकाय ३१
वीरशाह तब बोलन लाग्यो चारों योगिन ते मुसुकाय॥
कहाँ ते आयो औ कहँ जैहौ आपन हाल देउ बतलाय ३२
सुनिकै बातैं महराजा की मलखे बोले वचन बनाय॥
हम तो आये प्रागराज ते जावैं हरद्वार को भाय ३३
भोजन पावैं हम क्षत्रिन घर बृत्ती यहै लीन ठहराय॥
होय जनेऊ ज्यहि घर नाहीं क्षत्री कौन भाँति सो आय ३४
जनमत ब्राह्मण क्षत्री बनियाँ तीनों शूद्र सरिस हैं भाय॥
होय जनेऊ जब तीनों घर तब यह वर्ण ठीक ठहराय ३५
जो मर्यादा तुम छोंड़ा ना तौ घर भोजन देउ कराय॥
कलियुग आवा महराजा है ताते साफ दीन बतलाय ३६
हम नहिं भोजन करैं शूद्र घर चहु मरिजायँ पेटके घाय॥
यकइस लंघन चहु ह्वैजावैं पैनहिं सिंहघासको खाय ३७
सुनिकै बातैं ये योगी की भामन खुशी यादवाराय॥

ओ यह बोला फिरि योगिनते हमहूँ साँच देयँ बतलाय ३८
तुम्हरो हमरो मत एकै है शंका आप देउ बिसराय॥
पतित न क्षत्री कोउ बौरीगढ़ यादव बंश यहां अधिकाय ३९
पापी आयो इक मोहबे ते ताको खन्दक दीन डराय॥
औरन पापी कोउ बौरी में तुमको सांच दीन बतलाय ४०
इतना सुनिकै मलखे बोले ओ महराज यादवाराय॥
कैसो खन्दक कैसो पापी दर्शन हमैं देउ करवाय ४१
कबहूँ खन्दक हम देखाना तुमते साँच दीन बतलाय॥
बड़ी लालसा भै जियरे माँ खन्दकआप देउदिखलाय ४२
इतना सुनिकै महराजा तब योगिन लीन्ह्यो साथ लिवाय॥
जौने खन्दक में ऊदन थे सो महराज दिखावा जाय ४३
ऊदन दीख्यो जब योगिन को नीचे लीन्ह्यो शीश नवाय॥
चारो योगी तहँते चलिभे पहुँचे राजभवन में आय ४४
भयो बुलौवा फिरि भोजन को मलखे बोले वचन बनाय॥
आजु यकादशि निर्जल बर्त्ते राजन साँच दीन बतलाय ४५
करैं बसेरो नहिं बस्ती में जंगल बास करैं सब काल॥
बिदा मांगिकै महराजा ते चारो चलत भये ततकाल ४६
आयकै पहुँचे फिरि फौजनमें अंगड़ खंगड़ धरे उतार॥
सुरँग खुदायो मलखाने ने क्षत्रिन तुरत कीन तय्यार ४७
जौने खन्दक में ऊदन थे फूटो सुरँग तहाँपर जाय॥
सुरँग के भीतर सों बघऊदन पहुँचे फौज आपनी आय ४८
जैसे पियासा पानी पावै तैसे खुशी भये सब भाय॥
बाजे डंका अहतंका के शंका सबन दीन बिसराय ४९
मलखे बोले तहँ आल्हा ते लश्कर कूच देउ करवाय॥

बिदा करावैं चन्द्रावलि को तब यश जाय जगतमें छाय ५०
इतना सुनिकै आल्हा ठाकुर बोले करौ यहै अब भाय॥
हुकुम पायकै यह्व आल्हा को मलखे कूच दीन करवाय ५१
चलिभैं फौजैं दलबादल सों बौरीगढ़ै गईं नगच्याय॥
प्रलय मेघ सम बजैं नंगारा हाहाकार शब्द गा छाय ५२
गा हरिकारा तब बौरी में राजै खबरि जनाई जाय॥
फौजैं आईं क्यहु राजा की बौरी डांड़ दबायनि आय ५३
सुनिकै बातैं हरिकाराकी राजा गयो सनाकाखाय॥
मलखे बोले ह्यां रूपन ते कहियो बीरशाह ते जाय ५४
सुरँग खोदिकै बघऊदन को आल्हा ठाकुर लीन निकारि॥
बिदा कराये बिन जैहैं ना ताते करो नहीं तुमरारि ५५
बहिनी ब्याही तुम्हरे घरमाँ ताते क्षमाकीन यहिबार॥
नहिं अस ठाकुर को जन्माजग जाते मानि लीन हमहार ५६
इतना सुनिकै रूपन चलिभा बौरीगढ़ै पहूँचा जाय॥
खबरि सुनाई महराजा को जो कछु कह्यो बनाफरराय ५७
सो नहिं भाई बीरशाह मन बोल्यो तुरत बचन ललकार॥
काह हकीकति है आल्हा कै आवैं बिदा करावन द्वार ५८
हठ नहिं छोड़्यो दुर्य्योधन ने औ मरिगयो सहित परिवार॥
खबरि जनावो तुम आल्हा को हमरे साथ करैं तलवार ५९
इतना सुनिकै रूपन चलिभे फौजन फेरि पहूँचे आय॥
कही हकीकति बीरशाह की सुनि जरि उठे बनाफरराय ६०
हुकुम लगायो निज फौजनमें सबियां शूर होयँ तय्यार॥
हुकुम पायकै मलखाने को क्षत्रिन बांधिलीन हथियार ६१
गजें चढ़ैया गजपर चढ़िगे बाँके घोड़न भे असवार॥

झिलम बखतर पहिरिसिपाहिन हाथम लीन ढाल तलवार ६२
यक यक भाला दुइ दुइ बरछी कोताखानी लीन कटार ॥
रणकी मोहरि बाजन लागी रणका होनलाग ब्यवहार ६३
सजा बेंदुला का चढ़वैया लाला देशराज का लाल ॥
को गति बरणै मलखाने कै जाको डरैं देखि नरपाल ६४
बड़ा लड़ैया भीषमवाला देबा मैनपुरी चौहान ॥
ब्रह्मा ठाकुर सजि ठाढ़ो भो करिकै रामचन्द्रको ध्यान ६५
ढाढ़ी करखा बोलन लागे बन्दी कीन समरपद गान ॥
बाजे डंका अहतंका के घूमनलागे लाल निशान ६६
हिंया कि गाथा ऐसी गुजरी सुनिये बीरशाहको हाल ॥
सुरज जुरावर दोउ पुत्रन को तुरतै बोलि लीन नरपाल ६७
करो तयारी समरभूमिकै अपनी फौज लेउ सजवाय ॥
जान न पावैं मोहबेवाले सबकी कटा देउ करवाय ६८
हुकुम पायकै महराजा को डंका तुरत दीन बजवाय ॥
सजे सिपाही बौरी वाले मनमाँ श्रीगणेशपदध्याय ६९
अंगद पंगद मकुना भौंरा सजिगे श्वेतवरण गजराज ॥
सजि इकदन्ता दुइदन्ता गे तिनपर हौदा रहे बिराज ७०
कच्छी मच्छी नकुला सब्जा हरियल मुश्की घोड़ अपार ॥
ताजी तुरकी पँचकल्यानी सुरखा सुरँगा भये तयार ७१
चढ़ि अलबेला तिन घोड़नपर अपने बांधि लये हथियार ॥
हथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे हाथम लिये ढाल तलवार ७२
बाजीं तुरही मुरही ऐसी पुप्पूं पुप्पूं परा सुनाय ॥
बाजे डफला अलबेला सब शूरन मेला दीन लगाय ७३
मारु मारु करि मौहरि बाजीं बाजीं हाव हाव करनाल ॥

खर खर खर अर के रथ दौरे रब्बा चले पवनकी चाल ७४
सुर्खा घोड़ा चढ़ जुरावर सूरज सब्जापर असवार ॥
सुमिरि भवानी सुत गणेश को दोऊ चलत भये सरदार ७५
घोड़न वरणों की असवारन पैदर सेना तीस हजार ॥
तीन सहस हाथिन पर सोहैं बाँके यादव परम जुझार ७६
बाम्हन थोरे क्षत्री ज्यादा लीन्हे कठिन धार तलवार ॥
गर्ज्जति आवैं समरभूमि को एकते एक शूर सरदार ७७
कायर हल्ला खलभल्ला में तल्ला छोंड़ि प्राण के दीन ॥
खुशी छायगै मन शूरन के मानों जीति इन्द्रपुर लीन ७८
बजे नगारा ठनकारा के दारा गर्भपात सुनिकीन ॥
गये दरारा उर कायर के सायर सत्यसत्य कहिदीन ७९
उइ धिरकारैं अपने तनका मनमाँ वार वार पछितायँ ॥
भैंसि वियानी घर हमरे मा माठा दूध केर अधिकाय ८०
हाय रुपैया मारे डारैं लीन्हे समरभूमि को जायँ ॥
दैया मैया भैया कहिकै ज्वैया हेतु वहुत पछितायँ ८१
शूर यशोमति मैया वाले भैया गैयन के चरवाह ॥
नाव खेवैया भवसागर के नागर कृष्णचन्द्र नरनाह ८२
तिनका सुमिरणमन अन्तरकरि तत्पर भये स्वामि के काज ॥
करि अभिलाषा समरभूमि कै राखे मनै धर्म की लाज ८३
पढ़िअशलोकनतजिशोकनको लोकन केर मिले जनुराज ॥
तैसे गाने मनअन्तर में बाजे तहाँ शूर शिरताज ८४
बाजे वाजे बाजे सुनिकै लाजे मनै आपने वीच ॥
तिनकोकहियतहमअपनीदिशि जानोसकल नरनमेंनीच ८५
हम अनुमाना मन अपने है जाना नारि वित्तको कीच ॥

पै हम त्यागी अनुरागीना लागी आश नारिधनबीच ८६
आपै त्यागी अनुरागीना तौ कस कहै नारिधन कीच ॥
साँच बखानैं हम अपनीदिशि सोई सकल नरनमें नीच ८७
पै यहु कलियुग बाबा आयो छायो रहै मनै संताप ॥
मन नहिं इस्थिर क्षणहू होवै कैसे होय मुनिन में थाप ८८
जपतै माला गायत्री के आला परब्रह्म के ध्यान ॥
यहु मन काला भाला मारै जो सब इन्द्रिनमें बलवान ८९
नीच न कहिये यहि कालामें जो कोउ साँच बिप्रको बाल ॥
युग यहु पाजी बदिकै बाजी राजानलको कियोबिहाल ९०
ऐसे पाजी की राजी में सूरज बीरशाह का लाल ॥
जायकै पहुँच्यो समरभूमि में अब मलखेका सुनो हवाल ९१
सो जब दीख्यो आसमानको छाई खूब गर्द गुब्बार ॥
हँसिकै बोला रणशूरन ते सँभरो सबै शूर सरदार ९२
इतना कहतै फौजै आईं तोपन होनलागि तहँ मार ॥
अररर अररर तोपैं छूटीं हाथिन घोर कीन चिग्घार ९३
को गति बरणै त्यहि समयाकै भारी भयो भयङ्कर मार ॥
जावैं गोला जौनी दिशिको तौनी दिशिकोकरैं चिथार ९४

सवैया ॥

भभकार उठैं तहँ गोलन की फुफकार करैं रण में गजराजा।
धुधकार नगारनकी गमकी चमकी तलवारि जुरे सबराजा ॥
अपार जुझार करैं तहँ मार न डरैं मन नेकहु एकहुसाजा।
समाजऔसाजदोऊदिशिमें अवलौंललितेसबहीजयकाजा ९५

घड़ी लड़ाई भै तोपन कै लोपे अन्धकार सों भान ॥

छाय अँधेरिया गे दशहूदिशि कतहुँ न सूझै अपन बिरान ९६
धावा ह्वैगा दोऊ दल का दोऊ भये बरोबरि आय ॥
सूरजठाकुर बौरी वाला सिरसा क्यार बनाफरराय ९७
दोऊ सोहैं भल घोड़नपर लीन्हे हाथ ढाल तलवार ॥
द्वउ ललकारन मारन लागे सम्मुख होत होत सरदार ९८
सूँढ़ि लपेटा हाथी भिड़िगे अंकुश भिड़ा महौतनक्यार ॥
हौदा हौदा यकमिल ह्वैगा औ असवार साथ असवार ९९
कल्ला भिड़िगे असवारन के लागी होन भड़ाभड़ मार ॥
छूटे ऊना लएडन वाले कोताखानी चलीं कटार १००
बिजुली दमकै कउँधा चमकै तैसे धमकिरही तलवार ॥
मलखे ठाकुर शूर जुरावर दोऊ लड़नलागि सरदार १०१
सूरज ऊदन की भेंटन में लेटनलागि सिपाही ज्वान ॥
परे लपेटे भट भेटे जे लेटे समर भूमि मैदान १०२
मनो ससेटे यम भेटे में लेटे क्षत्री परम जुझार ॥
वहैं पनारा तहँ रक्तन के औ हिलकारा उठैं अपार १०३
को गति बरणै तहँ पैदल की बाजे घूमि घूमि तलवार ॥
अपन परावा कछु सूझैना जूझै जूझ बूझ त्यहिबार १०४
बड़ी लड़ाई भै बौरीगढ़ मलखे सूरज के मैदान ॥
फिरि फिरि मारै औ ललकारै नाहर समरधनी मलखान १०५
बड़ा लड़ैया सिरसा वाला ज्यहिते हारि गई तलवार ॥
घोड़ी कबुतरी रणमें नाचै साँचे शूरवीर सरदार १०६
सूरज बोले तिन मलखे ते ठाकुर मानो कही हमार ॥
लौटि मोहोबे जल्दी जावो तबहीं कुशलरचाकरतार १०७
इतना सुनिकै मलखे बोले तुमते साँच देयँ बतलाय ॥

बिदा कराये बिन जैबेना चहुतनधजीधजीउड़िजाय१०८
सूरज बोले मलखाने ते यह नहिं होनहार यहिबार॥
इतना कहिकै सूरज ठाकुर अपनी खैंचिलीनतलवार१०६
ऐंचिकै मारा मलखाने के मलखे लीन ढालपर वार॥
आल्हा बोले मलखाने ते ठाकुर सिरसा के सरदार ११०
पकरिकै बाँधो तुम सूरज को इनपर करो नहीं अब वार॥
गरुहर नाते के लड़िकाहैं मानों सिरसाके सरदार १११
सुनिकै बातैं ये आल्हा की तुरतै उतरिपरा मलखान॥
पकरिकै बाँध्यो रणमण्डल में देखैं खड़े अनेकन ज्वान ११२
सूरज बन्धन दीख जुरावर पहुँचा तुरत तहाँ पर आय॥
औ ललकारा मलखाने को ठाढ़े होउ बनाफरराय ११३
इतना सुनिकै बघऊदन ने तुरतै पकरि जुरावर लीन॥
उतरि कबुतरी ते मलखाने बन्धनतुरत तहाँपर कीन ११४
दूनों लरिका बीरशाह के आल्हाठाकुर लीन बँधाय॥
भागीं फौजैं बौरीगढ़ की काहू धरा धीर ना जाय ११५
खबरि सुनाई बीरशाह को क्षत्रिन नीचे शीश नवाय॥
बन्धन सुनिकै द्वउ पुत्रन को दुखिया भयो यादवाराय ११६
इन्द्रसेन औ मोहन बेटा इनको तुरत लीन बुलवाय॥
हाल बतायो समरभूमि को आशिर्बाद दीन हर्षाय ११७
करो तयारी सब भाइन सह आल्है पकरि दिखावो आय॥
इतना सुनिकै सबियाँ बेटा चलिभे राजै शीश नवाय ११८
आयकै पहुँचे निज सेनन में डंका तुरत दीन बजवाय॥
बाजे डंका अहतंका के हाहाकार शब्द गा छाय ११६
पहिल नगारा में जिन बन्दी डुमे शूर भये हुशियार॥

तिसर नगारा के बाजत खन क्षत्री समर हेतु तैयार १२०
दादी करखा बोलन लागे बिप्रन कीन वेद उच्चार ॥
रण की मौहरि बाजन लागीं रणका होनलाग व्यवहार १२१
चलिभै सेना बौरीगढ़ सों हाहाकारी परै सुनाय ॥
घरी मुहूरत के अन्तर में पहुँचे समरभूमिमें आय १२२
आल्हा ऊदन मलखे सुलखे देवा मैनपुरी चौहान ॥
सब रणशूरन त्यहि समया में भारी भीर दीख मैदान १२३
उड़ी कबुतरी मलखाने की हौदन उपर पहूँची जाय ॥
मलखे मारै तलवारिन सों घोड़ी देय टापके घाय १२४
मोहन ठाकुर उदयसिंह को परिगा समर बरोबरि आय ॥
भई कसामसि समरभूमि में औ तिलडरा भुईं ना जाय १२५
को गति वरणै रजपूतन कै दूनों हाथ करैं तलवार ॥
मुण्डन केरे मुड़चौरा भे औ रुण्डन के लगे पहार १२६
जैसे भेड़िन भेड़हा पैठै जैसे अहिर बिडारै गाय ॥
तैसे मारै मलखे ठाकुर कायर भागें पीठिदिखाय १२७
है मर्दाना जिनको बाना ते नर करैं तहाँ पर मार ॥
को गति वरणै इन्द्रसेन कै दूनों हाथ करै तलवार १२८
वड़े लड़ैया बौरी वाले मानैं नहीं समर में हार ॥
ना मुँह फेरैं मोहबे वाले दोऊ कठिन मचाई रार १२९
गिरैं कगारा जस नदिया माँ तैसे गिरैं ऊंट गज धाय ॥
परीं लहासैं रणशूरन की तिनपर रहे गीध मड़राय १३०
गोली ओली कतहुँ वरसैं कतहूँ कठिन चलै तलवार ॥
छुरी कटारी कोऊ मारैं कोऊ कड़ाबीन की मार १३१
गदा के ऊपर गदा चलावैं ढालन मारैं ढाल घुमाय ॥

सर सर मारैं तलवारिन सों तीरन मन्न मन्न गा छाय १३२
धम् धम् धम् धम् बजैं नगारा मारा मारा परै सुनाय॥
झम्झम्झम्झम्झीलम झलकैं नीलम रंग परैं दिखराय १३३
चम् चम् चम् चम् भाला चमकैं दमकैं उडुगण मनों अकाश॥
बम् बम् बम् बम् क्षत्री बँबकैं भभकैं शूरनकेर प्रकाश १३४

सवैया॥

आश करैं नहिं प्राणन की ललिते रणशूरन रीति सदाहै।
प्राण कि नाश कि कीर्त्ति प्रकाश कि आश नहीं सुख या बिपदाहै॥
बीर कि शान कि आन कि मान कि ठानठने मलखान यदाहै।
शान कि आन करे रणज्वान सो प्राणपयान कियेयीतदाहै १३५

को गति बरणै मलखाने कै रणमाँ कठिन करै तलवार॥
घोड़ बेंदुला का चढ़वैया नाहर उदयसिंह सरदार १३६
गनि गनि मारै रजपूतन का बेटा देशराज का लाल॥
मोहनठाकुर बौरी वाला आला बीरशाहका बाल १३७
बिकट लड़ाई की संयुग में कायर भागे लिहे परान॥
बड़ा लड़ैया भीषमवाला आला मैनपुरी चौहान १३८
लड़ै चौंड़िया दिल्लीवाला बेटा लड़ै पिथौराक्यार॥
को गति बरणै इन्द्रसेन कै दूनों हाथ करै तलवार १३९
मलखे बोले इन्द्रसेन से जीजा मानो कही हमार॥
बहिनी बेही तुम्हरे घरमाँ तुमते सदा हमारीहार १४०
अबै मसाला कछु बिगराना अनभल नहीं कीन कर्त्तार॥
बिदा कराये बिन जैबे ना मानो सत्यबचन सरदार १४१
फौजै फ्यारो समरभूमि ते बौरी जाउ आप ततकाल॥

तुम समुझावो महराजा को काहे रारि करैं नरपाल १४२
इतना सुनिकै इन्द्रसेन ने गरुई हाँक कीन ललकार ॥
काह हकीकति तुम राखतिहौ जावो विदाकरावन द्वार १४३
इतना कहिकै इन्द्रसेन ने अपनी खैंचि लई तलवार ॥
दौरिकै पकरयो उदयसिंह ने मलखे बाँधिलीनत्यहिबार१४४
देखिकै वन्धन इन्द्रसेन को मोहनआयगयो त्यहिकाल ॥
मारन लाग्यो रजपूतन को मोहन बीरशाहका लाल १४५
औरो भाई जे मोहन के तेऊ करनलागि तलवार ॥
झुके सिपाही बौरीवाले लागे करन भड़ाभड़मार १४६
पैदरि पैदरि कै वरणी भै औ असवार साथ असवार ॥
वड़ी लड़ाई हाथिन कीन्ह्यो घोड़न कीन टापकीमार १४७
लीन्हे साँकरि दल बादलसों हाथी करत फिरैं चिग्घार ॥
भाला छूटैं असवारन के पैदल खूब चलै तलवार १४८
झुके सिपाही मोहबेवाले इनहुन कीन घोर घमसान ॥
चौंड़ा बाम्हन के मुर्चा में कोऊ शूर नहीं समुहान १४६
सोहै चौंड़िया इकदन्ता पर हाथम लिये ढाल तलवार ॥
मोहन ठाकुर बौरी वाला सब्जा घोड़ापर असवार १५०
हनि हनि मारै रजपूतन का गरुई हाँक देय ललकार ॥
अभिरे क्षत्री अरझ्वारा सों आमाझ्वारचलै तलवार १५१
जौनै हौदा ऊदन ताकैं बेंदुल तहाँ पहूँचै जाय ॥
ऊदन मारैं तलवारिन सों बेंदुल टापन देइँ गिराय १५२
भाला चमकै तहँ देवा का मोहन केरि चलै तलवार ॥
घोड़ी कबुतरी का चढ़वैया मलखे सिरसाका सरदार १५३
मारि गिराये रजपूतन का कायर भागे लिहे परान ॥

को गति बरणै रणशूरन के सम्मुख करैं समर मैदान १५४
मान न रहिगे क्यहु क्षत्रिनके सब के छूटि गये अरमान॥
बहुतक करहैं समरभूमि में अधजलपरेअनेकनज्वान१५५
बहुतक सुमिरैं घर अपने को औ मन परे परे पछितायँ॥
बहुतक क्षत्री गिरैं समर में काटे बृक्ष सरिस महराय १५६
नदी भयङ्कर बही रकत की त्यहिमाँ गिरे ऊंट गज धाय॥
छुरी कटारी मछली ऐसी ढालैं कछुवा परैं दिखाय १५७
परीं लहासैं तहँ मनइन की छोटी डोंगिया सम उतरायँ॥
बहैं सिवारा जस नदिया माँ तैसे बहे बाल तहँ जायँ १५८
भूत पिशाच योगिनी नाचैं गावैं गीत बीर बैताल॥
श्वान शृगालन की बनिआई गीधन गरे परे जयमाल १५९
चिघरैं हाथी रणमण्डल में डगरैं वड़े बड़े सरदार॥
भगैं मलखे रणशूरन ते डगरैं डारि डारि हथियार १६०
रहि अभिलाषा नहिं केहू के जो फिरि करै वहाँपर मार॥
जितने लड़िका बीरशाह के बाँधे सिरसा के सरदार १६१
रहैं सिपाही जे बौरी के भागे डारि ढाल तलवार॥
भागे क्षत्रिन का मारैं ना नाहर मोहबे के सरदार १६२
रीति पुरानी इन छोड़ी ना कतहूँ समर भूमि में ज्वान॥
पूरो क्षत्रीपन करतीं ना मरतीं नहीं समर मैदान १६३
तौ यह गावत को गाथा फिरि तजिकै सकल आपनो काम॥
यह सब जानत है अपने मन रहिहै एक रामको नाम १६४
तबहूँ मानत है जीवन बहु तजिकै कर्म्म धर्म्म इतमाम॥
यह नहिं जानत है अपने मन साँचो धर्मकर्म सुखधाम १६५
गये सिपाही नृप द्वारे पर औ सब हाल बताये जाय॥

बन्धनसुनिकै सब लड़िकनको राजा गये सनाकाखाय १६६
खवरि पहुँचिगै रनिवासे में राजा रानी लीन बुलाय ॥
वौहर आई चन्द्रावलि तहँ सोऊगई कथा सब गाय १६७
हमरे घरके माहिल वैरी उनके चुगुलिनका वयपार ॥
कहा मानिकै तुम माहिल का दादा कियोयहांलग रार १६८
ना सुनिपावा मैं पहिले ते माहिलदीन्ह्यो रारि लगाय ॥
तौ अस हालत कसहोतै अव तवहीं देति सबै समुझाय १६९
योगी वनिकै ब्रह्मा आये सूरति दीख दूरि ते माय ॥
होति खटपटी जो ऊदन ते ब्रह्माभाय न अउतोधाय १७०
टेक कठिन है वघऊदन कै हम खुब जानैं ठीक स्वभाव ॥
मिलिये दादा अब आल्हा ते याही जानो नीक उपाव १७१
सुनि सुनि वातैं सब वौहर की रानी नृपति दीन समुझाय ॥
सुनिकै वातैं महरानी की राजा ठीक लीन ठहराय १७२
आगि लगाई माहिल ठाकुर नातेदारी दीन तुराय ॥
राजा सोचत यह अपने मन पहुँचातुरतसिंहासनआय १७३
कलम दवाइति कागज लैकै चिट्ठी लिखनलाग ततकाल ॥
जितनी वातैं माहिल कहिगा लिखिगेयथातथ्यनरपाल १७४
फिरि कछु वातैं चन्द्रावलिकी लल्लो पत्तो लिखा वनाय ॥
बन्धन छोरो सब पुत्रन को तुरतै विदा लेउ करवाय १७५
कीनि घटिहई माहिल ठाकुर नाहक रैसा दीन लगाय ॥
कहा मानिकै हम माहिल का साँचोसाँच गयन वौराय १७६
लिखी विधाता कै मेटै को साँचो कहैं गीत सब गाय ॥
लिखिकै चिट्ठी दै धावन को राजा वैठिगये शिरनाय १७७
लैकै चिट्ठी धावन चलिभा पहुँचा जहाँ वनाफरराय ॥

चिट्ठी दीन्ह्यो सो आल्हा को ठाढ़ो भयो शीशकोनाय १७८
लागि कचहरी तहँ आल्हा के रुमि भुमि रहीं पतुरियानाच॥
आल्हा बाँचन चिट्ठी लागे ह्वैगा रंग भंग तहँ साँच १७६
पढ़िकै चिट्ठी आल्हा ठाकुर सबको दीन्ह्यो हाल बताय॥
माहिल ठाकुर की किरपा ते इतना परा परिश्रमआय १८०
फिकिरिम माहिल हैं ऊदनकी निश्चय समुझि परै यहिबार॥
जाको रक्षक रघुनन्दन है ताको जाय न बाँकोबार १८१
इतना कहिकै आल्हा ठाकुर बन्धन तुरत दीन छुड़वाय॥
कहि समुझायो सबलरिकन ते राजै खबरि जनावो जाय १८२
ब्रह्मा आवत इन्द्रसेन सँग इनका बिदा देयँ करवाय॥
माहिल मामा हमरे लागैं तातेकिहिनिदिल्लगीआय१८३
रयहिमा सज्जन तुम महराजा सोऊ दया दीन बिसराय॥
क्षम्यो ढिठाई अब हमरी तुम तुम्हरीशरणगये हमआय१८४
नातेदारी में उत्तमहो आहिउ कृष्णबंश महराज॥
गुरु श्वशुर सों संगर ठानैं क्षत्री जन्म युद्धके काज १८५
इतना कहिकै आल्हा ठाकुर सबको बिदा कीन ततकाल॥
ब्रह्मा पहुँचे बीरशाह घर औसबकह्यो बनाफरहाल १८६
सुनिकै बातैं सब आल्हा की राजा बिदा दीन करवाय॥
बैठि पालकी में चन्द्रावलि गौरा पारबती को ध्याय १८७
बहुधन दीन्हो ब्रह्मा ठाकुर महरन पलकी लीन उठाय॥
दशहूँ लरिकन सों महराजा आये जहाँ बनाफरराय १८८
आवत दीख्यो बीरशाह को आल्हा मिले अगारी आय॥
मिला भेंटकरि सबसों राजा अपने धाम गये हर्षाय १८६
बाजे डंका अहतंका के आल्हा कूच दीन करवाय॥

चौंड़ा सूरज दिल्ली पहुँचे आल्हा गये मोहोबे आय १६०
बेटी पहुँची जब महलन में मल्हना मिली अगाड़ी धाय॥
बारहु रानी परिमालिक की बेटी देखि गईं हरषाय १६१
सावन भावन गावन लागीं आवन लागि बिदेशी ज्वान॥
मल्लन कल्लन फरकन लागे थिरकनलागिमेघअसमान१६२
दादुर बोलन जलमें लागे विरहिन उठी करेजे पीर॥
बिना पियारे घर पीतम के कैसे धरै नारि मनधीर १६३

सवैया॥

कैसे धरै मनधीर तिया परदेश पिया ज्यहि सावन छाये।
राग औरङ्ग अनंग कि जंग उमंग भरै पियकी सुधिआये॥
गात सबै तियके सकुचात बिदेश परे पिय पेट खलाये।
कहाकहैं ललिते बिधिप्रीति अनीति किरीति सदादरशाये १६४

गवैं सुहागिल सब सावन में बारामासी मेघ मलार॥
गड़े हिंडोला हैं घर घर में दर दर सावन केरि बहार १६५
काग उड़ावन उनघर लागीं जिन घर परे पिया परदेश॥
सावन रावन उनके लागे जिनके चिट्ठीके अन्देश १६६
नहीं तो सावन अतिपावन है गावन गीत क्यार त्यवहार॥
हमैं सुहावन मनभावन है सावनक्यारसकलव्यवहार१६७
चौथि पूरिभै चन्द्रावलि कै ह्याँते होय तरँग को अन्त॥
राम रमा मिलि दर्शन देवो इच्छा यही मोरि भगवन्त १६८
खेत छूटिगा दिननायक सों झंडा गड़ा निशा को आय॥
तारागण सब चमकन लागे सावन मेघ रहे घहराय १६९
कहुँ कहुँ तारा कहुँ कहुँ बादल नभहू भयो कलियुगी आय॥

आशिर्वाद देउँ मुन्शीसुत जीवो प्रागनरायणभाय २००
रहै समुन्दर में जबलों जल जबलों रहैं चंद औ सूर ॥
मालिक ललिते के तबलों तुम यशसों रहौ सदा भरपूर २०१
माथ नवावों पितु अपने को मन में रामचन्द्र को ध्याय ॥
तुम्ही खेवैया हौ नैयाके ओ रघुरैया होउ सहाय २०२
माघ कृष्ण तिथि श्रीगणेशकी ताते वार वार पदध्याय ॥
सम्बत वनइस सै पचपन में पूरो भयो आज अध्याय २०३

इति श्रीलखनऊनिवासि (सी,आई,ई) मुंशीनवलकिशोरात्मजबाबूप्रयागनारायणजीकी आज्ञानुसार उन्नामप्रदेशान्तर्गत पँड़रीकलांनिवासि मिश्रवंशोद्भवबुधकृपाशङ्करसूनु पण्डितललिताप्रसादकृत चन्द्रावलिचौथिपूर्णवर्णनंनाम द्वितीयस्तरंगः ॥ २ ॥

चन्द्रावलि की चौथि सम्पूर्ण ॥

॥ इति ॥

अथ आल्हखण्ड ॥

बलखबुखारे की लड़ाई अथवा इन्दल हरण व बिवाह वर्णन ॥

सवैया ॥

बाजत झांझ मृदंग तहाँ औ सवै मुरचंगनसों स्वर गावैं ।
बाजत तार सितारनके यकतारकी गति कौन बतावैं ॥
राजत बीण तहाँ तबला अरु जहँ झुंडन झुंडन आवैं ।
गाजत कृष्ण तहाँ ललिते अब जहाँ शिव गोपीरूप बनावैं १

सुमिरन ॥

भैया भैया और बपैया सब दिशि देखा खूब निहार ॥
बिना चरैया गैयावाला दैया कौन होय रखवार १
बूड़ै नैया भवसागर में कोउ न मिलै खेवैया हाल ॥
भैया यशुमति केर कन्हैया भैया साँच कहैं सुरपाल २
पारलगैया ग्वारि नैया के गैयापाल कृष्ण महराज ॥
और खेवैया को नैया का जाकीशरण लेयँ हम आज ३

तुम्ही गुसैयाँ दीनबन्धु हौ   ओ ब्रह्मण्यदेव ब्रजराज ॥
लाज रखैया बाम्हन तनकी   साँचे एक कृष्ण महराज ४
शरणहि ताकत विप्र सुदामा   पायो सकल सम्पदा राज ॥
छूटि सुमिरनी गई कृष्ण की   इन्दल ब्याह बखानों आज ५

अथ कथाप्रसंग ॥

परब दशहरा की जग जाहिर   बुड़की हेतु जाय संसार ॥
भारी मेला श्रीगंगा को   हिंडुनक्यार पूर व्यवहार १
बहुतक छैला अलबेला तहँ   घोड़न उपर भये असवार ॥
करी तयारी श्रीगंगा की   चकस लिये बुलबुलनक्यार २
जेठदुपहरी आरी ह्वैकै   ब्यारी करैं बृक्षतर आय ॥
देखि गँवारी तहँ नारी नर   बोला तुरत बनाफरराय ३
कहाँ तयारी नर नारी करि   ब्यारी किह्यो यहाँपर आय ॥
देखि बनाफर को नर नारी   बोले साँच देयँ बतलाय ४
कौन तयारी हम बिठूर की   भारी पर्व दशहरा केरि ॥
चकित ह्वैकै ऊदन दीख्यो   चारिउ दिशातरफ फिरिहेरि ५
भारी मेला अलबेला तहँ   रेला चला जाय सबराह ॥
घोड़ बेंदुला का चढ़वैया   आयो जहाँ बैठ नरनाह ६
हाथ जोरिकै तहँ आल्हा के   ऊदन बोले शीश नवाय ॥
करैं तयारी हम गंगा की   दादा हुकुमदेउ फरमाय ७
इतना सुनिकै आल्हा बोले   साँची सुनो लहुरवा भाय ॥
देश देशके राजा अइहैं   होई भीर भार अधिकाय ८
रारि मचैहौ तुम मेला में   हमपर परी आपदा आय ॥
ताते जावो नहिं मेला को   मानो कही लहुरवा भाय ९
इतना सुनिकै माहिल बोले   तुम सुनिलेउ बनाफरराय ॥

लड़िका ऊदन अब नाहीं हैं जो तहँ रारि मचैहैं जाय १०
बातैं सुनिकै ये माहिल की आल्हा बोले वचन बनाय ॥
तुम चलिजावो माहिल मामा तौ हम ऊदन देयँ पठाय ११
इतना सुनिकै माहिल बोले हम तो करब जाय असनान ॥
करो तयारी ऊदनठाकुर आल्हाबचन मानिपरमान १२
आल्हा बोले फिरि देबाते तुमहूं जाउ साथ यहिकाल ॥
पै तुम बर्ज्यो बघऊदन को जहँपर होय रारिको हाल १३
इतना कहिकै आल्हाठाकुर महलन फेरिगयो अलसाय ॥
करै तयारी ऊदन लागे बाँके घोड़ लीन कसवाय १४
कच्छी मच्छी हरियल मुश्की सुर्खा सुरँगा रङ्ग बिरंग ॥
ज़र्दा गर्रा पँचकल्यानी सब्जा स्याह एकही रंग १५
चुने सिपाही लिये संग में जिनते हारिगई तलवार ॥
सजा रिसाला घोड़नवाला लग भग जानो एक हजार १६
सजे सिपाही पंद्रासौ लग एकते एक लड़ैया ज्वान ॥
बाजे डंका अहतंका के घूमन लागे लाल निशान १७
इन्दल आये त्यहि समया में ऊदन पास पहूंचे आय ॥
हमहूं चलिबे श्री गंगा को चाचा लेवो साथ लिवाय १८
इतना सुनिकै ऊदन बोले बेटा मानो कही हमार ॥
दादा भौजी जो रोंकैं ना हमरे साथ होउ तय्यार १९
इन्दल चलिभे तब महलन को माता पास पहूंचे जाय ॥
हाथ जोरिकै इन्दल बोले माते बार बार शिरनाय २०
हुकुम कराय देउ दद्दुवा सों आवों चाचा साथ नहाय ॥
इतना सुनिकै सुनवाँ बोली बेटै बारबार समुझाय २१
पर्ब दशहरा की टरिजावै फिरि तुम आयो गङ्ग नहाय ॥

भारी मेला है बिठूर का जो तुम जैहौ पूत हिराय २२
हौ इकलौता म्बरी कोखि में ताते मोर प्राण घबड़ाय ॥
इतना सुनिकै इन्दल बोले माता साँच देयँ बतलाय २३
जान न पावैं जो गंगा को तौ मरिजायँ जहरको खाय ॥
हुकुम देवावै की दद्दुबाते की अब घरै बैठि पछिताय २४
सुनिकै बातैं ये इन्दल की सुनवाँ गई सनाका खाय ॥
गई तड़ाका ढिग आल्हा के इन्दल हाल बतावा जाय २५
बातैं सुनिकै सब सुनवाँ की आल्हा बोले वचन सुनाय ॥
लिखी बिधाता की मेटै को अब तुम देवो पूत पठाय २६
जहर खायकै जो मरिजाई तौहू शोच होय अधिकाय ॥
पार लगैहैं श्रीगंगाजी यहमत ठीक लीन ठहराय २७
इतना सुनिकै सुनवाँ चलिभै इन्दल पास पहूँची आय ॥
औ बुलवायो बघऊदन को सवियाँहालकह्योसमुझाय २८
इन्दल बिगरे हैं महलन में गंगा इन्हैं देउ अन्हवाय ॥
पै हम सौंपति त्वहिं इन्दलको देवर बार बार शिरनाय २९
किह्यो बखेड़ा नहिं मेला में रेला होय तहाँ अधिकाय ॥
वहाँ न जायो इन्दल लैकै मान्यो कही बनाफरराय ३०
इतना सुनिकै ऊदन इन्दल दोऊ चलिभे शीश नवाय ॥
जायकै पहुँचे फिरि फौजन में लश्कर कूच दीन करवाय ३१
बायें घोड़ा है देवा का दहिने बेंदुल का असवार ॥
बीच म जावै इन्दल ठाकुर कम्मर परी एक तलवार ३२
पांच दिनौना मारग लागे छठयें दिवस पहूंचे जाय ॥
भारी मेला भा बिठूर मों आवा तहां कनौजीराय ३३
बाजै डंका तहँ ऊदन का लाखनि धावन लीन बुलाय ॥

कहि समुभावा त्यहि धावनको डंका बन्द देउ करवाय ३४
हुकुम कनौजी का नाहीं है डंका कोऊ बजावै आय ॥
इतना सुनिकै धावन चलिकै डंका बजत दीन रुकवाय ३५
कहा न मान्यो जब बघऊदन देवा ठाकुर उठा रिसाय ॥
तुम्है मुनासिब यह चहिये ना सबमों बैर बढ़ावो भाय ३६
चलिकै मिलिये अबलाखनिसों उनसों हुकुम लेउ करवाय ॥
हीनी तुम्हरी कछु ह्वैहै ना मानो कही बनाफरराय ३७
सुनिकै बातैं ये देवा की ऊदन मानिगयो त्यहिकाल ॥
पाँच दुसाला दुइ हीरा लै चलिभा देशराजका लाल ३८
नचै पतुरिया त्यहि तम्बूमें ज्यहिमें रहैं कनौजीराय ॥
ऊदन ठाकुर तहँ पहुँचतभा राखी भेंट अगाड़ी जाय ३९
हाथ पकरिकै लाखनिराना अपने पास लीन बैठाय ॥
कही हकीकति बघऊदन ने लाखनि हुकुम दीन फरमाय ४०
बाजै डंका इक ऊदन का औरन बन्द देउ करवाय ॥
इतना सुनिकै ऊदन चलिभे तम्बुन फेरि पहूंचे आय ४१
सुनो हकीकति अभिनन्दनकी हंसा ताको राजकुमार ॥
त्यहिकी बेटी चित्तरेखा मेला हेतु भई तय्यार ४२
नटिनी सँगमें त्यहि बेटी के जादू क्यार जिन्हैं बयपार ॥
बलखबुखारे को राजा जो त्यहि अभिनन्दन नाम उदार ४३
त्यहि का बेटा हंसाठाकुर चलिभा बहिनी साथ लिवाय ॥
सवालाख लश्कर को लैकै ब्रह्मावर्त्त पहूँचा आय ४४
तम्बू गड़िगे त्यहि रेती माँ भारी ध्वजा रही फहराय ॥
संग सहेली त्यहि बहिनी की बोलीं बेटी वचन सुनाय ४५
चलिये हनवन जल्दी करिये अब दिनगयो यामभरआय ॥

सुनिकै बातैं ये सखियन की बेटी चली तड़ाकाधाय ४६
भा मटमेरा तहँ इन्दल का देखत रूपगई ललचाय ॥
मन अरु नैना यकमिल ह्वैगे सखियनदेखिगई सकुचाय ४७
फिरिफिरिचितवैदिशिइन्दलके हनवन करै गंगको वारि ॥
विधिउ न जानै गति नारी की दशरथ मरे नारिसों हारि ४८
सोई नारी फिरि फिरि चितवै कैसी करै आजु त्रिपुरारि ॥
इन्दल निकले जलके बाहर सोऊनिकलिपरीसुकुमारि ४६
दिह्यो दक्षिणा द्विज देवन को दोऊ मोहबे के सरदार ॥
तहँते चलिभे फिरि तम्बू को देखत मेला केरि बहार ५०
चचा भतीजे दोऊ ठाकुर तम्बुन फेरि पहूँचे आय ॥
बेटी प्यारी अभिनन्दन की सोऊ चली तहाँ ते धाय ५१
आयकै पहुँची सो तम्बुन में औ सखियनसों लगीबतान ॥
ऐस रँगीला और सजीला मेला नहीं दूसरो ज्वान ५२
करिकै जादू याको हरिये करिये सखी स्वई अबसाज ॥
मन नहिं हटको हमरो मानै ना अब करै तुम्हारी लाज ५३

सवैया ॥

होत अकाज न लाजरहै यह राज समाज लखे दुख छावै ।
जो कुलकानि न आनिकरों कुलटा उलटा म्बहिंलोगबतावै ॥
भावै यहै हमको सजनी रजनी बिन पीतम आनि मिलावै ।
पावै जबै ज्यहि नेहलग्यो ललिते मनमें तबहीं सुखआवै ५४

सुनिकै बातैं चितरेखा की सखियनकहा बहुतसमुझाय ॥
धीरज राखो अपने मन माँ पीतम मिली तुम्हारो आय ५५
इतना कहिकै संग सहेली हेली तुरत भई तय्यार ॥

लय अलबेली संग सहेली आई देखन गङ्ग बहार ५६
ऊदन इन्दल देवा ठाकुर तीनों गये तहाँपर आय ॥
नाव मँगायो मल्लाहन ते बैठ्योसुमिरि शारदामाय ५७
बैठी नावन में चितरेखा बेखा नटिनिन केरि बनाय ॥
काह बतावैं हम लेखा त्यहि देखा रूप नहीं है भाय ५८
पै अवरेखा चितरेखा को लेखा कामदेव की नारि ॥
उठैं तरङ्गैं तहँ गंगा की जंगा करैं वारिसों वारि ५९
लैकै पुरिया भैरोंवाली ऊदन उपर दीन सो डारि ॥
बीर महम्मद की पुरिया को देबा उपर चलावा नारि ६०
नजर बन्दभै जब दूनों के तुरतै इन्दल लीन उतारि ॥
सुवा बनायो सो इन्दल को पिंजरा लीन तड़ाका डारि ६१
उतरिकै नावनसों जल्दी सो तम्बुन गई तड़ाका आय ॥
उतरी जादू जब ऊदन की तबनहिं इन्दल परेदिखाय ६२
जब नहिं दीख्यो तहँ इन्दलको ऊदन तुरत गये घबड़ाय ॥
जार मँगाये तहँ लोहे के सो गंगा माँ दये डराय ६३
मच्छ कच्छ बहुतक फँसिआये पै नहिं इन्दल परे दिखाय ॥
तिल तिल ढूंढ़ा भुइँ मेला में ऊदन देबा संग लिवाय ६४
पता न पायो जब इन्दल को तम्बुन फेरि पहूँचे आय ॥
कही हकीकति तहँ माहिल ते नाहर उदयसिंह तहँ गाय ६५
सुनिकै बातैं उदयसिंह की माहिल बोले वचन बनाय ॥
करो अँदेशा कछु जियरेना आल्है घाव वहाँ समुझाय ६६
जादू कैकै कोउ इन्दल का साँचो लियो बनाफरराय ॥
घरने ह्वैकै फिरि तुम ढूंढ्यो ह्याँते कूच देउ करवाय ६७
इतना सुनिकै उदयसिंह ने डंका कूच दीन बजवाय ॥

पांच रोज को धावा करिकै दशहरिपुरै पहूँचे आय ६८
ऊदन रहिगे एक कोस में माहिल गये अगाड़ी धाय॥
बड़ी खातिरी आल्हा करिकै अपने पास लीन बैठाय ६९
आल्हा बोले तहँ माहिल ते मामा हाल देउ बतलाय॥
ऊदन देवा इन्दल बेटा तीनों रहे कहांपर भाय ७०
हम नहिं देखन इन तीनों को ताते चित्त बहुत घबड़ाय॥
इतना सुनिकै माहिल बोले साँची सुनो बनाफरराय ७१
खेलै नेवारा गे नदिया में ऊदन इन्दल साथ लिवाय॥
ऊदन देवा इकमिल ह्वैकै औ इन्दलको दीन बहाय ७२
टरिजा टरिजा माहिल मामा धरती खोदि लेउँ गड़वाय॥
ऐसी बातैं फिरि बोले ना ठाकुर साँच दीन बतलाय ७३
है मर्दाना ऊदन बाना मामा काह गये बौराय॥
किहे दिल्लगी की साँची है हमरोचित्त बहुत घबड़ाय ७४
इतना सुनिकै माहिल बोले साँची कहा बनाफरराय॥
पोथा पढ़िकै धरिदीन्ह्यो सब अकिल तुम्हरी गई हिराय ७५
कौनिअदावति नलपुष्कलकी भारत पढ़े बनाफरराय॥
कैसि दुर्दशा नलकी कीन्ह्यो पुष्कलनलकोजुआँखिलाय७६
बिना वस्त्र के महराजा भे साजा सबै साज कर्त्तार॥
तिनकी प्यारी दमयन्ती जो सोऊ छूटिगई त्यहि बार ७७
त्यहि दमयन्ती के ब्याहे में आये पवन अग्नि सुरराज॥
उद्यम कीन्ह्यो भल ब्याहे को चाहे दूत भये नलराज ७८
ब्याह न कीन्ह्यो दमयन्ती ने विन्ती बहुत कीन नलराज॥
गन्ती कीन्ह्यो दमयन्ती ना लज्जितभये तहाँ सुरराज ७९
बारह बरसै बनबाजी मा राजी भये इन्द महराज॥

आल्हा भैने साँची जानो ऊदनकीन्ह साँचयहकाज ८०
इतना सुनिकै आल्हा ठाकुर गरुई हाँक दीन ललकार ॥
टरिजा टरिजा उरई वाले तोरे चुगुलिन का बयपार ८१
साँची साँची आल्हा ठाकुर तुम्हरो इन्दल गयो हिराय ॥
कहौं असाँचा आल्हा ठाकुर साँचा सहौं पुत्रका घाय ८२
करौं दिल्लगी अस कबहूँ ना साँची सुनो बनाफरराय ॥
ऊदन बोले ह्याँ देबा ते हमरो चित्त बहुत घबड़ाय ८३
दशहरिपुरवा माहिल पहुँचे कैसी खबरि सुनावैं जाय ॥
पुत्र शोक सम दुख दूसर ना जानतगाथ भली तुमभाय ८४
पुत्र शोक सों दशरथ मरिगे कीरति रही जगत में आज ॥
कीरतिसागर भट नागर जे आगर सबैगुणन रघुराज ८५
तेई खेवैया अब नैया के भैया काह करैं धौं आज ॥
यह दिन आये लग ध्यावै जो कलयुगसबऊभक्तशिरताज ८६
सोई कलयुग के ऊदन हम साँचे कर्म कीन रघुराज ॥
दया न छोड़ा द्विज गाइन ते पीठि न दीन प्राणकेकाज ८७
नहिं अभिमानी बातैं ठानी बालक विप्र साथ महराज ॥
परम पियारे द्विज तुम का हैं निर्मलएकऋत्राज्यहिभ्राज ८८
ऐसी स्तुति ऊदन कीन्ह्यो देबा चलत भयो ततकाल ॥
आयकै पहुँच्यो त्यहि मंदिरमें ज्यहिमें देशराजको लाल ८९
ठाढ़े दीख्यो जब देबा को चलिभा उरई का सरदार ॥
भल भल रोंका आल्हा ठाकुर करिकै बहुतभांति सतकार ९०
पै नहिं मान्यो जब माहिल ने आयसु दियो बनाफरराय ॥
देखिकै सूरति फिरि देबा की आल्हागये बहुत घबड़ाय ९१
कैसी गुजरी है तीरथ में देबा साँच देय बतलाय ॥

परम पियारो पुत्र हमारो इन्दल राख्यो कहाँ छिपाय ९२
पूत न होवैं बहु कलयुग में यामें भूतन को अधिकार॥
सेव करावैं बालापन में ज्वाने भये वसैं ससुरार ९३
पूत सपूतो इन्दल प्यारो कहँ पर मैनपुरी चौहान॥
इतना सुनिकै देवा बोला साँची कहौं शपथभगवान ९४
बंश पिथौरा के नजदीकी आहिन सत्य बनाफरराय॥
आल्हा ऊदन मलखे सुलखे भाई सरिस चारिहू भाय ९५
कमती जानैं जो काहू को तो म्वहिं सजादेयँ भगवान॥
कोऊ लैगा छलि जादू सों इन्दल तुम्हरो पूत परान ९६
ऊदन बिगड़े तहँ मेला में जैबे पता लगावन काज॥
तिल तिल पृथ्वी मेला ढूँढ़ा भारी भीर तहाँ महराज ९७
पता न लाग्यो जब इन्दल को माहिल कहा तबै समुझाय॥
आल्हा ठाकुर को समुझावब ऊदन कूच देउ करवाय ९८
कहा मानिकै तब माहिल का डांड़े परा लहुरवा भाय॥
जौन देश में इन्दल ह्वैहैं ऊदन लैहैं खोज लगाय ९९
बातैं सुनिकै ये देवा की आल्हा बहुत गये घबड़ाय॥
जो कछु भाषा माहिल ठाकुर साँची जना बनाफरराय १००
पुत्र शोच सों उर धड़कत भो जियरे धीर धरा ना जाय॥
आल्हा बोले तब देवा ते तुम ऊदनको लवो बुलाय १०१
उनहीं पाँयन देवा चलिभा ऊदन खबरि दीन बतलाय॥
बड़े शोच में बड़ भैया हैं तुमकोतुरतबुलायनिभाय १०२
इतना सुनिकै ऊदन चलिभे सम्मुख गये तड़ाका आय॥
आवत जान्यो जब ऊदन को आल्हाशीशलीननिहुराय १०३
जौ दिशि दीख्यो ना ऊदनके मानों शत्रु ठाढ़ भो आय॥

हाथ जोरिकै ऊदन बोले चरणन बार बार शिरनाय १०४
मोहलति पावों छा महिना कै इन्दल खोजिदिखाओं आय ॥
इतना सुनिकै आल्हा जरिगे अपनो कोड़ा लीनउठाय १०५
पीटन लाग्यो जब ऊदन को सुनवाँ सुनत गई तहँ आय ॥
कहि समुझायो सो आल्हाको आल्हातुरतदीन डरियाय १०६
टरिजा टरिजा री सम्मुख ते नहिं शिरकाटिदेउँ भुइँ डारि ॥
ऊदन मारा है इन्दल को साँचीखबरि मिलीम्वहिंनारि १०७
सुनवाँ बोली फिरि आल्हाते साँची सुनो बनाफरराय ॥
हम तुम जी हैं जो दुनिया में ह्वैहैं पुत्र नाथ अधिकाय १०८
मिली सहोदर फिरि भाई ना आई कौन साँकरे काज ॥
सुन्दरगढ़ को चाचा हमरो तुमको कैदकीन महराज १०९
बनि सौदागर उदयसिंह ने तुम्हरी कैद दीन छुड़वाय ॥
बराबरस के ऊदन ठाकुर माड़ोलीन बापका दायँ ११०
लड़ि गजराजा सों ऊदन ने मलखे ब्याह दीन करवाय ॥
नरपति राजासों लड़िकै फिरि फुलवालये लहुरवाभाय १११
हथी पछारा इन दिल्ली में द्वारे पृथीराज के जाय ॥
ऐसे नामी इन ऊदन का मारब नहींमुनासिबआय ११२
इतना सुनिकै आल्हा ठाकुर जूरा पकड़ि तड़ाकालीन ॥
खैंचि तमाचा शिरमाँ मारा सुनवाँगमनमहलकोकीन ११३
मारन लाग्यो फिरि ऊदन को द्यावलि सुनत पहूँची आय ॥
औ ललकारा फिरि आल्हाको मारो नहीं बनाफरराय ११४
इतना सुनिकै आल्हा बोले माता बैठु धाम में जाय ॥
जैसे ऊदन तुम को प्यारे तैसे पूत हमारो आय ११५
हम समुझावा भल ऊदन को तुम ना जाउ लहुरवा भाय ॥

पूत हमारे के मारन को ऊदन मेला गये लिवाय ११६
बातैं सुनिकै ये आल्हा की द्यावलि ठाढ़ि रही शिरनाय ॥
ऊदन ठाकुर को आल्हा ने कोड़न चर्सा दीनउड़ाय ११७
औ ललकारा फिरि ऊदन को आल्हा दाँतन ओठ चबाय ॥
धिक धिक तेरी रजपूती का इन्दल विना पहूँचे आय ११८
दशहरिपुरवा अब आये ना नहिंहनिडरों खड्ग के घाय ॥
जहँ मनभावै तहँ चलिजावै साँची शपथ शारदामाय ११६
सुनिकै बातैं ये आल्हा की ऊदन चला बहुत घबड़ाय ॥
सुनवाँ फुलवा द्यावलि तीनों पृथ्वी गिरीं पछारा खाय १२०
देबा ऊदन दोऊ ठाकुर सिरसागढ़ै पहूँचे जाय ॥
खबरि पायकै मलखाने ने फाटकबन्दलीन करवाय १२१
यह गति दीख्यो उदयसिंहने ठाढ़ो लाग तहाँ पछिताय ॥
कोऊ साथी नहिं विपदा में यह देबाते कह्यो सुनाय १२२

सवैया ॥

जाकि सुता हरिके गृह शोभित चन्द्रललाट महेश प्रवीनो ।
इन्द्र गयन्द दयो हय रविको देवन धेनु द्रुमादिक दीनो ॥
शिरी मुनिरायजू कोपकियो तब गण्डकधारि सबै जलपीनो ।
एते बड़ेको विपत्तिपरी तब सिंधु कि काहु सहाय न कीनो १२३

इतना सुनिकै देबा बोला साँची सुनो लहुरवा भाय ॥
साथ तुम्हारो हम छाँड़ब ना चहुतनधजीधजीउड़िजाय १२४
पै हम बांचे बहु पुराण हैं देखी कथा अनेकन भाय ॥
बिपतिमें साथी कोउ बिरलाहै साँची सुनो बनाफरराय १२५

सवैया ॥

रागवही ज्यहि रामबसैं अरुध्यान वही जो धनी के धरेका ।
प्रीति वही जो सदा निबहै अरु दाग वही कटु बचनकहेका ॥
सुखसम्पत्ति अनेक भरी पर आवै नहीं कोउ काम परेका ।
काहेकोआदम शोचतहै कोउ मित्रनहीं है बिपत्ति परेका १२६
ठाकुर वही जो दुख सुख बूझै सेवक वो मनलाग रहेका ।
भाई वही जो भारहि खैंचत पुत्र वही परिवार बढ़ेका ॥
नारी वही जो जरै पियके सँग शूर वही सनमुक्खलड़ेका ।
सम्पतिमेंतो अनेकमिलैं पर मित्रवही जो बिपत्ति परेका १२७

इतना सुनिकै ऊदन बोले साँची कही समय की बात ॥
अब मन भाई यह हमरे है नरवर चलैं आजहीतात १२८
यह मन भाय गई देवाके दोऊ भये बेगि तय्यार ॥
सात रोजकी मैजलि करिकै नरवर पहुँचिगये सरदार १२९
यह सुधि पहुँची जब मोहबे में आल्हा तजा लहुरवाभाय ॥
बारहु रानिन सों परिमालिक महलन गिरे मूर्च्छाखाय १३०
तुरत पालकी को भँगवायो दशहरिपुरै पहूँचे जाय ॥
औधिरकाल्यो भल आल्हा को रहिगा चुप्प बनाफरराय १३१
कायल हैगे आल्हाठाकुर राजा लौटि परा पछिताय ॥
ऊदन बैठे ह्याँ कुँवना पर हिरिया गई तहाँ परआय १३२
देखिकै सूरति बघऊदन कै हिरिया गई तुरत पहिचान ॥
हँसिकै हिरिया बोलन लागी साँचीसुनोबनाफरज्वान १३३
कौनि मुसीबत तुमपर परिगै जो तजि दियो ढालतलवार ॥
इतना सुनिकै ऊदन बोले मालिनिठीककहैयाहिवार १३४

परी मुसीवन हमरे ऊपर पृथ्वी मोहबा लीन लुटाय ॥
घोड़ बेंदुला फुलवा सुनवाँ लीन्ह्यो जीति पिथौराराय १३५
करव नौकरी हम मकरँद कै महलन खवरि जनावै जाय ॥
इतना सुनिकै हिरियामालिनि महलन अटीतुरतहीआय १३६
जहँ पर माता मकरन्दाकी ऊदन कथा गई तहँ गाय ॥
आवन सुनिकै बघऊदन का मातामकरँदलीन वुलाय १३७
जो कछु गाथा मालिनि भाषी माता मकरँदगई सुनाय ॥
इतना सुनिकै मकरँद चलिभा कुँवना उपर पहूँचाआय १३८
कुशल प्रश्न करि सव आपस में मकरँद बोला अतिघवड़ाय ॥
हाल वतावो ऊदनठाकुर हमरे धीर धरा ना जाय १३९
हिरियामालिनि की वातैं सुनि माता बैठि महल पछिताय ॥
इतना सुनिकै ऊदन बोले मालिनि वातदिल्लगीभाय१४०
सुनिकै वातैं बघऊदन की मकरँद घरका चलालिवाय ॥
ऊदन पहुँचे रनिवासे में देवा टिका द्वार पर आय १४१
हाल वतायो सव महलन में जैसे इन्दल गये हिराय ॥
मारा पीटा जस आल्हा ने सोऊ कथा गये सवगाय १४२
वनी रसोईं फिरि महलन में संध्याकाल पहूँचा आय ॥
मकरँद ऊदन भोजन करिकै सोये विकट नींदको पाय १४३
चले दिवाकर घर अपने को पक्षिन लियो वसेरा धाय ॥
लिहे अञ्जली दोउ हाथन में सुरजनअर्घदेयँ द्विजराय १४४
सेन छूटिगा दिननायक सों झंडा गड़ा निशाको आय ॥
तारागण सव चमकन लागे सन्तनधुनी दीनपरचाय १४५
परे आलसी निजनिज शय्या घों घों कण्ठ रहे घर्राय ॥
गुरू पिता दोऊ पद जिनके तिनकेचरणनशीशनवाय१४६

करों तरंग यहाँ सों पूरण तवपद सुमिरि भवानीकन्त ॥
राम रमा मिलि दर्शन देवो इच्छा यही मोरि भगवन्त १४७

इति श्रीलखनऊनिवासि (सी, आई, ई) मुंशीनवलकिशोरात्मजबाबू
प्रयागनारायणजीकीआज्ञानुसार उन्नामप्रदेशान्तर्गतपँड़रीकलां
निवासिमिश्रवंशोद्भव बुधकृपाशङ्करसूनुपण्डितललिताप्रसाद
कृतऊदननरवरगमनवर्णनोनामप्रथमस्तरंगः १ ॥

सवैया ॥

कौनफली सबकाल बली यहि पुण्यथलीमनमाँझ बिचारा ।
निंदिकै काहि बखानकरों क्यहि कौनसों बैरकरों यहिबारा ॥
याहि लियो ठहराय मनै प्रभु एकसों एक हैं देव उदारा ।
बेद पुराण बतावत हैं ललिते सब ते बढ़िकै ॐकारा १

सुमिरन ॥

इकलो अक्षर ॐकार को अब हम शिरसों करैं प्रणाम ॥
ब्रह्मा विष्णू औ शिवशंकर दुर्गा केर ताहि में धाम १
एक मात्रा में शिवशंकर दुर्गा अर्द्ध करैं बिश्राम ॥
एक मात्रा में ब्रह्माजी एक म रहैं हमारे राम २
इकलो अक्षर यहु जो ध्यावै पूरण होयँ तासु के काम ॥
यहिते बढ़िकै हिन्दूमत में दूसर नहीं बेद में नाम ३
अज अविनाशी घट घट बासी पूरण ब्रह्म चराचर राम ॥
बेद ब्याकरण दोउ साखी हैं खण्डनकरै कौन यह नाम ४
नाम न रैहै जब दुनियाँ मा तब सब होइहैं पशू समान ॥
कीरति गावों बघऊदन कै सुनिये खूब ध्यान धरिज्ञान ५

अथ कथाप्रसंग ॥

उदयदिवाकर भे पूरब में किरणनकीन जगत उजियार ॥
सोयकै जागे बघऊदन तब प्रातःकृत्य कीन सरदार १

ऊदन देवा मकरँद ठाकुर तीनों एक जगा भे आय ॥
ऊदन बोले तब देवा ते दादा शकुन देउ बतलाय २
भाई भौजी माता छोटी फुलवा ऐसि छूटिगै नारि ॥
पता लगाये बिन घर जावैं दादा डरैं जानसों मारि ३
माता तलफति घरमा होई भौजी होई हाल बिहाल ॥
मल्हना रानी रोवति होई होइहैं दुखी रजापरिमाल ४
हाल बतावों का फुलवा के मुर्दासरिस होयगी बाल ॥
जेठ दशहरा दुशमन ह्वैगा कहिये काह करैं यहिकाल ५
इकलो बेटा म्वरे भैया के सबविधि रूपशील गुणवान ॥
क्षमा न करिहैं सो बेटा बिन यह हम ठीक कीन अनुमान ६
इतना सुनिकै देवा बोला भैया उदयसिंह सरदार ॥
प्रश्न हमारो यह बोलत है योगी बनो फेरि यहिबार ७
यह मनभाई उदयसिंह के मकरँद साथ भयो तय्यार ॥
तिलकलगायो फिरिकेशरिका गेरुहा बस्त्र पहिरि सरदार ८
गुदरी डारी फिरि कांधेमाँ त्यहिमाँपरी ढाल तलवार ॥
डमरू लीन्ह्यो मकरन्दा ने बँसुरी उदयसिंह सरदार ९
खँझड़ी लीन्ह्यो देवाठाकुर मकरँद बोलिउठा त्यहिबार ॥
महल हमारे पहिले चलिये पाछे अनत चलैंगे यार १०
सम्मत करिकै तीनों योगी पहुँचे जाय राजदरबार ॥
बैठ सिंहासन नरपति राजा देवा कीन्ह्यो राम जुहार ११
पै पहिंचाना जब नरपति ना मकरँद हाथ जोरि शिरनाय॥
जितनी गाथा बघऊदन की सो राजा को दीन बताय १२
हाल जानिकै महराजा ने तुरतै हुकुम दीन फर्माय ॥
तहँते चलिभे मकरँद ऊदन माता पास पहूँचे आय १३

मर्म जानिकै महतारी ने आशिर्बाद दीन हरषाय ॥
मकरँदचलिभा निजमहलनको पहुँचा नारिपास सो जाय १४
कही हकीकति सब रानी सों कुसुमा बोली शीश नवाय ॥
पहिले जैयो तुम झुन्नागढ़ तहँपर पता लगैयो जाय १५
घर घर जादूहै झुन्नागढ़ कन्ता सत्य कहौं समुझाय ॥
तुमहूं जावो ऊदन सँग में हमरो चित्त बहुतघबड़ाय १६
इतना कहिकै कुसुमारानी पुरिया चारि दीन पकराय ॥
रखिहौ मुखमाँ यह पुरिया जब जादूसकी निकट नहिंआय १७
लैकै पुरिया मकरन्दा फिरि तहँ ते कूच दीन करवाय ॥
देवा ऊदन जहँ ठाढ़े थे मकरँद तहाँ पहूँचा आय १८
सम्मत करिकै तीनों योगी झुन्नागढ़ै चले फिरिधाय ॥
सातरोजकी मैजलि करिकै झुन्नागढ़ै पहूँचे आय १९
बाजा डमरू मकरन्दा का खँझड़ी मैनपुरी चौहान ॥
बाजी बँसुरी तहँ ऊदन की गावनलाग राग कल्यान २०
तान कानमें ज्यहिकै जावै त्यहिकै जाय प्रान पर आन ॥
मोहित ह्वैगे नरनारी सब लागे हृदय तान के बान २१
भा खलभल्ला औ हल्लाअति लल्ला छांड़ि चलीं तब बाल ॥
होश बजुल्ला ना छल्ला का *अल्लाध्यानकरैंत्यहिकाल२२
भये दुपल्ला उरपल्ला तब कल्लन कल्ला दीन भिड़ाय ॥
प्राणन तल्ला तज्यो इकल्ला लल्ला जौनु बनाफरराय २३
बड़ी भीर भै गलियारे में नाचै देशराज का लाल ॥
बाजै डमरू जस मकरँद कै देबा देय तैसही ताल २४
रूप देखिकै तिन योगिन का जादू करैं अनेकन नारि ॥

* (अल्ला) देवी का नाम है ॥

कुसुमारानी की पुरिया सों जादू गई तहां सब हारि २५
रूप उजागर सब गुण आगर नागर देशराज का लाल ॥
विषय उमण्डी बलबण्डी जी रण्डी कुलै विडम्बी बाल २६
ती सब देखैं बघऊदन को नैनन बैनन सैनन चलाय ॥
धर्म न छाँड़ै यहु क्षत्री का ज्यहिकाकही उदयसिंहराय २७
दीख कुदृष्टी ज्यहि ऊदन का त्यहिका डाटिदीन ततकाल ॥
नैनन सैनन अरु बैनन में डिगिन सिद्धपुरुषक्यहुकाल २८
हम नहिं भोगी नर योगी हैं रोगी विषय भरी तू बाल ॥
माता भगिनी अरु कन्यासम देखैं तीनिभाव सबकाल २९
तपै बिखण्डी पररण्डी हैं भण्डी नरक केरि अधिकाय ॥
यह हम जानतहैं नीकी बिधि तुमते साँच देयँ बतलाय ३०
बातैं सुनिकै ई योगी की नारिन मूड़ लीन औंधाय ॥
बोलि न आवा क्यहु नारी ते घर घर चलन लगीं शर्माय ३१
खबरि पायकै कान्तामल ने योगिन द्वार लीन बुलवाय ॥
योगी आये जब द्वारे पर आसन तुरतदीन बिछवाय ३२
लैकै गडुवा दौरति आवा तुरतै पाँय पखारेसि आय ॥
पैर धोयकै तिन योगिन का लै जलथाम छिनाकाजाय ३३
पढ़ै मनुस्मृति भलकान्तामल जानै अतिथिभाव अधिकाय ॥
पै पहिंचानत त्यहि योगीथे मकरँद वार वार मुसुकाय ३४
यह गति दीख्यो मकरन्दाकै बोल्यो तुरत बनाफरराय ॥
तुम पहिंचान्योनहिंमकरँदको तुमको देखि देखिमुसुकायँ ३५
पाय इशारा यहु ऊदन का मुख तन दीख खूब धरिध्यान ॥
देवा ऊदन मकरन्दा का निश्चय फेरिलीन पहिंचान ३६
किह्यो खातिरी तब पहुनन कै लै रनिवास पहूँचा जाय ॥

ऊदन मकरँद को रानी लखि खातिरफेरिकीनअधिकाय ३७
रानी पूछा फिरि मकरँद ते योगी बन्यो पूत कस आय ॥
इतना सुनिकै मकरँद ठाकुर इन्दलहरण गयोसबगाय ३८
सुनिकै बातैं सब मकरँद की रानी बार बार पछिताय ॥
लिखी विधाता की मेटै को औ दैयागतिकही न जाय ३९
पूत सपूतो इन्दल खोयो मातै पितै दुःख अधिकाय ॥
विधना डारै अस बिपदा ना कोउ न सहै पुत्रका घाय ४०
भरे घुचघुचा सुनि ऊदन के नैनन नीर परे दिखराय ॥
उठिकै ऊदन रनिवासे ते देबी धाम पहूँचे आय ४१
बैठिकै मठियामा बघऊदन सुमिरयो तहाँ शारदामाय ॥
ध्यान लगायो जगदम्बा का सब अवलम्बा दीनभुलाय ४२
शोच भूलिगा तब ऊदन का मनमाँ खुशीभई अधिकाय ॥
तहँते चलिकै बघऊदन फिरि महलन अटातुरतही आय ४३
बनी रसोई रनिवासे में भोजन कीन सबन सुखपाय ॥
राति अँध्यरिया फिरि आवत भै सोये बिकट नींदको पाय ४४
बलखबुखारे निशि स्वपना माँ पहुँचा देशराजका लाल ॥
सोयकै जाग्यो बघऊदन जब लाग्यो सबतेकहनहवाल ४५
बलखबुखारे के जैबे को तीनों बीर भये तय्यार ॥
कान्तामलहू सँग में हैगा चारों चलतभये सरदार ४६
अटक उतरिकै काबुल ह्वैकै पहुँचे बलखबुखारे जाय ॥
शहर पनाहै चौगिर्दा ते बड़बड़महलपरैं दिखलाय ४७
साँचे योगी चारो बनिकै पहुँचे शहर बीच में आय ॥
बाजी खँभड़ी तहँ देबा की मकरँद डमरू रहा बजाय ४८
झर इकतारा कान्तामल के ऊदन बँसुरी रहा बजाय ॥

ता ता थेई ता ता थेई थिरकनलाग लहुरवाभाय ४९
टप्पा ठुमरी भजन रेखता धुर्पद सरंगीत कल्यान ॥
राग विहगरो जयजयवन्ती तूरैं गजल पर्जपर तान ५०
कमर झुकावै भाव बनावै लाला देशराज का लाल ॥
रूप देखिकै तिन योगिन का अबलनसबलखड़ीतहँमाल ५१
कोऊ अँगिया पहिरनि आवै जूरा कोऊ सँवारति बाल ॥
कोऊ दुपट्टा गलसों ओढ़े कोऊ चली मोरकी चाल ५२
कोऊ महाउर लिये हाथ में कोऊ चली छाँड़ि कै बाल ॥
कोऊ मेंहदी तजिकै दौरी बौरी भई तहाँपर बाल ५३
ऐसी वंशी प्यारी बाजै राजै ऊदन ओठ विशाल ॥
गाजै छाजै ध्वनि उपराजै लाजैं देखि देखि मनबाल ५४
हेला मेला अलबेला भा ठेला ठेल गैल में भाय ॥
कोऊ चमेला कोउ बेलाका बारन तेल लगावत जाय ५५
बड़ी भीर भय गलियारन में कहुँ तिलडरा भूमि ना जाय ॥
नचै बेंदुला का चढ़वैया आल्हा केर लहुरवा भाय ५६
दासनि आवैं नृप ड्योढ़ी को चारों रूप शील अधिकाय ॥
जायकै पहुँचे जब फाटकपर बाँदिन भीरभई अतिआय ५७
खबरि सुनाई रनिवासे में रानिन महलन लीनबुलाय ॥
फूँट लफाड़ा अब नाहीं थे जस कछु आजपरैं दिखलाय ५८
तबै जमाना कछु साँचा था जाँचा चला धाम को जाय ॥
ब्राह्मण साधुन पर परतीती नीती यही सदाकी आय ५९
चलै अनीती तजि रीती जो ताको देय देय धिक्कार ॥
नृप अभिनन्दन के महलन में योगी पहुँचिगये त्यहिवार ६०
कहौंते आयो औ कहँ जैहौ अपनो हाल देउ बतलाय ॥

सुनिकै बानी महरानी के बोला तुरत बनाफरराय ६१
हमतो योगी बंगाले के जावैं हरद्वार को माय ॥
भिक्षावृत्ती करि हम खावैं तुमते साँच दीन बतलाय ६२
रानी बोली फिरि योगिन ते बारे डार्यो मूड़ मुड़ाय ॥
कौनि व्यवस्था तुमपर परिगै सोऊ साँच देउ बतलाय ६३
सुनिकै बानी यह रानी कै बोला मैनपुरी चौहान ॥
गीता गायो जो अर्जुन ते स्वामी कृष्णचन्द्र भगवान ६४
पढ़ि पढ़ि गीता बैरागी है हम सब लीन योग को धार ॥
लिखी विधाता की मेटै को रानी मानो कही हमार ६५
इतना सुनिकै रानी बोली अब तुम भजन सुनावोगाय ॥
बातैं सुनिकै महरानी की नाचनलाग लहुरवा भाय ६६
बेटी आई अभिनन्दन कै देखै सोऊ तमाशा धाय ॥
बाजे खँभड़ी तहँ देबा कै मकरँद डमरू रहा बजाय ६७
भैरोंवाली पुरिया डारी सबकी सुधिबुधि गई हिराय ॥
ऊदन बोले तब बेटी ते भोजन हमैं देउ करवाय ६८
कीनि तयारी जब ब्यारी कै लाग्यो चित्त तबै मचलाय ॥
कलके भूँखे हम गावत हैं आरी भयन पेटके घाय ६९
सुनिकै बातैं ये ऊदन की बेटी चलि भै साथ लिवाय ॥
जायकै पहुँची पँचमहलापर पीढ़ा तहाँ दीन डरवाय ७०
ऊदन बोले तब बेटी ते तुमको मंत्र देयँ बतलाय ॥
सुनिकै बातैं ई योगी की बेटी बाँदिन दीन हटाय ७१
ऊदन बोले तब बेटी ते हमते साँच देउ बतलाय ॥
इन्दलठाकुर तुम्हरे घर में ठहरे कौन जगहपर आय ७२
जो अभिलाषा फिरि तुम्हरीहो अबहीं पूरि देयँ करवाय ॥

मोहिं तपस्या को बल पूरो तुमहूँ राख्यो नाहिं छिपाय ७३
भूत भविष्यत बर्त्तमान की गाथा सबै सकैं बतलाय॥
बातैं सुनिकै ई योगी की बेटी पिंजरा लई उठाय ७४
करिकै बाहर फिरि पिंजराके तुरतै मानुष दीन बनाय॥
यही तरासों नित प्रति बेटी निशि में पास लेय पौढ़ाय ७५
इन्दल दीख्यो जब ऊदन को तब यह बोल्यो बचन सुनाय॥
धोखे भूले ना योगी के चाचा यहाँ पहूँचे आय ७६
बातैं सुनिकै ये इन्दल की बेटी मूड़ लीन निहुराय॥
ऊदन बोले तब बेटी ते तुम्हरो ब्याह देब करवाय ७७
सवा बनावो तुम इन्दल को हम को मंत्र देउ बतलाय॥
परी उदासी है मोहबे में करिबे ब्याह वहाँते आय ७८
बेटी बोली तब ऊदन ते चाचा साँचदेयँ बतलाय॥
डोला हमरो पहिले जाई तौ हम मानुष देब बनाय ७९
नहीं तो कन्ता अब जैहैंना रैहैं सदा हमारे पास॥
बारा बरसै जब तप कीनी तबविधिपूरिकीनमम आश ८०
कैसे जीवे बिन स्वामी के चाचा कहैं छोंड़िकै लाज॥
इतना सुनिकै ऊदन बोले बेटी धरो धीर मनआज ८१
चोरी चोरा म्वहिं भावै ना तुमने साफ देयँ बतलाय॥
कौन दुसरिहा उदयसिंहको रौंकी ब्याह यहाँपर आय ८२
बांधिकै मुशकै अभिनन्दनकी भौंरी तुरत लेब करवाय॥
देश देश औ जगमें जाहिर नामी सबै बनाफरराय ८३
महिनामर के फिरि अर्सा में ह्यांपर ब्याह करब हम आय॥
इन्दल बोले चितरेखा ते यहही ठीकठाक ठहराय ८४
कहा न टारो तुम चाचा को तौ विधि फेरि मिलै हैं आय॥

जो कछु कैहैं चाचा हमरे सो नहिं टरै भूमिटरिजाय ८५
बेटी बोली फिरि ऊदन ते चाचा साँच देयँ बतलाय ॥
किरिया करलो तुम आवनकी तौ फिरि जावो इन्हेंलिवाय ८६
सुनिकै बातैं चित्ररेखा की ऊदन गङ्गालीन उठाय ॥
सुवा बनायो तब बेटी ने पिंजरा तुरत दीन बैठाय ८७
मन्त्र बतायो फिरि ऊदन को औ लै पिंजरा दीन गहाय ॥
ऊदन चलिभे फिरि महलन ते पहुँचे फेरि द्वार में आय ८८
पिंजरा दीख्यो जब देवाने तब मन खुशीभयोअधिकाय ॥
गीत बंदभे फिरि योगिन के तहँते कूच दीन करवाय ८९
चारो योगी चलि मारग में बैठे एक वृक्षतर जाय ॥
बाहर पिंजरा के सुवना करि ऊदन मानुष दीन बनाय ९०
मानुष ह्वैगे बघइन्दल जब तब सब खुशीभये अधिकाय ॥
बिदामांगि कै कान्तामल फिरि कुन्नागढ़ै पहूँचा जाय ९१
ऊदन देवा इन्दल मकरँद चारो चले तहाँते ज्वान ॥
आयकै पहुँचे सिरसागढ़ में जहँपर बसै वीरमलखान ९२
मलखे दीख्यो जब ऊदन को भेंट्यो बड़े प्रेमसों आय ॥
देवा बोल्यो मलखाने ते तुम सुनिलेउ बनाफरराय ९३
बिपदा आई जब ऊदन पर फाटक बन्द लीन करवाय ॥
यहु दिन लायो नारायण जब तब तुम मिले बनाफरराय ९४
कोऊ बिपदामा साथी ना साँचो साँच परा दिखराय ॥
मलखे बोले तब देवा ते तुमको साँच देयँ बतलाय ९५
लषण राम की तुम गाथा को जानो भलीभांति सरदार ॥
छोटेभाई हम आल्हा के यह सब जानिगयो संसार ९६
करैं लड़ाई बड़भाई ते तौ सब क्षत्रीधर्म नशाय ॥

धर्म न छाँड़्यो भीमसेन ने बनमाँ रह्यो मूलफलखाय ९७
किह्यो दुर्दशा दुर्योधन ने योधन भीमसेन अधिकाय ॥
हुकुम युधिष्ठिर का पायो ना आयो धन बल सबै गवाँय ९८
अब बतलावो तुम इन्दल को पायो खोज कहाँपर भाय ॥
इतना सुनिकै वघऊदन ने सवियाँ कथा दीन बतलाय ९९
मलखे बोले फिरि ऊदन ते दशहरिपुरै चलो तुम भाय ॥
ऊदन बोले मलखाने ते दादा साँच देयँ बतलाय १००
हमहूँ मकरँद नरवर जैबे इन्दल जावो आप लिवाय ॥
कसम जो खाई चितरेखा ते करिबेव्याहतुम्हारो आय १०१
कहि समुझायो तुम दादा ते नरवर मिली उदयसिंहराय ॥
इतना सुनिकै इन्दल बोले चाचा सुनो बनाफरराय १०२
तुम ना जैहौ दशहरिपुर को तौ इन्दल कै जाय बलाय ॥
कौन बुलाई घर इन्दल का जैंवो बच्छ तड़ाकाआय १०३
सुनिकै बातैं वघइन्दल की ऊदन कहा बहुत समुझाय ॥
मलखे दादा के सँग जावो नरवर मिलबतुम्हैंहमआय १०४
इतना कहिकै वघऊदन ने तहँ ते कूच दीन करवाय ॥
मकरँद ऊदन सिरसागढ़ ते नरवर गढ़ै पहूंचे जाय १०५
मलखे देवा इन्दल ठाकुर इनहुन कूच दीन करवाय ॥
लागि कचहरी परिमालिक कै तीनों तहां पहूंचे आय १०६
राजा दीख्यो जब इन्दल को तब मन खुशीभयो अधिकाय ॥
मलखे बोले तब राजा ते दोऊ हाथ जोरि शिरनाय १०७

सवैया ॥

आज जो काज कियो वघऊदन लाजरही औ बढ़ी प्रभुताई ।
राजन आपके पुण्य प्रकाशते भासरही जग में ठकुराई ॥

पारसहै जिनके घरमा तिनकी लघुता कहि कौन दिखाई।
राजनराज समाजबढ़्यो औचढ़्योललिते यशसिंधुउफाई १०८

इतना कहिकै मलखाने ने औरो हाल दीन बतलाय॥
बिदामांगिकै परिमालिक ते दशहरिपुरे पहूँचे आय १०९
मलखे देखा इन्दल सँगमाँ महलन गये बनाफरराय॥
रूप देखिकै इन तीनों का आल्हा ठाढ़ भये हर्षाय ११०
बड़ी खुशाली मन अन्तरभै औ यह बोले बचन सुनाय॥
कहाँ बनाफर बचऊदन हैं हमरे परम सनेही भाय १११
नेही गेही नरदेही को इनसोंअधिक कौनदिखलाय॥
परम सनेही यहि देही का नेही टिका कहाँपर जाय ११२
डाटा डपटा नहिं ऊदन का पाला प्रीति रीति अधिकाय॥
गुणही प्यारे हैं मानुष के जानौयुगनयुगनतुमभाय ११३
होय निर्गुणी जो दुनिया मा जहँ तहँ बैठे पेट खलाय॥
यहु यश गैहैं जे आगे नर खैहैं पुवा कचौरी भ.य ११४
कलियुग आवाहै दुनियामा सब सों कलह देय करवाय॥
भूप युधिष्ठिर यहि डरिभागे गलिगेशैलहिमालयजाय ११५
क्षण क्षण बुद्धी उलटै पुलटै परिडत मूर्ख बनावैभाय॥
उड़ैं सुहारा सम परदारा आरा चलैं पेट में भाय ११६
बश नहिं इन्द्री अब काहूकी कलियुग नीच मीच सुखद.य॥
ऋषी कहावैं जे मनइनमा तिनहुनकामदेय बहँकाय ११७
यहु परितापी अरु पापी अति ब्यापीभयो जगत में आय॥
हाय रुपैया यहि समया में देवा बापू रहा कहाय ११८
बिना कन्हैया के ध्याये ते निंदा कौन हटावै आय॥

यहु सब जानतहैं अपने मन कलियुगअधिकरलपटाय ११९
खायँ पछारा मन कलियुग में जप तप पुण्य देयँ बिसराय ॥
कोऊ ज्ञानी अरु ध्यानी ना रघुबर पार लगावैं भाय १२०
यह संजीवनि जबतक रहिहै रघुबर नाम चितवन भाय ॥
यहि परितापी अरु पापी ते कोउकोउबचीसमरमेंआय१२१
कलह करायो यहि कलियुगने ऊदन नहीं परैं दिखराय ॥
इतना सुनिकै मलखे बोले दोऊ हाथजोरि शिरनाय १२२
गये बनाफर हैं नरवरगढ़ मकरँद ठाकुर गये लिवाय ॥
किह्यो शिकायत नहिं ऊदनने यहसब भाग्य करावै भाय१२३
पूर शनैश्चर माहिल मामा सोना लखत खाक ह्वैजाय ॥
आय हकीकी यहु मल्हना का फीकीकहै रातदिन भाय१२४
पै अरसान्यो त्यहि ऊदन ना क्षत्री रूप लहुरवा भाय ॥
तुम कछु शोचो अब दादा ना होनी मेटि कौनपै जाय १२५
यह अनहोनी शुभदाई मै इन्दल ब्याह करो अबभाय ॥
ऊदन मिलि हैं नरवरगढ़ माँ साँचोमिलनदीनबतलाय १२६
बहु शिरनाई यह गाई है दादे आप बुझायो जाय ॥
मोरि ढिठाई जड़ताई को करि हैं क्षमा बनाफरराय १२७
कसम जो खाई चितरेखा सँग करि बे व्याह तुम्हारो आय ॥
आयसु पावैं जो दादाकी राजन न्यवतदेयँ पठवाय १२८
आल्हा बोले मलखाने ते पहिले हाल देउ बतलाय ॥
कौन देश को इन्दल हरिगे मिलिगे कौनरीतिसोंभाय १२९
कछू हकीकति तुम गाई ना अबहीं न्यवत पठावो भाय ॥
इतना सुनिकै मलखे ठाकुर दोऊहाथ जोरि शिरनाय १३०
जितनी कीरति बघऊदन की सो आल्हा को गये सुनाय ॥

हाल जानि के आल्हा ठाकुर मनमेंसोचिसाचिअधिकाय १३१
आयसु दीन्ह्यो मलखाने को भावै करो तौन तुम भाय ॥
इतना सुनिकै मलखे चलि भे सुनवाँ महल पहूँचे जाय १३२
सुनवाँ दीख्यो मलखाने को आदर भाव कीन अधिकाय ॥
हाथ पकरिकै फिरि इन्दल का मलखे भाभीदीन गहाय १३३
यह गति जानैं नारायण फिरि कितनी खुशीभई अधिकाय ॥
पूँछन लागी जब ऊदन का मलखेगये कथा सब गाय १३४
अब सुखदाई दिन आवा है भौजी पूत बिवाहब जाय ॥
कायल ह्वैकै बड़भाई ने हमते हुकुमदीन फरमाय १३५
यही महीना मा भौंरी हैं पण्डित साइति दीन बताय ॥
करो तयारी अब ब्याहे की नरवर मिली बनाफरराय १३६
नाम बनाफर का सुनतैखन फुलवा तहाँ पहूँची आय ॥
जितनी गाथा बघऊदन की बाँदिनतहां दीनबतलाय १३७
बड़ी खुशाली भै फुलवा के द्यावलि बार बार बलिजाय ॥
तहँते चलिकै मलखे ठाकुर पण्डिततुरतलीनबुलवाय १३८
पूँछिकै साइति मलखे ठाकुर राजन न्यवत दीन पठवाय ॥
ब्याह नगीचे न्यवतहरी सब दशहरिपुरै पहूँचेआय १३९
माँय मन्तरा के ब्यरिया भे पण्डित अटा तड़ाका आय ॥
रानी आई मोहबे वाली भारी भीर भई अधिकाय १४०
करि अवलम्बा जगदम्बा का अम्बा बार बार शिरनाय ॥
भई तयारी फिरि ब्याहे की इन्दलचढ़ापालकी जाय १४१
बाजे डंका अहतंका के हाहाकार शब्द गा छाय ॥
कुँवाँ बिवाह्यो फिरि इन्दल ने सुनवाँ पैर दीन लटकाय १४२
यहो नेग जब पूरा ह्वैगा इन्दल चढ़ा पालकी आय ॥

सजे बराती तहँ ठाढ़े थे आल्हा कूचदीनकरवाय १४३
चलिकै पहुँचे फिरि नरवरगढ़ ऊदन मिले तहां पर आय ॥
लैकै फौजै मकरन्दा मिलि आल्हा सहितचलेहर्षाय १४४
अटक उतरिकै काबुल ह्वैकै पहुँचे मास अन्त में जाय ॥
रहो बुखारो आठ कोस जब तब टिकिरहे बनाफरराय १४५
टिकिगा लश्कर रजपूतन का क्षत्रिन छोरि धरे हथियार ॥
आल्हा ठाकुर के तम्बू माँ बैठे बड़े बड़े सरदार १४६
बोले पण्डित तब आल्हा ते तुम सुनि लेउ बनाफरराय ॥
ऐपनवारी की बिरिया है रूपन बारी देउ पठाय १४७
इतना सुनिकै रूपन बोला दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ॥
हम नहिं जैहैं बलखबुखारे अबकी आनदेउपठवाय १४८
इतना सुनिकै मलखे बोले रूपन साँच देउ बतलाय ॥
जौने घोड़ा का जी चाहै तौने देयँ तुरत मँगवाय १४९
घोड़ करि लिया रूपन माँग्यो मलखे तुरत दीन कसवाय ॥
ऐपनवारी बारी लैकै बैठा घोड़ पीठि में जाय १५०
ढाल खड्ग लै मलखाने ते रूपन कूच दीन करवाय ॥
डेढ़ पहर के फिरि अर्सा मा पहुँचाराजद्वार पर जाय १५१
हुकुम दर्रे हुकुम दर्रे नाहर घोड़े के असवार ॥
कहाँ ते आये औ कहँ जैहौ कहँ है देश रावरे क्यार १५२
इतना सुनिकै रूपन बोला तुमते साँच देयँ बतलाय ॥
नगर महोबाते आयन हम इन्दलब्याहकरनकोभाय १५३
ऐपनवारी हम लै आये रूपन बारी नाम हमार ॥
खबरि जनावो महराजा को हमरो नेग देयँ अबद्वार १५४
इतना सुनिकै द्वारपाल कह रूपन बारी बात सुनाय ॥

काह नेग द्वारे को चहिये सोऊ देयँ आप बतलाय १५५
रूपन बोला द्वारपाल सों यह तुम खबरि सुनावो जाय ॥
एक पहर भर चलै सिरोही यहही नेग देयँ पठवाय १५६
सुनिकै बातैं ये बारी की आरी द्वारपाल अधिकाय ॥
शोचि समझिकै महराजा सों रूपन कथा सुनाई जाय १५७
इतना सुनिकै अभिनन्दन ने हंसामल को लयो बुलाय ॥
पकरिकै लावो त्यहि बारी को द्वारे जौन रहा बर्राय १५८
इतना सुनिकै हंसामल ने अपनी लई ढाल तलवार ॥
औरो क्षत्री चलि ठाढ़े भे अपनेबाँधिबाँधिहथियार १५९
द्वारे देखैं जब बारी को आरी भये सिपाही ज्वान ॥
भीर देखिकै रूपन बारी लाग्योकरन घोरघमसान १६०
चली सिरोही भल द्वारे पर औ बहिचली रक्त की धार ॥
रूपन बारी के मुर्चा पर अंधा धुंध चलै तलवार १६१
रूपन मारै तलवारी सों घोड़ा करै टाप की मार ॥
बड़े लड़ैया काबुल वाले मनसों गये तहाँपर हार १६२
धर्म बनाफर का जाहिर है जिनके जपै तपै का काम ॥
विजय अधर्मिन की दीखी ना रावण कीन बहुतसंग्राम १६३
कंस सुयोधन जरासंध अरु अधरम रूप मरा शिशुपाल ॥
काल कलेवा सबको कीन्ह्यो रहिगा धर्मएक सबकाल १६४
ताते धर्मी आल्हा ठाकुर रूपन खूब करै तलवार ॥
देखि बीरता यह रूपन की हंसा कहा बचनललकार १६५
सँभरिकै बैठे अब घोड़ा पर बारी भली मचाई रार ॥
जियत न जैहै दरवाजे ते हमरी देखि लेय तलवार १६६
इतना सुनिकै रूपन बोला क्षत्री गानो कही हमार ॥

नेग आपनो हम भरिपावा राजन आय आपके द्वार १६७
दायज लैहैं आल्हा ठाकुर अब हम जान चहत सरदार॥
इतना कहिकै रूपन वारी फाटक निकरिगयोवापार १६८
मारु मारु कहि क्षत्री दौरे रूपन घोड़ दीन दौराय॥
आयकै पहुँच्यो त्यहि तम्बू में ज्यहि में बैठ बनाफरराय १६६
खबरि सुनाई ह्याँ आल्हा को ह्वाँपर शूर लागि पछिताय॥
तब अभिनन्दन सब लरिकनते बोला दोऊ भुजा उठाय १७०
बाजैं डङ्का अहतङ्का के लश्कर सबै होय तय्यार॥
जान न पावैं मोहबे वाले मारो ढूँढ़ि ढूँढ़ि सरदार १७१
हुकुम पायकै महराजा को सातो पुत्र भये तय्यार॥
झीलम बखतर पहिरि सिपाही हाथम लई ढालतलवार १७२
अंगद पंगद मकुना भौंरा सजिगे श्वेतबरण गजराज॥
धरिगे हौदा तिन हाथिनपर क्षत्री चढ़े समरके काज १७३
को गति बरणै तहँ घोड़न के जिनपर चढ़े शूर शिरताज॥
सजिगा हाथी अभिनन्दन का तापर बैठिगयो महराज १७४
सुमिरि भवानी सुत गणेशको राजा कूच दीन करवाय॥
खर खर खर खर कै रथ दौरे चहबह धुरीरहीं चिल्लाय १७५
मारु मारु करि मौहरि बाजीं बाजीं हाव हाव करनाल॥
मारू बाजा सुनि बोलत भा बेटा देशराज का लाल १७६
जनु अभिनन्दन चढ़िआवतहै लक्षण जानि परैं यहिकाल॥
हँसिकै बोला मलखाने ते बेटा देशराज का लाल १७७
साजिये दादा मलखाने अब देवा होउ आप तय्यार॥
और सिपाही जे मोहबे के तेऊ बाँधि लेयँ हथियार १७८
सुनिकै बातैं बघऊदन की सवियाँ शूर भये तय्यार॥

रणकी मोहरि बाजन लागीं रणका होनलाग ब्यवहार१७९
बलखबुखारे का अभिनन्दन सोऊ गयो समर में आय ॥
प्रथम लड़ाई भै तोपन कै धुवना रहा सरगमें छाय १८०
लागै गोला ज्यहि हाथी के मानो च्वार सेंधिकैजाय ॥
जउने ऊँट के गोला लागै तुरतैगिरै समर अललाय १८१
गोला लागै ज्यहि क्षत्री के धुनकत रुई सरिरी पाड़िजाय ॥
लागै गोला ज्यहि घोड़ाके मानों गिरह कबूतरखाय १८२
जौने रथमा गोला लागै पहिया धुरी अलग ह्वैजाय ॥
गिरैं कगारा जस नदिया में तैसे गिरैं ऊँट गजधाय १८३
सन् सन् सन् सन् गोलीछूटैं लोटैं शूर पछाराखाय ॥
छाँड़ि आसरा जिंदगानी का खेलन लागे ख्वाह अघाय१८४
भाला बलछी छूटन लागे कहुँ कहुँ कड़ाबीन की मार ॥
मारैं तेगा बर्दवानका ऊना चलै बिलाइति क्यार१८५
चलै कटारी बूँदी वाली अंधाधुंध चलै तलवार ॥
मुण्डन केरे मुड़चौरा भे औ रुण्डन के लगे पहार १८६
बड़ी लड़ाई अभिनन्दन की नदिया बही रक्तकी धार ॥
फिरि फिरि मारैं औ ललकारैं नाहर उदयसिंह सरदार १८७
सातौ लड़िका अभिनन्दन के आमाभन्नार करैं तलवार ॥
चढ़ा चौंड़िया इकदन्तापर बकशीजौनु पिथौराक्यार१८८
हनि हनि मारै रजपूतन का चौंड़ा समरधनी मैदान ॥
कागति बरणौं मैं देबाकै ठाकुर मैनपुरी चौहान १८९
हंसा ठाकुर के मुर्चापर पहुँचा समरधनी मलखान ॥
घोड़ी कबुतरी टापन मारै घायलहोयँअनेकनज्वान१९०
को गति बरणै मलखाने कै बेटा बच्छराज का लाल ॥

त्यहिकी समता का हंसा ना पै तहँ युद्ध करै विकराल १९१
कोगति वरणै तहँ हंसा कै ध्वंसा बड़े बड़े सरदार॥
भई प्रशंसा तहँ हंसा कै क्षत्रीडारि भागि तलवार १९२
बड़ा प्रतापी अरि परितापी सुर्खा घोड़े पर असवार॥
गनि गनि मारै रजपूतन को क्षत्री खेलै खूब शिकार १९३
भागीं गईं जौ मोहबेवाली आली खानदान को ज्वान॥
आयकै गर्ज्यो त्यहि समयामें नाहरसमरधनी मलखान १९४
अकसर मलखे के जियरे पर अरुझे बड़े बड़े सरदार॥
जीति न पावैं मलखाने ते औमुहँफेरिलेयँ त्यहिवार १९५
देवा बोला तब ऊदन ते ठाकुर बैंदुल के असवार॥
अकसर मलखे के ऊपर माँ क्षत्री अरुझे तीनिहजार १९६
भागीं सेना मुहबेवाली अकसर लड़ै वीर मलखान॥
इतना सुनिकै ऊदन चलिभा संगमचलाचौंड़ियाज्वान१९७
ब्रह्मा मकरँद जगनायकजी येऊ चलतभये त्यहिवार॥
जोगा भोगा देवा ठाकुर मन्नागूजर परम जुझार १९८
ये सब पहुँचे समरभूमि में हाथमें लिये नाँगि तलवार॥
बलखबुखारे के क्षत्रिन को मारनलागि ढूँढ़िसरदार १९९
बड़ी कसामसि समरभूमि में कहुँ तिलडरा भूमि ना जाय॥
छाय लालरीगे अकाश में सबरँग ध्वजारहे फहराय २००
घोड़ा हींसैं समरभूमि में सावन यथा मेघ घहरायँ॥
हाथी चिघरैं रणमण्डल में कायर समर न रोकैंपायँ २०१
शूर सिपाही ईजतवाले ते तहँ मारु मारु बर्रायँ॥
कऊ तमंचा को धरि धमकै कोऊदेयँ गुर्ज के घाय २०२
कोऊ मारैं तलवारी सों कोऊ मारैं ढाल घुमाय॥

पटा क्नेठी बाना जानैं तेनर मारैं गदा चलाय २०३
बलखबुखारे का अभिनन्दन मलखे साथ करै तलवार ॥
हंसा ठाकुर उदयसिंह ये दोऊ लड़ैं तहाँ सरदार २०४
सुक्खालड़िका अभिनंन्दनका मकरँद नरपति राजकुमार ॥
अपने अपने द्वउ मुर्चा मा मारैं एक एक ललकार २०५
देबाठाकुर औ मोहन का परिगा समर बराबरि आय ॥
बड़ी लड़ाई क्षत्रिन कीन्ह्यो कायर भागे पीठि दिखाय २०६
जितने कायर दुहुँतरफा के तरलोथिन के रहे लुकाय ॥
हेला आवै जब हाथिन का तब बिन मरे मौत ह्वैजाय २०७
कागति बरणों मैं कायर कै मनमा बार बार पछितायँ ॥
हाय रुपैयन के लालच ते हमरे गई प्राणपर आय २०८
करित नौकरी क्यहु बनियांके हल्दी धनियां के बयपार ॥
तौ नहिं बिपदा हमपर आवत छूटत नहीं लोग परिवार २०६
कायर सोचैं यह अपने मन शूरन होयँ अनन्दाचार ॥
गिरि उठि मारैं समरभूमि में दोऊ हाथ करैं तलवार २१०
छाँड़ि आसरा जिंदगानी का क्षत्रिन कीन घोरघमसान ॥
दोउदल अरुझे समरभूमिमा मारैं एकएक को ज्वान २११
कटिकटि कल्लागिरैं समर में उठि उठि रुण्डकरैं तलवार ॥
मुण्डन केरे मुड़ चौरा भे औ रुण्डन के लगेपहार २१२
परीं लहासैं जो मनइन की तिनकाखावैं श्वान सियार ॥
मेला ह्वैगा तहँ गीधन का चील्हनसीधाका व्यवहार २१३
नचैं योगिनी खप्परलीन्हे मज्जैं भूत प्रेत बैताल ॥
धरु धरु धरु धरु मारो मारो बोलै वच्छराजका लाल २१४
ऊदन ताकैं ज्यहि हौदाका बेंदुल तहाँ देइ पहुँचाय ॥

सातो लड़िका अभिनन्दन के आल्हा केद्लीनकरवाय २१५
तब अभिनन्दन रिसहा ह्वैकै अपनो हाथी दीन बढ़ाय॥
आल्हा ठाकुर पचशब्दापर राजा पास पहूँचे आय २१६
तब ललकारो अभिनन्दनने आल्हा कूच देउ करवाय॥
जियत न जैहौ तुम सम्मुखने जोबिधिआपबचावैआय २१७
इतना सुनिकै आल्हा बोले राजन साँच देयँ बतलाय॥
बिना बियाहे हम बेटा को कैसे लौटि मोहोबे जायँ २१८
भलो आपनो जो तुम चाहौ सबकी कैद लेउ छुड़वाय॥
हँसी खुशी सों बेटी ब्याहो काहे रारि बढ़ावो भाय २१९
बिना बियाहे हम जैबे ना चहुतन धजीधजी उड़िजाय॥
इतना सुनिकै अभिनन्दनने मास्यो भालातुरतचलाय २२०
वार बचाई तब आल्हा ने साँकरि हाथी दीन गहाय॥
आल्हा बोले पचशब्दा ते अब गाढ़े में होउ सहाय २२१
घूमो हाथी तब आल्हा को रणमा साँकरिरहा घुमाय॥
जितने साथी अभिनन्दन के ते सब भागे पीठिदिखाय २२२
झुके सिपाही मोहबे वाले मौरैं एक एक को धाय॥
मलखे ऊदन देबा मकरँद सबियाँलशकरदीनभगाय २२३
भागी फौजैं अभिनन्दन की इकलो रहा आप नरराज॥
कियो लड़ाई भल इकलेई कैदी भयो फेरि महराज २२४
गंगा कीन्ही फिरि फौजन में इन्दल ब्याह द्याव करवाय।
सातौं लड़िकन सों महराजा आल्हाठाकुरदीन छुड़ाय २२५
तुरतै पण्डित को बुलवायो सोऊ साइति दीन बताय॥
भई तयारी फिरि भौंरिन के मड़ये तरे पहूँचे जाय २२६

सवैया ॥

आमको खम्भगड़ो तहँ सुन्दर माड़व मालिन ठीक बनायो ।
कै गठि बन्धन बैठिगयो नृप स्वच्छ कुशानिज हाथ उठायो ॥
दान दयेउ कन्या अभिनन्दन बन्दन कै रघुनाथ मनायो ।
चन्दन अक्षत फूलनलै ललिते मनमोद गणेशचढ़ायो २२७

बड़ी खुशी सों अभिनन्दनने बेटी ब्याह दीन करवाय ॥
बिदा करायो चितरेखा को औधनदीन्ह्योखूबलुटाय २२८
भये अयाचक सब याचक गण जय जयकार रहे सब गाय ॥
बाजे डंका अहतंका के आल्हा कूचदीनकरवाय २२९
एक महीना के भीतर में दशहरि पुरै पहूंचे आय ॥
परछन करिकै दरवाजे सों सुनवाँ लैगय वधूलिवाय २३०
दर्गी सलामी की तोपैं बहु धुवना रहा रगमें छाय ॥
भनियादेवन की पूजाकरि बैठीं धाम आपने आय २३१
आल्हा बैठे फिरि महलन में ऊदन बैठ शीश नवाय ॥
माहिलठाकुर की गाथा को आल्हाठाकुर दीन्हसुनाय २३२
चुगुलशिरोमणि माहिलठाकुर ठाकुर रहे तहाँ सब गाय ॥
होय भलाई मम चुगुलिन में इतनाकहा लहुरवाभाय २३३
खेत छूटिगा दिन नायक सों भंडा गड़ा निशाको आय ॥
ब्याहपूर भा अब इन्दल का सुमिरौं तुम्हैं शारदामाय २३४
धारलगायो महरानी तुम दानीयुगन सुगन अधिकाय ॥
कोउअभिमानीजगरहिगा ना ज्यहिपरकोपकीनतुममाय २३५
आशिर्बाद देउँ मुंशीसुत जीवो प्रागनरायण भाय ॥
हुकुम तुम्हारो जो पावत ना ललितेकहतकथाकसगाय २३६

रहै समुन्दर में जबलों जल जबलों रहैं चन्द औ सूर ॥
मालिक ललिते के तबलों तुम यशसों रहौ सदाभरपूर २३७
माथ नवावों पितु अपने को ह्यांते करों तरँग को अन्त ॥
राम रमा मिलि दर्शन देवैं इच्छा यही भवानीकन्त २३८

इति श्रीलखनऊनिवासि (सी,आई,ई) मुंशीनवलकिशोरात्मजबाबूप्रयागनारायण जीकीआज्ञानुसारउन्नामप्रदेशान्तर्गत पँड़रीकलां निवासि मिश्रवंशोद्भव बुध कृपाशङ्कर सूनु पं० ललिताप्रसादकृत इन्दलपाणिग्रहण वर्णनोनामद्वितीयस्तरंगः २ ॥

इन्दलहरण सम्पूर्ण शुभमस्तु ॥

इति ॥

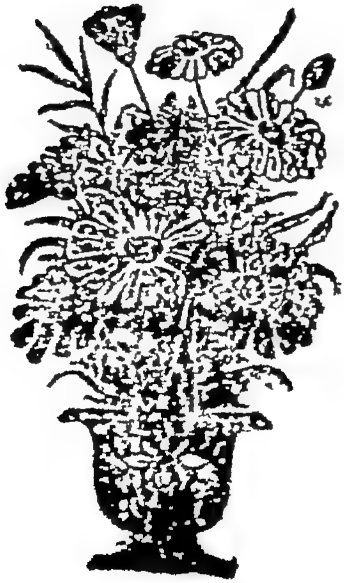

अथ आल्हखण्ड ॥

आल्हानिकासी ॥

सवैया ॥

राम औ श्याम अकाम भजै सो तजै जगके सब पातकभाई।
बामन पद प्रक्षालनके जलसों भइ गंग पुराणन गाई॥
ज्ञात सबै विख्यात सबय ललिते ज्यहि भांति धरापरआई।
गाई बताई न जाय कछू अब कीरति गंग धरापर छाई १

सुमिरन ॥

ध्याय भवानी शिवशंकर को सुमिरन करै गंगको भाय ॥
सो तरिजावै भवसागर सों पावै अमर रूपको जाय १
गावै नित प्रति रघुनन्दन को नरपुर फेरि न जन्मै आय ॥
बड़ा महातम रघुनन्दन का नारद बालमीकि कहगाय २
गीधअजामिल शबरीगणिका चारो कीरति रहे बताय ॥
कलियुग तुलसीकी समताको दूसर कौन बतावा जाय ३

तैसे कीरति यदुनन्दन की द्वापर फैलिगई अधिकाय ॥
सूर औ मीराबाई कलियुग पायो स्वाद भूमिमें आय ४
ललिते चक्खन को ललचायो गायो आल्हा छन्द बनाय ॥
कहौं निकासी अब आल्हा कै सुमिरन देवनको बिसराय ५

अथ कथाप्रसंग ॥

एक समइया की बातैं हैं यारो मानो कही हमार ॥
लिल्ली घोड़ीपर चढ़ि बैठो माहिल उरई का सरदार १
तिक्तिक्तिक् टिटुईहाँकत दिल्ली शहर पहूँचा जाय ॥
लागिकचहरी दिल्लीपति की जिनका कही पिथौराराय २
आवत दीख्यो तिन माहिलका अपने पास लीन बैठाय ॥
बड़ी खातिरी करि माहिल कै पूँछन लाग पिथौराराय ३
काहे आये उरई वाले आपन हाल देउ बतलाय ॥
इतना सुनिकै माहिल बोले साँची सुनो पिथौराराय ४
मलखे सुलखे आल्हा ऊदन इनका दीखे देश डेराय ॥
आज बनाफर की समता को ठाकुर आन नहीं दिखलाय ५
चार चौहदी के डाँड़े पर मलखे किलालीन बनवाय ॥
जो कछु चाहैं आल्हा ऊदन सो सब करिकै देयँ दिखाय ६
कौन दुसरिहा है आल्हा का सम्मुख बात करै जो जाय ॥
मान न रहिगे क्यहु नरेश के चारो बढ़े बनाफरराय ७
हमका मानैं भल मामा करि खातिर करैं रोज अधिकाय ॥
हमहूं जानत हैं ब्रह्मा सम राजन साँच दीन बतलाय ८
अधिक पियारे पै तिनते तुम मानो कही पिथौराराय ॥
तुम्हैं लरिकई सों जानत हौं सीधो सादो आप स्वभाय ९
तिनकी धरती का स्वामी मैं त्यहिका पास लिखो बैठाय ॥

तुम अस राजा को दुनियामों ज्यहितेप्रीतिकरोंअधिकाय १०
इतना सुनिकै पिरथी बोले माहिल उरई के सरदार ॥
यतन बतावो यहि समया में जासों जायँ बनाफर हार ११
इतना सुनिकै माहिल बोले मानो कही पिथौराराय ॥
पाँच बछेड़ा मोहबे वाले तिनका आप लेउ मँगवाय १२
बेंदुल हंसामनि हरनागर पपिहा और कबूतरि पाँच ॥
उड़न बछेड़ा ये पाँचों हैं इनबल लड़ैं बनाफर साँच १३
पाँचो घोड़न के पाये ते साँचो बिजय होय महराज ॥
जीति न पैहौ तिन पाँचो ते साँचोसाँच पाँच शिरताज १४
इतना सुनिकै पिरथीपतिने तुरतै लीन्ही कलम उठाय ॥
लिखिकै चिट्ठी परिमालिकको औ माहिलको दीनसुनाय १५
सुनिकै चिट्ठी पिरथीपतिकै माहिल बड़ा खुशी ह्वैजाय ॥
तुरतै धावन को बुलवायो पिरथी चिट्ठी दीन पठाय १६
लैकै चिट्ठी धावन चलिभा पहुँचा नगर मोहोबे आय ॥
जहाँ कचहरी परिमालिक कै धावन तहाँ पहूँचा जाय १७
कीन दण्डवत महराजा को चिट्ठी फेरि दीन पकराय ॥
लैकै चिट्ठी पृथीराज की आँकुइआँकुनजरिकैजाय १८
तुरत बुलायो निज धावन को की आल्हा को लाउ बुलाय ॥
इतना सुनिकै धावन चलिभा दशहरिपुरै पहूँचा जाय १९
तुम्हैं बुलावत महराजा हैं यह आल्हा ते कह्यो सुनाय ॥
इतना सुनिकै आल्हा ऊदन पहूँचे नगर मोहोबे आय २०
जहाँ कचहरी परिमालिक की दूनों गये बनाफरराय ॥
हाथ जोरिकै आल्हा ऊदन ठाढ़े भये शीश को नाय २१
आल्हा बोले परिमालिक ते राजन साँच देउ बतलाय ॥

कौनसी बिपदा तुमपर आई जो सेवकको लीन बुलाय २१
इतना सुनिकै राजा बोले साँची सुनो बनाफरराय ॥
बेंदुल हंसामनि हरनागर पपिहा और कबूतरि भाय २२
पाँचो घोड़ा पिरथी माँगे सो अब दीन चही पहुँचाय ॥
चिट्ठी आई महराजा की धावन बैठ बनाफरराय २४
इतना सुनिकै आल्हा बोले राजन साँच देयँ बतलाय ॥
अपने घोड़ा हम देवे ना चहु चढ़िअवै पिथौराराय २५
लड़ि भिड़ि लेवै हम पिरथी ते देवै समरभूमि समुझाय ॥
जियत न पाई कोउ घोड़नको साँची सुनो चँदेलेराय २६
इतना सुनिकै राजा बोले मानो कही बनाफरराय ॥
रारि मिटावो दै घोड़न को यामें भलापरै दिखलाय २७
घोड़ा अइहैं नाहिं दिल्ली को मोहबा तुरत लेउँ लुटवाय ॥
ऐसी चिट्ठी पृथीराज की सो पढ़िलेउ बनाफरराय २८
घोड़ा पैहैं जो पिरथी ना मोहवा तुरत गाँसिहैं आय ॥
कितन्यो घोड़ा लड़ि मरिजैहैं ऐसे पाँच देउ पठवाय २९
अंकुश विषका तुम गाड़ो ना मानो कही बनाफरराय ॥
इतना सुनिकै ऊदन बोले दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ३०
काह हकीकति है पिरथी कै मोहवानगर मँझावैं आय ॥
दतिया जीति उरैछा जीत्यों जीत्यों सेतुबंधलों जाय ३१
जीति पेशावर मुलतानाली बूँदी थहर थहर थर्राय ॥
राज्य कमायूँका लै लीन्ह्यों झंडाअटक दिल्लीगढ़वाय ३२
जितनी तिरिया हैं मेवात में संध्या समय नित्त पछितायँ ॥
काह हकीकति है पिरथी कै दिल्ली काल्हिलेउँ लुटवाय ३३
एक पिथौरा कै गिनती ना लाखन चढ़ैं पिथौरा आय ॥

मैं हनिडारों तलवारी सों साँची सुनो चँदेलेराय ३४
सुनिकै बातैं बघऊदन की जरि बरि गये रजापरिमाल ॥
दशहरि पुरवाको खाली करु बेटा देशराज के लाल ३५
गऊ रक्त सम जल तू जानै भोजन गऊ माँस अनुमान ॥
करै मेहरिया के संगति जो होवै बहिनी संग समान ३६
होउ पातकी तुम कलियुग में जो नहिं करो बचन परमान ॥
इतना सुनिकै आल्हा ऊदन तुरतै चले वहाँ ते ज्वान ३७
अपने अपने फिरि घोड़नपर दूनों भाय भये असवार ॥
तुरतै रूपन को बुलवायो बोले उदयसिंह सरदार ३८
छा हजार जो हमरी फौजैं तिनसाँ खबरि सुनावोजाय ॥
करैं तयारी सब नर नाहर अबहीं कूच देयँ करवाय ३९
इतना सुनिकै रुपना चलिभा सबका खबरि सुनाई जाय ॥
इक हरकारा को पठवायो औ देवा को लीन बुलाय ४०
हाल बतायो आल्हा ठाकुर जो कछु कह्यो चँदेलेराय ॥
इतना सुनिकै देवा बोला दादा साँच देयँ बतलाय ४१
हमहूं रहिबे ना मोहबे मा साथै चलैं तुम्हारे भाय ॥
सवन चिरैया ना घर छोंड़ै ना बनिजरा बनिजको जाय ४२
यह नहिं चहिये परिमालिकको ऐसे समय निकारैं भाय ॥
लिखी गोसइँयाँ की को मेटै साथै चलब बनाफरराय ४३
कौन देशमें अब चलि बसिहौ हमको साँच देउ बतलाय ॥
सुनिकै बातैं ये देवाकी बोले तुरत बनाफरराय ४४
बैरी हमरे सब राजा हैं जावैं कौन देशको भाय ॥
तुमहूँ ऊदन सम्मत करिकै ठीहा ठीक देउ ठहराय ४५
इतना सुनिकै ऊदन बोले दादा साँच देयँ बतलाय ॥

देश देश में कीनलड़ाई संकटपरा आजदिन आय ४६
जयचँदराजा कनउजवाला सोई एक मित्र दिखराय ॥
दूसर कोऊ अस क्षत्री ना जो विपदामें होय सहाय ४७
इतना सुनिकै आल्हा ठाकुर मनमाँ ठीक लीन ठहराय ॥
चलिकै रहिये अब कनउजमें साँची कही लहुरवाभाय ४८
हमहूँ चाहत रहैं कनउज को तुमहूँ दीन स्वई बतलाय ॥
यह मनभाई भल देबा के दशहरिपुरै पहूँचे आय ४६
बड़े प्रेमसों धावलिदौरी पूँछी कुशल दुवारेआय ॥
आल्हाबोले तब धावलिते दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ५०
मोहिं निकारयो परिमालिकने अनुचितअनुचितकसमखवाय ॥
आजु न रहिबे हम दशहरिपुर माता साँच दीन बतलाय ५१
धावलिबोली फिरि आल्हाते काहे कह्यो चँदेलेराय ॥
बात बतावो जो पूरी तुम तौ फिरि कूच देयँ करवाय ५२
इतना सुनिकै आल्हाठाकुर सखियाँ कथा गये तहँगाय ॥
हाल जानिकै धावलि माता महलनहुकुमदीनफरमाय ५३
सुनवाँ फुलवा चित्तरेखा तीनों होवैं वेगितयार ॥
मोहिं निकारयो परिमालिक ने कीन्ह्योतनको नाहिंविचार ५४
इतना सुनिकै वाँदी दौरी महलन खबरि जनाईजाय ॥
सुनवाँ फुलवा चित्तरेखा तीनों गईं सनाकाखाय ५५
होश छूटिगे ठकुरानिन के यहुका रंग भंग भो आय ॥
तबतो गाथा सब आल्हाकी बाँदी तहाँ दीन समुझाय ५६
तब ठकुरानी मनसानी सब अपनो हर्ष शोक बिसराय ॥
डोलामँगायो बघऊदन ने सोऊ गयो तहाँपरआय ५७
भै तयारी फिरि जल्दी सों सबदिन कूच दीन करवाय ॥

बाजे डंका अहतंका के हाहाकार शब्दगा छाय ५८
आगे आल्हा हैं पपिहापर ऊदन बेंदुलपर असवार ॥
हंसामनि घोड़े के ऊपर इन्दल आल्हाकेर कुमार ५९
आय के पहुँचे सब मोहबे में मल्हना महल पहूँचे जाय ॥
बड़ी खुशाली सों महरानी आदरभावकीन अधिकाय ६०
खबरि पायकै सब रानी फिरि मल्हना महल पहूंचीं आय ॥
रोवनलागीं सब रानी तहँ दारुण बिपतिकहीना जाय६१
मल्हनाबोली फिरि आल्हा ते साँची सुनो बनाफरराय ॥
तुम्हैं मुनासिब यह नाहीं है जो अब कूचदेउ करवाय ६२
घाटि न जाना हम ब्रह्मासों चारो भाय बनाफरराय ॥
कहा न मानो अब काहूको बैठो धाम आपने जाय ६३
इतना सुनिकै ऊदन बोले दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ॥
अब नहिं रहिबे हम मोहबे माँ माता साँचदीन बतलाय ६४
गऊरक्त सम जलको जानै भोजन गऊमाँस सममान ॥
करै मेहरिया कै संगति जो होवै बहिनी संगसमान ६५
ऐसी बातैं महराजा की माता काहगईं बौराय ॥
जो हम बिलमैं अब मोहबेमाँ तौ सब क्षत्री धर्म नशाय ६६
तुम्हैं मुनासिब यह नाहीं है राखो हमैं फेरि जो माय ॥
दर्शन ह्वैगे सब मातन के अब हम कूच द्यहैं करवाय६७
इतना कहिकै ऊदन ठाकुर डोला तुरत लीन सँगवाय ॥
औ ललकारा फिरि माता का अब तुम कूच देउ करवाय ६८
सुनि सुनि बातैं उदयसिंह की मल्हना बार बार पछिताय ॥
तुरतै धावन को बुलवायो सिरसागढ़ै दीन पठवाय ६९
लागि कचहरी मलखाने कै धावन वहाँ पहूँचा जाय ॥

कही हकीकति सब आल्हाकी धावन हाथ जोरिशिरनाय ७०
सुनिकै बातैं धावन सुख की मलखे घोड़ी लीन मँगाय ॥
मल्हना केरे फिरि महलन ते आल्हा कूच दीन करवाय ७१
बाजे डंका अहतंका के कनउज चले बनाफरराय ॥
ब्याकुल रैयत भै मोहबे के काहू धीर धरा ना जाय ७२
भोजन कीन्ह्योकोउतादिनना सोवन रात दीन बिसराय ॥
जहँ तहँ गाथा बघऊदन की घर घर रहे नारिनर गाय ७३
चढ़ा कबुतरी पर मलखाने मारग मिला तुरतही आय ॥
कुशल पूँछिकै आल्हा ठाकुर आपनिकुशलदीनबतलाय७४
जो कछु भाषा परिमालिक ने आल्हा सत्य सत्य गे गाय ॥
मलखे बोले तब आल्हा ते दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ७५
चलिकै रहिये तुम सिरसा में करिहै काह चँदेलोराय ॥
इतना सुनिकै ऊदन बोले दादा साँच देयँ बतलाय ७६
अब नहिं टिकिहैं हम सिरसामें चहु तुम कोटिनकरो उपाय ॥
राज्य छोंड़िकै परिमालिक की जयचँद पुरीजायँहमभाय ७७
जब सुधिआवै नृप बातन कै तब मन धीर होय अधिकाय ॥
घात के मारे जो मरि है ना मरिहै काह लात के घाय ७८
आज तो घोड़ा पिरथी मांगा काल्हिकोतिरियालेत मँगाय ॥
यहु मर्दाना को बाना ना आपन घोड़ देयँ पठवाय ७९
इतना सुनिकै मलखे बोले मानो कही बनाफरराय ॥
सबन चिरैया ना घर छोंड़ै ना बनिजराबनिजकोजाय ८०
अस गति नाहीं है पिरथी की तुम्हरे घोड़ लेयँ मँगवाय ॥
इतना सुनिकै आल्हा ठाकुर बोले फेरि वचन समुझाय ८१
लिखी विधाता की मिटिहैना सिरसा लौटिजाउ मलखान ॥

काह हकीकति है मानुष के सुख दुख देनहार भगवान ८२
बातैं सुनिकै ये आल्हा की मलखे ठीक लीन ठहराय ॥
क्यहु समुझायेते मनिहैं ना आल्हाउदयसिंह दोउ भाय ८३
मिला भेंट करि सब काहू सों मलखे कूच दीन करवाय ॥
जायकै पहुंचे सिरसागढ़ में महलन खबरि बताई जाय ८४
नदी बेतवा को उतरत भे दूनों भाय बनाफरराय ॥
ढाई दिनके फिरि अर्सा में झावर गये बनाफर आय ८५
बिजुली चमकै कउँधा लपकै कहुँ कहुँ मेघ रहे हहराय ॥
मेढुक बोलैं चौगिर्दा ते बीछी साँपनकी अधिकाय ८६
नचैं मुरैला कहुँ जंगल में झींगुर कहुं करैं झनकार ॥
किह्यो बसेरा तटयमुना के नाहर उदयसिंह त्यहिबार ८७
बनी रसोईं रजपूतन की सबहिन जें[illegible]लीन ज्यँवनार ॥
भोर मुरहरे मुर्गा बोलत उतरे घाट कालपी क्यार ८८
तहँते चलिकै परहुल पहुँचे दूनों भाय बनाफरराय ॥
दिना द्वैक रहि त्यहि पतन में तहँते कूच दीन करवाय १३
जायकै पहुँचे अस [illegible] में जहँ पानीको [illegible] कष्ठाय ॥
इन्दल बेंदुल दोउ प्यासे भे इनके [illegible] १४
रहा न बीरा तहँ पानन का जो [illegible] बनाफरराय ॥
ताकि ल्यबरिया इन्दल बेंदुल पानी [illegible] लहुरवाभाय १५
आधा पानी आधी माटी जा[illegible] तिन्हैं लीन लुटवाय ॥
हाय मुसीबत अस परिगैहै स्रेहुकोअन्नदीनछिरकाय १६
सुनवाँ रोई त्यहि समया में पुताफलहू दीन चलाय ॥
फाटै छाती नहिं द्यावलि कै [illegible] बापू रहे मचाय १७
आल्हा सोचैं त्यहि समया में ऊदन छप्पर दीन गिराय ॥

तेलि तँबोली कलवारन की दुर्गति भई तहांपर आय ११८
लैलै टेटुवा बनियां चलिभे मनमें बार बार पछिताय॥
हाय रुपैया बैरी ह्वैगा ह्याँ अबगई प्राणपर आय ११९
भा खलभल्ला औ हल्ला अति पहुंचे बहुत राज दरबार॥
रोय रोयकै बनियाँ ब्वालैं राजन मानो कही हमार १२०
अजयपाल औ रतीभान भे एकते एक शूर सरदार॥
ऐसि दुर्दशा मैं कबहूंना जैसी भई आय यहिबार १२१
ऊदन आये मोहवे वाले तिन सब लीन बजारलुटाय॥
इतना सुनिकै जयचँद राजा लाखनिरानालीनबुलाय १२२
कहि समुझावा लखराना को तोपन आगिदेउ लगवाय॥
सुनिकै बातैं महराजा की लाखनिचलाशीशकोनाय १२३

सवैया॥

चर्खन में सब तोप चढ़ाय औ फौज तयार कियो लखराना।
बाजत डंक निशंक तहाँ औ यथा घन सावन को घहराना॥
बिज्जु छटासों कटा करबे कहँ चमकत खड्ग तहाँ मरदाना।
मौहर बाजत हाव किये लखिते यह भाव न जात बखाना १२४

भई तयारी समरभूमि की क्षत्रिनबांधि लीन हथियार॥
मीरातात्हन बनरस वाला पहुंचा तबै राजदरबार १२५
किह्यो बन्दगी महराजा को औ यह हाल कह्योसमुझाय॥
गारि मचावो नहिं कनउज में आल्हाऊदन लेउ बसाय १२६
मुर्चा फेरा इन पिरथी का द्वारे हाथी दीन पठाय॥
भई लड़ैया चावलिवाले इनते हारि गई तलवार १२७
जयचँद बोले तब सय्यद ते नाहर बनरस के सरदार॥

जौंरा भौंरा दुइ हाथिन को हमरे द्वारे देयँ पछार १२८
खता माफ करि हम आल्हाकै औ कनउज माँ लेंय बसाय॥
इतना सुनिकै सय्यद बोले धावन पठै लेउ बुलवाय १२९
तब महराजा कनउज वाला तुरतै धावन दीन पठाय॥
खबरि सुनाई त्यहि आल्हा को तुमको राजा रहे बुलाय १३०
मीरासय्यद तहँ बैठे हैं तिनहिन हमैं दीन पठवाय॥
इतना सुनिकै आल्हाऊदन दोऊ भाय बनाफरराय १३१
अपनी अपनी असवारिनचढ़ि तहँते कूच दीन करवाय॥
जौंरा भौंरा मस्ता हाथी जयचँद द्वारेदीन ढिलाय १३२
आल्हा ऊदन दोऊ भाई पहुँचे तुरत द्वारपर आय॥
जयचँद बोले तब आल्हाते मानो कही बनाफरराय १३३
हथी पछारो जो द्वारे पर तौ तकसीर माफ ह्वैजाय॥
इतना सुनिकै उदयसिंहने मनमांसुमिरिशारदामाय १३४
ताकिकै मस्तक इक हाथी के भाला हना लहुरवा भाय॥
पैठिग भाला त्यहि हाथी के तुरतै गिरा पछारा खाय १३५
दन्त पकरिकै फिरि दुसरे के ऊदन दीन्ह्यो द्वार लिटाय॥
देखि बीरता उदयसिंह की जयचँद बहुतगयो हर्षाय १३६
बाँह पकरिकै फिरि आल्हा कै औ दरबार पहूँचा जाय॥
कीनि खातिरी भल ऊदन की खालीमहलदीनकरवाय १३७
लैकै लश्कर तब कनउज मां बसिगे तहां बनाफरराय॥
खेत छूटिगा दिननायक सों झगडागड़ानिशाकोआय १३८
परे आलसी खटिया तकि तकि सन्तन धुनी दीन परचाय॥
आशिर्बाद देउँ मुन्शीसुत जीवो प्रागनरायण भाय १३९
रहै समुन्दर में जबलों जल जबलौं रहैं चन्द औ सूर॥

मालिक ललिते के तबलों तुम यशसों रहो सदा भरपूर १४०
माथ नवावों पितु अपनेको ह्याँ ते करौं तरँग को अन्त ॥
राम रमा मिलि दर्शन देवो इच्छायही मोरि भगवन्त १४१

इति श्रीलखनऊनिवासि (सी,आई,ई) मुंशीनवलकिशोरात्मजबाबूप्रयाग नारायणजीकी आज्ञानुसार उन्नामप्रदेशान्तर्गत पँड़रीकलांनिवासि मिश्रवंशोद्भवबुधकृपाशङ्करसूनु पं०ललिताप्रसादकृत आल्हा कनौजबासवर्णनोनामप्रथमस्तरंगः ॥ १ ॥

आल्हा निकासी सम्पूर्ण ॥

इति ॥

अथ आल्हखण्ड ॥

लाखनिका बिवाह अथवा बूँदी की लड़ाई ॥

सवैया ॥

फूलम्न कारबे हमदन के दशस्यन्दन के सुत को यश गावैं ।
तेना सुनिके ऊ रघुनन्दन बन्दन कै अतिही सुखपावैं ॥
भ्रा आयो घर सदा प्रभुकी करणी बरणी नहिं जावैं ।
क्षेम संदिग्न नप करियो ललिते पदपङ्कज नित्त मनावैं १

सुमिरन ॥

फूलमती कनउज की देवी जिनयशप्रकटआजयहिकाल॥
करैं मनोरथ पूरण सबके ध्यावैं ज्वान वृद्ध चहुबाल १
हैं महरानी सब सुखदानी रक्षाकरैं बिकट कलिकाल ॥
र अवलम्बा तिनअम्बाका लाखनि ब्याह बखानों हाल २
सहाई अब माई तुम जाते चलाजाउँ भवपार ॥
बूड़े भवसागर में माता तुम्हीं निवाहन हार ३
रलगायो जस ऊदन का तैसे पारकरो यहिबार ॥
माता भ्राता अरु ताता ये स्वारथ मित्र सबै संसार ४

साँचीं गाता अरु त्राता तुम धाता सृष्टि माँझ यहिकाल ॥
लखिकै ऐसे नर दुर्बल को माता जानु आपनो बाल ५
छूटि सुमिरनी गै देवीकै लाखनिब्याहसुनोयहिकाल ॥
गंगाधर बूँदी का राजा ता घर ब्याह होयगो हाल ६

अथ कथाप्रसंग ॥

कुसुमा बेटी गंगाधरकी राजा बूँदी का सरदार ॥
खेलत देखा सो बेटी का यौवन जानिपरा त्यहिवार १
लाग विचारन मन अपने मा बेटी ब्याहन के अनुसार ॥
नव अरु आठ दशै वर्षनमा ज्योतिपशास्त्रदीनअधिकार २
फिरि तौ गिनती ना कन्याकी यह मन कीन्ह्यो खूब विचार ॥
ग्वती जवाहिर दो बेटाथे तिनका बोलिलीन त्यहिवार ३
हाल बतावा मन अपने का राजा बार [illegible]य ॥
घरवर नीको जहँ तुम देखो त्यहिघर टीक [illegible]
एक मोहोबे तुम जायो ना तहँपर रहैं [illegible] ॥
जाति बनाफर की हीनी है हल्ला देश दे [illegible]काय ५
इतना कहिकै महराजा ने सवियाँ सामा दीन मँगाय ॥
चला जवाहिर तव बूँदी ते राजै बार बार शिरनाय ६
तीनिलाख को टीका लैकै दिल्लीशहर पहूँचा जाय ॥
हाल जानिकै पृथीराज ने टीका तुरत दीन लौटाय ७
चौरीगढ़ में वीरशाह घर पहुंचा फेरि जवाहिरजाय ॥
सोऊ जादूकी शंका ते टीका तुरत दीन लौटाय ८
तहँतेचलिकै फिरि विसहिनगा जहँपर बसैं विसेनेराय ॥
लागि कचहरी गजराजा की शोभा कही बूत ना जाय ९
सोने सिंहासनपर सोहत है राजा विसहिन का सरदार ॥

दीन जवाहिर तहँ चिट्ठीको
पढ़िके चिट्ठी गंगाधरके
तबे जवाहिर मन खिसियाने
लागि कचहरी तहँ जयचँदके
आल्हा ऊदन तहँ बैठे हैं
दीन जवाहिर तहँ चिट्ठीको
पढ़िके चिट्ठी वापस दीन्ह्यो
तबे जवाहिर यह बोलत भा
लाखनि क्वाँरे हैं तुम्हरे घर
आयसु पावैं महराजा को
इतना सुनिके जयचँद बोले
ब्याह न करिबे हम तुम्हरे घर
इतना सुनिके ऊदन बोले
टीका आयो घर तुम्हरे है
कौन दुसरिहा नृप तुम्हरो है
औरो बोले त्यहि समया मा
सम्मत सब का जयचँद लैके
देखो साइति यहि समया मा
सुनिके बातैं महराजा की
पाख अँध्यरिया तिथि तेरसिओ
भौंरिन केरी शुभ साइति है
पै यहि बिरिया शुभ साइति में
इतना सुनिके महराजा ने
खबरि पायके महरानी ने

राजा पढ़नलाग त्यहिबार १०
टीका तुरत दीन लौटाय ॥
पहुँचे फेरि कनौजै जाय ११
भारी लाग राज दरबार ॥
बैठे बड़े बड़े सरदार १२
जयचँदआँकुआँकुपढ़िलीन ॥
हाँहूँ कछू नहीं नृप कीन १३
दोऊ हाथजोरि शिरनाय ॥
यह हमआयनपतालगाय १४
तौ हम टीका देयँ चढ़ाय ॥
तुमते साँचदेयँ बतलाय १५
हाँपर जादू को अधिकाय ॥
दोऊ हाथ जोरि शिरनाय १६
राजन लीजै आप चढ़ाय ॥
ज्यहिभयकरौ कनौजीराय १७
साँची कहौ बनाफरराय ॥
तब पण्डितते कहा सुनाय १८
टीका लीनजाय चढ़वाय ॥
पंडित साइति दीन बताय १९
फागुन मास सुनो महराज ॥
हैहैं सुफल आपके काज २०
टीका आप लेउ चढ़वाय ॥
महलन खबरिदीन पठवाय २१
चौका तुरत लीन लिपवाय ॥

चौक पुराई गजमोतिन सों चन्दन पीढ़ा दीन डराय २२
तापर बैठे लखराना जब गावन लगीं सुहागिल आय ॥
ट्टदा जवाहिर गंगाधर का तहँ पर टीका दीन चढ़ाय २३
बीरा दीन्ह्यो जब लाखनि को सम्मुख छींक भई तब आय ॥
रानी तिलका त्यहि समया में बोली राजै बचन सुनाय २४
व्याह न करिबे हम बूँदी मा टीका आप देयँ लौटाय ॥
परम पियारे लखराना के बीरा लेत छींकभै आय २५
इतना सुनिकै ऊदन बोले दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ॥
जो कछु होवै इनके जीका हमरो लीन्ह्यो मूड़कटाय २६
टीका फेर्यो महरानी ना जान्यो शकुन छींकका माय ॥
ऐसो सखरमा यहि मानुष का पौबन नाक गिरावतजाय २७
यहिकी छींकनका अशकुन ना माता भरम देउ बिसराय ।
राजा बोले फिरि रानी ते साँची कहै बनाफरराय २८
जो अस हालत सबहोती ना टीका तुरत देत लौटाय ॥
इतना सुनिकै तिलका रानी अपनो भरमदीन बिसराय २९
फेरि जवाहिर सब नेगिन को सुबरण कड़ा दीन पहिराय ॥
जितनी सामारह टीका की सो आँगनमा दीन धराय ३०
राजाजयचँद उन नेगिन का सुबरण कड़ा दीन पहिराय ।
साल दुसाला मोहनमाला इनहुन दीन तहाँपर आय ३१
बड़ी खुशाली हुइँ तरफाके नेगिन मनै भई अधिकाय ।
बिदामांगिकै चला जवाहिर बूँदी शहर पहूँचा जाय ३२
हाल बतायो महराजा का जाबिधि टीका अयो चढ़ाय ।
भई खुशाली गंगाधर के फूले अंग न सकै समाय ३३
नामी राजा कनउज वाले बेटा कीनकाज सुखजाय ॥

भई तयारी ह्याँ ब्याहे की फागुन मास पहूँचा आय ३४
न्यवत पठावा सब राजन को राजा कनउज के सरदार ॥
पावत चिट्ठी के राजा सब कनउजआयगये त्यहिबार ३५
तेल औ मायन नहखुरआदिक ब्याहन कुँवाँक्यार ब्यवहार ॥
नेग चार सब पूरन ह्वैगे लागे सजन शूर सरदार ३६
झीलमबखतर पहिरि सिपाहिन हाथम लई ढाल तलवार ॥
सुमिरि भवानीसुत गेणश को राजा जयचँद भये तयार ३७
आल्हा बैठे पचशब्दापर ऊदन बेंदुल पर असवार ॥
गंगापाँवर कुड़हरि वाला मामा लाखनि का सरदार ३८
सूरज राजा परहुल वाला सोऊ वेगि भयो तय्यार ॥
सिर्गा घोड़े की पीठी पर सय्यद बनरस का सरदार ३९
पूजि गोबर्द्धनि संदोहिनि अरु लाखनि फूलमती त्यहिबार ॥
सुमिरि भवानीसुत गणेश को पलकी उपर भये असवार ४०
बाजे डङ्का अहतङ्का के बारालाख फौज तैयार ॥
आगे हलका भा हाथिन का पाछे चलन लागि असवार ४१
चले सिपाही त्यहि पीछेसों रब्बाचले पवन की चाल ॥
मारु मारुकै मोहरि बाजी बाजी हाव हाव करनाल ४२
गर्द उड़ानी अति मारग में लोपे अन्धकार सों भान ॥
हाथी चिघरैं घोड़ा हींसैं घूमत जावैं लाल निशान ४३
भयो कलाहल अति मारग में जंगल जीव गये थर्राय ॥
बनइस दिन के फिरि अर्सा में बूँदी पास गये नगच्याय ४४
चार कोस जब बूँदी रहिगै जयचँद तम्बू दीन गड़ाय ॥
गड़िगे तम्बू सब राजन के सब रँग ध्वजा रहे फहराय ४५
अपने अपने सब तम्बुन में राजा नृत्य रहे करवाय ॥

गमकैं तबला सब तम्बुन में सावन यथा मेघ घहरायँ ४६
ओढ़े सारी काशमीर की धारी शिरन सोहनी भाय॥
बनी मोहनी अति मूरति है सूरति बरणि नहीं कछु जाय४७
ऊदन बोले तब रूपन ते ऐपनबारी दे पहुँचाय॥
रूपनबारी तब बोलत भा दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ४८
ऐपनबारी बारी लैकै आपन मूड़ कटावै जाय॥
आये बारी बहु कनउज के ऐपनबारी देउ पठाय ४९
बातैं सुनिकै ये रूपन की बोला फेरि बनाफरराय॥
बाना राखै रजपूती का बारी कौन बतावै भाय ५०
इतना सुनिकै रूपन बोले बेंदुल घोड़ देउ मँगवाय॥
सुनिकै बातैं उदयसिंह ने बेंदुल बाग दीन पकराय ५१
ऐपनबारी बारी लैकै बेंदुल उपर भयो असवार॥
सवापहर के फिरि अर्सा मा पहुँचाजाय नृपति के द्वार ५२

सवैया॥

देखिकै रूपनि को दरबानि कहा इमि बानि सों बेगि सुनाई।
कौनसो देश बसौ क्यहिग्राम औ कौनसोकाज गये तुम आई॥
जायकहौं नृपसों चलिकै भलिकै निजहाल जो देउ बताई।
बानि सुन्यो ललिते जब रूपनि बोलि उठ्यो तब मोदबढ़ाई ५३

ऐपनबारी बारी लावा राजै खबरि सुनावो जाय॥
हमैं पठावा आल्हा ऊदन ब्याहनआये कनौजीराय ५४
इतना सुनिकै द्वारपाल चलि राजै खबरि दीन बतलाय॥
सुनिकै बातैं द्वारपाल की राजा गये दुवारे आय ५५
द्वारे आगे जब गंगाधर रूपन बोला शीश नवाय॥

ब्याहन आये लखरानाको अगुवाकार बनाफरराय ५६
आल्हा ऊदन के बारीहन रूपन जानो नाम हमार ॥
ऐपनवारी लै आयन है पावैं नेग आपके द्वार ५७
कीरति गावत रूपनबारी जावैं आल्हाके दरबार ॥
इतना सुनिकै राजा बोले चहिये नेग काह तब द्वार ५८
रूपन बोले महराजाते चाहैं यही आपके द्वार ॥
दुइघंटाभरि चलै सिरोही द्वारे बहै रक्तकी धार ५९
कीरति गावत रूपन जावै होवै जगमें नाम तुम्हार ॥
बारी आवा बघऊदन का द्वारे कठिन कीन तलवार ६०
इतना सुनिकै गंगाधर ने फाटक बन्द लीन करवाय ॥
जाय न पावै रूपन बारी आरी होय लोहके घाय ६१
इतना सुनिकै रजपूतन ने अपनी खैंचिलीन तलवार ॥
रूपन बारी बेंदुल परते गरुई हाँक दीन ललकार ६२
प्राणपियारे ज्यहि होवैं ना सोई लड़ै आय सरदार ॥
धावा कीन्ह्यो रजपूतनने बेंदुल भली मचाई रार ६३
टापन मारे रजपूतन का काहू दाँतन लेय चबाय ॥
जब मनपावै सो रूपनका तड़पत उड़ा दूरलगजाय ६४
का गति बरणौं तहँ रूपनकै दूनों हाथ करै तलवार ॥
बड़े लड़ैया बूँदीवाले तेऊ हनैं आपनी वार ६५
दुइ दश पन्द्रह बीसक तीसक गिरिगे समरभूमि मैदान ॥
देखि तमाशा गंगाधर जी द्वारे बहुत भये हैरान ६६
क्रोधित ह्वैकै महराजा ने आपै खैंचिलीन तलवार ॥
ऐंड़ लगायो तब रूपन ने घोड़ा चला गयो वापार ६७
मारु मारु औ ह्वा करिकै पाछे चले बहुत सरदार ॥

उड़ा बेंदुला त्यहि समया मा तम्बुनपास गयो असवार ६८
क्षत्री लौटे बूँदी वाले बैठे आय राज दरबार॥
रूपन बारी को देखत खन बोला उदयसिंह सरदार ६९
कैसी गुजरी कहु बूँदी में रूपन रङ्ग विरङ्ग ज्वान॥
इतना सुनिकै रूपन बोले भइया भलो कीन मैदान ७०
नामी ठाकुर का बारी है जान्यो सबै राजदरबार॥
दुइ घण्टा भरि चली सिरोही द्वारे बही रक्तकी धार ७१
मातु शारदा तुम्हरी बशिमा लाला देशराज के लाल॥
सरबर तुम्हरी का दुनिया मा दूसर नहीं आज नरपाल ७२
सुनो हकीकति अब बूँदी कै भारी लाग राजदरबार॥
रूपन बारी की चरचा का खरचाहोनलाग त्यहिबार ७३
म्बती जवाहिर दोउ पुत्रन को राजा पास लीन बैठाय॥
कही हकीकति सब ऊदन की पुत्रन बार बार समुभाय ७४
जाति बनाफर की हीनी है अगुवाकार भये सो आय॥
कैसे ब्याहब हम बेटीका हँसि हैं जातिपाँतिकेभाय ७५
लड़िकै जितिबे नहिं ऊदनते यहहू साँच दीन बतलाय॥
धोखा दैकै लखराना का अब हम कैदलेयँ करवाय ७६
तौ तौ इज्जत हमरी रहिहै नहिं सब जैहै काम नशाय॥
तुम अब जावो त्यहि तम्बूमा जहँ पर बैठ कनौजीराय ७७
समय आयगा अब भाँरिनका इकलो लड़का देउ पठाय॥
देश हमारे यह रीती है कहियो बारबार समुभाय ७८
इतना सुनिकै चला जवाहिर चारो नेगी संग लिवाय॥
जहाँ कनौजी का तम्बू था पहुँचा तहाँ जवाहिरआय ७९
कही हकीकति सब राजा सों दोऊ हाथ जोरि शिरनाय॥

देश हमारे की रीती यह इकलो लड़िका देउ पठाय ८०
नाई बारी दूनों नेगी इनको लेवैं संग लिवाय ॥
इतना सुनिकै ऊदन बोले दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ८१
ग्यारह नेगी औ सहिबाला इतने पठै देउ महराज ॥
इतना सुनिकै राजा बोले भावै करो तौन तुमकाज ८२
जो मन भावै सो करु ऊदन तुमको दीन पूर अधिकार ॥
बनि सहिबाला तब ऊदन गे नेगी बने और सरदार ८३
बैठि पालकी में लखराना अपनी लिये ढालतलवार ॥
संग जवाहिर के चलि दीन्हे नेगीबने शूर सरदार ८४
आसा लीन्हे कोउ हाथेमा मुरछल कोऊ डुलावतजाय ॥
भण्डी लीन्हे कोऊ नेगी कोऊ रहे मशाल दिखाय ८५
बूँदी केरे नर नारी सब भारी भीर कीन अधिकाय ॥
रूप देखिकै लखराना का मनमें कामदेव शर्माय ८६
धरी पालकी गै फाटक पर बैठे सबै शूर सरदार ॥
यक यक भाला दुइ दुइ बरछी कम्मर परी एकतलवार ८७
बाहर आये तब गंगाधर औ लाखनिते कह्यो सुनाय ॥
जल्दी चलिये तुम भीतर को भौंरीसमयगयो नगच्याय ८८
इतना सुनिकै ऊदन ठाकुर नेगी लीन्हे संग लिवाय ॥
भीतर पहुँचा जब मन्दिर के तहँ नहिंखम्भपरादिखराय ८९
लौटन लाग्यो जब बाहर को आये शूरबीर तब धाय ॥
मारु मारु कै हल्ला करिकै ऊदन उपर पहूँचे आय ९०
चली सिरोही तब आँगनमा हाहाकार शब्दगा छाय ॥
नेगी बनिकै जे क्षत्री गे तेसब दीन्ह्यो जूभ मचाय ९१
तेरा क्षत्री कनउजवाले बूँदी केर पाँचमै ज्वान ॥

मारे मारे तलवारिन के　मचिगा घोर शोर घमसान ९१
ऊदन मारैं ज्यहि क्षत्री को　सो मुहभरा तुरत गिरिजाय ॥
पास न जावै कोउ ऊदन के　रणमा बढ़ा बनाफरराय ९२
कागति वरणौं तहँ लाखनि कै　दूनों हाथ करै तलवार ॥
मारे मारे तलवारिन के　आँगन बही रक्तकी धार ९४
म्वती जवाहिर दूनों भाई　आँगन खूबकीन मैदान ॥
लड़ै बहादुर भीषमवाला　देवा मैनपुरी चौहान ९५
घायल ह्वैकै ग्यारह नेगी　आँगन गिरे पछारखाय ॥
लाखनि ऊदन त्यहि समयामा　चालिस क्षत्री दीनगिराय ९६
तबै जवाहिर सम्मुख आवा　गरुई हाँक देत ललकार ॥
काह सिपाहिन का मारो तुम　हमरे साथ करौ तलवार ९७
इतना सुनिकै लाखनि ऊदन　सम्मुख चले तुरतही धाय ॥
आगे पीछे चौगिर्दा ते　घरिगे गाँस फाँसमें आय ९८
लाखनि ऊदन दोऊ ठाकुर　मोती कैदलीन करवाय ॥
घैहानेगी जे आँगन में　तिनहुन तुरतलीनवँधवाय ९९
लाखनि ऊदन दोउ क्षत्रिनको　राजे खंदक दीनडराय ॥
यह सुधिपाई जब मालिनिने　कुसुमा पास पहूँची जाय १००
हाल बतायो त्यहि बेटी को　मालिनि बार बार समुझाय ॥
ब्याहन तुमका लाखनि आये　राजे खन्दक दीन डराय १०१
देश देश में जब फिरि आये　टीका लीन कनौजीराय ॥
ऐस मुनासिब नहिं राजाको　जोअबदीन्हेनिजूझमचाय १०२
गली गली में यह चरचाहै　नीकि न कीन बात महराज ॥
रूप उजागर सब गुण आगर　खन्दक परे तुम्हारेकाज १०३
इतना सुनिकै कुसुमा बेटी　मनमें बारबार पछिताय ॥

हमैं न भाई यह आखी है तुमते साँच दीनबतलाय १०४
बयस बराबरिकी मालिनि हौ अब गाढ़े माँ होउ सहाय॥
राति अँधेरिया की बिरिया है खन्दक मोहिंदेइ दिखराय १०५
मोरे कारण महराजा सुत कैदी भये यहांपर आय॥
उत्तम शय्या केरि खवैया खन्दकदीन बाप डरवाय १०६
मोहिं दिखावै त्यहि क्षत्री को जियरा धीरधरा ना जाय॥
इतना सुनिकै मालिनि दौरी पलकीलाई तुरतलिआय १०७
बैठि पालकी मा दूनो फिरि खन्दक पास गई नियराय॥
दीन अशर्फी तहँ चकरन का तिनाफिरतहाँदीनपहुँचाय १०८
कुसुमा बोली तहँ लाखनि ते स्वामी बार बार बलिजायँ॥
मोहिं अभागिनि के कारणसों तुमपरबिपतिपरीअधिकाय१०९
अब तुम निकरो यहि खन्दकते रस्सा देउँ कन्त लटकाय॥
इतना सुनिकै ऊदन बोले तुमते साँचदेयँ बतलाय ११०
जो तुम चाहौ लखराना को फौजन खबरि देउ पहुँचाय॥
चहै सहारा जो नारी को तौ सब क्षत्रीधर्म नशाय १११
शंका लावो मन अन्तर ना महलन जाउ तड़ाका धाय॥
खबरि पायकै आल्हा ठाकुर हमरीबिपतिबिदारिहैंआय११२
कुसुमा बोली फिरि ऊदन ते क्षत्री भोजन देइँ पठाय॥
ऊदन बोले तब कुसुमा ते यहनहिंउचितयहाँपरआय११३
चोरी चोरा कछु दैहै ना शाहंशाह कनौजीराय॥
भोर भ्वरहरे मुरगा बोलत फौजन खबरिदेउ पठवाय ११४
और न चाहैं कछु तुमते ये साँचे हाल दीन बतलाय॥
इतना सुनिकै कुसुमा बेटी महलनफेरिपहूँची आय ११५
सोचत सोचत राति पारभै प्रातःकाल गयो नगच्याय॥

कहि समुझावा तब मालिनिको फौजन तुरतदीन पठवाय ११६
नाइनि बारिनि तेलि तँबोलिनि मालिनिधोबिनि के समुदाय॥
साँची दूती रस ग्रन्थन में भाषा चतुरन खूब बनाय ११७
सोई मालिनि चलि बूँदी ते फौजन अटी तड़ाका धाय॥
पता लगायो तहँ आल्हा को चकरन तम्बू दीन बताय ११८
बेला चमेलिन के हरवा को मालिनि तुरत दीन पहिराय॥
कह्यो सँदेशा तहँ ऊदन का मालिनि बारबार सब गाय११९
जो सुधि पावैं बूँदी वाले हमरो पेट देयँ फरवाय॥
भुसा भरावैं ते पेटेमा तुमकासाँच दीन बतलाय१२०
इतना सुनिके आल्हा ठाकुर मुहरैं सात दीन पकराय॥
मालिनि चलिभै तब फौजनते बेटी पास पहूँची आय १२१
खबरिसुनाई सब जयचँद को आल्हा बार बार समुझाय॥
तब महराजा कनउज वाला डंका तुरतदीन बजवाय १२२
हथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे बाँके घोड़न मे असवार॥
झीलमबखतर पहिरि सिपाहिन हाथम लई ढाल तलवार १२३
तोपैं चढ़ि गईं सब चर्खन मा गोला तुरत दीन छुटवाय॥
चढ़े जवाहिर औ मोती दोउ तोपनआगिदीनलगवाय१२४
तोपैं छूटीं दुहुँ तरफा ते धुवना रहा सरग में छाय॥
बड़ी दुर्दशा भै तोपन मा तबफिरिमारुबन्द ह्वैजाय१२५
गोली ओला सम वर्षत भईं सननन सन्न सन्न सन्नाय॥
दुनो गोल आगे का बढ़िगे सम्मुख भये समरमें आय १२६
भाला बलछी तलवारिन की लागी होन भड़ाभड़ मार॥
मारे मारे तलवारिन के नदिया बही रक्तकी धार १२७
ना मुहँ फेरैं बूँदी वाले ना ई कनउज के सरदार॥

शूर सिपाही सम्मुख रहिगे कायरछोड़िभागिहथियार १२८
कटि कटि मूड़ गिरैं धरणीमा उठि उठि रुण्ड करैं तलवार॥
मूड़न केरे मुड़चौरा भे औरुण्डनके लाग पहार १२९
सात कोस के तहँ गिर्दा मा कौवा गीध रहे मड़राय॥
घैहा करहैं समरभूमि मा दैया बापू रहे मचाय १३०
हाय रुपैया बैरी ह्वैगे हमरे गई प्राणपर आय॥
सात रुपैया के कारण ते छूटे लोग कुटुम औभाय १३१
तहिले बिरिया भै संध्या कै तब फिरि मारु बन्द ह्वैजाय॥
जीबे लायक जितने घैहा तिनकीलोथिलीनउठवाय१३२
ढईलाख दल कनउज वाला बूँदी डेढ़लाख सरदार॥
इतने जूझे दुहुँ तरफा ते करिकरि मारुतहाँपरयार १३३
आल्हा आये जब तम्बू मा आसनअलगलीनाबिछवाय॥
श्वास चढ़ाई फिरि ऊपर का शारदसुमिरिबनाफरराय १३४
बिनती कीन्ही भल शारद की आल्हा बार बार शिरनाय॥
तव अवलम्बा जगदम्बा है दूसर करिहै कौन सहाय १३५
बिनती करिकै आल्हा ठाकुर सोये सेज आपनी जाय॥
देबी शारदा मइहरवाली निशिमास्वपनदिखायोआय१३६
मलखे ब्रह्मा को बुलवाओ ह्वैहै जीति बनाफरराय॥
स्वपन देखिकै आल्हा ठाकुर प्रातःकाल उठे हर्षाय १३७
लिखिकै चिट्ठी मलखाने को धावन हाथ दीन पठवाय॥
चढ़ा साँड़िया मा धावन तब सिरसागढ़े पहूँचाजाय १३८
चिट्ठी दीन्ही मलखाने को धावन बार बार शिरनाय॥
पढ़िकै चिट्ठी मलखेठाकुर औ यहबोले बचनसुनाय १३९
हम समुझावा भल ऊदन का सिरसा बसो बनाफरराय॥

कहा न माना आल्हा ऊदन खन्दकपरे लहुरवाभाय १४०
मनते हमरे यह आवति है की बूँदी का जाय वलाय॥
जैसो कीन्हेनि तस फलपायनि दूनोंभाय वनाफरराय १४१
करैं तयारी नहिं बूँदी की तवहूं ठीक नहीं ठहराय॥
इतना कहिकै मलखेठाकुर फौजनहुकुमदीनकरवाय १४२
करो तयारी सव बूँदी की खन्दक परा लहुरवाभाय॥
इतना कहिकै मलखेठाकुर अपने महल पहूँचेजाय १४३
पाढ़िकै चिट्ठी गजमोतिनि को मलखे हाल दीन समुझाय॥
हम ना जैबे अव बूँदी का प्यारी साँच दीन वतलाय १४४
इतना सुनिकै प्यारी वोली दोऊ हाथ जोरि शिरनाय॥
आजु साँकरा वघऊदन का स्वामीगाढ़े होउ सहाय १४५
विना सहायक अव दादा को स्वामीदुःख होय अधिकाय॥
आजु साँकरा है दादापर यहुदिनपरीरोज ना आय १४६
ध्याना सहिवे घवरानिन का होई पीर रोज अधिकार॥
धर्म विहीनी हीनी ह्वैकै जीनो जन्मजन्मधिक्कार १४७
धर्म न रैहै जव देही मा करि है कौन्दकाहि उपकार॥
धर्म निशाना मर्दाना है अर्जुनसकहदीनोकसरदार १४८
सारथि कीन्ह्यो नारायण जू धु[illegible] महराज॥
वुद्धीद्वारा करि दिखलावा त[illegible]ककेकाज १४९
करौं किहानी जो पूरी मैं त[illegible]सन्थ वड़ा विस्तार॥
सुनी किहानी जो विप्रन ते सोई कहौं सत्य भर्तार १५०
ह्वैवे दवाई दुखदाई यह नींवी हरै अनेकन रोग॥
जो कोउ पीवै चंगा होवै पाको कैस नीक संयोग १५१
धर्म दवाइन के पीवे मा स्वामिन सत्य सत्य आरोग॥

ताते जावो तुम बूँदी को होवै पूर हमारो भोग १५२
बातैं सुनिकै गजमोतिनि की मलखे धरा पीठिपर हाथ ॥
होय पियारी अस नारी जो तबहीं रहै धर्म की पाथ १५३
बड़ी पियारी निज नारी को मलखे बार बार समुझाय ॥
गये दुवारा फिरि माता घर चलिभेचरणकमलशिरनाय १५४
घोड़ी कबुतरीपर चढ़ि बैठे डंका तुरत दीन बजवाय ॥
लैकै लश्कर मोहबे आये जहँ पर रहैं चँदेलेराय १५५
आय सिंहासन के लगभग में ठाढ़े भये शीश को नाय ॥
आल्हा ऊदन की गाथा को मलखे गये तहाँ परगाय १५६
भयो बुलौवा हम ब्रह्माका आयसु काहमिलै महराज ॥
परम दयालू चित तुम्हरो है स्वामीपूँछि करौं मैं काज १५७
गुरु पितु भ्राता अरु त्राता तुम हमरे सदा चँदेलेराय ॥
आज्ञापावों महराजा कै तौ ऊदनका लवों छुड़ाय १५८
सुनिकै बातैं मलखाने की आयसु दीन रजापरिमाल ॥
लैकै ब्रह्माको जावो तुम दूनों बहू हमारेबाल १५९
माथनाकै महराजा को मल्हना महल पहूँचे जाय ॥
चिट्ठी पढ़िकै तहँ आल्हा की मलखेदीनसकलसमुझाय १६०
विपदा सुनिकै बघऊदन कै मल्हना रोयदीन त्यहिबार ॥
हाथ पकरिकै फिरि ब्रह्माको बोली लेउ पूत तलवार १६१
क्षत्री ह्वैकै समर सकावै जावै तुरत नरक के द्वार ॥
परम पियारे सुतजावो तुम हमरो पूरहोय उपकार १६२
इतना सुनिकै ब्रह्मा ठाकुर अपनी लीन ढाल तलवार ॥
बिदा मांगिकै पितु मातासों दोऊ चलत भये सरदार १६३
सजिगा घोड़ा हरनागर जो तापर ब्रह्मा भये सवार ॥

घोड़ी कबुतरी की पीठीपर मलखे सिरसाका सरदार १६४
बाजे डंका अहतंका के वंका चले शूर त्यहि वार ॥
शङ्का फंका करि डंका तहँ बाजे घोर शोर ललकार १६५
रहा कलङ्का नहिं देही माँ ऐसे कहत चलैं असवार ॥
पंद्रादिनका धावा करिकै बूँदी निकट गये सरदार १६६
झील देखिकै मलखाने ने तम्बू तहाँ दीन गड़वाय ॥
लाले पीले नीले काले सबरँग ध्वजा रहे फहराय १६७
खेत छूटिगा दिननायक सों झंडा गड़ा निशाको आय ॥
तारागण कछु चमकन लागे पक्षी चले वसेरन धाय १६८
परे आलसी खटिया तकि तकि संतन धुनी दीन परचाय ॥
भसम लगायो सब अंगन में ध्यायो चरितपुरातनगाय१६९
शिवा रमा ब्रह्माणी पति के मनमें चरित रहे मुलगाय ॥
बड़े यशस्वी पितु अपने के दोऊचरणकमलकोध्याय १७०
करों तरंग यहां सों पूरण दोऊ गणपतिचरण मनाय ॥
राम रमा मिलि दर्शन देवैं लेवैं आपन मोहिं बनाय १७१

इति श्रीलखनऊनिवासि (सी,आई,ई) मुंशी नवलकिशोरात्मजबाबूप्रयाग
नारायणजीकीआज्ञानुसारउन्नामप्रदेशान्तर्गत पँड़रीकलां निवासि
मिश्रवंशोद्भव बुधकृपाशङ्करसूनु पं० ललितापसादकृत मलखान
चढ़ाईवर्णनोनामप्रथमस्तरंगः १ ॥

सवैया ॥

सत्यहैं वेद पुराण सबै मति एक असत्य यहै लखिपावा ।
मतिही के असत्य असत्य सबै यह सत्यहि २ सत्य बतावा ॥
वेद पुराणन भूलनहीं यह भूल असत्य मती ठहरावा ।
ललिते मति सत्यासत्य निवारण वेद पुराणन ने दर्शावा १

सुमिरन ॥

बेदन ध्यावों सामबेद को विप्रन परशुराम महराज ॥
क्षत्रिन ध्यावों रामकृष्ण को बैश्यन नन्दभये शिरताज १
शूद्रन ध्यावों मैं निषाद को कीशन पवनतनय बलवान ॥
ईशन ध्यावों शिवशङ्कर को शीशनबढ़ा दशानन ज्वान २
ध्याय नदीशनमें बड़वानल पक्षिन बैनतेय महराज ॥
ध्याय गिरीशन में हिमपर्वत नारिन जनकसुता शिरताज ३
क्वाँरिन ध्यावें हम राधाको राखैं सदा हमारी लाज ॥
परम पियारी यदुनन्दन की हमरी माननीय शिरताज ४
सबै पुस्तकन में दुर्गा जी अबहूं बिप्रन की रखवार ॥
छूटि सुमिरनी गै ह्याँते अब बूँदी हाल सुनो यहिबार ५

अथ कथाप्रसंग ॥

देखिकै फौजै मलखाने की बोला तुरत कनौजीराय ॥
फौजै आई हैं बूँदी ते आल्हा देखु भीर अधिकाय १
चिट्ठी पठई तुम सिरसा को आये नहीं बीर मलखान ॥
कैसी करिहौ यहि समया में आल्हा समरभूमि मैदान २
सुनिकै बातैं महराजा की आल्हा बोले शीश नवाय ॥
मुर्चा बन्दी अब करवावो चर्खन तोप देउ चढ़वाय ३
तबलग धावन सिरसावाला आल्हा फौज पहूंचा आय ॥
शीश नायकै सो आल्हा को मलखे आवन दीन बताय ४
दीन इनामै त्यहि धावन को ब्रह्मा मलखे लीन बुलाय ॥
खबरि पायकै सो आल्हा की दूनों गये तहाँ पर आय ५
बड़ी खातिरी जैचँद कीन्ह्यो अपने पास लीन बैठाय ॥
खबरि बताई सब बूँदी की जयचँद बार बार पछिताय ६

मलखे बोले तब राजा ते साँची सुनो कनोजीराय ॥
उत्तर दक्षिण पूरब पश्चिम चारो दिशा लेउ ब्यरवाय ७
तुमतो लड़ियो उत्तर दिशिको दक्षिण समर करब हम आय ॥
कछुदल पठवो पूरब पश्चिम बूँदी शहर लेउ घिरवाय ८
इतना कहिकै मलखे ब्रह्मा फौजन फेरि पहूंचे आय ॥
बाजे डंका कनवजिया के हाहाकार शब्दगा छाय ६
बिनही डंका के मलखाने दक्षिण दिशा पहूंचे जाय ॥
भ्वती जवाहिर उत्तर दिशिमाँ लैकै फौजगयो फिरिआय १०
तोपैं धरिगईं फिरि चर्खन में तिनमें बत्तीदई लगाय ॥
छूटे गोला हाहाकारी धुवनारहा सरगमें छाय ११
लागे गोला ज्यहि क्षत्री के मानो गिरह कबूतरखाय ॥
गोला लागै ज्यहि घोड़ाके आधे सरगालिहे मड़राय १२
लागे गोला ज्यहि हाथी के चुप्पे देवै भूमि बिछाय ॥
जौने ऊंटके गोला लागे सो मुहभरा तुरतगिरिजाय १३
अररर अररर गोला छूटैं जैसे प्रलय मेघ घहराय ॥
जौने रथमाँ गोला लागै पहियाधुरीसहितउड़िजाय १४
बड़ी दुर्दशा भै तोपन में तब फिरि मारुबन्द ह्वैजाय ॥
दुनो गोल आगे का बढ़िगे मुर्चा परा बरोबरि आय १५
कल्ला भिड़िगे असवारन के घोड़न भिड़ी रानमें रान ॥
सूंड़ि लपेटा हाथी भिड़िगे लाग्यो होन घोर घमसान १६
कउँधालपकनिबिजुलीचमकनि रणमाँ चमाचम्म तलवार ॥
झल्झल्झल्झल् छूरीझलकैं भारी ढालनकी ठनकार १७
धम्धम्धम्धम् बजैं नगारा मारा मारा परै सुनाय ॥
न सन्सन्सन् गोली सनकैं तेगा मन्न मन्न मन्नाय १८

मारु मारु करि मोहरि बाजे बाजे हाव हाव करनाल॥
बड़ी लड़ाई भै बूँदीमाँ जूझे बड़े बड़े नरपाल १९
पैदल पैदल कै बरणी भै औ असवार साथ असवार॥
झोताखानी चलैं कटारी ऊनाचलै बिलाइति क्यार २०
कटिकटि कल्ला गिरैं खेतमाँ उठि उठि फेरि करैं तलवार॥
ना मुहँ फेरैं कनउज वाले ना ई बूँदी के सरदार २१
ब्रह्मा मलखे दक्षिण दिशिसों पहुँचे बीच शहरमें आय॥
बड़ा कुलाहल भा बूँदी माँ काहू धीर धरा ना जाय २२
लीन्हे फौजै मलखाने फिरि फाटक उपर पहूँचा जाय॥
औ कहि पठवा गंगाधर को सबकी कैद देउ छुटवाय २३
नाहीं बचिहौ ना महलन माँ बूँदी शहर देउँ फुँकवाय॥
सुना सँदेशा महराजा जब मनमाँ बार बार पछिताय २४
पै जब सूझी कछु मनमाँ ना सबकी कैद दीन छुटवाय॥
घायल करहाति ऊदन लाखनि मलखे पास पहूँचे आय २५
मिला भेंट करि सब आपस में उत्तर दिशा चले हर्षाय॥
एक तरफ सों जयचँद राजा दुसरी तरफ बनाफरराय २६
म्वती जवाहिर परे बीचमाँ सबके गयी प्राणपर आय॥
बड़ी लड़ाई भै बूँदी मा अद्भुत समर कहा ना जाय २७
मारे मारे तलवारिन के नदिया वही रक्तकी धार॥
मुण्डन केरे मुड़चौड़ा भे औ रुण्डन के लगे पहार २८
घोड़मनोहर की पीठी सों देवा गरू देय ललकार॥
चढ़ा कबुतरी पर मलखाने ऊदन बेंदुलपर असवार २९
भयो जवाहिर फिरि सम्मुख माँ लीन्हे तीनिलाख असवार॥
का गति बरणों मैं मोती के दूनों हाथ करै तलवार ३०

भीरातात्हन बनरस वाला सिर्गा घोड़े पर असवार॥
अल्ला अल्ला औ बिसमिल्ला करिकै खूब मचाई रार ३१
झुके सिपाही बूँदी वाले दोऊ हाथ करैं तलवार॥
बड़े लड़ैया मुहबेवाले एकते एक शूर सरदार ३२
येऊ मारैं औ ललकारैं हारैं नहीं तहाँ पर ज्वान॥
छोंड़ि आसरा जिंदगानी का क्षत्रिन खूब कीन मैदान ३३
दूनों दिशि की तहँ मारुन माँ क्षत्री बूँदी के हैरान॥
तीनि लाख बूँदीके ठाकुर ह्वैगे समर भूमि वैरान ३४
म्वती जवाहिर त्यहिसमया माँ दूनों भाय गये घबड़ाय॥
मलखे ठाकुर त्यहि औसर माँ तिनका कैदलीन करवाय ३५
भागि सिपाही अरभ्रारातब अपने अपने लिहे परान॥
जीति के डंका तब बजवाये नाहर समरधनी मलखान ३६
राजा जयचँद के तम्बू माँ पहुँचे सबै शूर सरदार॥
को गति बरणै त्यहि समयाकै भारी लाग राजदरबार ३७
जितने घायल अपनी दिशिके सबको तुरतलीन उठवाय॥
मलहम पट्टी तिन क्षत्रिन के घायन ऊपर दीन कराय ३८
सुनी हकीकति जब गंगाधर मनमाँ बारबार पछिताय॥
मेलछांड़िकै त्यहि औसर माँ और न कछू ठीक ठहराय ३९
लिखिकै चिट्ठी त्यहि समयामाँ जयचँद पास दीनपठवाय॥
कैदी छोंड़ो दोउ पुत्रनको भाँवरि तुरत लेउ करवाय ४०
जहँना तम्बू महराजा का धावन तहाँ पहूँचा आय॥
चिट्ठी दीन्ह्यो महराजाको दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ४१
पढ़िकै चिट्ठी जयचँदराजा तुरतै सबका दीनसुनाय॥
सम्मत सबकै तब याही भै कैदी देउ पुत्र छुड़वाय ४२

म्वती जवाहिर दोउ पुत्रन को राजा तुरत लीन बुलवाय॥
लिखी हकीकति जो गंगाधर तिनको तुरतदीन बतलाय ४३
गंगा कैलेउ तुम तम्बुन माँ तुम्हरी कैद देइँ छुड़वाय॥
सुनिकै बातैं ये जयचँदकी दोऊ गंगा लीन उठाय ४४
तब छुड़वायो जयचँद राजा पहुँचे धाम आपने जाय॥
सम्मत कीन्ह्यो फिरि गंगाधर मड़ये मूड़ लेब कटवाय ४५
अकसर लड़िकाको लै आवो जावो पूत जवाहिरलाल॥
सुनिकै तुरतै सो गमनत भा आयो जहाँ बैठ नरपाल ४६
कहि समुझायो सब राजा को दोऊ चरणन शीश नवाय॥
अकसर लड़िका को पठवावो सवियाँ शंका देउ भुलाय ४७
इतना सुनिकै मलखे बोले राजन हुकुम देउ फरमाय॥
पांच सात मिलि हमअब जैबे भौंरी तुरत देब करवाय ४८
सुनिकै बातैं मलखाने की आयसु दीन कनौजीराय॥
बैठि पालकी में लखराना देबी फूलमती को ध्याय ४९
आल्हा ऊदन मलखे ब्रह्मा देबा बनरस का सरदार॥
गंगा मामा लखराना का सोऊ बांधि लीन हथियार ५०

सवैया॥

ते सरदार सबै चलिकै फिरि भीतर भौन के जाय सिधाये।
सुन्दर आसन डारितहाँ नृप आदर भाव किये अधिकाये॥
पण्डित आयकै बैठि गयो गठिबन्धन हेतु सुता बुलवाये।
सातसुहागिल आय तहाँ ललिते मन मोदन गीत सुनाये ५१

पहिली भौंवरिके परतै खन क्षत्री आये आध हजार॥
आल्हा ऊदन मलखे ब्रह्मा इनहुन खैंचि लीन तलवार ५२

आधे आँगन भाँवरि होवैं आधे होय भड़ाभड़ मार ॥
मारे मारे तलवारिन के आँगन बही रक्त की धार ५३
काटिकै कल्ला दुइ पल्ला करि लल्ला वच्छराज के लाल ॥
लड़ैं इकल्ला अति हल्लाकरि अल्ला खैर करैं त्यहिकाल ५४
भा खलभल्ला औ हल्ला अति वल्लन क्यार मनो त्यवहार ॥
काटि बजुल्ला सोने छल्ला लल्ला उदयसिंह सरदार ५५
हनि हनि मारे औ ललकारे देवा मैनपुरी चौहान ॥
म्रती जवाहिर दूनों भाई लीन्हे तहाँ अनेकन ज्वान ५६
बड़ी लड़ाई करिहारे तहँ पै नहिं विजय परी दिखराय ॥
तब पछितान्यो फिरि गंगाधर दीन्ह्यो मारु वन्द करवाय ५७
कन्या दान दीन आनँद सों नेगिन नेग दीन हर्षाय ॥
सातो भाँवरि पूरी करिकै पूरा ब्याह दीन करवाय ५८
बिदा न करिबे हम ब्याहे में लीन्ह्यो गवन सालमें आय ॥
इतना कहिकै गंगाधर जी दायज खूबदीन अधिकाय ५९
बात मानिकै चन्देले फिरि तहँ ते कूच दीन करवाय ॥
बिदा मांगिकै मलखे ब्रह्मा पहुँचे नगर मोहोबे आय ६०
बाजत डंका अहतंका के कनउज गये कनौजी आय ॥
अनँद बधैया घर घर बाजीं मंगल गीतरही सब गाय ६१
रानी तिलका त्यहिअवसर में बिप्रन दान दीन अधिकाय ॥
चर्ची[1] शारदा के बरदानी दूनों भाय बनाफरराय ६२

सवैया ॥

गावत गीत सबै तिनको जिनको कछु ज्ञान बलै अधिकाई ।

१-(चर्ची) देवी का नाम है ॥

ते मनमाँझ विचारकरैं औ धरैं मनमें प्रभुकी प्रभुताई ॥
त्यागत झूँठ प्रपञ्च सबै औ जबै मन भासत हैं रघुराई ।
नाशत पाप सबै ललिते फलिते जगधर्म कि बेलि सदाई६३

सोई मन्तर मन अन्तर धरि यन्तर धर्म बनाफरराय ॥
बड़ी बड़ाई कनउज पायो कीरति रही आजलों छाय ६४
बिपदा सहिकै यहि दुनियामा त्यागा धर्म नहीं कहुँभाय ॥
तासों बेली यह फैली अति सुन्दर धर्म रूप जलपाय ६५
अधरम बेली दुरयोधन की छैलिकै लीन जगतकोछाय ॥
तैसे रावण कंसासुरहू बाढ़्यो धनै बलै अधिकाय ६६
रीछ बँदरवा ग्वालन बालन दूनन दीन्ह्यो तुरत नशाय ॥
तासों चहिये यहि दुनियामाँ नितप्रतिनवतनवत नैजाय६७
धन बल बाढ़ै त्यहि दुनियामाँ कीरति जाय धरामें छाय ॥
खेत छूटिगा दिननायक सों झंडागड़ा निशाकोआय ६८
तारागण सब चमकन लागे संतन धुनी दीन परचाय ॥
परे आलसी खटिया तकितकि घोंघों करठ रहे घर्राय ६९
आशिर्बाद देउँ मुंशीसुत जीवो प्रागनरायण भाय ॥
हुकुम तुम्हारो जो पावत ना ललिते कहतकथाकस गाय७०
रहै समुन्दर में जबलों जल जबलों रहैं चन्द औ सूर ॥
मालिक ललिते के तबलों तुम यशसों रहौ सदा भरपूर ७१
माथ नवावों पितु अपने को जिनबल गाथ भई यह पार ॥
जैसे सेयो बालापन में तैसे सदा होउ रखवार ७२
जल थल जन्मों चहु पहाड़ में स्वामी होयँ राम भगवान ॥
यह वर पावैं ललिते पण्डित खण्डित होय न हमरी बान ७३

पूर विवाह भयो लाखनि को ह्याँते करों तरँगको अन्त ॥
राम रमा मिलि दर्शन देवैं इच्छा यही भवानी कन्त ७४

इति श्रीलखनऊनिवासि (सी,आई,ई) मुंशीनवलकिशोरात्मजबाबूप्रयागनारायण
जीकी आज्ञानुसार उन्नामप्रदेशान्तर्गत पँड़रीकलांनिवासि मिश्र
वंशोद्भवबुध कृपाशङ्करसूनु पण्डितललिताप्रसादकृत लाखनि
पाणिग्रहणवर्णनोनामद्वितीयस्तरंगः २ ॥

लाखनिरानाजीका विवाह सम्पूर्ण ॥

इति ॥

अथ आल्हखण्ड ॥

गाँजर की लड़ाईका प्रारम्भ ॥

सवैया ॥

दानिन में बलि औ हरिचन्द शिवी दधि कर्ण इन्ही यश पाये।
बीरन में गिनती रघुबीर औ धीरन कृष्ण युधिष्ठिर गाये॥
पापिन औ परितापिन में जग कंस दशानन बीर सुनाये।
जापिन योग उदार अपार सदाशिवही ललिते मन आये १

सुमिरन ॥

प्रथमैं ध्यावों श्री गणेश को लीन्हे सुभग पुस्तकी हाथ॥
करों बन्दना शिवशंकर की दूनों धरों चरणपर माथ १
देवि दूर्गा को ध्यावों फिरि लैकै रामचन्द्र को नाम॥
कीरति गावों मैं ऊदन कै पूरणकरो हमारो काम २
देवि शारदा मइहरवाली मनियादेव महोबे केर॥
ध्यावों ललिता नैमिपार की माता मोरि दीनता हेर ३
नहीं बीरता कछु मोमें है तव बल धरी धीरता हीय॥

कीरति तुम्हरी जो कोउ गावै पावै वहै चहै जो जीय ४
निरभय होवै घर बाहर सों केवल करै तुम्हारी आश ॥
बन्धन छूटैं सब दुनियाँ के यमकी परै गले नहिं पाश ५
छूटि सुमिरनी गै याँते अब सुनिये गाँजर केर हवाल ॥
साजिकै फौजै ऊदन चलि हैं लड़ि हैं बड़े बड़े नरपाल ६

अथ कथाप्रसंग ॥

जैचन्द राजा कनउज वाला आला सकलजगत सरनाम ॥
लागि कचहरी त्यहि राजा कै सोहै सोन सरिस त्यहिधाम १
को गति बरणै त्यहि मन्दिरकै ज्यहिमाँ भरी लाग दर्बार ॥
आस पास माँ राजा सोहैं बीचम कनउज का सरदार २
बनासिंहासन है सोने का हीरा पन्ना करैं वहार ॥
तामें बैठे जैचन्द बोले सुनिये सकल शूर सरदार ३
बारह बरसन का अरसा भा पैसा मिला न गाँजर क्यार ॥
कौन शूरमा मोरे दलमाँ नङ्गी काढ़िलेय तलवार ४
करै बन्दगी तलवारी सों औ गाँजर को होय तयार ॥
सुनिकै बातैं ये जैचँदकी झुकिगे सकल शूर सरदार ५
झुका डुलरुवानहिं द्यावलिका औ आल्हाक लहुरवाभाय ॥
सुनिकै बातैं ये जैचँद की नैना अग्निवरण ह्वैजायँ ६
सबदिशिताक्यो सबक्षत्रिनको सबहिन लीन्ह्यो मूड़नवाय ॥
उठा डुलरुवा तब द्यावलिको औ आल्हा को शीशनवाय ७
सुमिरि भवानी जगदम्बा को म्यान ते खैंचिलीन तलवार ॥
किह्यो बन्दगी फिर राजा को यहु द्यावलिको राजकुमार ८
हाथ जोरिकै बोलन लाग्यो सुनिये विनय कनौजीराय ॥
लाखनि राना सँगमाँ दीजै लीजै पैसा सकल मँगाय ९

बिना हकीकी लखराना के पैसा कौन तसीलै जाय॥
साथ में होवें लखराना जो तम्बू बैठे लेयँ मँगाय १०
लड़ै भिड़ै को जिम्मा हमरो इन को बार न बाँको जाय॥
हुकुम जो पावों महराजा को गाँजर अबै पहूँचों जाय ११
सुनिकै बातैं बघऊदन की बोला कनउज को सरदार॥
सोरह रानिन में इकलौतो मेरो लाखनि राजकुमार १२
सो नहिं जैहै चढ़ि गाँजर को पैसा मिलै चहौ रहिजाय॥
सुनिकै बातैं ये जैचँद की बोला तुरत बनाफरराय १३
क्षत्री राजा यह नहिं सोचैं मानो सत्य बचन महराज॥
रही न देही रामचन्द्र के रहि ना गये कृष्ण यदुराज १४
यशै इकेलो जग में रहिगो गावैं तीनलोक तिहुँकाल॥
तासों देवो सँग लाखनि को सोचो कछू नहीं नरपाल १५
सुनिकै बातैं ये ऊदन की जैचँद हुकुम दिन फरमाय॥
हुकुम पायकै महराजा को लाखनि ढिगै पहूँचो जाय १६
कही हकीकति सबजैचँदकी यहु ग्यावालिको राजकुमार॥
सुनिकै बातैं बघऊदन की लाखनि बेगि भयो तय्यार १७
चोबदार को फिर बुलवायो ताको दीनो हुकुम सुनाय॥
पिटै ढिंढोरा अब कनउज माँ सजिकै फौज आयसबजाय १८
सुनिकै बातैं लखराना की दौरत चोबदार चलिजाय॥
ढोल बजाई गै कनउज माँ सब का खबरि दीन पहुँचाय १९
खबरि पायकै सब क्षत्री दल तुरतै सजन लागि सरदार॥
हथी महाउत हाथी लैकै तिनका करनलागि तय्यार २०
अंगद पंगद मकुना भौंरा हाथी भूमा दीन विठाय॥
चुम्बक पत्थर का हौदा धरि जामें सेल वरौंचा खाय २१

रेशम रस्सन सों कसिकै फिरि आँखों सीढ़ी दीन लगाय॥
बारह कलशन की अम्बारी तिनपर धरी तुरतही जाय २१
घण्टा बांधे तिन के गर माँ क्षत्री होन लागि असवार॥
भूरी हथिनी लखराना की सोऊ बेगि भई तय्यार २२
चन्दन सीढ़ी तामें लागी वामें लाखनि भये सवार॥
हाथी सजिगा जब आल्हा का हाथ म लई ढाल तरवार २४
मनमाँ सुमिर्‌यो जगदम्बा का अम्बा लाज तुम्हारे हाथ॥
बैठ्यो हाथी पर आल्हा जब नायो रामचन्द्र को माथ २५
हथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे घोड़न होन लागि असवार॥
घोड़ बेंदुला की पीठी पर चढ़िगो द्यावलिकेर कुमार २६
घोड़ पपीहा मोहबे वालो तापर जोगा भयो सवार॥
हंसामनि घोड़ा के ऊपर इन्दल आल्हा केर कुमार २७
घोड़ मनोहर पर देबा है भोगा सबजा पर असवार॥
या बिधि सेना सब इकठौरी बारहलाख भई तय्यार २८
मारू डङ्का बाजन लागे घूमन लागे लाल निशान॥
कऊ नालकिन कऊ पालकिन कोऊ चढ़े साँड़िया ज्वान २९
आगे हलका है हाथिन का बलका तिनके नाहिं ठिकान॥
घण्टा बाजैं गल हाथिन के जहँ सुनिपरैबात नहिंकान ३०
चिघरति हाथी आगे चलि भे पाछे घोड़न चली कतार॥
सरपट घोड़ा कोउ दउरावै कावा देवै कोऊ सवार ३१
कोउ मन पावै असवारे का तौ असमान पहूँचै जाय॥
कोउ कोउ घोड़ा हंस चालपर कोउकोउमोरचालपरजाय ३२
खर खर खर खर कै रथ दौरैं चह चह रहीं धुरी चिल्लाय॥
छायअँधेरिया गै दशहूदिशि आपनपरै न हाथ दिखाय ३३

डगमग डगमग धरती हाली थर थर शेष गये थर्राय॥
देव सकाने बहु डरमाने पर्वत खोह छिपाने जाय ३४
को गति बरणै बघऊदन के आगे घोड़ नचावत जाय॥
धीरे धीरे छत्तिस दिन में गोरख पुरै पहूँचे आय ३५
पाँच कोस जब बिरिया रहिगइ डेरा तहाँ दीन डरवाय॥
ऊँची टिकुरिन तम्बू गड़िगे नीचे लगीं बजारैं आय ३६
कम्मर छोरयो रजपूतन ने भीलम बखतर डेरे उतार॥
तंग बछेड़न के छोरेगे हाथिन उतरिपरे असवार ३७
झण्डा गड़िगे तम्बुन ढिग में ते सब आसमान फहरायँ॥
लागि कचहरी गै लाखनि कै बीच म बैठ बनाफरराय ३८
कलम दवाइत को मँगवायो कागज तुरतै लीन उठाय॥
लिखी हकीकतिसब हिरसिंहको अब तुम खबरदार ह्वैजाय ३९
बारह बरसै पूरी ह्वैगईं पैसादिह्यो न कनउज जाय॥
अब चढ़ि आये उदयसिंह हैं साथै लिहे कनौजीराय ४०
धरम छत्तिरिन के नाहीं ये धोखे डाँड़ दबावैं आय॥
लैकै पैसा बरह बरस का छाँपै बेगि देउ चुकवाय ४१
नहिं भोर भ्वरहरे पहके फाटत सबियाँ बिरिया लेउँ लुटाय॥
बाँधिकै मुशकैं मैं हिरसिंह की कनउज तुरत देव पहुँचाय ४२
लिखि परवाना दै धावन को ऊदन करन लाग बिश्राम॥
लै परवाना धावन चलिभो हिरसिंह बैठरहै निजधाम ४३
लै परवाना अटि धावन गो जायकै द्वारपाल को दीन॥
लै परवाना द्वारपाल गो हिरसिंहनाम हाथ लैलीन ४४
खोलि लिफाफा सों कागजको आँकुइ आँकु बांचिसबलीन॥
उत्तरलिखिकै हिरसिंह राजा तुरतै द्वारपालको दीन ४५

उत्तर लैकै द्वारपाल ने दीन्ह्यो धावन हाथ गहाय॥
चलिकै धावन तब बिरिया ते पहुँचो उदयसिंहढिगआय ४६
शीश नवायो त्यहि ऊदन को कागज दिह्यो हाथ में जाय॥
पढ़िकै कागज को बघऊदन औ लाखनिकोदीनसुनाय ४७
सुनिकै कागज को लखराना नैना अग्निवरण ह्वैजायँ॥
हुकुम लगायो निज फौजन में तोपन बिरिया देव उड़ाय ४८
हुकुम पायकै लखराना को झिलमैंपहिरि सिपाहिनलीन॥
धरिकै कुंडी लोहेवाली पाछे ढाल गैंड़ की कीन ४९
यक यक भाला दुइ दुइ बरछी कम्मर कसी तीन तलवारि॥
जोड़ी तमंचा औ पिस्तौलैं बांधी छूरी और कटारि ५०
धरि बंदूखन को कांधे पर क्षत्री भये वेगि तय्यार॥
हथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे बांके घोड़न भे असवार ५१
रणकी मौहरि बाजन लागी रणके होन लाग व्यवहार॥
ढाढ़ी करखा बोलन लागे विप्रन कीन वेद उच्चार ५२
हिंया हकीकति ऐसी गुजरी अब बिरिया का सुनौहवाल॥
तुरत नगड़ची को बुलवायो हिरसिंहबिरियाकोनरपाल ५३
हुकुम पायकै सो ठाकुर को तुरतै अटा भौन में जाय॥
धर्‌यो नगाड़ा को सॅंड़ियापर डंका तुरत बजायो धाय ५४
पहिल नगाड़ा में जिनबन्दी दुसरे बांधि लीन हथियार॥
तिसर नगाड़ा के बाजत खन क्षत्री भये सबै तय्यार ५५
हिरसिंह विरसिंह दूनों भाई हाथिन ऊपर भये सवार॥
तोपैं सजिकै आगे चलि भइँ पाछे हाथिन केर कतार ५६
चला रिसाला घोड़नवाला पाछे ऊँटन के असवार॥
चले सिपाही त्यहिके पाछे खबर चलिभे डेढ़ हजार ५७

कूच के डङ्का बाजन लाग्यो घूमनलाग्यो लालनिशान ॥
दाढ़ी करखा बोलन लागे बन्दी कीन समरपद गान ५८
मारु मारु करि मोहरि बाजीं बाजीं हाव हाव करनाल ॥
हिरसिंह बिरसिंह दोऊभाई पहुंचे समरभूमि ततकाल ५९
पहिले मारुइ भईं तोपन की गोलंदाज भये हुशियार ॥
बम्ब के गोला छूटन लागे सीताराम लगैहैं पार ६०
जौने हाथी के गोला लागै मानो चोर सेंधि कैजाय ॥
जौने ऊंट के गोला लागै सारेक कूल जुदा ह्वइजाय ६१
जौने बछेड़ा के गोला लागै मानों मगर कुल्याँचै खाय ॥
गोला लागै ज्यहि क्षत्री के साथै उड़ा चील्ह असजाय ६२
जौने रथमाँ गोला लागैं ताके टूक टूक ह्वैजायँ ॥
जौने बैलके गोला लागैं मानों गिरह कबूतर खायँ ६३
जौने अँगमाँ गोला लागैं तरवर पात अइस गिरिजाय ॥
चुकीं बरूदैं जब तोपन की तब फिरि मारु बन्दह्वैजाय ६४
उठीं बँदूखैं बादलपुर की जो नब्बे की एक बिकाय ॥
मघाकी बूंदन गोली बरषैं क्षत्रिन दीन्हों झरी लगाय ६५
सन् सन् सन् सन् गोली छूटैं क्षत्रिन लगैं करेजे जाय ॥
पार निकरिकै सो छातिन के देहीम करैं अनेकन घाय ६६
गिरैं कगारा जस नदिया माँ तैसे गिरैं ऊँट गज धाय ॥
गिरैं मुहभरा कितनेउँ क्षत्री कितनेउँ भागैं पीठिदिखाय ६७
दूनों दल आगे को बढ़िगे परिगो समर बरोबरि आय ॥
को गति बरणै त्यहि समया कै हमरे बूत कही ना जाय ६८
सूंड़ि लपेटा हाथी भिड़िगे अंकुश भिड़े महौतन केरि ॥
हौदा हौदा यकमिल ह्वइगे मारैं एक एक को हेरि ६९

पहिया रथके रथमाँ भिड़िगे घोड़न भिड़ी रान में रान॥
भाला छूटे असवारन के मारैं एक एक को ज्वान ७०
ऊँट चढ़ैया ऊँटन भिड़िगे पैदर चलन लागि तलवारि॥
भुजा औ छाती में हनि मारैं कउशिर काटिदेइँ भुइँडारि ७१
बड़ी लड़ाई भै क्षत्रिन कै नदिया बही रक्त की धार॥
लड़ि लड़ि हाथी तामें गिरिगे छोटे द्वीपन के अनुहार ७२
छुरी कटारी मछली जानो ढालैं कछुवा मनो अपार॥
कटि कटि बार बहैं शूरन के जस नदियामाँ बहै सिवार ७३
भुजा छत्तिरिन के ग्राहै जस ऊँटन बँधिगे नदी कगार॥
बिना पैरके बहैं बछेड़ा मानों घूमैं मगर अपार ७४
बिना मूड़ के क्षत्री बहि बहि छोटीडोंगिया सम उतरायँ॥
गिद्ध काग सब तिन पर सो हैं मानों जल विहारको जायँ ७५
नचैं योगिनी खप्पर भरि भरि मज्जैं भूत प्रेत बैताल॥
कुत्तन गरमा आँतनमाला स्यारनसबनकीन मुहँलाल७६
यही समइया यहिअवसर माँ यहु द्याबलिको राजकुमार॥
गरुई हाँकन सों ललकारै मारै भुजा ताकि तलवार ७७
द्याबा ब्वालै तब ऊदन ते ऊदन सुनिल्यो कानलगाय॥
आगे क्षत्रिन का मार्यो ना नाहिं सब क्षत्रीधर्म नशाय ७८
हाथ सिपाहिन पर डार्यो ना जब लग ढूँढ़ि मिलै सरदार॥
कउँधालपकनिबिजुलीचमकनि आपौ खैंचिलीन तलवार७६
देवा ऊदन के मारुन मा क्षत्री होन लागि खरिहान॥
हिरसिंह बिरसिंह दोऊ कोपे तिनहुनकीनघोरघमसान ८०
बड़ी लड़ाई भै बिरिया माँ हमरे बूतकही ना जाय॥
जितने कायर रहैं फौजन माँ तर लोथिनके रहे लुकाय ८१

भाला आवैं जब हाथिन के तब बिन मरे मौत ह्वैजाय ॥
कोउ कोउ रोवैं महतारिन का कोउ २ दुलहिनिकालुलुआँयँ८२
कायर बिनवैं यह सुर्य्यन सों बाबा आजु अस्त ह्वइजाउ ॥
राति अँधेरिया जो कै पाऊँ भागिकैतीसकोसघरजाउँ ८३
माठा रोटी घरमाँ खावैं आपनि भैंसि चरावन जायँ ॥
ऐसि नौकरी हम करिहैं ना करण्डा बेंचि शहरमाखायँ ८४
त्यही समइया त्यहि अवसर माँ हिरसिंह बोल्यो भुजाउठाय ॥
बनते कन्या धरि आईती त्यहिके अहिउ बनाफरराय ८५
अहिउ टुकरहा परिमालिक के औ चंदेले केर गुलाम ॥
जाति गुलामन की हीनी है तुम्हरो नहीं लड़ैको काम ८६
यह कहिभाला नागदवनिको दूनो अँगुरिन लीनउठाय ॥
दूनो अँगुरिन भाला तौले काली नाग ऐस मन्नाय ८७
तारा टूटैं आसमान ते औ हिरगास भुईं ना जायँ ॥
छूटिग भाला जो हाथे ते कम्मर मचा ठनाका आय ८८
तरेते कटिगा यह मछरीबँद ऊपर कटिगा कुलाकबार ॥
बचा दुलरुवा द्यावलि वाला ज्यहिका राखिलीनकर्त्तार ८९
औ ललकाराफिरि हिरसिंहको ठाकुर खबरदार ह्वैजाउ ॥
दूधु लरिकईं मा पायो ना तुम्हरे मरे चढ़ै ना घाउ ९०
वार हमारी सों बचिजायो घरमाँ छठी धरायो जाय ॥
गर्दन ठेंक्यौ फिरि बेंदुल के हौदा उपर पहूँचो धाय ९१
ढालकी औझरिसों हनिमारा हिरसिंह गिरयो मूर्च्छाखाय ॥
तब फिरि बिरसिंह ने ललकारा ऊदन खबरदार ह्वैजाय ९२
भाला बाछिन को बहुमारा ऊदन लीन्ह्यो वार बचाय ॥
वाकिकै मारा फिर बिरसिंह को सोऊ गिरा मूर्च्छा खाय ९३

बाँधिकै मुशकै फिरि दोउनकी कनउज तुरत दीन पहुँचाय ॥
किला जीतिकैफिरि बिरियाको आगे चला बनाफरराय ९४
चारिकोस जब पट्टी रहिगै ऊदन डेरा दीन गड़ाय ॥
सात निराजा पट्टी वालो ताको डाँड़ दबायो जाय ९५
तब हरिकारा पट्टी वाला सातनि खबरि सुनावाआय ॥
गाफिल बैठे तुम महराजा डांड़े फौज परी अधिकाय ९६
इतना सुनिकै सातनि राजा गुप्ती धावन दीन पठाय ॥
हाल पायकै सो फौजन का राजै फेरि सुनावा आय ९७
सुनी हकीकति जब सातनिने डंका तुरतदीन बजवाय ॥
सजे सिपाही पट्टी वाले मनमें श्रीगणेशको ध्याय ९८
हथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे बांके घोड़न भे असवार ॥
झीलमबखतरपहिरि सिपाहिन हाथम लई ढाल तलवार ९९
चढ़िगा हाथीपर महराजा करिकै रामचन्द्र को ध्यान ॥
कूच कराय दयो पट्टी सों घूमतआवैं लाल निशान १००
घरी अढ़ाई के अरसा माँ सम्मुख गयो फौजके आय ॥
आवत दीख्यो जब फौजनको तुरतै उठा बनाफरराय १०१
भुजा उठाये ऊदन बोल्यो गरुई हाँक देत ललकार ॥
सँभरो सँभरो ओ रजपूतो अपने बांधि लेउ हथियार १०२
इतना सुनिकै सब रजपूतन अपनी लई ढाल तलवार ॥
हथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे बाँके घोड़न भे असवार १०३
सजा बेंदुला का चढ़वैया लाला देशराज का लाल ॥
मारु मारु करि मौहरिबाजीं बाजीं हाउ हाउ करनाल १०४
बजे नगारा औ तुरही फिरि ढोलन शब्दकीन्ह बिकराल ॥
शूर सिपाही दुहूँ तरफा के लागेयुद्धकरनत्यहिकाल १०५

पैदल पैदल के बरणी मे ओ असवार साथ असवार ॥
सूँड़ि लपेटा हाथी भिड़िगे अंकुशभिड़े महौतनक्यार १०६
इतसों आगे पट्टी वाला उतसों उदयसिंह सरदार ॥
गज के हौदापर महराजा ऊदन बेंदुल पर असवार १०७
गर्दन ठोंकी जब बेंदुल की हौदा उपर पहूंचा जाय ॥
कलँगी पगड़ी महराजा की ऊदन दीन्ह्यो भूमिगिराय १०८
ओ ललकारा महराजा को पैसा आजदेउ मँगवाय ॥
मारि सिरोहिन ते हनिडारिहौं नेका टकालेउँ निकराय १०९
धोखे जयचँद के भूलेना हमरो नाम बनाफरराय ॥
उदयसिंह दुनिया मा जाहिर सातनिसाँच दीनबतलाय११०
बारह बरसन की बाकी जो सो तू आज देय समुझाय ॥
नहीं तो बचिहै ना संगरमा जो विधिआपुबचावै आय १११
इतना सुनिकै सातनिराजा हौदा उपर ठाढ़ ह्वैजाय ॥
ओ ललकारा बघऊदन का क्षत्री काह गये बौराय ११२
बतियाँ आहिन ना कुम्हड़ा की तर्जनि देखिजायँ कुम्हिलाय ॥
एक बनाफरकै गिन्ती ना लाखन चढ़ैं बनाफरआय ११३
जबलग हड्डिन मा जी रैहै जबलग रही हाथ तलवार ॥
कौड़ी पैसन की बातैं ना देउँ न एक देहुँ का बार ११४
जीना चाहै जो दुनियामा तौफिरि लौटिजाय सरदार ॥
नहिं शिरकटिहैं मैं संगर में ऊदन देखु मोरि तलवार ११५
इतना कहिकै सातनिराजा अपने शूरन कहा सुनाय ॥
जाय न पावैं कनउजवाले इनके देवो मूड़ गिराय ११६
सुनिकै बातैं महराजाकी क्षत्रिन कीन घोरघमसान ॥
भाला बलछी तलवारिन सों मारन लागि खूबतहँज्वान ११७

बहे पनारा नरदोहिन सों नदिया बही रक्त की धार॥
लंबी धोतिन के पहिरैया क्षत्री जूझे तीनि हजार ११८
साल दुसाला मोहनमाला आला परे गले में हार॥
ऐसे सुन्दर रजपूतन को नोचनलागे श्वानसियार ११९
गीधन केरी खूब बनिआई चील्हन भीर भई अधिकाय॥
लगीं बजारैं तहँ कौवनकी कालीभूमि परै दिखलाय १२०
लगी अथाई तहँ भूतन की प्रेतन कथा कही ना जाय॥
यहु अलबेला आल्हा वाला गर्जा समर भूमिमाआय १२१
इन्दल ठाकुर के सम्मुख मा कोऊ शूर नहीं समुहाय॥
चढ़ि पचशब्दा हाथी ऊपर आल्हागये समरमें आय १२२
यहु महराजा पट्टी वाला मारत फिरै शूर समुदाय॥
आल्हा ठाकुर औ सातनि का परिगासमर बरोबरिआय १२३
सातनि बोला तब आल्हाते मानो कही बनाफरराय॥
दीन न पैसा हम जयचँद को कैयो बार लड़ेते आय १२४
टका न पैहौ आल्हा ठाकुर याते कूच देउ करवाय॥
इतना सुनिकै आल्हा बोले सातनि काहगयो बौराय १२५
बहुती बातैं हम जानैं ना पैसा आज देउ मँगवाय॥
नहिं दिखलावै अब संगर में जोकछुकीन बूततवजाय १२६
सुनिकै बातैं ये आल्हा की सातनि खैंचि लीन तलवार॥
हनिकै मारा सो आल्हा के आल्हालीन ढालपरवार १२७
भालामारा फिरि आल्हा के सोऊ लीन्ही वार बचाय॥
गदा चलावा सातनि राजा सो शिरपरी महाउतआय १२८
गिरा महाउत जब आल्हा का इन्दल दीन्ह्यो घोड़ उड़ाय॥
पहुंचा घोड़ा जब हौदापर इन्दलमारयो ढालघुमाय १२९

मुर्च्छित ह्वैगा सातनि राजा तुरतै कैदलीन करवाय ॥
बांधिकै मुशकै महराजा की कनउजतुरतदीनपहुँचाय १३०
जोगा भोगा दोउ मारेगे जखमी भयो पपीहा आय ॥
इतना शोचत उदयसिंह के मनमागयोक्रोधअतिछाय१३१
माल खजाना सब सातनि का ऊदन तुरत लीन लुटवाय ॥
कूच करायो फिरि पट्टी ते पहुँचे देश कामरू जाय १३२
गड़िगे तम्बू तहँ आल्हा के सब रँग ध्वजा रहे फहराय ॥
चला कामरू का हरिकारा राजै खबरि सुनाई जाय १३३
फौजै आईं यहु राजा की डाँड़े भीर भार अधिकाय ॥
इतना सुनिकै कमलापति ने गुप्ती धावन दीन पठाय १३४
खबरिलायकै सो फौजन की राजै फेरि सुनावाआय ॥
सुनिकै बातैं त्यहि धावन की डंका तुरत दीन बजवाय १३५
हाथी सजिगा कमलापति का तापर आपभयो असवार ॥
झीलमबखतरपहिरि सिपाहिन हाथ म लई ढालतलवार १३६
यक यक भाला दुइ दुइ बलछी कोताखानी लीन कटार ॥
हथीचढ़ैया हाथिन चढ़िगे बाँके घोड़न पर असवार १३७
बाजीं तुरही तहँ मुरही सब पुप्पूं पुप्पूं परै सुनाय ॥
बाजे डङ्का अहतङ्का के राजा कूचदीन करवाय १३८
आयकै पहुँच्यो जब डाँड़े पर गरुई हाँकदीन ललकार ॥
को चढ़िआवा है डाँड़े पर सम्मुख ज्वाबदेय सरदार १३९
पाछे फौजै ऊदन करिकै आगे घोड़ नचावाजाय ॥
गरुई हाँकनते बोलत भा यहु रणबाघु बनाफरराय १४०
तुमपर चढ़िकै लाखनि आये पैसा आपदेउ मँगवाय ॥
कुमक म आये आल्हा ठाकुर ऊदननाम हमारो आय १४१

छोटे भाई हम आल्हाके राजन साँच दीन बतलाय ॥
बाकी देदो तुम जयचँद के हम सब कूचदेयँ करवाय १४२
इतनी सुनिकै राजा बोले मानो कही बनाफरराय ॥
फूभी कौड़ी तुम पैहौ ना टटुवा टायर लेयँ लुटाय १४३
कहाँ मंसई तुम करिआये ऊदन नाम सुनाबै भाय ॥
तुम अस ऊदन बहुतेरन को रणमा मारा खेत खिलाय १४४

सवैया ॥

सुनिकै यह बानि कहा बघऊदन साँचसुनै नृप बात हमारी ।
सेतु बँधा जहँ पय रघुनन्दन बेंदुल टाप तहाँलग धारी ॥
जयपुर जीति लुटाय लियों दतिया औ उरैछा भये सब आरी ।
पृथिराजकी शानकमान बढ़ी ललिते तिनद्वार गयंद पछारी१४५

झन्ना पन्ना को जीता हम जीता काशमीर मुल्तान ॥
थहर थहर सब बूँदी काँपै झंडा अटकपार फहरान १४६
देश देश सब हम मथिडारे मारे हेरि हेरि नरपाल ॥
पैसा लेवैं जब संगर में तबहीं देशराज के लाल १४७
इतना कहिकै उदयसिंह ने तुरतै हुकुम दीन फर्माय ॥
जान कामरू के पावै ना इनके देवो मूड़ गिराय १४८
भा खलभल्ला औ हल्ला अति लागी चलन तहाँ तलवार ॥
पैदल पैदल के बरणी भै औ असवार साथ असवार १४९
सूँड़ि लपेटा हाथी भिड़िगे अंकुश भिड़े महौतन केर ॥
हौदा हौदा यकमिल ह्वैगे मारैं एक एक को हेर १५०
गाफिलदीख्यो कमलापतिका ऊदन कैद लीन करवाय ॥
बांधिकै मुशकै महराजा की कनउज तुरत दीन पठवाय १५१

माल खजाना सब लुटवायो डंका फेरि दीन बजवाय॥
जीति कामरू कामक्षा को तहँते कूच दीन करवाय १५२
जायकै पहुँचे बंगाले में झंडा तहाँ दीन गड़वाय॥
बजे नगारा तहँ आल्हा के नभऔअवनिशब्दगाछाय१५३
गा हरिकारा तब जल्दी सों राजै खबरि सुनावा जाय॥
भारी फौजें कयहु राजा की डाँड़े परीं हमारे आय १५४
सुनिकै बातैं हरिकारा की राजा गयो सनाकाखाय॥
देखन पठवा कयहु अफसर को त्यहिसबखबरिसुनावाआय१५५
गुरुखा राजा बंगाले का मन्त्रिन बोला बचन सुनाय॥
तुरत नगाड़ा को बजवावो सबियाँफौजलेउसजवाय१५६
हुकुम पायकै महराजा का सबियाँ फौज भई तैयार॥
पहिल नगाड़ा मा जिनबंदी दुसरे फाँदिभये असवार१५७
हथी अगिनियाँ महराजा को सोऊ बेगि भयो तय्यार॥
सुमिरि भवानी जगदम्बा का राजा तुरत भयो असवार१५८
ढाढ़ी करखा बोलन लागे बिप्रन कीन बेद उच्चार॥
रणकी मोहरि बाजन लागीं रणकाहोनलागब्यवहार१५९
पांच घरी के फिरि अर्सा मा राजा गयो समर में आय॥
घोड़ बेंदुला को चढ़वैया यहु रणबाघु बनाफरराय१६०
सम्मुख आवा महराजा के औ यह बोला भुजा उठाय॥
बारह बरसन की बाकी अब राजन आप देउ भँगवाय१६१
लाखनि आये हैं कनउज ते आल्हा ऊदन साथ लिवाय॥
छोटे भाई हम आल्हा के ऊदन नाम हमारो आय१६२
इतना सुनिकै गुरुखा राजा बोला महाक्रोध को पाय॥
टरिजा टरिजा रे सम्मुख ते नहिंशिरदेवौं भूमिगिराय१६३

तुइ अभिनन्दन के धोखे ते आये यहाँ बनाफरराय ॥
पैसा लेबे की बातन को ऊदन चित्त देय बिसराय १६४
कूच करावै अब डाँड़े ते नाहीं गई प्राण पर आय ॥
इतना सुनिकै ऊदन जरिकै तुरतै दीन्ह्यो युद्ध मचाय १६५

सवैया ॥

रणशूरन की तलवार चलै अरु कूरन के उर होत दरारा ।
छप्प औ छप्प खपाखप शब्द बहे तहँ शोणित केर पनारा ॥
हाथ औ पाँव भुजा अरु जाँघ परे तहँ सर्पन के अनुहारा ।
मारु औ काटु उखारुभुजा ललिते इनशब्दनको अधिकारा १६६
मारु चपेट लपेट करैं औ दपेट ससेट करैं सरदारा ।
शूल औ सेल गदा अरु पट्टिश मारि रहे सब शूर उदारा ॥
हारि न मानत ठानत रारि पुरारि मुरारि खरारि अधारा ।
ललितेसुरबन्दिअनन्दि सबै रणशूरन युद्धकियोत्यहिबारा १६७

भई लड़ाई बंगाले में नदिया बही रक्तकी धार ॥
मुण्डन केरे मुड़चौरा भे औ रुण्डन के लगे पहार १६८
हाथी घोड़न के गिन्ती ना पैदर जूझे पांच हजार ॥
घोड़ बेंदुला का चढ़वैया नाहर उदयसिंह सरदार १६९
ऐंड़ लगायो रसबेंदुल के हाथी उपर पहूँचा जाय ॥
गुर्ज चलायो बंगाली ने ऊदन लीन्ह्यो वार बचाय १७०
ढाल कि ओझड़ ऊदन मारी मुर्च्छा खाय गयो नरपाल ॥
मुशकै बाँधी तब राजा की नाहर देशराज के लाल १७१
रुपिया पैसा बंगाली के सब छकड़नमें लियो लदाय ॥
तुरते चलिकै बंगाले ते घेरयो अटक बनाफर आय १७२

मुरली मनोहर दोउ भाइन को तहँ पर कैदलीन करवाय ॥
सुन्दर फाटक जौन अटकको त्यहिकोतोपनदीनउड़ाय१७३
माल खजाना ताको लैकै तहँ ते कूच दीन करवाय ॥
आयकै पहुँचे फिरि जिन्सी में तम्बू तहाँ दीन गड़वाय १७४
बाजे डंका अहतंका के हाहाकार शब्द गा छाय ॥
राजा जगमनि जिन्सीवाला सोऊ गयो समरको आय१७५

सवैया ॥

औ ललकार कियो रण में तुम ठाकुर काहे ग्रस्यो मम ग्रामा ।
काह तुम्हार चहैं रणनाहर तौन बताय कहौ यहि ठामा ॥
ऊदन बोलि उठा ततकाल सुनो नृप सुन्दरि बात ललामा ।
द्वादशअब्दभये तुमको नृप जयचँदको न दियो कछु दामा१७६

पैसा बाकी सब दैदेवो तौ हम कूच देयँ करवाय ॥
इतना सुनिकै जिन्सी वाला शूरनबोला बचन सुनाय १७७
मारो मारो ओ रजपूतो यहही ठीक लीन ठहराय ॥
झुके सिपाही दोनों दल मा मारैं एक एक को धाय १७८
चली सिरोही भल जिन्सी मा लागे गिरन शूर सरदार॥
को गति वरणै त्यहि समया कै आमा झोर चलै तलवार १७९
मूड़न केरे मुड़चौरा भे औ रुण्डन के लगे पहार॥
मारे मारे तलवारिन के नदिया बही रक्तकी धार १८०
घोड़बेंदुला का चढ़वैया आल्हा केर लहुरवा भाय॥
जीति लड़ाई मा जगमनि को तुरतै कैद लीन करवाय १८१
बांधिकैमुशकै तहँ जगमनिकी तुरतै कनउज दीन पठाय॥
मालखजाना सब जगमनिका ऊदनतुरत लीनलुटवाय १८२

चिन्ता ठाकुर रुसनी वाला ताको जीति लीन फिरि जाय ॥
वजे नगारा हहकाराके तहँ ते चला वनाफरराय १८३
आयकै पहुँचा फिरि गोरखपुर सबियाँ शहर लीन घिरवाय ॥
सूरजठाकुर गोरखपुर का ऊदन लीन तहाँ बँधवाय १८४
तहँते चलिकै पटना आवा यहु रणबाघु वनाफरराय ॥
पूरन राजा पटना वाला ताको कैदलीन करवाय १८५
चला वनाफर फिरि तहँना ते काशीपुरी पहूँचा आय ॥
धन्य बखानैं हम काशी का मनमेंशिवाचरणकोध्याय१८६
अज अबिनाशी घट घट बासी पूरण ब्रह्म शम्भु करतार ॥
परम पियारी निज काशी के आजौ सत्य सत्य रखवार १८७
रहे भास्करानँद स्वामी हैं सबके माननीय शिरताज ॥
अब लग काशी हम देखी ना ना कछुपरा कयहूने काज १८८
वर्ष अठारा कीन नौकरी बाबू प्रागनरायण धाम ॥
छपीं पुस्तकै ह्याँ जितनी हैं ते सब पढ़ा पेटके काम १८९
सुनी बड़ाई भल काशी की दासी सरिस मुक्ति तहँ भाय ॥
तौनी काशी अबिनाशी मा ऊदन तम्बू दीन गड़ाय १९०
हंसामनि काशी का राजा ऊदन कैद लीन करवाय ॥
मारू डंका फिरि वजवाये कनउज चलावनाफरराय १९१
तीनि महीना औ तेरा दिन गाँजर खूब कीन तलवार ॥
बारह राजन को कैदी करि पठवा जयचँद के दरबार १९२
बोला मारग में लाखनि ते बेटा देशराज को लाल ॥
हम पर साँकर जहँ कहुँ परिहै लाला रतीभानके लाल १९३
बदला देहौ की मुरि जैहौ लाखनि साँच देउ बतलाय ॥
सुनिकै बातैं बघऊदन की लाखनिगंगशपथगाखाय१९४

साथ तुम्हारो साँचो देहैं प्यारे उदयसिंह तुम भाय ॥
करत बतकही द्वउ मारग में कनउजशहर पहूँचे आय १६५
अनँद बधैया घर घर बाजीं सबहिन कीन मंगलाचार ॥
पूरि लड़ाई भै गाँजर कै रक्षा करैं सिया भर्त्तार १६६
खेत छूटिगा दिननायक सों झगडागड़ा निशाको आय ॥
आशिर्बाद देउँ मुन्शीसुत जीवो प्रागनरायणभाय १६७
रैहै समुन्दर में जबलों जल जबलों रहैं चन्द औ सूर ॥
मालिक ललिते के तबलों तुम यशसों रहौ सदा भरपूर १६८
माथ नवावों पितु अपने को जिन बल गाथ भई तय्यार ॥
बड़े यशस्वी पितु हमरे हौ साँचे धर्म कर्म रखवार १६९
करों तरंग यहाँ सों पूरण तवपद सुमिरि भवानीकन्त ॥
राम रमा मिलि दर्शन देवो इच्छा यही मोरि भगवन्त २००

इति श्रीलखनऊनिवासि (सी, आई, ई) मुंशीनवलकिशोरात्मजबाबू प्रयागनारायणजीकीआज्ञानुसार उन्नामप्रदेशान्तर्गतपँड़रीकलां निवासिमिश्रवंशोद्भव बुधकृपाशङ्करसूनुपण्डितललिताप्रसाद कृत गाँजरयुद्धवर्णनोनामप्रथमस्तरंगः १ ॥

गाँजर का युद्ध समाप्त ॥

इति ॥

अथ आल्हखण्ड ॥

सिरसाकासमरवर्णन ॥

सवैया ॥

ध्यावत तव पद कंज शिवा मनभावत दे वरदान भवानी ।
तवपति भंगनशे में परे अरु गावत गीत हरी हरि वानी ॥
नाहिं सुनय बिनती ललिते यह साँचहु साँचहु साँच बखानी ।
दे मृगनयनी कि दे मृगछाल यहै हम चाहत हैं शिवरानी १

सुमिरन ॥

सुमिरि भवानी शिवरानी को सिरसा समर करों बिस्तार ।
नैया डगमग भवसागर में माता तुम्ही निबाहन हार १
आदि भवानी महरानी तुम तुम बल सृष्टि रचैं करतार ।
परम पियारी त्रिपुरारी की धारी देह जगत उपकार २
पुत्र षडानन गजआनन हैं हमरे माननीय शिरताज ॥
प्रथमैं सुमिरैं गजआनन को होवैं सकल तासु के काज ३
सुमिरि षडानन का दुनियामाँ लाखन सिद्धभये द्विजराज ॥
मलखे पृथ्वी के संगर को वर्णन करों सुमिरि रघुराज ४

अथ कथाप्रसंग ॥

एक समैया माहिल ठाकुर लिल्ली घोड़ापर असवार ॥
तिक्तिक्तिक्तिक्घोड़ीहांकत पहुंचे दिल्ली के दर्बार १
आवत दीख्यो जब माहिल को पिरथी कीन बड़ा सत्कार ॥
आवो आवो बैठो बैठो ठाकुर उरई के सरदार २
कुशल बतावो अब मोहबेकी नीके राजकुँरँ परिमाल ॥
इतना सुनिकै माहिल बोले साँची सुनो आप नरपाल ३
अवसर नीको यहि समया माँ तुम्हरे हेतु रचा कर्त्तार ॥
आल्हा ऊदन गे कनउज का राजा जयचँद के दरबार ४
भले बुरे जो दिन बीतत हैं आवैं फेरि नहीं सो हाथ ॥
त्यहिते तुमका समुझावत हैं साँची सुनो धरणि के नाथ ५
सिरसा मोहबा यहि समया माँ दूनों आप लेउ लुटवाय ॥
सुनिकै बातैं ये माहिल की भा मनखुशी पिथौराराय ६
सात लाख फिरि फौजै लैकै तुरतै कूचदीन करवाय ॥
चारकोस जब सिरसा रहिगा तम्बू तहाँ दीन गड़वाय ७
हुकुम लगायो महराजा ने सिरसा किला गिरावाजाय ॥
तब हरकारा सिरसा वाला मलखे खबरि जनावा आय ८
फौजैं आईं पृथीराज की ओ महराज बनाफरराय ॥
इतना सुनिकै मलखे ठाकुर डंका तुरत दीन बजवाय ९
हुकुम लगायो अपने दलमा फौजैं होन लगीं तय्यार ॥
तुरत कबुतरी पर चढ़िबैठा नाहर सिरसा का सरदार १०
छींक तड़ाका भै सम्मुख मा माता बोली बचन सुनाय ॥
तुम नहिं जावो अब मुर्चा को मानो कही बनाफरराय ११
इतना सुनिकै मलखे बोले माता साँच देयँ बतलाय ॥

आशिर्वाद देउ जल्दी सों जामें काम सिद्ध ह्वैजाय १२
चढ़ा पिथौरा है सिरसा पर माता हुकुम देउ फ़रमाय ॥
बिरमा बोली तब मलखे ते तुम्हरो बार न बाँका जाय १३
चरण लागिकै महतारी के मलखे कूच दीन करवाय ॥
चौंड़ा ताहर चन्दन बेटा तीनों परे तहाँ दिखलाय १४
चौंड़ा बोला मलखाने ते मानो कही बनाफरराय ॥
किला गिराय देउ सिरसा का दीन्ह्यो हुकुम पिथौराराय १५
इतना सुनिकै मलखे बोले चौंड़ा काह गये बौराय ॥
अपने हाथे हम बनवावा हमहीं देवैं किला गिराय १६
जो कछु ताकति हो पिरथीकी सो अब हमैं देयँ दिखलाय ॥
असगति नाहीं है पिरथी कै हमरो किला देयँ गिरवाय १७
सुनिकै बातैं मलखाने की चौंड़ा लागु दीन लगवाय ॥
झुके सिपाही दुहुँतरफ़ा के मारैं एक एक को धाय १८
पैदल पैदल के बरणी भे और असवार साथ असवार ॥
मारे मारे तलवारिन के नदिया बही रक्त की धार १९
अपन परावा क्यहु सूझैना दूनों हाथ करैं तलवार ॥
मुण्डन केरे मुड़चौरा भे औ रुण्डन के लाग पहार २०
जैसे भेड़िन भेड़हा पैठे जैसे अहिर बिडारै गाय ॥
तैसे मारै मलखे ठाकुर रणमा क्षत्रिन खेलखिलाय २१
बहुतक घायल भे खेतनमा बहुतक ह्वैगे बिना परान ॥
फिरि फिरि मारै औ ललकारै नाहर समरधनी मलखान २२
चढ़ा चौंड़िया इकदन्तापर गरुई हाँक देय ललकार ॥
मोरि लालसा यह ह्वालति है ठाकुर सिरसा के सरदार २३
मेरे सिपाहिन का पैहौ तुम ठाकुर मोरि तोरि तलवार ॥

इतना सुनिकै मलखे बोले चौंड़ा भली कही यहि वार २४
इतना कहिकै मलखे ठाकुर चौंड़ा पास पहूँचे जाय॥
साँग चलाई तब चौंड़ा ने मलखे लीन्ह्यो वार बचाय २५
एँड़ लगाई फिरि घोड़ी के हौदा उपर पहूँचे जाय॥
ढाल कि औभड़ मलखे मारा चौंड़ा गयो मूर्च्छा खाय २६
बांधिकै मुशकै तब चौंड़ाकी अपनी फौज पहूँचा आय॥
कड़ा छड़ा औविछिया अँगुठा चौंड़ै दीन तहाँ पहिराय २७
अगे अगेला पिछे पछेला तिन बिच चुरियाँ दीनडराय॥
जोशन पट्टी और बजुल्ला कानन करनफूल पहिराय २८
बेंदीभाल नयन बिच काजर पीछे चूनरि दीन उढ़ाय॥
तुरत घाँघरा को पहिरावा मलखे पलकी लीनमँगाय २९
रूप जनाना करि चौंड़ा को पलकी उपर दीन बैठाय॥
फिरि बुलवावा हरकारा को ताको हाल दीन समुझाय ३०
कह्यो जवानी पृथीराज ते चौंड़ै मुहबा लीन लुटाय॥
बेटी प्यारी परिमालिक की लैकै कूच देउ करवाय ३१
चली पालकी फिरि चौंड़ा की लश्कर तुरत पहूँची आय॥
दौरति धावन महराजा ते सबियाँ हाल बतावा जाय ३२
बड़ी खुशाली भै पिरथी के फूले अंग न सकै समाय॥
जल्दी आये फिरि पलकी ढिग देखन लागि पिथौराराय ३३
दीख जनाना तहँ चौंड़ा को पिरथी गये बहुत शर्माय॥
बँधा चौंड़िया जो बैठा था बंधन तुरत दीन खुलवाय ३४
क्रोधित ह्वैकै महराजा फिरि आपै गये समर में आय॥
औ ललकारा मलखाने को अबहीं किला देउ गिरवाय ३५
इतना सुनिकै मलखे बोले राजन साँच देयँ बतलाय॥

बंजर धरती जब देखी हम तबफिर किलालीन बनवाय ३६
जैसे मालिक परिमालिक हैं तैसे आप पिथौराराय ॥
अदब तुम्हारो हम मानत हैं राजन कूच देउ करवाय ३७
इतना सुनिकै पिरथी बोले अबहीं किला देउ गिरवाय ॥
सिरसा मुहवा नतु दूनों हम मलखे लेब आज लुटवाय ३८
इतना सुनिकै मलखे बोले ओ महराज पिथौराराय ॥
हथी पछारा तव द्वारे मा आपन बूत दीन दिखलाय ३९
काह बनावैं महराजा ते सबियां देश रहा थर्राय ॥
किला गिरावो जो सिरसा का दिल्लीशहर देउँ फुँकवाय ४०
कौने धोखे तुम भूले हो मारों राज भंग ह्वैजाय ॥
इतना सुनिकै पृथीराज ने तोपन आगिदीन लगवाय ४१
हाहाकारी तब बीतति भै मानो प्रलयगई नगच्याय ॥
बड़ी लड़ाई भै तोपन कै औ दलगिरा बहुतमहराय ४२
चारकोस लौं गोला जावै गोली पांचखेत लौं जाय ॥
धुँवा उड़ाना अति तोपन का चहुँदिशि अंधकारगाछाय ४३
बन्द लड़ाई भै तोपन कै औफिरि चलनलागितलवार ॥
जितने कायर दूनों दल मा ते सब भागि डारि हथियार ४४
शूर सिपाही रणमण्डल मा मारैं फेरि फेरि ललकार ॥
कटि कटि मूड़ गिरैं धरती मा उठि उठि रुण्डकरैं तलवार ४५
मूड़न केरे मुड़चौरा भे औ रुण्डन के लगे पहार ॥
मारे मारे तलवारिन के नदिया बही रक्तकी धार ४६
छुरी कटारी तिहि नदिया मा मछली सरिस परैं दिखलाय ॥
ढालै कछुवा त्यहि नदिया मा गोहै सरिस भुजा उतरायँ ४७
को गति बरणै त्यहि समया कै नदिया खूब बहै बिकराल ॥

नचैं योगिनी खप्पर लीन्हे मज्जैं भूत प्रेत वैताल ४८
घोड़ी कवुतरी का चढ़वैया नाहर समरधनी मलखान॥
सुमिरन करिकै शिवशंकर का मारिकै कीन खूब खरिहान ४६
औ ललकारा रजपूतन का हमरे सुनो शूर सरदार॥
जो कोउ पैदाहै दुनिया मा आखिर मरण होय इकबार ५०
परे खटोलिन में मरिजैहौ आखिर ह्वैहौ भूत परेत॥
सम्मुख जूझै तलवारी के त्यहि बैकुण्ठ धाम हरि देत ५१
दिह्यो बढ़ावा बहु क्षत्रिनको नाहर सिरसा के सरदार॥
पैदल पैदल इकमिल ह्वैगे औ असवार साथ असवार ५२
विकट लड़ाई क्षत्रिन कीन्ह्यो नदिया बही रक्तकी धार॥
सूरति राजा हाड़ावाला मलखे सिरसा के सरदार ५३
दूनों अभिरे समरभूमि मा दूनों खूब करैं तलवार॥
भाला बलछी दूनों मारैं दूनों लेयँ ढालपर वार ५४
सूरति गिरिगा जब संगर में अंगद शूर पहूँचा आय॥
औ ललकारा मलखाने को तुम भगि जाउ बनाफरराय ५५
इतना कहिकै अंगद ठाकुर तुरतै मारा साँग चलाय॥
घोड़ी कवुतरी का चढ़वैया तुरतै लीन्ह्यो वार बचाय ५६
खैंचिकै मारा तलवारी का औ शिर दीन्ह्यो भूमि गिराय॥
तीनि शूर पिरथी के जूझे हाहाकार शब्द गा छाय ५७
मुर्चा फिरिगे रजपूतन के काहू धीर धरा न जाय॥
मलखे मारै दश पंद्राको घोड़ी देवै बीस गिराय ५८
दाँतन काटै टापन मारै अद्भुत समर कहा ना जाय॥
हटा पिथौरा तब पाछे का आगे बढ़े बनाफरराय ५६
मलखे ताहर का मुर्चा भा मारैं एक एक को धाय॥

सात कोसलौं मलखे ठाकुर मारत मारत गये हटाय ६०
रंग बिरंगी पृथ्वी हैगे मज्जा चर्बिपरे दिखराय ॥
बड़ा लड़ैया बिरमा वाला ज्यहिका कही बनाफरराय ६१
त्यहि के संगर धरती काँपै थर थर आसमान थर्राय ॥
काह हकीकति है ताहर कै जो संगरते देयँ हटाय ६२
पाँउ पछारी को डारै ना यहु रणबाघु बीर मलखान ॥
कोऊ क्षत्री अस दूसर ना मलखे साथ करै मैदान ६३
मुर्चा फिरिगा पृथीराज का लौटा तबै बीर मलखान ॥
बाजे डंका अहतंका के लौटे सबै सिपाही ज्वान ६४
पहुंचे पिरथी तब दिल्ली में सिरसा सिरसा का सरदार ॥
माता बिरमा त्यहि औसरमा द्वारे आरति लीन उतार ६५
एक समैया की बातैं हैं आये उरई के सरदार ॥
आवो आवो बैठो बैठो बिरमा कीन बड़ा सतकार ६६
माहिल बैठा तब महलन मा करिकै रामचन्द्र को ध्यान ॥
बोला माहिल फिरि बिरमा ते तुम्हरो पूत बड़ा बलवान ६७
बड़े लड़ैया दिल्ली वाले ते सब हारिगये चौहान ॥
कौनि तपस्या तुम कैराखी पैदा भये बीर मलखान ६८
सरवर मलखे की दुनियामा दूसर नहीं लीन औतार ॥
यहै मनावैं परमेश्वर ते इनका भलाकरौ कर्तार ६९
नाम हमारो है दुनिया मा भैने माहिल के बरियार ॥
आल्हा ऊदन मलखे सुलखे इनते हारि गई तलवार ७०
यहै मनावैं जगदम्बा ते अंजलि जोरिजोरि शिरनाय॥
मलखे सुलखे आल्हा ऊदन नीके रहैं बनाफरराय ७१
सुनि सुनि बातैं ये माहिलकी नारी बुद्धिहीन जगजान ॥

पदुम पैर है मलखाने के यह बरदीन रहै भगवान ७२
दुनिया बैरी है मलखे के भैया काह दनाई आय ॥
पदुम न फाटि है जो तरवाका तौ नहिं मरी बनाफरराय ७३
लिखी बिधाता के मेटैको माता हाल दीन बतलाय ॥
बिदा माँगिकै फिरि जल्दी सों माहिल कूच दीन करवाय ७४
राह छोड़िकै फिरि उरई कै दिल्ली चला तड़ाका जाय ॥
लिल्ली घोड़ी का चढ़वैया दिल्लीपहुंचिगयोफिरआय ७५
हाल बतायो सब पिरथी को माहिल बार बार समुझाय ॥
भाला बलछी औ साँगनको खन्दक आप देउ गड़वाय ७६
पदुम न रैहै जब तरवा मा तब ना रही बनाफरराय ॥
मीचु आयगै मलखाने कै माता हाल दीन बतलाय ७७
सुनिकै बातैं ये माहिल की राजा कुँवर लीन बुलवाय ॥
इइसै खन्दक तुम खुदवावो आधे देउ जाय पटवाय ७८
एक छोड़िकै इक पटवावो या विधि दीन खूब समुझाय ॥
अधीराति के फिरि अमला मा कुँवरनकीन तहाँ तसजाय ७९
पाँच रातिमें यह रचनाकरि दिल्ली फेरि पहूँचे आय ॥
हाल बतायो सब पिरथी को कुँवरन बार बार समुझाय ८०
माहिल चलिभे फिरि उरई का राजा फौज कीन तैयार ॥
झीलमबखतरपहिरि सिपाहिन हाथम लई ढाल तलवार ८१
डङ्का नगाड़ा में जिनबन्दी दुसरे फाँदि घोड़ असवार ॥
तिसर नगाड़ा के बाजत खन चलिभे सबै शूर सरदार ८२
जायकै पहुँचे फिरि संगर में तम्बू तहाँ दीन गड़वाय ॥
लिलीहकीकति फिरिमलखेको अबहूं किला देउ गिरवाय ८३
लिखिकै चिट्ठी दी धावन को धावन तुरत पहूंचा जाय ॥

द्वारे ठाढ़े मलखाने थे चिट्ठी तुरत दीन पकराय ८४
चढ़ा पिथौराहै सँभराभरि औ यह कहा बनाफरराय॥
किला गिरावैं जो सिरसा का तौ सब रारि शान्तह्वैजाय ८५
नहीं तो बचिहैं ना संगरमा जो बिधि आपु बचावैं आय॥
लौटि पिथौरा अब जैहै ना सिरसा ताल देय करवाय ८६
मृत्यु आयगै मलखाने कै जो नहिं किला देयँ गिरवाय॥
लौटि पिथौरा अब जैहै ना नेका टका लेय निकराय ८७
चौंड़ा बकशी पृथीराज का सोऊ कहा सँदेशा आय॥
बने जानना मलखाने अब घरमा बैठि रहैं शर्माय ८८
कौने राजा की गिनती मा जो नहिं किला देयँ गिरवाय॥
कह्यो सँदेशा यह ताहर है सो सुनिलेउ बनाफरराय ८९
मलखे चाकर परिमालिक का सो कस रारि मचावै आय॥
दीन बड़ाई हम चाकरको पहिले फौज लीन हटवाय ९०
जियति न जाई अब संगर ते जो बिधि आपु बचाई आय॥
कह्यो सँदेशा सब लोगन को धावन बार बार समुझाय ९१
सुनिकै बातैं ये धावन की क्रोधित भयो बनाफरराय॥
हुकुम लगायो फिरि सिरसामें बाजन सबै रहे हहराय ९२
बोले मलखे फिरि धावन ते यह तुम कह्यो पिथौरै जाय॥
मारे मारे मुख धावन के धावन ध्याव तहाँ समुझाय ९३
यहै बतायो तुम पिरथी ते आवत समरधनी मलखान॥
कसरि न राखैं चौंड़ा ताहर संगर करैं दूनहू ज्वान ९४
कौन जनाना हम दोउन का उनके साथ कौन मैदान॥
हमरो संगर पृथीराज को जावैं सँभरि आज चौहान ९५
इतना सुनिकै धावन चलि कै राजै खबरि बतावा आय॥

हाल पायकै सिरसागढ़का क्रोधित भयो पिथौराराय ९६
बाजे डंका इत पिरथी के वैसी सिरसा के महराज॥
सूरज वंशी औ यदुवंशी तोमर वंश केर शिरताज ९७
ये सब सजिसजि सिरसा गढ़में अपनी लीन ढाल तलवार॥
नीले काले सब्जे सुर्खे सब रँग घोड़ भये तय्यार ९८
अंगद पंगद मकुना भौंरा सजिगे श्वेतवरण गजराज॥
हाड़ा बूंदी गहिलवारके तिनपर बैठि शूर शिरताज९९
सुमिरन करिकै शिवशंकरका मातै शीश नवावा जाय॥
पीठि ठोंकि कै बिरमा माता आशिर्वाद दीन हर्षाय १००
चलिभा मलखे माताढिग ते रानी महल पहूंचा आय॥
दीन दिलासा गजमोतिनिका ठाकुर चला खूब समुझाय १०१
बेटी बोली गजराजा की स्वामिन चेरी बोल बनाव॥
पावँ पछारी का डास्योना नाहीं हँसी देश औ गाँव १०२
होय हँसौवा ज्यहि दुनिया मा त्यहिका मरण नीकही आय॥
सुनी किहानी हम विप्रन ते स्वामी साँचदीनबतलाय १०३
इतना सुनिकै मलखे चुप्पै फौजन फेरि पहूंचे आय॥
बाजे डंका अहतंका के मलखे कूच दीन करवाय १०४

सवैया॥

चर्खनमें सब तोप चढ़ाय औ फौज अपारलिये मलखाना।
बाजत डंक निशंक तहाँ औ यथा घन सावनको घहराना॥
बिज्जु छटासों कटा करिखे कहँ चमकत खड्ग तहाँ मर्दाना।
मौहर बाजत हावकिये ललिते यह भाव न जात बखाना १०५

चढ़ा कबुतरी पर मलखाने मुर्चा सबै कीन तैयार॥

पाग बैंजनी शिरपर बाँधे हाथ म लये ढाल तलवार १०६
फिरि फिरि घ्यावै शिवशंकरको गावै सुन्दर भजन बनाय ॥
चील्ह औ गीध उड़ैं खुपरिनपर कुत्ता स्यार रहे चिल्लाय १०७
मरण काल के जो अशकुन हैं मलखे दीख तहाँपर आय ॥
पै भयलायो मन अन्तर ना यहु निरशंक बनाफरराय १०८
इकदिशि तोपनको छुटवावा इकदिशि धावा दीन कराय ॥
जैसे भेड़िन भिड़हा पहुंचै जैसे अहिर बिडारै गाय १०९
तैसे मारै रजपूतन को यहु रणबाघु बनाफरराय ॥
ताहर चौंड़ा औ चन्दन का मुर्चा मलखे दीन हटाय ११०
जौनै हौदा मलखे ताकैं घोड़ी तहाँ देय पहुँचाय ॥
जाय महावत का हनिडारैं औ असवारै देयँ गिराय १११
दहिने बाँये टापन मारै सम्मुख दाँतन लेय चबाय ॥
मलखे ठाकुर के मारुनमा बहुदल परा तहाँमहराय ११२
जहँना हाथी पृथीराज का मलखे तहाँ पहूंचे आय ॥
पतरी लकड़िन खन्दक पाटे ताके पार पिथौराराय ११३
खाली खन्दक एक बीच में ताको दीख बनाफरराय ॥
गर्द्दन ठोंकी तहँ घोड़ी की दूनों एँड़ा दीन लगाय ११४
चूकि कबुतरी धरती जाना खन्दक परी तड़ाकाजाय ॥
मलखे घोड़ी दोउ खन्दकमा भालन उपर गिरे महराय ११५
बल्छी भालनकी नोकन सों घायल भये बनाफरराय ॥
बड़ा शोचभा तहँ घोड़ी का रोवैं बारबार पछिताय ११६
घोड़ी तड़पी फिरि खन्दकते मलखे सहित पारगै आय ॥
पदुम फाटिगा तहँ तरवा का औ मरिगये बनाफरराय ११७
गा हरिकारा तब सिरसामा बिरमै खबरि बतावा जाय ॥

सुनिकै बातैं हरिकारा की बिरमा गिरी मूर्च्छाखाय ११८
खबरि पायकै गजमोतिनि तहँ फिरिउठिवैठि फेरि गिरिजायँ ॥
सासु पतोहू बैली ह्वैकै शिरधुनिवारबार पछितायँ ११६
सुयश बखानैं मलखाने का महलन गई उदासी छाय ॥
सात पांच दश जुरीं सहिलरी सम्मत देनलगींसो आय १२०
तब गजमोतिनि बिरमा दूनों पलकी लीन तहाँ मँगवाय ॥
सुमिरि गजानन लम्बोदर को गौरा पारबती पद ध्याय १२१
चढ़ी पालकी सासु पतोहू पहुंचीं समरभूमि में आय ॥
गदहन पृथ्वी को जुतवावै यहु महराज पिथौराराय १२२
तब गजमोतिनि ने ललकारा यह सुनि लेउ बीर चौहान ॥
यह ना जान्यो अपने मनते की मरिगये बीर मलखान १२३
सुनी पतिब्रतकी महिमा ना ताते चढ़ी तुम्हारे शान ॥
हम जबलैबे तलवारी को तब नाहिं रही तुम्हारोमान १२४
बातैं सुनिकै गजमोतिनि की पृथ्वी कूच दीन करवाय ॥
कैयो दिन का धावा करिकै दिल्ली शहर पहूंचे आय १२५
लाश देखिकै मलखाने कै माता तुरत गई लपटाय ॥
उठै औ बैठै गिरि गिरि जावै रानीदशा कही ना जाय १२६
विपदा बरणौं गजमोतिनिकै तौ फिरिएकसाल लगिजाय ॥
सखी सहिलरी तहँ समुझावैं बिरमा धीरज रही कराय १२७
तेज पतिब्रत का जाहिर है जाते सत्त चढ़ा अधिकाय ॥
चिता लगावा गा चन्दन सों रानी बैठि सरापर जाय १२८
सुमिरि भवानी महरानी को पतिशिर धरा जाँघपर आय ॥
हवा खैंचिकै सब देहीकै शिरपरदीनतुरतपहुंचाय१२६
संध्या वाले यह गति जानैं प्राणायाम करैं जे भाय ॥

नाक चपावैं ते अँगुठा ते ऊपरश्वासचढ़ावत जायँ १३०
तैसे करिकै गजमोतिन ह्याँ ऊपर हवा दीन पहुँचाय॥
जब फुफकाय्यो पति शव लैकै हाहाकार अग्निगै आय १३१
भम्भम्भम्भम् चन्दन लकड़ा सुलगनलागि तहाँपर भाय॥
हाय पियारे बघऊदन के मारे गये बनाफरराय १३२
भाय पियारो ऊदन होते दिल्ली शहर देत फुँकवाय॥
हाय बिधाता यह गति कीन्ही न्यारे भये बनाफरराय १३३
कौन दुसरिया जग दादा को इन्दल पूत बड़ा बरियार॥
मरत न देखा यहि समया मा देवर उदयसिंह सरदार १३४
जो हम जानति यह गतिहोई तुमका लेति तुरत बुलवाय॥
दगा न करते दिल्ली वाले तौकसमरतिप्राणपतिआय १३५
कड़कै धड़कै फड़कै छाती ऐसो देखि शूर सरदार॥
यहै मनाऊं औ ध्याऊं नित स्वामी दीनबन्धुकर्त्तार १३६
जहँ जहँ जन्मैं ये स्वामी मम तहँ तहँ होयँ मोरि भर्त्तार॥
अग्नि प्रज्वलित त्यहिसमयाभै लागे जरन सबै शृंगार १३७
गमकै ढोलक त्यहि समया माँ धमकै थाप नगारे भाय॥
चम्चम् चमकै गजमोतिनितहँ दमकैजरनहेमअधिकाय १३८
माता बिरमा मोती मूंगा सुबरण बस्त्रदीन छिरकाय॥
रही न आशा धन लेबे की मलखेशोचतहाँअधिकाय १३९
ऐस प्रतापी नित होवैं ना ज्ञानी पुरुष बिचारैं भाय॥
दानी ध्यानी अभिमानी सब शोचैं सीयराम शिरनाय १४०
घरी न बीती ह्याँ महरानी पहुँची स्वर्गलोक में जाय॥
तहँहू सोचै सुख मल्हना को जाबिधिदीनरहैअधिकाय १४१
सखियाँ रोयति मलखाने की दर दर रोय रही अधिकाय॥

घर घर चर्चा मलखाने की पुर पुर रहे नारि नर गाय १४२

सवैया ॥

कौन कहै बिपदा पुरकीअति श्वान शृगालन शोर मचायो।
शान न मान न आन कहूं मलखान विना त्रिपदा पुर छायो॥
घोर मशान समान तहाँ मलखान जहाँ नित सेज लगायो।
मानगयो अरमानगयो ललिते मलखान महायश पायो १४३

समर पूर में सिरसागढ़ का गायों सुमिरि शारदा माय॥
आशिर्वाद देउं मुन्शीसुत जीवो प्रागनरायण भाय १४४
रहै समुन्दर में जबलौं जल जबलौं रहैं चन्द औ सूर॥
मालिक ललिते के तबलौं तुम यशसों रहौ सदा भरपूर १४५
खेत छूटिगा दिननायक सों झण्डा गेड़ा निशाको आय॥
परे आलसीखटिया तकि तकि संतन धुनी दीन परचाय १४६
माथ नवावों मैं माता को जो प्रत्यक्ष अवौं संसार॥
पाणिकमल धरि सो पीठी मा हमरो करैं अवौं निस्तार १४७
माथ नवावों पितु अपने को ह्याँते करों तरँग को अन्त॥
राम रमा मिलि दर्शन देवैं इच्छा यही भवानीकन्त १४८

इति श्रीलखनऊनिवासि (सी, आई, ई) मुंशीनवलकिशोरात्मज बाबू प्रयागनारायणजीकीआज्ञानुसारउन्नामप्रदेशान्तर्गत पँड़रीकलां निवासि मिश्रवंशोद्भव बुध कृपाशङ्करसूनु पं० ललिताप्रसादकृत सिरसासमर वर्णनोनामप्रथमस्तरंगः १॥

सिरसा समर सम्पूर्ण॥

इति॥

अथ आल्हखण्ड ॥

कीरतिसागरकायुद्धवर्णन ॥

सवैया ॥

कीरति सिंधु शिवा शिव पै हम अक्षत चन्दन फूल चढ़ावैं।
मानस ऐसो चहै हमरो पर आलस सों अस होन न पावैं ॥
धावैं सबै दिशि पापसमूह औ हूह मचावत हूलत आवैं।
सार यही ललिते जगको मुदसों नित शम्भु शिवा मन ध्यावैं १

सुमिरन ॥

सुमिरन करिकै शिवशङ्कर को रणमें चढ़े राम महराज ॥
एकरूप सों हनुमत ह्वैकै कीन्हे सकल रामके काज १
मुख्य स्वरूपी शिवशङ्कर के डमरू एक हाथ में राज ॥
लिहे त्रिशूलौ दुसरे हाथे मुण्डनमाल गरे में भ्राज २
भस्म रमाये सब अंगन में खाये भंग धतूरा ईश ॥
कण्ठ हलाहल अतिसोहत है सोहैं श्वेतवरण जगदीश ३
नग्न अमंगल मंगलकारी हारी तीनि ताप वागीश ॥४

शिवा विहारी सब सुखकारी धारी सदा गंग को शीश ४
तिनके भुजबल बल ललितेको फलिते करैं याहि गौरीश ॥
कीरति सागर की गाथा को ललिते कहैं नायकर शीश ५

अथ कथाप्रसंग ॥

सवन सुहावन जब आवत भा तब सब चले विदेशी ज्वान ॥
कीन चढ़ाई पृथीराज ने जब मरिगये वीर मलखान १
कीरतिसागर मदनताल पर सब रँग ध्वजा रहे फहराय ॥
परा पिथौरा दिल्ली वाला आला रूप शील समुदाय २
हाल पायकै परिमालिक ने फाटक बन्द लीन करवाय ॥
बन्धन छूटैं ना गौवन के ना कउ त्रिया सेजपर जायँ ३
मारे डरके पिंडुरी काँपैं मोहबा थहर थहर थर्राय ॥
बिना इकेले बघऊदन के फाटक कौन खुलावै आय ४
ऐसी बातैं घर घर होवैं दर दर नारिझुण्ड अधिकाय ॥
मस्तक पीटैं कर अपने सों औ यह कथा रहीं तहँ गाय ५
होत बनाफर जो सिरसा का फाटक आज देत खुलवाय ॥
पवनी आई है मूड़ेपर लूटन अवा पिथौराराय ६
कुशल न देखैं हम मुहबे मा संकट परा आज दिनआय ॥
बिना इकेले अब आल्हा के फाटक कौन खुलावै धाय ७
देवा सुलखे की मारुन मा ठहरत कौन यहांपर माय ॥
हाय गुसैयाँ की मरजी अस पवनी गई मूड़पर आय ८
कौन बचाई पृथीराज सों झंडा मदन ताल फहराय ॥
सात कोस के चौगिर्दा में तम्बू तम्बू परैं दिखाय ९
पति औ देवर भोजन करते घरमा कहैं हमारे माय ॥
तब तो बुढ़िया तिरिया बोली मन में श्रीगणेशको ध्याय १०

धीरज राखो अपने मनमा करि है काह पिथौरा आय ॥
मनियादेवन की शरणागत जावो हाथ जोरि शिरनाय ११
त्यई सहायी सुखदायी अब फाटक तुरत देयँ खुलवाय ॥
घर घर सुमिरैं नरनारी सब साँचे देव परैं दिखराय १२
घट घट ब्यापी अरि परितापी जापी चले जायँ तिनधाम ॥
आला देवन में देवता हैं मनियादेव मोहोवे ग्राम १३
भा खलभल्ला औ हल्लाअति घर घर गई उदासीछाय ॥
टोला टोला में हल्लाभा लल्ला नहीं बनाफरराय १४
बिना इकेले बघऊदन के फाटक कौन खुलावै आय ॥
ऐसे घर घर पुरबासी सब दर दर कहैं नारिनर धाय १५
भा खलभल्ला रनिवासे माँ मोहबा गँसा पिथौराआय ॥
घवी शारदा त्यहि समया मा मल्हना ध्यायरही शिरनाय १६
तुम्हरे बूते बघऊदन ने जीता देश देश सब जाय ॥
तुम लैआवो उदयसिंह को ईजति राखु शारदामाय १७
सदा सहायी तुम मायी हौ गायी तीनि लोक गुणगाथ ॥
मोहिं अनाथिनिकी मातातुम तुम्हरे चरण हमारो माथ १८
दैकै सुपना बघऊदन को माता लावो यहाँ बुलाय ॥
नितप्रति पूजा हम मोहबे मा चन्दन अक्षत फूल चढ़ाय १९
चढ़ा पिथौरा है सँभरा भर हमरे प्राण रहे घबड़ाय ॥
कऊ सहायी ना दुनिया माँ ईजति राखु शारदा माय २०
बैठि कुशासन रानी मल्हना सारी दीन्ही रैनि गँवाय ॥
स्वपना देखा ताही निशिमाँ औ जगि परा बनाफरराय २१
हाल बतावा सब देवा का ठाकुर उदयसिंह समुझाय ॥
इतना सुनिकै देवा बोला साँची सुनो बनाफरराय २२

जैसो स्वपना तुम देखा है तैसो दीख हमों है भाय ॥
बिपदा आई है मल्हना पर साँचो साँच बनाफरराय २३
होत भुरहरे के स्वपना सब साँचे उदयसिंह सरदार ॥
करो बहाना अब गाँजर को औ मोहबे को होउ तयार २४
कुँवा बिवाहन की बिरिया मा दीन्ह्यो प्राण नेग तुम भाय ॥
चढ़ा पिथौरा है दिल्ली का साँचोस्वपनपरादिखलाय २५
चलिये जल्दी अब मोहबे को लाखनिराना संगलिवाय ॥
इतना सुनिकै द्यावलि वाला लाखनि पास पहूँचा जाय २६
बड़ी नम्रता ते बोलत भा यहु रणबाघु बनाफरराय ॥
जाहिर पबनी है मोहबे की साँची सुनो कनौजीराय २७
मोरि लालसा यह डोलति है पवनी करैं मोहोबे जाय ॥
करैं बहाना हम गाँजर -को तुमको मोहवा लवैं दिखाय २८
इतना सुनिकै लाखनि बोले चलिये वेगि बनाफरराय ॥
चरचा करिये नहिं मोहबे की नहिं सब जैहैं काम नशाय २९
करो तयारी अब गाँजर की पहुँचैं नगर मोहोबे जाय ॥
जैसि दवाई रोगी माँगै तैसी बैद देय बतलाय ३०
तैसि खुशाली भै ऊदन के डंका तुरत दीन बजवाय ॥
हुकुमलगायो फिरि लश्करमा सजिगे सबै शूर समुदाय ३१
जहाँ कचहरी चंदेले की ऊदन तहाँ पहूँचे जाय ॥
हाल बतायो महराजा को दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ३२
लाखनिरानाकी मंशा है गाँजर खेलैं खूब शिकार ॥
म्वरिव लालसा यह डोलतिहै राजा कनउज के सरदार ३३
सुनिकै बातैं बघऊदन की राजै हुकुम दीन फरमाय ॥
तहँते चलिकै ऊदन देवा आल्हा पास पहूँचे आय ३४

कही हकीकति सब आल्हासों ऊदन बार बार समुझाय ॥
जानिकै इच्छा लखराना की आल्हा ठाकुर रहे चुपाय ३५
माथ नायकै फिरि आल्हा को माता पास पहूँचे आय ॥
कह्यो हकीकति महतारी सों दोऊ चरणन शीशनवाय ३६
बिदा माँगिकै महतारी सों भाभी पास पहूँचे जाय ॥
हाल बतायो सब सुनवाँ को साँचो साँच बनाफरराय ३७
बड़ी खुशाली सों भाभी ने आशिरबाद दीन हर्षाय ॥
माथ नायकै उदयसिंह फिर फौजन तुरत पहूँचे आय ३८
लाखनि देबा ऊदन तीनों लश्कर कूच दीन करवाय ॥
बाजत डंका अहतंका के यमुनापार पहूँचे जाय ३९
नदी बेतवा को उतरत भे झाबर डेरा दीन डराय ॥
योगिहा बस्तर सब क्षत्रिन को ऊदन तहाँ दीन पहिराय ४०
लाखनि ऊदन देवा सय्यद सम्मत कीन तहाँ त्यहिबार ॥
सिरसा केरे फिरि फाटकमाँ आये सबै शूर सरदार ४१

सवैया ॥

फाटक हाटक नाटक दीख बिना मलखान नहीं गुलजारा ।
श्वान शृगालन जाति जमाति औ भांति सबै विपरीत निहारा ॥
ऊदन नैनन नीरन धार अपार वही सो सही त्यहि बारा ।
शोचत मोचत नैनन को ललिते लखि ऐनन नैननद्वारा ४२

एक बरदिया लखि बोलतभा योगी काह शोच यहिबार ॥
एक इकेले मलखाने बिन पृथ्वी डारा नगर उजार ४३
दगा ते मारे मलखानेगे अब ह्याँ रोवैं श्वान शृगाल ॥
इतना सुनिकै देवा ऊदन नैनन ढाँपि लीन रूमाल ४४

होश उड़ाने दोउ क्षत्रिन के दोऊ ह्वैगे हाल बिहाल॥
कह्यो बरदिया ते धीरज धरि बेटा देशराज के लाल ४५
का खा गा घा ङ ङा आदिक हमहूँ पढ़ा एकही साथ॥
हाय! पियारे गुरु भाई को कैसे निधन कीन जगनाथ ४६
ब्वला बरदिया तब ऊदन ते साँची सुनो गुरू महराज॥
जो महरानी गजमोतिनि थी सत्ती भई धर्म के काज ४७
परम पियारे बघऊदन का लै लै वार वार सो नाम॥
धरिकै जंघापर प्रीतम शिर पहुँची तुरत विष्णुके धाम ४८
सुनी बरदिया की बातैं ये बोला देशराज का लाल॥
सरा दिखावो मलखाने का कहँ पर जरी सती सो बाल ४९
सुनिकै बातैं बघऊदन की तुरतै साथ भयो तय्यार॥
बना चबुतरा तहँ सत्ती का देखत भये सबै सरदार ५०
बहु रन बोले त्यहि समयामाँ साफै शब्द परा सो कान॥
आज साँकरा परिमालिक का जावो तहाँ सबै तुम ज्वान ५१
इतना सुनिकै ऊदन बोले साफै साफ देयँ बतलाय॥
जियत मोहोबे हम जानैं ना कौवा मरे हाड़ लै जायँ ५२
नाता टूटो अब मोहबे का जादिन मरे बीर मलखान॥
को अस ठाकुर अब दुनियामा दादा मलखे के अनुमान ५३
इतना कहिकै ऊदन देबा दोऊ छांड़ि दीन डिडकार॥
फिरि रन बोले त्यहि समयामा ऊदन जीवेका धिक्कार ५४
आजु साँकरा है मल्हना पर यहु दिन परी न बारम्बार॥
ताते जावो तुम मोहबे को ठाकुर उदयसिंह सरदार ५५
इतना सुनिकै सब योगिन ने सुमिरा हृदय भवानीनाथ॥
बड़ा मोह करि तेहि समया मा चौरै फेरि नवायो माथ ५६

चारो योगी चलि तहँना ते मोहबे फेरि पहूँचे आय ॥
मोहबा केरे फिरि फाटक पर योगिनअलखजगायोजाय ५७
बजी बाँसुरी तहँ ऊदन की खँझड़ी मैनपुरी चौहान ॥
बाजै डमरू भल लाखनि का तोड़ैं गजल पर्ज पर तान ५८
को गति बरणै तहँ सय्यद कै सो इकतारा रहा बजाय ॥
ऊदन बोले दरवानी ते फाटक तुरत देउ खुलवाय ५९
सुनी हकीकति हम काशीमाँ मोहबा बसैं रजा परिमाल ॥
पारस पत्थर इन के घरमा इनसम नहीं और महिपाल ६०
भिक्षा माँगब हम ड्योढ़ी माँ साँचे साँच दीन बतलाय ॥
हैं हम योगी बङ्गाले के आयन द्रव्य हेतु है भाय ६१
तुम्हैं मुनासिब अब याही है फाटक तुरत देउ खुलवाय ॥
सुनिकै बातैं बैरागिन की बोला तुरत बचन शिरनाय ६२
खुलि है फाटक बैरागी ना तुम ते साँच दीन बतलाय ॥
आफति आई परिमालिक पर गाँसा नगर पिथौरा आय ६३
बन्धन छूटैं ना गौवन के ना कउ त्रिया सेजपर जाय ॥
आज मोहोबा पर बिपदा है घर घर रही उदासी छाय ६४
झूलै हिंडोला ह्याँ कोऊ ना ना कउ गावै मेघ मलार ॥
आज मोहोबा लङ्का ह्वैगा शङ्का घूमि रही सब द्वार ६५
बङ्का ठाकुर सिरसावाला जब ते मरा बीर मलखान ॥
आल्हा ऊदन गे कनउज को तबते छूटिगई सब शान ६६
इतना कहिकै दरवानिन ने योगिन पुरे दीन पहुँचाय ॥
ता ता थेई ता ता थेई ऊदन ठाकुर दीन मचाय ६७
ध्रुरपद सरंगीत तिल्लाना गावै खूब कनउजीराय ॥
बाजै खँझड़ी भल देबा के सय्यददशा बरणिनाजाय ६८

साँचे योगी जनु पैदा भे पूरण योग परै दिखराय ॥
माथा चमकै भल ऊदन का नैननगई अरुणता छाय ६९
चढ़ा उतारू भुजदण्डै हैं सब विधि सुघर लहुरवाभाय ॥
नगर मोहोबा की गलियन में योगिन दीन्ह्यो धूममचाय ७०
रथ्यति मोही परिमालिक की दीन्हेनि खानपान बिसराय ॥
भये बावला सँग योगिन के घूमन लागि नारिनर धाय ७१
रूप देखिकै लखराना का मोहीं युवा बाल तहँ आय ॥
अलख लाड़िला रतीभान का लाखनि शूरवीर अधिकाय ७२
नयन मिलावै नहिं नारिनसों नीचे शीशलेय औंधाय ॥
राग हिंडोला ऊदन गावै अँगुरिनभाव बतावत जाय ७३
मीरा ताल्हन बनरस वाला सो इकतारा रहा बजाय ॥
ताल स्वरन सों देबा ठाकुर खँभरी खूब रहा गमकाय ७४
खबरि पायकै मल्हना रानी योगिन महललीन बुलवाय ॥
चन्दन चौकिन माँ योगी सब बैठे रामचन्द्र को ध्याय ७५
मल्हना बोली तहँ योगिन ते साँचे हाल देउ बतलाय ॥
पूत पिथौरा के चारो तुम यह हम मनै लीन ठहराय ७६
लूटन आयो है महलन को सो यह मनै देउ बिसराय ॥
जियत न जैहौ तुम महलनते ब्रह्मारंजित लेउँ बुलाय ७७
मारि सिरोहिन ते हनिडरि हैं यमपुर अबै द्यहैं दिखलाय ॥
हाय ! बेंदुला का चढ़वैया नाहिंन आजु लहुरवाभाय ७८
सून पायकै पृथीराज ने गाँस्यो नगर मोहोबा आय ॥
पै अस खाली है मोहबा ना जस तुम मनैलीन ठहराय ७९
तिरिया लरि हैं रजपूतन की भाला बलछी साँग उठाय ॥
कुशल पिथौरा की है है ना तुम ते साँच दीन बतलाय ८०

इतना सुनिकै ऊदन बोले दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ॥
हम नहिं लरिका पृथीराज के माता काह गई बौराय ८१
हमतो योगी बंगाले के मोहबा शहर मँझावा आय ॥
कुटी हमारी है गोरखपुर जावैं हरद्वार को माय ८२
मोहिं बखेड़ा ते मतलब ना भिक्षा आप देयँ मँगवाय ॥
पारस पत्थर तुम्हरे घरमा लोहा छुवत स्वान ह्वैजाय ८३
सुनी बड़ाई हम कनउज मा राजा जयचँद के दरबार ॥
साल दुसाला मोहनमाला दीन्ह्यो उदयसिंह सरदार ८४
आला राजा कनउज वाला गुदरी तुरत दीन बनवाय ॥
मुँदरी दीन्ह्यो इन्दल ठाकुर लाखनि कड़ादीन पहिराय ८५
जो कछु पावैं हम महलन ते लैकै कूच देयँ करवाय ॥
भजनानन्दी सब योगी हैं कहुकछुदेवैं भजनसुनाय ८६
शोक छाँड़िकै आनँद होवो करिहैं कुशल जानकीमाय ॥
एक पिथौरा के गिनती ना लाखन चढ़ैं पिथौराआय ८७
पुण्य तुम्हारी ते मिटि जैहैं माता साँच देयँ बतलाय ॥
काहे रोवो तुम महलन मा माता बार बार घबड़ाय ८८
सुनिकै बातैं ये योगिन की मल्हना छाँड़िदीन डिंडकार ॥
काह बतावैं हम योगिन ते नाहिंन उदयसिंह सरदार ८९
कुँवाँ बिवाहन उदयसिंह गे तब मैं पैर दीन लटकाय ॥
प्राणनेग तहँ हमका दीन्ह्यो आल्हा केर लहुरवाभाय ९०
बात ब्यगरिगै महराजा ते आल्हा ऊदन गये रिसाय ॥
मरिगा ठाकुर सिरसावाला बिपदा गई मोहोबे आय ९१
खान पान अब कछु सूझै ना बूझै नहीं कछू दिनरात ॥
को अब जूझै पृथीराज ते सूझै नहीं मनै यह बात ९२

पर्व भुजरियन के मूड़ेपर पृथ्वी गाँसि मोहोबा लीन ॥
कैसे जैबे हम सागर पर पवनी खोंटि बिधाते कीन ६३
प्यारी बेटी चन्द्रावलि घर ऊदन लाये बिदाकराय ॥
सो नहिं जैहै जो सागर पर हमरी जियत मौत ह्वैजाय ६४
बेटी ठाढ़ी चन्द्रावलि तहँ नैनन आँस रही ढरकाय ॥
जैसो योगी यहु ठाढ़ो है ऐसो मोर लहुरवा भाय ६५
हाय! अकेले बिन ऊदन के गड़बड़ परा नगर में आय ॥
ऊदन मलखे की समता का तीसर भयो कौन जगमाय ६६
मोहिं अभागिनि के कर्मन ते दूनों भाई गये हिराय ॥
कह्यो संस्कृत मा ऊदन ते लाखनिराना बचनसुनाय ६७
नाम बतावो तुम मल्हना ते काहे धरी निठुरता भाय ॥
कह्यो संस्कृत मा ऊदन तब तुम सुनिलेउ कनौजीराय ६८
नाम बतावैं जो मल्हना ते हमरी जियत मृत्यु ह्वै जाय ॥
इतना कहिकै लखराना ते मल्हनै बोले वचन सुनाय ६९
शोच न राखो कछु मन अन्तर रानी साँच देयँ बतलाय ॥
पर्व तुम्हारी हम करवैहैं अपनोयोगादिहैंदिखलाय १००
काह हकीकति है पिरथी कै गड़बड़ करै परव में आय ॥
हैं अनगिनती योगी सँगमा भावर डेरादीन गड़ाय १०१
करी लबरई पिरथी राजा दिल्ली ताल देव करवाय ॥
कीन इशारा फिरि लाखनि तन आपन गुरुदीनबतलाय १०२
गुरू जानिकै लखराना को चन्द्रावलि ने कहा सुनाय ॥
होय सनीनो अब सागर माँ जो गुरुबाबा करो सहाय १०३
नहीं सनीनो अब मोहबे माँ साँचो नहीं परै दिखलाय ॥
लाखनि बोले चन्द्रावलि ते बहिनी साँचदेयँ बतलाय १०४

योग दिखावब हम सागर पर खेतम लड़ब बरोबरि आय॥
देखि सनीनो हम मोहबे का पाछे धरब अगाड़ी पायँ १०५
पंद्रादिन लौं रहि मोहबे मा तुम्हरी परब देब करवाय॥
नहिं मुख देखैं हम पिरथी का गड़बड़ तहाँ मचावैं आय १०६
अड़बड़ योगी हमरे सँग मा लड़बड़ गड़बड़ देयँ हटाय॥
बड़बड़ राजनकी गिनती ना सड़बड़ करैं हमारी आय १०७
काह हकीकति है पिरथी कै जो तहँ चैंय करैं मुख माय॥
मान न रैहैं तहँ काहू के योगी योग देयँ दिखलाय १०८
काल्हि सबेरे तुम सागर मा पवनी करो आपनी जाय॥
दूत पठावो तुम भावर का योगी फौज देयँ दिखलाय१०९
मारि गिरावैं हम भोगिन का माता साँच दीन बतलाय॥
भयो आसरा तब मल्हना के योगी चलिभे शीश नवाय११०
सुनी बतकही यह माहिल जब टाहिल चुगुलन मा सरदार॥
चला उताइल सो सागर को राजा पिरथी के दरबार १११
बड़ी खातिरी करि माहिल कै राजा पास लीन बैठाय॥
कही हकीकति तहँ योगिन कै माहिल बार बार सब गाय११२
योगी आये अनगिनती हैं भावर डेरा दिह्यनि डराय॥
शपथ खायकै ते मल्हना ते अबहीं गये पिथौराराय ११३
मारि गिरावब हम सागर मा गड़बड़ जौन मचाई आय॥
काह हकीकति पृथीराज कै आपनयोग देबादिखलाय ११४
साँचे योगी सो अड़बड़ हैं हमहूँ देखि गयन सकुचाय॥
पहिले खेदो तुम योगिनका पाछे मोहबा लेउ लुटाय ११५
काह हकीकति है योगिन कै सरबरि करैं नृपति कै आय॥
चौंड़ा धांधू को पठवावो योगी कूच देयँ करवाय ११६

इतना सुनिकै पृथीराज ने चौंड़ा धांधू लीन बुलाय ॥
भल समुझावा तिन दोउनका यहु महराज पिथौराराय ११७
दोऊ चढ़िकै तहँ हाथिन मा तहँते कूच दीन करवाय ॥
जायकै पहुँचे फिरि झाबर मा जहँपर योगिनकासमुदाय ११८
चौंड़ा बोला तहँ ऊदन ते योगी हाल देउ बतलाय ॥
कहाँते आयो औ कहँ जैहौ काहे डेरा दीन गड़ाय ११९
ऊदन बोले तब चौंड़ा ते ठाकुर हाथी के असवार ॥
हम तो आये बंगाले ते जावैं हरद्वार यहिबार १२०
पै हम रहिबे ह्यां पंद्रादिन तुमते साँच दीन बतलाय ॥
मल्हनारानी इक मोहबे मा ताकी परब देब करवाय १२१
है खलभल्ला औ हल्लाअति की चढ़ि अवा पिथौराराय ॥
कीन प्रतिज्ञा हम मोहबे मा तुम्हरी परब देब करवाय १२२
साँची करिबे हम बानी का ताते टिकब यहाँ पर भाय ॥
कहाँ के ठाकुर तुम दोऊ हौ हमते साफ देउ बतलाय १२३
फौज देखिकै बैरागिन कै दोऊ लागि मनै पछिताय ॥
कौन हटाई बैरागिन का सम्मुख समरभूमिमें जाय १२४
जौन बनावा महराजा ने योगिन स्वई दीन बतलाय ॥
कैसे टरिहैं ये झाबर ते यह नहिं चित्तठीकठहराय १२५
चौंड़ा धाँधू फिरि बोलत भे योगिन बार बार समुझाय ॥
करैं बखेड़ा कहुँ योगी ना ताते कूच देउ करवाय १२६
कह्यो पिथौरा यह हमते है योगिन जाय देउ समुझाय ॥
कूच करावैं उइ झाबर ते नाहक रारि मचावैं आय १२७
लड़ना मरना रजपूतन का युग युग धर्म यहै है भाय ॥
युद्ध न चहिये बैरागिन को ताते कूच देउ करवाय १२८

फौज तुम्हारी ह्याँ जितनी है सबको भोजन देयँ पठाय ॥
खावो पीवो हरिको ध्यावो जावो हरद्वार को भाय १२६
इतना सुनिकै ऊदन तड़पे चौंड़ा चला तुरत भयखाय ॥
आय कै पहुँचा त्यहि तम्बू मा जहँ पर बैठ पिथौराराय १३०
कही हकीकति सब योगिन कै चौंड़ा बार बार समुझाय ॥
सुनी ढिठाई जब योगिन कै माहिलबोले शीशनवाय १३१
अब हम जावत हैं मोहवे को तुम्हरे काज पिथौराराय ॥
इतनी कहिकै माहिल चलिभे पहुँचे फेरि मोहोवे आय १३२
रानी मल्हना ह्याँ महलन मा मनमा बार बार पछिताय ॥
त्यही समइया त्यहि औसरमा माहिलभाय पहूँचाजाय १३३
मल्हना बोली तहँ माहिल ते नीके गयो यहाँपर आय ॥
हाल बतावो अब सागर का चाहत काह पिथौराराय १३४
सुनिकै बातैं ये बहिनी की बोला उरई का सरदार ॥
बैठक मांगत है खजुहा की माँगै राजग्वालियरक्यार १३५
उड़न बछेड़ा पाँचो माँगै औरो चहै नौलखाहार ॥
डोलामाँगै चन्द्रावलि का राजा दिल्ली का सरदार १३६
तुम्हरी दिशितें हम पिरथी ते बोल्यन बहुतभांति समुझाय ॥
लाख रुपैया लग लैकै तुम ह्याँते कूचदेउ करवाय १३७
यह मनभाई नहिं पिरथी के चौंड़ा ताहर उठे रिसाय ॥
जो कछु माँगत महराजा हैं सोई देउ आप मँगवाय १३८
कुशल न मानो तुम मोहोवे कै तिलतिल भूमिलेउँ खुदवाय ॥
पारस पत्थर पिरथी माँगैं बहिनीसाँचदीनबतलाय १३९
ये सब चीजैं अब लीन्हे बिन जावैं नहीं पिथौराराय ॥
ताहर चौंड़ा की मरजी अस सबियांमोहवालेयँ लुटाय १४०

इतनो कहिकै माहिल चलिभे मल्हना रोय उठी अकुलाय ॥
त्यही समैया त्यहि अवसरमा ब्रह्मानन्द पहूँचे आय १४१
मूड़ सूँघिकै रानी मल्हना अपने पास लीन बैठाय ॥
बहिनी ठाढ़ी चन्द्रावलि तहँ नैनन आँसूरही गिराय १४२
रोय कै बोली फिरि मल्हनाते माता साँच देयँ बतलाय ॥
सुजी सिराउब हम सागर मा योगी गये भरोस कराय १४३
साँची वाणी के योगी हैं निश्चय पर्व यहैं करवाय ॥
मोहिं भरोसा है योगिन का जो कछु करैं सहारा भाय १४४
मल्हना बोली चन्द्रावलि ते बिटिया साँच देउँ बतलाय ॥
सुजी सिरावो तुम कुँवनापर दीनौं धर्म दऊ रहिजाय १४५
इतना सुनिकै बेटी बोली ऐसे कहौ वचन का माय ॥
समरथ भैया हैं ब्रह्मानँद हमरी पर्व यहैं करवाय १४६
इतना सुनिकै ब्रह्मा बोले साँची साँच देयँ बतलाय ॥
रहौ भरोसे तुम योगिन के जानौं नहीं हमारे भाय १४७
पै हम जावैं जो सागर को आपन मूड़ कटावैं जाय ॥
चढ़ा पिथौरा है सँभरा भर बहिनी काह गई बौराय १४८
जानि बूझिकै को आगी मा आपन हाथ जरावै जाय ॥
बिना बेंदुलाके चढ़वैया मुर्चा देवै कौन हटाय १४९
आल्हा इन्दल लग होते जो तुम्हरी पर्व देत करवाय ॥
मरिगा ठाकुर सिरसावाला सब विधिशूर बनाफरराय १५०
इकले दादा मलखाने बिन यहु दुख परा जानपर आय ॥
होत जो ठाकुर सिरसावालो तौका चढ़त पिथौराराय १५१
शूर न देखा हम दुनिया मा जैसो रहै वीर मलखान ॥
हाथी पटका पिरथी द्वारे काँपे तहाँ सबै चौहान १५२

इतना सुनिकै रानी मल्हना तुरतै छाँड़ि दीन डिंडकार॥
रंजित बोला तब माता ते गरुई हांक देत ललकार १५३
छाँड़ि भरोसा अब योगिनका हमरे साथ चलो तुम हाल॥
काह हकीकति है पिरथी कै जबलग रहै हाथ करवाल १५४
मारे मारे तलवारिन के नदिया बहै रक्त की धार॥
मूड़ न रैहै जब देही माँ तबहूँ चली मोरि तलवार १५५
लड़ना मरना रजपूतन का युग युग यही धर्म व्यवहार॥
प्राण न रैहैं जब देही माँ तबहीं मिटी म्वार व्यवहार १५६
साँची साँची हम बोलत हैं माता शपथ तुम्हारी खाय॥
कीरतिसागर मदनताल पर बहिनीसाथचलौतुममाय १५७
जो नहिंजैहौ तुम सागर को रंजित मरी जहर को खाय॥
मर्द मर्दई ते चूका जो तौफिरजियतमृत्युह्वैजाय १५८
देही रैहै नहिं दुनिया माँ कीरति बनी रहै सब काल॥
मोहिं पियारी स्वइ कीरति है साँचीशपथखाउँमहिपाल १५९
सुनि सुनि बातैं ये बेटा की मल्हना ह्वैगै हाल विहाल॥
बेटा अभई माहिल वाला बोलाबचनसांचत्यहिकाल१६०
हमहूँ चलिबे तुम्हरे सँग मा साँचे बचन बतावैं भाय॥
आजु मोहोबा खाली लखिकै गांसा आय पिथौराराय १६१
आल्हा ऊदन हैं कनउज मा ह्यां मरिगये वीरमलखान॥
अब हम लूटैं खुब मोहबे को सोची भली वीर चौहान १६२
पै नहिं जानत हैं अभई का जबलग रही हाथ तलवार॥
तबलग मारब हम क्षत्रिनका नदिया बही रक्तकी धार १६३
करो तयारी अब सागर की फूफू सांच देयँ बतलाय॥
काह हकीकति है पिरथी कै गड़बड़ करै परबमें आय १६४

रंजित अभई की बातैं सुनि मल्हना गई तुरत बौराय ॥
बोलि न आवा महरानी ते मुँहकापानगयोकुम्हिलाय १६५
धीरज धरिकै अपने मनमा औ फिरि सुमिरि शारदामाय ॥
देव मनावै मनियादेवन मल्हना बारबार शिरनाय १६६
तुम्हीं गोसइयाँ दीनबन्धु हौ देवता मोहबे के भगवान ॥
रंजित अभई दोउ बेटन की कीन्ह्योआपअवशिकल्यान१६७
हम जो बरजैं अब रंजित का करि है पूत नहीं कछु कान ॥
शपथ खायकै महराजा कै हमरीशपथकीनफिरिआन १६८
अब समुझाये ते मानी ना मनमा ठीक लीन ठहराय ॥
कीन तयारी फिरि सागर कै गौरा पारबती को ध्याय १६९
माहिल बोलैं ह्याँ अभई ते बेटा काह गयो बौराय ॥
तुम नहिं जावो सँग रंजित के मोहवाभलेउजरिसबजाय १७०
रंजित ब्रह्मा दोउ मरिजावैं तुम्हरी जूझै पूत बलाय ॥
इतना सुनिकै अभई बोले दाऊ सांच देयँ बतलाय १७१
कहा नपलटबहमकौनिउबिधि चहु तन रहै चहौ नशिजाय ॥
पांय लागिकै फिरि माहिल के डङ्का तुरत दीन बजवाय १७२
बाजे डङ्का अहतङ्का के शङ्का छोड़ि दीन सरदार ॥
शूर अशङ्का भट बङ्का जे ते सब गही हाथ तलवार १७३
सजा रिसाला घोड़नवाला आला एक लाख अनुमान ॥
सजि इकदन्ता दुइदन्ता गे हाथी छोटे मेरु समान १७४
अंगद पंगद मकुना भौंरा सजिगे श्वेतबरण गजराज ॥
धरी अँबारी तिन हाथिन पर बहुत न हौदा रहे बिराज १७५
घण्टा बांधे गल हाथिन के भारी देत चलैं ठनकार ॥
सजे सिपाही पैदल वाले लीन्हे हाथ ढाल तलवार १७६

बारह रानी परिमालिक की सोऊ भई बेगि तय्यार ॥
जहर बुझाई छूरी लैकै नलकी पलकी भई सवार १७७
मल्हना बोली चन्द्रावलि ते बेटी करो बचन परमान ॥
डोला तुम्हरो गहै पिथौरा तौ दैदिह्यो आपनोप्रान १७८
पै तुम जायो नहिं दिल्ली को पेट म मारयो काढ़ि कटार ॥
इतना कहिकै रानी मल्हना आपो होत भई असवार १७९
आगे पीछे फौजै कैकै बीच म डोला लीन कराय ॥
मनियादेवनको सुमिरन करि रंजित कूचदीन करवाय १८०
छींक तड़ाका भै सम्मुख मा मल्हना रोय उठी ततकाल ॥
तुम नहिं जावो अब सागरको बेटा करो बचन प्रतिपाल १८१
अशकुन पहिलेते ह्वैगा है कैसी करी तहाँ करतार ॥
लेउँ बलैया मैं रंजित कै बेटा लौटिचलौ यहिबार १८२
इतना सुनिकै रंजित बोले माता करो बचन बिश्वाश ॥
शकुन औ अशकुनकोमानैंना ना हमकरैं जीवकी आश १८३
कीरतिसागर मदनताल पर तुम्हरी पर्ब द्यहैं करवाय ॥
जो मरिजैहैं हम सागर में कीरति रही जगतमेंछाय १८४
पाउँ पिछारी को धरिबेना चहुतन धजीधजी उड़िजाय ॥
स्याबसि स्याबसि अभई बोले मल्हनाचुप्पसाधिरहिजाय १८५
चलिभा लश्कर फिरि आगेका फाटक उपर पहूँचा जाय ॥
जहँना तम्बू पृथीराज का माहिल तहाँ पहूँचाधाय १८६
खबरि सुनाई सब पिरथी को माहिल बार बार समुझाय ॥
हुकुम पायकै तहँ पिरथी का चौंड़ा कूच दीन करवाय १८७
खेत छूटिगा दिननायक सों झंडा गड़ा निशाको आय ॥
तारागण सब चमकन लागे सन्तनधुनी दीनपरचाय १८८

करों वन्दना पितु माता को दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ॥
मातु भवानी पितु परमेश्वर वन्दनकिहे स्वर्गकाजाय १८९
निश्चयजिनका पितु मातापर देवी देव सरिस अधिकाय ॥
तिनका जगमा कछुदुर्लभ ना साँचीकहतललितयहगाय १९०
करों वन्दना अब शंकर की ह्याँते करों तरँगको अन्त ॥
राम रमा मिलि दर्शन देवैं इच्छा यही भवानीकन्त १९१

इति श्रीलखनऊनिवासि (सी,आई,ई) मुंशीनवलकिशोरात्मजवाबूप्रयागनारायण जीकीआज्ञानुसार उन्नामप्रदेशान्तर्गत पँड़रीकलांनिवासि मिश्र वंशोद्भव बुधकृपाशङ्करसूनु पण्डितललिताप्रसादकृत रंजित युद्धागमनवर्णनोनामप्रथमस्तरंगः ॥ १ ॥

सवैया ॥

दीनदयाल गुपाल कृपाल सुरासुरपाल सुनो महराजा ।
सोवत जागत बैठ जो होहु सुनो विनती तुमहूँ रघुराजा ।
गाजिरह्यो खल कामबली औ छलीदल मोहके वाजतबाजा ।
राम औ कृष्णभजे ललिते तबहूँ यह जीततहै कलिराजा १

सुमिरन ॥

रक्षा जगकी जो करते ना तौ कस होत नाम जगदीश ॥
ईश्वर होते रघुनन्दन ना कैसे हनत समर दशशीश १
बड़े प्रतापी अंजनि वाले अबहूँ अमर जगत हनुमान ॥
ऐसे अनुचर ज्यहि स्वामी के पूरण ब्रह्म ताहि अनुमान २
रीछ औ बाँदर को सँगमालै जीता बली शत्रु को जाय ॥
शत्रु प्रतापी के भाई को को नर लेय जगत अपनाय ३
को फल खावत घर शबरी के कोधों तजत आपनी राज ॥
कोधों तारत तिय गौतम की प्यारी माननीय शिरताज ४

कोधों तोरत शिवके धनुको जो नहिं होत राम महराज ॥
कछु नहिं शंका मन हमरे में पूरणब्रह्म राम रघुराज ५
माथ नवावों रघुनन्दन को हमपर कृपा करो भगवान ॥
चौंड़ा रंजित का मुर्चा मैं करिहौं सकल अगाड़ी गान ६

अथ कथाप्रसंग ॥

अटा चौंड़िया फिरि फाटक पर गरुई हाँक दीन ललकार ॥
पाँव अगाड़ी का डाखो ना ठाकुर मोहबे के सरदार १
डोलादैकै चन्द्रावलि को पाछे धखो अगाड़ी पाँय ॥
हुकुम पिथौरा का याही है तुमते साँच दीन बतलाय २
इतना सुनिकै अभई बोल्यो चौंड़ा काह गयो बौराय ॥
अस गति नाहीं पृथीराज के डोला लेयँ आज मँगवाय ३
खाली मोहबा तुम जान्यो ना मान्यो साँच वचन विश्वास ॥
शूर सराहैं त्यहि ठाकुर को जो अब जाय पालकी पास ४
इतना सुनिकै चौंड़ा तुरतै अपनी खैंचिलीन तलवार ॥
पाँव अगाड़ी का डाखो ना ठाकुर उरई के सरदार ५
इतना सुनिकै रंजित ठाकुर फौजन हुकुम दीन फरमाय ॥
जान न पावैं दिल्लीवाले इनके देवो मूड़ गिराय ६
हुकुमपायकै यह रंजित का क्षत्रिन खैंचिलीन तलवार ॥
पैदल के सँग पैदल अभिरे औ असवार साथ असवार ७
सूँड़ि लपेटा हाथी भिड़िगे मारन लागि शूर सरदार ॥
भाला बलछी तीर तमंचा कोताखानी चलैं कटार ८
विकट लड़ाई भै फाटक पर नदिया वही रक्तकी धार ॥
ना मुहँ फेरैं दिल्लीवाले ना ई मुहबे के सरदार ९
रंजित अभई की मारुन मा सब दल होनलाग खरिहान ॥

रही न आशा क्यहु लड़िबेकी आरी भये समरमें ज्वान १०

सवैया ॥

मारत औ ललकारत संगर लंगर मे क्यहु बुद्धि चलैना ।
शूर शिरोमणि रंजित ज्वान सो मान किये रण पैर टरैना ॥
होत जहाँ घमसान महाँ तहँ बीर कोऊ अभिमान करैना ।
माहिल पूत सुपूत जहाँ सो तहाँ ललिते कोउ देखि परैना ११

बड़ा लड़ैया माहिल वाला आला उरई का सरदार ॥
हनि हनि मारे रजपूतन का भारी हाँक देय ललकार १२
चौंड़ा वकशी पृथीराज का सोऊ खूब करै तलवार ॥
चौंड़ा सोहत है हाथी पर अभई घोड़े पर असवार १३
सेल चौंड़िया हनिकै मारा अभई लीन्ह्यो वार बचाय ॥
ऍंड़ लगावा फिरि घोड़े के हाथी उपर पहूँचा जाय १४
ढालकि औझड़ अभई मारा चौंड़ा गयो मूर्च्छा खाय ॥
भागि सिपाही दिल्लीवाले रंजित दीन्ह्यो फौज बढ़ाय १५
कीरतिसागर मदनताल पर पहुँचा फेरि चँदेला आय ॥
गा हरिकारा ह्याँ फौजन ते राजै खबरि सुनाई जाय १६
हाल पायकै पृथीराज ने सूरज पूत दीन पठवाय ॥
सूरज आयो जब सागरपै बोल्यो दोऊ भुजा उठाय १७
डोला दैकै चन्द्रावलि का रंजित कूच देउ करवाय ॥
नहीं तो बचिहौ ना संगर मा जो विधि आपु बचावैं आय १८
इतना सुनिकै रंजित बोले सूरज काह गये बौराय ॥
मर्द सराहौं त्यहि ठाकुर का डोला पास जाय नगच्याय १९
जितनी बिल्ली दिल्लीवाली तिनको देवों समर सुवाय ॥

तौ तौ लरिका परिमालिक का नहिं ई मुच्छ डरौं मुड़वाय २०
इतना सुनिकै सूरज जरिगे अपने कहा सिपाहिन टेर ॥
जान न पावैं मोहबेवाले मारो एक एक को घेर २१
सुनिकै बातैं ये सूरज की क्षत्रिन खैंचि लीन तलवार ॥
कीरतिसागर मदनताल पर लाग्यो होन भड़ाभड़मार २२
पैग पैग पर पैदल गिरिगे दुइ दुइ पैग गिरे असवार ॥
मारे मारे तलवारिन के नदिया बही रक्त की धार २३
को गति वरणै तहँ अभई कै मारै ढूँढ़ि ढूँढ़ि सरदार ॥
रंजित लड़िका परिमालिकका दूनों हाथ करै तलवार २४
सूरज ठाकुर दिल्लीवाला आला समरधनी चौहान ॥
गनि गनि मारै रजपूतन का कीरतिसागर के मैदान २५
रंजित सूरज द्वउ ठकुरन का मुर्चा परा बरोबरि आय ॥
दोऊ सोहैं भल घोड़न पै दोऊ रूपशील अधिकाय २६
सूरज मारैं जब रंजित का दाहिन बाँउ खेलि तब जाय ॥
रंजित मारैं जब सूरज का सोऊ लेवै वार बचाय २७
उसरिन उसरिन दोऊ खेलैं पानी भरै यथा पनिहार ॥
कोऊ काहू ते कमती ना दोऊ लड़ैं तहाँ सरदार २८

सवैया ॥

सिंह समान सो रंजित वीर औ सूरजहू बल घाटि कछूना ।
मार अपार भई ललिते पै उदारन के मन शङ्क कछूना ॥
शक्ति औ शूल चलै तलवार सो मार कही कहिजात कछूना ।
रक्त कि धार अपार वही पर हार औ जीत लखात कछूना २९

सब्जा घोड़े पर रंजितहैं सूरज सुरखा पर असवार ॥

दोऊ मारैं तलवारिन सों दोऊ लेयँ ढाल पर वार ३०
कोऊ काहू ते कमती ना दोउ रण परा बरोबरि आय ॥
वार चलाई रंजित ठाकुर सूरज लैगा चोट बचाय ३१
सूरज मारा तलवारी का रंजित लीन ढाल पर वार ॥
रंजित मारा तलवारी का चेहरा काटि निकरिगै पार ३२
सूरज जूझे जब मुर्चा में पहुँचा टंक तुर्तही आय ॥
टंक सामने अभई आये खेलन लागि जूझके दायँ ३३
यहु रणनाहर माहिलवाला गरुई हाँक देय ललकार ॥
टंक शंक तजि त्यहि औसरमा दूनों हाथ करै तलवार ३४
साँग चलाई नृपति टंक ने अभई लीन्ही वार बचाय ॥
भाला मारा जब अभई ने तोंदी परा घाव सो जाय ३५
टंक औ सूरज दोऊ मरिगे हाहाकार फौज गा छाय ॥
गा हरिकारा फिरि फौजन ते राजै खबरि जनाई जाय ३६
हाल पायकै पृथीराज ने ताहर बेटा लीन बुलाय ॥
मर्दनि सर्दनि को बुलवावा तिनते हालकहा समुझाय ३७
टंक और सूरज दोऊ जूझे कीरतिसागर के मैदान ॥
लाश लयआवो द्वउ वीरन की भात्री जानि सदा बलवान ३८
हुकुम पायकै महराजा को डंका तुरत दीन बजवाय ॥
तीन लाखलों लश्कर लैकै तुरतै कूच दीन करवाय ३९
कीरतिसागर मदनपालपर ताहर अटा तुरतही धाय ॥
लाश देखिकै द्वउ वीरन कै सो पलकी म दीन रखवाय ४०
निकट जायकै दल रंजितके गरुई हाँक कहा गुहराय ।
कौन बहादुर है मोहबे का सूरज टंकै दीन गिराय ४१
डोला दैकै चन्द्रावलि का अबहीं कूच देउ करवाय ॥

नहीं सुहागिल कोउ बचिहै ना मोहवा रंडन सों भरिजाय ४२
इतना सुनिकै अभई बोले रण माँ दोऊ भुजा उठाय॥
हम नहिं देखैं गति काहूकै डोला पासजाय नगच्याय ४३
पर्व आपनी पूरी करिकै अबहीं कूच देव करवाय॥
रारि मचाये कछु पैहौ ना साँची बात दीन बतलाय ४४
अबै मोहोवा अस सूना ना जैसा समझि लीन सरदार॥
मूड़ न रैहैं जब देही मा तबहूं रुण्ड करैं तलवार ४५
इतना सुनिकै ताहर ठाकुर लाशै फौज दीन पठवाय॥
हुकुम लगावा रजपूतन का इनके देवो मूड़ गिराय ४६
हुकुम पाय कै यह ताहर का लागे लड़न शूर सरदार॥
पैदल पैदल कै बरणी भै औ असवार साथ असवार ४७
भाला बलंछी छूटन लागे पागे मोद शूर त्यहि बार॥
अपन परावा कछु सूझै ना आमाझोर चलै तलवार ४८
कटि कटि कल्ला गिरैं खेत माँ उठि उठि रुण्ड मचावैं मार॥
को गति बरणै त्यहि समया कै नदिया बही रक्तकी धार ४९
मुण्डन केरे मुड़चौरा भे औ रुण्डन के लगे पहार॥
यहु रणनाहर मल्हनावाला आल्हा मोहबे का सरदार ५०
जैसे भेड़िन भेड़हा पैठै जैसे सिंह बिडारै गाय॥
तैसे मारै रजपूतन का छप्पन दीन्हे मूड़ गिराय ५१
बड़ा प्रतापी रण नाहर यहु यहिके बाँट परी तलवार॥
यहिके मारे हाथी गिरिगे मरिगे सूरजसे सरदार ५२
रंजित नामी यहु ठाकुर जो रणमाँ भली मचाई रार॥
पटा बनेठी बाना फेंकै टेकै दुऊ हाथ तलवार ५३
लोह कि टोपी शिर में धारे सब्जा घोड़ेपर असवार॥

झीलम वखतर दोऊ पहिरे रंजित मोहबे का सरदार ५४
ताहर बेटा पृथीराज का सोऊ आयगयो त्यहिवार ॥
गरुई हाँकन ते ललकारा ठाकुर मोहबे के सरदार ५५
कीन ढिठाई तुम अब लग है अब हम साँच देत बतलाय ॥
डोला दैकै चन्द्रावलि का अबहीं कूच देउ करवाय ५६
नहीं तो आशा तजु जीवनकी यमपुर देत आज दिखलाय ॥
दीखि लड़ाई नहिं ताहर की नाहर खबरदार ह्वैजाय ५७
इतना कहिकै ताहर ठाकुर रंजित पास पहूँचा जाय ॥
रंजित मारी तलवारी को ताहर लैगा चोट बचाय ५८
ताहर मारा तलवारी का रंजित लीन ढाल पर वार ॥
खैंचि सिरोही रंजित मारी ताहर रोंकिलीन त्यहिवार ५९
जैसे रसरी गगरी लैकै पानी खैंचि रही पनिहार ॥
तैसे रंजित ताहर दोऊ रणमाँ भली मचाई रार ६०

सवैया ॥

मार अपार भई त्यहि वार सो यार सँभार रह्यो कछु नाहीं ।
जूझिगये बहु पैदल स्वार तजे हथियार कवौं रण नाहीं ॥
जातभये सुरलोक तवै औ जवै तजि प्राण दिये रणमाहीं ।
कीरति लोक रहै ललिते परलोक बनै क्षण एकहि माहीं ६१

दोऊ प्यारे रघुनन्दन के वन्दन करैं हृदय कर्त्तार ॥
दोऊ मारैं तलवारी सों दोऊ लेयँ ढालपर वार ६२
रंजित चूके तलवारी ते कटिकै मूड़ गिरा त्यहिवार ॥
पूत सुपूता माहिलवाला आला उरई का सरदार ६३
सम्मुख ताहर के आवा सो सुर्खा घोड़ेपर असवार ॥

ओ ललकारा फिरि ताहर को सँभरो दिल्ली के सरदार ६४
इतना सुनिकै ताहर बोले अभई बार बार धिक्कार॥
लिल्लीघोड़ी के चढ़वैया माहिल बाप तुम्हारे यार ६५
तिनके लरिका तुम तलवरिहा कन्नते भयो कहौ सरदार॥
इतना सुनिकै अभई ठाकुर अपनी खैंचि लीन तलवार ६६
ताहर अभई दोउ बीरन का परिगा समर बरोबरि आय॥
रञ्जित जूझै हैं संगर में धावन खबरि सुनाई जाय ६७
खबरि पायकै मल्हना रानी तुरतै गिरी तहाँ कुम्हिलाय॥
बारह रानी परिमालिक की गिरि गिरि परैं पछाराखाय ६८
रञ्जित रञ्जित कै गुहरावैं छाती धड़कि धड़कि रहिजाय॥
मारे डरके पिंडुरी काँपैं थर थर देह रही थर्राय ६९
कोगति बरणै चन्द्रावलि कै भलिकैबिपति कही ना जाय॥
सावधान भै मल्हनारानी तुरतै दीन्ह्यो दूत पठाय ७०
बोलन लागी चन्द्रावलि ते मनमा बार बार पछिताय॥
खप्पर भरिगा धिक् बेटी त्वहिं सागर पूत गँवावा आय ७१
इतना कहिकै मल्हना रानी तुरतै गिरी पछाराखाय॥
गा हरिकारा ह्वाँ मोहबे मा ब्रह्मै खबरि जनाई जाय ७२
रञ्जित जूझै हैं सागर पर तिनकी लाश लेहु उठवाय॥
इतना सुनिकै ब्रह्मा ठाकुर डंका तुरत दीन बजवाय ७३
सजि हरनागर तहँ ठाढ़ो थो तापर कूदि भये असवार॥
पाँचलाख लौं फौजै लैकै सागर चलन हेतु तय्यार ७४
ढाढ़ी करखा बोलन लागे बिप्रन कीन बेद उच्चार॥
रणकी मोहरि बाजन लागी रणका होनलाग व्यवहार ७५
झीलमबखतर पहिरि सिपाहिन हाथम लई ढाल तलवार॥

आगे हलका भा हाथिन का पाछे चले घोड़ असवार ७६
अभई ठाकुर ह्याँ ताहर का होवै खूब भड़ाभड़ मार ॥
दूनों मारैं तलवारी सों दूनों लेयँ ढालपर वार ७७
मारे मारे तलवारिन के नदिया बही रक्त की धार ॥
मुण्डन केरे मुड़चौरा भे औ रुण्डन के लगे पहार ७८
को गति बरणै त्यहि समया कै आमाझोर चलै तलवार ॥
वार चूकिगा माहिलवाला जूझा उरई का सरदार ७९
रञ्जित अभई द्वउ ठकुरन के उठि उठि रुण्ड करैं तलवार ॥
सुरपुर पहुँचे दोऊ ठाकुर ब्रह्मा आयगयो त्यहिवार ८०
लाश पाय कै द्वउ बीरन कै मोहवे तुरत दीन पठवाय ॥
सुमिरि गजानन शिवशङ्करको मारन लाग फौज मा जाय ८१
ब्रह्मा मारै तलवारी सों घोड़ा टापन देय गिराय ॥
ब्रह्मा ठाकुर के मुर्चामा सर्दनिगयो तड़ाका आय ८२
हँसिकै बोला सो ब्रह्माते ठाकुर साँच देयँ बतलाय ॥
डोला दैकै चन्द्रावलि का पबनी करो आपनी जाय ८३
सुनिकै बातैं ये सर्दनि की बोला मोहबे का सरदार ॥
नाम न लीन्हे अब डोलाका नहिं मुखधाँसिदेउँ तलवार ८४
सुनिकै बातैं ये ब्रह्माकी सर्दनि मारा गुर्ज उठाय ॥
वार रोंकि कै ब्रह्माठाकुर तुरतै दीन्ह्यो मूड़ गिराय ८५
मर्दनि आवा तब सम्मुखमा सोऊ वार चलावा आय ॥
खाली वार परी मर्दनि कै ब्रह्मा दीन्ह्यो मूड़ गिराय ८६
मर्दनि सर्दनि दोऊ जूझे माहिल अटे तड़ाका धाय ॥
हाल बतावा पृथीराज का माहिल बारबार समुझाय ८७
इकले ब्रह्मा हैं मोहवेमा तिनका आप लेउ बँधवाय ॥

मर्दनि सर्दनि दोऊ जूझे अब तुम चढ़ो पिथौराराय ८८
सुनिकै बातैं ये माहिल की हाथी तुरत लीन सजवाय ॥
सुमिरि भवानीसुत गणेश को पहुँचा समरभूमिमा आय ८९
चौंड़ा बकशी का बुलवावा औ यह हुकुम दीन फ़रमाय ॥
जितने डोलाहैं सागर में सबका अबै लेउ लुटवाय ९०
पाछे मल्हना चन्द्रावलि का दिल्ली शहर देउ पठवाय ॥
हुकुम पायकै पृथीराज का तहँपर अटा चौंड़िया धाय ९१
लाखनि बोले ह्याँ ऊदन ते नाहर सुनो बनाफरराय ॥
कीरतिसागर मदनताल पर चलिये बेगि लहुरवाभाय ९२
सुनिकै बातैं लखराना की डङ्का तुरत दीन बजवाय ॥
सजे सिपाही कनउज वाले मनमा फूलमतीको ध्याय ९३
सुमिरि भवानी महरानी को दानी तीनिलोक की माय ॥
फूलमती पद बन्दन कैकै हाथी चढ़ा कनौजीराय ९४
चढ़ा बेंदुला का चढ़वैया मैया शारद चरण मनाय ॥
ध्याय भवानीसुत गणेश को देबा चढ़ा मनोहर जाय ९५
मीराताल्हन बनरस वाले सोऊ बेगि भये असवार ॥
योगिहा बाना मर्दाना सब ठाकुर भये समर तय्यार ९६
धुरपद संगीत तिल्लाना गावन लागे मेघमलार ॥
घोर घटा हैं कहुँ सावन के आवन प्रीतम केरि बहार ९७
शोचैं बिरहिनी घर आँगन में जब कहुँ परै पर्ब्ब त्यवहार ॥
प्रीतम होते जो सावन में तौ दुख दावन जात हमार ९८
को गति वर्णै त्यहि समया कै ऊदन गावैं मेघमलार ॥
पावन वर्षा है सावन कै जङ्गल देखि परैं हरियार ९९
फसल आँनकी नर बागन में जंगल देखि परैं गुलजार ॥

कारीं जामुन काले मेघा नीचे ऊपर करैं वहार १००
योगी पहुँचे मदनताल पर यारो सुनो कथा यहिवार ॥
चौंड़ा ठाढ़ो तट मल्हना के बकशी जौनुपिथौराक्यार १०१
कहन सँदेशा सो जब लाग्यो आयो देशराज के लाल ॥
धरिकै डाट्यो तहँ चौंड़ाका झगरा काह करैं नरपाल १०२
कीनि प्रतिज्ञा हम रानी ते तुम्हरी पर्व्व द्याव करवाय ॥
काह हकीकति है पिरथी कै लूटैं मदनताल पर आय १०३
इतना सुनिकै ताहर जरिगे अपनी खैंचिलीन तलवार ॥
तव लखराना कनउज वाला सम्मुखभयो तुरत सरदार१०४
ताहर लाखनि का मुर्चा भा चौंड़ा मैनपुरी चौहान ॥
कोगति वरणै बघऊदन कै लागो करन खूब घमसान१०५
हौदा हौदा बेंदुल नाचैं ऊदन करैं खूब तलवार ॥
बावनहौदा खाली ह्वैगे जूझे हाथिन के असवार १०६
चोट लागिगै कछु धाँधू के सोऊ गिरे मूर्च्छाखाय ॥
सँभरिकै बैठे फिरि हौदा पर मनमाशोचिशोचिरहिजाय१०७
बड़े लड़ैया सब योगी हैं मुर्चा पूरे दीन जमाय ॥
अपने अपने सब मुर्चन मा ठकुरन दीन्ही रारिबढ़ाय १०८
ललातमोली धनुवाँ तेली सय्यद वनरस का सरदार ॥
लाखनि ऊदन देवाठाकुर रणमा खूब करैं तलवार १०९
कोगति वरणै तहँ ताहर कै नाहर दिल्ली का सरदार ॥
चौंड़ा धाँधू कछु कमती ना येऊ करैं भड़ाभड़ मार ११०
चलैं सिरोही भल सागर में ऊना चलै बिलाइति क्यार ॥
खट खट खट खट तेगा बोलै बोलै छपकछपक तलवार १११
झलझल झलझल छूरीचमकैं दमकैं रणमा खूब कटार ॥

धम् धम् धम् धम् बजैं नगारा मारा मारा की ललकार ११२
सन् सन् सन् सन् गोली छूटैं तीरन मन्न मन्न गा छाय॥
फर फर फर फर घोड़ा रपटैं लपटैं देह देह में धाय ११३
को गति बरणै रजपूतन कै उठि उठि रुण्ड करैं तलवार॥
मूड़न केरे मुड़चौरा भे औ रुण्डन के लगे पहार ११४
चहला ह्वैगा चार कोसलों नदिया बही रक्तकी धार॥
लड़ैं पिथौरा तहँ सँभराभर राजा दिल्ली का सरदार ११५
शब्द पायकै तीर चलावै कलयुग यही एकही ज्वान॥
अबयहि समया यहि औसरमा ताहर लाखनि का मैदान ११६
देबा धाँधूके मुर्चा मा जूझे बहुत सिपाही ज्वान॥
पिरथी बोले फिरि चौंड़ाते हमरे बचन करो परमान ११७
रानी मल्हना चन्द्रावलि का डोला तुरत लेउ उठवाय॥
इतना सुनिकै चौंड़ा बकशी डोलन पास पहूँचा जाय ११८
खबरि सुनाई सब मल्हना का जो जो कहा पिथौराराय॥
सुनि संदेशा पृथीराज का मल्हनाबोली बचनसुनाय११९
जबै बनाफर उदयसिंह थे तब नहिं चढ़े पिथौराराय॥
बाँधिकै मुशकै सबलड़िकनकी मड़येपाँयलिह्यनिपुजवाय१२०
हथी पछारयनि जब द्वारपर तब कहँ गये पिथौराराय॥
ब्याहे ब्रह्मा गे दिल्ली मा समरथ हते बनाफरराय १२१
ब्रह्मा रञ्जित द्वउ लरिकन ते कीन्हेनि रारिआय महराज॥
रारि मचैहैं जो नारिन ते तौ सब ह्वैहैं काजअकाज१२२
इतना सुनिकै चन्द्रावलिकैं पलकी तुरत लीन उठवाय॥
चलिभा चौंड़ा लै पलकी को पहुँचा पञ्च पेड़ तर जाय १२३
रोवै मल्हना त्यहि समया मा गिरि गिरि परै पछाराखाय॥

ऊदन ऊदन कै गुहरावै कहँ तुम गये फनाफरराय १२४
लाउ शारदा यहि समया मा आल्हा केर लहुरवा भाय ॥
बिना इकेले बघऊदन के डोला कौन छुड़ाई जाय १२५
सदा भवानी ज्यहि दाहिनहैं ज्यहिघर सिद्धिकरैं गन्नेश ॥
पारस पत्थर ज्यहिके घर मा पूरित बिभो सदा धन्नेश १२६
भई सहायी शारद मायी ऊदन आयगये त्यहिकाल ॥
हाथ जोरिकै योगी बोले लाला देशराजके लाल १२७
भिक्षा पावैं जो मैया हम तौ अब हरद्वार को जायँ ॥
इतना सुनिकै मल्हना रोई बोली आरत बैन सुनाय १२८
रही न ईजति अब मोहवे की पलकी लीन चौंड़िया आय ॥
जायकै पहुँचा पँच बिरवातर हा दैयागति कही न जाय १२९
बिना बेंदुला के चढ़वैया नैया कौन लगैहै पार ॥
चीरिकै धरती ऊदन आवो ईजति राखिलेउ यहिबार १३०
इतना सुनिकै ऊदन योगी घोड़ा तुरत दीन रपटाय ॥
जायकै पहुँचा पँच बिरवातर यहु रणबाघु लहुरवाभाय १३१
चौंड़ा दीख्यो जब ऊदन का सम्मुख हाथी दीन बढ़ाय ॥
औ ललकारा फिरि योगी का काहे प्राण गवाँवो आय १३२
इतना सुनिकै ऊदन योगी गरुई हाँक दीन ललकार ॥
डोला धरिदे चन्द्रावलि का चौंड़ामानुकही यहि बार १३३
धोखे योगी के भूले ना अबहीं योग देउँ दिखलाय ॥
ऍड़ लगाई फिरि बेंदुल के हाथी उपर पहूँचा जाय १३४
ढाल कि औभड़ ऊदन मारी चौंड़ा गयो मूर्च्छाखाय ॥
लैकै डोला चन्द्रावलि का मल्हनापास दीनरखवाय १३५
देवा ठाकुर ते फिरि बोले अब तुम रहो यहाँपर भाय ॥

अब हम जाव्रत त्यहि दलमाहैं ज्यहिमालड़ै चँदेलाराय १३६
जितने योगी हैं सागर में सबियाँ बेगि होयँ तय्यार ॥
लाखनि आये हैं मुर्चा ते तिनकेसाथ चलैं सरदार १३७
इतना सुनिकै सबियाँ योगी तुरतै होन लागि तय्यार ॥
हिरसिंह बिरसिंह बिरियावाले चन्दन दतिया के सरदार १३८
चिंता राजा रुसनीवाला औ पतउँज के मदनगुपाल ॥
पूरनराजा पुरा वाला जगमनिजिन्सीकानरपाल १३९
बारह कुँवर बनौधा वाले चारो गाँजर के सरदार ॥
चिन्ता दूसर गोरखपुर के रूपनि मधुकरसिंह उदार १४०
ये सब योगी सजि सागर में रणका चलन हेतु तय्यार ॥
मीरताल्हन बनरस वाले सिरगा घोड़ेपर असवार १४१
सुमिरि भवानी फूलमती को हाथी चढ़ा कनौजीराय ॥
सुमिरि शारदा मैहरवाली आगे चला बनाफरराय १४२
उतसों सेना पृथीराज की सोऊ गई बरोबरि आय ॥
चली सिरोही फिरि सागरपर अद्भुतसमरकहा ना जाय १४३
ना मुँह फेरैं कनउज वाले ना ई दिल्ली के चौहान ॥
कीरतिसागर मदनताल पर क्षत्रिन कीन खूब मैदान १४४
कटि कटि कल्ला गिरैं बछेड़ा चेहरा गिरैं सिपाहिन केर ॥
बिना सूँड़ि के हाथी घूमैं मारैं एक एकको हेर १४५
आदिभयङ्कर का चढ़वैया यहु महराज पिथौराराय ॥
भूरी हथिनी पर लखराना सम्मुखगयो तड़ाकाआय १४६
ब्रह्मा ताहर का मुर्चा है दोऊ खूब करैं तलवार ॥
चौंड़ा ऊदन का रण सोहै धाँधू बनरस का सरदार १४७
सवापहर लौं चली सिरोही नदिया बही रक्त की धार ॥

ढालैं कच्छा छूरी मच्छा वारन मानो नदी सिवार १४८
नचैं योगिनी खप्पर लीन्हे ठोकैं ताल भूत बैताल ॥
लूटि मचाई भल गृद्धन है फौजैं कुत्तनकी विकराल १४९
भल बनिआई तहँ चील्हन की कागन लागी कारि बजार ॥
लैलै सौदा चले शृगालौ आंतनमाल कण्ठमें धार १५०
लाखनि पिरथी के मुर्चा मा लागी चलन खूब तलवार ॥
हौदन हौदन के ऊपर मा घूमै बेंदुल का असवार १५१
जूझरु कंकण सवालाख का सो हाथे मा करै बहार ॥
त्यहिक्षादीख्यो जब पिरथीपति राजा दिल्ली के सरदार १५२
तब पहिचान्यो बघऊदन का निश्चय ठीक लीन ठहराय ॥
लाखनिराना है सम्मुख मा ज्यहिमम हाथीदीनहटाय १५३
यहै शोचिकै पृथीराज ने दीन्ह्यो मारु बन्द करवाय ॥
बढ़िगे डोला महरानिन के सागर उपर पहूँचे जाय १५४
दक्षिण दिशि मा परा पिथौरा उत्तर उदयसिंह सरदार ॥
लाखनि बोले ह्याँ मल्हना ते रानी करो अपन व्यवहार १५५
इतना सुनिकै तहँ चन्द्रावलि सीढ़िन उपर बैठिगै जाय ॥
पात मँगाये तहँ पुरइन के सुन्दरि दोनी लीनबनाय १५६
छोड़ि दोनइया दी सागर में माहिल दीख तमाशा आय ॥
लिल्ली घोड़ी का चढ़वैया पिरथी पास पहूँचा जाय १५७
खबरि बताई सब सागर की माहिल बार बार समुझाय ॥
हाल पायकै पृथीराज ने चौंड़ा बकशी दीनपठाय १५८
छूँड़ी डुनैया जब चन्द्रावलि चौंड़ा हाथी दीन बढ़ाय ॥
रोयकै बोली तब चन्द्रावलि पवनीकिहिसिखोंटियहुआय१५९
बिना बेंदुलाके चढ़वैया को अब डुनिया लेय बचाय ॥

जो कहुँ दुनिया चौंड़ा लैगा हमरी पत्रै खोंटि ह्वैजाय १६०
सुनिकै बातैं चन्द्रावलि की बोला तुरत कनौजीराय॥
लेउ दोनइया उदयसिंह तुम मानो कही बनाफरराय १६१
इतना सुनिकै उदयसिंह ने अपनो दीन्ह्यो घोड़ बढ़ाय॥
तबै चौंड़िया ने ललकारा योगी खबरदार ह्वै जाय १६२
पैहौ दोनी ना सागर में आपन प्राण गवाँये आय॥
इतना कहिकै चौंड़ा बकशी भालामारयो तुरतचलाय १६३
वार बचाई तहँ भाला की तुरतै दोनी लीन उठाय॥
लैकै दोनी दी बहिनी को बहिनी बार बार बलिजाय १६४
सूजी खोंसैं अब क्यहि के हम नहिं घर आज लहुरवाभाय॥
इतना सुनिकै मल्हना बोली चन्द्रावलिकोबचनबुझाय१६५
खोंसो सूजी तुम योगिन के जिन अब पत्रनी दीनकराय॥
इतना सुनिकै चन्द्रावलि फिरि पहुँचीउदयसिंहढिगजाय १६६
कीन इशारा तब लाखनि का यहु रणबाघु बनाफरराय॥
लाखनि बोले तब ऊदन ते हमरो मूड़ कटायो आय १६७
माल खजाना कछु लाये ना देवैं कौन नेगु ह्याँ आय॥
तहिले पहुँची चन्द्रावलि तहँ सूजी धरी कानपर जाय १६८
बाइस हाथी तीनि पालकी दीन्ह्यो नेगु कनौजीराय॥
सूजी खोंसी जब ऊदन के जूझकोकंकणदीनगहाय१६९
देखिकै कंकण उदयसिंह का निश्चय मनै लीन ठहराय॥
साँचो योगी यहु ऊदन हैं मातैकहाबचनसमुझाय १७०
सुनिकै बातैं चन्द्रावलि की ऊदन नाम दीन बतलाय॥
बड़ी खुशाली भै सागर में सबकोउमिलींतहाँपरआय१७१

सवैया ॥

मीन मिलै जलको बिछुरे जिमि पङ्कज भानु यथा सुखदाई ।
त्योंहि मिली परिमाल कि नारि सो डारितहाँ विपदासमुदाई ॥
नैनन मोचत बारि निहारि सो नारिनकी तहँ लागि अथाई ।
कौन बखान करै ललिते सुख सम्पति आय तहाँ सब छाई १७२

मिलाभेंट करि सब ऊदन ते सागर सूजी रहीं सिराय ॥
बीर भुगंते औ धाँधू को पठयो फेरि पिथौराराय १७३
लै दल बादल दोऊ आये दोनी लेन हेतु ततकाल ॥
लाखनि बोले तब ऊदन ते सुनियेदेशराजके लाल १७४
लैगे दोनी जो दिल्ली के हमरो मान भंग ह्वै जाय ॥
बट्टा लागी रजपूती माँ औ सब क्षत्री धर्मनशाय १७५
बातैं सुनिकै लखराना की ऊदन अटे तड़ाका धाय ॥
धाँधू बोले तब ऊदन ते योगीसाँच देयँ बतलाय १७६
निकट दुनैया के जायो ना नहिं शिर देवैं अबै गिराय ॥
बात न मानी कछु धाँधू की ऊदन दोनी लीनउठाय १७७
देखि तमाशा यहु ऊदन का धाँधू खैंचि लीन तलवार ॥
कीरतिसागर की सिढ़ियन मा लागीहोन भड़ाभड़ मार १७८
झुके सिपाही दिल्लीवाले दोऊ हाथ करैं तलवार ॥
को गतिवरणै तहँ ऊदन कै ठाकुर बेंदुलका असवार १७९
फिरि फिरि मारै औ ललकारै यहु रणबाघु बनाफरराय ॥
हटिगा मुर्चा तहँ धाँधूका कोउ रजपूत न रोंकै पायँ १८०
बीर भुगंता कोपित ह्वैकै अपनो हाथी दीन बढ़ाय ॥
मीरासय्यद बनरस वाले सम्मुख गये तड़ाकाधाय १८१

ऍंड़ लगावा जब घोड़े के हौदा उपर पहूँचाजाय ॥
गुर्ज चलावा बीरमुगन्ता सय्यद लैगे चोट बचाय १८२
ढाल कि औझड़ सय्यद मारी नीचे गिरा महाउत आय ॥
तहिले धाँधू तहँ आवत भा औ सय्यदकोदीनहटाय १८३
मारन लाग्यो रजपूतनका धाँधूभाय पिथौरा क्यार ॥
मारे मारे तलवारिन के नदिया वही रक्तकी धार १८४
ना मुँहँ फेरैं कनउजवाले ना ई दिल्ली के सरदार ॥
मूड़न केरे मुड़चौराभे औ रुण्डनके लगेपहार १८५
शूर सिपाही दुहुँ तरफाके दूनों हाथकरैं तलवार ॥
कायर भागे समर भूमिते अपने डारि डारि हथियार १८६
तहिले माहिल गे तम्बूमें औ पिरथी ते कहाहवाल ॥
जीति न होई महराजाअब आयो देशराज को लाल १८७
ऊदन जावैं जब मोहवे ते तब फिरि चढ़्यो पिथौराराय ॥
तुम्हैं मुनासिब अब याही है देवो मारु बन्द करवाय १८८
सुनिकै बातैं तहँ माहिल की तैसो कियो पिथौराराय ॥
मर्दनि सर्दनि सूरज टंको जूझे समरभूमि में आय १८९
इकसै हाथी गिरे खेतमें घोड़ा जूझे पाँच हजार ॥
लाखयुग्मकी तहँ संख्यामा जूझे दिल्लीके सरदार १९०
रंजित अभई दूनों जूझे घोड़ा जूझे चार हजार ॥
डेढ़ लाख दल पैदल जूझे संख्या मोहवेकी त्यहिबार १९१
छप्पन हाथी मोहबे वाले मारा रहै पिथौराराय ॥
मेख उखारिगै फिरि सागर ते पिरथी कूच दीनकरवाय १९२
तजिकै शंका अहतंका के डंका तुरत दीन बजवाय ॥
कैयो दिनका धावा करिकै दिल्ली गयो पिथौराराय १९३

ह्याँ सुधिपाई परिमालिक ने आये देशराज के लाल ॥
वन्दन कैकै यदुनन्दन को पलकीचढ़े रजापरिमाल १६४
कीरतिसागर मदनतालपर आये तुरत चँदेलेराय ॥
हाथ पकरिकै तहँ ऊदन का औछातीमा लीनलगाय १६५
पगिया धरदइ फिरि पैरन मा यहु रणबाघु बनाफरराय ॥
हाथ जोरिकै उदयसिंह तहँ आपनिकथा गयेसबगाय १६६
सुनिकै बातैं उदयसिंह की बोले फेरि चँदेलेराय ॥
पारस पत्थर तुम लैलेवो भोगो राज्य बनाफरराय १६७
तुमका सौंपत हम ब्रह्माका ऊदन मानो कही हमार ॥
तुम जो जैहौ अब कनउज को तौ को धर्म निबाहन हार १६८
इतना सुनिकै ऊदन बोले साँची सुनो रजापरिमाल ॥
तीन तलाकैं हमका दीन्ही सो अब रहीं करेजेशाल १६६
कहा मानिकै तुम माहिल का नाकछुकीन्ह्यो तनक बिचार ॥
मोहिं निकास्यो तुम भादों मा राजा मोहबे के सरदार २००
इतना सुनिकै मल्हना बोली साँची सुनो लहुरवाभाय ॥
जो तुम जैहौ अब कनउज का पिरथी मोहबालेय लुटाय २०१
दूध आपनो हम प्यावा है स्यावा तुम्है बनाफरराय ॥
बैस बुढ़ापा मा दुखपावा रंजित मरे समरमा आय २०२
अबनहिं जावो तुम कनउजको मानों कही लहुरवा भाय ॥
इतना सुनिकै ऊदन बोले दोऊहाथजोरि शिरनाय २०३
एक महीना दिन बारा भे कनउज तजे मोहिं अब माय ॥
जो नहिं जावैं अब कनउजका भाई आल्हा उठैं रिसाय २०४
कौन बहाना हम गाँजर का आयन नगर मोहोबा धाय ॥
देश निकासी हमरी हैहै जो कहुँ सुनीबनाफरराय २०५

भई सहायी शारद मायी स्वपने हाल दीन बतलाय॥
दया कनौजी लखराना की देखा नगर मोहोबा आय २०६
चढ़ी पिथौरा जो मोहबे का दिल्ली शहर लेब लुटवाय॥
यहिमा संशय कछु नाहीं है माता साँचदीन बतलाय २०७
इतना सुनिकै मल्हना बोली लाखनिराना बचन सुनाय॥
धन्य कोखिहै वह तिलका कै ज्यहिमारहे कनौजीराय २०८
बिछुरे ऊदन इन मिलवाये हमरी पर्ब्ब दीन करवाय॥
मोरि गोसैंयाँ लखराना हैं जो गाढ़ेमा भये सहाय २०९
सुनिकै बातैं ये मल्हना की बोले फेरि कनौजीराय॥
पुण्य तुम्हारी ते माई सब कीन्हेकाज सिद्धियदुराय २१०
सुमिरन करिये जगदम्बा का अम्बा बैठि महल मा जाय॥
काह हकीकति है पिरथी कै मोहबाशहर लेयँलुटवाय २११
मिला भेंट करि सब काहू सों दोऊ चलत भये सरदार॥
छाँड़िकै बाना सब योगिनका लश्करकूचभयोत्यहिबार २१२
पार उतरिकै श्री यमुना के कुड़हरि डेरा दीन गड़ाय॥
सातरोज को धावा करिकै कनउजगये कनौजीराय २१३
मल्हनापहुँची फिरि महलनमा राजा गये फेरि दरबार॥
गड़े हिंडोला फिरि मोहबे मा घर घर होयँ मंगलाचार २१४
खेत छूटिगा दिननायक सों भगडा गड़ा निशाको आय॥
परे आलसी खटिया तकि तकि घों घों कण्ठ रहा घर्राय २१५
माथ नवावों पितु माता को जिन बल पूर भई यह गाथ॥
देवी देवता ये साँचे हैं इनबच पूर कीन रघुनाथ २१६
आशिर्वाद देउँ मुन्शीसुत जीवो प्रागनरायण भाय॥
हुकुम तुम्हारो जो पावत ना कैसेकहतललितयहगाय २१७

रहै समुन्दर में जौलौं जल जौलौं रहैं चन्द औ सूर ॥
मालिक ललिते के तौलौं तुम यशसों रहौ सदा भरपूर २१८
करों तरंग यहाँ सों पूरण तवपद सुमिरि भवानीकन्त ॥
राम रमा मिलि दर्शन देवैं इच्छायही मोरि भगवन्त २१९
पुत्र हमारे जो चारो हैं तिनपर कृपाकरो रघुराज ॥
रामदत्त(१)औकृष्णदत्त(२)औशम्भू(३)ब्रह्मदत्त(४)महराज २२०
नन्दै चन्दै औ नन्दै बाणमें माधव मास विपति को काल ॥
ब्रह्मदत्त गे ब्रह्मलोक को भे अब इन्द्रदत्तै युग साल २२१

सवैया ॥

संवत वनइस उन्सठ आदि में माधव मास महादुखदाई ।
आय गयो विसफोटक रोग अब शान्त भयो बहु देव मनाई ॥
फेरि अचानक भय यह बात कि गर्दन फाटिगै फूट कि नाई ।
ब्रह्मदत्त बिरंचीलोक बसे ललिते यहदुःख कहैं निज गाई २२२

भक्त तुम्हारे चारो होवैं यह बर मिलै मोहिं भगवान ॥
कीरतिसागर मदनताल का पूराचरितकीन हमगान २२३

इति श्रीलखनऊनिवासि (सी,आई,ई) मुंशीनवलकिशोरात्मजबाबूप्रयागनारायण
जीकीआज्ञानुसारउन्नामप्रदेशान्तर्गतपँड़रीकलांनिवासि मिश्रवंशोद्भव
बुधकृपाशङ्करसूनु पं०ललिताप्रसादकृत कीरतिसागर
कीर्त्तिवर्णनोनामद्वितीयस्तरंगः २ ॥

कीरतिसागरकामैदानसम्पूर्ण ॥

इति ॥

अथ आल्हखण्ड ॥

ठाकुरआल्हसिंहजीकामनावनवर्णन ॥

सवैया ॥

जौन चहैं ललिते सुख सम्पति तौन भजैं नित शम्भुभवानी।
अक्षत चन्दन पुष्पन बिल्व सों पूजतहैं जे महा कउ ज्ञानी॥
नाति औ पूत परोसिन ज्ञातिन भांतिन भांति लहैं सुखखानी।
बाराणसी रजधानी बिराजत छाजत शम्भु तहाँ सुखदानी १

सुमिरन ॥

ज्ञानी ध्यानी सब जानत हैं जगको शम्भु करैं उपकार॥
निकट निशानी कलि पापनकी यामें गये सबै मन हार १
योग यज्ञकै चर्चा उठिगै अर्चा होय न एकोबार॥
विषय कमाई घर घर होवै दर दर उलटिगये व्यवहार २
सन्ध्या तर्पण की चर्चा ना पर्चा ठुमरिन के अधिकार॥
खर्चा होवै सँग वेश्यन के नारी पती देयँ धिक्कार ३
ऐसे पापी यहिकलियुग मा स्वामी शम्भु करैं उपकार॥

जो तन त्यागै श्री काशी मा सो नर चला जाय भवपार ४
है रजधानी गिरिजापति कै जाहिर तीनि लोक यहिवार ॥
अल्हा मनावन को अबजाई भैने जौनु चँदेले क्यार ५

अथ कथाप्रसंग ॥

लिल्ली घोड़ी का चढ़वैया माहिल उरई का परिहार ॥
काम औ धंधा कछु ज्यहिके ना केवल चुगुलिन का बयपार १
सोयकै जागा सो उरई मा घोड़ी तुरत लीन कसवाय ॥
चढ़िकै घोड़ी माहिलठाकुर दिल्ली शहर पहूँचा जाय २
बड़ी खातिरी पिरथी कीन्ह्यो अपने पास लीन बैठाय ॥
समय पायकै माहिल बोले मानो कही पिथौराराय ३
आल्हा ऊदन हैं कनउज मा मोहवा आपु लेउ लुटवाय ॥
ऐसो अवसर फिरि मिलिहै ना मानो कही पिथौराराय ४
इतना सुनिकै पृथीराज ने डंका तुरत दीन बजवाय ॥
चन्दन गोपी ताहर सजिगे मनमा श्रीगणेश पद ध्याय ५
लैकै फौजै सातलाखलों पिरथी कूच दीन करवाय ॥
कीरतिसागर मदनतालपर पहुँचा फेरि पिथौरा आय ६
तम्बू गड़िगे चौगिर्दा सों सब रँग ध्वजारहे फहराय ॥
पिरथी बोले फिरि माहिलते राजै खबरि सुनावो जाय ७
हाल हमारो सब जानत हौ तुमते कहौं काह समुझाय ॥
इतनासुनिकै माहिल चलिभे पहुँचे जहाँ चँदेलेराय ८
हाल बनायो परिमालिक ते माहिल झूठ साँच समुझाय ॥
सुनिकै बातैं माहिल मुखते राजा गये सनाकाखाय ९
अबापसीना परिमालिक के शिर सों छत्र गिराभहराय ॥
खबरि पायकै मल्हना रानी माहिलमहल लीनबुलवाय १०

मल्हनाबोली फिरिमाहिल ते काहे चढ़े पिथौराराय ॥
इतना सुनिकै माहिल बोले बहिनी साँच देयँ बतलाय ११
उड़न बछेड़ा पाँचो चाहैं पारस चहैं पिथौराराय ॥
डोला चाहैं चन्द्रावलि का ताहर साथ बियाही जाय १२
बैठक चाहैं खजुहागढ़ की चाहैं राज ग्वालियर क्यार ॥
इतना लीन्हे बिन जैहैं ना राजा दिल्ली के सरदार १३
सुनिकै बातैं ये माहिल की मल्हना गई सनाकाखाय ॥
धीरज धरिकै फिरि बोलति भै पिरथी देउ जाय समुझाय १४
बारह दिनकी मुहलति देवैं त्यरहें डाँड़ लेयँ भरवाय ॥
जबै बनाफर उदयसिंह थे तब नहिं अये पिथौराराय १५
देखि अनाथन ह्याँ तिरियनको लूटन अये अधर्मीराय ॥
धर्म्मी होवैं तो मोहलति अब बारह दिन की देयँ कराय १६
त्यरहें पावैं जो पिरथी ना मुहबा शहर लेयँ लुटवाय ॥
हथी पछारा था द्वारे पर जायकै जबै लहुरवाभाय १७
मलखे ठाकुर जब सिरसा थे तब नहिं अये पिथौराराय ॥
इतना कहिकै मल्हना रानी नीचे बैठी शीश झुकाय १८
बोलि न आवा जब मल्हनाते माहिल बोले बचन बनाय ॥
बारह दिन लौं बुलै पिथौरा पहिले मूड़ देउँ कटवाय १९
त्यरहें दिन जो लुटै पिथौरा तौ माहिल कै जनै बलाय ॥
बैर बिसाहा मलखे ऊदन ताते चढ़े पिथौरा धाय २०
इतना कहिकै माहिल चलिभे तम्बुन फेरि पहूँचे आय ॥
जो कछु भाषा मल्हनारानी माहिल यथातथ्य गा गाय २१
कछु नहिं ब्याला दिल्लीवाला मल्हना गाथ सुनो यहि बार ॥
मल्हना सोचै मन अन्तर मा अवधौं कवन बचावनहार २२

बिना बेंदुला के चढ़वैया नैया कौन लगैहै पार ॥
दैया मैया सुखदैया जग मैया शारद चरण तुम्हार २३
यहै बिचारत मल्हना रानी तुरतै बोलि लीन प्रतिहार ॥
तुरत बुलावा जगनायक का भैने जौनु चँदेले क्यार २४
खबरि पायकै जगनायकजी तुरतै गये तड़ाका आय ॥
आवत दीख्यो जगनायक को मल्हना उठी तड़ाकाधाय २५
पकरि कै बाहू जगनायक की अपने पास लीन बैठाय ॥
जगनिक बोले महरानी ते दोऊ हाथ जोरि शिरनाय २६
कौन साँकरा है माई पर हमते हाल देउ बतलाय ॥
तुरतै करिकै त्यहि कारज को पाछे शीश नवावों आय २७
इतना सुनिकै मल्हना बोली ईजति राखि लेउ यहिबार ॥
जल्दी जावो तुम कनउजको लावो उदयसिंह सरदार २८
सात लाखलों फौजै लैकै सागर परा आय चौहान ॥
बारह दिनकी मुहलति दीन्ही त्यरहें लूटी नगर निदान २९
कहि समुझायो तुम आल्हाते की बिपदामा होउ सहाय ॥
घाटि न समझा हम ब्रह्मा ते संकट परा आज दिनआय ३०
इतना कहिकै रानी मल्हना कागज कलम दवाइनिलीन ॥
शिरी सबैऊ ते भूषित करि पूरण पत्र समापतकीन ३१
सो दै दीन्ह्यो जगनायक को औरो कह्यो बहुत समुझाय ॥
जगनिक बोले तब मल्हनाते दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ३२
कैसे जावैं हम कनउज को औ मुह कौन दिखावैं माय ॥
सवन चिरैया ना घर छोंड़ै ना बनिजरा बनिजकोजाय ३३
तबै निकरिगे आल्हा ठाकुर तिनते बात न पूछाकोय ॥
बिपति बिदारण जगतारणकी मर्जी यही आज दिन होय ३४

नहीं तो होते मलखे ठाकुर
कैसे चढ़त पिथौरा आय ॥
जियत न जैबे हम कनउजको
कौवा मरे हाड़ लै जाय ३५
इतना सुनिकै मल्हना बोली
दोऊ नैनन नीर बहाय ॥
राखो ईजति यहि समया मा
जल्दी जाउ कनौजै धाय ३६
शोच विचारन की बिरिया ना
भैने बारबार बलिजायँ ॥
इतना सुनिकै जगनिक बोले
माई साँच देयँ बतलाय ३७
घोड़ा मँगावो हरनागर को
अबहीं जाउँ तड़ाकाधाय ॥
इतना सुनिकै रानी मल्हना
ब्रह्मै खबरि दीन पठवाय ३८
माहिल ब्रह्मा जहँ बैठे थे
चेरी तहाँ पहूँची जाय ॥
कह्यो सँदेशा सो मल्हना को
दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ३९
सुनि सँदेशा रनि मल्हनाका
बोला उरई का सरदार ॥
घोड़ न देवो जगनायक कों
ब्रह्मा मानु कही यहिबार ४०
आल्हा रूठे हैं मोहबे ते
कनउज बसे बनाफरराय ॥
घोड़ तुम्हारो फिरि देहैं ना
तुमते साँच दीन बतलाय ४१
कहा न माना कछु माहिलका
ब्रह्मा घोड़ दीन कसवाय ॥
बड़ी खुशाली सों जगनायक
सबको यथा योग शिरनाय ४२
मनियादेवनको सुमिरन करि
घोड़ा उपर भयो असवार ॥
जहाँ पिथौरा दिल्ली वाला
पहुँचा उरई का सरदार ४३
खबरि सुनाई जगनायक की
माहिल बारबार समुझाय ॥
लेउ बछेड़ा अब हरनागर
मानो कही पिथौराराय ४४
इतना सुनिकै पृथीराज ने
चौंड़ा बकशी लीन बुलाय ॥
कहि समुझावा सब चौंड़ा ते
यहु महराज पिथौराराय ४५
हुकुम पायकै महराजा को
चौंड़ा कूच दीन करवाय ॥
नदी बेतवा के ऊपरमा
जगनिकगयोतड़ाकाआय ४६

दीख्यो जगनिक को चौंड़ाने गर्रुई हाँक दीन ललकार ॥
देउ बछेड़ा हरनागर को पाछे जाउ नदी के पार ४७
इतना सुनिकै जगनायक जी चौंड़े बोले बचन सुनाय ॥
लौटिकै अइहैं जब कनउज ते घोड़ा तुरत दिहैं पठवाय ४८
ऐसे घोड़ा हम देहैं ना मानो कही चौंड़ियाराय ॥
इतना सुनिकै चौंड़ा बकशी आपन हाथी दीन बढ़ाय ४९
एँड़ लगायो जगनायक जी हौदा उपर पहूँचे जाय ॥
लीन्ह्यो कलँगी शिर चौंड़ाकी चौंड़ा बहुत गयो शरमाय ५०
लैकै कलँगी जगनायक जी नद्दी निकरि गये वा पार ॥
चौंड़ा बकशी फिरि बोलत भा मानो घोड़े के असवार ५१
तुम अस योधा हैं मोहबे मा कस ना राज्यकरैं परिमाल ॥
कलँगी हमरी अब दै देवो जावो आप कनौजै हाल ५२
इतना सुनिकै जगनायक जी बोले सुनो चौंड़ियाराय ॥
कलँगी तुम्हरी हम ऊदन को कनउजशहरदिखाउबजाय ५३
इतना कहिकै जगनायक जी अपनो घोड़ा दीन बढ़ाय ॥
तीनि दिनौना को धावाकरि कुड़हरितुरतगयोनगच्याय ५४
जेठ महीना ठीक दुपहरी शिरपर घामगयो बहुआय ॥
बरगद दीख्यो इक जगनायक डारन रही सघनता छाय ५५
तहँहीं बाँध्यो हरनागर को आपो सोयो जीन बिछाय ॥
दीख किसानन तहँ घोड़ा का औ असवार निहारा आय ५६
सोवत दीख्यो जगनायक को घोड़ा देखि गये हर्षाय ॥
करैं बतकही तहँ आपस मा ऐसो घोड़ दीख नहिं भाय ५७
करत बतकही सब आपस में अपने धाम पहूँचे आय ॥
बात फैलिगै यह कुड़हरिमा गंगा कान परी तब जाय ५८

उठा तड़ाका सो महलनते बरगद तरे पहूँचा आय ॥
सोवत दीख्यो जगनायक को घोड़ा कोड़ा लीन चुराय ५९
घोड़ बँधायो निज महलन मा औ यह हुकुमदीन फरमाय ॥
चर्चा करि है जो घोड़ा की ताको मूड़ देउँ गिरवाय ६०
इतना कहिकै गंगा ठाकुर महलन करन लाग बिश्राम ॥
सोयकै जागे जब जगनायक लागे लेन रामको नाम ६१
घोड़ न दीख्यो हरनागर को तब देहीं ते गयो परान ॥
देखन लाग्यो चौगिर्दा ते औ मनकरनलाग अनुमान६२
चौंड़ा आयो का पाछे ते हमरो घोड़ चुरायो आय ॥
घोड़ा कोड़ा कछु देखै ना मनमा गयो सनाकाखाय ६३
चिह्न देखिकै तहँ टापन के कुड़हरि शहर पहूँचा आय ॥
जहाँ अथाई पनिहारिन की जगनिक तहाँ पहूँचाजाय ६४
करैं बतकही ते आपस मा घोड़ा दीख नहीं असमाय ॥
जैसो लायो नरनायक है मानो उड़न बछेड़ा आय ६५
सुनिकै चर्चा तहँ घोड़ा की जगनिकखुशीभयोअधिकाय ॥
जहाँ कचहरी गंगाधर की जगनिक तहाँ पहूँचाजाय ६६
बड़ी खातिरी करि गंगाधर अपने पास लीन बैठाय ॥
जगनिक बोले गंगाधर ते घोड़ा कोड़ा देउ मँगाय ६७
चढ़ा पिथौरा है मोहबापर लीन्हे सात लाख चौहान ॥
जायँ मनावन हम आल्हाको हमरे बचन करो परमान ६८
जो सुनि पैहैं आल्हा ऊदन तुम्हरो नगरलेयँ लुटवाय ॥
त्यहिते तुमका समुझाइत है घोड़ा कोड़ा देउ मँगाय ६९
तब महराजा कुड़हरिवाला बोला काहगयो बौराय ॥
चोर न ठाकुर कउ कुड़हरि मा घोड़ा कोड़ा लेय चुराय ७०

हमरे घोड़न की कमतीना चाहौ जौनलेउ कसवाय ॥
तुम्हरो घोड़ा हम जानैं ना ओ जगनायक बात बनाय ७१
सुनिकै बातैं गंगाधर की भैने ब्वला चँदेलेक्यार ॥
घोड़ा कोड़ा जो पैहैं ना तौ मरिजायँ पेटको मार ७२
ईजति रैहै ना मोहवे की तुमते साँच दीन बतलाय ॥
होउ हितैषी परिमालिक के घोड़ा कोड़ा देउ मँगाय ७३
सुनिकै बातैं जगनायक की धीरज बहुत दीनसमुझाय ॥
खबरि पायकै महरानी ने राजै पास लीन बुलवाय ७४
कहि समुझावा महराजा ते विपदा परी मोहोवे आय ॥
तुम्है मुनासिब यह नाहीं है घोड़ा कोड़ा लेउ चुराय ७५
देउ तड़ाका घोड़ा कोड़ा राजन यहै बड़ाई आय ॥
सुनिकै बातैं महरानी की तुरतै गयो स[illegible] धाय ७६
डाटन लाग्यो तहँ चकरन को घोड़ा पता [illegible] कनौजे [illegible]ाय ॥
पाय इशारा महराजा का चाकर उठे [illegible]ो चौंड़ियाराय
लैकै घोड़ा हरनागर को [illegible]हरदिखाउब्बजाय राजा पास पहूँचे आय ॥
दीख्यो सूरति हरनागर कै जगना चढ़ा तड़ाकाधाय ७८
जैसे हमका घोड़ा दीन्ह्यो तैसे कोड़ा देउ मँगाय ॥
सवालाख को ओ कोड़ा है जो बनववा चँदेलाराय ७९
लोभ न लावो मन अपने मा कोड़ा तुरत देउ मँगवाय ॥
नहीं तो लौटों जब कनउज ते कुड़हरिशहर लेउँ लुटवाय ८०
कोड़ा दीन्ह्यो ना गंगाधर जगना कूच दीन करवाय ॥
छवै दिनौना के अन्तर मा कनउज शहर पहूँचे आय ८१
लगीं दुकानैं हलवाइन की सबविधिसजाशहरअधिकाय ॥
५ दुकानन मा पूछत भा कहँ पै बसैं बनाफरराय ८२

कहाँ बनाफर आल्हाठाकुर हमका पता देउ बतलाय॥
सुनिकै बातैं जगनायककी बोला एक मसखरा भाय ८३
आल्हा ऊदन मोहबे वाले मरिगे समर भूमि मैदान॥
काह बतावैं परदेशी से तिनकीकुशलनहींहैज्वान ८४
आल्हा तेली इक कनउज मा दूसर नगर आल्ह कुतवाल॥
सुनी मसखरा की बातैं जब जगनिकह्वैगाहाल बिहाल ८५
तबलौं ढाढ़ी इक बोलत भा ठाकुर घोड़े के असवार॥
आल्हा ऊदन मोहबेवाले नीके द्वऊ भाय सरदार ८६
अबहीं आवत हम ड्योढ़ीते ठाकुर घोड़े के असवार॥
खड़ा धौरहर वहु ऊदन का झलकैकलश सुबरणक्यार ८७
सुनिकै बातैं त्यहि ढाढ़ी की जगनिक दीन दुकान लुटाय॥
हाट बाट में हल्ला ह्वैगा पहुँचे राजसभा वहु जाय ८८
सुनिकै बातैं हलवाइन की लाखनि राना लीन बुलाय॥
पकरिकै लावो त्यहि ठाकुर को हमरी नजरि गुजारो आय ८९
इतना सुनिकै लाखनि राना भूरी उपर भये असवार॥
मीरासय्यद को सँग लैकै आये बेगि हाट त्यहिबार ९०
सय्यद दीख्यो जगनायक को तब लाखनिते कह्यो हवाल॥
यहु है भैनो महराजा को ज्यहिकानाम रजापरिमाल ९१
इतना सुनिकै लाखनिराना अपनो हाथी लीन घुमाय॥
मीरासय्यद जगनायक ते भेंटे तुरत तहाँ पर आय ९२
जहाँ धौरहर बघऊदन का दोऊ तहाँ गये असवार॥
द्वारे ठाढ़े उदयसिंह थे भेंटे तुरत आय सरदार ९३
हाथ पकरिकै जगनायक को महलन तुरत पहूँचे जाय॥
आल्हा दीख्यो जगनायक को अपने पास लीन बैठाय ९४

लिखी हकीकति जो मल्हनाने सो जगनायक दीन गहाय ॥
पढ़िकै चिट्ठी महरानी कै आल्हा चुप्पसाधि रहिजाय ९५
ऊदन बोले जगनायक ते भोजन हेतु चलौ सरदार ॥
आल्हा जावैं जो मोहबे को तो हम बैठि करैं ज्यँवनार ९६
बारह दिनके अब अरसा मा लूटी नगर पिथौराराय ॥
ईजति रैहै नहिं मल्हना की जो नहिं चलैं बनाफरराय ९७
डोला लेहैं चन्द्रावलि का पारस पत्थर लिहैं छिड़ाय ॥
नहीं बनाफर सिरसा वाला जो गाढ़े मा होय सहाय ९८
नाहीं सुनिकै मलखाने की आल्हा छाँड़ि दीन डिंडकार ॥
ऊदन इन्दल देबा सय्यद रोवन लागि सबै सरदार ९९
बात फैलिगै यह महलन मा की मरिगये बीर मलखान ॥
को गति बरणै त्यहि समयाकै महलनछायो घोरमशान १००
द्यावलि सुनवाँ फुलवा रानी शिरधुनि बार बार पछितायँ ॥
हाय ! बनाफर सिरसा वाले कैसे मरे समर में जाय १०१

सवैया ॥

हाय ! गयी सबमन्दिर छाय सुहाय नहीं ललिते सुख शय्या ।
बीर मरे मलखान कुमार गई रणसों सब की मनसय्या ॥
हाय ! दयी बलवान सदा दुख औसुखको करि कर्म व्यवय्या ।
बीरबली मलखान समान जहाननहीं अस सोदर भय्या। १०२

अस कहि रोवैं आल्हा ठाकुर दोऊ नैनन नीर बहाय ॥
बहु समुझायो जगनायक ने धीरज धरयो बनाफरराय १०३
अब नहिं जावैं हम मोहबे को तुमते साँच देयँ बतलाय ॥
खबरि जो पावत मलखाने की दिल्ली शहर लेत लुटवाय १०४

मलखे मरिगे जब सिरसा मा तबहुँ न लड़े चँदेलेराय ॥
मोहिं निकारयो उन भादों मा दारुण बाणी बज्र चलाय १०५
इतना कहिकै जगनायक सों आल्हा ठाकुर रह्यो चुपाय ॥
ऊदन बोले जगनायक ते भोजनकरो शोक बिसराय१०६
तब जगनायक फिरि बोलत भे मानो कही बनाफरराय ॥
संग न जावो जो मोहबे को हमरो शीश लेउ कटवाय १०७
बातैं सुनिकै जगनायक की द्यावलि कहा बचन समुभाय॥
बिपदा तुम्हरी के संगी हैं समरथ बड़े बनाफरराय १०८
इतना सुनिकै आल्हा बोले माता काह गई बौराय ॥
तीनि तलाकै राजै दीन्हीं सो छाती माँ गई समाय १०९
बिपदा भोगी हम मारग में सावन बिकट बादरी घाम ॥
पियैं त्यबारिन इन्दल पानी जो सुख चैन करैं बिश्राम ११०
इतना सुनिकै ऊदन बोले दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ॥
करो तयारी अब मोहबे की पाछिल बात सबै बिसराय १११
इतना सुनिकै आल्हा जरिगे नैनन गई लालरी छाय ॥
तब समुभायो देबा ठाकुर चहिये चलन महोबे भाय ११२
मनै आयगै यह आल्हाके तुरतै हुकुम दीन फरमाय ॥
भोजन करिये जगनायक जी चलिबेअबशिमाहोबेभाय ११३
भोजन कीन्ह्यो जगनायकजी संग मा उदयसिंह सरदार ॥
जहाँ कचहरी चन्देलेकी आल्हा गये राज दरबार ११४
कही हक़ीकति महराजा ते दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ॥
आज्ञा पावैं महराजा की देखैं नगर मोहोबा जाय ११५
चढ़ा पिथौरा दिल्लीवाला लीन्हे सातलाख चौहान ॥
जो नहिं जावैं हम मोहबे को तौ वह लूटै नगर निदान ११६

तेहिते आज्ञा हम को देवो ओ महराज कनोजीराय ॥
इतना सुनिकै जयचँद जरिगे बोले सुनो बनाफरराय ११७
रय्याति लूटी तुम गाँजर की मोहवे द्रव्य दीन पहुँचाय ॥
दै समझौता सब गाँजर का पाछे जाउ बनाफरराय ११८
घोड़ा लूटे तुम बूँदी के सो-सब कहाँ दीन पठवाय ॥
गेहूं खाये तुम गाँजर के ताते गई म्वटाई आय ११९
इतना कहिकै जयचँद राजा पहरा चौकी दीन कराय ॥
कैद जानिकै आल्हा ठाकुर रूपनबारी लीन बुलाय १२०
खबरि सुनावो तुम ऊदन का आल्हा परे कैदमा जाय ॥
दै समझौता तुम गाँजर का भाई अपन छुटाओ आय १२१
इतना सुनिकै रूपन चलि भा रिजिगिरि अटा तड़ाकाधाय ॥
खबरि सुनाई बघऊदन का सुनतै जरा लहुरवाभाय १२२
द्यावलि बोली जगनायक ते तुमहूं चलेजाउ यहि बार ॥
कपड़ा मैले सब हमरे हैं कैसे जायँ राजदरबार १२३
इतना सुनिकै ऊदन ठाकुर तुरतै इन्दल लीन बुलाय ॥
कपड़ा दीन्ह्यो जगनायक को तुरतै वेंदुल लीन सजाय १२४
उड़न बछेड़ा हरनागर पर जगना तुरत भयो असवार ॥
घोड़ बेंदुला के ऊपर मा ठाकुर उदयसिंह सरदार १२५
जयचँद राजा की ड्योढ़ी मा दोऊ अटे तड़ाका आय ॥
मस्ता हाथी जयचँद राजा फाटक उपर दीन ढिलवाय १२६
मारिकै भाला जगनायक ने हाथी दीन्ह्यो तुरत भगाय ॥
जहाँ कचहरी महराजा की दोऊ अटे तड़ाकाधाय १२७
सात तवा तहँ ईसपात के जयचँद राजा दीन धराय ॥
भाला गाड़ै ई लोहे पर औ बलमोहिंदेयदिखलाय १२८

कैसो भैने चन्देले का गड़बड़ कीन हाट मों आय ॥
इतना सुनिकै जगनायक ने मनमासुमिरि दूरगामाय १२६
भाला मारा ईसपात मा साती तवा निकरिगे पार ॥
स्याबसि स्याबसि क्षत्री बोले हरषे उदयसिंह सरदार १३०
सिंह कि बैठक जगना बैठ्यो राजा बहुत गयो शरमाय ॥
ऊदन बोले महराजा ते दोऊ हाथजोरि शिरनाय १३१
आजु साँकरा परिमालिक पर औ चढ़ि अवा पिथौराराय ॥
आयसु पावैं महराजा की जावैं नगरमोहोबा धाय १३२
गेरी माता सम मल्हना है तापर परी आपदा आय ॥
बीजक समझौ तुम गाँजर का दादा कैद देउ छुड़वाय १३३
घोड़ पपीहा जखमी हैगा जूझे स्वानमती के भाय ॥
जोगा भोगा की बदली मा सबियाँकनउजजायबिकाय १३४
घोड़ पपीहा की यउजी मा भूरी हथिनी देउ मँगाय ॥
जोगा भोगा के बदले मा लाखनि संग देउ पठवाय १३५
बारह बरसन का अरसा भा पैसा मिला न गाँजर क्यार ॥
तीनि महीना औ ग्यारह दिन गाँजर खूब कीन तलवार १३६
लैकै पैसा सब गाँजर का औ भरिदीन खजाना आय ॥
लाखनि राना को सँग देवो तब छातीका डाह बुताय १३७
कीन्हीं किरिया लखराना है मोहबे चलब तुम्हारे साथ ॥
आज्ञा देवो लखराना को साँची सुनो भूमिके नाथ १३८
बातैं सुनिकै बघऊदन की जयचँद बहुत गयो घबड़ाय ॥
बोलि न आवा महराजा ते मुहँकापानगयोकुम्हिलाय १३९
थर थर काँपन देही लागी शिरते छत्र गिरा भहराय ॥
करतब अपनीपर शोचत भा यहु महराजकनौजीराय १४०

कौन वहाना फिरि ऊदन ते बोला कनउज का महिपाल ॥
कौन हँसौवा हम आल्हा ते लाला देशराज के लाल १४१
जितनी फौजै हैं कनउज मा सो लैलेउ वनाफरराय ॥
रुपिया पैसा जो कछु चाहौ तुम्हरोमालखजानाआय १४२
लाखनि रानाको तिलका सों माँगो जाय वनाफरराय ॥
हमरी ठकुरी नहिं लाखनि पर तुम ते साँचदीन वतलाय १४३
कैद करैया को आल्हा को नीके जाउ लहुरवाभाय ॥
सुनि जगनायक ऊदन आल्हा तीनों चले शीशकोनाय १४४
ऊदन पहुँचे ढिग लाखनि के औ सब हाल कहा समुझाय ॥
चढ़ा पिथौरा दिल्लीवाला गाँसानगरमोहोबाआय १४५
विदा मांगिकै अब माता सों चलिये वेगि कनौजीराय ॥
इतना सुनिकै लाखनि चलिभे सँगमालिहेलहुरवाभाय १४६
रानी तिलका के महलन मा दोऊ अटे तड़ाका धाय ॥
सोने चौकी दोऊ वैठे माताचरणनशीशनवाय १४७
कही हकीकति सब तिलका ते यहु रणबाघु लहुरवाभाय ॥
आयसु पावैं लखराना जो देखैं नगर मोहोबा जाय १४८
सुनिकै बातैं उदयसिंह की तिलका गई सनाकाखाय ॥
बारह रानिन मा इकलौता साँची सुनो वनाफरराय १४९
सो चलिजैहैं जो मोहवे का हमरी जियत मौत ह्वै जाय ॥
इतना कहिकै रानी तिलका तुरतै वाँदी लीन बुलाय १५०
कहि समुझावा त्यहि वाँदीका पदमै खवरि जनावो जाय ॥
करि शृङ्गार महल अपने मा राखै वहू तहाँ विलमाय १५१
इतना सुनिकै वाँदी दौरी रानी खवरि जनाई जाय ॥
सुनिकै बातैं त्यहि वाँदी की लीन्ह्योगंगनीरमँगवाय १५२

इनवन कीन्ह्यो गंगाजलसों रेशम सारी लीन मँगाय॥
ओढ़ी सारी काशमीर की चोलीबन्दकसे अधिकाय १५३
पैर महाउर को लगवायो नैनन सुरमा लीन लगाय॥
कड़ाके ऊपर छड़ा बिराजैं त्यहिपर पायजेब हहराय १५४
पहिरि करगता करिहाँयेंमा नइ नइ चुरियाँ लीन मँगाय॥
ग्वरिग्वरिबहियाँ हरिहरिचुरियाँ शोभा कही बूत ना जाय १५५
अगे अगेला पिछे पछेला तिन बिच ककना करैं बहार॥
जोसन पट्टी बांधि बजुल्ला टाड़े भुजन केर शृंगार १५६
को गति बरणै तहँ हमेल कै चमकै हार मोतियनक्यार॥
नथुनी लटकन पहिरिनासिका कानन करनफूलकोधार १५७
गुञ्भी पहिरी दोउ कानन में टीका मस्तक करै बहार॥
बँदिया शिर पर सोनेवाली पैरन बिछियाकीभनकार १५८
अनवट पहिरे द्वउ अँगुठन में हाथन लीन आरसीधार॥
मुँदरी छल्ला सब अँगुरिनमा रानी खूबकीन शृंगार १५९
बिदा माँगिकै महतारी ते ह्याँ चलि दिये कनौजीराय॥
द्वार राखिकै उदयसिंह का रानी महलगये फिरिआय१६०
रानी कुसुमा आवत दीख्यो तुरतै उठी तड़ाकाधाय॥
पकरिकै बाहू द्वउ प्रीतमकी पलँगा उपर लीन बैठाय १६१
पंसासारी को मँगवावा सखियाँ लाईं तुरत उठाय॥
बड़ी खातिरी करि पद्माकै खेलन लाग कनौजीराय १६२
कुसुमा बोली तब लाखनि ते स्वामी हाल देउ बतलाय॥
किह्यो तयारी तुम कहँना की काहेगयो अचाकाआय १६३
सुनिकै बातैं ये पद्मा की बोला तुरत कनौजीराय॥
किरिया कीन्ही हम ऊदन ते औचातीलगगंगमँभाय १६४

जवै मोहोबे को तुम चलिहौ चलिबे साथ बनाफरराय॥
आजु साँकरा परिमालिक पर औ चढ़िआवा पिथौराराय १६५
संगै जैबे हम ऊदन के करिबे जूझ तहाँपर जाय॥
जो मरिजैबे समरभूमि मा तौ यशरही लोकमाछाय १६६
जो बचि अइबे हम मोहबे ते रानी संग करब फिरि आय॥
सुनिकै बातैं लखराना की पदमिनिगिरीपछाराखाय १६७
होश उड़ाने महरानी के पीले अंग भये अधिकाय॥
थर थर देही काँपन लागी रोवाँ सकल उठे तन्नाय १६८
यह गति दीख्यो महरानी कै तब गहिलीन कनौजीराय॥
चूम्यो चाट्यो बदन लगायो धीरज फेरिदीन अधिकाय १६९
रानी पदमिनि पलँगा बैठी नैनन आँसू रही बहाय॥
बोले लाखनि तब पदमिनि ते रानी काह गयी बौरा १७०
बिटिया आहिउ का बनिया की जो रण सुनिकै गयी डराय॥
भरम न राखैं क्षत्रानी मन रानी साँचदीन बतलाय १७१
सुनि सुनि बातैं लखराना की रानी गयी सनाकाखाय॥
मनमा शोचै मनै बिचारै मनमन बारबार पछिताय १७२
धीरज धरिकै पदमिनि बोली प्रीतम साँच देयँ बतलाय॥
कहे टुकाचिन के लाग्यो ना नहिं सब जैहैं कामनशाय १७३
कहाँ कनौजी तुम महराजा चाकर कहाँ बनाफरराय॥
नौकर स्वामी की समता ना विद्या काह दयी बिसराय १७४
बनते कन्या धरि आई ती त्यहिके अहीं बनाफरराय॥
अहीं टुकरहा परिमालिक के तुम्हरीकौनगुलामीआय १७५
साथ गुलामन औ राजा का कहँ तुम पढ़ा कनौजीराय॥
किरिया कीन्ही जो ऊदन ते स्वामी ताहि देउ बिसराय १७६

सवैया ॥

स्वस्थिर चित्त बिचार करौ यह नाथ सबै बिधि बात अनैसी ।
रूप औ यौवन छाँड़ितिया सोपिया क्यहिभांतिकहौ तुमऐसी॥
धीरजवन्त कुलीनन की गति नाथ बिचारि कहौ तुम कैसी ।
बात सुहात नहीं ललिते अनरीतिकि प्रीतिकरी तुम जैसी। १७७

सुनिकै बातैं ये पदमिनि की बोला फेरि कनौजीराय ॥
कउने गँवारे की बिटियाहै हमते टेढ़ि मेढ़ि बतलाय १७८
ऐसी बातैं अब बोलेना दशनन चापि जीभको लेय ॥
जो नहिं जावैं सँग ऊदन के तौसबजगतअयशकोदेय १७६
कहा न मानैं हम काहू को निश्चय जानु मोर प्रस्थान ॥
इतना सुनिकै कुसुमा बोली स्वामी करो बचन परमान १८०
राति बसेरा करि महलन मा भुरहीं कूच दिह्यो करवाय ॥
क्वरे संगकी सखी सहिलरी डुइडुइ बालकरहीं खिलाय १८१
दुनियादारी कछु जानी ना कबहुँ न धरा सेज पै पायँ ॥
कैसे कास्त्र हम यौवन का प्रीतम साँचदेउ बतलाय १८२
तुम्हैं मोहबे का जाना रह नाहक लाये गवन हमार ॥
मई बाप का फिरि गरिआवै दैकै बार बार धिक्कार १८३
सुनि सुनि बातैं ये पदमिनिकी बोला फेरि कनौजीराय ॥
लौटि मोहोबे ते आवब जब रानी संग करब तब आय १८४
द्वार बनाफर उदयसिंह हैं रानी मोह देउ बिसराय ॥
संकट टारे बिन मल्हना के हमकोभोगरोगदिखलाय १८५
साथ बनाफर के हम जैहैं अइहैं जीति पिथौराराय ॥
कीरति गैहैं सब दुनिया मा रानी संग करब तब आय १८६

इतना कहिकै लाखनि चलिभे रानी पकरिलीन बैठाय ॥
करी बदरिया तुमका ध्यावैं कउँधाबीरनकीबलिजायँ १८७
झिमिकिकैबरसोम्बरेमहलनमा कन्ता एक रैनि रहिजायँ ॥
इतना सुनिकै लाखनि बोले रानी साँच देयँ बतलाय १८८
पाथर बरसैं आसमान ते तबहुं न रहैं कनौजीराय ॥
लौटि मोहोबे ते आवब जब रानी संग करब तब आय १८९
तेज न रैहै जो देहीमा को मुहँ धरी पिथौराक्यार ॥
मुर्चा परि है बादशाह ते लड़िहैं बड़े बड़े सरदार १९०
लौटि मोहोबे ते आवब जब रानी कहा न टारब त्वार ॥
अब हम जावत हैं जल्दी सों द्वारे उदयसिंह सरदार १९१
सुनिकै बातैं ये लाखनि की रानी फेरि लीन बैठाय ॥
कैसे रहिबे हम कनउज में स्वामी देउ मोहिं बतलाय १९२
पगिया अरभी तब मोहबे मा यहु मरिजाय बनाफरराय ॥
हाय! पियारे ज्यहि प्रीतम को ज्वानीसमयदीनअलगाय१९३
सुखी भवानी आल्है भक्षो इन्दल सहित लहुरवाभाय ॥
भरी जवानी ज्यहि प्रीतमको हमते अलगदीनकरवाय १९४
काहे जनमी घावलि इनका ई दहिजार बड़े बरियार ॥
सुनवाँ फुलवा चित्तररेखा तीनों होउ बिना भरतार १९५
करो वियारी तुम महलन मा पलँगा उपर करो विश्राम ॥
मोरि जवानी स्वारथ करिकै तब तुम जाउ मोहोबेग्राम १९६
सुनिकै बातैं ये पदमिनि की बोला फेरि कनौजीराय ॥
खड़ा बनाफर है द्वारे मा रानी काह गई बौराय १९७
अब तुम ध्यावो फूलमती का तेई फेरि मिलैहैं आय ॥
धर्म पतिब्रत का छाँड्यो ना याही कहैं तोहिं समुझाय १९८

गारी देवो नहिं ऊदन का प्यारी मित्र हमारो जान ॥
करैं बियारी नहिं महलन में प्यारी सत्य प्रतिज्ञा मान १९९
सुनिकै बातैं लखराना की पद्मा ठीक लीन ठहराय ॥
प्रीतम हमरे अब मनिहैं ना जैहैं अवशि मोहोबा धाय २००
यहै सोचिकै मन अपने मा रानी बोली फेरि सुनाय ॥
डोला हमरा सँगमा लैकै राजन कूच देव करवाय २०१
मोरि लालसा यह ड्वालतिहै बालम मोहबा देउ दिखाय ॥
बनोबास को रघुनन्दन गे सीता लैगे साथ लिवाय २०२
सुर औ असुरन के संगर मा दशरथ साथ केकयी माय ॥
लै सतिभामा कृष्णचन्द्र सँग भौमासुरै पछारा जाय २०३
जिन मर्य्यादा यह बाँधी है तेई नारि संग मा लीन ॥
बड़े प्रतापी कृष्णचन्द्र जी सोऊ पन्थ सत्य यह कीन २०४
आगे चलिगे जो क्षत्री हैं तिनमग चलनचही महराज ॥
संग में लैकै बालम चलिये करिये सत्य धर्मको काज २०५
इतना कहिकै रानी पद्मा आँखिनभरे आँसु अधिकाय ॥
तब लखराना लै रुमाल को आँसूपोंछि कहासमुझाय २०६
धीरज राखो चार मास लौं पँचये मिलब तुम्हैं हम आय ॥
सत्य सनेहू ज्यहि ज्यहिपर है सोत्यहिमिलैतड़ाकाधाय २०७
यामें संशय कछु नाहीं है ब्राह्मण रोज कहैं यह गाय ॥
शास्त्र पुराणन की बानी यह रानी तुम्हैं दीन बतलाय २०८
धर्म पतिव्रत ज्यहि नारी के प्यारी प्रीतम के अधिकाय ॥
कहा न टारै सो प्रीतम का चहु जस परै आपदाआय२०९
जो बिलगावै अब महलन मा तौ सब कीरति जाय नशाय॥
हँसै बनाफर म्वहिं मारग मा मेहरा बड़े कनौजीराय २१०

शोहरा फैली यहु दुनिया मा हँसिहैं जाति बिरादर भाय ॥
मेहरा लड़िका रतीभान का सँगमालिहे जनानाजाय २११
जैसो समया अब नाहीं है जैसे समय भये रघुराय ॥
बड़े प्रतापी कृष्णचन्द्रजी द्वापरजन्मलीनातिनआय २१२
कलियुग बाबा की रजधानी रानी कहा गई बौराय ॥
दया धर्म दुनिया ते उठिगे दर दर सत्य पछारा जाय २१३
घर घर कुलटा हैं कलियुग में नर नर पाप भरा अधिकाय ॥
जर जर जरना है दुनिया मा हर हर हरी हरी बिसराय २१४
आखिर मरना है दुनिया मा लरना धर्म हमारा आय ॥
इतना कहिकै चला कनौजी रानी फेरि लीन बैठाय २१५
दिया बुझायो तुम परहुलका इतना किह्यो राहमें जाय ॥
पाँव पिछारी का डार्‍यो ना चहुतनधजीधजीउड़िजाय२१६
कीरति प्यारी नर नारिन के निन्दा सुने मौत ह्वै जाय ॥
लाहिले ठाकुर बघऊदन जी लाखनिलाखनिरहेबुलाय२१७
झाँक पाय कै बघऊदन कै तुरतै चला कनौजीराय ॥
द्वारे मिलिकै बघऊदन को जयचँदसभागयोफिरिधाय२१८
मस्तक धरिकै द्वउ चरणनमा लाखनि ठाढ़भयो शिरनाय ॥
तब शिर सूंघ्यो जयचँदराजा आयसु फेरिदीन हर्षाय २१९
आल्हा ऊदन को बुलवायो लाखनि बाँह दीन पकराय ॥
तुम्हैं कनौजी का सौंपत हैं दोऊ सुनो बनाफरराय २२०
सुनिकै बातैं महराजा की दोऊ भाय बनाफरराय ॥
बोलन लागे महराजा ते राजन साँचदेयँ बतलाय २२१
जहाँ पसीना लखराना का तहँ गिरि जैहैं मूड़ हमार ॥
यामें संशय कछु नाहीं है मानो सत्य भूमिभरतार २२२

इतना कहिकै आल्हा ऊदन लाखनि साथ चले शिरनाय ॥
बाजे डंका अहतंका के हाहाकार शब्द गे छाय २२३
चारों राजा गाँजर वाले बारहु कुँवर बनौधा केर ॥
लला तमोली धनुवाँ तेली इनते कहा चँदेले टेर २२४
लाखनि तुमका हम सौंपत हैं रक्षा कियो सबै सरदार ॥
वंश लकड़िया यह इकली है इतना लीन्ह्यो खूब बिचार २२५
इतना कहिकै जयचँद राजा पंडित लीन्ह्यो तुरत बुलाय ॥
प्रथम पुजायो श्रीगणेश को पाछेतिलकदिह्योकरवाय २२६
गजाननहिं अरु लम्बोदर को तीसर गणाध्यक्ष को ध्याय ॥
सुमिरि भवानीसुत गणेशको लेशकलेश दीनबिसराय २२७
रानी तिलका पूजन कीन्ह्यो भूरी हथिनी तुरत मँगाय ॥
थाती सौंप्यो लखराना को हथिनीसम्मुख बैन सुनाय २२८
फिरि कर पकर्‌यो लखरानाका ऊदन हाथ दीन पकराय ॥
मोहिं अभागिनि के बालककी रक्षा कियो बनाफरराय २२९
सुनिकै बातैं महरानी की दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ॥
जहाँ पसीना लखराना का तहँ हम मूड़ देयँ कटवाय २३०
घाटि न जानैं हम भाई ते माता साँच देयँ बतलाय ॥
फिकिरि न राख्यो लखरानाकी इनको बार न बाँको जाय २३१
इतना कहिकै महरानी ते ऊदन फेरि कहा ललकार ॥
करो तयारी अब मोहबे की सबियाँ शूरबीर सरदार २३२
हुकुम पायकै बघऊदन का सबहिन बाँधिलीन हथियार ॥
हथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे बाँके घोड़न भे असवार २३३
पायँ लागिकै दोउ तिलका के भूरी चढ़ा कनौजीराय ॥
बजे नगारा त्यहि समया मा हाहाकार शब्द गा छाय २३४

मारु मारु के मौहरि बाजी बाजी हाव हाव करनाल ॥
खर खर खर खर के रथ दौरे रब्बा चले पवनकी चाल २३५
आगे हलका भे हाथिन के पाछे चलन लाग असवार ॥
बीच म डोला महरानिन के हैगे अगलबगल सरदार २३६
भूरी हथिनी पर लाखनि हैं ऊदन बेंदुलपर असवार ॥
आल्हा बैठे पचशब्दा पर इन्दल सहित भये तय्यार २३७
कीनि सवारी हरनागर पर भैने जौनु चँदेले क्यार ॥
घोड़ मनोहरपर देबा है सय्यद सिर्गापर असवार २३८
लला तमोली धनुवाँ तेली येऊ लिये ढाल तलवार ॥
पैदल सेना अनगन्ती सब गर्जतचलीसमरत्यहिबार २३९
चारिकोस जब परहुल रहिगा लाखनि डेरा दीन डराय ॥
लाखनि बोले तहँ आल्हा ते साँची सुनो बनाफरराय २४०
दियना अंटापर परहुल मा सो त्यहि आप देउ उतराय ॥
बचन मानिकै हम पदमिन के वादा कीन तहांपर भाय २४१
दियना शालत है जियरे मा मानो कही बनाफरराय ॥
सुनिकै बातैं कनवजिया की आल्हाधावनलीनबुलाय२४२
लिखिकै चिट्ठी दै धावन को परहुल तुरत दीन पठवाय ॥
जहाँ कचहरी है सिंहा के धावन तहाँ पहूँचा जाय २४३
चिट्ठी दैकै महराजा का बाकी हाल कहा शिरनाय ॥
पढ़िकै चिट्ठी सिंहा जरिगा डंका तुरतदीन बजवाय २४४
धावन चलिभा तब परहुल ते लश्कर फेरि पहूँचा आय ॥
कही हकीकति सब आल्हा ते तब जरिगये कनौजीराय२४५
हुकुम लगायो अपने दलमा डंका तुरत दीन बजवाय ॥
सजिकै सेना दुहुँतरफा ते पहूँचीं समरभूमिमें आय २४६

लाखनि राना इत हाथी पर वैसी परहुल का सरदार ॥
भाला छूटे असवारन के पैदलचलनलागितलवार २४७
झुके सिपाही दुहुँ तरफा के लागे करन भड़ाभड़ मार ॥
मूँड़न केरे मुड़चौरा भे औ रुण्डनके लगे पहार २४८
बड़ी लड़ाई भै परहुल में लाखनि राना के मैदान ॥
लड़ैं सिपाही दुहुँ तरफा के कटि २ गिरैंसुघरुवाज्वान २४९
उठि उठि ठाकुर लरैं खेत में कहुँ कहुँ रुण्ड करैं तलवार ॥
मारे मारे तलवारिन के नदिया बही रक्तकी धार २५०
जैसे भेड़िन भेड़हा पैठै जैसे अहिर बिडारै गाय ॥
तैसे मारैं ऊदन ठाकुर सिंहाफौजगई बिललाय २५१
भागीं फौजैं जब परहुल की लाखनि हाथी दीन बढ़ाय ॥
लाखनिराना के मुर्चा मा सिंहा आपु पहूँचा आय २५२
सूँड़ि लपेटा हाथी भिड़िगे दोऊ लड़न लागि सरदार ॥
सिंहा मारयो तलवारी को लाखनिलीन ढालपरवार २५३
भाला मारयो लखराना ने नीचे गिरा महाउत आय ॥
बलछी मारा सिंहा ठाकुर लाखनि लैगे वार बचाय २५४
खाली वार परी सिंहा की लाखनि तुरत लीन बँधवाय ॥
जायकै पहुँचे फिरि परहुल मा तुरतै दिया दीन गिरवाय २५५
लैकै फौजैं सिंहा ठाकुर संगै कूच दीन करवाय ॥
कोस अढ़ाई कुड़हरि रहिगा डेरा तहाँ दीन डरवाय २५६
भैने बोल्यो परिमालिक का मानो कही बनाफरराय ॥
गंगा ठाकुर कुड़हरि वाला कोड़ा घोड़ा लीन चुराय २५७
सवा लाख का सो कोड़ा है जो बनववा रजापरिमाल ॥
महाभ्रशकिलिन घोड़ा दीन्ह्यो कोड़ानदींदीनत्यहिकाल २५८

कीन प्रतिज्ञा हम कुड़हरिमा लौटति नगर ल्याव लुटवाय ॥
साँची करिये यहि समया मा मानो कही बनाफरराय २५९
इतना सुनिकै ऊदन जरिगे तुरतै हुकुम दीन फरमाय ॥
लागैं तोपैं अब कुड़हरि मा सत्रियाँगर्द देउमिलवाय २६०
इतना सुनिकै लाखनि बोले मानो कही बनाफरराय ॥
गंगाधर कुड़हरि का राजा मामा सगो हमारो आय २६१
लिखिकै चिट्ठी दै धावन को उनको खबरि देउ करवाय ॥
भैने तुम्हरे लाखनि आये कोड़ा आपु देउ पठवाय २६२
सुनिकै बातैं लखराना की चिट्ठी लिखा बनाफरराय ॥
तुरतै धावन को बुलवायो औ कुड़हरिको दीनपठाय २६३
लैकै चिट्ठी धावन चलिभा औ दरबार पहूँचाजाय ॥
चिट्ठी दीन्ह्यो गंगाधर को धावनहाथजोरिशिरनाय २६४
कही हकीकति सब गंगा ते जो कछु कह्यो बनाफरराय ॥
सुनि संदेशा पढ़ि चिट्ठी को ठाकुरक्रोधकीनअधिकाय २६५
तुरत नगड़ची को बुलवायो डङ्का दीन तहाँ बजवाय ॥
कह्यो सँदेशा फिरि धावन ते आल्है खबरि जनावोजाय २६६
राजा आवत समरभूमि में कोड़ा लेउ तहाँ पर आय ॥
इतना सुनिकै धावन चलिभा आल्है खबरि बताईजाय २६७
बाजे डङ्का ह्याँ कुड़हरि मा क्षत्री होन लागि तय्यार ॥
हथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे बाँके घोड़न भे असवार २६८
झीलम बखतरपहिरि सिपाहिन हाथ म लई ढाल तलवार ॥
रणकी मोहरि बाजन लागी रणकाहोनलागब्यवहार २६९
चढ़िकै हथिनी गंगा ठाकुर तुरतै कूच दीन करवाय ॥
चारि घरी का अरसा गुजरा पहुँचे समरभूमिमाआय २७०

जहँना हाथी गंगाधर का तहँ पर गये कनौजीराय ॥
कहि समुझावा भल मामा का कोड़ा अबै देउ मँगवाय २७१
नहीं बनाफर उदयसिंह जी कुड़हरि गर्द देयँ करवाय ॥
कौन दुसरिहा है आल्हा का सरवर करै समरमें आय २७२
त्यहिते तुमका समुझाइत है मामा कूच देउ करवाय ॥
इतना सुनिकै गंगा जरिगे बोले सुनो कनौजीराय २७३
काह हकीकति है आल्हा कै हमते कोड़ा लेयँ मँगाय ॥
एक बनाफर कै गिन्ती ना लाखनचढ़ै बनाफरधाय २७४
हमते कोड़ा को पैहैं ना भैने साँच दीन बतलाय ॥
इतना सुनिकै चले कनौजी तम्बुन फेरि पहूँचे आय २७५
बत्ती दैकै दुहुँ तरफा ते तोपन दीन्हीं रारि मचाय ॥
अररर अररर गोला छूटे हाहाकार शब्दगा छाय २७६
गोला लागै ज्यहि हाथी के मानो गिरा धौरहर आय ॥
जउने ऊंट के गोला लागै तुरतै कूख जुदा ह्वैजाय २७७
गोला लागै ज्यहि क्षत्री के साथैं उड़ा चील्ह अस जाय ॥
जउने रथमा गोला लागै ताके टूक टूक ह्वैजायँ २७८
गोला लागै ज्यहि घोड़े के मानो मगर कुल्याचै खायँ ॥
अँधाधुंध भा दूनों दलमा धुवना रहा सरगमें छाय २७९
चुकी बरूदैं जब तोपन की तब फिरि मारुबन्द ह्वैजाय ॥
दूनों दल आगे को बढ़िगे रहिगा एकखेतरणआय २८०
कहुँकहुँ भाला कहुँकहुँ बलछी कहुँ कहुँ कड़ाबीनकी मार ॥
गोली ओला सम कहुँ बरषैं कोताखानी चलैं कटार २८१
मारे मारे तलवारिन के नदिया बही रक्तकी धार ॥
मुण्डन केरे मुड़चौरा भे औ रुण्डनके लगे पहार २८२

ना मुँह फेरैं कुड़हरि वाले ना ई मोहबे के सरदार॥
कउँधालपकनिबिजुलीचमकानि रणमा चलै खूब तलवार २८३
भागि सिपाही कुड़हरि वाले अपने डारि डारि हथियार॥
गंगा ठाकुर के मुर्चा मा आवा उदयसिंह सरदार २८४
एँड़ लगावा तब बेंदुल के हाथी उपर पहूँचा जाय॥
भाला मारा बघऊदन ने गंगा लैगा वार बचाय २८५
तबलों आये आल्हा ठाकुर हाथी भिड़ा बरोबरि आय॥
दैकै साँकरि पचशब्दा को तुरतै कैदलीन करवाय १८६
लैकै फौजै ऊदन ठाकुर कुड़हरि शहर लीन लुटवाय॥
काछी कुरमी तेली भागे कोरीभागि थानबिसराय २८७
दर्जी भुर्जी सब भागे तहँ भागे बड़े बड़े महराज॥
कौन बखानै त्यहि समयाकै रहिगैनहींक्यहूकैलाज २८८
साँच बातकरि जगनायक कै दीन्ह्यों लूट बन्दकरवाय॥
लैकै कोड़ा बौना चलिभा आल्हानजरिगुजाराजाय २८९
कोड़ा दीन्ह्यो जगनायक को आल्हा तुर्त तहाँ बुलवाय॥
कैद छुड़ाय दई गंगा की आदर कियो कनौजीराय २९०
लैकै फौजै गंगा ठाकुर साथै कूच दीन करवाय॥
चलिभालश्कर कनवजियाका यमुना उपर पहूँचा जाय २९१
मज्जन करिकै श्रीयमुनाजल पाछे शम्भुचरण धरि ध्यान॥
संध्या तर्पण बिधिवत करिकै दीन्ह्योद्विजनतहाँपरदान २९२
कूच करायो श्रीयमुना ते कलपी पास पहूँचे जाय॥
लैकै फौजै लाखनिराना कलपीशहरलीनलुटवाय २९३
ऊदन बोले तब लाखनि ते यहु का कीन कनौजीराय॥
बदले कुड़हरिके लुटवावा मानो साँच बनाफरराय २९४

बातैं सुनिकै लखराना की देबा कहा तुरत शिरनाय ॥
साँचे धर्मन के राँचेहैं याँचे मिले कनौजीराय २९५
कर्म कुलीनन के कीन्हे हैं साँचे मित्र बनाफरराय ॥
बातैं सुनिकै ये देबा की बोले तुरत उदयसिंहराय २९६
स्याबसि स्याबसि लाखनिराना कीन्ह्यो धर्म युद्धसों रार ॥
काहे न होवै यश क्षत्रिन को ऐसे युद्ध बीर बरियार २९७
इतना कहिकै उदयसिंह ने तुरतै कूच दीन करवाय ॥
नदी बेतवा के ऊपर मा छोरी कमर बनाफरराय २९८
डेरा गड़िगे तहँ क्षत्रिन के तम्बू गड़ा बनाफर क्यार ॥
जहँ महराजा लाखनि बैठे भारी लाग तहाँ दरबार २९९
आल्हा ठाकुर के तम्बू मा भैने गयो चँदेले क्यार ॥
कलम दवाइति कागज लैकै आल्हा पत्र कीन तैयार ३००
चिट्ठी दीन्ही आल्हा ठाकुर बोले उदयसिंह सरदार ॥
खबरि जनावो तुम मल्हनाको आये कनउज राजकुमार ३०१
हमरी दादाकी दिशि ह्वैकै रानिन कीन्ह्यो दण्ड प्रणाम ॥
काह हकीकति है पिरथी कै सुखसोंकरो महल बिश्राम ३०२
जितनी बिल्ली हैं दिल्ली की किल्ली पकरि नचावों माय ॥
तौ तौ साँचे हम ऊदन हैं यहतुमकह्योसँदेशाजाय ३०३
सुनि संदेशा बघऊदन का हरनागरै लीन कसवाय ॥
चढ़ा तड़ाका हरनागर पर जगनिकयथातथ्याशिरनाय ३०४
नदी बेतवाको उतरत भा पहुँचत भयो मोहोबेद्वार ॥
फाटक खोल्यो दरवानी ने पहुँचे राजभवन सरदार ३०५
रानी मल्हना के महलन मा माहिल आयगयो त्यहिवार ॥
तबलों पहुँचे जगनायक जी बोला उरई का सरदार ३०६

कबलों अइहैं आल्हा ठाकुर नीके हवैं बनाफरराय ॥
इतना सुनिकै जगनायक जी तुरतै बोले बचन बनाय ३०७
हिंया न अइहैं आल्हा ठाकुर अब चढ़ु काऊ मनावनजाय ॥
उनके खातिर कनवजिया घर नीके द्वऊ बनाफरराय ३०८
पारस लैकै तुम कुठरी ते पिरथी पास देउ पहुँचाय ॥
लैकै कुंजी जगनायक जी कुठरीखोलिदीनबतलाय ३०६
उठे भड़ाका माहिल ठाकुर कुठरी अटे तड़ाकाधाय ॥
साँकरिमारी जगनायक जी ताला तुरत दीन डरवाय ३१०
बन्द कुठरिया माहिल ठाकुर मल्हना गई सनाकाखाय ॥
चिट्ठी दीन्ह्यो फिरि जगनायक औसबहालकह्योसमुझाय ३११
पढ़िकै चिट्ठी मल्हना रानी औ जगनायक संग लिवाय ॥
जहाँ कचहरी परिमालिक की चिट्ठी तहाँ दिखाई जाय ३१२

छन्द ॥

पढ़ि पत्रतहाँ। लहिमोद महाँ॥ परिमाल जहाँ। तजिशोकतहाँ॥
भवनमें आय। महासुख पाय॥ लखिकैदतहाँ। उरई को जहाँ॥
महरानि गई। तजि बन्धु दई॥ अतिबेगचला। उरईको लला॥
पृथिराजजहाँ। स्वउआयतहाँ॥सबहालकहा। बिपदाजोलहा३१३

सुनि कै बातैं सब माहिल की यहु महराज पिथौराराय ॥
घाट बयालिस तेरहघाटी सबियाँतुरंतदीन रुकवाय३१४
पहरा घूमैं कहुँ पैदल का कहुँ कहुँ फिरैं घोड़असवार॥
अनँद बधैया मोहबे बाजै घर घर होयँ मंगलाचार ३१५
फाटक बन्दी है मोहबे मा घरका अवै न बाहर जाय ॥
आल्हा ऊदन की कीरति तहँ घर घर रहे नारि नर गाय ३१६
आस्द मनौआ पूरण करिकै ध्यावों रामचन्द्र महराज ॥

जलथलजनमों जहँ दुनियामा होवों तहाँ भक्त शिरताज ३१७
पिता मातु के मैं चरणन का ध्यावों बार बार शिरनाय ॥
जिन बल गाथा यह पूरण भै भुजबलनहीं भरोसाभाय ३१८
खेत छूटिगा दिननायक सों झंडा गड़ा निशाको आय ॥
तारागण सब चमकन लागे संतन धुनी दीन परचाय ३१९
आशिर्बाद देउँ मुन्शीसुत जीवो प्रागनरायण भाय ॥
हुकुम तुम्हारो जो पावत ना ललितेकहतगाथकसगाय ३२०
रहै समुन्दर में जबलों जल जबलों रहैं चन्द औ सूर ॥
मालिक ललिते के तबलों तुम यशसों रहौ सदा भरपूर ३२१
सुमिरि भवानी शिवशङ्कर को ह्याँते करों तरँग को अन्त ॥
राम रमा मिलि दर्शन देवों इच्छा यही मोरि भगवन्त ३२२

इति श्रीलखनऊनिवासि (सी, आई, ई) मुंशीनवलकिशोरात्मजबाबू प्रयागनारायणजीकीआज्ञानुसार उन्नामप्रदेशान्तर्गतपँड़रीकलां निवासिमिश्रवंशोद्भव बुधकृपाशङ्करसूनुपण्डितललिताप्रसाद कृत आल्हामनावनवर्णनोनामप्रथमस्तरंगः ॥ १ ॥

ठाकुरआल्हसिंहजीकामनावन सम्पूर्ण ॥

इति ॥

अथ आल्हखण्ड ॥

नदीबेतवापरलाखनिपृथींराज
काप्रथमयुद्धवर्णन ॥

सवैया ॥

रामसिया पद दोउ मनाय सो ध्याय शिवा शिव चर्ण यथारथ ।
कीरति कृष्ण बखान करों जिनके बलसों बलवान भे पारथ ॥
भीषम कर्ण सुयोधन ज्वान महान सबै मरिगे रणभारथ ।
चाहत कृष्ण नहीं ललिते बलते थलते जगते सो अकारथ १

सुमिरन ॥

दशरथ नन्दन को बन्दन करि सीता चरण कमलको ध्याय ॥
सुमिरि भवानी शिवशंकर को औ यदुनन्दन चरण मनाय १
बड़े प्रतापी कुंती नन्दन बन्दन करों युधिष्ठिरराय ॥
गदा प्रहारी भीमसेन को ध्यावों बार बार शिरनाय २
शूर धनुर्धर नर अर्जुन की कीरति सकै कौन नर गाय ॥

विद्या पूरण सहदेऊ की कीरति रही जगतमें छाय ३
बड़ा प्रतापी रण मण्डल मा नकुलो समरधनी तलवार॥
करण न होतो जो दुनिया मा तौ को होत दान बरियार ४
छूटि सुमिरनी गै देवन कै शाका सुनो पिथौरा क्यार॥
नदी बेतवाके डाँड़ेपर लाखनि करी खूब तलवार ५

अथ कथाप्रसंग॥

आल्हा ठाकुर के तम्बू मा भारी लाग राज दरबार॥
त्यही समैया त्यहि औसर मा बोले उदयसिंह सरदार १
घाट बयालिस पिरथी रोंके दादा करो कछू तदबीर॥
इतना सुनिकै आल्हा बोले ऊदन धरो हृदय में धीर २
इतना कहिकै आल्हा ठाकुर तुरतै पान दीन धरवाय॥
है कोउ योधा दूनों दल मा जो बेतवा पर पान चबाय ३
इतना सुनिकै दोऊ दल के क्षत्री गये सनाकाखाय॥
बोलि न आवा क्यहु क्षत्री ते सबहिन मूड़ लीन अउँधाय ४
ऊदन तड़पे त्यहि समया मा पहुँचे पाननिकट फिरिजाय॥
आल्हा बोले तब ऊदन ते मानो कही लहुरवाभाय ५
अबती बारी है लाखनि कै गाँजर फते कीन तुम जाय॥
नदी बेतवा के मुर्चा पर जावैं अवशि कनौजीराय ६
मीराताल्हन धनुवाँ तेली बोले दोऊ शीश नवाय॥
तजी सम्पदा सब कनउज की आये लड़न कनौजीराय ७
नव दिन दश दिन भे गौने के सो तजिदई पदमिनी नारि॥
बीरा खैये लाखनि राना करिये नदी भयानक रारि ८
बात बराबरि की सहिये ना चहिये जायँ नदी पर प्रान॥
बातैं सुनिकै ये सय्यद की बीरा लीन कनौजी ज्वान ९

ऊदन बोले तब लाखनि ते हमरे बचन करो परमान॥
संग कनौजी हमहूं चलिबे करिबे घोर शोर घमसान १०
मान न रखिबे क्यहु क्षत्री के तुम्हरे संग कनौजी ज्वान॥
ऊदन लाखनि के मुर्चा ते जैहैं लौटि बीर चौहान ११
इतना सुनिकै लाखनि बोले मानो उदयसिंह सरदार॥
रतीभान का मैं लड़काहूं नाती बेनचक्कवै क्यार १२
काह हकीकति हैं दिल्लीपति जो तुम चलो संगमें ज्वान॥
भूरी हथिनी कछु बूढ़ी ना ना कछु ग्रसारोग बलवान १३
संग न लेबे हम काहू को आल्हा बचन करब परमान॥
इतना कहिकै लाखनि ठाकुर नदी हेतु कीन प्रस्थान १४
धनुवाँ तेली मीरा सय्यद येऊ भये साथ तय्यार॥
नदी बेतवा के पाँजर मा पहुँचा कनउजका सरदार १५
नौसै हाथी लखरानाके पानी पियनगये त्यहिकाल॥
पार उतरिगे ते नदी के सहिनहिंसकेघाम बिकराल १६
तब हरिकारा पृथीराज का चौंड़ै खबरि जनाई जाय॥
बहुतक हाथी पार आयगे मानों कही चौंड़ियाराय १७
इतना सुनिकै चौंड़ा बाम्हन अपनो हाथी लीन मँगाय॥
चढ़ा तड़ाका फिरि हाथीपर नदी उपर पहूँचा आय १८
सवियाँ हथिनी लखराना की चौंड़ा तुरत लीन खिदवाय॥
भगे महाउत सब तहँना ते आये जहाँ कनौजीराय १९
हाल बताइनि सब हाथिनका ज्यहिबिधिचौंड़ालीनखिदाय॥
सुनि संदेशा लाखनिराना डंका तुरत दीन बजवाय २०
भारी लश्कर लखराना का गर्जति चला समरको जाय॥
घरी मुहूरत के अरसा मा पहुँचे समरभूमि में आय २१

लाखनिराना मीरा सय्यद धनुवाँ सहित उतरिगे पार॥
नौसै हाथी लखराना का सातसै हथी पिथौरा क्यार २२
सोलासै के हाथी दलमा पहुंचे तुरत कनौजीराय॥
जितने हाथी दूनों दल के सोसब तुरतलीन खिदवाय २३
गा हरिकारा पृथीराज का चौंड़ै खबरि जनाई जाय॥
हमरी अपनी सब हथिनिनको लाखनिराना लीनखिदाय २४
सुनिकै बातैं हरिकारा की चौंड़ा फौज लीन सजवाय॥
धाँधूठाकुर को सँग लैकै तुरतै कूचदीन करवाय २५
बीस खेत जब लाखनि रहिगे चौंड़ा बोला वचन सुनाय॥
कहाँते आयो औ कहँ जैहौ आपन हाल देउ बतलाय २६
इकलो हाथी लखि चौंड़ाको लाखनि भूरी दीन बढ़ाय॥
सम्मुख आये जब चौंड़ा के बोले तबै कनौजीराय २७
बेन चकवै के नाती हम बेटा रतीभान को जान॥
मोहबा देखन हम जाइत है लाखनि नाम हमारो मान २८
आल्हा ऊदन के सँग आयन चौंड़ा साँच दीन बतलाय॥
इतना सुनतै चौंड़ा बोला मानो कही चँदेलेराय २९
आल्हा चाकर परिमालिक के सो कनउजको गये रिसाय॥
कीनि चाकरी उन जयचँदकी तिनके साथ कनौजीराय ३०
ऐसी कहिये नहिं काहू सों अबहीं कूच देउ करवाय॥
संगति राजा अरु चाकर की कतहुँ न सुनाकनौजीराय ३१
इतना सुनिकै लाखनि बोले मानो कही चौंड़ियाराय॥
बड़ी बड़ाई ऊदन कीन्ही तब मनगई लालसा आय ३२
बिना मोहोबा आँखिन दीखे कैसे कूच देयँ करवाय॥
इतना सुनिकै चौंड़ा बोला मानो साँच कनौजीराय ३३

चढ़ा पिथौरा सातलाख सों सबियाँ घाट दये रुकवाय ॥
जो तुम लड़िहौ ह्वै चाकरसँग तौ रजपूती धर्म नशाय ३४
इतना सुनिकै लाखनि बोले चौंड़ा काहगये बौराय ॥
किरिया कीन्ही हम गंगा में चलिबे साथ बनाफरराय ३५
पाँउँ पिछारी का डारिबे ना चहु तन धजी धजी उड़िजाय॥
चुवै निशाकर ते आगी चहु औ नभमिलै धरणिमेंआय ३६
उवै दिवाकर चहु पश्चिमको सातौं सूखि समुन्दर जायँ ॥
लाखनि भागैं नहिं नदियाते चौंड़ा साँच दीन बतलाय ३७
इतना सुनिकै जरा चौंड़िया तुरतै दीन्ही ढाल चलाय ॥
होउ बहादुर जो लखराना हमरी ढाललेउ उठवाय ३८
लाखनि बोले तब धनुवाँ ते लावो ढाल यार यहिबार ॥
दाबि बछेड़ा धनुवाँ चलिभा धाँधू कहा बचन ललकार ३९
पाँउँ अगाड़ी को डारे ना नहिं मुहँ धाँसि देउँ तलवार॥
बात न मानी कछु धाँधू की धनुवाँ घोड़े का असवार ४०
भाला धमका धाँधू ठाकुर धनुवाँ लैगा वार बचाय ॥
ढाल उठाई जब धनुवाँ ने स्याबसिकह्यो कनौजीराय ४१
लीन कटारी लाखनि राना औ रेतीमा दीन चलाय ॥
होय बहादुर जो दिल्ली को सो अब लेय कटार उठाय ४२
इतना सुनिकै भूरा चलिभा सय्यद उठा तड़ाका धाय ॥
तब ललकारा वहि भूराने सय्यद खबरदार ह्वैजाय ४३
कहा न माना कछु भूरा का सय्यद लीन कटार उठाय ॥
सो दैदीन्ही लखराना का चौंड़ा बहुत गयो शरमाय ४४
झुके सिपाही दुहुँ तरफा के फिरितहँचलनलागि तलवार ॥
पैदल पैदल के बरणी भे औ असवार साथ असवार ४५

मूँड़ि लपेटा हाथी भिड़िगे अंकुश भिड़े महौतन क्यार ॥
गजके हौदाते शर बरषैं नीचे करैं महाउत मार ४६
कटि कटि कल्ला गिरैं खेतमा घायल भये सुघरुवा ज्वान ॥
नदी बेतवा के डांड़ेपर लाखनि चौंड़ाका मैदान ४७
दाब्यो लश्कर लखराना का लाग्यो होन भड़ाभड़ मार ॥
भागि सिपाही दिल्लीवाले अपने डारि डारि हथियार ४८
चौंड़ा बाम्हन औ लाखनिका परिगा समर बरोबरि आय ॥
तीर चौंड़िया तकिकै मारा लाखनि लैगे वार बचाय ४९
तुरतै भूरी को दौरावा चौंड़ा पास पहूँचे जाय ॥
भाला मारा लखराना ने हाथी गिरा पछाराखाय ५०
तुरत चौंड़िया पैदल ह्वैगा तब यह कहा कनौजीराय ॥
पायँ पियादे को मारैं ना हाथी और लेउ मँगवाय ५१
इतना कहिकै लाखनिराना आगे दीन्ही फौजबढ़ाय ॥
बाजे डंका अहतंका के हाहाकार शब्द गा छाय ५२
मुर्चा हटिगा जब चौंड़ा का धावन तबै पहूँचा जाय ॥
सुनि हरिकारा की बातैं सब ताहर बेटा लीन बुलाय ५३
हुकुम लगावा महराजा ने तुम चढ़ि जाउ नदीपर धाय ॥
हुकुम पिथौरा का पावतखन डंका तुरत दीन बजवाय ५४
सजा रिसाला घोड़न वाला आला तीनि लाखलों भाय ॥
कच्छी मच्छी ताजी तुर्की हरियल मुर्श्क परैं दिखराय ५५
को गति बर्णै तहँ सिरगनकी मिरगन चाल चलैसब जायँ ॥
हंस चालपर पँचकल्यानी मुश्की मोरसरिस दिखरायँ ५६
लखा कि चालन ताजी जावैं हरियल चलैं कबूतर चाल ॥
कच्छी कच्छपकी चालनमा मच्छी मगरमच्छकी चाल ५७

सुर्खा जावैं शशाचालपर तुर्की तीतर के अनुहार॥
भाला वलछी छुरी कटारी लीन्हे चढ़े ढाल तलवार ५८
अंगद पंगद मकुना भौंरा सजिगे श्वेतबरण गजराज॥
धरी अँबारी तिन हाथिन के बहुतन हौदा रहे बिराज ५६
आदि भयंकर हाथी ऊपर पिरथीराज भये असवार॥
तीरकमानै अनगिन्ती लै लीन्ही फेरि ढाल तलवार ६०
छुरी कटारी भाला वरछी लीन्हे सबै नृपति हथियार॥
घोड़नाम दलगंजन ऊपर ताहर आगे राजकुमार ६१
ढाढ़ी करखा बोलन लागे विप्रन कीन वेद उच्चार॥
औरि बयरिया डोलन लागीं औरै होनलाग व्यवहार ६२
मारु मारु के मौहरि बाजी बाजी हाव हाव करनाल॥
खर खर खर खर कै रथ दौरे रब्बा चले पवनकी चाल ६३
घोड़ा हींसैं हाथी चिघरैं ह्वैगा अन्धधुन्ध त्यहिबार॥
डेढ़ लाख दल पैदल लीन्हे राजा दिल्ली का सरदार ६४
डगमग डगमग धरती डोली देवता झाँपि गये असमान॥
देवी देवता पृथ्वी वाले चक्रित भये देखि चौहान ६५
को गति बरणै त्यहि समया कै जा क्षण चला पिथौराज्वान॥
लाली लाली आँखी कीन्हे गजभरि छातीका चौहान ६६
जहाँ हैं फौजैं लखराना की प्यारो पूत कनौजी क्यार॥
मीराताल्हन बनरस वाला सिर्गा घोड़े पर असवार ६७
धनुआँ तेली है घोड़े पर बारहु कुँवर बनौधा केर॥
चारौराजा गाँजर वाले तिनते कहा कनौजी टेर ६८
आई फौजैं पृथीराज की यारो वेगिहोउ हुशियार॥
इतना सुनिकै कनउज वाले बोले सबै शूरसरदार ६६

हुकुम लगावो अब तोपन को गोलंदाज होयँ तय्यार ॥
लखि अस मर्जी सरदारन की लाखनि हुकुम दीन त्यहि वार ७०
लैलै थैली बारूदन की सो तोपनमा दई डराय ॥
गोला छूटे दुहुँ तरफा के हाहाकार शब्द गा छाय ७१
लागै गोला ज्यहि हाथी के मानो चोर सेंधि कैजाय ॥
जउने ऊंट के गोला लागै तुरतै गिरै सार अललाय ७२
लागै गोला ज्यहि घोड़ा के मानो मगर कुल्याचै खाय ॥
गोला लागै ज्यहि क्षत्री के धुनकतरुईसरिसउड़िजाय ७३
जउने रथमा गोला लागै बिजली गिरै वृक्ष जस आय ॥
तैसे चूरण करि स्यन्दन को पहियाधुरी देय अलगाय ७४
फूटैं गोला जब टुकरे मा बिथरैं पाँच खेतलों भाय ॥
गोली निकरैं तिन गोलन ते ओलनसरिसजायँतहँछाय ७५
बोलि न पावैं कोउ ठाकुर तहँ चुप्पे भूमि देयँ पौढ़ाय ॥
बड़ी दुर्दशा भै तोपन मा तब फिरि मारु बन्दह्वैजाय ७६
दुनों गोल आगे को बढ़िगे रहिगा डेढ़ खेत मैदान ॥
भाला बलछी की मारुन मा व्याकुलभये सिपाहीज्वान ७७
शुण्डा कटिगे हैं हाथिन के रुण्डन ह्वैगा ऊंच पहार ॥
कच्छा कटि कटि गिरैं बछेड़ा घैहा होन लागि सरदार ७८
गंगा ठाकुर कुड़हरि वाला पूरन पटना का सरदार ॥
देवी मरहटा दक्षिण वाला अंगदनृपतिग्वालियरक्यार ७९
हिरसिंह बिरसिंह बिरिया वाले इनके साथ करैं तलवार ॥
मुरा मुगालिया काबुल वाला सय्यद बनरस का सरदार ८०
धाँधू धनुवाँ का मुर्चा है औ दतियाके बंशगुपाल ॥
चिंता ठाकुर रुसनी वाला गुरखा नृपति शहरबंगाल ८१

कालनेमि औ परसू, सिंहा, ताहर साथ सबै सरदार ॥
भूरी हथिनी सों लखराना। गरुई हाँक कीन ललकार ८२
कौन बहादुर है दिल्ली का रोंकै बाट हमारी आय ॥
इतना सुनिकै ताहर जरिगे बोले सुनो कनौजीराय, ८३
तुम्हरे घरते संयोगिनि को दिल्ली वाले लये लिवाय ॥
चढ़ि बहादुर पृथीराज हैं गाँस्यनिनगरमोहोबाआय ८४
काह हकीकति कनवाजिया कै जो अब धरै अगारी पायँ ॥
हुकुम पिथौरा का नाहीं है ताते कूच देउ करवाय ८५
इतना सुनिकै लाखनि बोले ताहर काह गये बौराय ॥
लैकै बिटिया चेरी घरकै रानी कीन पिथौराराय ८६
एकतो बदला है चेरी का दूसर साथ बनाफर क्यार ॥
कसरि न राखे दिल्ली वाले ठाकुर घोड़े के असवार ८७
इतना कहिकै लाखनि राना मारन लाग ढूँढ़ि सरदार ॥
भूरी हथिनी का चढ़वैया नाती बेनचक्कवै क्यार ८८
जैसे भेड़िन भेड़हा पैठै जैसे अहिर बिडारै गाय ॥
तैसे पैठ्यो लाखनि राना कोऊ शूर नहीं समुहाय ८९
कायर भागे दुहुँ तरफा ते सायर खूब करैं तलवार ॥
यहु दलगंजन का चढ़वैया ताहर दिल्ली राजकुमार ९०
बहुदल मारे रजपूतन का नदिया बही रक्तकी धार ॥
छूरी मछली के समसोहैं ढालैं कछुवाके अनुहार ९१
बहैं लहाशैं जो मनइन की तिनपर चढ़े गृद्ध विकराल ॥
बार सिवारा समसोहत हैं चहुँदिशिसोहैंश्वानशृगाल ९२
बहै अपारा शोणित धारा मज्जन करैं भूत बैताल ॥
को गति बरणै त्यहि समया कै कागन भई टोंट सब लाल ९३

तीनि सै हाथी के हलका मा अकसर परे कनौजीराय॥
देखन लागे चौगिर्दा ते कोउनहिंअपनपरैदिखराय ९४
जितने आये चढ़ि कनउज ते ते सब हटे समर ते भाय॥
मीरा सय्यद धनुवाँ तेली दूनों दीन्हेनि समर बराय ९५
सुफना बोला तब लाखनि ते मानो कही कनौजीराय॥
सबदल हटिगाहै कनउज का इकले आप रहे मड़राय ९६
हुकुम जु पावैं महराजा का हथिनी देवैं तुरत भगाय॥
छुवै न पावैं दिल्ली वाले राजन साँच दीन बतलाय ९७
इतना सुनिकै लाखनि बोले सुफना काह गये बौराय॥
कहा न माना हम जयचँद का हटका मातु हमारी आय ९८
अब जो भागैं समर भूमि ते तौ रजपूती धर्म नशाय॥
अमर न देही रामचन्द्र कै ना रहिगये कृष्ण यदुराय ९९
जो कोउ जनमाहै दुनिया मा निश्चय मरै एक दिन भाय॥
जितने जावैं मरि दुनिया ते पैदा होयँ तड़ाका आय १००
यामें संशय कछु नाहीं है गीता पाठकीन अधिकाय॥
सुनिकै बातैं लखराना की नीचे गयो महाउत आय १०१
फूल पियायो त्यहि भूरी को पक्का पौवा भाँग खवाय॥
गोटा दीन्ह्यो इक अफीम का ऊपर चढ़ा तड़ाकाधाय १०२
बोला महाउत फिरि लाखनिते ओ महराज कनौजीराय॥
चारों तरफा दल बादल सों क्यहिदिशिहथिनीदेयँबढ़ाय१०३
सुनी महाउत की बातैं जब बोले फेरि कनौजीराय॥
ऐसी हाथी है पिरथी का भारी ध्वजा रहा फहराय १०४
चलौ तड़ाका दिशि याही को सुफना साँच दीन बतलाय॥
किरपा ह्वैहै नारायण की पैबे विजय समरमें भाय १०५

सुनिकै बातैं लखराना की सुफना हाथी दीन बढ़ाय॥
अकसर लाखनि के जियरेपर चहुँदिशिफौजरहीमड़राय१०६
साँकरि फेरै भूरीहथिनी सबदल हटत पछारीजाय॥
मारत मारत लाखनिराना पहुँचे जहाँ पिथौराराय १०७
आदिभयंकर गज के भूरी मस्तक हना तड़ाकाधाय॥
आदिभयंकर पाछे हटिगा तब पहिचना पिथौराराय १०८
लैकै माला गल अपने सों सो लाखनिको दीन पहिराय॥
जैसे लड़िका रतीभान के तैसे पूत कनौजीराय १०९
घाटि न जानैं हम ताहरते ओ महराना बात बनाय॥
तुम अब आवो हमरे दलमा मोहबाशहर लेयँ लुटवाय११०
पारस पत्थर को तुम लीन्ह्यो लोहाछुवत स्वान ह्वैजाय॥
कहा न मानो तुम ऊदन का घटिहा बंश बनाफरराय १११
खुनस जो मनिहैं तुमतेतनको कनउज शहर लेयँ लुटवाय॥
बेनचक्कवै के नाती हौ चाकर साथ कनौजीराय ११२
तुम्हरी हीनी नीकि न लागै ताते साँच दीन बतलाय॥
[स]ुनिकै बातैं पृथीराज की बोला फेरि कनौजीराय ११३
[ब]दिकै आयन ऊदन सँगमा ना अब घाटि करैं महराज॥
[प]ारस पत्थर कै गिन्ती ना जो मिलिजायइन्द्रकोराज११४
[त]बहूँ लाखनि कहि बदलैंना ओ महराज पिथौराराय॥
बदला लेबे संयोगिनि का ताते गयन यहाँपर आय ११५
सुनिकै बातैं लखराना की माहिल बोला बचन उदार॥
गहौ कमनियाँ अब हाथे सों राजा दिल्ली के सरदार ११६
डारि कमनियाँ गल लाखनिके अबहीं कैदलेउ करवाय॥
छोटे मुखकी ई बातैं ना जैसे कहै कनौजीराय ११७

सुनिकै बातैं ये माहिल की राजा लीन कमान उठाय ॥
त्यही समैया त्यहि औसरमा रूपन गये नदीपर आय ११८
पानी देखैं रक्त वर्ण सब रूपन गये बहुत चकड़ाय ॥
ऊंची टिकुरी चढ़ि देखतभे चहुँदिशिरुण्डपरैंदिखराय ११६
पनी पियायो तहँ घोड़े का भ्भावर गयो तड़ाका आय ॥
जहँना तम्बू था द्यावलिका रूपन अटा तड़ाकाधाय १२०
द्वारे ठाढ़ी द्यावलि माता रूपन बोला वचन सुनाय ॥
पनी पियावन हम नदी गे तहँ विपरीतपरा दिखराय १२१
हमरे मनते यह आवति है नदिया जुझे कनौजीराय ॥
खबरि मँगावो तुम लाखनिकै हमरे धीर धरा ना जाय १२२
इतना सुनिकै द्यावलि माता आल्हा पास पहूँची जाय ॥
खबरि सुनाई सब आल्हाको रूपनगयो जौनबतलाय १२३
बारह रानिन का इकलौता ऊदन लाये ताहि लिवाय ॥
होय हँसौवा सब दुनिया मा जोमरिगयेकनौजीराय १२४
सातलाख सों चढ़ा पिथौरा देवो उदयसिंह पठवाय ॥
इतना सुनिकै आल्हा बोले माता काह गयी बौराय १२५
गाँजर उसरीथी ऊदन की नदिया लड़ैं कनौजीराय ॥
कछु नहिं जानैं आल्हा ठाकुर माता साँच दीन बतलाय १२६
नाहिं हँसौवा का डर राखैं प्यारो मोर लहुरवाभाय ॥
जो कहुँ जुझिहैं उदयसिंहजी तौहमकाहकरबफिरिमाय १२७
सुनिकै बातैं ये आल्हा की द्यावलि उठी तड़ाका धाय ॥
जहँना तम्बूथा ऊदन का माता अटी तहाँपर आय १२८
आवत दीख्यो जब माता को ऊदन गहे द्वऊपद जाय ॥
आदर करिकै महतारी का उत्तमआसन दीन बिछाय १२६

धूप दीप अरु अक्षत चन्दन पूजन हेतु लीन मँगवाय ॥
नदी बेतवा का जल लैकै धोये चरण बनाफरराय १३०
बिधिवत पूजनकरि माताका बोला फेरि लहुरवाभाय ॥
हुकुम जो पावैं महतारी का सो करिलावैं शीशनवाय १३१
सुनिकै बातैं ये ऊदन की द्यावलि बोली आँसुबहाय ॥
परे कनौजी हैं सँकरे मा रूपन खबरि जनाई आय १३२
जो कछु होई लखराना का देई दोष सबै संसार ॥
त्यहिते जाव्रो तुम नदियाको बेटा उदयसिंह सरदार १३३
मैं समुझावा भल आल्हा का तिन नहिं माना कहा हमार ॥
गाँजर उसरी थी ऊदन की नदियाकनउजका सरदार १३४
तुम्है मुनासिब अब याही है जाव्रो अव्रशि पूत यहिबार ॥
सुनिकै बातैं ये माता की बेंदुल उपरभयो असवार १३५
गयो तड़ाका त्यहि तम्बूमा ज्यहिमा रहैं बनाफरराय ॥
खबरि सुनाई सब आल्हा को दोऊहाथजोरि शिरनाय १३६
हुकुम जो पावैं हम दादा को नदिया जायँ तड़ाका धाय ॥
जयचँद तिलका ते बाचा दै लायन रहैं कनौजीराय १३७
जियत बनाफर उदयसिंह के इनको बार न बाँकाजाय ॥
करैं प्रतिज्ञा जो साँची ना तौ सबजावै धर्म नशाय १३८
सुनिकै बातैं उदयसिंह की आल्हा चुप्प साधि रहिजाय ॥
चलिभे ऊदन तब तम्बू ते दोऊहाथ जोरि शिरनाय १३९
लौटिकै आवा फिरि लश्करमा डंका तुरत दीन बजवाय ॥
साजि सिपाही सब जल्दी सों ऊदन कूचदीन करवाय १४०
नदीबेतवा को उतरत भा यहु रणबाघु बनाफरराय ॥
मीरासय्यद धनुवाँ तेली दोऊ परे तहाँ दिखलाय १४१

छाँड़े मुर्चा भागति आवैं औरौ परे नजरि सब आय ॥
दय्या बापू की ध्वनि लागी कोऊ पावँ घसीटनजाय १४२
बिना हाथ के कोऊ आवै कोऊ रोवै घाव दिखाय ॥
हाय ! गोसइयाँ दीनबन्धुकहि कोऊ सज्जन रहे मनाय १४३
यह गति दीख्यो जब क्षत्रिनकै बोले तुरत बनाफरराय ॥
सय्यद चाचा तुम बतलावो कहँपर छूटि कनौजीराय १४४
जो कछु ह्वैहै लाखनि जियका सबके मूड़ लेव कटवाय ॥
इतना सुनिकै सय्यद बोले मानो कही बनाफरराय १४५
तीनिसै हाथी के हलकामा अकसर परे कनौजी जाय ॥
प्राण आपने लय हम भागे मानो कही बनाफरराय १४६
नहीं आसरा लखराना का तुमते साँच दीन बतलाय ॥
सात लाखलों फौजै लैकै आवा आप पिथौराराय १४७
शब्द पायकै हनै निशाना ख्यहिते कौन आसराभाय ॥
सुनिकै बातैं ये सय्यद की ऊदन गये सनाकाखाय १४८
धनुवाँ बोला तव सय्यद ते चलिये फेरि समरको भाय ॥
हमका तुमका जयचँदराजा सौंपा रहै कनौजीराय १४९
सम्मुख जातै महराजा के सय्यद जियत मौत ह्वैजाय ॥
इतना सुनिकै सय्यद लौटे मुर्चा गहा तड़ाका आय १५०
धनुवाँ आयो फिरि मुर्चा मा औरौ शूर गये सब आय ॥
तीनिसै हाथीके हलका मा पहुँचा तुरत बनाफरराय १५१

सवैया ॥

लाखनि खोज करैं बघऊदन नाहिं मिलय कहुँ ठौर ठिकाना ।
कूदत फाँदत मारत धावत आवत डंक बजाय निशाना ॥

शंक नहीं निरशंक फिरै यहु बंक है ठाकुर ठीक बखाना।
काह बखान करै ललिते गुणवान जहान यहीं हम जाना१५२

बड़ा प्रतापी रणमण्डल मा ठाकुर उदयसिंह सरदार॥
बहु दलमारा पृथीराज का नदिया बही रक्तकी धार १५३
मारत मारत दल बादल के तव लखिपरे वीर चौहान॥
बिषधर शायक इक हाथेमा इक लोहेकी गहे कमान १५४
तहँई दीख्यो लखराना को तब मन ठीक लीन ठहराय॥
शब्द भेद शर हनै पिथौरा कैसे बचैं कनौजीराय १५५
जो मरिजैहैं लाखनि राना तौ सब जैहैं कामनशाय॥
जो सुनि पैहैं तिलका रानी तौ मरिजायँ जहरकोखाय१५६
नहीं आसरा यह लाखनि का जो अब धरैं पछारी पायँ॥
शूर शिरोमणि सबबिधि साँचे हमरे मित्र कनौजीराय १५७
साम दाम अरु दण्ड भेद ये चारों अङ्ग नीतिके आयँ॥
इनसों लड़िकै सज्जन क्षत्री पावैं विजय समरमें जाय १५८
यहै सोचिकै ऊदन क्षत्री आपन घोड़ दीन दौराय॥
जहँपर हाथी पृथीराज का ऊदन अटा तड़ाका धाय १५९
हाथ जोरिकै ऊदन बोले ओ महराज पिथौराराय॥
तुम्हैं मुनासिब यह नाहीं है जैसी करो समर में आय १६०
ना चढ़ि आये जयचँद राजा ना चढ़िअये रजापरिमाल॥
राजा राजा का रण सोहै मानो साँच बात नरपाल १६१
लड़िका लाखनि तुम्हरे आगे तिन पर कैसे गहौ कमान॥
बातैं सुनिकै बघऊदन की रहिगा चुप्प साधि चौहान१६२
ऐंड़ लगावा फिरि बेंदुल के हौदा ऊपर पहूँचाजाय॥

कलश सूबरण हौदावाला लीन्ह्यो तुरत बनाफरराय १६३
स्याबसि स्याबसि कह्यो पिथौरा पाछे हाथी लीन हटाय ॥
तबै कनौजी मन शरमाने ताहर गयो बरोबरि आय १६४
लाखनि ताहर का मुर्चाभा ऊदन और चौंड़िया ज्वान ॥
धाँधू धनुवाँ के बरणी भै सय्यद भूरुका मैदान १६५
नदी बेतवाके भावर मा बाजै घूमि घूमि तलवार ॥
ऐसी नाहर कनउज वाले वैसी दिल्लीके सरदार १६६
हौदा हौदा यकमिल ह्वैगा अंकुशभिड़ा महौतनक्यार ॥
पैदल पैदलके बरणी भै औ असवारसाथ असवार १६७
उरईं फौजैं दल बादल सों बाजैं छपक छपक तलवार ॥
छुरी कटारी भाला बरछी ऊनाचलै विलाइतिक्यार १६८
तीर तमंचा के मंचा भे भाला बरछिनकेर पगार ॥
मरे कटारिन औ छूरिनके नदिया बही रक्तकी धार १६९
मुण्डन केरे मुड़ चौराभे औ रुण्डन के लगे पहार ॥
हिरसिंह बिरसिंह बिरियावाले दोऊ लड़ैं तहाँसरदार १७०
रहिमत सहिमत द्वउ मारेगे हिरसिंह बिरसिंह के मैदान ॥
धाँधू धनुवाँ के मुर्चामा मुर्चा हारिगये चौहान १७१
लाखनि राना के मुर्चामा मरिगे दतिया के नरपाल ॥
ताहर ठाकुर के मुर्चा मा बेटा देशराजका लाल १७२
तबलों आये लाखनिराना तिनते फेरि चली तलवार ॥
चढ़ा कनौजी है भूरी पर यहुदलगंजनपरअसवार १७३
तीनि सिरोही ताहर मारी लाखनि लीन ढालपर वार ॥
क्रोधित ह्वैकै लाखनिराना तुरतै कीन्ह्यो गुर्जप्रहार १७४
चोट लागिगै सो घोड़ा के तुरतै भाग सहित असवार ॥

पाछे भूरी लखराना की आगे दिल्ली राजकुमार १७५
घाट बयालिस तेरह घाटी सब दल भाग पिथोरा क्यार ॥
जहँ पर तम्बू पृथीराज का पहुँचाकनउजकासरदार १७६
उतरिकै हथिनी ते भुइँ आवा तम्बू तुरत दीन गड़वाय ॥
यहु महराजा दिल्लीवाला तहँते कूचदीन करवाय १७७
बहुतक घोड़ा पृथीराज के लूटे तहाँ बनाफरराय ॥
बाकी तम्बू जे पिरथी के लाखनिआगिदीनलगवाय १७८
जितनी फौजैं लखराना की चन्दन बाग पहूँचीं आय ॥
दिल्ली पहुँचे दिल्ली वाले धावन गयो बेतवाधाय १७९
आल्हा ठाकुर के तम्बू मा धावन खबरि जनाई जाय ॥
सुनिकै बातैं मुख धावन की आल्हा कूचदीन करवाय १८०
बाजत डंका अहतंका के चन्दन बाग पहूँचे आय ॥
यकदिशि तम्बू है आल्हा का दुसरी तरफ कनौजीराय १८१
बाजैं डंका अहतंका के हाहाकार शब्द गा छाय ॥
गा हरिकारा मोहबेवाला बैठे जहाँ चँदेलेराय १८२
खबरि सुनाई सब पिरथी की जाविधि कूचदीन करवाय ॥
जैसे आये चन्दन बगिया दूनों भाय बनाफरराय १८३
करणी बरणी सब लाखनि कै धावन बार बार शिरनाय ॥
सुनी वीरता लखराना की भे मन खुशी चँदेलेराय १८४
ब्रह्मा ठाकुर को बुलवायो औ सबहाल कह्यो समुझाय ॥
तुरत महोबा को सजवावो देखन अवैं कनौजीराय १८५
सुनिकै बातैं ब्रह्मा ठाकुर लीन्ह्यो कोतवाल बुलवाय ॥
कहि समुझायो कोतवाल को मोहबा तुरत देउसजवाय १८६
इतना कहिकै ब्रह्मा चलिभे मल्हना महल पहूँचे जाय ॥

कही वीरता लखराना की ब्रह्मा वार वार तहँ गाय १८७
चन्दन बगिया डेरा परिगा पिरथी कूच दीन करवाय॥
इतना सुनिकै रानी मल्हना तुरतै दीन्ह्योहुकुमलगाय१८८
सजो मोहोबा चौगिर्दा ते हाटक नये करौ तय्यार॥
हुकुम पायकै महरानी का मोहबासजनलागत्यहिवार१८९
पुती दिवालै गईं केसरि ते चमचम्चमकिचमकिरहिजायँ॥
द्वार द्वार में बन्दन वारे घरघर रहे पताका छाय १९०
को गति वरणै पुरवासिन कै द्वारे कलश दीन धरवाय॥
घृतसों पूरित दीपक वारे सुन्दरिगीत रहीं सबगाय१९१
सजीं बजारैं गलियारन मा माली बैठ ठट्ट के ठट्ट॥
चलैं कदमपर कहुँ कहुँ घोड़ा कहुँकहुँचलैं चालसरपट्ट १९२
ठट्ट लागि गे तम्बोलिन के जाहिर पान मोहोबे क्यार॥
सतर सराफाकी बैठी है सोहैं भाँति भाँतिके हार१९३
कौन वजाजा कै गति वरणै माला बरछिन केरि बजार॥
गमला बिरवन के गलियनमा जिनमाछोटि वृक्ष कह्वार १९४
फूले वेला अलबेला कहुँ मेला लाग चमेलिन क्यार॥
रेला आवैं कहुँ नारिन के गावैं गीत मंगलाचार १९५
वारह रानी चंदेले की तिनके महल सजे त्यहिवार॥
धरे खिलौना हैं ताखन मा पाखनवेलि बूट अधिकार १९६
सोने चांदी के जेवर को रानी करतफिरैं झनकार॥
को गति बरणै महरानिन कै सोलोकीन तहाँ शृंगार १९७
हाट बाट चौहाटा सजिगे बोले तबै रजापरिमाल॥
चलिकै लइये जगनायक जी बेटा रतीभानको लाल १९८
इतना कहिकै परिमालिक जी पलकी उपर भये असवार॥

अल्हा चढ़िकै हरनागर पर तुरतै भयो तहाँ तैयार १९९
भैने सजिगा परिमालिक का तब फिरि कूचदीन करवाय ॥
जहँ पर तम्बू लखराना का तहँपर गये चँदेलेराय २००
आवत दीख्यो परिमालिक को लाखनि उठे तड़ाका धाय ॥
पकरिकै बाहू लखराना की औ छातीमा लीन लगाय २०१
बैठे तम्बू मा परिमालिक आये द्वऊ बनाफरराय ॥
मिलाभेंट करि सब काहुन सों सबहिनकूच दीन करवाय २०२
चला कनौजी चढ़ि भूरी पर इन्दल पपिहा पर असवार ॥
घोड़ मनोहर पर देबा चढ़ि बेंदुल उदयसिंह सरदार २०३
हिरसिंह बिरसिंह बिरिया वाले येऊ साथ भये तय्यार ॥
सिंहा ठाकुर परहुल वाला गंगा कुड़हरिका सरदार २०४
मीरा सय्यद वनरस वाले औरौ नृपति चले-त्यहिबार ॥
ठाढ़ो हाथी पचशब्दा था आल्हा तापर भये सवार २०५
द्यावलि सुनवाँ फुलवा तीनों डोलन उपर भईं असवार ॥
डोला चलिभा चितरेखा का मोहबालखनलागिसरदार २०६
जौनी गलियन जायँ कनौजी तौनी देखैं नई वहार ॥
चलैं पिचका क्यहुगलियन मा कहुँकहुँहोयँफुलनकीमार २०७
कहुँ कहुँ ढोलक सारंगी ध्वनि कहुँ कहुँ बाजैं खूब सितार ॥
तबलागमकैं क्यहुगलियनमा होवैं नाच पतुरियनक्यार २०८
परे पाँवड़ेहैं द्वार मा महलन मणी करैं उजियार ॥
उड़ैं कबूतर क्यहु महलन ते होवै नाच मुरैलन क्यार २०९
पिंजरा टाँगे ललमुनियन के चक्कस गड़े बुलबुलन केर ॥
सुवा पहाड़ी कहुँ पिंजरन में कहुँ कहुँ तीतर औरं बटेर २१०
को गति बरणै त्यहि समयाकै चाकित लखैं चहूँदिशि हेर ॥

चारहु राजा गाँजर वाले बारहु कुँवर बनोधाकेर २११
इन के सँगमा लाखनि राना मल्हना द्वार पहूँचे आय ॥
कीनि आरती चन्द्रावलि तहँ भीतरगये कनौजीराय २१२
संग पतोहुन को लैकै फिरि द्यावलिगई तड़ाका धाय॥
आल्हा ऊदन इन्दल तीनों येऊ फेरि पहूँचेजाय २१३
बड़ी कसामसि भै महलन मा बैठे सबै महा सुखपाय ॥
बारहु रानी परिमालिक की मल्हनामहलगईसबआय २१४
बड़ी खुशाली भै मल्हना के फूले अङ्ग न सकै समाय ॥
बेटी बोली चन्द्रावलि तब मानों साँच लहुरवाभाय २१५
जबते छाँड़्यो नगर मोहोबा जबते मरे बीर मलखान ॥
तबते ईजति ये ताके हैं लुबा दिल्ली के चौहान २१६
जोना अवतिउ ऊदन भैया पिरथी लूटि लेत करवाय ॥
धर्म रखैया सब मोहबे के युगयुगजियौबनाफरराय २१७
सुनिकै बातैं चन्द्रावलि की ऊदन कहा बहुत समुझाय ॥
काहहकीकति थी पिरथी की मोहबाशहर लेत लुटवाय २१८
मिला भेंट करि सब काहुन सों सबहिन कूच दीन करवाय ॥
जहाँ कचहरी परिमालिक की आल्हा सहित पहूँचेआय २१९
खातिर कीन्ह्यो परिमालिक ने बैठे तहाँ कनौजीराय ॥
राजा बोले तब आल्हा ते हमपरदया दीन बिसराय २२०
जबै बनाफर तुम मोहबेगे तबहीं चढ़ा पिथौराराय ॥
जूझिग ठाकुर सिरसावाला बिपदा गई मोहोबे आय २२१
इतना सुनिकै आल्हा बोले मानों साँच बचन महराज ॥
सुनी तलाकै जब तुम्हरी हम मानो गिरी उपरते गाज २२२
माहिल भूपतिकी चुगुली सुनि हमरी देश निकासी कीन ॥

जूझिगे ठाकुर सिरसा वाले तबहूं खबरि आपनहिंलीन२२३
खबरि जो पावत मलखाने की दिल्ली शहर देत फुकवाय ॥
चढ़िके मारत हम पिरथी का साँची सुनो चँदेलेराय २२४
धावलि बिरमा सम माता ना ना जग भायसरिस मलखान ॥
ब्रह्मा ठाकुर के ब्याहे मा हाथी द्वार पछारा ज्वान २२५
पहिलि लड़ाई भै माड़ौगढ़ दूसर नैनागढ़ मैदान ॥
तिसरि लड़ाई भै पथरीगढ़ ब्याहे गये तहाँ मलखान २२६
चौथि लड़ाई भै दिल्ली मा पाँचो नरवर का मैदान ॥
इन्दल ब्याह हरण छठयें मा तहँपर भयो घोर घमसान २२७
सतों लड़ाई भै बौरीगढ़ आठों बूँदी का मैदान ॥
नव दश बार लड़े रण नाहर तब मरिगये बीर मलखान२२८
भुजा टूटिगै इक आल्हा की ह्वैगा बली बीर चौहान ॥
स्वपना ह्वैगे अब दुनिया मा हमका आजु बीरमलखान२२९
यहु दुख पावा तुम्हरी दिशि ते मानो साँच चँदेलेराय ॥
सवन चिरैया ना घर छोड़ै नाबनिजरा बणिजकोजाय२३०
मोहिं निकारा तब मोहबे ते तुम्हरो काह बिगारा भाय ॥
जेयत मोहोबे हम आइत ना जो ना चढ़त पिथौरा धाय २३१
पाल्यो पोष्यो लरिकाई ते ताते लाज दीन बिसराय ॥
दूध पियायो मल्हना रानी तबयहुजियालहुरवाभाय २३२
असससुझायो मोहिं माता जब तब सब क्रोध दीन बिसराय ॥
सुनिकै बातैं ये आल्हा की कायल भये चँदेलेराय २३३
तबै बनाफर उदयसिंह जी बोले हाथ जोरि शिरनाय ॥
सुखसों सोवो अब मोहबे मा करिहै काह पिथौराराय २३४
जो कछु ह्वैगा पाछे परिगा अब आगे का करो बिचार ॥

इतना सुनिकै परिमालिकजी लागे करन मंगलाचार २३५

सवैया ॥

मोद अपार बढ़्यो त्यहि वार सो यार सँभार रह्यो कछु नाहीं ।
पैरको भूषण हाथन धारि सो हाथको भूषण पैरन माहीं ॥
हाथ मिलावत धावत आवत गावत गीत डरे गलबाहीं ।
कौन सों मारग ऐसो तहाँ सो जहाँ ललिते सुखपावत नाहीं २३६

बड़ा मोदभा पुर महलन मा टहलन नेक न लागी बार ॥
आल्हा ऊदन लाखनि ठाकुर सबहिनखूबकीनज्यँवनार २३७
खेत छूटिगा दिननायक सों झण्डा गड़ा निशाको आय ॥
तारागण सब चमकन लागे संतन धुनी दीनपरचाय २३८
परे आलसी खटिया तकितकि घों घों करउ रहे घर्राय ॥
आशिर्वाद देउँ मुन्शी सुत जीवो प्रागनरायण भाय २३९
रहैं समुन्दर में जबलों जल जबलों रहैं चन्द औ सूर ॥
मालिक ललिते के तबलों तुम यशसों रहौ सदा भरपूर २४०
माथ नवावों पितु माता को देवी देव सरिस औतार ॥
सेवा करिकै पितु माताकी सरवन पूत भयो भवपार २४१
औरौ गाथा रघुनाथा की कहिगे बालमीकि विस्तार ॥
पूरण ब्रह्म आदि पुरुषोत्तम स्वामी रामचन्द्र अवतार २४२
अब बदनामी का डर नाहीं होवो रामचन्द्र भर्त्तार ॥
शरण तुम्हारी हम ताके हैं दर्शन चहैं नाथ यहिबार २४३
पगड़ी हमरी अब अरुझी है सो सुरझाय देव रघुनाथ ॥
कितनो पापी कलियुग करिहै तबहूँ धरों चरण में माथ २४४
माता भ्राता त्राता ताता नाता एक ठीक रघुनाथ ॥

स्वारथ साथी सब दुनिया है कासों करौं जगतमें साथ२४५
सुमिरि भवानी शिवशङ्कर को ह्याँते करौं तरँग को अन्त ॥
राम रमा मिलि दर्शन देवैं इच्छा यही भवानीकन्त २४६

इति श्रीलखनऊनिवासि (सी,आई,ई) मुंशीनवलकिशोरात्मजबाबूप्रयागनारायण जीकीआज्ञानुसार उन्नामप्रदेशान्तर्गत पँड़रीकलांनिवासि मिश्र वंशोद्भव बुधकृपाशङ्करसूनु पण्डितललिताप्रसादकृतनदीबे-तवायुद्धवर्णनोनामप्रथमस्तरंगः॥ १ ॥

नदीबेतवाकायुद्धसमाप्त॥

इति॥

अथ आल्हखण्ड ॥

ठाकुरउदयसिंहजीकाहरणवर्णन ॥

सवैया ॥

वज्रसे अंग ओ बानर हय अरु बीरन में बलवान महा ।
रणमण्डल कोउ न जाय सकै ज्यहि ठौर जबै यहु बीर रहा ॥
सप्त समुन्दर नाँघि अगाध दशकन्धर को पुर जाय दहा ।
आयहु फेरि जबै ललिते रघुनाथ ते साँच हवाल कहा १

सुमिरन ॥

तुम्हैं वहादुर मैं ध्यावत हौं अञ्जनि पूत वीर हनुमान ॥
तुम्हीं गोसइयाँ दीनवन्धु हौ नितप्रतिकरौं चरणकोध्यान १
सरवरि तुम्हरी का दुनिया मा दूसर कौन वहादुर ज्वान ॥
शरण तुम्हारी मा आयन है साँचे वीर वली हनुमान २
गदा प्रहारी हे असुरारी मारी दुष्ट लङ्किनी नारि ॥
पर्वत पाँयन मकरी तारिगै लायो पर्वत शृंग उखारि ३
बड़े पियारे रघुनन्दन के वन्दन करौं जोरि दोउ हाथ ॥
अक्षत चन्दन धूप दीप सों पूजन करौं मानसी नाथ ४

करो मनोरथ पूरण हमरे सबविधि माननीय हनुमान ॥
छूटि सुमिरनी गै हनुमत कै ऊदन हरण सुनो अब ज्वान ५

अथ कथाप्रसंग ॥

एक समैया की बातैं हैं परिगै पर्व दशहरा आय ॥
सुनवाँ बोली तब ऊदन ते साँची सुनो बनाफरराय १
मोरि लालसा यह डोलति है मज्जन करों बिठूरे जाय ॥
आयसु लैकै तुम दादा की देवर मोहिं देउ हनवाय २
यह मन भायगई ऊदन के आल्हा महल पहूँचे जाय ॥
हाथ जोरि अरु बिनती करिकै बोला तहाँ लहुरवाभाय ३
सुनवाँ भौजी की इच्छा है हमको गंग देउ हनवाय ॥
आयसु पावैं जो दादा की तौ हम जायँ बिठूरे धाय ४
इतना सुनिकै आल्हा बोले मानों साँच लहुरवा भाय ॥
देश देश के राजा अइहैं करिहौ कलह तहाँपर जाय ५
त्यहिते बैठो घर अपने मा ऊदन साँच दीन बतलाय ॥
पर्व दशहरा की फिरि अइहै औरे साल हनायो जाय ६
इतना सुनिकै ऊदन बोले दादा सुनो बनाफरराय ॥
पगिया हमरी कछु अरुझीना जो तहँ रारि मचैबे जाय ७
बाचा हारे हम भौजी ते तुमको गंग देब हनवाय ॥
मोहिं भरोसा है दादा को करिहौ पूर मनोरथ भाय ८
बातैं सुनिकै बघऊदन की दीन्ह्यो हुकुम बनाफरराय ॥
हुकुम पायकै ऊदन ठाकुर लीन्ह्यौं तुरत फौज सजवाय ६
सजी पालकी तहँ ठाढ़ी थीं सुनवाँ फुलवा भईं सवार ॥
घोड़ बेंदुला का चढ़वैया औ जगनायक भयो तयार १०
सवालाख दल ऊदन लैकै तुरतै कूच दीन करवाय ॥

बाजैं डंका अहतंका के हाहाकार शब्द गा छाय ११
आठ रोजकी मैंजलि करिकै पहुँचा तहाँ बनाफरराय ॥
तम्बू गड़िगा तहँ ऊदन का भारी ध्वजा रहा फहराय १२
सुभिया बेड़िनि झुन्नागढ़ ते पहुँची स्वऊ बिठूरै जाय ॥
करै तमाशा सो तम्बुन में पावै द्रव्य तहाँ अधिकाय १३
जहँपर तम्बू था ऊदन का सुभिया तहाँ पहूँची आय ॥
रूप देखिकै बघऊदन का दीन्ह्यो नाच रंग बिसराय १४
कछु नहिं भावै सुभिया मनमा ठगिनी भई तहाँपर आय ॥
औरी नटिनी सँग जे आईं तिनका नाच दीनकरवाय १५
अपना बैठे तहँ सोचति है कैसे मिलैं बनाफरराय ॥
जादू डारैं जो ऊदन पर तबहुँनकाजसिद्धदिखलाय १६
जाहिर जादू मा सुनवाँ है हमरे जाय प्राण पर आय ॥
मनमा शोचै मनै बिसूरै मनमा बार बार पछिताय १७
डारि मोहनी दी लश्कर मा जेवर डिब्बा लीन उठाय ॥
दीन रुपैया ऊदन ठाकुर नटिनिन कूचदीन करवाय १८
चढ़ीं पालकी सुनवाँ फुलवा गंगा उपर पहूँचीं जाय ॥
मज्जन कीन्ह्यो उदयसिंह तहँ विप्रनदानदीन अधिकाय १९
मज्जन कीन्ह्यो जगनायक जी प्रातःकृत्य कीन हर्षाय ॥
दान मान दै सब विप्रन को सबहिन कूचदीनकरवाय २०
लखा तमाशा औ मेला खुब तम्बुन फेरि पहूँचे आय ॥
उखरि ग तम्बू फिरि ऊदन का लश्कर कूच दीन करवाय २१
बाजैं डंका अहतंका के हाहाकार शब्द गे छाय ॥
अस्त दिवाकर जब पश्चिम भे तम्बू दीन तहाँ गड़वाय २२
उत्तम नदिया हैं यमुनाजी उतरे जहाँ बनाफरराय ॥

डिब्बा दीख्यो नहिं जेवर को सुनवाँ गई सनाकाखाय २३
तुरत बनाफर उदयसिंह को अपने पास लीन बुलवाय ॥
कहि समुझावा तहँ ऊदन ते डिब्बा नहीं परै दिखलाय २४
एक लाख का सब गहना है कैसी करैं बनाफरराय ॥
डिब्बा भूलाहै बिठूर मा मोको याद भयो यहँ आय २५
काह बतावों मैं देवर ते करिये कैसो कौन उपाय ॥
धीरज राखो अपने मनमा बोले बचन लहुरवाभाय २६
तुरत बुलायो जगनायक को औ सब हाल कह्यो समुझाय ॥
हम तो जावत हैं बिठूर को तुम अब कूचजाउ करवाय २७
यह मन भायगई जगना के ऊदन गये बिठूरै आय ॥
कैयो दिनका धावा करिकै जगना अटा मोहोबे जाय २८
रहा न मेला कछु लौटेमा सिरकी पाल परे दिखराय ॥
तिनमा नटिनी औ नट ठहरे गे तिन पास बनाफरराय २९
सुभिया दीख्यो जब ऊदन का भै मन खुशी तबै अधिकाय ॥
कहँते आयो औ कहँ जैहौ ठाकुर हाल देउ बतलाय ३०
सुनिकै बातैं ये सुभिया की बोले फेरि बनाफरराय ॥
नगर मोहोबा के हम ठाकुर आयन आजु बिठूर नहाय ३१
जब तुम नाचन गइ तम्बूमा गहनो गयो हमार हिराय ॥
पतालगावन त्यहि आयन है तुमते साँच दीन बतलाय ३२
इतना सुनिकै सुभिया बोली मानो साँच बनाफरराय ॥
पंसासारी हमते खेलो हम फिरि पतादेबलगवाय ३३
खेल पसारा सुभिया बेड़िनि बैठे तहाँ लहुरवाभाय ॥
जुआँ युद्धसों साँचे क्षत्री कबहुँ न धरैं पछारी पाँय ३४
नल औ पुष्कल आगे खेल्यो भ्ल्योदुःख नृपति अधिकाय ॥

भारी गाथा नलराजा की देखो महाभारत में जाय ३५
द्वापर शकुनी के सँग खेल्यो कुन्ती पुत्र युधिष्ठिरराय ॥
हारि द्रौपदी महराजा गे खैंचा चीर दुशासन आय ३६
मानिकै शासन दुर्य्योधन का पहुँचे बनोवास फिरिजाय ॥
काटिकै संकट महराजा सब कीन्हेनिमहाभार्तफिरिआय३७
यहु दुखदाई पंसासारी खेलन लागि बनाफरराय ॥
जादू डारी सुभिया बेड़िनि भे तब सुवा लहुरवाभाय ३८
डारिकै पिंजरा मा ऊदन का सुभिया कूच दीन करवाय ॥
जायकैपहुँची फिरि दिल्लीमा जहँ पर बसैं पिथौराराय ३९
जहाँ कचहरी दिल्लीपतिकी सुभिया गई यतन सों धाय ॥
करी बन्दगी महराजा को दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ४०
सुभिया बोली फिरि पिरथी ते राजन साँच देयँ बतलाय ॥
डारिकै जादू हम ऊदन पर औ मेला ते लईं चुराय ४१
पै डर हमरे है आल्हा का स्वामी जगा देउ बतलाय ॥
डारिकै सिरकी हम दिल्ली मा निर्भय बसौ पिथौराराय ४२
इतना सुनिकै पिरथी बोले सुभिया कूच देउ करवाय ॥
जो सुनिपैहैं आल्हा ठाकुर हम ते रारि मचैहैं आय ४३
इतना सुनिकै सुभिया चलिभै डेरन फेरि पहूँची आय ॥
कूच करावा फिरि दिल्ली ते सब दरबार भँभावा जाय ४४
कहूँ ठिकाना जब लाग्योना झुन्नागढ़ै गयी तब धाय ॥
जहाँ कचहरी गजराजा की सुभिया तहाँ पहूँची जाय ४५
हाथ जोरिकै महराजा के आपन हाल दीन बतलाय ॥
जगा चाहती हम झुन्नागढ़ यह इक काज हमारो आय ४६
इतना सुनिकै राजा बोले सुभिया कूच जाउ करवाय ॥

जो सुनि पै हैं आल्हा ठाकुर हमते रारि मचै हैं आय ४७
सुनिकै बातैं गजराजा की सुभिया कूच दीन करवाय॥
झारखण्ड के फिरि जंगल मा डेराजाय दीन गड़वाय ४८
चौकी पहरा करि जादू के निर्भय बसी तहाँ सुखपाय॥
सुनवाँ सोचै ह्याँ महलन मा आये नहीं लहुरवा भाय ४९
पता लगावों मैं ऊदन का जावों देश देश को धाय॥
यहै सोचिकै रानी सुनवाँ चिल्हियाबनीसरगमड़राय ५०
पहिले ढूँढ़ा त्यहि बिठूर का पाछे गयी कामरू धाय॥
सिलहट बिजहट मौरँग झुन्ना दिल्लीशहरलखा फिरिजाय ५१
पता न पायो जब ऊदन का पहुँची झारखण्ड में आय॥
तहाँ पै डेराहैं बेड़िनि के सुनवाँ बैठि बरगदे जाय ५२
पेड़ बरगदा के नीचे मा सुभिया पलँग लीनबिछवाय॥
लैकै पिंजरा फिरि सुवना का मानुष तुरतै दीन बनाय ५३
खेलै चौपरि सँग ऊदन के सुभिया बोली बचन सुनाय॥
ब्याह हमारे सँगमा करिये मानो कही बनाफरराय ५४
भजिये अल्ला बिसमिल्ला को ऊदन रटो खुदाय खुदाय॥
तब सुख पैहौ तुम देहीं का नाहीं खाल लेउँ खिचवाय ५५
खुदा खैरियत तुम्हरी करि हैं बिसमिल भलाकरी सबकाल॥
बाबा आदम संकट टारी मेटी अली भली जंजाल ५६
बातैं सुनिकै ये बेड़िनि की बोला देशराज का लाल॥
खुदा खुदाई बहु दिखलावैं बिसमिलआयजायँततकाल ५७
ऊदन ब्याहैं नहिं बेड़िनि को कबहूँ राम नाम बिसराय॥
देश आरिया के क्षत्री हम कैसे मुसलमान ह्वैजायँ ५८
जब छुइजावैं मुसलमान को तबहीं तुरत करैं असनान॥

बेवश ह्वैकै पिंजरा आयन ताते छूटिगयो सब मान ५६
पढ़ैं फारसी हम विद्या ना अपनो धर्म करैं गतिपाल॥
नित प्रति ध्यावैं रघुनन्दन को पूरणब्रह्म सुरासुर पाल ६०
खाल न रैहै जो देहीमा केवल प्राण करैं विश्राम॥
तबहूं मुख सों ऊदन ठाकुर कबहुँन लेयँ खुदाको नाम ६१
निर्भय बातैं सुनि ऊदन की बरगद डार दीन टँगवाय॥
बहुतक बाँसन हनि हनि मारा ऊदन जपो खुदाय खुदाय ६२
सुनिकै बातैं ये सुभिया की बोला फेरि बनाफरराय॥
ऊदन ब्याहैं नहिं बेड़िनि को कबहूं राम नाम बिसराय ६३
बात न दूसरि हम अब कहिबे चहु तन धजीधजीउड़िजाय॥
ऊदन ब्याहैं नहिं बेड़िनि को कबहूं राम नाम बिसराय ६४
सुनिकै बातैं उदयसिंह की तुरतै सुवना लीन बनाय॥
डारिकै पिंजरामा ऊदन का टाँगा फेरि बरगदा आय ६५
देखि दुर्दशा यह ऊदन की सुनवाँ बार बार पछिताय॥
डारि मशान दियो सुनवाँ ने पाछे पिंजरा लीन उठाय ६६
लैकै पिंजरा कछु दूरी मा सुनवाँ गई तड़ाका धाय॥
सुवना लैकै फिरि पिंजरा ते मानुष तुरतै दीन बनाय ६७
सुनवाँ बोली फिरि ऊदन ते क्यों नहिं देवर जपो खुदाय॥
काहे बिलमें तुम बेड़िनि में नित प्रति सहौ बाँसके घाय ६८
चलिये देवर अब मोहबे को तुम्हरी बार बार बलिजायँ॥
सुनिकै बातैं ये सुनवाँ की बोले फेरि बनाफर राय ६९
चोरी चोरा ना हम जैहैं तुमते साँच देयँ बतलाय॥
लैकै फौजै दादा आवैं हमरी कैद लेयँ छुड़वाय ७०
ऐसे ऊदन अब जैहैं ना नित प्रति सहैं बाँसके घाय॥

सुत्रा बनावो अब मानुष ते टाँगो फेरि बरगदा जाय ७१
इतना सुनिकै रानी सुनवाँ टाँगा फेरि बरगदा आय ॥
चील्ह रूप ह्वै उड़ि तहँनाते पहुँची फेरि मोहोबे जाय ७२
मानुषि ह्वैकै फिरि महलनमा इन्दल पूत लीन बुलवाय ॥
कहि समुझावा सब इन्दल ते बप्पै खबरि जनावो जाय ७३
सुनिकै बातैं ये माता की इन्दल पूत चला शिरनाय ॥
जहाँ कचहरी है आल्हा कै इन्दल पूत पहूँचा आय ७४
बड़े प्यार सों आल्हाठाकुर अपने पास लीन बैठाय ॥
फिरि शिर सूंघ्यो आल्हाठाकुर बोल्यो मधुरबचनमुसुकाय ७५
काह लालसा है बचुवा कै सो अब बेगि देउ बतलाय ॥
इतना सुनिकै इन्दलठाकुर कहिगा यथातथ्य सब गाय ७६
सुनिकै आल्हा बोलन लागे है यहु दुष्ट लहुरवा भाय ॥
करकति छाती दुख सुनिकै अब त्यहिते कैद छुड़ावबजाय ७७
इतना कहिकै आल्हा ठाकुर डंका तुरत दीन बजवाय ॥
सजिगालश्करफिरिआल्हाका तुरतै कूच दीन करवाय ७८
बनिकै चिल्हिया सुनवाँ रानी आधे सरग रही मड़राय ॥
जाय बरगदा के फिरि पहुँची चुप्पे बैठि डारपै जाय ७९
डारि मशान दयो सुभियादल तुरतै पिंजरा लीन उठाय ॥
कछू दूरिचालि झारखण्ड ते फूँका मन्त्र तहाँपर जाय ८०
मानुष ह्वैकै फिरि बघऊदन ठाढ़े भये शीश को नाय ॥
तब समुझावा रानी सुनवाँ लश्करगयो तुम्हारो आय ८१
चीलहरूप ह्वै रानी सुनवाँ बैठी एकडार पै जाय ॥
तहँने चलिकै ऊदन ठाकुर आगे मिले फौजमें आय ८२
जादू चौकी सुभिया वाली सवियाँ हाल कहा समुझाय ॥

इतना सुनिकै सुभिया बेड़िनि तुरतै उठी तड़ाका धाय ८३
सहुवा बीरन को बुलवावा औ सब हाल दीन बतलाय ॥
करो तयारी समरभूमि की आये लड़न बनाफरराय ८४
खबरि फैलिगै यह बेड़ियन मा ह्वैगे डेढ़ सहस तय्यार ॥
झीलम बखतर सबहिन पहिरा सबहिनबाँधिलीन हथियार ८५
कोउकोउबेड़ियाचढ़िहाथिनमा कोउ कोउ घोड़भये असवार ॥
बहुतक बेड़िया हैं पैदल मा लीन्हे हाथ ढाल तलवार ८६
गड़िगा तम्बू ह्याँ आल्हा का भारी ध्वजा रहा फहराय ॥
बाजै डंका अहतंका का हाहाकार शब्दका छाय ८७
देखा ऊदन इन्दल ठाकुर तीनों भये बेगि तय्यार ॥
हथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे बाँके घोड़न भे असवार ८८
दुहुँ दल तुरतै इकठौरी भे लागी चलन तहाँ तलवार ॥
कहुँ कहुँ भाला कहुँ कहुँ बरछी कहुँ कहुँ मारैं ज्वान कटार ८९
कटि भुजदण्डैं गिरैं खेत में उठि उठि रुण्ड करैं तलवार ॥
मुण्डन केरे मुड़चौरा भे औ रुण्डन के लगे पहार ९०
मारे मारे तलवारिन के नदिया बही रक्त की धार ॥
ना मुहँ फेरैं मोहबे वाले नादलबेड़ियनकात्यहिबार ९१
बड़े लड़ैया ई बेड़िया हैं इनते हारिगयी तलवार ॥
को गति बरणै तहँ इन्दल कै सबदिशिकरै भड़ाभड़मार ९२
सुनयाँ सुगिया कै बरणी भै जादुन द्वऊ बड़ी हुशियार ॥
आगी पानी अरु आँधी की पुरियन होय तहाँपर मार ९३
चलै सिरोही रणमण्डल मा क्षत्री गरू करैं ललकार ॥
कऊँआलपकनिबिजलीचमकनि तड़पै चहूँदिशा तलवार ९४
घन्नो गाजैं डंका बाजैं बाजैं तहाँ शूर सरदार ॥

को गति बरणै तहँ बेड़ियन के उनतो भली मचाई रार ९५
इनहुन दुर्गति तिनकी कीन्ही कायर छोंड़ि भागि मैदान ॥
कटि कटि कल्ला गिरैं बछेड़ा घैहा होयँ अनेकन ज्वान ९६
पाँचसै बेड़िया घायल ह्वैगे सब दल रहिगा एकहजार ॥
तीनसै क्षत्रिय मोहबेवाले जूभे समर तहाँ त्यहिवार ९७
रानी सुनवाँ सुभिया बेड़िनि जादुन करैं तहाँपर रार ॥
कोऊ काहूने कमती ना दोऊ जादुन में हुशियार ९८
बीरमहम्मद की पुरिया को सुभिया छाँड़ि दीन त्यहिवार ॥
नारसिंह की जादू लैकै सुनवाँ तजा तुरतललकार ९९
चिल्हिया ह्वैकै सुनवाँ सुभिया दूनन खूब कीन मैदान ॥
लड़ते लड़ते दूनों चिल्हिया पहुँचींजायतुरतअसमान १००
लड़ते लड़ते द्वउ ऊपर ते नीचे गिरीं तड़ाका आय ॥
बड़ी लड़ाई भै पंजन ते अद्भुत समर कहानाजाय १०१
जहाँ लड़ाईद्वउ चिल्हियनकी इन्दल तहाँ पहूँचा आय ॥
सुनवाँ बोली तहँ इन्दल ते बेटा मूड़ देउ बगदाय १०२
इन्दल बोले तब सुनवाँ ते कैसे देवैं मूड़ गिराय ॥
जो हम मारैं यहि तिरिया को तौ रजपूती धर्मनशाय १०३
हाथ मेहरियन पर छाँड़ैं ना कबहूँ बीर समर में माय ॥
कैसे मारैं हम तिरिया को माता सोचो और उपाय १०४
इतना सुनिकै सुनवाँ बोली बेटा जूरा लेउ उड़ाय ॥
बातैं सुनिकै ये सुनवाँ की जूरा काटि लीन त्यहिठायँ १०५
जीवन दान दीन सुभियाको सोऊ भागि तड़ाकाधाय ॥
जादू भूटी भई सुभिया की तबसोलागितहाँपछिताय १०६
ऊदन देबाकी मारुन मा बेड़िया भागे खेत बराय ॥

जो कोउ भागतहै सम्मुख ते त्यहिना हनैं बनाफरराय १०७
मारे मारे तलवारिन ते बिड़िया चिरियाकरैं निदान॥
खेत छूटिगा सब बिड़ियन ते जीता उदयसिंह मैदान १०८
बाजे डंका अहतंका के हैगा घोर शोर घमसान॥
जितने क्षत्री मोहबेवाले डेरन आयगये ते ज्वान १०९
चील्ह रूप है सुनवाँ रानी महलन आयगयी ततकाल॥
कूच करायो फिरि लश्कर को बेटा देशराज के लाल ११०
आल्हा ठाकुर पचशब्दा पर इन्दल पपिहापर असवार॥
घोड़ बेंदुला पर ऊदन हैं कम्मरपरी नाँगि तलवार १११
यहु अलबेला भीषमवाला देवा मैनपुरी चौहान॥
घोड़ मनोहर पर सोहतहै रणमा बड़ालड़ैयाज्वान ११२
कैयो दिनकी मैंजलि करिकै भुन्नागढ़ै पहूँचे आय॥
गड़िगा तम्बू तहँ आल्हा का भारी ध्वजारहा फहराय ११३
ढोल नगारा तुरही बाजीं हाहाकार शब्दगा छाय॥
गा हरिकारा तब भुन्नागढ़ राजै खबरिजनावा जाय ११४
आल्हा ऊदन मोहबे वाले धूरे परे हमारे आय॥
आवैं फौजैं भारखण्ड ते अबतो नगर मोहोबेजायँ ११५
सुनिकै बातैं हरिकारा की पलकी तुरत लीन मँगवाय॥
इश्शरात मुहरैं इक हीरालै पलकी चढ़ा तड़ाकाधाय ११६
जहाँ बनाफर आल्हा ठाकुर राजा तहाँ पहूँचा आय॥
आदर करिकै आल्हा ठाकुर अपने पास लीन बैठाय ११७
ढारि अशर्फी दी सम्मुखमा हीरा हाथ दीन पकराय॥
सखियाँ गाया तब ऊदन की आल्हा यथातथ्यगे गाय ११८
बड़े प्रेम सों दोऊ ठाकुर बोलैं प्रीति रीति के भाय॥

विदा मांगिकै फिरि आल्हासों राजा चढ़ा पालकी जाय११९
गा महराजा झुन्नागढ़ मा तम्बुन स्वये बनाफरराय॥
राति बसेरा करि झुन्नागढ़ भुरहीं कूच दीन करवाय १२०
कैयो दिनकी मैंजलि करिकै मोहबे गये बनाफरराय॥
सौसौ तोपैं दर्गीं सलामी जबघरगयेउदयसिंहराय १२१
को गति बरणै त्यहि समयाकै हमरे बून कही ना जाय॥
ऊदनहरण पूर अब ह्वैगा ध्यावैं तुम्हैं शारदा माय १२२
कण्ठ में बैठो तुम महरानी भूले अक्षर देउ बताय॥
आशिर्बाद देउँ मुंशीसुत जीवो प्रागनरायण भाय १२३
रहै समुन्दर में जबलों जल जबलों रहैं चन्द औ सूर॥
मालिक ललिते के तबलों तुम यशसों रहौ सदा भरपूर १२४
माथ नवावों पितु माता को जिनबल पूर कीन यह गाथ॥
नहीं भरोसा निज भुजबल का स्वामी रामचन्द्र रघुनाथ १२५
पूर तरंग यहाँ सों ह्वैगा सुमिरों तुम्है भवानीकन्त॥
राम रमा मिलि दर्शन देवैं इच्छा यही मोरि भगवन्त १२६

इति श्रीलखनऊनिवासि (सी,आई,ई) मुंशीनवलकिशोरात्मजबाबूप्रयागना-
रायणजीकीआज्ञानुसारउन्नामप्रदेशान्तर्गतपँडरीकलांनिवासिमिश्रवंशोद्भव
बुधकृपाशङ्करसूनु पं० ललिताप्रसादकृतऊदनहरण
वर्णनोनामप्रथमस्तरंगः १ ॥

उदयसिंहकाहरणसमाप्त॥

इति॥

अथ आल्हखण्ड ॥

बेलाकेगौनेकाप्रथमयुद्धवर्णन ॥

सवैया ॥

ब्याकुल गंध्रब नागसबै नरदेव अदेव लहै दुखभारा ।
गोतनु धारि गयी पिरथी अरथी सँग देवन लै त्यहिबारा ॥
बाणि भई तबहीं नभते ललिते अवधेशके होब कुमारा ।
ध्यावत ब्रह्म सुरासुर जाहि स्वई प्रभु राम लियो अवतारा १

सुमिरन ॥

दोउ पद बन्दौं रामचन्द्र के जिनबल चलाजाउँ भवपार ॥
राम न होते जो दुनियामा बेड़ा कौन लगावत पार १
कौन समुन्दर को मथिडारत चौदारतन लेत निकराय ॥
कोभों मारत दशकन्धर को धारत कौन धर्मपथ आय २
कोभों तारत इनपापिन को जिनकीदशाकही ना जाय ॥
मारा मारा कहि तरिगे जो पापी बालमीकि असभाय ३
गीधअजामिलगतिगणिकाकी सबकोबिदितभलीबिधिआय ॥

ये सब पापी हैं प्रथमै के तरिगे रामचरण को ध्याय ४
स्वई भरोसा धरि जियरेमा नितप्रति धरों चरणपरमाथ॥
पारलगायो भवसागर ते स्वामी रामचन्द रघुनाथ ५
छोंड़ि सुमिरनी अब रघुबर कै बेला गौन कहों सब गाय॥
ब्रह्मा ठाकुर दिल्ली जैहैं पैहैं विजय पिथौराराय ६

अथ कथाप्रसंग॥

एक समैया इक औसर मा बैठे सभा रजा परिमाल॥
आल्हा ऊदन इन्दल देवा लाखनि साथ और नरपाल १
को गति बरणै त्यहि समयाकै भारी लाग राजदरबार॥
त्यही समैया त्यहि औसरमा आवा उरई का सरदार २
आवो आवो बैठो बैठो राजै कीन बहुत सतकार॥
बैठिग ठाकुर उरई वाला आला चुगुलन मा सरदार ३
बिना बुलाये ते बोला फिरि तुम सुनिलेउ रजापरिमाल॥
औसर ऐसो फिरि पैहौ ना ब्रह्मा गौनलेउ यहिकाल ४
बैठि कनौजी लाखनिराना बैठे देशराज के लाल॥
लैकै बीरा यहि औसर मा तुम धरिदेउ रजापरिमाल ५
कौन बहादुर यहि समया मा बेला गौन चबावै पान॥
स्यावसि स्यावसि माहिलठाकुर तुम्हरे बचन ठीक परमान ६
इतना कहिकै परिमालिक जी तुरतै धरा तहाँपर पान॥
है कोउ क्षत्री तेहेवाला लेवै पान आन सो ज्वान ७
सुनिकै बातैं परिमालिक की सब कोउ गये सनाकाखाय॥
बोलि न आवा क्यहु ठाकुरते आनन गये तुरत मुरझाय ८
चारि घरीदिन यहिबिधि बीता कोउ न पान पास समुहान॥
तबै बहादुर द्यावलि वाला पहुँचा उदयसिंह तहँ ज्वान ९

माहिल बोले तब ब्रह्मा ते ठाकुर काह धरावो नाम ॥
पान चबाबो तुम दिल्ली का नाहीं उदयसिंह का काम १०
जाति कुलीने नहिं ऊदन हैं नहिं बिश्वासयोग यहिकाल ॥
इन्हैं निकारयो परिमालिक है खोंटे देशराज के लाल ११
मतलब इन ते जो रहिहै ना पिरथी करी बहुत सनमान ॥
अगुवाकारी होयँ बनाफर तौ सब लड़ैं बीर चौहान १२
पान चबावो तुम जल्दी सों देवे बिदा तुरत करवाय ॥
इतना सुनिकै ब्रह्मा चलिभे पहुँचे पाननिकट फिरिआय १३
लैकै बीरा तहँ ऊदनते ब्रह्मा गये तड़ाकाखाय ॥
आल्हा-मनमा कायल ह्वैगे ऊदन बहुत गये शरमाय १४
दूनों भाई चले तड़ाका दशहरि पुरै पहूँचे आय ॥
आल्हा बोले तहँ ऊदन ते यह गति भई लहुरवा भाय १५
बड़ बड़ राजन के सम्मुख मा ब्रह्मा लीन्ह्यो पान छिनाय ॥
घटिहा राजा मोहबे वाला कैसी हँसी दीन करवाय १६
तुम नहिं मोहबे ऊदन जावो हटका रहै लहुरवाभाय ॥
कहा हमारा तुम माना ना ताका पायगयो फलआय १७
इतना कहिकै आल्हा ठाकुर सोये बिकट नींद को पाय ॥
कछु दिनौना के बीते मा गौना समय पहूँचा आय १८
मल्हना निश्चय तब ठहरायो जैहैं नहीं बनाफरराय ॥
बिना बनाफर उदयसिंह के लैहै कौन बिदा करवाय १९
यहै सोचिकै मल्हना रानी लाखनिराना लीन बुलाय ॥
आल्हा ऊदन दउ रूठे हैं जानो आप कनौजीराय २०
ई दिन बाकी नहिं गौना के याकी कौन करी तदबीर ॥
तब सुधि आवै इन बातन की तबहीं होय करेजे पीर २१

आश हमारी अब तुमहीं लग साँची सुनो कनौजीराय ।
तुम जो जावो ब्रह्मा सँग मा तौ सबकाम सिद्धिह्वैजाय २२
सुनिकै बातैं ये मल्हना की बोले फेरि कनौजीराय ॥
हम चलिजैबे ब्रह्मा सँग मा लैबे बिदा मातु करवाय २३
इतना कहिकै लाखनि चलिभे अपनी फौज पहूँचे आय ॥
बाजा डङ्का इत ब्रह्मा का हाहाकार शब्द गा छाय २४
उतै कनौजी लाखनिराना अपनी फौज लीन सजवाय ॥
यह सुधि पाई उदयसिंह जब आये तबै तड़ाकाधाय २५
औ यह बोले लखराना ते मानो कही कनौजीराय ॥
साथी हमरे की ब्रह्मा के जोतुमफौजलीनसजवाय २६
पहिले लड़िकै हमरे सँगमा पाछे धरो अगारी पाँय ॥
इतना सुनिकै सय्यद बोले तुम सुनिलेउ कनौजीराय २७
संग न जावो तुम ब्रह्मा के सम्मत यहै ठीक ठहराय ॥
करो लड़ाई तुम ऊदन ते तौ सब जैहैं काज नशाय २८
हितू तुम्हारे नहिं ब्रह्मा हैं जैसे हितू बनाफरराय ॥
कहा मानिकै यह सय्यद का लाखनि फेंटदीनखुलवाय २९
भई अठारह उरई वाले मोहबे अये तड़ाकाधाय ॥
बड़ बड़ शूरन को सँग लैकै ब्रह्मा कूच दीन करवाय ३०
सात दिनौना के अरसा माँ दिल्ली गये चँदेलेराय ॥
दिल्ली केरे फिरि डाँड़े मा लश्कर ब्रह्मा दीन डराय ३१
गाड़िगा तम्बू तहँ ब्रह्मा का भारी ध्वजा रहा फहराय ॥
माहिल पहुँचे फिरि दिल्ली मा जहँ पर बैठ पिथौराराय ३२
बड़ी खातिरी पिरथी कीन्ही अपने पास लीन बैठाय ॥
काहे आये उरई वाले आपन हाल देउ बतलाय ३३

इतना सुनिकै माहिल बोले मानो साँच पिथौराराय ॥
ब्रह्मा आये हैं गौने को फौजैं परीं डाँड़ पर आय ३४
पहिले बीरा ऊदन लीन्ह्यो सो ब्रह्मा ने लीन छिनाय ॥
अब मन तुम्हरे जैसी आवै तैसी कहो पिथौराराय ३५
इतना सुनिकै पिरथी बोले माहिल साँच देयँ बतलाय ॥
बिना लड़ाई के गौना कहु कैसे देयँ पिथौरा राय ३६
करैं लड़ाई अब सँमराभरि पाछे बिदा लेयँ करवाय ॥
यह कहि दीजो तुम ब्रह्मा ते माहिल बार बार समुझाय ३७
इतना सुनिकै ब्रह्मानँद ते माहिल खबरि जनाई आय ॥
बिना लड़ाई के मनिहै ना यहु महराज पिथौराराय ३८
इतना सुनिकै ब्रह्मा ठाकुर कागज कलमदान मँगवाय ॥
लिखिकै चिट्ठी दी धावन को धावन चला तड़ाका धाय ३९
जहाँ कचहरी पृथीराज की धावन अटा तड़ाका आय ॥
हाथ जोरिकै धावन तुरतै चिट्ठी तहाँ दीन पकराय ४०
बाँचत चिट्ठी ब्रह्मानँद की पिरथी क्रोध कीन अधिकाय ॥
शूर चौंड़िया को बुलवायो औ सबहालकह्योसमुझाय ४१
तुरतै डंका को बजवावो सबियाँ फौज लेउ सजवाय ॥
बाँधि जँजीरन तुम ब्रह्मा का हमका वेगि दिखावो आय ४२
हुक्कुम पिथौरा का पावनखन डंका तुरत दीन बजवाय ॥
बाजे डंका अहतंका के हाहाकार शब्द गा छाय ४३
सजिसजितोपैं खेतन चलिभईं हाथिन होन लागि असवार ॥
झिलमबखतरपहिरि सिपाहिन हाथ म लईं ढाल तलवार ४४
दुइ दुइ भाला इक इक बरछी कोउ कोउ बाँधी तीनकटार ॥
बीर तमंचा कड़ाबीन औ गदकागुर्ज लीन त्यहिवार ४५

कच्छी मच्छी नकुला सब्जा हरियल मुश्की घोड़ अपार ॥
ताजी तुर्की पँचकल्यानी इनपर होन लागि असवार ४६
अंगद पंगद मकुना भौरा सजिगे श्वेतवरण गजराज ॥
सोहै अँवारी तिन हाथिन पर बहुतन हौदा रहे विराज ४७
को गति बरणै त्यहि समया कै मानो कोप कीन सुरराज ॥
बाजैं डंका अहतंका के मानों गिरैं उपर ते गाज ४८
पहिल नगाड़ा में जिनबन्दी दुसरे फाँदि भये असवार ॥
तिसर नगाड़ा के बाजत खन चलिभे सबै शूर सरदार ४९
खर खर खर खर कै रथदौरे रब्बा चले पवन की चाल ॥
हाथी चिघरे घोड़ा हींसे कीन्हेनिशब्दबहुतनरपाल ५०
गुप्ती धावन तहँ ब्रह्मा का तम्बुन अटा तड़ाका आय ।
खबरि सुनाई यह ब्रह्मा को की दल अवै चँदेलेराय ५१
इतना सुनिकै ब्रह्मा ठाकुर फौजैं तुरत लीन सजवाय ॥
बाजे डंका अहतंका के वंकन शंक दीन बिसराय ५२
ई निरशंका मोहबे वाले बाँधेनि तुरत ढाल तलवार ॥
साजा ठाढ़ा हरनागर था ब्रह्मा फाँदि भये असवार ५३
पहिलि लड़ाई भै तोपन कै पाछे चलन लागि तलवार ॥
कहुँ कहुँ भाला कहुँ कहुँ बरछी मारन लागि शूर सरदार ५४
तीर तमंचन की मारुइ भई कोताखानी चलीं कटार ॥
तेगा चमकै बर्दवान का ऊना चलै बिलाइति क्यार ५५
को गति बरणै त्यहि समयामा बाजै छपक छपक तलवार ॥
मारे मारे तलवारिन के नदिया बही रक्त की धार ५६
ना मुहँ फेरैं दिल्ली वाले ना ई मोहबे के सरदार ॥
मुण्डन केरे मुड़ चौरा भे औ रुण्डन के लगे पहार ५७

को गति बरणै जगनायक के मारै घूमि घूमि तलवार॥
ब्रह्मा ठाकुर के मुर्चा मा कोउ न ठाढ़ होय सरदार ५८
लरिका मरिगे पृथीराज के क्षत्रिन छाँड़ि दीन मैदान॥
धाँधू चौंड़ा त्यहि समया मा भारी कीन घोर घमसान ५९
मा खलभल्ला औ हल्ला अति लल्ला डारि भागि हथियार॥
ना मुहँ फेरैं दिल्ली वाले ना ई मोहवे के सरदार ६०
कीरति प्यारी के भूखे हैं दोऊ दिशिमा परम जुझार॥
फिरि फिरि मारै औ ललकारै यहु मल्हना को राजकुमार ६१
घोड़ा मारै भल टापन ते ऊपर आप करै तलवार॥
ब्रह्माठाकुर के मुर्चा मा क्षत्री डारि भागि हथियार ६२
देखि तमाशा चौंड़ा धाँधू रहिगे चुप्प साधि त्यहि बार॥
यहु निरशंकी परिमालिक का बहुतन पठै दीन यमद्वार ६३
रण अभिलाषा नहिं काहू के सब कउ गये मनैमन हार॥
ठाकुर वेढव जगनायक है भैने जौनु चँदेले क्यार ६४
धाँधू ठाकुर के मुर्चा मा दूनों हाथ करै तलवार॥
चौंड़ा ब्राह्मण इकदन्ता से बीरन रहा तहाँ ललकार ६५
रोज केतकी कहुँ फूलै ना चंपा रोज न लागै डार॥
गई जवानी फिरि मिलिहै ना ना फिरि रोजचलै तलवार ६६
कीरति गैहै सब दुनिया मा जो कउ लड़ै शूर सरदार॥
आखिर देही यह रहिहै ना जोरी जोरन जोर हजार ६७
सदा न फूलै यह बन त्वरई यारो सदा न सावन होय॥
सदा न पैहौ यह नर देही यारो सदा न जीवै कोय ६८
ऐसी बोलै चौंड़ा कहि कहि क्षत्रिन दीन्हे खूब जुझाय॥
ब्रह्मा ठाकुर त्यहि समया मा भारी हाँक कहा गुहराय ६९

पाँवँ पिछाड़ी का डारो ना यारो राख्यो धर्म हमार॥
मारो मारो ओ रजपूतो देहैं विजय अवशि करतार ७०
इतना कहिकै ब्रह्मा ठाकुर लाग्यो करन आप तलवार॥
ब्रह्माठाकुर के मुर्चा मा कोउ न ठाढ़ होय सरदार ७१
जैसे भेड़िन भेड़हा पैठै जैसे अहिर बिडारै गाय॥
तैसे मारै ब्रह्मा ठाकुर रणमा कोउ न रोंकै पायँ ७२
ब्रह्माठाकुर के मारुन मा कोऊ शूर नहीं समुहाय॥
लश्कर भाग्यो पृथीराज का पायो विजय चँदेलेराय ७३
त्यही समैया त्यहि औसर मा माहिल उरई का सरदार॥
लिल्ली घोड़ी पर चढ़ि बैठ्यो तिकतिककरनलागत्यहिबार७४
जहाँ कचहरी पृथीराज की भारी लाग राज दरबार॥
उतरिकै घोड़ीते भुइँ आवा पहुँचा उरई का सरदार ७५
आवत दीख्योजब माहिलको राजा कीन बड़ा सतकार॥
आवो आवो उरई वाले माहिल राजा हितू हमार ७६
इतना कहिकै महराजा ने अपने पास लीन बैठाय॥
माहिल बोले त्यहि समया मा मानो कही पिथौराराय ७७
लड़िकै जितिहौ ना ब्रह्माते चहुबल देयँ तुम्हैं करतार॥
धाँधू चौंड़ा सब कोउ हारे जीता पूतु चँदेले क्यार ७८
बड़े लड़ैया मोहबेवाले उनके बांट परी तलवार॥
उड़न बछेड़ा जिनके घर मा तिनते लड़ै कौन सरदार ७९
पिरथी बोले तब माहिल ते ठाकुर उरई के सरदार॥
कौन उपाय करैं यहि औसर ज्यहिमा बिजयदेयँकरतार ८०
इतना सुनिकै माहिल बोले ओ महराज पिथौराराय॥
रूप जनाना करि ताहर का डोला आपु देउ पठवाय ८१

गाफिल देखैं जब ब्रह्मा का तबहीं कैदलेयँ करवाय ॥
इतना सुनि कै ताहर बोले सम्मत नीक नहीं यह भाय ८२
रूप जनाना हम करिबे ना चहु तन धजीधजी उड़ि जाय ॥
कीरति जैहै सब दुनिया ते औ रजपूती धर्म नशाय ८३
इतना सुनिकै चौंड़ा बोला हम बनिजाब जनानाभाय ॥
विना बयारी जूना टूटै औ बिन औषध बहै बलाय ८४
साम दाम औ दण्ड भेद सों नितप्रति चतुरकरतहैं काम ॥
मोहिं पियारी यह कीरति है जीतैं शत्रु होय जगनाम ८५
सुनिकै बातैं ये चौंड़ा की बोला पृथीराज चौहान ॥
स्याबसिस्याबसि चौंड़ा बकशी तुम्हरे बचन मोहिं परमान ८६
सुनी पिथौरा की बातैं ये चौंड़ा चला तड़ाका धाय ॥
जायकै पहुँच्यो रंगमहल में सबियाँ जेवर लीन मँगाय ८७
अनवट बिछिया पाँयन पहिरे पहिरे कड़ा छड़ा त्यहिबार ॥
धरि पकपान दूऊ पैरन मा त्यहिपर पायजेब भनकार ८८
किंकिणि पहिरी करिहाँयें मा कण्ठम पहिरि मोतियनहार ॥
बाजू जोसन बाँधि बजुल्ला दोऊ भुजन कीन शृंगार ८९
छनी पछेला पहुँची ककना दूनों हाथन करैं बहार ॥
आठ अँगुरियन छल्ला पहिरे अँगुठा लीन आरसीधार ९०
चुरियाँ पहिरी दुउ हाथन मा तिनबिच लीन पनरियादार ॥
नथुनी लटकन बेसरि पहिरी कानन करनफूल शृङ्गार ९१
बेंदा धाखो फिरि माथे मा बँदियाँ शिरपर करैं बहार ॥
मिस्सी रगरी सब दाँतन मा चौंड़ा बना जनाना यार ९२
सिना ओंधे धरि छाती मा चोलीबन्द लीन कसवाय ॥
शीरो सारी काशमीर की शोभा कही बूत ना जाय ९३

दुलहिनि बनिकै चौंड़ा बकशी तुरते चढ़ा पालकी जाय ॥
जहरबुझाई लीन कटारी सो सारी में धरी चुराय ९४
ताहर बैठे दल गंजन पर धाँधू हाथी पर असवार ॥
झीलमबखतर पहिरि सिपाहिन हाथ म लई ढाल तलवार ९५
चली पालकी फिरि चौंड़ा की लश्कर कूच दीन करवाय ॥
इक हरकारा ताहर पठयो औ सबहाल दीनबतलाय ९६
खबरि जनावो तुम ब्रह्मा को बेला बिदा लेयँ करवाय ॥
आवत डोला है बेलाका इकले अवो चँदेलेराय ९७
इतना सुनिकै धावन चलिभा तम्बुन फेरि पहूंचा आय ॥
खबरि जनाई सब ब्रह्मा को जो कछु ताहर दीन बताय ९८
सुनिकै बातैं हरकारा की हरनागर पर भयो सवार ॥
घरी अढ़ाई के अरसा मा पहुँचा मोहबे का सरदार ९९
आवत दीख्यो जब ब्रह्मा का ताहर बोले बचन उदार ॥
आवो आवो ब्रह्मा ठाकुर तुमते हारिगयी तलवार १००
डोला लाये हम बहिनी का ठाकुर बिदालेउ करवाय ॥
कौन दुसरिहा ह्याँ तुम्हरो है जो अब रारि मचावैआय १०१
लड़ि भिड़ि तुमते हम हारे सब तब यह ठीक लीन ठहराय ॥
रंडा ह्वैहै जो बहिनी मम तौ सब जैहैं काम नशाय १०२
यहै सोचिकै महराजा ने डोला यहाँ दीन पठवाय ॥
बड़ी खुशाली मै राजा के संग न अये बनाफरराय १०३
जो कहुँ औने ऊदन ठाकुर तौ ह्याँ होत युद्ध अधिकाय ॥
बड़ी खुशाली मै राजा के जोतुमलीन्ह्योपानछिनाय १०४
अब यह डोला है बहिनी का मोहबे आपु देउ पठवाय ॥
सुनि सुनि बातैं ये ताहर की ब्रह्मा तुरत गये पतियाय १०५

भलओअनभल जबजसहोवय तब तस बुद्धि जाय बौराय ॥
सुना न हम्रा क्यहु सुबरण का नाक्यहुदीखनैनसोंजाय १०६
रचा बिधाता नहिं कबहूंथा मारन हेतु गये रघुराय ॥
यह अनहोनी हम दिखलाई सोचोसदास्वजनजनभाय१०७
होनहार बश ब्रह्मा ह्वैके डोला निकटगये नगचाय ॥
तबहीं चौंड़ा उठि पलकी ते बाँये दीन कटारीघाय १०८
दहिने सांगहनी धाँधू ने ताहर मारयो तीरचलाय ॥
तीनों घायपरे ब्रह्मा के तुरतै गिरे मूर्च्छाखाय १०९
यह गति दीखी जब ब्रह्मा की रोवनलागि मोहबियाज्वान ॥
तबललकारयो जगनायकजी होवो खड़े समर चौहान ११०
दगाते मारयो तुम ब्रह्माको हमरे साथ करो तलवार ॥
जियत न जाई कउ दिल्ली का सबका डरों जानसों मार १११
तौ तौ भैने चंदेले का नहिं ई डारों मुच्छ मुड़ाय ॥
सुनिकै बातैं जगनायक की ताहर कूच दीन करवाय ११२
ताहर नाहर के जातैखन जगना अटा तहाँ पर जाय ॥
मुर्च्छित दीख्यो ब्रह्मानँदको पलकी उपर दीन पौढ़ाय ११३
लैकै पलकी जगनायक जी तम्बुन फेरि पहूँचेआय ॥
जागी मुर्च्छा तहँ ब्रह्मा की बोले तुरत चँदेलेराय ११४
कूच करायो नहिं लश्कर को मोहबे खबरि देउ पठवाय ॥
सुनिकै बातैं ये ब्रह्मा की धावन तुरतलीनबुलवाय ११५
कही हकीकति सब धावन ते तुरतै चला शीशकोनाय ॥
जहाँ कचहरी परिमालिक की धावन तहाँ पहूँचाआय ११६
कही हकीकति महराजाते तुरतै गिरे पछाराखाय ॥
बीबी कारयो या बैरी ने मानो डसा भुजंगम आय ११७

विपदा आई फिरि मोहबेमा फैली बात महल में जाय॥
सुनी हकीकति रानी मल्हना महलन गिरी मूर्च्छा खाय ११८
बारहु रानी चंदेले की रोवैं तहाँ पछारा खाय॥
स्यति रोवैं घर अपने मां सपनेसरिसजगतादिखलाय११९
साँचो स्वपना जग हम देखैं कोउन पूत पतोहू भाय॥
आज मरैं दिन दूसर काल्ही याही साँच परै दिखलाय १२०
स्यहिते भैया यहि दुनिया मा कबहुँन करै उपरको शीश॥
सम्मत हमरो यह साँचा है निनप्रति भजैराम जगदीश १२१
सोउन बाचा यहि दुनिया मा बाहू गये जासु के बीश॥
सहसन बाहुनका अर्ज्जुन भा ताकाहना अवशि जगदीश १२२
काह हकीकति नरपामर की जो करिलेय उपर को शीश॥
रहिगा ठाकुर ना सिरसा का कलियुगवीरधीरअवनीश १२३
ताते चाही नर देही को झुकि २ झुकत२ झुकि जाय॥
त्यों त्यों त्यों त्यों ऊपर जावै ज्यों२शीशझुकावतजाय१२४
जैसे तरुवर है रसालको बौरन भार रहा गरुवाय॥
ज्यों ज्यों बाढ़ैं फल रसालके त्योंत्योंझुकत२झुकिजाय१२५
ज्योंज्यों पकिपकि टपकतआवैं त्यों त्यों डार उपरको जाय॥
ऐसो सम्मत यह साँचा है याँचासमयगयोनगच्याय१२६
नहीं तो आल्हाको थाल्हाकरि ललिते धर्म देत दिखलाय॥
काह हकीकति नर पामर की जोअभिमानकरनरहिजाय१२७
सुनी पाठहै जिन दुर्गाकी त्रिन हना वीर समुदाय॥
धर्म यथारथकी बातैं सब अबकोसबजनदेयदिखलाय१२८
ताते गाथा यह सब झूठा लूटा दुःख मोहोबा आय॥
खबरि पहुँचिगै दशहरिपुरवा आल्हानिकटतड़ाकाजाय १२९

आल्हा ऊदन इन्दल तीनों लागे बैठि तहाँ पछिताय ॥
घावलि सुनवाँ फुलवा तीनों सुनतै गिरीं पछाराखाय १३०
बड़ी दुर्दशा त्यहि समया कै हमरे बूत कही ना जाय ॥
रानी मल्हना के महलन मा सब दुखउतरा गायबजाय १३१
फिरि फिरि रानी रोदन ठानैं सखियाँ रहीं तहाँ समुझाय ॥
माहिल भूपति द्वउ मरिजावैं उरई गिरै गाज अरराय १३२
जिनकीचुगुलिनते महलनमा यहु दुखपरा आजदिन आय ॥
मरे पिथौरा दिल्लीवाला जो यहु पूत डरा मरवाय १३३
होय निपूती रानी अगमा सोऊ महल बैठि पछिताय ॥
इतना कहिकै रानी मल्हना फिरिफिरिबारबारपछिताय १३४
ताहर नाहर गा दिल्ली मा राजै खबरि जनाई जाय ॥
बात फैलिगै सब दिल्ली मा औ रनिवासपहूंची आय १३५
खबरि पायकै रानी अगमा महलन गिरी पछारा खाय ॥
कन्त जूझिगे रण खेतन मा बेला सुना तहाँपर आय १३६
यहु पछितानी मन अपने मा भूषण बसन दीन छिरकाय ॥
कहा न मानै तहँ काहू का बेला गिरै परै बिलखाय १३७
औ गरिआवै बेला रानी चौंड़ा बंश नाशि ह्वैजाय ॥
बने जनाना तू दिल्ली मा ओदहिजार भवानी खाय १३८
नाहक जन्मी धाँधू मैया दैया गती कही ना जाय ॥
नहिं रजपूती कछु ताहर मा धोखे हना तीरका घाय १३९
इतना कहिकै बेला रानी तुरतै उठी तड़ाका धाय ॥
महल छोड़ि कै महतारीका पहुँची और महलमें जाय १४०
प्रथम युद्ध मा जो गौने मा सो हम सबै गये अवगाय ॥
आशिर्वाद देउँ मुन्शी सुत जीवो प्रागनरायणभाय १४१

रहै समुन्दर में जबलों जल जबलों रहैं चन्द औ सूर ॥
मालिक ललितेके तबलों तुम यशसों रहौ सदाभरपूर १४२
माथ नवावों पितु माता को जिन बल पूरिभई यह गाथ ॥
करों तरंग यहाँ सों पूरण तबपदसुमिरि भवानीनाथ १४३
जो अभिलाषा मन हमरे है सो तुम पूरिकरो भगवन्त ॥
राम रमामिलि दर्शन देवैं इच्छा यही भवानीकन्त १४४

इति श्रीलखनऊनिवासि (सी.आई,ई) मुंशीनवलकिशोरात्मजबाबूप्रयागनारायण जीकीआज्ञानुसार उन्नामप्रदेशान्तर्गत पंडरीकलांनिवासि मिश्रवंशोद्भव बुधकृपाशङ्करसूनु पण्डितललिताप्रसादकृतबेलागौन आनयमेंठाकुर ब्रह्मासिंहघायल वर्णनोनामप्रथमयुद्धेप्रथमस्तरंगः १ ॥

बेलाकेगौनेकाप्रथमयुद्धसमाप्त ॥

इति ॥

अथ आल्हखण्ड ॥

बेलाकेगौने की दूसरीलड़ाई में रानालाखनिसिंह तथा उदयसिंहजी की चढ़ाई का बर्णन ॥

सवैया ॥

हे बिधि दे बरदान यही पद पंकज ईश सदा हम ध्यावैं ।
होवैं जहाँ जलहू थल में रघुनन्दन को तहँ शीशनवावैं ॥
और न काम कछू हमको इक रामको नाम नितै हमगावैं ।
याँच यही ललिते कर साँच मिलैं रघुनाथ तबै सुखपावैं १

सुमिरन ॥

सुम्हैं बिधाता हम ध्यावतहैं धाता कृपा करो अब हाल ॥
परम पियारे रघुनन्दनजी जाते दरशदेयँ यहिकाल १
युक्ति बताओ स्वइ धाता तुम जाते मिटै सकल भ्रमजाल ॥
दशरथ नन्दन रघुनन्दन को बन्दन करों सदासबकाल २
चन्दन अक्षत औ पुष्पन सों पूजों शम्भु भवानी लाल ॥
कण्ठ हलाहल भल सोहत है सोहै बाल चन्द्रमा भाल ३

जटा के ऊपर सुरसरि सोहै तापर बैठ भुजग विकराल ॥
श्वेत वरण तन भस्म रमाये धारे हृदय मुण्ड के माल ४
को गति बरणै शिवशङ्कर कै बटतर नित्त करैं विशराम ॥
भँाग धतूरन को भोजन करि ध्यावैं नित्त रामको नाम ५
छूटि सुमिरनी गै देवन कै शाका सुनो शूरमन क्यार ॥
चढ़ी कनौजी अब दिल्लीपर चढ़ि हैं उदयसिंह सरदार ६

अथ कथाप्रसंग ॥

बेला बैठी निज महलन माँ मनमा धरे राम को ध्यान ॥
कन्त जूझिगे रणखेतन मा फिरियहकरनलागिअनुमान १
नैनन आँसू ढारन लागी पागी महादुःख भ्रमजाल ॥
मुर्च्छा जागी जब बेला की चिट्ठीलिखनलागियहिकाल २
लिखी हकीकति यह ऊदनका बेटा देशराज के लाल ॥
तुम्हैं मुनासिब यह नाहीं थी जैसी कीन आप यहिकाल ३
वादा कीन्ह्यो तुम ब्याहे मा गौने बिदा लेब करवाय ॥
कन्त जूझिगे रण खेतन माँ अन्तौमिलनकठिनदिखराय ४
भये जनाना तुम द्यावलि के ऊदन बार बार धिक्कार ॥
नालति तुम्हरी रजपूती का नाहक लेउ ढाल तलवार ५
होतिउ बिटिया तुम द्यावलिके करतिउ बैठि महल शृङ्गार ॥
शोच न होतै तब बेला के ठाकुर उदयसिंह सरदार ६
होत जो बेटा बच्छराज का ठाकुर शूर बीर मलखान ॥
तौ का करतीं दिल्ली वाले बिल्ली रूप सबै चौहान ७
गिल्ली ह्वैहै आल्हा ठाकुर दिल्ली देखि डरे यहिकाल ॥
ऐसी खिल्ली है मोहबे मा तौ का करैं रजा परिमाल ८
टिल् टिल् टिल्ली खलभल्ली है लल्ली देशराज के लाल ॥

होत इकल्ली ज्यहि पल्ली मा बेटा बच्छराज को बाल ९
करत दुपल्ला सो छाती के घाती समर शूर मलखान ॥
तुम्हैं मुनासिब अब याही है आवो उदयसिंह चढ़िज्वान१०
प्रथम मिलावो मोहिं प्रीतमको बदला लेउ बन्धुको आन ॥
जो नहिं अइहौ उदयसिंह तुम मरिहैं गदा बीर चौहान ११
शोक समानी अलसानी सो मानी प्रथम यौवना नारि ॥
पूरी पाती लय छाती में थाती यौवन के उनहारि १२
यौवन केरे मदमाती सो घाती समय दीख त्यहिबार ॥
फरकत यौवन भुज दक्षिण है करकत हृदय करेजाफार १३
धड़कनअनवटबिछियाअँगुरिन कड़कत चोलीबन्द निहार ॥
तड़कत तनियाँ चौतनियाँसब रनियाँ दुखितभई त्यहिबार १४
दुख मदमाती रस बिसराती आती यार घांवरा धार ॥
फिर सतराती पछताती मन घाती समय दीखत्यहिबार १५
थर थहराती लहराती मन आती मन्द मन्द त्यहिबार ॥
लखि कर पाती दुखघातीको ढाहत नैनन नीर अपार १६
थाहत आई द्वारपाल ढिग पाती दुःख करेजा फार ॥
सो दै दीन्ही द्वारपाल को मुद्रा दीन्हे एक हजार १७
मुद्रा रुद्रा के तुल्या जो मुल्या बिका सबै संसार ॥
राम न लीन्ह्यो इक मुद्रा को त्यागे लंक अवध सरदार १८
अनुचित बानी हम ठानी है रामै कहा जौन सरदार ॥
तीन लोक के आनँद करता हरता दुःख जगत भरतार १९
तिनसरदारकहब जगअनुचित नहिं यह देव वाणि निरधार ॥
बेद शास्त्रन के भागत खन आल्हा जीतिलीन संसार २०
परम पवित्र चरित्र हैं जिनके तिनके नाम लेय संसार ॥

आल्हा ऊदन मलखे सुलखे कलियुग धरमध्वजासरदार२१
इनकी कीरति अतिपवित्र है जो कोउ देखै हृदय उघार॥
परम पवित्र चरित्र जिनके हैं तिनके नाम लेय संसार २२
यहतो ललिते कै ध्वनि बोलै खोलै और हाल यहिबार॥
पाती लैकै धावन चलिभा पहुँचा नगर मोहोबाद्वार २३
विपदा छाई ह्याँ मोहबे में कोउन मसा सरिस भुन्नाय॥
यहि गति देखी द्वारपाल ने ठाढ़े लोग रहे सन्नाय २४
चुप्पे चलिभा दशहरिपुर का जहँ पर बैठि बनाफरराय॥
पाती दीन्ही तहँ धावन ने ठाकुर उदयसिंह को जाय २५
चुप्पे पाती ऊदन पढ़िकै तुरतै डरी तड़ाकाफार॥
आल्हाठाकुर तब बोलत भे साँचे धर्म्मरूप अवतार २६
कहाँ कि पाती यह आई थी डारी जौनि तड़ाकाफार॥
बातैं सुनिकै ये आल्हा की बोले उदयसिंह सरदार २७
अड़बड़ पाती थी बेला की गड़बड़ लिखी दुःखकेभार॥
जो नहिं जावैं हम दिल्ली को बेला देय बहुत धिक्कार २८
आयसु पावैं हम दादा को जावैं युक्ति सहित यहिबार॥
जो नहिं जावैं हम दिल्ली को हमरे जीबे को धिक्कार २९
सुनिकै बातैं आल्हा बोले मानो कही लहुरवा भाय॥
तुम नहिं जावो अब दिल्लीको चहु मरिजाय चँदेलाराय ३०
दोष न देई कउ दुनिया मा ब्रह्मा लीन्ह्यो पान छिनाय॥
अबहीं भूले त्यहि बघऊदन कैसी कहै लहुरवाभाय ३१
सुनिकै बातैं ये आल्हा की बोले उदयसिंह सरदार॥
दूधपियायो बालापन में मल्हना कीन बड़ा उपकार ३२
कैसे जैबे हम दिल्ली ना दादा जियत मोहिं धिक्कार॥

कारो बाना कार निशाना सबकोउ करैं आज सरदार ३३
बनै गँजरिहा सबदल हमरो दिल्ली हेतु होय तय्यार ॥
मैं अब जावतहौं तहँना पर जहँना कनउज के सरदार ३४
इतना कहिकै ऊदन चलिभे तम्बुन फेरि पहूँचे आय ॥
सम्मत करिकै लखराना सों उत्तर पत्र दीन पठवाय ३५
लाखनि ऊदन मिलि आल्हाते फौजै तुरत लीन सजवाय ॥
भई तयारी फिरि दिल्ली की लशकर कूच दीन करवाय ३६
पाँच सात दिन के अरसा मा दिल्ली शहर गये नगच्याय ॥
दिल्ली केरे फिरि डाँड़ेमा परिगे जाय कनौजीराय ३७
चौंड़ा बकशी त्यहि समयामा तम्बुन पास पहूँचा आय ॥
मिले बनाफर तहँ ऊदन जब पूँछन लाग चौंड़ियाराय ३८
कहाँ ते आयो औ कहँ जैहौ आपन हाल देउ बतलाय ॥
सुनिकै बातैं ये चौंड़ा की बोला तुरत बनाफरराय ३९
हिरसिंह बिरसिंह हम तिरियाके गाँजर देश हमारो जान ॥
सुनी नौकरी घर बेलाके आयनकरन स्वईहमज्वान ४०
इतना सुनिकै चौंड़ा बोला ठाकुर बचन करो परमान ॥
काह दरमहा तुम चाहत हौ हमते सत्य बतावो ज्वान ४१
हम बतलावैं दिल्लीपतिका नौकर तुम्हैं देयँ करवाय ॥
करो नौकरी जो औरत की तौ रजपूती धर्म नशाय ४२
इतना सुनिकै ऊदन बोले नाहर साँच देयँ बतलाय ॥
एकलाख ते कम नहिं लेवैं यहु नितखर्च हमारो आय ४३
देय महीना तीसलाख को ताकी करैं नौकरी भाय ॥
बारह बरसै हमते लरिकै जयचँद कूचदीन करवाय ४४
दीन न पैसा हम कनउजका सो यश रहा जगत में छाय ॥

घढ़ा बनाफर उदयसिंह जब हमरी लूट लीन करवाय ४५
तंगी आई जब हमरे घर तब दरबार जुहारा आय ॥
महिना कमती कछु लेहैं ना तुमते साँच दीन बतलाय ४६
इतना सुनिकै चौंड़ा चलिभा आयो जहाँ पिथौराराय ॥
खबरि गँजरिहन की बतलाई चौंड़ा बार बार समुझाय ४७
खबरिपायकै पिरथी बोले मानो कही चौंड़ियाराय ॥
कहाँ खजाना घर इतना है देवैं तीस लाख जो भाय ४८
पारस पत्थर चन्देले घर तिनकी करैं नौकरी जाय ॥
म्वहिं अभिलाषा नहिं नौकरकी देवैं तीस लाख जो भाय ४९
इतना सुनिकै चौंड़ा बोला मानो कही पिथौराराय ॥
बड़े लड़ैया गाँजर वाले मोहबा आपु लेउ लुटवाय ५०
दश औ पन्द्रा दिन नौकरकरि करिये काज पिथौराराय ॥
फिरि मन भावै महराजा के दीजै सब के नाम कटाय ५१
यह मन भायी पृथीराज के तुरतै हुकुम दीन फरमाय ॥
हुकुम पिथौरा को पावत खन हिरसिंहबिरसिंहलीनबुलाय५२
लाखनि ऊदन दोऊ आये चेहरा अपन दीन लिखवाय ॥
कीन नौकरी घर पिरथी के क्षत्री गये शहर में आय ५३
हुकुम लागिगा यह पिरथीका हाथी घोड़ा देउ दगाय ॥
सुनिकै बातैं महराजा की लाखनिबहुतदीनसमुझाय५४
लिखी न हिंसा कहुँ बेदन में गीता पाठ कीन अधिकाय ॥
बिनय हमारी यह राजन है यहु मंसूख हुकुम ह्वैजाय ५५
नहीं फायदा कछु याते है ओ महराज पिथौराराय ॥
सुनिकै बातैं ये लाखनि की खारिज हुकुम दीन करवाय५६
लाखनि ऊदन देवा सय्यद धनुवाँ यई पाँचहू ज्वान ॥

बेला बेटी के द्वारे की रक्षा करो कह्यो चौहान ५७
हुकुम पाय कै महराजा को पांचो चले शीश को नाय॥
बेला बेटी के द्वारे पर ह्वैगे द्वारपाल फिरि आय ५८
चोपरि बिछिगै तहँ लाखनि कै खेलन लाग बनाफरराय॥
चर्चा कीन्ही तहँ बेला की यहु अलबेला लहुरवाभाय ५९
गुप्त बार्त्ता बाँदी सुनिकै बेलै खबरि जनाई जाय॥
द्वारपाल गाँजर के आये तुम्हरी कथा रहे ते गाय ६०
इतना सुनिकै बेला बेटी आपै गयी द्वारढिग आय॥
लाखनि ऊदन की बातैं सुनि जान्यो गये बनाफर आय ६१
रूपा बाँदी ते बोलति भै पूँछो द्वारपाल सों जाय॥
कहाँ के ठाकुर ये आये हैं आपन हाल देयँ बतलाय ६२
सुनिकै बातैं ये बेला की बाँदी चली तड़ाका धाय॥
जहाँ बनाफर उदयसिंह हैं बाँदी अटी तहाँपर आय ६३
कही हकीकति सब बेला की बाँदी हाथजोरि शिरनाय॥
सुनिकै बातैं त्यहि बाँदी की चिट्ठी दीन बनाफरराय ६४
लैकै चिट्ठी बाँदी चलिभै बेलै दीन तड़ाकाधाय॥
पढ़ी बनाफर की चिट्ठी जब महलन तुरतलीन बुलवाय ६५
परदा कीन्ह्यो उदयसिंह ते कुरसी अलग दीन डरवाय॥
गुप्त बार्ता बेला पूछी ऊदन सबै दीन बतलाय ६६
तब बिश्वास भई जियरे मा आँहीं ठीक बनाफरराय॥
तब तो पूँछन बेला लागी साँची कहौ लहुरवाभाय ६७
संग न आये तुम बालम के जूझे खेत चँदेलेराय॥
कहाँ मंसई तब तुम्हरी गै ऊदन साँच देउ बतलाय ६८
ऊदन बोले तब बेला ते भौजी मोर कीन अपमान॥

बिरा धरावा गा गौने का रहिगा चार घरी लौं पान ६९
कोऊ खावा जब बीरा ना तब मैं उठा शारदा ध्याय ॥
करसों हमरे बीरा लीन्ह्यो तुम्हरे कन्त चँदेलेराय ७०
माहिल भूपति तहँ मुसकाने हमरो मरण समय गो आय ॥
कछु नहिं बोले परिमालिकजी दादा हमरे उठे रिसाय ७१
कहा हमारो तुम मान्यो ना ऊदन गयो मोहोबे आय ॥
सवन चिरैया ना घर छोंड़ै नावनिजरा बनिजको जाय ७२
तबै निकारयो परिमालिकजी दीन्ही बहुत तलाकै माय ॥
गे जगनायक जब लेने को तब नहिं अवै बनाफरराय ७३
बहु समुझाये ते आये ते लाखनिराना संग लिवाय ॥
भरी कचहरी परिमालिक की ब्रह्मा लीन्ह्यो पान छिनाय ७४
बासरि करिकै द्वासरि कीन्ही दूनों भाय गयन अलगाय ॥
दादा रोंका मोहिं अवतीखन तुम नहिं जाउ लहुरवा भाय ७५
बादा तुमते हम कीन्हा था तुम्हरी बिदा लेब करवाय ॥
गड़बड़ि चिट्ठी तुम अति लिखिकै धावन हाथ दीन पठवाय ७६
सो दिखलावा नहिं दादा को कण्ठै हाल दीन बतलाय ॥
दूध पियावा मल्हना रानी स्यावा मोहिं बहुत दुलराय ७७
ब्याह हमारे मल्हना रानी कुँवना पाँव दीन लटकाय ॥
प्राण नेग दै मैं मल्हना को टारयों पैर तहाँ ते माय ७८
प्राण निछावरि तुमपर करिकै बिछुरे कन्त देव मिलवाय ॥
इतना सुनिकै बेला बोली यह नहिं आश पूरि दिखलाय ७९
कुटुँब हमारो सब बैरी है हमको राँड़ दीन करवाय ॥
जियत पिथौरा औ ताहर के कैसे मिलब पिया को जाय ८०
प्रभुता ऐसी क्यहि क्षत्री मा प्रीतम मिलन देय करनाय ॥

शब्द कान सुनि तीर चलावैं हमरे पिता पिथौराराय ८१
लाखनि ऊदन कै गन्ती का हमरी बिदा लेयँ करवाय ॥
डोला लाये संयोगिनि का तब कहँ हते कनौजीराय ८२
सोई लाखनि की दूसर हैं हमरी बिदा लेयँ करवाय ॥
रहै आसरा तुम्हरो ऊदन सोऊ नहीं पूर दिखलाय ८३
भारी फौजै महराजा की डोला कौन भांति सों जाय ॥
यहै अँदेशा है जियरे मा लाखनिराना लेउ बुलाय ८४
हुकुम पायकै यह बेला को बाँदी चली तड़ाका धाय ॥
है मर्दाना ज्यहिका बाना सुन्दर सुघर कनौजीराय ८५
सो चलिआवा सँग बाँदी के पहुँचा रंग महल में आय ॥
आवत दीख्यो लखराना को खातिर कीन लहुरवा भाय ८६
बैठि कनौजी गे महलन मा बेला बोली बैन सुनाय ॥
बिदाकरावन तुम कस आये दिल्ली शहर कनौजीराय ८७
तुम्हरे घरते संयोगिनि का लाये दिल्ली के सरदार ॥
त्यही वंश के तुम लाखनि हौ की कहुँअन्तलीनअवतार ८८
सुनिकै बातैं ये बेला की यहु अलबेला कनौजीराय ॥
लाली लाली आँखी करिकै दाढ़ी बार दीन बिखराय ८९
एक हाथ धरि तहँ मुच्छन मा नंगी एक हाथ तलवारि ॥
लाखनि बोले तहँ बेलाते कैसी बातैं बकै गँवारि ९०
काह हकीकत थी पिरथी की बिटिया लेत चँदेले केरि ॥
बिटिया लाये घर चेरी की रानी कहा गँवारिनि टेरि ९१
त्यहिके बदले कहु अगमा का डोला लेउँ आज निकराय ॥
तो तो लरिका रतीभान का नहिं ई मुच्छ डरौं मुड़वाय ९२
ऊदन बोले फिरि बेलाते भौजी काह गयी बौराय ॥

दीख मंसई तुम ऊदन की हाथी द्वार पछारा आय ९३
करो तयारी तुम महलन ते बिछुरेकन्त देयँ मिलवाय ॥
इतना सुनिकै बेला बोली मानो कही लहुरवाभाय ९४
चोरी चोरा हम जैहैं ना नेगिन नेगुदेउ चुकवाय ॥
लेउ अधकरी अब ब्याहे की पाछे बिदालेउ करवाय ९५
यह मनभाई लखराना के बोले सुनो वनाफ़रराय ॥
चारि रुपैयन के तोड़ालै नेगिन नेगु देउ चुकवाय ९६
इतना सुनिकै ऊदन ठाकुर नेगिन तुरत लीन बुलवाय ॥
चारिउ तोड़ा रुपयन वाले तहँ पर तुरत दीन बँटवाय ९७
रानी अगमा के महलन को बेला चली तड़ाकाधाय ॥
देवा ऊदन धनुवाँ सय्यद ये दरबार पहूँचे जाय ९८
द्वारे ड्योढ़ी के महराजा ठाढ़े रहैं पिथौराराय ॥
सय्यद देवा धनुवाँ सँगमें पहुँचा तहाँ बनाफरराय ९९
माथनायकै महराजा को बोला सुनो पिथौराराय ॥
नेगु चुकावा हम नेगिन का दायज आप देउ मँगवाय १००
बेला जैहैं अब श्वशुरेको राजन साँच दीन बतलाय ॥
हिरसिंहबिरसिंह हम आहिनना हमहैं छोट वनाफ़रराय १०१
इतना सुनिकै माहिल भूपति बोले सुनो पिथौराराय ॥
बैठक करिये दरवाजे पर दायज उचितदेउमँगवाय १०२
माहिल बोले फिरि चुप्पे से राजन साँच देयँ बतलाय ॥
उतरैं घोड़ा ते जब ऊदन तुरतै मूड़लेउ कटवाय १०३
यह मन भाई महराजा के बैठक तहाँ दीन करवाय ॥
बड़े कीमती दुइ कुण्डल को तुरतै तहाँ दीन रखवाय १०४
कह्यो पिथौरा फिरि ऊदन ते बैठो आय वनाफ़रराय ॥

दायज दीन्ह्यों परिमालिक को कुण्डल यहाँ दीन रखवाय १०५
इतनी सुनिकै ऊदन बोले दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ॥
राजा नौकर की समता ना बैठैं कौन भाँति से आय १०६
नोक लगायो फिरि भाला की कुण्डल दोऊ लीन उठाय ॥
सजग देखिकै फिरि क्षत्रिनको घोड़ा तुरत दीन दौराय १०७
बेला पहुँची जब महलन मा माता लीन्ह्यो कण्ठ लगाय ॥
भल समझायो रानी अगमा बेटी शोक देउ बिसराय १०८
लिखी विधाता की मेटै को कीन्ह्यों घाटि चौंड़ियाराय ॥
दुलहिनि बोली तब ताहर की ननदी रोवै तोरि बलाय १०९
ब्याह तुम्हारो कहुँ अनतै अब करि हैं श्वशुर पिथौराराय ॥
राजपाट सब तुम्हरे घरमा दौलतभरी पुरीअधिकाय ११०
संग न कीन्ह्यो ननदोई का ननदी रोवै तोरिबलाय ॥
ब्याह न अनुचित कछु दूसरहै ननदी काह गयी बौराय १११
मरे चँदेले मरि जावैदे ननदी रोवै तोरि बलाय ॥
सुनिकै बातैं ये भौजीकी बेला बोली क्रोध बढ़ाय ११२
उचित न बातैं कछु तेरी हैं अनुचित बात रही बतलाय ॥
भाँवरि फिरिकै चंदेले सँग करिहेंब्याह औरसँगजाय ११३
कउने गवाँरे की बिटियाहै ऐसी टेढ़ि मेढ़ि बतलाय ॥
नहिं सुखरहैहै तुइ महलन में डरिहौं अवशि राँड़ करवाय ११४
राँड़ अभागिनि की बातैं सुनि भौजी चुप्प साधि रहिजाय ॥
तब तो बेला अलबेला यह भूषणवस्त्र सजे अधिकाय ११५
रूप उजागरि सबगुणआगरि शोभा कही जून ना जाय ॥
कटि लचकीली सो मटकीली पीली दुःख देह दिखलाय ११६
माँग सँवारी सो सुकुमारी मानो इन्द्रधनुष समुदाय ॥

कारी अलकैं नागिन झलकैं पलकैं मूँदै औ रहिजाय ११७
ब्यला भवानी बनि महरानी पलकी चढ़ी तड़ाका धाय ॥
चलिभै पलकी फिरि बेलाकै लाखनिपास पहूँची आय ११८
लैकै पलकी लाखनि राना तुरतै कूच दीन करवाय ॥
सय्यद देवा धनुवाँ लैकै पहुँचा आय बनाफरराय ११९
मठी शारदा की डांड़े पर डोला तहाँ दीन धरवाय ॥
बेला पहुँची तहँ मठिया मा पूजन हेतु शारदामाय १२०
चन्दन अक्षत औ पुष्पन सों बेला पूज्यो मोद बढ़ाय ॥
धूप दीप दी तहँ देवी की मेवा मिश्री भोग लगाय १२१
फुलवा मालिनि ते फिरि बोली ताहर खबरि जनावो जाय ॥
बहिनि तुम्हारी के डोला को लीन्हे जाँय कनौजीराय १२२
बदला लेहैं संयोगिनि का तुम्हरे जीनेका धिक्कार ॥
जल्दी आवो अब मारग में डोला रोंकि लेउ यहिबार १२३
मालिनि चलिभै तब मठिया ते दिल्ली अटी तड़ाका धाय ॥
खबरि सुनाई सब ताहर को दोऊ हाथजोरि शिरनाय १२४
सुनिकै बातैंयहि मालिनि की ताहर फौज लीन सजवाय ॥
बाजत डंका अहतंका के तुरतै कूच दीन करवाय १२५
यहु निरशंका दिल्लीवाला ताहर अटा तड़ाका आय ॥
औ ललकारा लखराना को ठाढ़े होउ कनौजीराय १२६
धरिकै डोला अब बेला का तुरतै कूच देउ करवाय ॥
नहीतो बचिहौना कनउज लग जोविधिआपबचावैआय १२७
भूरी हथिनी के ऊपर ते लाखनि गरू दीन ललकार ॥
मर्द सराहों मैं ताहर को डोला पास आउ सरदार १२८
बेला मिलिहैं अब ब्रह्मा को ताहर कूच जाउ करवाय ॥

ब्याह बनाफर ऊदन कीन्ह्यो लाखनिबिदालीनकरवाय १२९
काह हकीकति है ताहर कै डोला पास जाय नगच्याय ॥
जितने सँगमा तुम लै आये सब के मूड़ लेउँ कटवाय १३०
तौ तौ लरिका रतीभान का नहिं ई मुच्छ डरौं मुड़वाय ॥
जीवन चाहौ ताहर नाहर तौ अब कूच जाउकरवाय १३१
सुनिकै बातैं ये लाखनि की ताहर बोले बचन सुनाय ॥
मारो मारो ओ रजपूतो डोला लेवो तुरत छिनाय १३२
सुनिकै बातैं ये ताहर की तुरतै चलन लागि तलवार ॥
एक सहस दल पैदल सेना दुइशतबीससाथअसवार १३३
अभिरे क्षत्री अरझारा सों बाजै छपक छपक तलवार ॥
मारे मारे तलवारिन के नदिया बही रक्तकीधार १३४
को गति बरणै तहँ ताहर कै नाहर दिल्ली का सरदार ॥
पैदल सेना धुनकत आवै मारत अवै घोड़ असवार १३५
यहु दलगंजन की पीठी मा सोहै दिल्ली का सरदार ॥
जहँ पर भूरी है लाखनि कै ताहरआयगयो त्यहिबार १३६
पैंड़ लगायो दलगंजन के हौदा उपर पहूंचा जाय ॥
गुर्ज चलाई लाखनिराना मस्तक परी घोड़केआय १३७
हटि दलगंजन तब दलतेगा चलते थहर थहर थर्राय ॥
जितनी सेना थी ताहर की तुरतै भागिचली भर्राय १३८
ताहर हटिगे जब मुर्चा ते लाखनि कूचदीन करवाय ॥
बाजत डंका अहतंका के निर्भयजात कनौजीराय १३९
बेला बोली तहँ ऊदन ते साँची कहौ बनाफरराय ॥
दायज दीन्ह्यों का महराजा हमते साँच देउ बतलाय १४०
सुनिकै बातैं ये बेला की कुण्डल तुरत दीन दिखलाय ॥

देखि कीमती दोउ कुण्डल को बेला बड़ी खुशी ह्वैजाय १४१
चलै पालकी के संगै मा यहु रणबाघु लहुरवाभाय ॥
ताहर चलिभा राजमहल में जहँपर बैठ पिथौराराय १४२
खबरि सुनाई सब लाखनि की डोला जौन भांति लैजायँ ॥
सुनिकै बातैं ये ताहर की तब जरिउठा पिथौराराय १४३
तुरत चौंड़िया को बुलवायो नाहर हुकुम दीन फरमाय ॥
लैकै फौजै जल्दी जावो बेला डोला लेउ छिनाय १४४
जान न पावैं कनउज वाले सबके मूड़ लेउ कटवाय ॥
इतना सुनिकै चौंड़ा चलिभा डंकातुरत दीन बजवाय १४५
बाजत डंका अहतंका के चौंड़ा कूच दीन करवाय ॥
भा भटमेरा फिरि लाखनि ते द्वउदलगये बरोबरिआय १४६
भाला बरछी कड़ाबीन की लागी होन भड़ाभड़ मार ॥
पैदल के सँग पैदल सेना औअसवारसाथअसवार १४७
सूँड़ि लपेटा हाथी भिड़िगे अंकुश भिड़े महौतन केरि ॥
हौदा हौदा यकमिल ह्वैगे मारैं एक एक को हेरि १४८
ना मुँह फेरैं दिल्ली वाले ना ई कनउज के सरदार ॥
तेगा चमकै बर्दवान का ऊनाचलैबिलाइतिक्यार १४९
मारे मारे तलवारिन के नदिया बही रक्तकी धार ॥
मूड़न केरे मुड़चौरा भे औ रुण्डनके लगे पहार १५०
रुण्डन लेकै तलवारी को अद्भुत कीन तहाँपर मार ॥
बड़े लड़ैया दोऊ ठाकुर मानैं नहीं तहाँ कछुहार १५१
यहु यकदन्ता हाथी ऊपर चौंड़ा गरू देय ललकार ॥
भूरी हथिनी के ऊपर ते राजा कनउजका सरदार १५२
भा भटभेरा द्वउ शूरन ते दोऊ खैंचि लीन तलवार ॥

दोऊ मारैं तलवारी ते दोऊ लेयँ ढालपर वार १५३
कोऊ काहू ते कमती ना द्वउ रणपरा बरोबरि आय ॥
गुर्ज चलाई फिरि चौंड़ा ने हौदा झुके कनौजीराय १५४
ताकिकै भाला लाखनि मारा हाथी मस्तक गयो समाय ॥
हाथी गिरिगा यकदन्ता तहँ पैदलभयो चौंड़ियाराय १५५
भागि सिपाही दिल्ली वाले अपने डारि डारि हथियार ॥
लैकै डोला आगे चलिभा लाखनिकनउजकासरदार १५६
गाहरिकारा फिरि दिल्ली मा जहँ पर भरीलाग दरबार ॥
ताहर धाँधू तहँ बैठे हैं अंगदनृपतिग्वालियरक्यार १५७
तहँ हरिकारा बोलन लाग्यो दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ॥
जूझि ग हाथी इकदन्ता है लश्कर सबैगयो भराय १५८
डोला जावत है मोहबे को साँची खबरि दीन बतलाय ॥
सुनिकै बातैं हरिकारा की लश्करतुरतलीनसजवाय १५९
आदिभयङ्कर चढ़ि गज ऊपर तुरतै कूच दीन करवाय ॥
बाजैं डंका अहतंका के हाहाकार शब्दगा छाय १६०
तुरही सुरही तहँ बाजत भइँ पुप्पू पुप्पू ध्वनी लगाय ॥
धम् धम् धम् धम् बजैं नगारा मारा मारा परै सुनाय १६१
को गनि बरणै त्यहि समयाकै हमरे बूत कही ना जाय ॥
पहिले मारुइ भइँ तोपन की गोलाचलनलागिहहराय १६२
बड़ी दुर्दशा भइँ तोपन में तब फिरि मारुबन्द ह्वैजाय ॥
मघा के बूँदन गोली बरषीं क्षत्रीगये बहुत महराय १६३
तीर तमंचा भाला बरछी कोताखानी चलीं कटार ॥
भा भटभेरा दल पैदल का घोड़नलड़ैं घोड़असवार १६४
है दलगंजन के ऊपर मा ताहर पिरथी राजकुमार ॥

घोड़ बेंदुला की पीठी मा ठाकुर उदयसिंह सरदार १६५
मुर्चाबन्दी भै दूनों मा दूनों लड़ैलागि त्यहिकाल ॥
अभिरे क्षत्री अरझारा सों भिड़िगैतहाँ ढाल में ढाल १६६
धाँधू धनुवाँ का मुर्चा भा सय्यदनृपतिग्वालियरक्यार ॥
को गति बरणै रजपूतन कै मारैं दउ-हाथ तलवार १६७
जैसे भेड़िन भेड़हा बैठै जैसे अहिर बिडारै गाय ॥
तैसे मारै ताहर नाहर शूरन दीन्ह्यो समर वराय १६८
धाँधू धमकै तहँ तेगा को चमकै चमाचम्म तलवार ॥
अली अली कहि सय्यद दौरै रणमाहोतजातगलियार १६९
बड़ा लड़ैया अंगद राजा मारै ढूँढ़ि ढूँढ़ि सरदार ॥
मारे मारे तलवारिन के नदिया वही रक्तकी धार १७०

सवैया ॥

करहत शूर गिरैं रणखेतन पूरि रही ध्वनि मारु अपारा ।
मत्त मतंग गिरैं भहराय सो हाय दयी यह होत पुकारा ॥
छूटत तीर सो पूरिरहे तन धूरि उड़ै नहिं कीच अपारा ।
मीच भई रणशूरनकी ललिते मन कायर जात दरारा १७१
कायर भागि चले ललिते अकुलात महामन दुःखन छाये ।
मोद बढ़्यो रणशूरन के बलपूरन के कछु दुःख न आये ॥
कूर कुपूत रहे रजपूत ते मूत भये रण नाम धराये ॥
पूत सुपूतमहामजबूत सो बूतलड़ैं नहिं पाउँ डिगाये १७२

बड़ी लड़ाई भै मारग में पिरथी लाखनि के मैदान ॥
मारे मारे तलवारिन के गिरिगे बड़ेसुघरुवाज्वान १७३
मान न रहिगे क्यहु क्षत्रिनके सब के छूटिगये अभिमान ॥

आदि भयङ्कर के ऊपर ते गरुई हाँक देय चौहान १७४
मारो मारो ओ रजपूतो डोला लेवो तुरत छिनाय ॥
जान न पावैं द्यावलिवाले इनके देवो मूड़ गिराय १७५
गरुई हाँकै सुनि पिरथी की जूझन लागि सिपाही ज्वान ॥
उड़े बेंदुला बघऊदन का खाली होत जात मैदान १७६
धाँधू धनुवाँ के मुर्चा में बाजै घूमि घूमि तलवार ॥
अंगद राजा के मुर्चा मा सय्यद बनरसका सरदार १७७
औरो क्षत्री समरभूमि मा दूनों हाथ करैं तलवार ॥
को गति बरणै त्यहि समया कै अद्भुत होय तहाँपरमार १७८
पैग पैग पै पैदल गिरिगे दुइ दुइ कसी गिरे असवार ॥
मारे मारे तलवारिन के नदिया बही रक्तकी धार १७९
सोहैं लहासैं तहँ हाथिन की छोटे पर्बत के अनुहार ॥
परी लहासैं जो घोड़न की तिनकोजानोंनदीकगार १८०
मुण्डन केरे मुड़चौड़ा भे औ रुण्डन के लगे पहार ॥
डोला सौंप्यो फिरि धनुवाँको चलिभाकनउजकासरदार १८१
जौनी दिशिको लाखनि जावैं तादिशि होय घोरघमसान ॥
बड़े लड़ैया दिल्ली वाले ताहर समरधनीचौहान १८२
हनि हनि मारै रजपूतन का घायल होयँ अनेकनज्वान ॥
मान न रहिगा क्यहु क्षत्रीका सब के टूटिगये अरमान १८३
फूटि फूटि शिर चूरण ह्वै गे पूरण भयो समर मैदान ॥
कहँलग गाथा त्यहि समयाकै ललिते करैंयहांपर गान १८४
सो भल जानतहैं नीकी बिधि जो यह दीख्यो युद्ध ललाम ॥
सम्मुख जूझैं जे मुर्चा में ते सब जायँ रामके धाम १८५
यही तपस्याहै क्षत्री कै सम्मुख लड़ै समर मैदान ॥

तन धन अर्पै समरभूमि मा पावै सदा जगत में मान १८६
सज्जन मानै के भूखे हैं दुर्जन सहैं सदा अपमान ॥
मान न पावै नरदेही गा जीवतजानोश्वान निदान १८७
मान के भूखे लाखनिराना ठाना कठिन तहाँ संग्राम ॥
जौनीदिशि को लाखनिजावैं तादिशिहोतजातहंगाम १८८
लाखनिराना के मारुन मा आरी भये सिपाही ज्वान ॥
कायर भागे समरभूमि ते शूरन कीनघोरघमसान १८९
यहु महराजा कनउजवाला मारत चला अगारी जाय ॥
आदिभयङ्कर जहँ हाथी पर सोहत बैठि पिथौराराय १९०
तहँ कनवजिया कनउजवाला आला अटा तड़ाका जाय ॥
आदिभयङ्कर ते ललकारा यहु महराज पिथौराराय १९१
लाखनि पगिया ना अटकीहै रण मा प्राण गँवावो आय ॥
प्यारे बेटा तुम ताहर सम मानो कही कनौजीराय १९२
निमक चँदेले का इन खावा दूनों भाय बनाफरराय ॥
ये मरिजावैं सँग डोला के उनकेनमक अदाह्वैजायँ १९३
तुम्हैं मुनासिब यह नाहीं है अनहक प्राण गँवावो आय ॥
बारह रानिन में इकलौता यहहमसुनाकनौजीराय १९४
त्यहिते तुमका समुझाइत है चुप्पै कूच जाउ करवाय ॥
इतना सुनिकै लाखनि बोले साँची सुनौ पिथौराराय १९५
तीनि महीना औ त्यारादिन ऊदन कठिन कीन तलवार ॥
लैकै पैसा सब गाँजर का पठवा कनउज के दरबार १९६
गंगा कीन्हीं हम ऊदन ते देवे साथ बनाफरराय ॥
हमैं मुनासिब यह नाहीं है जोअबकूचजायँ करवाय १९७
करब प्रतिज्ञा अब हम पूरी लड़िबे खूब पिथौराराय ॥

पाँव पिछारी का धरिबे ना चहुतन धजी२उड़िजाय १६८
पता लगावै ह्याँ लाखनि का आल्हा केर लहुरवा भाय॥
मारत मारत रजपूतन को पहुँचा जहाँ पिथौराराय १६६
तीर कमनिया लै हाथे मा मारन हेतु भयो तैयार॥
तब ललकारा नर नाहर यहु ठाकुर उदयसिंह सरदार २००
तुम्हैं मुनासिब यह नाहीं है राजा समरधनी चौहान॥
नहीं बरोबरिके लखराना जोतुम लीन्ही तीरकमान२०१
सुनिकै बातैं बघऊदन की कायल भये बीर चौहान॥
चुप्पे हौदा पर रख दीनी राजा अपनी तीरकमान २०२
यहु दलगंजन की पीठी मा ताहर आय गयो त्यहिबार॥
भये कनौजी त्यहिके सम्मुख लागे करन तहाँ पर मार २०३
ऊदन अंगद का मुर्चा भा दोऊ लड़न लागि सरदार॥
दोऊ मारैं तलवारी सों दोऊ लेयँ ढालपर वार २०४
तब ललकारयो फिरि धाँधू को यहु महराज पिथौराराय॥
जाय न डोला अब मोहबे का लावो जाय तड़ाकाआय २०५
इतना सुनिकै धाँधू चलिभे डोला पास पहूँचे जाय॥
तब ललकारा तहँ धनुवाँने क्षत्री खबरदार ह्वैजाय २०६
पाँव अगाड़ी का डारना नहिं यमपुरी देउँ दिखराय॥
कहा न माना कछु धनुवाँका धाँधू चला तड़ाका धाय २०७
तेलिके बच्चा कच्चा खैहौं लुच्चा ठाढ़ होय यहिबार॥
सच्चा लड़िका जो क्षत्रीका तौ मुखबाँसिदेउँतलवार २०८
इतना कहिकै धांधू क्षत्री अँगुरिन भालालीन उठाय॥
ताकि कै मारा सो धनुवाँ का परिगाघाव जाँघपरआय २०६
गिरिगा धनुवाँ जब खेतन मा डोला तुरत लीन उठवाय॥

डोला उठिगा जब बेला का सय्यदगयोतड़ाकाआय २१०
औ ललकारा त्यहि धाँधू का अब ना धरयो अगारी पाँय ॥
जान न पैहौ तुम सय्यद ते क्षत्री साँच दीन बतलाय २११
इतना सुनिकै अंगद राजा तहँ पर गयो तड़ाका आय ॥
भूरी हथिनी के चढ़वैया आये तहाँ कनौजीराय २१२
ताहर नाहर दलगंजन पर सोऊ बेगि पहूँचा आय ॥
कठिन लड़ाई भै डोला पर हमरे बूत कही ना जाय २१३
को गति बरणै त्यहि समयाकै बाजै घूमि घूमि तलवार ॥
सुनिसुनि गाजै रजपूतन की कायरडारिभागिहथियार २१४
को गति वरणै रण शूरनकी दूनों हाथ करैं तलवार ॥
कीरति प्यारी जिन क्षत्रिन को तिनको भलाकरैं करतार २१५
कीरति वाले लाखनि ताहर ठाना घोर शोर घमसान ॥
यहु महराजा कनउज वाला लीन्ही गुर्ज तड़ाकातान २१६
ऐंचिकै मारा सो ताहर के मस्तक परी घोड़के जाय ॥
घोड़ा भाग्यो तहँ ताहर का डोला लीन कनौजीराय २१७
विना नृपति के सब सेना तहँ रणमा कौन भांति समुहाय ॥
बिन बर कन्या ज्यों मड़ये मा भौंरी कौन करावनजाय २१८
दुलहिन दुलहा की समता मा ममता कौन खवैया भान ॥
मिलै रुपैया बरतौनी ना तबलग देखिपरै तहँलात २१९
तैसे मुर्चा की बातैं हैं यारो जानिलेउ सब बात ॥
घोड़ा भाग्यो जब ताहर का लाग्योनहींक्यहूकीलात २२०
डोला चलिभा तब बेला का जहँ पर रहै चँदेलाराय ॥
मल्हा ठाकुर के तम्बू मा ह्वैगै भीरभार अधिकाय २२१
बाजे डङ्का अहतङ्का के शङ्का सबन दीन बिसराय ॥

देखा सय्यद ऊदन लाखनि सबको मिलाश्रृंदेवाराय २२२
मिला भेट करि सब काहुन सों तम्बू बैठिगये सब आय ॥
कीन बड़ाई लखराना की तहँ पर खूब बनाफरराय २२३
सच्ची बातैं उदयसिंह की नहिंकहुँ लसरफसर ब्यवहार ॥
बड़ा प्रतापी रण मण्डल मा ठाकुर उदयसिंह सरदार २२४
पाग बैंजनी शिरपर सोहै टिहुनन धरी ढाल तलवार ॥
चढ़ा उतारू भुजदण्डै हैं आनन पङ्कजकेश्रनुहार २२५
सत्य बड़ाई की लाखनि की भे सब खुशी तहाँ सरदार ॥
जा बिधि चलिकै सब मोहबे ते पहुँचे दिल्ली के दरबार २२६
कीनि नौकरी ज्यहि प्रकार ते कुण्डल जौन भांतिसों लीन ॥
सो सब गाथा तहँ भाषा ते ठाकुरउदयसिंहकहिदीन २२७
खेत छूटिगा दिननायक सों झण्डा गड़ा निशाको आय ॥
तारागण सब चमकन लागे सन्तन धुनी दीनपरचाय २२८
राम राम की मन रटलाये लीन्ह्यनि अंग बिभूति रमाय ॥
डारि बघम्बर या मृगछाला आला परब्रह्म को ध्याय २२९
तपनि मिटाई सब देही की रघुबर नाम औषधी पाय ॥
यह सुखदायी सब संतन को या बलदेवैं निशाबिताय २३०
जब लग रैहै संजीवनि यह तबलग धर्मध्वजा फहराय ॥
माथ नवावों पितु माता को जिनबलगाथगयोंसबगाय २३१
आशिर्वाद देउँ मुंशीसुत जीवो प्रागनरायण भाय ॥
हुकुम तुम्हारो जो पावत ना ललितेकहतकौनाबिधिगाय २३२
रहै समुन्दर में जबलों जल जबलों रहैं चन्द औ सूर ॥
मालिक ललिते के तबलों तुम यशसों रहौ सदा भरपूर २३३
बिपति निवारण जगतारण के दूनों धरों चरणपर माथ ॥

बेलारानी के गौने की पूरण भई दूसरी गाथ २३४
पूरि तरंग यहाँ सों ह्वैगै तव पद सुमिरि भवानीकन्त ॥
राम रमा मिलि दर्शन देवैं इच्छायही मोरि भगवन्त २३५

इति श्रीलखनऊनिवासि (सी,आई,ई) मुंशीनवलकिशोरात्मजबाबूप्रयागनारायण जीकीआज्ञानुसारउन्नामप्रदेशान्तर्गतपँड़रीकलानिवासि मिश्रवंशोद्भव बुधकृपाशङ्करसूनु पण्डितललिताप्रसादकृत बेलागमन द्वितीययुद्धवर्णनोनामप्रथमस्तरंगः १ ॥

बेलागमनद्वितीययुद्धसमाप्त ॥

इति ॥

अथ आल्हखण्ड ॥

बेलाऔरताहरकायुद्धबर्णन ॥

सवैया ॥

मैं बृषभान लली बिनवौं सो अली सँग कुंजन जातनितय ।
गावत वेनु बजावत आवत मोहनलालहु नित्त तितय ॥
श्यामहु श्याम भये ज्यहि ठौर सो और बखानकरै को कितय ।
गावत गीत सबै ललिते ज्यहि आवत जौन जहाँलों जितय १

सुमिरन ॥

राधा रानी ठकुरानी के दूनों धरों चरण पर माथ ॥
मोहिं भरोसा अब तेरो है स्वामिनि पूरिकरो यह गाथ १
कण्ठ में बैठै तुम कण्ठेश्वरि भुज बल बैठिजाय हनुमान ॥
बैठि सरस्वति जा जिह्वामा भूले अक्षर करों बखान २
भाँग भवानी महरानी के बन्दन करों जोरि दोउ हाथ ॥
भाँग न होती जो दुनिया मा ललिते कौन देत तब साथ ३

चढ़ैं तरंगैं जब भाँगन की आँगन देखि परै सुरलोक ॥
दुख नहिं ब्यापै कछु देहीमा मनके छूटिजात सब शोक ४
भाँग घोटिकै नित प्रति पीवै जीवै वर्ष एक शत एक ॥
हर को ध्यावै तब सुखपावै पूरी होय तवै यह टेक ५
छूटि सुमिरनी गै देवन कै शाका सुनो शूरमन क्यार ॥
बेला काटी शिर ताहर का सोई गाथ कहौं विस्तार ६

अथ कथाप्रसंग ॥

जहाँ चँदेले ब्रह्मा ठाकुर बेला गई तहाँ पर धाय ॥
बैठी पलँगा कर पंखालै लागी करन पवन सुखदाय १
ग्वरि २ वहियां हरि २ चुरियाँ शोभा कही वूत ना जाय ॥
शची मेनका की गिन्ती मा बेला रूप राशि अधिकाय २
यहु अलवेला ब्रह्मा ठाकुर बेलै बोला वचन सुनाय ॥
टरिजा टरिजा री आँखिनते दीखे गात सवै जरिजायँ ३
घटिहा राजा की कन्या ते कासुखहोय मोहिंअधिकाय ॥
इतना सुनिकै बेला बोली दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ४
तुम्हैं मुनासिब यह नाहीं है जैसी कहौ चँदेलेराय ॥
राज कुटुँब सब अपनो तजिकै आइन चरण शरणमें धाय ५
सुनि सुनि बातैं अब प्रीतमकी छाती घाव होत अधिकाय ॥
परवश कन्या की गति जैसी तैसी रही चँदेलेराय ६
ऐसी तुमको अब चहिये ना जैसी सूखी रहे सुनाय ॥
सुरपुर अहिपुर नरपुर माहीं प्रीतम कौन मोर अधिकाय ७
प्यारे प्रीतम इक तुमहीं हौ साँचो साँच दीन बतलाय ॥
सुनिकै बातैं ये बेला की बोला फेरि चँदेलाराय ८
मूड़ काटिकै अब ताहरका प्यारी मोहिं देउ दिखलाय ॥

घाव करेजे का तब पूरै औ सुख सम्पति मोहिं सुहाय ९
इतना सुनिकै बेला बोली स्वामी बचन करो परमान ॥
कपड़ा घोड़ा दै कोड़ा निज पठवो मोहिं समर मैदान १०
एक लालसा पै डोलति है स्वामी पूरिकरो यहि काल ॥
नगर मोहोबा मोहिं पठवावो दर्शन करों सासुके हाल ११
इतना सुनिकै ब्रह्मा बोले जावो साथ लहुरवाभाय ॥
बेला बोली तब स्वामी ते यहनहिंउचितमोहिंदिखलाय १२
ब्रह्मा बोले फिरि लाखनि ते तुमहीं जाउ कनौजीराय ॥
बेला बोली फिरि स्वामी ते यहनहिंउचितमोहिंदिखलाय १३
बदला लैहैं संयोगिनि का रखिहैं मोहिं कनौजै जाय ॥
हुई हँसौवा दुहुँ तरफा का प्रीतम करिहौ कौन उपाय १४
ब्रह्मा बोले फिरि आल्हा ते तुम चलि जाउ बनाफरराय ॥
यह मन भाई तब बेला के पलकी चढ़ी तड़ाकाधाय १५
चढ़ि पचशब्दा हाथी ऊपर अल्हा ठाकुर भये तयार ॥
डोला चलिभा फिरि बेला का संगै चले बहुत असवार १६
यह गति देखी माहिल ठाकुर लिल्ली ऊपर भये असवार ॥
जहँ पर बैठे पृथीराज हैं पहुँचा उरई का सरदार १७
बड़ी खातिरी राजा कीन्ह्यो अपने पास लीन बैठाय ॥
जो कछु गाथा थी तम्बू की माहिल यथातथ्य गा गाय १८
तब महराजा दिल्लीवाला चौंड़े तुरत लीन बुलवाय ॥
खबरि सुनाई सब चौंड़ा को जो कछु माहिल दीनबताय १९
नार कँकरिहा पर तुम घेरो डोला लावो बेगि छिनाय ॥
हुकुम पायकै महराजा को फौजै तुरत लीन सजवाय २०
चढ़ि इकदन्ता हाथी ऊपर चौंड़ा कूचदीन करवाय ॥

बाजत डंका अहतंका के पहुँचा नार उपरसो आय २१
दीख्यो आल्हा को चौंड़ाने गरुई हाँक कहा गुहराय ॥
डोला धरिकै अब बेला का जावो लौटि बनाफरराय २२
हुकुम पिथौरा का याही है आल्हा साँच दीन बतलाय ॥
सुनिकै बातैं ये चौंड़ा की बोला फेरि बनाफरराय २३
डोला लौटनको नाहीं है चौंड़ा काह गये बौराय ॥
एक पिथौरा की गिन्ती ना लाखन चढ़ैं पिथौरा आय २४
नगर मोहोबे डोला जाई चौंड़ा साँच दीन बतलाय ॥
गा हरिकारा फिरि तहँना ते जहँना बैठ बनाफरराय २५
डोला घेरा है बेला का बोला हाथ जोरि शिरनाय ॥
इतना सुनिकै ऊदन ठाकुर तुरतै कूच दीन करवाय २६
जहँ पर फौजैं हैं चौंड़ा की पहुँचा तुरत लहुरवाभाय ॥
हाथ जोरिकै ऊदन बोले दादा कूच जाउ करवाय २७
इतना सुनिकै चौंड़ा बकशी तुरतै हुकुम दीन फर्माय ॥
जान न पावैं मोहबे वाले सब के देवो मूड़गिराय २८
हुकुम चौंड़िया का पावतखन क्षत्रिन खैंचि लीन तलवार ॥
झुके सिपाही दुहुँ तरफा के लागी होन भड़ाभड़ मार २९
गोली ओला सम बरसी तहँ कोताखानी चलीं कटार ॥
भा खलभल्ला औ हल्लाअति जूझन लागि शूर सरदार ३०
कटि कटि कल्ला गिरैं बछेड़ा घूमैं मूड़ बिना असवार ॥
खट खट खट खट तेगा बोलैं बोलैं छपक छपक तलवार ३१
झल् झल् झल् झल् झीलम झलकैं नीलम रंग परैं दिखलाय ॥
चम् चम् चम् चम् छूरीचमकैं कडँधालपकानिखड्गदिखाय ३२
मर् मर् मर् मर् ढालैंबालैं तेगा ठन्न ठन्न ठन्नाय ॥

सन् सन् सन् सन् गोली बरसैं तीरन मन्न मन्न गा छाय २३
धम् धम् धम् धम् बजैं नगारा मारा मारा परै सुनाय॥
बड़ी खुशाली रणशूरन के कायर गये तहाँ सन्नाय २४
कायर सोचत मन अपनेमा नाहक प्राण गँवाये आय॥
माठा रोटी घरमा खाइत आपनि भैंसिचराइत जाय ३५
यह गति जानित जो पहिलेते काहे फँसित समर में आय॥
नई बहुरिया घरमा बैठी कैसे धरा धीर उरजाय ३६
हाय रुपैया बैरी ह्वैगे हमरे गई प्राणपर आय॥
को समुझाई घर दुलहिनिका देवी देवता रहे मनाय ३७
कायर बिनवैं मन सूरजते पश्चिम जाउ आज महराज॥
तौ हम भागैं समरभूमि ते औ रहिजायजगतमें लाज ३८
शूर सिपाही ईजतिवाले दहिनी धरैं मुच्छ पर हाथ॥
हनि हनि मारैं समरभूमि मा कटिकटिगिरैं चरणऔमाथ ३९
को गतिबरणै त्यहिसमया कै बाजै घूमि घूमि तलवार॥
मारे मारे तलवारिन के नदिया बही रक्तकी धार ४०
मुण्डन केरे मुड़चौरा भे औ रुण्डन के लगे पहार॥
घोड़ बेंदुला के ऊपर ते नाहर उदयसिंह सरदार ४१
फिरि फिरि मारै औ ललकारै बेटा देशराज का लाल॥
गरुई हाँकैं सुनि ऊदन की कम्पित होयँ तहाँ नरपाल ४२
पैँड़ लगावै रस बेंदुल के हौदा उपर पहूँचै जाय॥
मारि महाउत को हनिडारै औ असवारै देय गिराय ४३
यह गति दीख्यो जब ऊदन कै चौंड़ा हाथी दीन बढ़ाय॥
औ ललकारा समरभूमि मा ठाढ़े होउ बनाफरराय ४४
गरुई हाँकैं सुनि चौंड़ा की ऊदन घोड़ा दीन उड़ाय॥

भाला मारा इकदन्ताके भाग्यो तुरत पछारा खाय ४५
खेत छूटिगा तब चौंड़ा ते आल्हा कूच दीन करवाय ॥
डोला पहुँचा बरइन पुरवा बेला बोली बैन सुनाय ४६
नगर मोहोबा का याही है साँची कहौ बनाफरराय ॥
नगर मोहोबे का पुरवा यह बेला रानी परै दिखाय ४७
खबरि पायकै सुखिया बारिनि तहँ पर गई तड़ाका आय ॥
संग सहेलिन को लैकै सो परछन कीन तहाँपर जाय ४८
चलिभा डोला फिरि आगे को मालिनि पुरे पहूँचा आय ॥
खबरि पायकै फुलियामालिनि सोऊ चली तड़ाका धाय ४९
संग सहेलिन को लीन्हे सो डोला पास पहूँची आय ॥
कीनि आरती सो बेला की देखिकै रूप गई सन्नाय ५०
हाय! विधाता यह का कीन्ही सुरपुर पती दीन पठवाय ॥
इतना कहिकै फुलियामालिनि दाँते अँगुरी लीन चपाय ५१
सुनिकै बातैं ये फुलिया की बेला गयो क्रोध उरछाय ॥
हुकुम लगायो इक चाकर को जूतिन देवो मूड़ ठठाय ५२
हुकुम पायकै सो बेला को मारन लाग तड़ाका धाय ॥
आल्हा बोले तब बेला ते यहनहिंतुम्हैंमुनासिबआय ५३
अबै न डोला गा मोहबे का रैयनि प्रथम रहिउ पिटवाय ॥
सुनिकै बातैं ये आल्हा की बेला तुरत दीन छुड़वाय ५४
मालिनि पुरवा ते डोला चलि पहुँचा नगर मोहोबे आय ॥
खबरि पायकै बारहु रानी मल्हनामहलगईं सबधाय ५५
द्यावलि सुनवाँ फुलवा मल्हना और सबै पहूँचीं आय ॥
कीन आरती तहँ बेला की सबहिनदुःख शोकबिसराय ५६
संगै लैकै फिरि बेला का महलन गईं तड़ाका आय ॥

भा अति मेला तहँ नारिन का शोभा कही वूत ना जाय ५७
मुहँ दिखलाई रानी मल्हना तहँपर दीन नौलखाहार ॥
पायँ लागिकै बेला रानी कङ्कण तुरतै दीन उतार ५८
भीर मेहरियन कै हटिगै जब अकसर बहू रही त्यहिठाँय ॥
मल्हना पूँछै तब बेला ते साँची साँच देय बतलाय ५९
बालम तुम्हरे अब कैसे हैं कहँ कहँ लगे अंग किनघाय ॥
इतना सुनिकै बेला बोली दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ६०
बाईं दहिनी द्वउ कोखिन मा लागीं सेल कटारी घाय ॥
गाँसी खटकति है मस्तक में मैया बिपति कही ना जाय ६१
बातैं सुनिकै ये बेला की मल्हना गिरी पछाराखाय ॥
कथा पुराणन की बातैं बहु बेला कहा तहाँ समुझाय ६२
कथा सुनाई गंधारी की ज्यहि के मरे एकशत पूत ॥
कथा बताई यदुनन्दन की जहँ मरिगये सबै रजपूत ६३
कथा बखानी रघुनन्दन की नृपपद छूटि मिला बनबास ॥
कही कहानी दशकन्धर की ज्यहिके भई वंशकी नाश ६४
बेला बानी सुनि रानी सब तुरतै शोक दीन बिसराय ॥
प्रसव बेदना ज्यहि पर बीती जीतीस्त्रईशोक अधिकाय ६५
बेला बोली चन्द्रावलि ते ननँदी साँच देयँ बतलाय ॥
मैया अपने को सतखण्डा ननँदी मोहिं देय दिखलाय ६६
इतना सुनिकै चन्द्रावलि तहँ गै सतखण्डा तुरत लिवाय ॥
को गति बरणै सतखण्डा कै साँचो इन्द्र धाम दिखलाय ६७
चँदन किंवरिया जहँ लागी हैं खम्भन रत्न जटित को काम ॥
कैसो सम्भ्रम मन जो होवै बैठत लहै तहाँ बिश्राम ६८
बेला पहुँची जब छज्जा पर पश्चिम भीर दीख अधिकाय ॥

कोकिल हंस मोर पारावत तीतर लवा सुवा सुखदाय ६९
शोभा देखत तहँ छज्जा की बेला बार बार पछिताय ॥
जीवत प्रीतम हमरे होते तौ सुखभोगहोतअधिकाय ७०
आज काल्ह दिन प्रीतम झेलैं ताते नरक सरिस दिखलाय ॥
हाय ! बिधाताकी मरजी अस भारीविपति गई शिर आय ७१
प्रीतम प्यारे के सतखण्डा हम पर फाटि गिरो अरराय ॥
यह मन विनवत बेला रानी महलन गई तड़ाकाआय ७२
बेला बोली फिरि मल्हनाते दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ॥
मोरि लालसा यह डोलति है चन्दन बगिया देउ दिखाय ७३
सुनिकै बातैं ये बेला की पलकी तुरत लीन मँगवाय ॥
वैठि पालकी महरानी सब चन्दन बाग पहूँचीं जाय ७४
पुष्पवाटिका तहँ राजत है छाजत सबै दिनन ऋतुराज ॥
बेला चमेली औ नेवारकी पंक्तीं रहीं एक दिशिछाज ७५
विसुनकान्ता कहुँ कहुँ फूले कहुँ कहुँ फूले सुर्ख अनार ॥
श्वेत रक्त औ मधुर गुलाबी पाटल फूले भांति अपार ७६
फुली चांदनी श्वेत वरणहै जिन पर केलि करत बहुभृंग ॥
को गति बरणै दुपहरिया कै ज्यहिको रक्तवरण हैं रंग ७७
श्वेत रक्त औ मधुर गुलाबी सब विधि फूलि रहा करवीर ॥
कदली केवँड़ा यकदिशिराजत छूटत देखि मुनिनको धीर ७८
श्वेत रक्त तहँ चन्दन छाजैं राजैं कोकिल मोर चकोर ॥
पीव पपीहा की रट सुनिकै विरहिनि पीरहोयअतिघोर ७९
यह सुख सम्पति बेला लखिकै कीन्ह्यो घोर शोर चिग्घार ॥
जितनी रानी थीं बगिया में सबहिनछांड़िदीनडिडकार ८०
मोती ऐसे आँसू ढरकैं बेला हृदय शोक गा छाय ॥

तब समुझावै मल्हना रानी बहुवर शोक देउ बिसराय ८१
पारस पत्थर घर तुम्हरेमा बहुवर बैठिकरो तुम राज॥
ह्वैहैं सबै धर्म के काज ८२
हुकुम तुम्हारो रैयति मानी
द्यावलि बोली फिरि बेला ते रानी बचन करो परमान॥
धर्म सनातन को याही है राखै सासु श्वशुरको मान ८३
इतना सुनिकै बेला बोली यहु दुख दून तुम्हारो दीन॥
घर बैठारयो दोउ पुत्रन को मोहबा बंशनाश तुम कीन ८४
इतना सुनिकै द्यावलि बोली साँची मानो कही हमार॥
यह सब करतब है माहिल कै जिनके चुगुलिनका बैपार ८५
सवन त्रिरैया ना घर छोड़ै ना बनिजरा बनिजको जाय॥
चुगुली करिकै माहिलठाकुर मोको तुरत दीन निकराय ८६
गे जगनायक जब कनउजका आवैं नहीं बनाफरराय॥
मैं समुझायों द्वउ भाइन का लाये संग कनौजीराय ८७
घाटबयालिस तेरह घाटी सब रुकवावा पिथौराराय॥
जीति पिथौरा को लखराना सबियाँ लीन्हे घाट छँड़ाय ८८
पान धरायो जब गौने का तब नहिं बीरा कऊ चबाय॥
बीरा लीन्ह्यो जब ऊदन ने ब्रह्मा लीन्ह्यो तुरत छँड़ाय ८९
यह सब करतब है माहिल कै डारयनि बंशनाश करवाय॥
काल नगीचे ज्यहि के आवै त्यहिकै देवै बुद्धि नशाय ९०
इतना कहतै तहँ द्यावलि के आल्हा गये तड़ाकाआय॥
बेला बोली तहँ आल्हा ते कीरतिसागर लवो दिखाय ९१
यह मन भाई सब रानिनके पलकी चढ़ीं तड़ाकाधाय॥
चलीं पालकी महरानिन की संगै चले बनाफरराय ९२
कीरतिसागर फिरि आईं सब नौका पास लीन गँगवाय॥

भये खेवैया आल्हा ठाकुर पहुँचे पार तड़ाका आय ९३
अतिशुभ मंदिर ब्रह्मानँद का शोभा कही बूत ना जाय ॥
गईं तड़ाका सब महरानी चकितलखैं चहूँदिशिधाय ९४
पंसासारी ब्रह्मानँद की बेला नजरि परी सो आय ॥
तब अलबेला बेलारानी बोली सुनो बनाफरराय ९५
बड़े खिलारी तुम चौपरिके सो अब मोहिं देउ सिखलाय ॥
इतना सुनिकै आल्हा बैठे चौपरि तहाँ दीन फैलाय ९६
बेला खेलै पंसासारी अंचल अपन उड़ावतिजाय॥
यह गति देखी आल्हा ठाकुर नीचेलीन्ह्यो शीश झुकाय९७
बहुतक रूप धरे बेला ने आल्हे मोह रही करवाय ॥
चाटक नाटक करि सबहारी मोहा नहीं बनाफरराय ९८
रूप भयङ्कर दशवों धरिकै डाइनि बैठिगई मुहबाय ॥
यहिका लखिकै आल्हा ठाकुर तुरतै खाँड़ा लीन उठाय ९९
गर्जत बोले आल्हा ठाकुर का तू मोहिं रही डरवाय ॥
देखि भयङ्कर क्षत्री डरपै कीरति जावै सबै नशाय १००
हो अपकीरति जब दुनिया में तब तो मृत्यु नीकि ह्वैजाय ॥
ऐसे वैसे हम क्षत्री ना जो अब देवैं धर्म नशाय १०१
रूप मोहनी माता जाना डाइनि शत्रुरूप दिखलाय ॥
अब तू पलटै कित स्वरूप को कित तू करै समररणआय१०२
इतना सुनतै बेलारानी प्रथमै लीन्ह्यो रूप बनाय ॥
पाप तुम्हारे कछु मनमें ना साँचे शूर बनाफरराय १०३
यॉचे तुमका हम तम्बूमा अपने लाइन साथ लिवाय ॥
संग लहुरवा का लीन्ह्यो ना हमरे उमर सरिससोआय १०४
संगलकड़ियनमिलि अग्नी को ज्वाला अधिक२ अधिकाय ॥

यामें संशय कछु नाहीं है बिप्रनमोहिं दीन बतलाय१०५
थै तहँ सज्जन औ दुर्जनका मंद औ तीक्ष्ण भेदहै भाय ॥
सज्जनक्षत्रीअसकलियुगमा नहिंकहुँघरनघरनअधिकाय१०६
जस तुम द्यावलि के उपजेहौ कीरति रही लोक में छाय ॥
उत्तम करणी करि नर सज्जन कीरनिध्वजा देयँ फहराय १०७
धर्म नशावैं ते मरिजावैं जिन अपकीरति बहुतसुहाय ॥
साँचे याँचे तुम क्षत्री हो कीरतिकहीलोकसबगाय १०८
धर्म पतिव्रत के शपथन ते आशिर्बाद बनाफरराय ॥
कीरति गाई जो सज्जन की गावतस्वऊ सरिसहै जाय १०६
सज्जन गावै गाय सुनावै पूरो अर्थ देय बतलाय ॥
जो मन भावै क्यहु सज्जन के पावै अमरलोक सो भाय ११०
ऐसे कीरति के सागर तुम साँचे धर्म बनाफरराय ॥
इतना कहतै तहँ बेला के मल्हनाआदि गईसबआय१११
बैठिकै नैया सब महरानी सागर पार पहूँचीं जाय ॥
बारह ताल हते मोहबे में बेला दीख सबनकोधाय ११२
बेला बोली फिरि मल्हना ते दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ॥
मिलै आज्ञा मोहिं माता की लश्करजाउँ तड़ाकाधाय ११३
कीनि प्रतिज्ञा हम प्रीतम सों माता साँच देयँ बतलाय ॥
मूड़ काटिकै हम ताहरको औ स्वामीको देव दिखाय११४
जग मर्य्यादा राखन हेतू सेवक भाव देव दिखलाय ॥
प्रीतम प्यारे की आज्ञा सों जीतोंसमरसगानिजभाय ११५
मोहिं विधाता की मर्जी थी अनरथ रूप दीन उपजाय ॥
अर्थ न पावा कछु देही का भइजगदेह अकारथ माय ११६
स्वारथ प्रीतम के सँग होती सो विधि दीन बियोग कराय ॥

जन्म अकारथ यहु दुनियामाँ कौनीभाँति काटिहौं माय ११७
नैनन योवन औ बैनन को नहिं कछु पूरभयो व्यवहार॥
अंग न पर्शा हम प्रीतम का ना पद पूर भयो भर्त्तार ११८
सदा अभागी नर नारिन को नाहक रचा नही कर्त्तार॥
कर्म शुभाशुभ जो लाग्यो है सोई भोगि रहा संसार ११९
यहै सोचिकै मन अपने मा आयसु देउ तड़ाका माय॥
समय किफायत गाथा भारी आरी कहे जान ह्वै जाय १२०
इतना सुनतै मल्हना रानी मनमा बार बार पछिताय॥
दुःख विधाता हमका दीन्ह्यो गाथा कही कहाँलगजाय १२१
इतना सोचत मन अपने मा आयसु फेरि दीन हर्षाय॥
चरण लागिकै महरानी के बेला कूच दीन करवाय १२२
संग बनाफर आल्हा ठाकुर पलकी चली तड़ाका धाय॥
बेला बोली तहँ आल्हा ते साँची सुनो बनाफरराय १२३
द्यखों चौतरा गजमोतिनि का यह मन गई लालसा छाय॥
इतना सुनतै आल्हा ठाकुर सिरसा चले तड़ाकाधाय १२४
जहाँ चौतरा गजमोतिनि का डोला तहाँ दीन धरवाय॥
उतरिकै डोला ते बेला तब चन्दन अक्षत फूलमँगाय १२५
कीन चबुतरा की पूजा भल मन में बार बार तहँ ध्याय॥
सतीशिरोमणिगजमोतिनिजो साँचे शूर बनाफरराय १२६
आभा बोलै तौ चौरातै ज्यहि संतोष मोहिं ह्वैजाय॥
बोली आभा गजमोतिनि की माहिल डारे कन्तमराय १२७
सत्त विधाता मोको दीन्ह्यो सत्ती भयूँ यहां पर आय॥
तीनि महीना सत्रह दिनमा सब महनामथजायपटाय १२८
दिल्ली मोहवा दउ शहरन में राँड़ै राँड़ै परैं दिखाय॥

आगा सुनिकै बेला बोली बहिनी साँचदेयँ बतलाय १२९
हम तो रण्डा वादिन जाना जादिन मरे बीर मलखान ॥
कीरति पायो जग मण्डल में तुमको सत्तदीन भगवान १३०
करि परिकरमा फिरि चौराकी पलकी चढ़ी तड़ाकाधाय ॥
दाबे लश्कर को आवति भै मनमें श्रीगणेशपदध्याय १३१
पहर अढ़ाई के अर्सामा डोला गयो फौजमें आय ॥
यह अलबेला बेला रानी प्रीतम पास पहूँचीजाय १३२
देख्यो बेला को ब्रह्मानँद आयसु तुरत दीन फरमाय ॥
मोरि लालसा यह ह्वालतिहै ताहरशीश दिखावो आय १३३
सुनिकै बातैं ये प्रीतम की दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ॥
बेला बोली फिरि प्रीतम ते आपन बस्त्र देउ मँगवाय १३४
यामें संशय कछु नाहींहै ताहर शीश दिखाउब आय ॥
धीरज राखो अपने मनमाँ अब मैं जात तड़ाकाधाय १३५
सुनिकै बातैं ये बेला की सब सामान दीन मँगवाय ॥
भइ मर्दाना बेला रानी शोभा कही बूत ना जाय १३६
झीलम बखतर बेला पहिरी शिरपर धरी बैंजनी पाग ॥
को गति बरणै तहँ बेला कै मुखमें रहैं तिलनके दाग १३७
छुरी कटारी बेला बाँधी कम्मर कसी एकतलवार ॥
भाला बरछी लै हाथे मा हरनागर पर भई सवार १३८
बाजे डंका अहतंका के फौजैं सबै भई तय्यार ॥
घोड़ बेंदुला का चढ़वैया नाहर उदयसिंह सरदार १३९
त्यही समैया त्यहि औसर मा बेला पास पहूँचा आय ॥
ऊदन बोले तहँ बेलाते हमको लेवो साथ लिवाय १४०
सुनिकै बातैं ये ऊदन की बेला बोली बचन उदार ॥

साथ न लेवे हम काहू को ठाकुर उदयसिंह सरदार १४१
इतना कहिकै बेलारानी लश्कर कूच दीन करवाय ॥
बाजत डंका अहतंका के निर्भय चले शूरमाजायँ १४२
दिल्ली केरे फिरि डाँड़े मा लश्कर सबै पहूँचा आय ॥
गड़िगे तम्बू तहँ बेला के सबरँग ध्वजा रहे फहराय १४३
लिखीहकीकति फिरि पिरथीको कागज कलमदान मँगवाय ॥
बेला पहुँची अब मोहबे का औ घर जिया चँदेलाराय १४४
अधकर बाकी जो गौने की सो अब तुरत देउ पठवाय ॥
नहीं तो ब्रह्माहैं डाँड़े पर दिल्ली शहर देयँ फुँकवाय १४५
ताहर नाहर के हाथे सों अधकर तुरत देउ पहुँचाय ॥
कुशल आपनी जो तुम चाहौ मानो साँच पिथौराराय १४६
इतना लिखिकै बेलारानी धावन हाथ दीन पठवाय ॥
धावन चलिभा फिरि तम्बू ते औ दरबार पहूँचा आय १४७
लागि कचहरी पृथीराज की भारी लाग राज दरबार ॥
बैठक बैठे सब क्षत्री हैं टिहुनन धरे नांगि तलवार १४८
तहँ परवाना धावन दीन्ह्यो दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ॥
खोलिकै चिट्ठी पिरथी पढ़िकै तुरतै गये सनाकाखाय १४९
उत्तर लिखिकै फिरि चिट्ठी का धावन तुरत दीन लौटाय ॥
ताहर बेटा को बुलवायो औसबहालकहासमुझाय १५०
बेटी हमरी बैरिनि ह्वैगै ब्रह्माठाकुर दीन जियाय ॥
अधकर लेने को आये हैं सवियाँफौजलेउसजवाय १५१
जायकै पहुँचो समरभूमि में अधकर तहाँ देउ चुकवाय ॥
मारे मारे तलवारिन के सबके देवो मूड़ गिराय १५२
अधकर तबहीं ई भरि पैहैं जैहैं भागि चँदेलेराय ॥

इतना सुनिकै ताहर चलिभे दोऊहाथजोरिशिरनाय १५३
हुकुम लगायो फिरि लश्करमें तुरतै सजन लागि सरदार ॥
झीलमबखतर पहिरिसिपाहिन हाथम लई ढालतलवार १५४
सजे बछेड़ा ताजी तुर्की मुश्की घोड़ भये तय्यार ॥
लक्खा गर्रा पचकल्यानी सुर्खा सिर्गाआदि अपार १५५
डारि रकाबै गंगा यमुनी आननदीन लगाम लगाय ॥
हथी महाउत हाथी लैकै तिनका दीन भूमि बैठाय १५६
धरी अँवारी तिन हाथिन पर बहुतन हौदा दीन धराय ॥
चुम्बक पत्थर के हौदा हैं जिनमेंसेलबलौंत्राखाय १५७
कोउ कोउ हाथी इकदन्ता हैं कोउ दुइदन्त श्वेत गजराज ॥
यकमिलहैकै सब चिघरत हैं मानोकोपकीन सुरराज १५८
सजिगैं फौजैं दल बादल सों ताहर गये मातु के धाम ॥
हाल बतायो सब अगमा सों करिकैचलिभादण्डप्रणाम १५९
प्यारी अपनी के महलन में ताहर गये तड़ाका धाय ॥
बैठा ठाकुर जब शय्यापर दैया बिपति कही ना जाय १६०
राह कटावै मंजारी तहँ होवै छींक तड़ातड़ आय ॥
झंझा बायू डोलन लागी आयूगईजनोनगच्याय १६१
बादल छायो आसमान में कउँधालपकिलपकिरहिजाय ॥
चमकै बिजुली त्यहि समया मा दमकै आसमान हहराय १६२
थर थर थर थर थर थर कंपै झंपै आसमान त्यहिकाल ॥
दर दर दर दर दर दर दरकै फरकैदहिनअंगत्यहिकाल १६३
मरणहि सूचित भो पत्नी को ननँदी बचन गये ठहराय ॥
उठीतड़ाका लखि अशकुनको प्रीतम गरे गई लपटाय १६४
ताहर रोंक्यो त्यहि समया मा अपनी माया मोह भुलाय ॥

हुकुम सुनावा महराजा का सवियाँहालकहासमुझाय१६५
लौटिकै मुर्चा ते आउब जब तुम्हरो करब मनोरथ आय॥
ऐसे कहिकै ताहर नाहर चलिभेबहुतभाँतिसमुझाय१६६
आये फौजन में रण नाहर डंका तुरत दीन बजवाय॥
बाजत डंका अहतंका के लश्करकूचदीन करवाय १६७
चढ़ि दलगंजन की पीठी मा मनमा श्रीगणेश पद ध्याय॥
बन्दन कीन्ह्यो पितु चरणनका चन्दन अक्षत फूलचढ़ाय १६८
प्राणनिछावरि फिरि मनते करि चलिभा दिल्ली राजकुमार॥
गर्जत तर्जत लर्जत आवत नाहर दिल्ली का सरदार १६९
आयकै पहुँचा समर भूमि मा गरुई हाँक कहा ललकार॥
लेय चँदेला अब अथकर को आयो दिल्ली राजकुमार १७०
सुनिकै बातैं ये ताहर की बेला मोहबे का सरदार॥
असल जनाना मर्दाना जो ठानासमरआयरयहिवार १७१
पहिले मारुइ भईं तोपन की पाछे चलन लागि तलवार॥
सब हथियारन में तलवारी याही धर्मरूप अवतार १७२
आरयसाही जे उत्साही गाही धर्म युद्ध के यार॥
तौन सिपाही वेपरवाही छाँड़ेप्राणआशरयहिवार १७३
तड़ तड़ तड़ तड़ तड़ तड़कौटैं पाटैं मुण्डन भूमि अपार॥
मुरि२ गिरि२ लरि२ कितन्यो जूझनलागि शूरसरदार १७४
झम् झम् झम् झम् भालावरसैं तरसैं घावदेखि जियथार॥
भम् भम् भम् भम् क्षत्री भमकैं चमकैंचमाचम्मतलवार १७५
गम् गम् गम् गम् ढोलकगमकैं दमकैं शक्ति शूल विकराल॥
मारु मारु कै मौहरि बाजैं बाजैं हाव हाव करनाल १७६
जूझे क्षत्री दुहुँतरफा के नदिया बही रक्त की धार॥

मुण्डन केरे मुड़चौरा भे औ रुण्डनके लगे पहार १७७
को गति बरणै वहि समया कै चहुँदिशि होय मड़ाभड़मार ॥
बड़ा लड़ैया ताहर नाहर यहुदलगंजनपरअसवार १७८
मारत मारत रजपूतन को बेला पास पहूँचा आय ॥
जानि चँदेला फिरि ललकारयो ठाकुर कूच जाउ करवाय १७९
ब्रह्मरूप तब बेला बोली नाहर साँचदेयँ बतलाय ॥
मोहिं झमेलाते मतलबना अधकर यहाँ देउ पहुँचाय १८०
मोहिं जियावा घर बेलाने याही हेतु दीन पठवाय ॥
भिक्षुक ह्वैकै समरभूमि में चाहै आप लेयँ छुड़वाय १८१
ऐसे अधकर यहु छूटि है ना दुइमा एक बंश रहिजाय ॥
इतना सुनिकै ताहर नाहर बोले दोऊ भुजा उठाय १८२
सँभरिकै बैठ अब घोड़े पर ठाकुर खबरदार ह्वैजाय ॥
इतना कहिकै ताहर नाहर भालामारा तुरत चलाय १८३
वार बचाई तहँ भाला की बेला खैंचिलीन तलवार ॥
ऐंचि सिरोही बेला मारी ताहर लीन ढालपर वार १८४
यहु इकदन्ता को चढ़वैया चौंड़ा आयगयो त्यहिबार ॥
रूप देखिकै सो बेला का जान्यो सबै कपटव्यवहार १८५
चुरिया खुलिगै इक बेला की सोऊ दृष्टिपरी त्यहिवार ॥
चौंड़ा बोला तब ताहर ते यहुनहिंमोहबेकासरदार १८६
बहिनि तुम्हारी यह बेला है तुमते साँच बतावैं यार ॥
इतना सुनिकै ताहर ठाकुर चकितलखनलागत्यहिवार १८७
गाफिल दीख्यो जब ताहरको बेला हनी तुरत तलवार ॥
घायल ह्वैगा ताहर ठाकुर बेलाकाटिलीन शिरयार १८८
बड़ा झमेला अब को गावै बेला कूच दीन करवाय ॥

बाजत डंका अहतंका के तम्बुन फेरि पहूँची आय १८९
लश्कर पहुँच्यो सब दिल्लीमा घर घर खबर गई यह छाय ॥
बेला मारा है ताहर को कोऊ रँधा भात ना खाय १९०
रानी अगमा के महलन मा पहुँची खबरि तड़ाका आय ॥
को गति बरणै त्यहिसमयाकै विपदागई महलमें छाय १९१
बिचरै रानी रनिवासे मा गिरि गिरि परै पछाराखाय ॥
रूप शील गुण वर्णन करिकै मनमा बारबार पछिताय १९२
नाहक बेला तू पैदा भइ डारे बंश नाश करवाय ॥
त्वरे बियाहे ते गौने लौं जूझे सातपुत्र रणजाय १९३
दियाबरैया अब महलन में कोऊ नहीं परै दिखलाय ॥
सातपुत्र की मैं महतारी सो निरबंश डरे करवाय १९४
कैसि निर्दयी बेला ह्वैगै मारेसि समर आपनो भाय ॥
इतना कहिकै रानी अगमा फिरिगिरिगई मूर्च्छाखाय १९५
छाय उदासी गै दिल्ली मा कहुँ नहिं मसातलक भन्नाय ॥
घर घर रय्यत अपने रोवै दर दर गाथ गई यहछाय १९६
बदला लीन्ह्यो चंदेले का बेला समरभूमि में आय ॥
यहि अलबेला अब गाथा को पूरणकीन यहाँते भाय १९७
खेत छूटिगा दिननायक सों झंडा गड़ा निशाको आय ॥
चरि चरि गौवैं घरका डगरीं पक्षी चले बसेरन धाय १९८
गिरेआलसी खटिया तकि तकि सन्तन धुनी दीन परचाय ॥
आशिर्वाद देउँ मुन्शी सुत जीवो प्रागनरायणभाय १९९
रहै समुन्दर में जबलों जल जबलों रहैं चन्द औ सूर ॥
पालिक ललितेके तबलों तुम यशसों रहो सदा भरपूर २००
माथ नवावों पितु माता को जिन बल पूरिभई यह गाय ॥

बिपति निवारण जगतारण के दूनों धरों चरणपर माथ २०१
करों तरंग यहाँसों पूरण तवपद सुमिरि भवानीकन्त ॥
रामरमामिलि दर्शन देवो इच्छा यहीमोरि भगवन्त २०२

इति श्रीलखनऊनिवासि (सी, आई, ई) मुंशीनवलकिशोरात्मजबाबू प्रयागनारायणजीकीआज्ञानुसार उन्नामप्रदेशान्तर्गतपँड़रीकलां निवासिमिश्रवंशोद्भव बुधकृपाशङ्करसूनुपण्डितललिताप्रसाद कृत ताहरबधवर्णनोनामप्रथमस्तरङ्गः ॥ १ ॥

बेलाताहरकामैदानसमाप्त ॥

इति ॥

अथ आल्हखण्ड ॥

चन्दनबगियाका युद्धवर्णन ॥

सवैया ॥

ता पद पङ्कज प्रेम निते सो इतै हम चाहत शारदरानी।
ध्यावत तोहिं मनावत गावत पावत मोद महेश भवानी॥
हे सुखदे वसुदे यशुदे तव भाग कहौं तौ कहाँलौं बखानी।
गावत गीत यही ललिते फलिते पदपङ्कज जे रतिमानी १

सुमिरन ॥

मैं पद बन्दौं जगदम्बा के अम्बाचरण कमल धरि माथ ॥
करि अवलम्बा श्रीदुर्गा का गावा चहौं यहाँ कछु गाथ १
मोहिं भरोसा महरानी का दानी तीनिलोककी माय ॥
सब सुखखानी दुर्गा रानी पूरण कृपा करो अब आय २
जनकनन्दिनी के पद बन्दौं जिन बल चला जाउँ भवपार ॥
नैया डगमग डगमग होवै बूड़न चहै सदा मँझधार ३
नहीं खेवैया कोउ नैया को मैया तुहीं लगावै पार ॥

दैया दैया करि मरि जावै ज्यहिनहिंचरणकमलआधार४
छूटि सुमिनी गै देबी कै शाका सुनो शूरमन क्यार ॥
चन्दन बगिया को कटवाई ठाकुर उदयसिंह सरदार ५

अथ कथाप्रसंग ॥

ब्रह्मा ठाकुर त्यहि समया मा साँचो मरणहार दिखलाय ॥
गाँसी खटकति है मस्तक में कोखिन सेल्ल कटारी घाय १
वेला रानी त्यहि समया मा लै शिर तहाँ पहूँची जाय ॥
जहाँ चँदेला सुख शय्या मा करहत रहै बाण के घाय २
धरि शिर दीन्ह्यो तहँ ताहर को बोली हाथ जोरि शिरनाय ॥
कीनि आज्ञा पूरण स्वामी मारा समर आपनो भाय ३
सुनिकै बातैं ये वेला की देखन लाग चँदेलाराय ॥
जब शिर दीख्यो सो ताहरका तब मनमोद भयो अधिकाय ४
ब्रह्मा बोले फिरि वेला ते प्यारी साँच देयँ बतलाय ॥
मैके ससुरे सब सुख तुम्हरे चाहौ रहौ तहाँ तुम जाय ५
नहीं भरोसा अब जीवनका प्यारी प्राणरहे नगच्याय ॥
इतना कहिकै ब्रह्मा ठाकुर सुरपुर गयो तड़ाकाधाय ६
वेला गिरिकै रोवन लागी कारण करनलागि अधिकाय ॥
जो मैं जनतिउँ यह गति होई काहे हनति समर में भाय ७
हाय! विधाताकी मर्जी यह हमरे बूत सही ना जाय ॥
चटक चूनरी ना मैली भै ना हम धरा सेज पै पाँय ८
खबरि पहुँचिगै यह महलन में रानी गिरीं भरहरा खाय ॥
हाहाकार परा मोहबे मा कोऊ रँधा भात ना खाय ६
ऊदन लाखनि दोऊ आये जहँपर मरा चँदेलाराय ॥
ने समुझावैं भल वेलाको रानी शोक देउ बिसराय १०

पारस पत्थरहै मोहबेमा लोहा छुवत सोन ह्वैजाय॥
राजपाट लै सब मोहबेकै तुमसुखभोगकरोअधिकाय ११
इतना सुनिकै बेला बोली मानो साँच बनाफरराय॥
जल्दी जावो तुम दिल्लीको चन्दनबाग कटावो जाय १२
बिना पियारे इक प्रीतम के सबसुखनरकसरिस दिखराय॥
नाशकरनको हम उपजीथीं दूनों बंश डरे मरवाय १३
अब सुखसोवैं कस मोहबेमा दिल्ली जाउ बनाफरराय॥
इतना सुनिकै ऊदन बोले बेला साँचदेयँ बतलाय१४
अब नहिं जावैं हम दिल्लीको कीन्हे कोप पिथौराराय॥
जान आपनो सबको प्यारो जलथल जीवजन्तुजेमाय १५
पगिया अरभी नहिं बगिया में सोई चन्दनदेयँ मँगाय॥
औरो चन्दन बहु दुनिया में सोकहुछकरनलवौं लदाय १६
पै अब दिल्ली को जैहौं ना बेला साँच देउँ बतलाय॥
इतना सुनिकै बेला बोली मानो कही बनाफरराय १७
शाप तड़ाका अब मैं देहौं ऊदन तुरत भस्म ह्वैजाय॥
बातैं सुनिकै ये बेला की कम्पितभयो लहुरवाभाय १८
लाखनि बोले तब ऊदन ते चंदन चलो देयँ कटवाय॥
आखिर देही यह रहिहै ना अब यश लेउ बनाफरराय १९
इतना सुनिकै ऊदन बोले साँची कहौ कनौजीराय॥
जल्दी चलिये अब दिल्लीको चन्दनबाग लेयँ कटवाय २०
सम्मत करिकै ऊदन लाखनि डंका तुरत दीन बजवाय॥
बाजे डंका अहतंका के हाहाकार शब्दगा छाय २१
भूरी सजिकै लखराना की तुरतै गई तड़ाका आय॥
फूलमती पद बन्दन करिकै त्यहिपर बैठ कनौजीराय २२

ऊदन बैठे रस बेंदुलपर मन में ध्याय शारदामाय ॥
सजे सिपाही सब ठाढ़े थे तुरतै कूच दीन करवाय २३
बाजत डंका अहतंका के यमुना पास पहूँचे जाय ॥
पार उतरिकै श्री यमुना के दिल्लीशहर गये नगच्याय २४
चन्दन बगिया जहँ पिरथीकी तहँ पर गये बनाफरराय ॥
चन्दन बढ़ई को बुलवायो चन्दन सबै दीन गिरवाय २५
तब तो माली हल्ला करिकै चलिभे जहां पिथौराराय ॥
लगी कचहरी महराजा की शोभा कही बून ना जाय २६
ठाढ़े माली तहँ बिनवत हैं दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ॥
ऊदन आये हैं मोहबे ते चन्दनबाग डरी कटवाय २७
कहा न माना क्यहु मालीका ओ महराज पिथौराराय ॥
सुनिकै बातैं ये माली की चौंड़ा धाँधू लीन बुलाय २८
कहि समुझावा तिन दूननते यहु महराज पिथौराराय ॥
जितने आये हैं बगिया में सबकी कटा देउ करवाय २९
इतना सुनिकै चौंड़ा धाँधू दूनों लीन फौज सजवाय ॥
चढ़ि इकदन्ता भौंरानँदपर दूनों कूच दीन करवाय ३०
भारीलश्कर इत लाखनि का उत यहु गयो चौंड़ियाआय ॥
चन्दन छकड़ा चौंड़ा घेरे औ यह बोला भुजा उठाय ३१
कौन बहादुर है मोहबे मा चन्दनबाग लीन कटवाय ॥
हुकुम पिथौरा का नाहीं है लकड़ी एक यहाँ से जाय ३२
सुनिकै बातैं ये चौंड़ा की सम्मुख गये बनाफरआय ॥
हमीं बहादुर हैं मोहबे के चन्दनबाग लीन कटवाय ३३
मोहिं ठकुरानी बेला रानी मोहबे वाली दीन पठाय ॥
सखी ह्वैहै लै ब्रह्मा को चौंड़ा साँच दीन बतलाय ३४

दुनिया जानति है ऊदन को जिनके लड़न क्यार बयपार ॥
दूसर धंधा कछु कीन्हे ना चौंड़ा मानु कही यहि बार ३५
अटक पारलों झंडा गड़िगा बाजी सेतवन्धलों टाप ॥
दतिया बूंदी जालंधर औ हमरी भई कमायूँ थाप ३६
चन्दन जैहै सब मोहबे को चाहै फौज देउ कटवाय ॥
रुकिहै चन्दन अब चौंड़ाना तुमते साँच दीन बतलाय ३७
इतना सुनिकै जरा चौंड़िया तुरतै लीन्ह्यो गुर्ज उठाय ॥
ऐंचि कै मारा सो ऊदन के लैगा बेंदुल वार बचाय ३८
बचा दुलरुवा द्यावलिवाला हौदा उपर पहूँचाजाय ॥
कलश सूबरण हौदावाले सो धरती मा दीन गिराय ३९
झुके सिपाही दुहुँतरफा के लागी चलन तहाँ तलवार ॥
पैग पैग पै पैदल गिरिगे दुइ दुइ पैग गिरे असवार ४०
मारे मारे तलवारिन के नदिया बही रक्तकी धार ॥
मुण्डन केरे मुड़चौरा भे औ रुण्डन के लगे पहार ४१
बिजयसिंह है बिकानेर को बिरसिंह गाँजर को सरदार ॥
दोऊ मारैं दोउ ललकारैं दोऊ समरधनी तलवार ४२
कोऊ हारैं नहिं काहू सों दोउ रण परा बरोबरि आय ॥
दोऊ ठाकुर हैं हाथी पर दोऊ देयँ सेलके घाय ४३
वार चूकिगे बिरसिंह ठाकुर मारा बिजयसिंह सरदार ॥
जूझिगे बिरसिंह समरभूमि में हिरसिंहआयगयोत्यहिबार ४४
सँभरो ठाकुर अब हौदापर कीन्ह्यो बिजयसिंह ललकार ॥
सुनिकै बातैं बिजयसिंह की हिरसिंहखैंचिलीनितलवार ४५
ऐंचिकै मारा बिजयसिंह को सो तिन लीन ढालपर वार ॥
हिरसिंह ठाकुर बिकानेर को सो त्यहि मारा फेरि कटार ४६

लागि कटारी गै हिरसिंह के सोऊ जूझिगयो त्यहिवार॥
हिरसिंह विरसिंह गाँजरवाले दोऊ जूझिगये सरदार ४७
तब महराजा कनउज वाला लाखनिराना कहा पुकार॥
गंगा मामा कुड़हरिवाले मारो विजयसिंह यहिवार ४८
इतना सुनिकै गंगाठाकुर अपनो हाथी दीन बढ़ाय॥
विजयसिंह को फिरिललकारा ठाकुर कूच जाउ करवाय ४९
नहीं तो बचिहौ ना हौदापर जो विधि आपु बचावै आय॥
इतना सुनिकै विजयसिंह ने अपनो हाथी दीन बढ़ाय ५०
विजयसिंह औ फिरि गंगाका परिगा समर बरोबरि आय॥
सेल चलाई विजयसिंह ने गंगा लैगे वार बचाय ५१
ऐंचिकै भाला गंगा मारा त्यहिके गई प्राणपर आय॥
जूझिग राजा विकानेर का गंगा बढ़ा तड़ाका धाय ५२
हीरामणि चरखारी वाला सोऊ गयो तहाँपर आय॥
त्यहि ललकारा फिरि गंगाको ठाकुर खबरदार ह्वैजाय ५३
वार हमारी ते बचिहै ना जो विधि आपु बचावै आय॥
त्यहिते तुमका समुझाइत है ठाकुर कूच जाउ करवाय ५४
इतना कहिकै हीरामणि ने मारी खैंचि तुरत तलवार॥
बचिगा ठाकुर कुड़हरि वाला लीन्हेसिआड़ि ढालपरवार ५५
बोला ठाकुर चरखारी का ठाकुर धन्य तोर अवतार॥
मैं हनि मारा दुहूँ हाथ ते पै तुम लीन ढालपर वार ५६
सुनिकै बातैं हीरामणि की गंगा लीन तुरत तलवार॥
ऐंचिकै मारा हीरामणि के सो पै जूझिगयोत्यहिवार ५७
स्यावसि स्यावसि गंगा मामा लाखनि कहा बचन ललकार॥
तुम्हरी समता का क्षत्री ना अब कोउ देखिपरै यहिवार ५८

करि खलभल्ला औ हल्लाअति लल्ला देशराजका लाल॥
लड़ै इकल्ला रजपूतन ते कल्ला काटि गिरावै हाल ५६
जैसे होरी बल्ला जावै तैसे चलै खून तलवार॥
करै दुपल्ला तहँ छातिन के नाहर उदयसिंह सरदार ६०
जैसे भेड़िन भेड़हा पैठै जैसे अहिर बिडारै गाय॥
तैसे रणमा चौंड़ा मारै क्षत्रीजायँ युद्ध अलगाय ६१
चौंड़ा ऊदनकी मारुनमा द्वउदल छिन्न भिन्न ह्वैजायँ॥
यहु रण नाहर चौंड़ा बाँभनु वहु रणबाघु बनाफरराय ६२
कोऊ काहूते कमती ना द्वउरण परा बरोबरि आय॥
लाखनि धाँधूका मुर्चाभा शोभा कही बूत ना जाय ६३
लड़ैं सिपाही दुहुँ तरफा ते आमाभोर चलै तलवार॥
ना मुहँ फेरैं दिल्लीवाले ना ई मोहबे के सरदार ६४
बड़ी लड़ाई भै बगिया में चौंड़ा ऊदन के मैदान॥
कायर भागे दुहुँ तरफा ते अपने अपने लिये परान ६५
लश्कर भाग्यो पृथीराज का जीत्यो कनउजका सरदार॥
लादिकै छकरनमें चन्दन को चलिभाउदयसिंहत्यहिवार ६६
बाजत डंका अहतंका के लाखनि कूचदीन करवाय॥
पार उतरि कै श्री यमुना के तम्बुन फेरि पहूँचे आय ६७
लाखनि ऊदन दोऊ ठाकुर वेलै खबरि जनाई जाय॥
यह अलबेला बेला रानी अनमन उठी तहाँ ते धाय ६८
दीख्यो छकरा फिरि चन्दनका बोली सुनो बनाफरराय॥
गीले चन्दन ते सरि है ना सूखो चन्दन देउ मँगाय ६६
बारह खम्भा हैं दिल्ली मा जहँ दरबार पिथौरा क्यार॥
ते लै आवो तुम जल्दी अब ठाकुर उदयसिंह सरदार ७०

सुनिकै बातैं ये बेला की बोला फेरि बनाफरराय ॥
सूखो चन्दन हम कनउज ते स्वामिनि आज देयँ मँगवाय ७१
पै नहिं जावैं अब दिल्ली को तुम ते साँच देयँ बतलाय ॥
इतना सुनिकै बेला बोली साँची कहौ बनाफरराय ७२
मंशा तुम्हरी पूरण ह्वैगै जूझे समर चँदेलेराय ॥
हम पर मोहे तुम ऊदन थे ताते डारे कन्त मराय ७३
चहौ इकन्त भोग जो करनो सोहै कठिन बनाफरराय ॥
परपति भोगै अब बेला ना चहु तनध जीध जीउड़ि जाय ७४
भल चतुराई तुम सीखी थी कीन्ही खूब समय पर आय ॥
पूर मनोरथ तब होई ना मानो साँच बनाफरराय ७५
राज पाट अरु तनु धनकारण हम नहिं सकैं धर्मको टारि ॥
सतयुग त्रेता अरु द्वापरके करिबे धर्म यहां अनुहारि ७६
चन्दनखम्भा की तुम लाबो की अब लेउ शाप बिकराल ॥
झूंठ न यामें कछु जानो तुम बेटा देशराजके लाल ७७
इतना सुनिकै डरे बनाफर तब फिरि कहा कनौजीराय ॥
ह्वै तुम बेटी महराजा की काची बात रहिउ बतलाय ७८
ऐस बनाफर नहिं ऊदनहैं जो रण डारैं कन्त मराय ॥
मौत आयगै चन्देले कै उनकै बुद्धिगयी बौराय ७९
भरी कचहरी परिमालिक की बीरा लीन्ह्यनि हाथउँड़ाय ॥
बीरालेती जो ब्रह्मा ना ऊदन बिदा लेतिकरवाय ८०
घटिहा राजा परिमालिकहैं घटिहा बंश बीर चौहान ॥
घाटि न करतीं जो ब्रह्माते जीतत कौन समरमैदान ८१
चंदन जितनो तुम बतलावो तितनो देयँ आज मँगवाय ॥
पगिया अरभी नहिं दिल्ली में अनहक प्राण गँवावैं जायँ ८२

इतना सुनिकै बेला बोली मानो साँच कनौजीराय ॥
प्राणपियारे जो तुम्हरे हैं तौ तुम कूचदेउ करवाय ८३
तेहा राखौ रजपूती का चन्दनखम्भ देउ मँगवाय ॥
नहीं जनाना बनि मोहबे ते जाओ लौटि कनौजीराय ८४
शाप मैं देहौं अब ऊदन का तुमते साँच देयँ बतलाय ॥
मोहबा दिल्ली दुउ शहरनमें परिहैं राँड़ राँड़ दिखलाय ८५
इतना सुनिकै लाखनि बोले बेला साँच देयँ बतलाय ॥
बहुत झमेला ते मतलब ना चन्दन देब वही मँगवाय ८६
तौ तौ लड़िका रतीभान का नहिं ई मुच्छ डरो मुड़वाय ॥
सुनि कै बातैं लखराना की बेला बड़ी खुशी ह्वैजाय ८७
तबै बनाफर उदयसिंहजी तहँते कूच दीन करवाय ॥
फिरि यह बोले लखराना ते मानो कही कनौजीराय ८८
मृत्यु रूप यह बेला रानी दीन्ह्यसि बेलि दुऊकुलभाय ॥
नाश करनके हित यह बेला चन्दनखम्भ रही मँगवाय ८९
नहीं तो मतलब का खम्भाते जब हम और देयँ मँगवाय ॥
अपन रँड़ापा ते चाहति है सब संसार राँड़ ह्वैजाय ९०
प्राण आपने हम मलहना को दीन्हे ब्याह नेगमें भाय ॥
सो अब बिरिया चलिआई है बेला मृत्यु बहाना आय ९१
कयहु समुझाये ते समुझै ना बेला बिपति बेलि हरियाय ॥
जियत पिथौरा के ह्वैहै ना की हम खम्भलेयँ उखराय ९२
दुखित पिथौरा अब दुनियामा मरिगे सात पूत रणआय ॥
पुत्र न एको अब पृथ्वी के जो अवलम्बपरै दिखलाय ९३
बिना पुत्रके गति नहिं होवै वेद औ शास्त्र रहे बतलाय ॥
अगमा मल्हना दुउ रानिनकी बेला नाशिदीन करवाय ९४

हवै झमेला हमपर तुमपर कैसी करैं कनौजीराय ॥
ऐसी सुनिकै लाखनि बोले मानो साँच बनाफरराय ९५
होनी ह्वैहै सो ह्वैहै अब याही ठीक लेउ ठहराय ॥
मृत्यु आयगै जब रावणकै तब वनवासगये रघुराय ९६
कोऊ रक्षा तब कीन्ह्यो ना जब मुनिपिया समुन्दरजाय ॥
ब्रह्मा बिष्णू शिव सम्बन्धी इनतेऔर कौन अधिकाय ९७
बिपति समुन्दर पर जब आई तब सबगये तुरत अलगाय ॥
स्यहिते सम्मत अब याही है भुरहीं कूच देउ करवाय ९८
मर्जी होई नारायण की होई स्वई बनाफरराय ॥
इतना सुनिकै ऊदन बोले साँची कहौ कनौजीराय ९९
सम्मत ठीको अब याही है दिल्ली चलैं तड़ाकाधाय ॥
मर्जी याही नारायण की अनरथरूप परै दिखलाय १००
इतना कहिकै लाखनि ऊदन सोये द्वऊ सेजपर जाय ॥
खेत छूटिगा दिननायक सों झंडागड़ानिशाकोआय १०१
तारागण सब चमकन लागे संतन धुनी दीन परचाय ॥
आशिर्वाद देउँ मुंशीसुत जीवो प्रागनरायण भाय १०२
रहै समुन्दर में जबलों जल जबलों रहैं चन्द औ सूर ॥
मालिक ललिते के तबलों तुम यश सों रहौ सदा भरपूर १०३
पूरण कीन्ह्यो अब याहींते चन्दन बाग केरि सबगाथ ॥
वन्दन करिकै पितु माताके दूनों धरों चरणपर माथ १०४
पूरि तरंग यहाँ सों ह्वैगै तव पद सुमिरि भवानीकन्त ॥
राम रमा मिलि दर्शन देवैं इच्छा यही मोरि भगवन्त १०५

इति श्रीलखनऊनिवासि (सी, आई, ई)मुंशीनवलकिशोरात्मजबाबूप्रयागनारायणजीकीआज्ञानुसार उन्नामप्रदेशान्तर्गतपँडरीकलांनिवासिमिश्रवंशोद्भवबुधकृपाशंकरसूनुपं-ललिताप्रसादकृतचंदनबाटिकायुद्धवर्णनोनामप्रथमस्तरंगः १ ॥

अथ आल्हखण्ड ॥

चन्दनखम्भाकायुद्धवर्णन ॥

सवैया ॥

सोहत मुण्डनमाल हिये अरु भाल में चन्द्र बिराजत नीके।
शूल औ शक्ति कृपाण लिये डमरू कर सोहत शम्भुबलीके ॥
सातहैं भंग धरे शिरगंग सो नंग फिरैं अरधंग सतीके।
जंग जुरे न टरैं ललिते हम ध्यावत चर्ण हैं शम्भु यतीके १

सुमिरन ॥

बिपति बिदारण जगतारण के दूनों धरों चरणपर माथ ॥
पूर मनोरथ तुमहीं करिहौ स्वामी दीनबन्धु रघुनाथ १
बल्कल धारे जटा सँवारे मारे बली बीर दशमाथ ॥
सो हैं स्वामी अवधपुरी के लीन्हे धनुषबाण प्रभु हाथ २
अक्षत चन्दन औ पुष्पन सों मानस पूजन परम उदार ॥
सो मैं करिकै रघुनन्दन का जावा चहौं जगत के पार ३
तुम्हीं गोसइयाँ दीनबन्धुहौ स्वामी र [illegible] ॥

कीरति देवो नित दुनिया में राखो मोरि जगत में लाज ४
छूटि सुमिरनी गै देवन के शाका सुनो शूरमन क्यार ॥
चन्दनखम्भा ऊदन लैहैं होई महाभयङ्कर मार ५

अथ कथाप्रसंग ॥

उदय दिवाकर भे पूरब मा किरणन कीन जगतउजियार॥
सोय के जागे उदयसिंह जब लागे करन फौज तय्यार १
अंगद पंगद मकुना भौंरा सजिगे श्वेतबरण गजराज ॥
धरी अँबारी तिन हाथिनपर बहुतक हौदा रहे बिराज २
इक इक हाथी के हौदामा दुइ दुइ भये बीर असवार ॥
सजा रिसाला घोड़नवाला आला साठि सहस त्यहिवार ३
झीलमबखतरपहिरि सिपाहिन हाथम लई ढाल तलवार ॥
चढ़े कनौजी तब भूरी पर ऊदन बेंदुल भे असवार ४
देबा सय्यद बनरसवाले औ जगनायक भये तयार ॥
ढाढ़ी करखा बोलन लागे बिप्रन कीन बेद उच्चार ५
रणकी मोहरि बाजन लागी रणका होनलाग व्यवहार ॥
पहिल नगाड़ा में जिन बन्दी दुसरे फाँदि भये असवार ६
तिसर नगाड़ा के बाजत खन लाखनि कूचदीन करवाय ॥
पार उतरिकै श्रीयमुना के दिल्ली शहर गये नगच्याय ७
तीनि अनी करि तहँ सेनाकी खम्भा तुरत लीन उखराय ॥
बारहु खम्भा चन्दनवाले छकरन उपर लीन लदवाय ८
भा खलभल्ला औ हल्ला अति पायो खबरि पिथौराराय ॥
धावा कीन्ह्यो उदयसिंहने चन्दन खम्भ लीन उखराय ९
सुना पिथौरा जब बातैं ई दीन्ह्यो बीरभुगन्त पठाय ॥ १०

भा खलभल्ला औ हल्ला तब लोगन दीन्ह्यो लागलगाय ॥
मुर्चाबन्दी दुहुँ तरफा ते दूनों तरफ बीर समुहाय ११
मारन लागे तलवारी सों दूनों तरफ बरोबरि आय ॥
अपने अपने सब मुर्चनमा ज्वाननदीन्हे ज्वान गिराय १२
औ ललकारैं फिरि फिरि मारैं अद्भुत समर कहा ना जाय ॥
लिहे जँजीरैं हाथी मारैं घोड़ा मारैं टाप चलाय १३
दाँतन काटैं फिरि फिरि डाटैं चाटैं रक्त भूत बैताल ॥
मारि लहाशन के भुइँ पाटैं ल्वाटैं समरशूर त्यहिकाल १४
हाटैं लागीं तहँ श्वानन की ज्वानन खूब कीन तलवार ॥
मारे मारे तलवारिन के नदिया बही रक्तकी धार १५
मुण्डन केरे मुड़चौरा भे औ रुण्डन के लगे पहार ॥
खट खट खट खट तेगा बोलै ऊना चलै बिलाइतिक्यार १६
भाला बरछी तीर तमंचा कहुँ कहुँ कड़ाबीनकी मार ॥
छुरी कटारी कउ कउ मारैं कउ कउ बीर रहे ललकार १७
कउ मुलफारैं नखन बिदारैं डारैं चीरि फारि मैदान ॥
कोऊ हारैं नहिं काहू सों ज्याननकीन घोर घमसान १८
परशूठाकुर लाखनि दिशि को अंगद नृपतिग्वालियरक्यार ॥
मुर्चाबन्दी भे दूनन के दूनों लड़न लागि सरदार १९
अंगद मारै तलवारी सों परशू लेय ढालपर वार ॥
परशू मारै तलवारी सों अंगद रोंकि लेय त्यहिवार २०
बड़ी लड़ाई भै दूननमा दूनन खूब कीन तलवार ॥
वार चूकिगे अंगद राजा परशू मारिदीन त्यहि वार २१
गिरिगा राजा ग्वालीयर का आयो बीर भुगन्ता ज्वान ॥
बीर भुगन्ता के मुर्चा मा परशू खूब कीन मैदान २२

बार चूकिगे परशू ठाकुर नाश्यो वीर सुगन्ता ज्वान ॥
चन्दन खम्भा के मुर्चा मा परशू जूझिगये मैदान २३
ऐंड़ा बेंड़ा ऊदन मारैं सीधा हनैं कनौजीराय ॥
अगलबगल में जगनायकजी बहु रणशूर ढहावत जायँ २४
रानी अगमा के महलन के फाटक ऊपर कनौजीराय ॥
सँग जगनायक ऊदन ठाकुर येऊ गये तड़ाका धाय २५
मुर्चाबन्दी है बिसहिनि में तहँ पर गये पिथौराराय ॥
सुनी हक़ीकति लाखनिराना द्वारे जाय गये निरझाय २६
बदला लेबे संयोगिनि का तब फिरि धरब अगारी पाँय ॥
लैकै डोला अब अगमा का कनउज शहर देयँ पहुँचाय २७
तौ तौ लड़िका रतीभान का नहिं ई मुच्छ डरों मुड़वाय ॥
तब जगनायक बोलन लागे मानो कही कनौजीराय २८
जैसे जानैं हम मल्हना को अगमा तैसि हमारी माय ॥
यह गति नाहीं क्यहु ठाकुरकी डोला आजु लेय निकराय २९
जितनी फौजैं चन्देले की सो सब साथ हमारे भाय ॥
हमरो तुम्हरो मुर्चा है है साँची सुनो कनौजीराय ३०
यामें संशय कछु परि है ना तुमते ठीक दीन बतलाय ॥
सुनिकै बातैं जगनायक की बोला तुरत बनाफरराय ३१
तुम्हैं मुनासिब यह नाहीं है भैने सुनो चँदेलेकेर ॥
रतीभान के ये लरिका हैं नाती बेनचक्कवै केर ३२
घाट बयालिस पिरथी रोंके तब तुम गये हमारे पास ॥
बन्दि छुड़ाई इन मोहबे की काटी तहाँ यमनकी पाश ३३
आजु कनौजी सब लायक हैं हमरे माननीय शिरताज ॥
तुमहूँ प्यारे जगनायक जी विग्रहकेर नहीं कछुकाज ३४

तुम्हरे लाखनि के मुर्चामा कटिहैं पायँ आपने भाय ॥
होय लड़ाई घर अपने मा दुशमनशेरहोय अधिकाय ३५
हुकुम जो पावैं लखरानाका महलन जायँ तड़ाकाधाय ॥
डोला लावैं हम अगमा का राखैं टेक कनौजीराय ३६
सुनिकै बातैं बघऊदन की लाखनि हुकुम दीन फरमाय ॥
चला बनाफर तब जल्दी सों महलन अटा तड़ाकाजाय ३७
रूप देखिकै बघऊदन का रानी गई सनाका खाय ॥
हाथ मेहरियन पर डारयो ना मानो कही बनाफरराय ३८
पूत सुपूते द्यावलिवाले कीरति छायरही चहुँओर ॥
महल हमारे जो तुम लूटै कीरतिजाय सबै यहि ठौर ३६
फेंट बँधैया कोउ नाहीं है ना कोउ गहनयोग तलवार ॥
साँची बातैं हमरी मानो ठाकुर उदयसिंह सरदार ४०
सुनिकै बातैं महरानी की दोऊ हाथ जोरि शिरनाय ॥
खला बेंदुला का चढ़वैया रानी साँच देयँ बतलाय ४१
जैसे माता मल्हना रानी तैसे आप हमारी माय ॥
यहु महराजा कनउजवाला द्वारे आय गयो बिरभाय ४२
डोला लेबे हम अगमा का तब अब धरब अगारी पाँय ॥
बदला लेबे संयोगिनि का तब छाती का डाह बुताय ४३
तहँ जगनायक खुब बिगरे थे तिनहुन दीन तहाँ समुभाय ॥
अब समुभावत महरानी हैं बाँदी आप देउ पठवाय ४४
यह मनभाई महरानी के सुन्दरि बाँदी लीन बुलाय ॥
कपड़ा गहना सब आपनदै डोला उपर दीन बैठाय ४५
चलिभा डोला रंगमहल ते संगे चले बनाफरराय ॥
जहाँ कनौजी की भूरीथी डोला तहाँ पहूँचा आय ४६

देखिकै डोला लाखनिराना तुरतै कूचदीन करवाय ॥
चलिभा डोला जब फाटकते पहुँचा तुरत बजारै आय ४७
ऊदन बोले तब लाखनि ते मानो कही कनौजीराय ॥
कछू दुसरिहा अब तुम्हरो ना डोला आप देउ लौटाय ४८
कीरति गैहैं सब दुनिया मा ओ महराज कनौजीराय ॥
इतना सुनिकै लाखनिराना डोला तुरत दीन लौटाय ४९
आयग बिसहिन ते तुरतै तब यहु महराज पिथौराराय ॥
सुनी हकीकति सबलाखनिकी हाथी तुरत लीन सजवाय ५०
आदिभयङ्कर के ऊपर चढ़ि बैठ्यो शम्भु शिवाको ध्याय ॥
चौंड़ा धाँधू अगल बगलभे डंका तुरत दीन बजवाय ५१
बाजत डंका अहतंका के राजन कूच दीनकरवाय ॥
भारी लश्कर महराजा का पहुँचा समरभूमि में जाय ५२
यहु महराजा तब गाजाअति राजा गरूदीन ललकार ॥
मारो मारो ओ रजपूतो हमरे समरशूर सरदार ५३
जान न पावैं मोहबेवाले अब शिरकाटि देउ भुइँडारि ॥
गरुई गाजैं सुनि राजाकी बाजैं घूमि घूमि तलवारि ५४
मारे मारे तलवारिन के नदिया बही रक्तकी लाल ॥
भरि भरि खप्पर नच्चैं योगिनी मज्जैं भूत प्रेत बैताल ५५
श्वान शृगालन की बनिआई कागन लागी कारि बजार ॥
गिद्ध औ चील्हनकेभुण्डनका मुण्डन उपर लाग दरबार ५६
बहैं लहाशैं तहँ मनइन की तापर चढ़े काग औ कङ्क ॥
उठिउठिलड़ि२गिरि२ कितन्यो मरिगे समर राव औ रङ्क ५७
घोड़ बेंदुला का चढ़वैया ठाकुर उदयसिंह निरशङ्क ॥
मारति आवै रजपूतन को लीन्हे सङ्ग सिपाही बङ्क ५८

भयो सामना फिरि धाँधू का दूनों लड़न लाग सरदार ॥
घोड़ बेंदुला पर ऊदन हैं धाँधू हाथी पर असवार ५९
ऐंड़ लगायो रस बेंदुल के हौदा उपर पहूँचा जाय ॥
गुर्ज चलाई तब धाँधू ने ऊदन लैगे वार बचाय ६०
ढाल कि औभड़ ऊदन मारी धाँधू गिरे मूर्च्छा खाय ॥
भागो हाथी जब धाँधू का देवी गयो मरहटा आय ६१
औ ललकारा उदयसिंह को ठाकुर खबरदार ह्वैजाय ॥
वार हमारी ते बचिहौना जो बिधि आपु बचावैं आय ६२
इतना कहिकै देवी मरहटा तुरतै खैंचि लीन तलवार ॥
ऐंचि कै मारा बघऊदन के ऊदन लीन ढालपर वार ६३
फिरि ललकारा उदयसिंह ने नाहर होउ तुरत हुशियार ॥
यह कहि मारा तलवारी को देवी जूझिगयो त्यहिबार ६४
जूझिग देवी जब खेतन मा चौंड़ा गरू करै ललकार ॥
लड़ै चौंड़िया रण खेतनमा दूनों हाथ करै तलवार ६५
मीरासय्यद बनरस वाले येऊ घोर करैं घमसान ॥
कोगति बरणै तहँ देवा कै ठाकुर मैनपुरी चौहान ६६
फिरिफिरि मारै औ ललकारै रणमा कठिन करै तलवार ॥
भूरी हथिनी के हौदा ते राजा कनउज का सरदार ६७
हनि हनि मारै रजपूतन का अर्जुन युद्ध करै त्यहिबार ॥
कोगतिबरणै तहँ धाँधू कै हाथी उपर ज्वान असवार ६८
करि खलभल्ला औ हल्लाअति दूनों हाथ करै तलवार ॥
लड़ै इकल्ला यहु लल्लाअति ठाकुर उदयसिंह सरदार ६९
बड़ी लड़ाई त्यहि समया भै चन्दन खम्भा के मैदान ॥
ना मुह फेरैं कनउज वाले ना ई दिल्ली के चौहान ७०

फिरि फिरि मारैं औ ललकारैं दोऊ बड़े लड़ैता ज्वान ॥
ऊंचे खाले कायर भागे छोंड़िकै समर भूमि मैदान ७१
शूर सिपाही ईजति वाले आली खानदान के ज्वान ॥
बढ़ि बढ़ि मारैं तलवारी सों अपने धरे गदोरी प्रान ७२
आदि भयङ्कर को चढ़वैया यहु महराज पिथौराराय ॥
चौंड़ा धाँधू को ललकारा चन्दन तुरत लेउ उल्दाय ७३
जान न पावैं मोहबे वाले सबकी कटा देउ करवाय ॥
सुनिकै बातैं महराजा की बोला तहाँ बनाफरराय ७४
तुम्हैं मुनासिब यह नाहीं है ओ महराज वीर चौहान ॥
जैसे नौकर चन्देले के तैसे आप करो परमान ७५
नहीं बरोबरि कोउ तुम्हरे है ज्यहिपर आप चढ़े महराज ॥
बेला बेला दुहुँ तरफाते ज्यहिते भये दुःखके साज ७६
हमैं पठायो है बेलाने चन्दन लेन हेतु महराज ॥
पहिले बगिया को कटवायो पाछे कीन भयङ्कर काज ७७
सची होई चंदेले सँग राखी दुहूँ कुलन की लाज ॥
हम समुझावा भल बेला को की तुम करो मोहोबे राज ७८
अनरथ भायो मन बेला के खम्भन हेतु दीन पठवाय ॥
ना चढ़िआये जयचँद राजा ना चढ़िअये चँदेलेराय ७९
तुम्हैं मुनासिब अब याही है राजन कूच देउ करवाय ॥
इतना सुनिकै महराजा तहँ हाथी तुरत लीन लौटाय ८०
भाग्यो लश्कर फिरि पिरथी का सबदलतितिर बितिर ह्वैजाय ॥
लादि कै खम्भा तहँ छकरन में लाखनि कूचदीनकरवाय ८१
पार उतरि कै श्री यमुना के तम्बुन फेरि पहूंचे आय ॥
खेतछूटिगा दिननायक सों झंडागड़ा निशाकोआय ८२

तारागण सब चमकन लागे संतन धुनी दीन परचाय ॥
आशिर्वाद देउँ मुंशी सुत जीवो प्रागनरायणभाय ८३
रहै समुन्दर में जबलों जल जबलों रहैं चन्द औ सूर ॥
मालिक ललितेके तबलों तुम यशसों रहौ सदाभरपूर ८४
माथ नवावों पितु माता को जिन बल पूरिसई यह गाथ ॥
तुम्हीं गोसइयाँ दीनबन्धु हौ स्वामी रामचन्द्र रघुनाथ ८५
माथ तुम्हारो है दुनिया मा दूसर नहीं हमारो नाथ ॥
सत्य शपथ यह धर्म कर्म की स्वामी दीनबन्धु रघुनाथ ८६
सुमिरि भवानी शिवशंकर को ह्याँते करों तरँग को अन्त ॥
राम रमामिलि दर्शन देवैं इच्छा यही भवानीकन्त ८७

इति श्रीलखनऊनिवासि (सी, आई, ई) मुंशीनवलकिशोरात्मजबाबूप्रयागनारायण जीकीआज्ञानुसार उन्नामप्रदेशान्तर्गत पँडरीकलांनिवासि मिश्रवंशोद्भव बुधकृपाशङ्करसूनु पण्डितललिताप्रसादकृतचन्दनखम्भयुद्ध वर्णनोनामप्रथमस्तरंगः १ ॥

चन्दनखम्भाकामैदानसमाप्त ॥

इति ॥

अथ आल्हखण्ड ॥

बेलाकेसतीहोनेकेसमयकायुद्धवर्णन ॥

सवैया ॥

भक्तन हेतु सवय तनुधारि सदा बिपदा सुरसाधुहरी ।
हिरणाकश्यप दुःख दियउ तब रूपकियो नरसिंह हरी ॥
प्रह्लाद बिभीषण औ हनुमान महानन में इन रेखपरी ।
अँबरीष औ अंगद की समता ललिते जगमें अब कौनकरी १

सुमिरन ॥

तुम्हैं बिनायक मैं सुमिरत हौं गणपति गणाध्यक्ष महराज ॥
बिघन हरण लम्बोदर स्वामी पूरणकरो हमारे काज १
हे जगतारण भवभय हारण स्वामी एकदन्त महराज ॥
बिपति बिदारण सब सुखकारण राखनहार जगतमें लाज २
तुमहीं ब्रह्मा औ बिष्णू हौ तुमहीं शम्भु सुरासुर काल ॥
तुम्हीं गोसइयाँ दीनबन्धु हौ स्वामी शिवाशम्भु के बाल ३

तुम्हैं मनावैं औ ध्यावैं हम गावैं सदा तुम्हारी गाथ॥
यह वरपावैं गणनायक जी दर्शन देयँ मोहिं रघुनाथ ४
छूटि सुमिरनी गणनायक कै शाका सुनो शूरमन केर॥
सत्ती होई बेला रानी ठानी युद्ध पिथौरा फेर ५

अथ कथाप्रसंग॥

खम्भ आयगे जब चन्दन के बेला करनलागि अनुमान॥
मोहबा दिल्ली के डाँड़े पर हमरो होय सती अस्थान १
यहै बिचारत मन धारत सो आरत हृदय भई अधिकाय॥
तबलों लाखनि को सँग लैकै आये तहाँ बनाफरराय २
बेला बोली तब ऊदन ते मानो साँच लहुरवाभाय॥
मोहबा दिल्ली के डाँड़े पर हमरो सरादेउ रचवाय ३
इतना सुनिकै ऊदनठाकुर चन्दन तहाँ दीनपहुँचाय॥
चारि चहद्दी के डाँड़े पर बेला सरादीन रचवाय ४
कनउज मोहबे की फौजैं सब ऊदनतुरत लीन सजवाय॥
सरा रचायो जहँ बेला का सबदल दीन्ह्यों तहाँ टिकाय ५
जितनी रैयति परिमालिक कै देखन हेतु गई सब आय॥
बेलारानी त्यहि औसर मा भूषण बसन सजे अधिकाय ६
को गति बरणै तहँ बेला कै षोड़श पूरकीन शृंगार॥
लाश संगलै चन्देले की सरपर गई सती त्यहिवार ७
गाहरिकारा ह्याँ दिल्ली मा राजै खबरि जनाई जाय॥
खबरि पायकै पृथीराज ने अपनी फौज लीन सजवाय ८
को गति बरणै त्यहि समया कै मानो इन्द्र अखाड़े जाय॥
आदिभयङ्कर के ऊपर चढ़ि मनमें शम्भु शिवापद ध्याय ९
चौंड़ा धाँधू बीर भुगन्ता लैकै कूच दीन करवाय॥

भारी लश्कर महराजाका गर्जत चला समरको जाय १०
थोड़े अरसा मा महराजा आये सरापास नगच्याय ॥
बाजैं बाजा ह्याँ सत्ती के हाहाकार शब्दगा छाय ११
बला पिथौरा हाथी परते ओ महराज कनौजीराय ॥
बंश चँदेले के जो होवै सो सर देवै आगि लगाय १२
जायँ नगीचे नहिं ऊदन अब हैं अकुलीन बनाफरराय ॥
सुनिकै बातैं पृथीराज की बोला तुरत लहुरवाभाय १३
हमै आज्ञा है बेला के की सरदेवो आगिलगाय ॥
इतना कहिकै उदयसिंह ने दीन्ह्यो चितातुरतदँदकाय १४
यह गति दीख्यो पृथीराजने तुरतै हुक्म दीन फरमाय ॥
जान न पावैं मोहबे वाले सब के देवो मूड़ गिराय १५
हुकुम पायकै पृथीराज का चौंड़ा धाँधू उठे रिसाय ॥
बीर भुगन्ता गर्जन लाग्यो मारन लाग तड़ाका धाय १६
सय्यद देवा ऊदन ठाकुर इनहुन खैंचिलीन तलवार ॥
को गति बरणै त्यहि समया कै लागी होन भड़ाभड़मार १७
हौदा हौदा यकमिल ह्वैगे घोड़न भिड़ी रानमें रान ॥
पहिया रथ के रथमा भिड़िगे तीरन भिड़िगे तीरकमान १८
मर मर मर मर ढालैं ब्वालैं खन खन तूण बाण चिल्लायँ ॥
सन् सन् सन् सन् गोली बरसैं कायर भागैं समर पराय १९
घम् घम् घम् घम् बजैं नगारा मारा मारा परै सुनाय ॥
झल्झल्झल्झल् झीलम झलकैं नीलम रंग परै दिखराय २०
चम् चम् चम् चम् तेगा चमकैं दमकैं छुरी कटारी भाय ॥
कोगति बरणै त्यहि समया कै अद्भुत समर कहानाजाय २१
फिरैं भुशुण्डा बिन खण्डा के रुण्डा करैं खूब तलवार ॥

मुण्डन केरे मुड़ चौरा भे औ रुण्डन के लगे पहार २२
मारे मारे तलवारिन के नदिया वही रक्तकी धार ॥
कायर भागे समर भूमि ते अपने डारि डारि हथियार २३
भूरा सय्यद का मुर्चा भा दूनों लड़न लागि सरदार ॥
दूनों मारैं तलवारी सों दूनों लेयँ ढाल पर वार २४
उसरिन उसरिन दूनों खेलैं जैसे कुवाँ भरै पनिहारि ॥
वार चूकिगा भूरा जवहीं सय्यद हना तुरत तलवारि २५
मूड़ विसानी सो भूरा के तुरतै गिरा भरहरा खाय ॥
भूरा जूझ्यो जव खेतन में आयो तुरत भुगन्ता धाय २६
सो ललकाखो फिरि सय्यदको अव रण सावधान ह्वैजाय ॥
धोखे भूरा के भूल्यो ना अवहीं यमपुर देउँ दिखाय २७
इतना कहिकै वीर भुगन्ता तुरतै लीन्ह्यो तीर चढ़ाय ॥
खैंचि कमनिया ते मारत भा सय्यद लैगे वार वचाय २८
घोड़ वढ़ायो फिरि सय्यद ने लैकै गुर्ज पहूंच्यो जाय ॥
वीर भुगन्ता को ललकारा क्षत्री खवरदार ह्वैजाय २९
वार हमारी ते वचि है ना दोजख अवै देउँ पहुँचाय ॥
इतना कहिकै क्रोधित ह्वैकै सय्यद मास्यो गुर्ज घुमाय ३०
वार वचाई वीर भुगन्ता फिरियहि खैंचि लीन तलवार ॥
ऐंचि कै मारा वीर भुगन्ता जूझ्यो वनरस का सरदार ३१
सय्यद जूझ्यो जव मुर्चा में तव चढ़ि अयो कनौजीराय ॥
गंगा ठाकुर तिन पाछे करि आगे गयो तड़ाका धाय ३२
वीर भुगन्ता औ गंगा का परिगा समर वरोवरि आय ॥
लखैं पिथौरा औ कनवजिया अद्भुतसमर कहा ना जाय ३३
आदिभयङ्कर पर पिरथी हैं लाखनि भूरी पर असवार ॥

तेहा राखे रजपूती का कीन्हे जंग केर शृंगार ३४
भाला बरछी दूनों लीन्हे दूनों लिये ढाल तलवार॥
पाग बैंजनी शिरपर धारे कनउज दिल्ली के सरदार ३५
कलँगी सोहैं दोउ पगियन में दोउन हीरा करैं बहार॥
रूप उजागर सबगुण आगर कनउज दिल्लीके सरदार ३६
तेहेदारी की समता है समता राज काज व्यवहार॥
समता बय में नहिं लाखनिकी थोरी उमर केर सरदार ३७
गंगा मामा कुड़हरिवाले तिनते कहा तहाँ ललकार॥
मारो मारो अब जल्दीते मामा काह लगाई बार ३८
इतना सुनिकै गंगा ठाकुर अपनी खैंचि लीन तलवार॥
बीरभुगन्ता तब मारत भा गंगा लीन ढालपरवार ३९
ऐंचि सिरोही गंगामारा तुरतै दीन्ह्यो मूड़ गिराय॥
बीरभुगन्ता के जूझतखन धाँधू गयो तड़ाकाआय ४०
धाँधू गंगा का मुर्चाभा अद्भुत समर कहा ना जाय॥
दूनों मारैं तलवारी से दूनों लेवैं वार बचाय ४१
कोऊ काहू ते कमती ना दोउ रण परा बरोबरिआय॥
वार चूकिगे गंगा ठाकुर धाँधू मारा गुर्ज घुमाय ४२
परिगै मस्तक सो गंगा के तुरतै गिरा भरहरा खाय॥
गिरिगे गंगा जब हाथी पर तुरतै अटा कनौजीराय ४३
लाखनि धाँधू का मुर्चा भा दोऊ लड़न लागिसरदार॥
दोऊ मारैं तलवारी सों दोऊ लेयँ ढाल पर वार ४४
कोऊ काहू ते कमती ना दोऊ करैं भड़ाभड़ मार॥
भौंरानँद पर धाँधू ठाकुर लाखनि भूरी पर असवार ४५
दोऊ हौदा पकमिल ह्वैगे दोऊ करैं समर ललकार॥

छुरी कटारी भाला बरछी होवै कड़ाबीन की मार ४६
तीर तमंचा गुर्ज चलावैं दोऊ समर शूर त्यहि बार ॥
वार चूकिगे धाँधू ठाकुर मारा कनउज के सरदार ४७
धाँधू जूभ्यो जब मुर्चा में आयो तुरत पिथौराराय ॥
आदिभयङ्करज्यहि दिशिदावै त्यहिदिशिहटतफौजसबजाय ४८
को गति बरणै पृथीराज की नाहर समरधनी चौहान ॥
ज्यहि दिशि दाबै समर भूमिमें त्यहिदिशिहोतजातमैदान४६
सुफना बोल्यो ह्याँ लाखनि ते ओ महराज कनौजीराय ॥
आदिभयङ्कर दाबे आवै यहु महराज पिथौराराय ५०
कोऊ सहायक अब तुम्हरो ना स्वामी आप एक यहिकाल ॥
इत उत फिरिकै चहुँदिशि देखा नहिंकोउदेखिपरै महिपाल ५१
करै आतमा की रक्षा नर धन औ स्त्री संग बिहाय ॥
धन सों स्त्री की रक्षा कर यह मर्य्याद नीति कीआय ५२
त्यहिते तुमका समुझाइत है ओ महराज कनौजीराय ॥
इतना सुनिकै लाखनि बोले सुफना काह गये बौराय ५३
कहा न माना चंदेलेका हटका मातु हमारी आय ॥
अब नहिं भागैं हम मुर्चा ते चहु तन धजी२उड़िजाय ५४
रही न देही रामचन्द्र कै रहि नहिंगये कृष्ण महराज ॥
यशै इकेलै बाकी रहिगा सो कस तजैं समरमें लाज५५
रही न देही क्यहु मानुष की सबजग नाशवान दिखलाय ॥
त्यहिते हाथी जहँ पिरथी का सुफना चलौ तहाँपर धाय ५६
प्राण निछावरि रण करि देवै तौ यशरही जगत में छाय ॥
जो अब भागैं समर भूमि ते कायर कहै लोक सबगाय ५७
सुनिकै बातैं लखराना की सुफना हाथी दीन बढ़ाय ॥

आवत दीख्यो लखराना को बोल्यो तुरत पिथौराराय ५८
आवो आवो लाखनिराना हमरे संग मिलौ तुम आय ॥
हमरी सरवरि को तुमहीं हो ओ महराज कनौजीराय ५९
नीच बनाफर उदयसिंह है तासँग काहगयो बौराय ॥
सोलह रानिन के इकलौता नाहक प्राण गँवायो आय ६०
अबै मामिला कछु बिगरा ना मानो कही कनौजीराय ॥
हमै शोच है इक कनउज का की निरबंश राज ह्वै जाय ६१
बृद्ध चँदेले जयचँदराजा मानो कही कनौजीराय ॥
सात पुत्र रण खेतन जूझे हमखोवंश नाश भय आय ६२
अस नहिं चाहैं जस हम ह्वैगे मानो कही कनौजीराय ॥
उमिरि तुम्हारी अतिथोरी है कच्ची बुद्धि गयो बौराय ६३
दोष हमारो सब कोउ देहैं बालक हना पिथौराराय ॥
यहिते तुमका समुझाइत है कच्ची बुद्धि कनौजीराय ६४
हमरी तुम्हरी कछु अटनस ना जो रण प्राण गँवावो आय ॥
काह बिगारा हम जयचँद का कच्ची बुद्धि कनौजीराय ६५
सुखनहिंदीख्यो कछु दुनियाका नाहक प्राण गँवावो आय ॥
अब नहिंकैहैं कछुलाखनिहम कच्ची बुद्धि कनौजीराय ६६
ताहर नाहर की समता हो कच्ची बुद्धि गयो बौराय ॥
जो नाहिं आवो हमरे दल में तौ अब कूच जाउकरवाय ६७
पारस पैहो जो दल ऐहो कनउज गये प्राण रहिजायँ ॥
इतना सुनिकै लाखनि बोले मानो कही पिथौराराय ६८
तुम्हरी बातैं सब साँची हैं सो हम जानि दीन बिसराय ॥
पै अब बदला संयोगिनि का लेवै समर भूमि में आय ६९
यामें संशय कछु नाहीं है मानो साँच पिथौराराय ॥

घर घर दिल्ली को लुटवैबे तब छाती का डाह बुताय ७०
इतना कहिकै लाखनिराना तुरतै लीन्ह्यो तीर उठाय ॥
खैंचि कमनियांते छाँड़त भे गौरा पारबती को ध्याय ७१
आवत दीख्यो शर लाखनिको राजा काटि तड़ाका दीन ॥
बड़े क्रोधसों पृथ्वीराजा दूसर बाण हाथमें लीन ७२
शर संधान्यो बड़े वेगसों मार्‍यो तुरत पिथौराराय ॥
खण्डन कीन्ह्यो त्यहि लखराना आपो मार्‍यो तीर चलाय ७३
ताहि पिथौरा खण्डन करिकै यकइस मारे बाण रिसाय ॥
तिनको खण्डन लाखनिकीन्ह्यो राजा गये मनै शर्माय ७४
यहु महराजा कनउज वाला आला वंश चँदेलाराय ॥
धेला एको ज्यहि डर नाहीं हाथिन हेला दीन गिराय ७५
बड़ बड़ मेला रजपूतन के रणमा लाखनि दीन हटाय ॥
फूल चमेला औ बेला जस तस अलबेला कनौजीराय ७६
उठैं सुगंधैं जस बेला में तस यशगयो जगतमें छाय ॥
बाण लागि गा लखराना के हौदा उपर गये मुरझाय ७७
जूझि कनौजी गे खेतन में सुमिरिकै मित्र बनाफरराय ॥
कड़कैं धड़कैं औ फड़कैं अति मेघा आसमान थहराय ७८
प्रलयकाल की बेला आई जब मरिगये कनौजीराय ॥
ऐसे अशकुन के देखत खन ऊदन गये सनाकाखाय ७९
चित्त न लागै कछु मुर्चा में व्याकुल सुमिरि कनौजीराय॥
यहां चौंड़िया धरि धरि धमकै ऊदन लेवैं वार बचाय ८०
हाथ चौंड़िया पर छाँड़ैं ना व्याकुल चित्त रहे अकुलाय ॥
तहिले बावन इक चौंड़ाते लाखनि हाल बतावाआय ८१
सुना बनाफर उदयसिंह यह की मरिगये कनौजीराय ॥

ऊदन बोले तब चौंड़ा ते मानो कही चौंड़ियाराय ८२
मरिगे लाखनि जो मुर्चा में तौ नहिं जियैं बनाफरराय ॥
बिना इकेले लखराना के मरिहैंकौनसाथक्यहिआय ८३
मित्र कनौजी अस मरिगे जब जीहैं कौन समर तब भाय ॥
मारु चौंड़िया अब जल्दी सों हमरोशोखमोखमिटिजाय ८४
इतना कहिकै उदयसिंह ने तुरतैं खैंचिलीन तलवार ॥
हुँड़ लगावा रसबेंदुल के हौदा उपर गयो त्यहिबार ८५
काटि महावत औ हाथी को आपन शीश दीन पकराय ॥
काटि शीश तब चौंड़ा लीन्ह्यो औ धड़गिराधरणिमें आय ८६
ऊदन देबा जगनायक जी सब कोउ मरे समर में आय ॥
चौंड़ा पिरथी आल्हा इन्दल रहिगे शेष चारि ये भाय ८७
ऊदन जूझे समरभूमि में आल्हा चले तड़ाका धाय ॥
देवी शारदा का बरदानी अम्मरकहै लोक सबगाय ८८
सुना बनाफर जब कानन ते की मरिगये लहुरवाभाय ॥
पकरि बनाफर तब चौंड़ा को मर्दन कीन देह में लाय ८९
मींजि माँजिकै त्यहि चौंड़ाको आगे हाथी दीन बढ़ाय ॥
आदिभयङ्कर जहँ ठाढ़ो थो आल्हा तहाँ पहूचे जाय ९०
पकरिकै बाहू तहँ पिरथी की आल्हा बाँधिलीनत्यहिठायँ ॥
नील डरायो नृप आँखिन में बंधन तुरत दीन छुड़वाय ९१
खबरि मोहोबे औ दिल्ली गै की रण बचे तीन जन भाय ॥
आल्हा इन्दल पिरथी राजा और न चौथकऊदिखलाय ९२
सुनवाँ फुलवा द्यावलि माता सुनतै चलीं तड़ाकाधाय ॥
सुनवाँ बोली समर भूमि में आल्हा डारयो बन्धु मराय९३
आल्हा मुखते सुनि सुनवाँ के मनमा ठीक लीन ठहराय ॥

धर्म न रैहै क्यहु कलियुगमा सब बिन धर्म जगतह्वैजाय ९४
यहै सोचिकै आल्हा ठाकुर इन्दल बोले बचन सुनाय ॥
माता तुम्हरी नाम हमारो लीन्ह्यो सुनो बनाफरराय ९५
दुर्गति होई अब कलियुग मा ताते देयँ पूत बनलाय ॥
करो तयारी बन कजरी की अपनो मया मोह बिसराय ९६
इतना कहिकै आल्हा ठाकुर हाथी चढ़े तड़ाका धाय ॥
इन्दल बैठे फिरि घोड़े पर साथै कूच दीन करवाय ९७
इन्दल इन्दल कै गुहरायो सुनवाँ चली पछारी धाय ॥
पूँछ पकरिकै पचशब्दा कै सुनवाँ गजैघसीटतिजाय ९८
ऐंचि खड्ग को आल्हा ठाकुर तुरतै दीन्ह्यो पूँछ गिराय ॥
बिना पूँछ का पचशब्दा फिरि कजरी बनै पहूँचा जाय ९९
रही न आशा क्यहु जीवनकी सबहिन दीन्ही देहजराय ॥
प्राण आपने नारी तजि कै सुरपुर गईं तड़ाका धाय १००
सुनवाँ फुलवा चित्तररेखा द्यावलिसहित मरींसबआय ॥
मोहबा दिल्ली द्वउ शहरन में राँड़न झुंडभये अधिकाय १०१
छाय उदासी गै दोऊ दिशि बिपदा कही बूत ना जाय ॥
रानी मल्हना मोहबे वाली मनमासोचिसोचिरहिजाय १०२
तुम्हैं बिधाता अस चाही ना जैसी बिपति दीन अधिकाय ॥
दुःखित ह्वैकै महरानी फिरि पारस पत्थर लीन उठाय १०३
जाय सिरायो सो सागर में चन्दन अक्षत फूल चढ़ाय ॥
धूप दीप औ कीन आरती मेवा मिश्री भोग लगाय १०४
हवन ब्राह्मण को भोजन दै बोली हाथ जोरि शिरनाय ॥
जो कोउ राजा हो मोहबे में पारस रह्यो तासु घरआय १०५
इतना कहिकै रानी मल्हना महलन फेरि पहूँची आय ॥

ग्यारह लंघन परिमालिक करि सुरपुर गये तड़ाका धाय १०६
सत्ती ह्वैकै रानी मल्हना अपनो दीन्ह्यो प्राण गँवाय ॥
मोहबा दिल्ली औ कनउज में मानौंगिरी गाजअरराय १०७
बने चबुतरा बहु सत्तिन के ठौरन ठौरन परैं दिखाय ॥
बड़ बड़ राजन की महरानी रणमाखाकबटोरेनिआय १०८
बने बचाये महभारत के यामें वंश अस्त भे भाय ॥
जेठ चतुर्दशि वनइस छप्पन अबलों सुदी पक्ष दर्शाय १०९
ललिते आल्हा को पूरण करि पूरणमासी चहैं अन्हाय ॥
पै यह वादा है कलियुग का सोनहिं ठीकठाक ठहराय ११०
आशिर्बाद देउँ मुंशी सुत जीवो प्रागनरायण भाय ॥
हुकुम तुम्हारो जो पावत ना ललितेकहतकथाकसगाय१११
रहै समुन्दर में जबलों जल जबलों रहैं चन्द औ सूर ॥
मालिक ललिते के तबलों तुम यशसों रहौ सदा भरपूर ११२
माथ नवावों पितु माता को जिनबल पूरि भई यह गाथ॥
मालिक स्वामी अरुसरबस तुम जगमें एकरामरघुनाथ ११३
कृपा न करतेउ रघुनन्दन जो तौ यह पूरि करत को गाथ ॥
माता पितुमा सचराचर में ब्यापकतुम्हीरामरघुनाथ११४
तुम्हीं रखैया हौ दुर्बल के स्वामी रामचन्द्र महराज ॥
कृपा तुम्हारी जब जस होती तबतस होत जगतमेंराज ११५
अब महरानी सुखदानी जो हमरी माननीय शिरताज ॥
सब गुणखानी विक्टोरियारानी राखैं सदा जगत में लाज ११६
जिन बल छाजत बल हमरो है राजत राजनीति नितराज ॥
जोनहिं अनुचित चल दुनियामें तौनहिंहोयसजायहिराज११७
अब महरानी सब सुखदानी युग युग अटलकरैं यह राज ॥

जो नहिं अनुचितकरुदुनिया में तौनहिंहोयसजायहिराज ११८
इन रजधानी में रहिकै मैं कबहुँनकष्ट सहा क्यहुकाल ॥
पिता पितामह औ मोसंयुत कबहुँनपरथनबिपतिकेजाल ११९
चोर छिनारन बदमासन की पिंडुरी थहर थहर थर्रायँ ॥
मोछा टेवैं सज्जन बैठे नहिंकहुँमसातलकभन्नाय१२०
यह सब गावत हैं सज्जन मन नित प्रति बना रहै यह राज ॥
जीवैं रानी महरानी ई जिनबलसुजनसुखीसबसाज१२१
इनअसिमाता अब मिलिहैं ना यह मन नित्त लीन ठहराय ॥
मिलैं प्रबन्धौ असकर्त्ता ना जसकछुआजकाल्हदिखलायँ१२२
यहौ कथा अब पूरण करिकै ललिते करत मंगलाचार ॥
करों वन्दना मैं तुलसी की हुलसीजासु काव्यसंसार१२३
ज्यहि अवलोकन के करतैखन मनके छूटि जात सब ताप ॥
सोई प्यारी तुलसी गाथा ललितेकीनबहुतादिनजाप १२४
खेत छूटिगा दिननायक सों झगडा गड़ा निशाको आय ॥
तारागण सब चमकन लागे सन्तनधुनी दीन परचाय१२५
पूरि तरंग यहाँ सों ह्वैगै तब पद सुमिरि भवानीकन्त ॥
राम रमा मिलि दर्शन देवैं इच्छायही मोरिभगवन्त १२६

इति श्रीलखनऊनिवासि(सी,आई,ई)मुंशीनवलकिशोरात्मज बाबूप्रयागनारायण जीकी आज्ञानुसार उन्नामप्रदेशान्तर्गत पँड़रीकलांनिवासि मिश्र वंशोद्भव बुध कृपाशङ्करसूनु पण्डितललिताप्रसादकृत वेलासती व्याख्यावर्णनोनामप्रथमस्तरंगः १ ॥

बेलासतीअर्थात्सर्वआल्हखण्डसमाप्तशुभमस्तु ॥

इति ॥